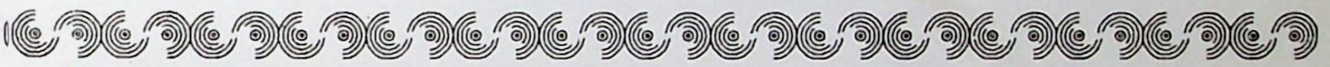
वैदिकनिर्वचनकोषः

डॉ० ज्ञान प्रकाश शास्त्री



वैदिकनिर्वचनकोषः



परिमल संस्कृत ग्रन्थमाला ५६

ओ३म्

वैदिकनिर्वचनकोषः



डॉ० ज्ञान प्रकाश शास्त्री,
रीडर संस्कृत विभाग,
नेशनल स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
भोगाँव, मैनपुरी उ०प्र०



परिमल पब्लिकेशन्स
दिल्ली

प्रकाशक
परिमल पब्लिकेशन्स
२७/२८, शक्तिनगर
दिल्ली- ११०००७
दूरभाष- ७४४५४५६

प्रथम संस्करण २०००

मूल्य–४००

ISBN : 81-7110-181-3

मुद्रक
हिमांशु लेजर सिस्टम
४६, संस्कृत नगर, सेक्टर-१४, रोहिणी
दिल्ली ११००८५
दूरभाष- ७८६२१८३



पुरोवाक्

प्राचीन भारतीय मनीषा शब्द को ब्रह्म मानकर उस पर विचार करती रही है। यजुर्वेद स्पष्ट रूप से कहता है— ''गोस्तु मात्रा न विद्यते'' (यजु० २३-४८) कि शब्द ब्रह्म को सीमा में नहीं बाँधा जा सकता हैं। उक्त अध्याय के एक अन्य मन्त्र में ऋषि कहता हैं— ''ब्रह्मायं वाचः परमं व्योम'' (यजु० २३.६२) कि यह वाक् परम व्योम अर्थात् परम ब्रह्म है। उक्त वेद वचनों से अनुप्राणित होकर, शब्द के महत्त्व को प्रतिपादित करते हुए महाभाष्यकार आचार्य पतञ्जलि कहते हैं— ''एकः शब्दः सम्यग् ज्ञातः सुप्रयुक्तः स्वर्गे लोके कामधुग्भवति'' (पस्पशाह्निकम्) कि सम्यक् ज्ञात और सुप्रयुक्त एक शब्द भी स्वर्ग लोक में अभीष्ट कामनाओं की पूर्ति करने वाला होता हैं। इस महावाक्य को चरितार्थ करने के लिये प्राचीन भारतीय मनीषियों ने सतत शब्द साधना की है और वैदिक भावना को जीवित बनाये रक्खा है।

इसके अतिरिक्त भारतीय परम्परा, विशेष रूप से ब्राह्मण ग्रन्थ, देवता के स्वरूप को परोक्ष मानते हैं और जिसमें प्रत्यक्ष करने की सामर्थ्य है, वही देवता के स्वरूप से परिचित हो सकता है।

उपर्युक्त दोनों विचारों को ध्यान में रखते हुए, शब्द के अन्तस् में निहित सत्य को प्रकाशित करने के लिये 'वैदिकनिर्वचनकोषः' नाम से यह एक लघु प्रयास किया गया है। प्रस्तुत कोष में वेद, ब्राह्मणग्रन्थ एवं निरुक्त के निर्वचन संकलित किये गये हैं। इसके अतिरिक्त प्रस्तुत कोष में वैदिक निघण्टुकोष के समस्त नामपदों के निर्वचन भी समाहित किये गये हैं, जिससे वेदार्थ के सम्यक् ज्ञान में अपेक्षित सहयोग प्राप्त हो सके। प्रस्तुत कोष में परोक्ष और अतिपरोक्षवृत्तिरूप शब्दों के निर्वचनों के समर्थन में क्वचित् अष्टाध्यायी और उणादिकोष की व्युत्पत्तियों का भी आश्रय लिया गया है।

प्रस्तुत कोष में निर्वचन के स्वरूप को स्पष्ट करने के लिये व्युत्पत्ति को निम्न प्रकार प्रदर्शित किया गया है। जैसे—

(क) जैमिनीय ब्राह्मण 'पर्जन्य' शब्द का निम्न निर्वचन करता है— ''पर्जन्यो भूत्वा (प्रजापतिः) प्रजानां जनित्रमभवत्।'' जै०ब्रा० १.३१४। उक्त निर्वचन को स्पष्ट करने के लिये *'प्रजा+ जनित्र> पर्जन्य'* इस प्रकार इटालिक अक्षरों से व्युत्पत्ति को स्पष्ट किया गया है।

(ख) आचार्य यास्क पर्जन्य का निम्न निर्वचन करते हैं— ''पर्जन्यस्तृपेराद्यन्तविपरीतस्य, तर्पयिता जन्यः।'' निरु० १०.१०। निरुक्तकार के आशय को सुस्पष्ट रूप से प्रदर्शित करने के लिये निम्न प्रकार से इटालिक अक्षरों में व्युत्पत्ति प्रदर्शित की गयी है— *√'तृप् > पृत्+ √'जन्'+ यक्> पर्जन्य'*। उक्त व्युत्पत्ति में √ यह संकेत धातु की प्रतीति कराता है।

(ग) शतपथ ब्राह्मण हिरण्य पद का निम्न निर्वचन करता है— ''तद्यदस्य (प्रजापतेः) एतस्याः रम्यायां तन्वां देवा अरमन्त तस्माद्धि रम्यः हि रम्यः ह वै तद्धिरण्यमित्याचक्षते परोऽक्षम्। शत०ब्रा० ७.४.१.१६। उक्त ब्राह्मण के वचन में निहित व्युत्पत्ति को निम्न प्रकार प्रदर्शित किया गया है— *'हि+ √'रम्'= हि+ रम्य= हिरण्य'*।

(घ) प्रस्तुत कोष की अपनी एक विशेषता यह है कि इसमें वेद के निर्वचनों का भी संकलन किया गया है। उदाहरण के रूप में नदी के पद के निर्वचन को देखा जा सकता है— ''यददः संप्रयतीरहावनदता हते। तस्मादा **नद्यो** नाम स्थ ता वो नामानि सिन्धवः। √'नद्'। अथर्व० ३.१३.१। यहाँ स्पष्ट रूप से मन्त्रदृष्टा ऋषि नदी के साथ 'नद्' धातु का सम्बन्ध देख रहा है। उक्त सम्बन्ध का प्रदर्शन करने के लिये उक्त पदों के अक्षरों को काला (बोल्ड) कर दिया गया है।

(ङ) इसी प्रकार का एक उदाहरण यह भी है : " **उदानिषुर्महीरिति तस्मादुदकमुच्यते।** 'उद्+ √'अन्'। अथर्व० ३.१३.४। यहाँ मन्त्रदृष्टा ऋषि न केवल 'उद्+√'अन्' धातु से 'उदक' को व्युत्पन्न करने का संकेत करता दिखायी देता है, अपितु यास्कादि आचार्यों के समान निर्वचन की भाषा का भी प्रयोग कर रहा है। इस प्रकार वैदिक ऋषियों के मन्तव्य को प्रदर्शित करने के लिये शब्द तथा उसकी धातु या क्रिया पद को काला (बोल्ड) कर दिया गया है।

इस प्रकार उक्त कोष को अधिक उपयोगी बनाने के लिये निर्वचनीय शब्द के प्रकृति-प्रत्यय को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है, जिससे एक साधारण संस्कृतज्ञ भी निर्वचन के मूल में निहित आशय को हृदयंगम कर सके।

प्रस्तुत कोष के गठन में न्यूनतायें रह जाना स्वाभाविक है। इसका प्रमुख कारण यह है कि कोष के गठन में जिन साधनों की अपेक्षा होती है, उन सबका इस सुदूर और शिक्षा की दृष्टि से अविकसित स्थान पर उपलब्ध होना असंभव नहीं तो कठिन अवश्य है। दूसरा कारण यह है कि वैदिक नामपदों को लेकर अभी तक कोई निर्वचन कोष प्रकाश में नहीं आया है, जिसको निदर्शन मानकर या जिसकी अपेक्षा प्रस्तुतकोष को अधिक उपयोगी बनाना संभव हो सके। इसके अतिरिक्त लेखक का प्रमाद व अज्ञान भी इस दिशा में सहायक रहा है।

मैं अन्त में प्रस्तुत कोष में रह गयी त्रुटियों के लिये क्षमा याचना करता हुआ माँ सरस्वती से प्रार्थना करता हूँ कि वे मुझे ऐसी सामर्थ्य प्रदान करें, जिससे सर्वसाधारण भी वैदिक साहित्य को हृदयंगम कर सके और वेद के जो पक्ष अभी तक किसी कारण से उद्घाटित नहीं हो सके हैं, उनको अभिव्यक्ति प्रदान करने के लिये मुझे माध्यम बनने का अवसर प्रदान करे। वेद भगवान् के शब्दों में–

ऋचो अक्षरे परमे व्योमन् यस्मिन् देवा अधि विश्वे निषेदुः।

यस्तन्न वेद किमृचा करिष्यति य इत्तद्विदुस्त इमे समासते।। – ऋ० १.१६४.३९

जो उसको जान लेता है, उसका समाहार उसी में हो जाता है। "ब्रह्म वेद ब्रह्मैव भवति" कि ब्रह्म को जानने वाला ब्रह्म ही हो जाता है। और वह (शब्द ब्रह्म) हम सब को ऐसी सामर्थ्य प्रदान करे कि हम उसको जानकर ब्रह्मत्व को प्राप्त करें।



संकेताक्षर सूची

अ०	=	अष्टाध्यायी
अथर्व०	=	अथर्ववेद
उणा०	=	उणादिकोष
ऋ०	=	ऋग्वेद
ऐ०ब्रा०	=	ऐतरेयब्राह्मण
ऐ०आ०	=	ऐतरेयारण्यक
कपि०क०सं०	=	कपिष्ठलकठसंहिता
काठ०सं०	=	काठकसंहिता
काठ०संक०	=	काठकसंकलन
का०शत०ब्रा०	=	काण्वीयशतपथब्राह्मण
कौ०ब्रा०	=	कौषीतकिब्राह्मण
कौ०उप०	=	कौषीतकिब्राह्मणोपनिषद्
गो०ब्रा०	=	गोपथब्राह्मण
छा०उप०	=	छान्दोग्योपनिषद्
जै०ब्रा०	=	जैमिनीयब्राह्मण
जै०उप०	=	जैमिनीयोपनिषद्ब्राह्मण
ता०ब्रा०	=	ताण्ड्यमहाब्राह्मण
तै०ब्रा०	=	तैत्तिरीयब्राह्मण
तै०आ०	=	तैत्तिरीयारण्यक
तै०उप०	=	तैत्तिरीयोपनिषद्
तै०सं०	=	तैत्तिरीयसंहिता
दुर्ग, निरु० वृ०	=	दुर्गकृत, निरुक्तवृत्ति
दै०ब्रा०	=	दैवतब्राह्मण
निघ०	=	आचार्य देवराजयज्वन् कृत, निघण्टुवृत्ति
निरु०	=	यास्क, निरुक्त
शत०ब्रा०	=	शतपथब्राह्मण
मै०सं०	=	मैत्रायणीसंहिता
यजु०	=	यजुर्वेद
शा०ब्रा०	=	शाङ्खायनब्राह्मण
शां०आ०	=	शाङ्खायनारण्यक
ष०ब्रा०	=	षड्विंशब्राह्मण
सा०उ०	=	सामवेद उत्तरार्चिक
सा०पू०	=	सामवेद पूर्वार्चिक
सा०ब्रा०	=	सामविधानब्राह्मण



वैदिकनिर्वचनकोषः

वैदिकनिर्वचनकोष:

अंशु

१. अंशु शमष्टमात्रो भवति। '*शम्*+√'*अश्*'। निरु० २.५

२. अननाय शं भवतीति वा। √'*अन्*'+ *शम्*'। निरु० २.५

अंसत्र

१. अंसत्रमंहस्त्राणं धनुर्वा कवचं वा। '*अंहस्*+√'*त्रा*'। निरु० ५.२५

अंहति

१. अंहतिः हन्तेः। निरूढोपधात् विपरीतात्। √'*हन्*'। निरु० ४.२५

२. हन्तेरहं च। √'हन्'+अति>अंह+अति>अंहति'। उणा० ४.६३

अंहस्

१. हन्तेर्निरूढोपधात् विपरीतात्। √'*हन्*'। निरु० ४.२५

२. अमेर्हुक् च। √'अम्+हुक्(आगमः)+असुन्'। उणा० ४.२१४

अंहुः

१. हन्तेर्निरूढोपधात् विपरीतात्। √'*हन्*'। निरु० ४.२५

अंहुर

१. अंहुरोऽहस्वान्। '*अंहस्*+ र'। निरु० ६.२७

अंहूरण

१. अंहूरणमित्यस्य (अंहस्वान्) भवति। '*अंहस्*+ *रण*'। निरु० ६.२७

अकूपार

१. आदित्योऽप्यकूपार उच्यते। अकूपारो भवति दूरपारः। निरु० ४.१८

२. समुद्रोऽप्यकूपार उच्यते। अकूपारो भवति। महापारः। निरु० ४.१८

३. कच्छपोऽप्यकूपार उच्यते, न कूपमृच्छतीति। (*अकुत्सितपूरण* > *अकुपरण*> *अकूपार*। आचार्य दुर्ग, निरु० वृ० ४.१८) निरु० ४.१८

अक्तु

१. √'अञ्जू' व्यक्तिम्रक्षणकान्तिगतिषु'। अज्यते सिच्यतेऽस्यामवश्यायेन जगत्, गच्छति वा प्रतिदिनम्। √'*अञ्ज्*'। निघ० १.७.४

२. सं वामञ्जन्त्वक्तुभिर्मतीनाम्। √'*अञ्ज्*'। ऋ० ६.६९.३

३. व्यञ्जते दिवो अन्तेष्वक्तून्। √'*अञ्ज्*'। ऋ० ७.७९.२

४. गोभिरञ्जते अक्तुभिः। √'*अञ्ज्*'। सा०उ० १२०९

अक्र

१. अक्र आक्रमणात्। '*आ*+ √'*क्रम्*। निरु० ६.२७

अक्रत

१. अक्रत, अकृषत। √'*कृष्*'। निरु० १२.७

अक्ष

१. अक्ष अश्नुवत एनानिति वा। अभ्यश्नूवत एभिरिति वा (द्यूतः)। √'*अश्*'। निरु० ९.७

२. अक्षो यानस्याञ्जनात्। √'*अञ्ज्* '। निरु० १३.१२

३. अशेर्देवने। √'*अश्*'+ *स*'। उणा० ३.६५

अक्षर

१. ततः क्षरत्यक्षरं तद्विश्वमुपजीवति। √'*क्षर्*'। ऋ० १.१६४.४२

२. सहस्राक्षरा भुवनस्य पङ्क्तिस्तस्याः समुद्रा अधि वि क्षरन्ति। √'*क्षर्*'। अथर्व० १३.१.४२

३. कतमत्तदक्षरमिति। यत् क्षरन्नाक्षीयतेति। इन्द्र इति। '*न*+ √*क्षर्*'। जै०उप० १.१४.२.८

४. तद्यक्षरत्तस्मादक्षरम्। √'*क्षर्*'। शत०ब्रा० ६.१.३.६

५. यदक्षरदेव तस्मादक्षरम्। √'*क्षर्*'। जै०उप० १.७.२.९

६. यद्वेवाक्षरं नाक्षीयत तस्मादक्षरम्। अक्षयं ह वै नामैतत्। तदक्षरमिति परोक्षमाचक्षते। '*न*+ √''*क्षि*'*क्षये* > *अक्षय*> *अक्षर*'। जै०उप० १.७.२.२

७. स (प्राणः) यदेभ्यः सर्वेभ्यो भूतेभ्यः क्षरति, न चैनमतिक्षरन्ति तस्मादक्षरम्। '*न*+ √'*क्षर्*'। ऐ०आ० २.२.२

८. दशधा वा एतद् अतिविध्येमान् क्षरति शतधेमान् सहस्रधेमान् तस्माद् एतद् एवाक्षरं गेयम्। '*न*+ √'*क्षर्*'। जै०ब्रा० २.१०

९. क्षरं क्षरसि। '*न*+ √'*क्षर्*'। जै०ब्रा० २.२५८

१०. अक्षरं न क्षरति। '*न*+ √'*क्षर्*'। निरु० १३.१२

११. न क्षीयते वा। '*न*+ √'*क्षि*' *क्षये*'। निरु० १३.१२

१२. वाक्क्षयो भवति। *'वाक्+ क्षय'*। निरु० १३.१२.९

१३. वाचोक्ष इति वा। *'अक्ष+ र'*। निरु० १३.१२

१४. अक्षरम् (वाक्)। अश्नुते श्रोतुं स्वाभिधेयं व्याप्नोति वा। √*'अश्+ सरन्'*। निघ० १.११.४६

१५. अश्नाति वा हविः। √*'अश्+ सरन्'*। निघ० १.११.४६

१६. अञ्जेर्वा। अनक्ति म्रक्षयति सेचयति वर्षेण भूमिम्। √*'अञ्ज्'+ सरन्'*। निघ० १.११.४६

१७. यद्वा, नञ् पूर्वात् क्षरतेः। न क्षरति सर्वदा सर्वैः प्रयुज्यमानापि न क्षीयत इत्यर्थः। वाग्वै समुद्रो न वै वाक् क्षीयते। *'नञ्+* √*'क्षर्'+ अच्'*। (ऐ०ब्रा० ५.३.१) निघ० १.११.४६

१८. अक्षरम् (उदकम्)। व्याप्नोति जगत्। √*'अश्'+ सरन्'*। निघ० १.१२.३२

१९. अश्यते भुज्यते वा प्राणिभिः। पूर्ववत्। निघ० १.१२.३२

२०. अनक्ति सेचयति भूमिं वा। √*'अंञ्ज्'+ सरन्'*। निघ० १.१२.३२

२१. न क्षरति क्षीयते कदाचिदपि वा। *'नञ्+* √*'क्षर्' या 'नञ्+* √*'क्षि'*। निघ० १.१२.३२

२२. अक्षरं न क्षरं विद्यात्। अश्नोतेर्वा सरोऽक्षरम्। *'नञ्+* √*'क्षर्' अथवा* √*'अश्'+ सरन्'*। महा०भा० प्रत्याहर सूत्र, ७-८

२३. अशेः सरन्। अश्नुते व्याप्नोति अक्षरम्, ब्रह्म वर्णो मोक्षं उदकं वा। √*'अश्'+ सरन्'*। उणा० ३.७०

अक्षाः

१. क्षियति निगमः पूर्वः। सर्वे क्षियति निगमा इति शाकपूणिः। √*'क्षि' निवासगत्योः'*। निरु० ५.३

२. क्षरति निगम उत्तर इत्येके। √*'क्षर्'*। निरु० ५.३

३. अश्नोतेरित्यवमेके। √*'अश्'*। निरु० ५.३

अक्षि

१. तस्मा **अक्षी** नासत्या **विचक्ष** आधत्तं दस्रा भिषजावनर्वन्। √'चक्ष्'। ऋ० १.११६.१६

२. शतं **चक्षाणो अक्षभिर्देवो** वनेषु तुर्वणिः। √ चक्ष् '। ऋ० १.१२८.३

३. अक्षि चष्टेः। √ चक्ष्'। निरु० १.९

४. अनक्तेरित्याग्रायणः। √ *अञ्ज्'*। निरु० १.९

५. अशेर्नित्। √ *अश्'+ क्सि'*। उणा० ३.१५६

अक्षितम्

१. अक्षितम् (उदकम्)। क्षितं क्षयं यस्य न विद्यते, तदक्षितम्। सर्वदा सर्वैरुपभुज्यमानापि स्वमहत्तया उपर्युपरि वर्षणाद्वा क्षयरहितमित्यर्थः। *'नञ्+* √*'क्षि+ क्त'*। निघ० १.१२.७७

अक्षिति

१. श्रद्धैव सकृदिष्टस्याक्षितिः स यः श्रद्दधानो यजते तस्येष्टं न क्षीयते। *'नञ्+* √*'क्षि' क्षये'*। कौ०ब्रा० ७.४

२. अविद्यमाना क्षितिः क्षयो यस्य तत्। *'नञ्+* √ *'क्षि' क्षये'*। दया०ऋ०भा० १.४०.४

अगोह्य

१. अगोह्य आदित्योऽगूहनीयः। *'नञ्+* √*'गूह्'*। निरु० ११.१६

अग्नायी

१. अग्नाय्यग्नेः पत्नी। *'अग्नि+ पत्नी'*। निरु० ९.३३, १२.४६

अग्नि

१. **अग्निर्जम्भैस्तिगितैरत्ति**। √ *अद्'*। ऋ० १.१४३.५

२. यदङ्ग दाशुषे त्वमग्ने भद्रं करिष्यसि। तवेतत्सत्य-**मङ्गिरः**। *अङ्गि* > *अग्नि*। ऋ० १.१.६

३. देवेभिरग्ने **अग्निभिरिधानः**। √ इन्ध् '। ऋ० ६.११.६

४. विश्वेभिरग्ने **अग्निभिरिधानः**। √ इन्ध्'। ऋ० ६.१२.६

५. **अग्निमिन्धानो** मनसा धियं सचेत मर्त्यः। **अग्निमीधे** विवस्विभिः। √ इन्ध्'। ऋ० ८.१०२.२२

६. **अग्ने नय** सुपथा। √ *नी'*। यजु० ५.३६, ४०.१६

७. तद्वा एनमेतदग्रे देवानाम् (प्रजापतिः) अजनयत। तस्मादग्निरग्रिर्ह वै नामैतद्यदग्निरिति। *'अग्रि>अग्नि'*। शत०ब्रा० २.२.४.२

८. स यदस्य सर्वस्याग्रमसृज्यत तस्मादग्रिरग्रिर्ह वै तमग्निरित्याचक्षते परोक्षम्। *'अग्रि>अग्नि'*। शत०ब्रा० ६.१.१.११

९. अग्निः कस्माद्? अग्रणीर्भवति। अग्रं यज्ञेषु प्रणीयते। *'अग्र+* √*'नी'*। निरु० ७.४

१०. अङ्गं नयति सन्नममानः। *'अङ्ग+* √ *नी'*। निरु० ७.४

११. अक्नोपनो भवतीति स्थौलष्ठीविः। न क्नोपयति न स्नेहयति। 'न+ √ क्नूय्'। निरु० ७.४

१२. त्रिभ्य आख्यातेभ्यो जायते इति शाकपूणिः। इतात् अक्तात् दग्धाद्वा नीतात्। स खल्वेतेरकारमादत्ते गकारमनक्तेर्वा दहतेर्वा नीपरः। √ इण्'+ √ अञ्ज्' या √ दह्'+ √ नी'। निरु० ७.४

१३. अग्नेर्गतिकर्मणाम्। √ अग्'। निरु० ७.४

१४. अग्राद्युपपदात् नयतेः। *'अग्र+ √ नी'+ क्विप्''*। निघ० ५.१.१

१५. अङ्गेर्नलोपश्च। *अङ्ग+ √ नि'*। उणा० ४.५१

अग्निष्टोम

१. स वा एषोऽग्निरेव यदग्निष्टोमस्तं यदस्तुवंस्तस्मादग्निस्तोमस्तमग्निस्तोमं सन्तमग्निष्टोममित्याचक्षते परोक्षेण परोक्षप्रिया इव हि देवाः। *'अग्नि+ √ स्तु > अग्निस्तोम> अग्निष्टोम'*। ऐ०ब्रा० ३.४३

अग्निहोत्र

१. ब्रह्माजुहोत् सत्यमजुहोदमुमेव तदादित्यमजुहोदेष ह्येवाग्निहोत्रम्। *अग्नि+ √'हु*। काठ० ६.१

२. होत्रा वै देवेभ्योऽपक्रामन्नग्निहोत्रे भागधेयमिच्छमाना यदग्निहोत्रमत्याह तेन होत्रा आभजति तेनैना भगिनीः करोत्येषा वा अग्रेऽग्ना आहूतिराहूयत तदग्निहोत्रस्याग्निहोत्रस्याग्निहोत्रत्वम्। *अग्नि+ √ ह्वेञ्'*। मै०सं० १.८.१

अग्र

१. अग्रमागतं भवति। *'आ+ √ गम्'*। निरु० ६.३

२. ऋजेन्द्राग्रवज्रविप्रकुब्रचुब्र०। *अङ्ग+ रन् (निपातनात्)*। उणा० २.२९

अग्रिय

१. अग्रिय अग्रगमनेनेति वा। *(प्रत्यार्थप्रदर्शनम्)*। निरु० ६.१६

२. अग्रसंपादिन इति वा। *(प्रत्यार्थप्रदर्शनम्)*। निरु० ६.१६

३. अपि वाग्रमित्येतदनर्थकमुपबन्धमाददीत। *'अग्र> अग्रिय'*। निरु० ६.१६

अग्रुवः

१. अग्रुवः (नद्यः)। गच्छति तास्तान् प्रदेशान्। *√ अह्+ रु+ उवङ्'*। निघ० १.१३.१४

२. अग्रुवः (अङ्गुल्यः)। गच्छति कर्माणि प्रति। *√ अह्'+ रु+ उवङ्'*। निघ० १.१३.१४

३. यद्वा, अग्रशब्द उपपदे गमेः। अग्रे गच्छन्ति ताः। *'अग्र+ √ गम्'+ रु '*। निघ० २.५.१

अग्रेगू

१. ता यत् समुद्रं गच्छन्ति (आपः) तेनाग्रेगुवः। *'अग्रे+ √ गम्'*। शत०ब्रा० १.१.३.७

२. अग्रे गच्छतीति अंग्रेगूः सेवको वा। *'अग्र+ √'गम्'*। उणा० २.६९

अघ

१. जहि यो नो अघायति शृणुष्व सुश्रवस्तमः। √'हन्'। ऋ० १.१३१.७

२. अघं हन्तेः। निर्ह्रसितोपसर्गः। आहन्तीति। *'आ+ √' हन्'*। निरु० ६.११

३. पुल्वघः बह्वादी। *√'घस्' या √'अद्'*। निरु० ६.११

अघशंस

१. अघस्य शंसितारम्। *'अघ+ √'शंस्'*। निरु० ६.११

२. अघशंसः। आङ्पूर्वात् हन्तेः। आहन्ता, वधस्वभावः, आशंसमानश्च। *'आ+ √'हन्'+ √'शंस्'*। निघ० ३.२४.१३

अघ्न्या

१. अघ्न्याऽ हन्तव्या। *'न+ √'हन्' या 'अघ+ √'हन्'*। निघ० २.११.१

२. अघ्न्यादयश्च। *'न+ √'हन्+ यक्'*। उणा० ४.११३

अङ्कस्

१. अङ्कोऽञ्चतेः। *√'अञ्च्*। निरु० २.२८

२. अञ्च्यञ्जियुजिभृजिभ्यः कुश्च। *√'अञ्च्+ असुन्> अङ्क+ अस्> अङ्कस्*। उणा० ४.२१७

अङ्कुश

१. अङ्कुशोऽञ्चतेः। *√'अञ्च्'*। निरु० ५..२८

२. आकुञ्चितो भवतीति वा। *आ+ √'कुञ्च्'*। निरु० ५.२८

३. सानसिवर्णसिपर्णसितण्डुलाङ्कुशचषालेल्वल पल्वलधिष्ण्यशल्या:। √'अङ्क'+ उशच् (*निपातनात्*)। उणा० ४.१०८

अङ्ग

१. अङ्गमङ्गनात्। √'*अग्*'। निरु० ४.३

२. अञ्चनाद्वा। √'*अञ्च्*'। निरु० ४.३

३. अङ्ग इति क्षिप्रनाम। अङ्गि तमेवाञ्चितं भवति। √'*अञ्च्*'। निरु० ५.१७

४. अन्च्यञ्जियुजिभृजिभ्य: कुश्च। √'*अञ्ज्*'+ *असुन्> अङ्ग+ अस> अङ्गस्*'। उणा० ४.२१७

अङ्गार

१. अङ्गारा अङ्गना अञ्चना:। '*अञ्चन अङ्गन> अङ्गार*'। निरु० ३.१७

२. अङ्गिमदिमन्दिभ्य आरन्। √'*अङ्ग* '+ *आरन्*'। उणा० ३.१३४

अङ्गिरस्

१. तं वरुणं मृत्युमभ्यश्राम्यदभ्यतपत् समतपत् तस्य श्रान्तस्य तप्तस्य संतप्तस्य सर्वेभ्योऽङ्गेभ्यो रसोऽक्षरत्, सोऽङ्गरसोऽ भवत्तं वा एतमङ्गरस सन्तमङ्गिरा इत्याचक्षते। '*अङ्ग+ रस> अङ्गिरस्*'। गो०ब्रा० १.१.७

२. अङ्गारेष्वङ्गिरा:। अङ्गारा अङ्गना:। '*अङ्गन> अङ्गार> अङ्गिरस्*'। निरु० ३.१७

३. अङ्गेषु रममाण:। '*अङ्ग+* √'*रम्*'। दया०ऋ० भा० ५.८.४

४. अङ्गिरा:। √'*अङ्ग+ इरुड् (आगम:) असि*'। उणा० ४.२३७

अङ्गुलि

१. अङ्गुल्यं कस्माद्? अग्रगामिन्यो भवन्ति। '*अग्र+* √'*गम्*। निरु० ३.८

२. अग्रगालिन्यो भवन्तीति वा। '*अग्र+* √'*गल्*। निरु० ३.८

३. अग्रकारिण्यो भवन्तीति वा। '*अग्र+* √'*कृ*। निरु० ३.८

४. अग्रसारिण्यो भवन्तीति वा। '*अग्र+* √'*सृ*। निरु० ३.८

५. अङ्कना भवन्तीति वा। '*अङ्क> अङ्कन >अङ्गुलि*'। निरु० ३.८

६. अञ्चना भवन्तीति वा। '*अञ्च्> अञ्चन> अङ्गुलि*'। निरु० ३.८

७. अपि वाभ्यञ्जनादेव स्यु:। √'*अञ्ज्*'। निरु० ३.८

८. ऋतन्यञ्जिवन्यञ्ज्यर्पिमद्यत्यङ्गिकुयुकृशिभ्य:। √*अङ्ग+ उलि*'। उणा० ४.२

अच्छ

१. अच्छाभेराप्तुमिति शाकपूणि:। √'*आप्*'। निरु० ५.२८

२. अच्छान्, अचच्छदत्। √'छद्'। निरु० ९.८

अच्छान्त

१. **अच्छान्त** मे छदयथा च नूनम्। √'छद्'। ऋ० १.१६५.४

अच्युत

१. उत **च्यवन्ते अच्युता** ध्रुवाणि। **प्राच्यावयदच्युता** ब्रह्मणस्पति:। √'*च्युङ्' गतौ*'। ऋ० २.२४.२

२. त्वं हि ष्मा **च्यावयन्नच्युतानि**। √'*च्युङ्' गतौ*'। ऋ० ३.३०.४

३. **अच्युता चिच्यावयन्ते** रजांसि। √'*च्युङ्' गतौ*'। ऋ० ६.३१.२

अज, अजा

१. **अजा** ह्यग्नेरजनिष्ट शोकात्सोऽ अपश्यज्जनितारमग्रे। √'जन्'। यजु० १३.५१; अथर्व० ४.१४.१

२. आहम**जानि** गर्भधमा त्व**मजासि** गर्भधम्। √'जन्'। यजु० २३.१९

३. आजा ह वै नामैषा यदजैतया ह्येनं (सोमम्) अन्तत आजति तामेतत् परोऽक्षमजेत्याचक्षते। '*आ+* √'*अज्*'। शत०ब्रा० ३.३.३.९

४. अजा ह्यग्नेरजनिष्ट गर्भात्। √'*जन्*'। तै०सं० ४.२.१०.४

५. अजा ह्यग्नेरजनिष्ट शोकात्। √'*जन्*'। मै०सं० २.७.१७; काठ० १६.१७

६. अजा अजना:। '*न+* √'*जन्*'। निरु० ४.२५

७. अजा:। √'अज' गतिक्षेपणयो:'। अजन्ति गच्छन्ति सर्वत: क्षिपन्ति वा तम:। √'*अज्*'। निघ० १.१५.५

अज एकपाद

१. अज एकपादजन एक: पाद:। '*न+* √'*जन्+ एक+ पाद*'। निरु० १२.२९

२. एकेन पादेन पातीति वा। '*एक+* √'*पा*'। निरु० १२.२९

३. एकेन पादेन पिबतीति वा। *'एक+√'पा'*। निरु० १२.२९

४. एकोऽस्य पाद इति वा। *'एक+ पाद'*। निरु० १२.२९

अजगन्

१. अजगन्, अगमः। √*'गम्'*। निरु० ४.१४

अजगन्तन

१. अजगन्तन, अजगमत। √*'गम्'*। निरु० १३.३

अजर

१. जरमजरणधर्माणम्। √*'जॄ'*। निरु० ४.२७

२. अजरमजीर्णम्। √*'जॄ'*। निरु० ४.२७

अजिर

१. अजिराः √'अज' गतिक्षेपणयोः'। अजन्ति गच्छन्ति क्षिप्यन्ते प्रेर्य्यन्ते आसु नाव इति। √*''अज'+ किरच्'*। निघ० १.१३.३५

२. अजिरम् (क्षिप्रम्)। 'अज गतिक्षेपणयोः'। क्षिपति फलोत्पत्तिमाघम्। √*'अज'+ किरच्'*। निघ० २.१५.३

३. अजिरशिशिरशिथिलस्थिरस्फिरस्थविरखदिराः। √*'अज'+ किरच्'*। उणा० १.५३

अजीगः

१. अजीगः अगारीः जिगर्तिः। √*'गॄ'*। निरु० ६.८

२. गिरतिकर्मा वा। √*'गॄ'* निरु० ६.८

३. गृह्णातिकर्मा वा। √*'ग्रह्'*। निरु० ६.८

अजुर्य

१. यः सुनीथो ददाशुषेऽजुर्यो जरयन्नरिम्। √*'जॄ'*। ऋ० २.८.२

२. इन्द्रमजुर्यं जरयन्तमुक्षितम्। √*'जॄ'*। ऋ० २.१६.१

अज्म

१. अज्ममजनिमाज़िमश्वाः। √*'अज्'*। निरु० ४.१३

२. अज्म (गृहम्)। अस्तवदर्थः। √*'अज्'+ मन्'*। निघ० ३.४.२२

३. अज्म (सङ्ग्रामः)। 'अज' गतिक्षेपणयोः। √*'अज'+ मनिन्'*। निघ० २.१७.४३

अज्र

१. वि यदज्राँ अजथ नाव ईम्। √*'अज्'*। ऋ० ५.५४.४

अञ्जि

१. चित्रैरञ्जिभिर्वपुषे व्यञ्जते वक्षःसु। √*'अञ्ज्'*। ऋ० १.६४.४

२. जुष्टतमासो नृतमासो अञ्जिभिर्व्यानज्रे। √*'अञ्ज्'*। ऋ० १.८७.१

३. सूर्य्यस्याञ्ज्यङ्क्ते समन गा इव व्राः। √*'अञ्ज्'*। ऋ० १.१२४.८

४. अञ्ज्यञ्जाना अभि चाकशीमि। √*'अञ्ज्'*। ऋ० ४.५८.९; यजु० १७.९७

५. समानमञ्ज्यञ्जते शुभे कम्। √*'अञ्ज्'*। ऋ० ७.५७.३

६. सूनरो युवाञ्ज्यङ्क्ते हिरण्ययम्। √*'अञ्ज्'*। ऋ० ८.२९.९

अणु

१. अणुरनु स्थवीयांसम्। उपसर्गो लुप्तनामकरणः। √*'अणु> अनु'*। निरु० ६.२२

२. अणश्च। √*'अण्+ उ'*। उणा० १.८

अण्व्यः

१. अण्व्यः (अङ्गुल्यः)। अणति शब्दार्थः। अणन्ति स्फोटनादिशब्दं कुर्वन्ति, तालादिशब्दं कुर्वन्त्याभिरिति वा। √*'अण्+ उ'*। निघ० २.५.२

२. यद्वा, अण्व्यः हस्तपरिमाणापेक्षयाल्पपरिमाणाः। *'अण्व्य> अणु'*। निघ० २.५.२

अतिच्छन्दस्

१. उदरमतिच्छन्दाः पशवो वै छन्दाꣳस्यन्नं पशव उदरं वाऽ अन्नमत्त्युदरꣳहि वाऽन्नमत्ति तस्माद्यदोदरमन्नं प्राप्नोत्यथ तज्जग्धं यातयामरूपं भवति तद्यदेषा पशूञ्छन्दाꣳस्यत्ति तस्मादत्तिछन्दा अत्तिछन्दा ह वै तामतिच्छन्दा इत्याचक्षते परोक्षम्। √*'अद्+ छन्दस्> अत्तिछन्दस्> अतिछन्दस्'*। शत०ब्रा० ८.६.२.१३

२. अतिच्छन्दा वै छदिश्छन्दः सा हि सर्वाणि च्छन्दाꣳसि च्छादयति। *अति+* √*'छद्'*। शत०ब्रा० ८.२.४.५

३. छन्दसां वै यो रसोऽत्यक्षरत् सोऽतिछन्दसमभ्यत्यक्षरत् तदतिछन्दसोऽ तिछन्दस्त्वम्। *'अति+ √क्षर्'*। ऐ०ब्रा० ४.३

४. साध्याश्चाप्त्याश्चातिच्छन्दसं समभरन्। तां ते प्राविशन् (मृत्योरात्मनो गुप्त्यर्थम्)। तान् सा (अतिच्छन्दाः) अछादयत्। '*अति+ √छद्*'। जै०ब्रा० १.२८३

५. अति वा एषो अन्यानि छन्दांसि यद् अतिछन्दाः। '*अति+ √छद्*'। जै०ब्रा० २.३९२

६. अति वा एषोऽन्यानि छन्दांसि यद् अतिच्छन्दाः। '*अति+ √छद्*'। जै०ब्रा० २.४१२

अतिथि

१. अतिथिरभ्यतितो भवति। √ '*अत्*'। निरु० ४.५

२. अभ्येति तिथिषु परकुलानीति वा। '*अभि+ तिथि*'। निरु० ४.५

३. अभ्येति तिथिषु परगृहाणीति वा। '*अभि+ तिथि*'। निरु० ४.५

४. ऋतन्यञ्जिवन्यञ्ज्यर्पिमद्यत्यङ्गिकुयुकृशिभ्यः। √ '*अत्+ इथिन्*'। उणा० ४.२

अतूर्त

१. अतूर्तो होतेत्याह न ह्येतं (अग्निम्) कश्चन तरति। '*न+ √ 'तॄ*'। तै०सं० २.५.९.२-३

२. अयं वा अग्निरतूर्तो होतेमं ह न कश्चन तिर्यञ्चं तरति। '*न+ √तॄ*'। ऐ०ब्रा० २.३४

३. न ह्येतं (अग्निम्) रक्षांसि तरन्ति, तस्मादाहातूर्तो होतेति। '*न+ √तॄ*'। शत०ब्रा० १.४.२.१२

४. अतूर्ण इति वा। 'न+√त्वर्'। निरु० ९.१०;१०.३२

५. अत्वरमाण इति वा। '*न+ √त्वर्*'। निरु० ९.१०; १०.३२;११.२३

अत्नत

१. अत्नत, अतनिषत। √*तन्*। निरु० १२.३४

अत्य

१. अत्योऽसीत्याह। तस्मादश्वः सर्वान् पशूनत्येति, तस्मादश्वः सर्वेषां पशूनां श्रेष्ठ्यं गच्छति। '*अति+ √इ*'। तै०सं० ३.८.९.१ (तुल०शत०ब्रा० १३.१.६.१)

२. अत्या अतनाः। √'*अत' सातत्यगमने*'। निरु० ४.१३

३. अत्यः (अश्वः)। 'अत'सातत्यगमने'। अतति सततं गच्छति, गच्छत्यनेनास्वारोह इति वा। √'*अत*'+ *यत्*'। निघ० १.१४.१

अत्रि

१. अथाकामयतात्रिर्भूयिष्ठा म ऋषयः प्रजायां जायेरन्निति, स एतं त्रिणवं स्तोममपश्यत्तमाहरत्तेनायजन्त। '*न+ त्रि*'। जै०ब्रा० २.२१९

२. वागेवात्रिर्वाचा ह्यन्नमद्यतेऽत्तिर्हि वै नामैतद्यत्रिभिरिति। √'*अद्*'। शत०ब्रा० १४.५.२.६

३. स यदिदं सर्वं पाप्मनोऽत्रायत यदिदं किञ्च तस्मादत्रयस्तस्मादत्रय इत्याचक्षत एतमेव (प्राणं) सन्तम्। √'*त्रैङ्' पालने*'। ऐ०आ० २.२.१

४. तद्धैतद्देवाः। रेतः (वाचः सकाशात् पतितं गर्भम्) चर्मन् वा यस्मिन् वा बभ्रुस्तद्ध स्म पृच्छन्त्यत्रैव त्याइदिति ततोऽत्रिः सम्बभूव। '*अत्र+ त्य> अत्रि*'। शत०ब्रा० १.४.५.१३

५. अत्रैव तृतीयमृच्छतेत्यूचुस्तस्मादत्रिः। '*अत्रैव+ तृतीयम् > अत्रि*'। निरु० ३.१७

६. अथवा न त्रयः इति। '*न+ त्रि*'। निरु० ३.१७

७. अदेस्त्रिनिश्च। √'*अद्*'+ *त्रिप्*'। उणा० ४.६९

अथरी (अथर्यः)

१. अथर्यः (अङ्गुल्यः)। 'अत' सातत्यगमने'। √'*अत*'+ *इन्+ ङीप्> अथर्+ इन्+ ई> अथरी*'। निघ० २.५.८

अथर्यु

१. अथर्युमतनवन्तम्। √'*अत*'। निरु० ५.१०

अथर्वन्

१. तद्यदब्रवीदथार्वाङेनमेतास्वेवाप्स्वन्विच्छेति तदथर्वाऽभवत् तदथर्वाणोऽथर्वत्वम्। '*अथ+ अर्वाङ्> अथर्वन्*'। गो०ब्रा० १.१.४

२. अथर्वाणोऽथनवन्तः। थर्वतिश्चरतिकर्मा तत्प्रतिषेधः। '*न+ √'थर्व्*'। निरु० ११.१८

अदत्र

१. अदत्रया दयते वार्याणि। √'*दय्*'। ऋ० ५.४९.३

अदन्तक

१. तस्य दन्ताः परोप्यन्त तस्मादाहुरदन्तकः पूषा। '*न+ दन्त*'। गो०ब्रा० २.१.२

अदाभ्य

१. तानसुरान् (देवाः) आदभ्नुवꣳस्तदाभ्यस्यादाभ्यत्वम्। 'आ+ √'दम्भ्'। मै०सं० ४.७.७

२. तेऽब्रुवन्नदभन्न इति तदस्यादाभ्यत्वमथो यदेनान् दब्धुं नाशक्नुवꣳस्तदस्यादाभ्यत्वम्। 'न+ √'दम्भ्'। -काठ० ३०.७

३. ते (देवाः) होचुः। अदभाम वा एनान् (असुरान्) इति तस्माददाभ्यो न वै (असुराः) नोऽदभन्निति तस्माददाभ्यो वाग्वाऽ अदाभ्यः। √'दम्भ्'। शत०ब्रा० ११.५.९.५

४. यद्वै देवा असुरान् अदाभ्येनादभ्नुवन् तदाभ्यस्यादाभ्यत्वम्। √'दम्भ्'। तै०सं० ६.६.९.१

अदिति

१. इयं (पृथिवी) वा अदितिः। इयꣳ हीदं सर्वं ददते। √'दा'। शत०ब्रा० ७.४.२.७

२. सर्वं वाऽ अत्तीति तददितेरदितित्वम्। √'अद्'। शत०ब्रा० १०.६.५.५

३. यत्तदादत्त तददितिः। 'आ+ √'दा'। काठ० ८.२

४. अदितिरदीना देवमाता। 'न+ √'दो' अवखण्डने'। अथवा 'न+ √'दीङ्'क्षये'। निरु० ४.२२

५. अदीनानीति वा। 'न+ √'दीङ्' क्षये'। निरु० ४.२३

६. अदितिः (पृथिवी)। √'दीङ्'क्षये'। अदितिः सकलप्रपञ्चधारणेष्वदीना न खिद्यते इत्यर्थः। 'न+ √'दीङ्' क्षये + क्तिन्'। निघ० १.१.१४

७. अदितिः (वाक्)। अदीना, सर्वदा सर्वैः प्रयुज्यमानापि न क्षीयत इत्यर्थः। 'न+ √'दीङ्' क्षये'+ क्तिन् निघ० १.११.४८

८. अदितिः (द्यावापृथिव्यौ)। देवमनुष्यसकलप्रपञ्चधारणेऽप्यदीने। 'न+ √'दीङ्' क्षये'+ क्तिन्'। निघ० ३.३०.२१

९. अदितिः (गौः)। पुनः पुनः दुह्यमानापि न क्षीयते। 'न+ 'दीङ्'क्षये'+ क्तिन्'। निघ० २.११.६

१०. न द्यति अखण्डनीया वा। 'न+ √'दीङ्'क्षये'+ क्तिन्'। निघ० २.११.६

अद्धातयः

१. अद्धातयः (मेधाविनः)। अद्धेति सत्यनाम। अततेरतयः। सत्यं प्राप्नोति सत्यं जानाति वा। √'अत 'सातत्यगमने'। निघ० ३.१५.२१

अद्भुत

१. स हि क्रतुः स मर्यः स साधुर्मित्रो न भूदद्भूतस्य रथीः। 'न+ √'भू'। ऋ० १.७७.३

२. अद्भुतमभूतम्। इदमपीतरदद्भुतमभूतमिव। 'न+ √'भू'+ क्त> अभूत> अद्भुत'। निरु० १.६

३. अद्भुतम् (महत्)। 'भू' सत्तायाम्'। 'अद् (अव्ययम्) + √'भू'+ डुतच्'। निघ० ३.३.२३

४. अदित्याश्चर्यार्थोऽव्ययम्। तत्र सम्पूर्वाद् बिभर्तेर्वा। सम्यक् पोषितो धनादिभिः, सम्यक् बिभर्त्त्याश्रितेनेति वा। 'अद्+ सम्+ √'भृ'+ डुतच्'। निघ० ३.३.२३

५. अदिभुवो डुतच्। 'अद्+ √'भू'+ डुतच्'। उणा० .५.१

अद्मसद्

१. अद्मसत्। अद्मात्रं भवति। अद्मसादिनीति वा। √'अद्'+ √'सादय्'। निरु० ४.१६

२. अद्मसानिनीति वा। √'अद्'+ √'सानय्'। निरु० ४.१६

अद्य

१. अस्मिन् द्यवि। 'अस्मिन्+ द्यु'। निरु० १.६

अद्रि

१. ते मर्मृजत ददृवांसो अद्रिम्। √'दृ'। ऋ० ४.१.१४

२. अद्रिव आ वाजं दर्षि सातये। √'दृ'। ऋ० ५.३९.३

३. अद्रिरादृणात्यनेन। 'आ+ √'दृ'। निरु० ४.४

४. अपि वा अत्तेः स्यात्। √'अद्'। निरु० ४.४

५. अद्रयः पर्वताः आदरणीयाः। आ+ √'दृ'। नि० ६.६.

६. अद्रिः (मेघः) अत्ति हि मेघो वर्षार्थमादित्यरश्मिभिराहृतान् भौमरसान्। √'अद्'+ क्रिन्'। निघ० १.१०.१।

७. अत्ति मेघैरभिवृष्टं जलम्। √अद्'+ क्रिन्'। निघ० १.१०.१

८. अद्यते वा प्राणिभिस्तत्प्रभवपदार्थभक्षणं तत्रोपचर्य्यते। √'अद्'+ क्रिन्'। निघ० १.१०.१

९. अदन्त्यस्मिन् पदार्थान् मनुष्या इति वा। √'अद्'+ *क्रिन्*'। निघ० १.१०.१

१०. यद्वा, नञ् पूर्वात् √'दृ' विदारणे'। अदरणीय इत्यद्रिः पर्वतः। '*न*+ √'*दृ*'+ *क्रिन्*'। निघ० १.१०.१

अधर

१. अधरोऽधोरः। '*अधस्*+ √'*ऋ*', अथवा *रो* मत्वर्थीयः, *अधस्*+ *र*'। निरु० २.११

अधस्,अधा

१. **अधा** मन्ये श्रत्ते अस्मा **अधायि**। √'*धा*'। ऋ० १.१०४.७

२. अधो न धावतीत्यूर्ध्वगतिः प्रतिषिद्धा। '*न*+ √'*धाव्*'। निरु० २.११

अधायि

१. अधायि, अध्यायि। √'*ध्यै' चिन्तायाम्*'। निरु० ६.२२

अधि

१. अस्मे सोम श्रियमधि नि धेहि शतस्य नृणाम्। √'*धा*'। ऋ० १.४३.७

२. स शेवृधमधि धा द्युम्नमस्मे। √'*धा*'। ऋ० १.५४.११

३. अधि श्रियं नि दधुश्चारुमस्मिन्। √'*धा*'। ऋ० १.७२.१०

४. अधि द्युम्नं दधुर्भूर्य्यस्मिन्। √'*धा*'। ऋ० १.७३.४

५. अधि द्वयोरधा उक्थ्यं वचः। √'*धा*'। ऋ० १.८३.३

६. अधि श्रियो दधिरे पृश्निमातरः। √'*धा*'। ऋ० १.८५.२

७. दिवे दिवे अधि नामा दधाना। √'*धा*'। ऋ० १.१२३.४

८. विश्वान् केताँ अधि महो दधाने। √'*धा*'। ऋ० १.१४६.३

९. अधि वयो न पक्षान्व्यनु श्रियो धिरे। √'*धा*'। ऋ० १.१६६.१०

१०. विश्वा अधि श्रियो दधे। √'*धा*'। ऋ० २.८.५

११. अपांसि यस्मिन्नधि संदधुः। √'*धा*'। ऋ० ३.३.३

१२. श्रेष्ठं वः पेशो अधि धायि दर्शतम्। √'*धा*'। ऋ० ४.३६.७

१३. दिवि न केतुरधि धायि। √'*धा*'। ऋ० १०.९६.४

१४. विश्वा अधि श्रियोऽधित। √'*धा*'। ऋ० १०.१२७.१

१५. मासां विधानमदधा अधि। √'*धा*'। ऋ० १.१३८.६

अधिवक्ता

१. **अध्यवोचदधिवक्ता** प्रथमो दैव्यो भिषक्। '*अधि*+ √'*वच्*'। यजु० १६.५

अधोराम

१. अधोरामः सावित्रः। अधस्तात् तद्वेलायां तमो भवत्येतस्मात् सामान्यात्। अधस्ताद् रामो अधस्ताद् कृष्णः। '*अधस्*+ *राम*'। निरु० १२.१३

अध्रिगु

१. अध्रिगुर्मन्त्रो भवति गव्यधिकृतत्वात्। '*अधि*+ *गो*'। निरु० ५.११

२. अपि वा प्रशासनमेवाभिप्रेतं स्यात्, शब्दवत्त्वात्। '*अधि*+ *गो*'। निरु० ५.११

३. अग्निरप्यध्रिगुरुच्यते। अधृतगमनकर्मवान्। '*न*+ *धृ*> *अध्रि*, *गु*= √'*गाङ्*'*गतौ*'। निरु० ५.११

अध्वर

१. अध्वर्तव्या वा इमे देवा अभूवन्निति तदध्वरस्याध्वरत्वम्। '*न*+ √'*ध्वृ*'। तै०सं० ३.२.३.२

२. ते (असुराः) ऽध्वृतोऽयमभूदित्यपक्रामँ स्तदध्वर-स्याध्वरत्वम्। '*न*+ √'*ध्वृ*'। मै०सं० ३.६.१०

३. देवान्ह वै यज्ञेन यजमानान्त्सपत्ना असुरा दुधूर्षाञ्चक्रुः, ते दुधूर्षन्तः एव न शेकुर्धूर्वितं ते पुरा बभूवुस्तस्माद्यज्ञोऽध्वरो नाम। *न*+ √'*धूर्व्*'। शत०ब्रा० १.४.१.४०

४. अध्वर इति यज्ञनाम। ध्वरतिर्हिंसाकर्मा, तत्प्रतिषेधः। '*न*+ √'*ध्वृ*'। निरु० १.८

५. अध्वरम् (अन्तरिक्षम्)। अध्वानं मार्गं राति ददाति स्वस्मिन् गच्छतां पक्ष्यादीनाम्। '*अध्व*+ √'*रा*'। निघ० १.३.१६

६. यद्वा, अध्वा मार्गो विद्यतेऽस्मिन् मेघादीनाम्। रो मत्वर्थीयः। '*अध्व*+ *र (मत्वर्थीयः)*'। निघ० १.३.१६

७. यद्वा, ध्वरतिर्हिंसाकर्मा, तत्प्रतिषेधः। अध्वर्तव्यं न हिंस्यमित्यर्थः। '*न*+ '*ध्वृ*'+ *घ*'। निघ० १.३.१६

८. अध्वरः (यज्ञः)। नञ् पूर्वात् ध्वरतेर्वधकर्मणः। ध्वरा हिंसा, तदभावो यत्र। '*न*+ √'*ध्वृ*'+ *घ*'। निघ० ३.१७.३

९. अथवा षष्ठ्यर्थे बहुव्रीहिः। अविद्यमानोऽध्वरो यस्य सोऽध्वरः, रक्षोभिरहिंसितः। '*न*+ √*ध्वर*'। निघ० ३.१७.३

अध्वा

१. अध्वा (अन्तरिक्षम्)। √'अद' भक्षणे'। अदनं स्वस्तिगच्छतां पक्ष्यादीनां विषमस्थानाभावात्। *√'अद'+ वनिप्> अध्+ वन्> अध्वन्'*। निघ० १.३.१२

२. यद्वा, अधिर्गत्यर्थः कश्चिद्धातुः। गच्छन्त्यस्मिन् देवादय इत्यध्वा। अधेर्गतिक्रियात्— इति माधवः। *√'अध्'+ वनिप्'*। निघ० १.३.१२

३. यद्वा, अध्वा मार्गोऽस्मिन् विद्यते, सन्ति ह्याकाशे मेघपथादयः। सततं गच्छन्त्यत्र सूर्यादय इत्यध्वा। *'अध्वन् (मत्वर्थीयस्य लुक्)'*। निघ० १.३.१२

अध्वर्यु

१. अग्निर्वै देवेभ्योऽपाक्रामत्, स प्रत्यङ्ङुद्रवत्, तस्मादध्वर्युः, प्रत्यङ्मुखोऽग्निं मन्थति। *√'द्रु'*। काठ०संक० २०

२. अध्वर्युरध्वरयुः। अध्वरं युनक्ति। अध्वरस्य नेता। अध्वरं कामयत इति वा। *'अध्वर+ √'युज्'+> अध्वरयु> अध्वर्यु'*। निरु० १.८

३. अपि वाऽधीयाने युरुपबन्धः। *'अध्वर+ यु'*। निरु० १.८

४. मृगय्वादयश्च। *'अध्वर+ √'या'+ कु (निपातनात्)'*। उणा० १.१८

अनडुह्

१. दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वान्। *'अन+ √'वह्'*। यजु० २२.२२

अनभिशस्त

१. अनभिशस्ताः (प्रशस्यम्)। *√'शस्त' हिंसायाम्'*। निघ० ३.८.५

अनर्वा

१. अनर्वा अप्रत्यृतोऽन्यस्मिन्। *'न+ √'ऋ'*। निरु० ६.२३

२. अनर्वमप्रत्यृतमन्यस्मिन्। *'न+ √'ऋ'*। निरु० ४.२७

अनर्शरातिम्

१. अनर्शरातिमनश्लीलदानम्। अश्लीलं पापकम्। *(अर्थप्रदर्शनमात्रम्)*। निरु० ६.२३

अनवब्रवः

१. अनवब्रवोऽनवक्षिप्तवचनः। *'न+ अव+ √'ब्रू'*। निरु० ६.२९

अनवाय

१. अनवायमनवयवम्। यदन्ये न व्यवेयुः। *'न+ अव+ √इ'*। निरु० ६.११

अनस्

१. अनो वायुरनितेः। *√'अन 'प्राणने'*। निरु० ११.४७

२. अनः शकटम्। आनद्धमस्मिंश्चीवरम्। *'आ+ √'नह्'*। निरु० ११.४७

३. अनितेर्वा स्यात्, जीवनकर्मणः। उपजीवन्त्येनत्। *√'अन' प्राणने'*। निरु० ११.४७

अनु

१. शतैनमन्वनोनवुरिन्द्राय ब्रह्मोद्यतमर्चन्ननु स्वराज्यम्। *√'णु 'स्तुतौ'*। ऋ० १.८०.९

२. यः पूर्वीरन्वानोनवीति। *'आ+ √णु 'स्तुतौ'*। ऋ० १०.६८.१२

३. अनवः मनुष्याः)। 'अन' प्राणने'। ज्ञानवत्वादेतेषां धर्माद्यनुष्ठानात् फलवत्त्वात् अनन्तीत्युच्यन्ते। *√'अन्'+ उ'*। निघ० २.३.१९

अनुपानीय

१. एताभिर्वा इन्द्रस्तृतीयसवनमन्वपिबत् तदनुपानीयानामनुपानीयत्वम्। *'अनु+ √'पा 'पाने'*। ऐ०ब्रा० ३.३८

अनुमति

१. **अन्विदनुमते त्वं मन्यासै**। *'अनु+ √'मन्'*। यजु० ३४.८

२. अनु नोऽद्यानुमतिर्यज्ञन्देवेषु **मन्यताम्**। *'अनु+ √'मन्*। यजु० ३४.९

३. अनुमतेऽन्विदं **मन्यस्व**। *'अनु+ √'मन्*। अथर्व० ६.१३१.२

४. अन्वद्य नोऽनुमतिर्यज्ञं देवेषु **मन्यताम्**। *'अनु+ √'मन्*। अथर्व० ७.२०.१

५. अन्विदमनुमते त्वं **मंससे**। *'अनु+ √'मन्*। अथर्व० ७.२०.२

६. अनुमते अनु हि **मंसते** नः। *'अनु+ √'मन्*। अथर्व० ७.२०.६

७. इयं (पृथिवी) वा अनुमतिः। इयमेवास्मै राज्यमनुमन्यते। *'अनु+ √'मन्'*। तै०सं० १.६.१.४-५

८. अनुमतिरनुमननात्। *'अनु+ √'मन्'*। निरु० ११.२९

अनुयाज

१. तद्यत्तासु सर्वास्विष्टासु (देवतासु) अथैतत्पश्चेवानुयजति तस्मादनुयाजा नाम। *'अनु+ √'यज्'*। शत०ब्रा० १.८.२.७

अनुरूप

१. पूर्वमु चैव तद्रूपमपरेण रूपेणानुवदति यत्पूर्वंश्रूपमपरेण रूपेणानुवदति तदनुरूपस्यानुरूपत्वमनुरूप एनं पुत्रो जायते य एवं वेद। *'अनु+ रूप'*। ता०ब्रा० १२.१.५, ७.७, १३.१९, ७.७

अनुष्टुभ्

१. अनुष्टुबनुस्तोभनात्। दै०ब्रा० ३.७

२. अन्वस्तौदिति हि ब्राह्मणम्। दै०ब्रा० ३.८

३. अनुष्टुबनुष्टोभनात्। गायत्रीमेव त्रिपदां सतीं चतुर्थेन पादेनानुष्टोभति। *'अनु+ √'स्तुभ्'*। निरु० ७.१२

४. अनुष्टुप् (वाक्)। अनुपूर्वात् स्तोभतेः। अनुपूर्वेण क्रमेण, पूर्वमकारात्मना ततः स्पर्शादिभिर्व्यज्यमाना वर्द्धते। तथा चोपनिषत् —अकारो वै सर्ववाक्, सैव स्पर्शेष्वभिव्यज्यमाना बह्वी नानारूपा परा, पश्यन्ती, मध्यमा, वैखरी इति। *'अनु+ √'स्तुभ्'+ क्विप्'*। निघ० १.११.५१

५. यद्वा, पूर्वं पञ्चाशदक्षरात्मना ततो गद्यपद्यादिरूपेण वर्द्धते। तथाहि— परिमिता वर्णा अपरिमितां वाचो गतिमाप्नुवन्ति— इति भगवानाश्वलायनः। *'अनु+ 'स्तुभ्'+ क्विप्'*। निघ० १.११.५१

६. यद्वा, स्तोभतिरर्चतिकर्मा। आनुपूर्व्येण स्तौति देवताः। *'अनु+ √'स्तुभ्'+ क्विप्'*। निघ० १.११.५१

अनुसंतवीत्वत्

१. अनुसंतवीत्वत्। तनोतेः पूर्वया प्रकृत्या निगमः। *'अनु+ सम्+ √'तन्'*। निरु० २.२२

अनूप

१. अनूप अनुवपन्ति लोकान्त्स्वेन स्वेन कर्मणा। *'अनु+ √'वप्'*। निरु० २.२२

२. अयमपीतरोऽनूप एतस्मादेव। अनूप्यत उदकेन। *'अनु+ √'वप्'*। निरु० २.२२

३. अपि वान्वाबिति स्यात्। *'अनु+ √'आप्'*। निरु० २.२२

अनृत

१. तेऽब्रुवन्नन्वृतीयामहा इति, तामन्वार्तीयन्त, तदनृतस्य जन्म, तद्य एवाविद्वान्त्सत्यानृताः वाचःवदति, न हैनं द्रुणाति। *'अनु + √'ऋ' > अन्वृत > अनृत'*। मै०सं० ३.७.३

अनेद्य

१. अनेद्यः (प्रशस्यम्)। *√'णिदि' कुत्सायाम्'*। निघ० ३.८.३

अनेमाः

१. अनेमाः (प्रशस्यम्)। नञ् पूर्वान्नयतेः। नेतुमशक्यो दुर्मार्गम्। *'न+ √'नी'*। निघ० ३.८.२

अन्त

१. अन्तोऽततेः। *√'अत' सातत्यगमने'*। निरु० ४.२५

२. हसिमृग्रिण्वामिदमिलूपूधूर्विभ्यस्तन्। *√'अम्+ तन्'*। उणा० ३.८६

३. अमेस्तुट् च। *√'अम्+ तुट् (आगमः)+ उरच्'*। उणा० ५.६०

अन्तक

१. एष (संवत्सरः) हि मर्त्यानामहोरात्राभ्यामायुषोऽन्तं गच्छत्यथ म्रियन्ते तस्मादेष एवान्तकः, स यो हैतमन्तकं मृत्युःसंवत्सरं वेद। *'अन्त+ √'गम्' > अन्तक'*। शत०ब्रा० १०.४.३

अन्तमानाम्

१. अन्तमानाम् (अन्तिकम्)। अन्तिकशब्दात्तमपि। अन्तिकतममन्तिमम्। *'अन्तिकतम> अन्तम'*। निघ० २.१६.९

अन्तरिक्ष

१. अथ यद् (आण्डस्य) अन्तरासीत्, तदिद-मन्तरिक्षम्। *'अन्तर्> अन्तरिक्ष'*। जै०ब्रा० ३.३६१

२. अन्तरेव वा इदमिति तदन्तरिक्षस्यान्तरिक्षत्वम्। *'अन्तर्> अन्तरिक्ष'*। ता०ब्रा० २०१४.२

३. तद्यस्मिन्निदं सर्वमन्तस्तस्मादन्तर्यक्षम्। अन्तर्यक्षं ह वै नामैतत्। तदन्तरिक्षमिति परोक्षमाचक्षते। *'अन्तर्+ यक्ष> अन्तरिक्ष'*। जै०उप० १.६.१.४

४. यदस्मिन् सर्वस्मिन् अन्तरीक्षते, तस्मादन्तरिक्षम्। *'अन्तर्+√'ईक्ष्'*। जै०ब्रा० २.५६

५. अन्तरेव वा इदमुभयम् (द्यावापृथिवी) अभूदिति। तदन्तरिक्षस्यान्तरिक्षत्वम्। *'अन्तर्+>अन्तरिक्ष'*। जै०ब्रा० २.२४४

६. स हैवामग्रे लोकावासतुस्तयोर्वियतोर्योऽन्तरेणाकाश आसीत्तदन्तरिक्षमभवदीक्षाहैतन्नाम ततः पुरान्तरा वाऽ इदमीक्षमभूदिति तस्मादन्तरिक्षम्। *'अन्तर्+√'ईक्ष्*। शत०ब्रा० ७.१.२.२३

७. अन्तरा क्षान्तं भवति। *'अन्तरा+√'क्षमूष्' सहने'*। निरु० २.१०

८. अन्तरेमे इति वा। *'अन्तरा+√'क्षि' निवासगत्योः'*। निरु० २.१०

९. शरीरेष्वन्तरक्षयमिति वा। *'अन्तर्+न+√'क्षि'क्षये'*। निरु० २.१०

१०. अन्तरिक्षं कस्मात्? अन्तरा मध्ये सर्वभूतानां क्षान्तं शान्तं निःक्रियं वा शान्तमव्यूहं विष्कम्भ-स्थानात्मकत्वात्। *'अन्तरा+√'क्षम्'*। *(पृषोदरादित्वात्)*। निघ० १.३.६

११. अन्तरा इमे रोदस्यौ क्षियतीति वा। *'अन्तरा+√'क्षि'निवासगत्योः'*। निघ० १.३.६

१२. अन्तरेमे क्षोण्याविति वा। *'अन्तरा+क्षोणी' (पृषोदरादित्वात्)*। निघ० १.३.६

१३. पूर्वशरीरेष्वन्तरक्षयमिति वा। *'अन्तर्+न+√'क्षि'क्षये' (पृषोदरादित्वात्)*। निघ० १.३.६

अन्तर्यामिन्

१. वेत्थ नु त्वं काप्य तमन्तर्यामिणं य इमं च लोकं परं च लोकाँ सर्वाणि च भूतान्यन्तरो यमयतीति। *'अन्तर्+√'यम्'*। शत०ब्रा० १४.६.७.३

अन्तिक

१. अन्तिकं कस्मात्? आनीतं भवति। *'आ+√'नी'*। निरु० ३.९

अन्धस्

१. अन्ध इत्यन्ननाम। आध्यायनीयं भवति। *'आ+ √'ध्यै'*। निरु० ५.१

२. तमोऽप्यन्ध उच्यते। नास्मिन् ध्यानं भवति, न दर्शनम्। *'न+√'ध्यै'*। निरु० ५.१

३. अयमपीतरोऽन्ध एतस्मादेव। *'न+√'ध्यै'*। निरु० ५.१

४. अद्यते प्राणिभिः, तान् वा स्वयमत्ति। तथा च श्रुतिः— अद्यतेऽत्ति च भूतानि। *√'अद्'*। निघ० २.७.१

५. यद्वा, अनितेः। अनित्येनान्धः— इति क्षीरस्वामी। अनित्यन्नं हि प्राणनम्। *√'अन्'+ धुक्(आगमः) + असुन्*। निघ० २.७.१

६. अदेर्नुम्धौ च। *√'अद्'+असुन्> अ+ नुम्+ ध्+ अस् > अन्धस्*। उणा० ४.२०७

अन्न

१. स्वधा पीपाय सुभ्व**न्नमत्ति**। *√'अद्'*। ऋ० २.३५.७

२. नितिक्ति यो वारण**मन्नमत्ति**। *√'अद्'*। ऋ० ६.४.५

३. एत**न्नमत्त** देवाऽएतद**न्नमद्धि** प्रजापते। *√'अद्'*। यजु० २३.८

४. **अन्नमद्धि** प्रसूतः। *√'अद्'*। अथर्व० ६.६३.१

५. **अन्नमद्**मि बहुधा विरूपम्। *√'अद्'*। अथर्व० ६.७१.७

६. यद**न्नमद्**म्यनृतेन देवाः। *√'अद्'*। अथर्व० ६.७१.३

७. **अन्नादेनान्नमत्ति** य एवं वेद। *√'अद्'*। अथर्व १५.१४.२;४;१४-२४

८. **अन्नादिभिरन्नमत्ति** य एवं वेद। *√'अद्'*। अथर्व १५.१४.६;१२

९. **अन्नाद्यान्नमत्ति** य एवं वेद। *√'अद्'*। अथर्व १५.१४.८;१०

१०. **अन्नमन्नमदन्तमद्मि**। *√'अद्'* साम० पू० ६.१.६।

११. अद्यतेऽत्ति च भूतानि। तस्मादन्नं तदुच्यते। *√'अद्'*। तै०आ० ८.२; तै०उप० २.२

१२. प्राण एवान्नादः। प्राणेन हीदमन्नमद्यते। *√'अद्'*। शत०ब्रा० ११.२.४.५;६

१३. अन्नं कस्मात्? आनतं भूतेभ्यः। *'आ+√'नम्'*। निरु० ३.९

१४. अत्तेर्वा। *√'अद्'*। निरु० ३.९

१५. अन्नम् (उदकम्)। *√'अन' प्राणने'*। अन्यते प्राण्यते प्रजाभिः, न हि कदाचिदपि जलेन विना जीवन्ति प्राणिनः। *√'अन'+न'*। निघ० १.१२.६४

१६. अत्तेर्वा। *√'अद्'+क्त'*। निघ० १.१२.६४

१७. कृवृजॄसिदॄपन्यनिस्वपिभ्यो नित्। √'अन्'+ न'। उणा० ३.१०

अन्नाद

१. अत्त्यन्नमन्नादो भवति। 'अन्न+ √'अद्'। जै०ब्रा० १.२०४

२. अन्नमत्त्यन्नादो भवति। 'अन्न+ √'अद्'। तां०ब्रा० १९.११.५

३. अन्नमत्ति अन्नादो भवति। 'अन्न+ √'अद्'। षड्०ब्रा० २.१.२४

अन्य

१. अन्यो नानेयो भवति। 'न+√'नी'। निरु० १.६

अप् (आपः)

१. न यस्य देवा देवता न मर्ता **आपश्चन** शवसो अन्तमापुः। √'आप्'। ऋ० १.१००.१५

२. गाव **आपश्चन पीपयन्त** देवीः। √'ओप्यायी' वृद्धौ'। ऋ० १.१५३.४

३. तस्मा **आपः** संयतः **पीपयन्त**। √'ओप्यायी' वृद्धौ'। ऋ० ५.३४.९

४. **यमापो** अद्रयो वना गर्भमृतस्य **पिप्रति**। √'पॄ'। ऋ० ६.४८.५

५. तदाप्नोदिन्द्रो वो यतीस्तस्मादापो अनु ष्ठन। √'आप्'। अथर्व० ३.१३.२

६. अद्भिर्वाऽइदं सर्वमाप्तम्। √'आप्'। शत०ब्रा० १.१.१.१४;२.१.१.४;४.५.७.७

७. आपो भूत्वा सर्वमाप्नोत्। √'आप्'। जै०ब्रा० १.३१४

८. आपो वा इदं सर्वमाप्नुवंस्तदेनमाह सर्वमाप्नुहीति। √'आप्'। काठ०संक० ४९:६-७

९. तद्यदब्रवीद् (ब्रह्म) आभिर्वा अहमिदं सर्वमाप्स्यामि यदिदं किञ्चेति, तस्मादापोऽभवंस्तदपामप्त्वमाप्नोति वै स सर्वान् कामान् यान् कामयते। √'आप्'। गो०ब्रा० १.१.२

१०. सेदꣳ सर्वमाप्नोद् (वाक्) यदिदं किञ्च यदाप्नोत्तस्मादापः। √'आप्'। शत०ब्रा० ६.१.१.९

११. अद्भिरेवैनद् आप्नोति। √'आप्'। जै०ब्रा० १.५५; १.५६

१२. आपः आप्नोतेः। √'आप्'। निरु० ९.२६; १४.३५

१३. आपः आपनाः। √'आप्'। निरु० १२.३७

१४. अपः (कर्म)। आप्नुवन्ति हि तत् कर्त्तारम्, आप्नोति वा तान् फलरूपेण। √'आप्'। निघ० २.१.१

१५. आपः (उदकम्)। आप्नोतेः सङ्ग्रहकर्मत्वात्। √'आप्'। निघ० १.१२.५३

१६. यद्वा, इन्द्रेण आप्ता आपः तदाप्नोतीन्द्रो वा। √'आप्'। निघ० १.१२.५३

१७. आपः कर्माख्यायां ह्रस्वो नुट् वा। √'आप्'+ असुन्'। उणा० ४.२०९

अपऽअप

१. अपोहति। 'अप+ √ऊह्'। निरु० ६.१९,

अपचिति

१. ततो वै तं (प्रजापतिं) ता (प्रजाः) अपाचयन्। 'अप+ √'चि'। जै०ब्रा० २.१००

अपत्य

१. अपत्यं कस्मात्? अपतितं भवति। 'अप+ √तन्,'। निरु० ३.१,

२. नानेन पततीति वा। 'न+ √'पत्'+ यक्'। निरु० ३.१,

२. अपपूर्वात् तनोतेः। 'अप+ √तन यां दिश्ययतन्त (देवासुराः) ते ततो न पराजयन्त सैषा दिगपराजिता। 'न+ परा+ √जि,। ऐ०ब्रा० १.१४

अपराजित

१. सोऽतो न पराजयते। तद् वा अपराजितं यदग्निहोत्रम्। 'न+ परा+ √'जि'। जै०ब्रा० १.४

अपाङ् या अपाञ्च्

१. अपाङ् अपाञ्चयति। 'अप+ √अञ्च्,। निरु० १४.२३,

अपान

१. ताः ....अपानन्। स वा अपानोऽभवत्। 'अप+ √'अन' प्राणने'। जै०उप० ४.२२.३

२. यदापानिति सोऽपानः। 'अप+ √'अन' प्राणने'। छा०उप० १.३.३

अपामार्ग

१. **अपामार्ग** त्वया वयं सर्वं **तदपमृज्महे**। 'अप+ √मृज्,'। अथर्व० ४.१७.६-७,१८.८

२. **अपामार्गोऽप मार्ष्टुम्**। 'अप+ √मृज्'। अथर्व० ४.१८.७

३. **अपामार्गाप मृज्महे**। अप+ √मृज्'। अथर्व० ७.६५.१,

४. अपामार्गैरपमृज्यते। अघमेव तदपमृज्यतेऽपाघमप-किल्विषमपकृत्यामपोरपः। *'अप+ √मृज्*। शत०ब्रा० १३.८.४.४

५. अपामार्गैर्वै देवा दिक्षु नाष्ट्रा रक्षाꣳसि अपामृजत ते व्यजयन्त। *'अप+ √मृज्'*। शत०.ब्रा० ५.२.४.१४,

अपारे

१. अपारे दूरपारे। *'न+ √पार'*। निरु० ६.१

२. अपारे (द्यावापृथिव्यौ)। √'पारतीर' कर्मसमाप्तौ'। समाप्तिरिति वा समाप्यतेऽनेनेति वा पारः। अविद्यमानं पारमन्तं ययोः ते अपारे। *'न+ √पार'*। निघ० ३.३०.२४

३. दूरत्वेन पराभवं दर्शयति पुराणदृष्ट्या वा लोक-पर्य्यन्तताम्। *'न+ √पार+ घञ्'*। निघ० ३.३०.२४

अपिवात

१. आप्तवचन। *'आप्त+ वचन > अपिवात'*। निरु० १०.७,

अपिशर्वर

१. अपिशर्वर्या अनुस्मसीत्यब्रुवन्नपिशर्वराणि खलु वा एतानि छन्दांसीति हस्माऽऽहैतानि हीन्द्रं रात्रेस्तमसो मृत्योर्बिभ्यतमत्यपारयंस्तदपिशर्वराणामपिशर्वरत्वम्। *√'पार+ शर्वर'*। ऐ०ब्रा० ४.५

२. तद्यदपि शर्वर्या अपिस्मसीत्यब्रुवंस्तदपि शर्वराणामपि-शर्वरत्वम्। *'अपि+ शर्वर'*। गो०ब्रा० २.५.१

३. शर्वराणि खलु ह वा अस्यैतानि छन्दांसीति हस्माऽऽहैतानि ह वा इन्द्रं रात्र्यास्तमसो मृत्योरभि-पत्यावारयंस्तदपि शर्वराणामपिशर्वरत्वम्। *'अभिपत्य+ शर्वर'*। गो०ब्रा० २.५.१

४. शर्वरी वै नाम रात्रिः। ते देवा अब्रुवन् अपि वै नशर्वर्याम् अभूदिति। तद् एवापिशर्वराणाम् अपिशर्वरत्वम्। *'अपि+ शर्वर'*। जै०ब्रा० १.२०९

अपीच्यम्

१. अपीच्यमपचितम्। *'अप+ √चि'*। निरु० ४.२५

२. अपगतम्। *(अर्थप्रदर्शनमात्रम्)*। निरु० ४.२५

३. अपहितम्। *(अर्थप्रदर्शनमात्रम्)*। निरु० ४.२५

४. अन्तर्हितं वा। *(अर्थप्रदर्शनमात्रम्)*। निरु० ४.२५

५. अपीच्यम् (निर्णीतान्तर्हितम्) अपपूर्वात् चिनोतेः। *'अप+ √चि'+ यक्'*। निघ० ३.२५.६

६. अपिपूर्वादञ्चतेः। *'अपि+ √अञ्च्+ क्विन्+ यत्'*। निघ० ३.२५.६

अपूर्व

१. अथो मनो वै प्रजापतिः। नो वै मनसोऽन्यत् किंचन पूर्वमस्ति। तस्माद् उ एवापूर्वः। *'न+ पूर्व'*। जै०ब्रा० २.१७४

अप्तोर्याम

१. यद् (विष्णुः पशून्) आप्नोत्। तदाप्तोर्यामस्या-प्तोर्यामत्वम्। *'आप्'+ याम'*। तै०सं० २.७.१४.२

२. यङ्कामङ्कामयते तमेतेनाप्नोति। तदप्तोर्याम्णोऽप्तो-र्यामत्वम्। *√'आप्'+ याम'*। ता०ब्रा० २०.३.४,५

३. ता (प्रजाः) यदाप्ता यच्छत् अतो वा अप्तोर्यामाः। *√'आप्'+ √यम्'*। गो०ब्रा० २.५.६

अप्नस्

१. अप्न इति रूपनाम। आप्नोतीति सतः। *√'आप्'*। निरु० ३.११

२. अप्नः (कर्म)। √"आप्लृ' व्याप्तौ'। आप्नुवन्ति हि तत् कर्त्तारम्, आप्नोति वा तान् फलरूपेण। *√आप्*। निघ० २.१.२

३. अप्नः (अपत्यम्)। आप्नोतेः। आप्नोत्यनेन सर्वान् कामान् पिता, आप्यते वा महता पुण्येन। *√'आप्*। निघ० २.२.७

४. आपः कर्माख्यायां ह्रस्वो नुट् च वा। *√'आप्'+ नुट् (आगमः) + असुन् > अप् + न् + अस् >अप्नस्'*। उणा० ४.२०९

अप्नवाना

१. अप्नवाना (बाहू) √'आप्लृ' व्याप्तौ'। आप्नुतः कर्माणि। *√'आप्+ श्नु+ चानश्'*। निघ० २.२.४

२. यद्वा, अप्न इति कर्मनामसु व्याख्यातम्, तदस्यास्तीति। कर्मवन्तौ हि बाहू। *'अप्न+ वनिप् (मत्वर्थीयः)'*। निघ० २.२.४

अप्य

१. अप्यं हविः, अप्सु शृतम्। *'अप्+ यत्' (प्रत्ययार्थ-प्रदर्शनमात्रम्)*। निरु० ३.९

२. अद्भिः संस्कृतमिति वा। *'पूर्ववत्'*। निरु० ३.९

अप्रतिष्कुतः

१. अप्रतिष्कुतः। अप्रतिस्कृतः। *'न+ प्रति+ √कृञ्'*। निरु० ६.१६

२. अप्रतिस्खलितो वा। *'न+ प्रति+ √स्खल्'*। निरु० ६.१६

अप्रायि

१. अप्रायि, आपूपुरः। *√'प्रा' पूरणे'*। निरु० ९.२९

अप्वा

१. अप्वा यदेनया विद्धोऽपवीयते। व्याधिर्वा भयं वा। *'अप+ √वी'*। निरु० ६.१२

२. शेवायह्वजिह्वाग्रीवाऽप्वामीवाः। *√'आप्'+ वन् (निपातनात्)*। उणा० १.१५४

अप्सः

१. अप्सः (रूपम्)। अप्स इति रूपनामाप्सातेः। *'न+ √'प्सा' भक्षणे'+ असुन्'*। निघ० ३.७.६

५. आप्नोतेर्वा। *√'आप्+ स'*। निघ० ३.७.६

अप्सरस्

१. अप्सरा अप्सारिणी। *'अप+ √'सृ'*। निरु० ५.१३

२. अपि वाप्स इतिरूपनाम। अप्सातेरप्सानीयं भवति, आदर्शनीयम्। व्यापनीयं वा। स्पष्टं दर्शनायेति-शाकपूणिः। *'न+ √'प्सा' भक्षणे'*। निरु० ५.१३

३. अप्स इति रूपनाम। तद्रा भवति रूपवती। तदनयाऽऽत्तमिति वा। तदस्यै दत्तमिति वा। *'अप्स+ र'* (मत्वर्थीयः)'। निरु० ५.१३

४. अप्सराः। *'अप+ √'सृ'*। उणा० ४.२३९

अब्ज

१. अब्जाम्, अप्सुजम्। *'अप्+ √जन्'*। निरु० १०.४४

२. रूपे जुट् च। *√'आप्'+ जुट् (आगमः)+ असुन्'*। उणा० ४.२१०

अभक्त

१. अभक्तं चिद् भजते गेह्यं सः। *√'भज्'*,। ऋ० ३.३०.७

२. अभक्ते चिदा भजा राये अस्मान्। *√'भज्'*,। ऋ० १०.११२.१०

अभय

१. यत इन्द्र भयामहे ततो नो अभयं कृधि। *√'भी'*। अथर्व० १९.१५.१

अभरत्

१. अभरत्, अहरत्। *√'हृ'*,। निरु० ११.२

अभिख्या

१. अभिख्या (प्रज्ञा)। √'ख्या' प्रकथने'। प्रकर्षेण कथ्यन्तेऽनयार्थाः। *'अभि+ √'ख्या'+ अङ्'*। निघ० ३.९.११

अभिजिद्

१. अग्निरिवाभिजिदग्निर्हीदं सर्वमभ्यजयत्। *'अभि+ √'जि'*। कौ०ब्रा० २४.१

२. अभिजिता वै देवा अभ्यजयन्निमांस्त्रीँल्लोकान्। *'अभि+ √'जि'*। कौ०ब्रा० २४.१

३. अभिजिता वै देवा असुरान् इमान् लोकानभ्यजयत्। *'अभि+ √'जि'*। तां०ब्रा० २०.८.१

४. सोऽकामयत (इन्द्रः) यन्मेऽनभिजितं तदभिजयेयमिति स एतमभिजितमपश्येत्तेनानभिजितमभ्यजयत्। *'अभि+ √'जि'*। ता०ब्रा० १६.४.६

५. देवासुराः संयत्ता आसन्। ते देवास्तस्मिन्नक्षत्रेऽभ्यजयन्। यदभ्यजयन् तदभिजितोऽभिजितत्वम्। *'अभि+ √'जि'*। तै०सं० १.५.२.३-४

६. तद्यदिमान् लोकान् (देवाः) अभ्यजयंस्तदभिजितो-ऽभिजित्त्वम्। *'अभि+ √'जि'*। जै०ब्रा.,२.१७८

७. स ह सोऽभिजिदेव स्तोमः। अग्निरेव सः। स हीदं सर्वमभ्यजयत्। *'अभि+ √'जि'*। जै०ब्रा० १.३१२

अभितृण्ण

१. इन्द्रो वै प्रातः सवने न व्यजयत, स एताभिरेव माध्यन्दिनं सवनमभ्यतृणत्, यदभ्यतृणत्तस्मादेता अभितृणवत्यो भवन्ति। *'अभि+ √'तृणु' अदने'*। ऐ०ब्रा० ६.११

२. तद्यदेताभिः (इन्द्रः) माध्यन्दिनं सवनमभ्यतृणत्, तस्मादेता अभितृण्णवत्यो भवन्ति। *' अभि+ √'तृणु अदने'*। गो०ब्रा० २.२.२१

अभिधेतन

१. अभिधेतन, अभिधावत। *'अभि+ √'धाव्'*। निरु० ६.२७

अभिपित्व

१. अभिपित्व, अभिप्राप्तिम्। *'अभि+ प्र+ √'आप्'*। निरु० ३.१५

अभिभा

१. अभिभा, अभिभूतिः। *'अभि+ √भू'*। निरु० ९.४

अभिसंचरेण्यम्

१. अभिसंचरेण्यमभिसंचारि। *'अभि+ सम्+ √'चर्'*। निरु० १.६

अभिप्लव

१. असावेवाभिप्लवो योऽसौ (आदित्यः) तपति। एष हीदं सर्वमभिप्लवते। *'अभि+ √'प्लुङ्' गतौ'*। जै०ब्रा० २.३१

२. (देवाः) यदभ्यप्लवन्त तदभिप्लवस्याऽभिप्लवत्वम्। *'अभि+ √'प्लुङ्' गतौ'*। जै०ब्रा० २.४४२

३. त ऽ आदित्याश्चतुर्भिः स्तोमैश्चतुर्भिः पृष्ठैर्लघुभिः सामभिः स्वर्गं लोकमभ्यप्लवन्त, यदभ्यप्लवन्त तस्मादभिप्लवाः। *'अभि+ √'प्लुङ्' गतौ'*। शत०ब्रा० १२.२.२.१०

४. स्वर्गं लोकमभ्यप्लवन्त, यदभ्यप्लवन्त (आदित्याः), तस्मादभिप्लवाः। *'अभि+ √'प्लुङ्' गतौ'*। गो०ब्रा० १.४.२३

अभिभू (यज्ञः)

१. यदभ्यभवंस्तदभिभुवोऽभिभूत्वम्। *'अभि+ √'भू'*। जै० ब्रा० २.१०४

अभीके

१. अभीकेऽभ्यक्ते। *'अभि+ √'अञ्ज्'*। निरु० ३.२०

२. अभीके (सङ्ग्रामः)। अभिपूवादेतेः। अभि+√'इ'+ईक्। निघ० २.१७.१०

३. यद्वा, न विद्यते भीर्येषां ते अभीकाः। अभीकैः क्रियमाणत्वात् अभीकमित्युच्यते। *'न+ √भी+ ईक'*। निघ० २.१७.१०

अभीक्ष्णम्

१. अभीक्ष्णमभिक्षणं भवति। *'अभि+ क्षण'*। निरु० २.२५

अभीवर्त्त

१. **अभीवर्तेन** हविषा येनेन्द्रो **अभिवावृते**। *'अभि+ √'वृतु' वर्तने'*। ऋ० १०१७४.१

२. **अभीवर्तेन** मणिना येनेन्द्रो **अभिवावृधे**। *'अभि+ √'वृतु' वर्तने'*। अथर्व० १.२९.१

३. अभीवर्तेन वै देवा इमान् लोकानभ्यवर्तन्त। यदभ्यवर्तन्त तदभीवर्तस्याभीवर्तत्वम्। *'अभि+ √'वृतु' वर्तने'*। जै०ब्रा० २.३८०

४. ते देवा अकामयन्ताभीमान् असुरान् भवेमेति। त एतमभीवर्तमपश्यन्। तेनासुरान् अभ्यवर्तन्त। यदभ्यवर्तन्त तदभीवर्तस्याभीवर्तत्वम्। *'अभि+ √'वृतु' वर्तने'*। जै०ब्रा० ३.२९४

५. अभीवर्त्तेन वै देवा असुरानभ्यवर्तन्त, यदभीवर्तो ब्रह्मसाम भवति भ्रातृव्यस्याभिवृत्यै। *'अभि+ √'वृतु' वर्तने'*। ता०ब्रा० ८.२.८

६. अभीवर्त्तेन वै देवा असुरानभ्यवर्तन्त, तदभीवर्तो ब्रह्मसाम भवति स्वर्गस्य लोकस्याभिवृत्यै। *'अभि+ √'वृतु' वर्तने'*। ता०ब्रा० ४.३.२

७. संवत्सरो वाऽ अभीवर्त्तः सविंशस्तस्य द्वादशमासा सप्तऽर्तवः संवत्सर एवाभीवर्त्तः सविंशस्तद्य-त्तमाहाभीवर्त इति संवत्सरो हि सर्वाणि भूतान्यभिवर्तते। *'अभि+ √'वृतु' वर्तने'*। शत०ब्रा० ८.४.१.१५

८. ब्रह्म वा अभीवर्त्तो ब्रह्मणैव तत्स्वर्गं लोकमभिवर्तयन्तो यन्ति। *'अभि+ √'वृतु' वर्तने'*। काठ० ३३.७

अभीशु

१. अभीशवोऽभ्यश्नुवते कर्माणि। *'अभि+ √'अश्'*। निरु० ३.९

२. अभीशवः (रश्मयः)। अभिपूर्वात् √'अशू' व्याप्तौ'। अभिव्याप्नुवन्ति जगदश्वग्रीवां वा। *'अभि+ √'अश्' + उ'*। निघ० १.५.५

३. यद्वा, अभिपूर्वात् √'ईश 'ऐश्वर्ये'। ईष्टे सूर्य्यस्तमो-ऽपहन्तुमेभिः, अश्वपालोऽश्वं बद्धुम्। *'अभि+ √'ईश्' + उ'*। निघ० १.५.५

४. अभीशवः (अंगुल्यः)। अभ्यश्नुवते कर्माणि, अभीशते वा कर्माणि कर्त्तुम्। *'अभि+ √'अश्'+ उ'*। निघ० २.५.२०

५. अभीशू (बाहू)। अभ्यश्नुवाते कर्माणि अभिनयन्तो वा कर्माण्यतः अभीशाते कर्माणि कर्त्तुमिति वा। *'अभि+ √'अश्' अथवा' अभि+ √'ईश्'*। निघ० २.४.३

अभ्यर्धयज्वन्

१. अभ्यर्धयज्वा अभ्यर्धयन् यजति। *'अभि+ अर्ध+ √'यज्'*। निरु० ६.६

अभ्यातान

१. यद्देवा अभ्यातानैरसुरानभ्यातन्वत तदभ्यातानाना-मभ्यातानत्वम्। *'अभि+ आ+ √'तन्'*। तै०सं० ३.४.६.२

अभ्र

१. अभ्रम् (मेघः)। √'अभ्र' गतौ'। अभ्रन्त्यन्तरिक्षे। √'*अभ्र*'+ *अच्*। निघ० १.१०.२२

२. अप्शब्दे कर्मण्युपपदे रातेर्दानार्थात् आपो रातीति वा। *'अप्+ √'रा' दाने'+ क*। निघ० १.१०.२२

३. नञ् पूर्वात् भ्रंसतेः। न भ्रंस्यत्यस्मादापो वर्षासमयादन्यत्रेति वा। *'न+ √'भ्रंस्'+ ड'*। निघ० १.१०.२२

४. भ्राजतेः। न भ्राजते वा वर्षासु मलिनवर्णत्त्वात्। *'न+ √'भ्राज्'+ ड'*। निघ० १.१०.२२

अभ्व

१. अभ्वम् (उदकम्)। आङ् पूर्वात् भवतेः। आ समन्ताद् भवति विद्यते अभ्वम्। *'आ+ √'भू+ क'*। निघ० १.१२.८९

२. अभ्वः (महत्)। आ समन्ताद् भवतीति कीर्तिमत्त्वात्। *'आ+ √'भू+ क'*। निघ० ३.३.९

३. यद्वा, भवतेः सत्तार्थात्, प्राप्त्यार्थाद्वा। न भवत्य-नेनोपद्रवोऽस्मिन्निति वा न प्राप्यते लेशैः। *'आ+ √'भू+ क'*। निघ० १.१२.८९

अमति

१. अमतिरमामयी। मतिरात्ममयी। √'*अम्*'+ *अति*। निरु० ६.१२

२. अमेरतिः। √'*अम्*'+ *अति*। उणा० ४.६०

अमत्र

१. अमत्रं पात्रम्, अमास्मिन्नदन्ति। *'अमा+ √'अद्'*। निरु० ५.१

२. अमत्रोऽमात्रो महान् भवति। *'न+ मात्रा'*। निरु० ६.२३

३. अमिनक्षियजिवधिपतिभ्योऽत्रन्। √'*अम्*'+ *अत्रन्*'। उणा० ३.१०५

अमवा (अमवत्)

१. अमात्यवान्। *'अमा+ त्यप्+ मतुप्> अमात्यवान्- > अमवान्'*। निरु० ६.१२

२. अभ्यमनवान्। *'अभि+ √'अम्' रोगे'*। निरु० ६.१२

अमा

१. अमा पुनरनिर्मितं भवति। *'न+ √'मा'*। निरु० ५.१

२. अमा (गृहम्)। √'अम' गतिभक्षशब्देषु'। गम्यन्ते-ऽस्मिन् भक्ष्यन्ते शब्दायन्ते वा। √'*अम्*'+ *घ*'। निघ० ३.४.११

३. यद्वा, निपातोऽयम्। *(निपातः)*। निघ० ३.४.११

अमावस्या, अमावास्या

१. अहमेवास्म्यमावास्या ३ **मामा वसन्ति** सुकृतौ मयीमे। *'अमा+ √'वस्'*। अथर्व० ७.७९.२

२. एका कलोदशिष्यत (चन्द्रमसः) तां प्रजापतिः सिनीवाल्या अददात्, तयेह पशुषु वनस्पतिष्वोषधीषु चामावसद्यदमावसत्, तदमावस्याया अमावस्यात्वम्। *'अमा+ √'वस्'*। काठ०संक० २३.६— ८

३. ते देवा अब्रुवन्नमा वै नो वस्वभूदिति सामावस्या। *'अमा+ वसु> अमावस्या'*। काठ० ७.१०; कपि०कठ० ५.९

४. अमा वै नोऽद्य वसु, वसतीन्द्रो हि देवानां वसु, तदमावास्याया अमावास्यात्वम्। *'अमा+ वसु> अमावस्या'*। तै०सं० २.५.३.७

५. ते देवा अब्रुवन्। अमा (सह) वै नोऽद्य वसुर् (चन्द्रमा) वसति यो नः प्रावात्सीदिति। *'अमा+ वसु> अमावस्या'*। शत०ब्रा० १.६.४.३

७. स यत्रैष (चन्द्रमाः) एताꣳरात्रिं न पुरस्तान्न पश्चाद् ददृशे तदिमं लोकमागच्छति स इहैवापश्चौषधीश्च प्रविशति स वै देवानां वस्वन्नाद्येषां तद्यदेष एताꣳरात्रिमिहाऽमा वसति तस्मादमावस्या नाम। *'अमा+ √'वस्'*। शत०ब्रा० १.६.४.५

८. अमा वै नः वसु वसतीतीन्द्रो हि देवानां वसु तदमावास्याया अमावास्यत्वम्। *'अमा+ √'वस्'*। शत०ब्रा० १.६.४.५

९. तं (चन्द्रमसं) देवा इन्द्रज्येष्ठाः सोमपाश्चासोमपाश्च यथा पितरं पितामहं प्रपितामहं वा वृद्धं प्रलयमुपगच्छमानं व्याधिगतं मरिष्यतीति वा तां रात्रिं वसन्ते। तदमावास्याया अमावास्यात्वम्। *('अमा)+ √'वस्'*। षड्०ब्रा० ५.६.२

१०. तत् तेन सहवासनिमित्तेन अमावास्याया अमावास्यत्वम्। अमा सह वसत्यस्यामिति। *'अमा+ √'वस्'*। –सायणभाष्य, षड्०ब्रा० ५.६.२

अमित

१. पुरू वरांस्यमिता **मिमानः**। *√'मा' या √'मि'*। ऋ० ६.६२.२

२. अनृता **मिनात्यमिता**। *√'मि'*। ऋ० ७.८४.४

३. पूर्वा धामान्यमिता **मिमाना**। *√'मि'*। ऋ० १०.५६.५

अमिन

१. अमिनोऽमितपात्रो महान् भवति। *'न+ √मा'*। निरु० ६.१६

२. अभ्यमितो वा। *'न+ √मा'*। निरु० ६.६

अमूर

१. अमूरः, अमूढः। *'न+ √मुह+ क्त>अमूढ> अमूर'*। निरु० ६.८

अमृत

१. **मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्**। *'मा+ √'मुच्'*। यजु० ३.६०

२. अमृते अमरणधर्माणौ। *'न+ √मृ'*। निरु० २.२०

३. अमृतम् (हिरण्यम्)। नञ्पूर्वात् म्रियतेः। न म्रियन्तेऽनेन दुर्भिक्षादौ। *'न+ √मृ+ क्त'*। निघ० १.२.१२

४. नास्ति मृतं मरणमस्येति वा नहि हिरण्यस्य यस्यां कस्याञ्चिदवस्थायामात्मनाशो विद्यते। *'न+ मृत'*। निघ० १..२.१२

५. न म्रियते पात्रे प्रतिपादितेन ध्रियमाणेन वा आयुष्करत्वात्। आयुर्वै हिरण्यमिति श्रुतिः। *'न+ √मृ+ क्त'*। निघ० १.२.१२

६. अमृतम् (उदकम्)। नञ्पूर्वात् म्रियतेः। न म्रियन्ते हि प्राणिनोऽनेन पीतेन। *'न+ √'मृ'+ क्त'*। निघ० १.१२.८३

अम्बरम्

१. अम्बरम् (अन्तरिक्षम्)। √'अबिङ् शब्दे'। अम्बन्ते शब्दायन्तेऽस्मिन् मेघाः। *√'अम्ब्+ अरच्'*। निघ० १.३.१

२. अम्बते शब्दायते वा स्वयं वायुमेघादिसंसर्गात्—आकाशगुणो हि शब्दः। *√'अम्ब्+ अरच्'*। निघ० १.३.१

३. अथवार्त्तेर्धातोः। गच्छति देशाद् देशान्तरं गम्यते वा प्राणिभिरित्यम्बु जलम्। तद्राति ददातीत्यम्बरो मेघः। तद्वदाकाशमित्यम्बरम्। तदेव वा वर्षासु प्राणिभ्यश्च उदकं ददातीति अम्बरम्। *√'ऋ'+ बुक् आगमः)+ उ >अम्बु, अम्बु+ >√'रा'+ क'*। निघ० १.३.१

४. अमतेरेव वा। निर्वचनमर्तिवत्। *√'अम्+ बुक् (आगमः) उ+ √'रा'+ क'*। निघ० १.३.१

५. अथवा अम्बुशब्दे उपपदे राजतेर्धातोः। अम्बुवद्राजते स्वस्थस्तिमितसाराम्बुवदवभासते। *'अम्बु+ √'राज्'+ ड'*। निघ० १.३.१

६. अथवा अम्बुमत् भवति रो मत्वर्थीयः। अन्तरिक्षं वर्षोदकेन तद्वत्। *'अम्बु+ र(मत्वर्थीयः)'*। निघ० १.३.१

७. अम्बरम् (अन्तिकम्)। प्राप्यते ह्यासन्नम्। *√'ऋ'+ अरर् (औणादिकः)'*। निघ० २.१६.३

अम्बु

१. अम्बु (उदकम्)। अर्तेर्धातोः। गच्छति देशाद्देशान्तरं गम्यते वा प्राणिभिरित्यम्बु जलम्। *√'ऋ'+ उ+ बुगागमः'*। निघ० १.३.१., १२.९१

२. अमतेरेव वा। गच्छति देशाद् देशान्तरं गम्यते वा प्राणिभिरित्यम्बु जलम्। *√'अम्'+ उ+ बुगागमश्च'*। निघ० १.३.१., १२.९१

अम्बुद

१. अम्बुदो मेघो भवति। अरणमम्बु तद्दः। *√'ऋ+ उ+ बुगागमश्च > अर्बु > अम्बु, अम्बु + √दा >अम्बुद'*। निरु० ३.१०

अम्भः

१. अम्भः (उदकम्)। √'आप्लृ व्याप्तौ'। व्याप्नोति सर्वमम्भः। *√'आप्'*। निघ० १.१२.५

२. उदके नुम्भौ च। *√'आप्+ असुन्> अ+ नुम्+ भ्+ अस्> अम्भस्'*। उणा० ४.२१०

अम्भसी

१. अम्भसी (द्यावापृथिव्यौ)। व्याख्यातमुदकनामसु। *√'आप्+ असुन्'*। निघ० ३.३०.६

२. यद्वा, अम्भ उदकमनयोरस्ति। एकत्रावशिष्ट-मपरत्रावशिष्यमाणमादित्यमण्डलम्। *'अम्भ+ असुन्' (मत्वर्थीयः)*। निघ० ३.३०.६

अम्भृणः

१. अम्भृणः (महत्)। अमतेः, बिभर्तेः। √'*अम्*'+ *क्विप्*+ √*भृ*+ *न*'। निघ० ३.३.१६

अम्यक्

१. अमाक्तेति वा। √'*अञ्च्*+ *क्विन्*'। निरु० ६.१५

२. अभ्यक्तेति वा। '*अभि*+ √'*अञ्च्*'+ *क्विन्*'। निरु० ६.१५

अय

१. अयासोऽयनाः। √'*इण्' गतौ*'। निरु० २.७

२. अयः (हिरण्यम्)। √ 'इण्' गतौ'। एति गच्छति अङ्गुलीयकादिरूपेण शरीरम्, क्रयक्रयसंविभागादिना वा। √'*इण्' गतौ*+ *असुन्*'। निघ० १.२.४

३. पुरुषात्पुरुषान्तरं गच्छत्यनेन धर्मदानादिनेति वा। √'*इण्' गतौ*'+ *असुन्*'। निघ० १.२.४

अयन

१. जघानायन्नापोऽयनमिच्छमानाः। √'*अय्*'। ऋ० ३.३३.७

२. आदित्य एवायनम्। स ह्येषु लोकेष्वेति। इत्यधिदैवतम्। अथाध्यात्मम्।............प्राण एवायनम्। स ह्यस्मिन् सर्वस्मिन्नेति। √'*इण्' गतौ*'। जै०ब्रा० २.२९

३. तदाहुः कस्मादयनानीति गमनान्येव भवन्ति कामस्य कामस्य स्वर्गस्य च लोकस्य। √'*इण्' गतौ*'। कौ०ब्रा० ६.१५

४. इयं (पृथिवी) वाऽअपामयनमस्याꣳह्यापो यन्ति। √'*इण्' गतौ*'। शत०ब्रा० ७.५.२.५०

५. अयनेनायन्। √'*अय' गतौ*'। जै०ब्रा० २.२९

अयम्

१. अयमेततरोऽमुष्मात्। '*आ*+ √'*इण्' गतौ*'। निरु० ३.१६

अयवन

१. स यो (अर्धमासः) देवानामासीत् स यवाऽयुवत हि तेन देवा, योऽसुराणाꣳसोऽयवा न हि तेनासुरा अयुवत। अथोऽइतरथाहुः। य एव देवानामासीत् सोऽयवा न हि तमसुरा अयुवत, योऽसुराणाꣳ स यवाऽयुवत हि तं देवाः। '*न*+ √'*यु' मिश्रणे*'। शत०ब्रा० १.७.२.२५,२६

अयस्

१. अभ्येनं वज्र आयसः सहस्रभृष्टिरायतार्चन्नु स्वराज्यम्। √'*अय्*'। ऋ० १.८०.१२

२. अश्मनोऽयः (प्रजापतिरसृजत) तस्मादश्मनोऽयो धमन्ति। अयसो हिरण्यं तस्मादयो बहुध्मातꣳ हिरण्यसंकाशमिवैव भवति। '*अश्मन्*> *अयस्*'। शत०ब्रा० ६.१.३.५

३. अयः (हिरण्यम्)। √'इण्' गतौ'। एतिगच्छति अङ्गुलीयकादिरूपेण शरीरम्, क्रयक्रयसंविभागादिना वा। √'*इण्' गतौ*'+ *असुन्*। निघ० १.२.४

४. पुरुषात्पुरुषान्तरं गच्छत्यनेन धर्मदानादिनेति वा। √'*इण्' गतौ*'+ *असुन्*'। निघ० १.२.४

५. अयासः, अथवाः। √'*इण्' या* √'*अय' गतौ*'। निरु० २.७

६. इणश्चासिः। √'*इ*+ *असि*'। उणा० ४.२२३

अयास्

१. अयासोऽयनाः। √'*इण्' या* √'*अय्' गतौ*'। निरु० २.७

अयास्य

१. ते (असुराः) ऽब्रुवन्नयं वा आस्य इति। यदब्रुवन्नयं वा आस्य इति तस्मादयमास्यः। अयमास्यो ह वै नामैषः। तमयास्य इति परोक्षमाक्षते। '*अयम्*+ *आस्य*> *अयमास्य*> *अयास्य*'। जै०उप० २.३.२.७

२. स एष एवाऽयास्यः (अन्नाद्यम्)। आस्ये धीयते तस्मादयास्यः। यद्वेवा (अयम्) आस्ये रमते तस्माद्वेवा ऽयास्यः। '*अयम्*+ *आस्य*> *अयमास्य*> *अयास्य*'। जै०उप० २.४.२.८

३. तेऽब्रुवन्नयं वा आस्य इति। यदब्रुवन्नयं वा आस्य इति तस्मादयमास्यः। अयमास्यो ह वै नामैषः। तमयास्य इति परोक्षमाचक्षते। '*अयम्*+ *आस्य*> *अयमास्य*> *अयास्य*'। जैब्रा० २.८.७

अर, अरा

१. अरा प्रत्यृता नाभौ। √'*ऋ' गतौ*'। निरु० ४.२७

अरङ्कृत

१. अरङ्कृता अलङ्कृताः। '*अलम्*+ √*कृ*'। निरु० १०.२

अरण

१. अरणोऽपार्णो भवति। '*अप*+ *अर्ण* (*उदकम्*)> *अपार्ण*> *अरण*'। निरु० ३.२

२. अरणे, निरमणे। '*न*+ √*रम्*'। निरु० ११.४६

अरणि

१. अरो वै विष्णुस्तस्य वा एषा पत्नी यदरणिस्तदरण्या अरणित्वम्। *'अरः पत्नी>अरणिः'*। काठ०संक० २१.२-३

२. अरणी प्रत्यृत एने अग्निः। √'ऋ'। निरु० ५.१०

३. समरणाज्जायत इति वा। *'सम्+ अरण (अर्थनिर्वचनम्)'*। निरु० ५.१०

४. अर्तिसृधृद्यम्यम्यश्यवितृभ्योऽनिः। √'ऋ+ *अनि*'। उणा० २.१०४

अरण्य

१. अरण्यमपार्णं ग्रामात्। *'अप+ अर्ण>अपार्ण> अरण्य'*। निरु० ९.२९

२. अरमणं भवतीति वा। *'न+ √रम्'*। निरु० ९.२९

३. अर्तेर्निच्च। *'√ऋ+ अन्य'*। उणा० ३.१०२

अरण्यानी

१. अरणास्य पत्नी। *(प्रत्ययार्थ प्रदर्शनम्)*। निरु० ९.२९

२. महदरण्यमरण्यानी। *'अरण्य+ आनुक् ङीष्'*। अष्टा०वा० ४.१.४९

अरम्णात्

१. अरम्णाद्, अरमयद्। √' *रम्*'। निरु० १०.३२

अररिन्द

१. अररिन्दानि। √*'रा' दाने'*। ररिर्दाता। ररिर्यस्य न विद्यते तदररि, अन्यैरदत्तमित्यर्थः। तद्ददाति अररिन्दम्। *'न+ √रा+ कि'*। निघ० १.१२.२६

२. अथवा, ररि (दत्तम्), न ररि अररि (अदत्तम्) पृथिव्यादिभिः, किन्तत्? सुखम्। उदकेन यद्दीयते सुखादिकं तच्चान्यैः पृथिव्यादिभिः दातुमशक्यत्वाद-दत्तमित्युच्यते। *'न+ √रा+ कि'*। निघ० १.१२.२६

अराति

१. अदानकर्माणो वा। *'न+ √'रा' दाने'*। निरु० ३.११

२. अदानप्रज्ञा वा। *'न+ √'रा' दाने'*। निरु० ३.११

अराधस

१. अराधसम्, अनाराधयन्तम्। *'न+ √राध्'*। निरु० ५.१७

अरि

१. अरिरमित्रः, ऋच्छतेः। ईश्वरोऽप्यरिरेतस्मादेव। √'ऋ' *गतिप्रापणयोः' अथवा* √'ऋच्छ' *गतीन्द्रियप्रलय-मूर्तिभावेषु'*। निरु० ५.७

अरिता

१. अरिता, ईरयिता। √'ईर'। निरु० ९.४

अरिष्ट

१. अनेन (अरिष्टेन साम्ना) नारिषामेति तदरिष्ट-स्यारिष्टत्वम्। *'न+ √रिष'*। ता०ब्रा० १२.५.२३

२. अरिष्टो ह वा एतेन यज्ञः। देवा एतं द्वादशरात्रमतन्वत। तेषां यदरिष्यत तदरिष्टेनारिष्टिमकुर्वत। तदस्यारिष्टस्या-रिष्टत्वम्। √'ऋ' *गतिप्रापणयोः'*। जै०ब्रा० ३.५५

अरुष/अरुषी

१. रुशन्तं भानुमरुषीरशिश्रयुः। √*'रुश' दीप्तौ'*। ऋ० १.९२.२

२. अरुषः (अश्वः)। √'ऋ' *गतिप्रापणयोः'*। ऋणाति अभ्यमुखं गच्छति, अर्य्यते वा तदर्थिभिः। √'ऋ'। निघ० १.१४.१७

३. यद्वा, अरुषमिति रूपनाम (निघ० ३.७.१५) मत्वर्थीयोऽकारः, प्रशस्तरूप इत्यर्थः। *'अरुष+ अ (मत्वर्थीयः)'*। निघ० १.१४.१७

४. अरुषम् (रूपम्)। आ रोचते। *'आ+* √*'रुच्'*। निघ० ३.७.१५

५. अरुषी (उषा)। √*'ऋ' गतौ'*। √*'ऋ' गतिप्रापणयोः'*। इयर्ति गच्छति वादित्योदयेनान्तं प्रतिदिनं प्रापयति वा स्तोतॄन् ऐश्वर्यादि। √*'ऋ'+ उषन्'*। निघ० १.८.१३

६. यद्वा, आङ्पूर्वात् √*'रुच' दीप्तौ'*। आरोचते अरुषी। *'आ+* √*'रुच्'+ डुषच्'*। निघ० १.८.१३

७. यद्वा, अरुषमिति रूपनाम (निघ० ३.७.१५), सामर्थ्यादत्र शुकलविषयं, शुक्लवर्णा अरुषी। *'अरुष+ ई'*। निघ० १.८.१३

८. अरुषीरारोचनात्। *'आ+ √रुच्'*। निरु० १२.७

९. ऋहनिभ्यामूषन्। √*'ऋ+ ऊषन्'*। उणा० ४.७४

अर्क

१. गायन्ति त्वा गायत्रिणोऽर्चन्त्यर्कमर्किणः। √*'अर्च्'*। ऋ० १.१०.१

२. य उग्रा **अर्कमानृचुरनाधृष्टास** ओजसा। √'*अर्च्*'। ऋ० १.१९.४

३. **ऋग्मियायार्चामार्कं** नरे विश्रुताय। √'*अर्च्*'। ऋ० १.१६२.१., यजु० ३४.१६

४. **अर्चन्तो अर्कं** जनयन्त इन्द्रियम्। √'*अर्च्*'। ऋ० १.८५.२

५. **अर्चन्त्यर्कं** मदिरस्य पीतये। √'*अर्च्*'। ऋ० १.१६६.७

६. दशग्वासो **अभ्यर्चन्त्यर्कैः**। √'*अर्च्*'। ऋ० ५.२९.१२

७. **अर्चन्त्यर्कं** सुन्वन्त्यन्धः। √'*अर्च्*'। ऋ० ५.३०.६

८. वृष्णे यत्ते वृषणो **अर्कमर्चान्**। √'*अर्च्*'। ऋ० ५.३१.५

९. जरितारो **अभ्यर्चन्त्यर्कैः**। √'*अर्च्*'। ऋ० ६.१२.२१

१०. भरद्वाजा **अभ्यर्चन्त्यर्कैः**। √'*अर्च्*'। ऋ० ६.५१.१५

१८. वसिष्ठासो **अभ्यर्चन्त्यर्कैः**। √'*अर्च्*'। अथर्व० २०.१२.६, ऋ० ७.२३.६, यजु० २०.५४

१२. यस्मा **अर्कं** सप्तशीर्षाणामानृचुः। √'*अर्च्*'। ऋ० ८.१५.५

१३. विप्रासो **अर्कमानृचुः**। √'*अर्च्*'। ऋ० ८.५१.१०, अथर्व० २०.११९.२, सा०उ० १६१०

१४ **अर्कमर्चन्तु** कारवः। √'*अर्च्*'। ऋ० ८.९२.१९, अथर्व० २०.११०.१, सा०पू० २.५.४

१५. महामर्कं मघवञ्चित्रमर्च। √'*अर्च्*'। ऋ० १०.११२.९

१६. घृतेनार्कमभ्यर्चन्ति। √'*अर्च्*'। अथर्व० १३.१.३३

१७. **अर्चन्त्यर्कमर्किणः**। √'*अर्च्*'। सा०पू० ३.१२.१, सा०उ० १३४४

१८. **अर्चन्त्यर्कं** मरुतः। √'*अर्च्*'। सा०पू० ४.१०.९, सा०उ० १११४,

१९. अर्कैः। अर्चनीयैः स्तोमैः। √'*अर्च्*'। निरु० ६.२३

२०. अर्को देवो भवति यदेनमर्चन्ति, अर्को मन्त्रो भवति यदनेनार्चन्ति, अर्कमन्नं भवति यदर्चति भूतानि। अर्को वृक्षो भवति। √'*अर्च्*'। निरु० ५.४

२१. अर्कः (वज्रः)। √'अर्च्' पूजायाम् '। √'अर्च्+ क'। निघ० २.२०.१०

२२. कृदाधारार्चिकलिभ्यः कः। √'*अर्च्*'+ क'। उणा० ३.४०

अर्किन्

१. **अर्चन्त्यर्कमर्किणः**। √'*अर्च्*'। सा०पू० ३.१२.१, सा०उ० १३४४

२. गायन्ति त्वा गायत्रिणोऽर्चन्त्यर्कमर्किणः। √'*अर्च्*'। ऋ० १.१०.१

अर्क्य

१. अर्चते वै मे कमभूदिति, तदेवार्क्यस्यार्कत्वम्। √'*अर्च्*' पूजायाम्'। शत०ब्रा० १०.६.५.१

अर्चिः

१. अग्ने यत्तेऽर्चिस्तेन तं प्रत्यर्च। √'*अर्च्*'। अथर्व० २.१९.३; २०.३; २१.३; २२.३

२. आपो यद् वोऽर्चिस्तेन तं **प्रत्यर्चत**। √'*अर्च्*'। अथर्व० २.२३.३

३. अर्चिः (ज्वलतो नामधेयम्)। √'*अर्च्*' *पूजायाम्*'। अर्च्यन्ते देवताद्यर्चनसाधनत्वाद्वा अर्चिरग्न्यादि-ज्वालादिः। √'*अर्च्*+इसि'। निघ० १.१७.५

४. अर्चिशुचिहृसृपिछादिछर्दिभ्य इसिः। √'*अर्च्*' + *इसि*। उणा० २.११०

अर्जुनम्/अर्जुनी

१. अर्जुनी (उषा)। √'अर्ज' अर्जने'। अर्जति। √'*अर्ज्+ उनन्*'। निघ० १.८.६

२. यद्वा, √'अर्ज' गतिस्थानार्जनेषु'। गम्यते तदर्थिभिः तिष्ठति स्वाश्रये। √'*अर्ज्+ उनन्*'। निघ० १.८.६

३. यद्वा, अर्जुनमिति रूपनाम (निघ० ३.७.१३), तच्चात्रादित्यरश्मिसम्बन्धात् श्वेतम्। *(अर्थप्रदर्शन-मात्रम्)*। निघ० १.८.६

४. यद्वा, अर्जुन्यो गावः ता अस्याः सन्ति वाहनत्वेन। मत्वर्थीय ईकारः। '*अर्जुन+ ई*' (मत्वर्थीयः)। निघ० १.८.६

५. अर्जेर्णिलुक् च। √'*अर्ज्+ उनन्*'। उणा० ३.५८

अर्ण/अर्णा

१. अर्णः (उदकम्)। √'ऋ' गतौ'। अर्य्यते तत् प्राणिभिरित्यर्थः। √'ऋ'+ नुट् *(आगमः)*+ *असुन्*'। निघ० १.१२.१

२. यद्वा, ऋच्छति निम्नप्रदेशमिति वा। √'ऋ'+ नुट् *(आगमः)*+ *असुन्*'। निघ० १.१२.१

३. यद्वा, √'ऋ' गतौ' (क्रयादिः)। ऋणाति गच्छति दिवो भूमिं वृषमाणम्। √'ऋ'+ नुट् *(आगमः)*+ *असुन्*'। निघ० १.१२.१

४. अर्णाः (नद्यः)। √'ऋ' गतौ'। अर्णन्ति गच्छन्त्यर्णाः। √'ऋण्+ अच्'। निघ० १.१३.२०

५. यद्वा, अर्ण इत्यकारान्तमप्युदकनामेत्युक्तम्। जलवत्यो हि नद्यः। √'ऋ'+ नुट् *(आगमः)+ असुन्'*। निघ० १.१३.२०

६. उदकेनुट्च। √'ऋ'+ नुट् *(आगमः)+ असुन्'*। उणा० ४.१९८

अर्थ

१. अर्थोऽर्तेः। √'ऋ'। निरु० १.१८

२. अरणस्थे वा। *'न+ √'रम्'>अरण, अरण+ √स्था> अर्थ'*। निरु० १.१८

३. उपिकुषिगार्तिभ्यस्थन्। √'ऋ'+ *थन्*। उणा० २.४

अर्ध

१. अर्ध हरतेर्विपरीतात्। √'ह'+ *अ>हर> अर्ह>अर्ध*। निरु० ३.२०

२. धारयतेर्वा स्यादुद्धृतं भवति। √'धृ'+ *अ>धर >अर्ध'*। निरु० ३.२०

३. ऋध्नोतेः स्यात्, ऋद्धतमो विभागः। √'ऋध्'। निरु० ३.२०

अर्धर्च

१. एष (प्राणः) वा अर्धर्च एष ह्येभ्यः सर्वेभ्यो ऽर्धेभ्योऽर्चत। *'अर्ध+ √अर्च्'*। ऐ०आ० २.२.२

अर्बुद

१. अर्बुदो मेघो भवति, अरणमम्बु तद्दोऽम्बुदः। √'ऋ+ उ+ *बुगागमः>अर्बु, अर्बु+ √दा> अर्बुद'*। निरु० ३.१०

अर्भकम्

१. अर्भकमवहृतं भवति। *'अव+ √हृ+ क्त> अवहृत> अर्भक'*। निरु० ३.२०

२. अर्भके अवृद्धे। (अर्थनिर्वचनम्)। निरु० ४.१५

३. अर्भकः (ह्रस्वः)। निघ० ३.२.९

४. अर्भकपृथुकपाका वयसि। √'ऋध्+वुन्> ऋभ्+अक> अर्भ्+अक>अर्भक'। उणा० ५.५३

अर्य, अर्य्य

१. अर्य ईश्वरपुत्रः। *(अर्थनिर्वचनम्)*। निरु० ६.२६

२. अर्य्यः (ईश्वरः)। √'ऋ' गतौ'। गम्यते हि सर्वैरीश्वरः। √'ऋ'+ण्यत्'। निघ० २.२२.२

अर्यमन्

१. अर्यमादित्यः। अरीन्नियच्छति। *'अरि + √'यम् > अर्यमन्'*। निरु० ११.२३

२. श्वन्नुक्षन्पूषन्प्लीहन्क्लेदन्स्नेहन्०। *'अर्य+ √'मा+ कनिन् (निपा०)'*। उणा० १.१५९

अर्वन्

१. अर्वा ईरणवान्। √'ईर्'। निरु० १०.३१

२. अर्वा (अश्वः)। √'ऋ' गतिप्रापणयोः'। गच्छत्यध्वानं प्रापयत्यध्वन पारमिति वा। √'ऋ'+ *वनिप्'*। निघ० १.१४.३

३. स्नामदिपद्यर्तिपृशकिभ्यो वनिप्। √'ऋ'+ *वनिप्'*। उणा० ४.११४

अर्वाके

१. अर्वाके (अन्तिकम्)। अर्व उपपदे क्रामतेः। अर्वाक् गन्ता। क्रम्यते च ह्यासन्नम्। *'अर्व+ √'क्रम्'+ आक'*। निघ० २.१६.८

अलम्म

१. तम् (परिजानतः पुत्रमृषयः) अब्रुवन् कोऽन्वयं कस्मा अलमित्यलन्नु वै मह्यमिति (सामाब्रवीत्) तदलम्मस्यालम्मत्वम्। *'अलम्+ मह्यम्>अलम्म'*। ता०ब्रा० १३.१०.८

अलातृण

१. अलातृणोऽलमातर्दनः। *'अलम्+ आ+ √'तृद्'*। निरु० ६.२

अल्पः

१. अल्पः (ह्रस्वः)। √'अल' भूषणपर्याप्तवारणेषु'। √'अल्'+ प'। निघ० ३.२.११

अवका

१. अथ (आपः) यदब्रुवन्नवाङ् नः कमगादिति ता अवाक्का अभवन्नवाक्का ह वै ता अवका इत्याचक्षते परोऽक्षम्। *'अवाङ् >अवाक्का >अवका'*। शत०ब्रा० ९.१.२.२

अवत

१. **आवृतासोऽवतासो** न कर्तृभिस्तनूषु ते क्रतव इन्द्र भूरयः। √'आ+ √वृ'। ऋ० १.५५.८

२. अवतोऽवातितो महान् भवति। 'अव+ √'अत्'। निरु० ५.२६

३. अवतमवातितम्। 'अव+ √'अत्'। निरु० १०.१३

४. अवतः (कूपः)। अवपूर्वादततेः। अवातति खन्यमानो ऽधोगच्छति। 'अव+ √अत्+ अच्'। निघ० ३.२३.७

५. अवतः इति कूपनाम। यथा कूपा जलोद्धरणाय प्रवृत्तैः प्राणिभिराव्रियन्ते तद्वत्। 'आ+ √वृ'। सायणभाष्य, ऋ० १.५५.८

अवदान

१. तदवदानैरेवावदयते, तदवदानानामवदानत्वम्। 'वि+ √'दय'। तै०सं० ६.३.१०.५

२. स येन देवेभ्य ऋणं जायते तदेनांस्तदवदयते यद्यजतेऽथ यदग्नौ जुहोति तदेनांस्तदवदयते, तस्माद्यत्किञ्चाग्नौ जुह्वति तदवदानं नाम। 'अव+ √'दय्'। शत०ब्रा० १.७.२.६

अवनि

१. अवनयोऽङ्गुल्यो भवन्ति। अवन्ति कर्माणि। √'अव्'। निरु० ३.९

२. अवनयः (अङ्गुल्यः)। अवन्ति कर्माणि, अव्यन्ते वा। √'अव्'+ अनि'। निघ० २.५.११

३. अवनयः (नद्यः)। अवन्ति जगत् स्वोदकेन, अव्यन्ते प्राणिभिस्तीरादिनिर्माणेन। √'अव्'+ अनि'। निघ० १.१३.१

४. अवनिः (पृथ्वी)। √ अव्'। अवति प्रजाः, अव्यन्ते वा भूपैः। √'अव्'+ अनि'। निघ० १.१.९

अवन्ती

१. **अवन्नवन्तीरूप** नो दुरश्चर। √'अव्'। ऋ० ७.४६.२

अवभृथ

१. तद्यदपोऽभ्यवहरन्ति तस्मादवभृथः। 'अव्+ √'हृ'। शत०ब्रा० ४.४.५.१

अवमे

१. अवमे (अन्तिकम्)। √'अव' रक्षणादिषु'। गम्यते ह्यासन्नम्। √'अव्'+ म'। निघ० २.१६.१०

अवस्

१. **सुदासमिन्द्रावरुणावसावतम्**। √'अव्'। ऋ० ७.८३.१

२. यस्मिनाविथावसा दुराणे। √'अव्'। ऋ० १०.१२०.७., अथर्व० ५.२.६;२०.९

३. अवः (अन्नम्)। √'अव' रक्षणगतिप्रीतितृप्त्यवगमप्रवेशश्रवणस्वाम्यर्थयाचनक्रियेच्छादीप्त्यवाप्त्यालिङ्गनहिंसादानभागवृद्धिषु'। √'अव्'+ असुन्'। निघ० २.७.९

अवसाय

१. अवसाय इति स्यतिरुपसृष्टो विमोचने। 'अव+ √'सो'। निरु० १.१७

२. अवसाय, अवसम्।......अवतेर्गत्यर्थस्यासो नामकरणः। √'अव्'+ अस्'। निरु० १.१७

अवसे

१. अवसे, अवनाय। √'अव्'। निरु० २.२४

अवारम्

१. अवारमवरम्। 'अवर>अवार'। निरु० २.२४

अवि

१. इयं (पृथिवी) वाऽ अविरियꣳ हीमाः सर्वाः प्रजा अवति। √'अव्'। शत०ब्रा० ६.१.२.३३

अवित्री

धीनामवित्र्यवतु। √'अव्'। ऋ० ६.६१.४

अव्यथयः

१. अव्यथयः (अश्वाः)। √'व्यथ' भयचलनयोः'। न व्यथन्त्यभिसङ्ग्रामेषु अव्यथयः, दृष्टे भयेऽप्यव्यथः। 'न+ √'व्यथ्+ इन्'। निघ० १.१४.१९

२. यद्वा, व्यथिरिति क्रोधनाम (निघ० २.१३.११) आरोहणताडनबन्धनादिभिर्न क्रुध्यन्तीत्यर्थः। 'न+ √व्यथ्+ इन्'। निघ० १.१४.१९

अव्यय

१. **अव्ययमत्कं** न निक्तं परि सोमो **अव्यत**। √'अव्'। ऋ० ९.६९.४

२. सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु सर्वासु च विभक्तिषु। वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम्। *'न+ वि+ √'इण्'*। गो०ब्रा० १.१.२६

अशीति

१. अशीतिभिर्वै देवा इमान् लोकानिमानध्वन आस्नुवत तदशीतीनामशीतित्वम्। *'आ+ √'स्नु'*। जै०ब्रा० २.२४

२. तद् (रौहिणिकं साम) वा अशीतिभिस्संपन्नम्। आशयन्त्येवैनमेतेन। *'आ+ √'शी'*। जै०ब्रा० २.१४

३. द्वे ह वा अशीत्याव् अहश्चैव रात्रिश्च। ताभ्याम् एनम् आशयन्ति। *√'अश' भोजने'*। जै०ब्रा० २.२४

४. अन्नमशीतयः। अन्नेन हीदं सर्वमश्नुते। *√'अशू' व्याप्तौ संघाते च'*। ऐ०आ० २.१.२

अश्न/अश्ना

१. अश्नः (मेघः)। √'अशू' व्याप्तौ'। √'अश' भोजने। उभावपि व्याप्नुत आकाशमश्नीतश्चोदकम्, एको वर्षितव्यमपरो वृष्टम्। *√'अश्+ नक्'*। निघ० १.१०.५

२. अश्ना अशनवता। *√'अश्'*। निरु० १०.१२

अश्मन्

१. अथ यदश्रु संक्षरितमासीत्सोऽश्मा पृश्निरभवदश्रुर्ह वै तमश्मेत्याचक्षते परोऽक्षम्। *'अश्रु>अश्मन्'*। शत०ब्रा० ६.१.२.३

२. अश्मचक्रमशनचक्रम्। *√'अश्'*। निरु० ५.२६

३. असनचक्रमिति वा। *√'असु' क्षेपणे'*। निरु० ५.२६

४. अश्म, अशनवन्तम्। *√'अश्'*। निरु० १०.१३

५. अश्मा (मेघः)। √'अशू' व्याप्तौ। √'अश' भोजने'। अश्न इत्यनेन समानार्थः। *√'अश्'*। निघ० १.१०.८

अश्मास्य

१. अशनवन्तमास्यन्दनवन्तम्। *√'अशू' व्याप्तौ'+ आ+ √'स्यन्दू' प्रस्रवणे'*। निरु० १०.१३

अश्लीलम्

१. अश्लीलं पापकम्, अश्रिमद् विषमम्। *'न+ श्री> अश्रि+ मतुप्> अश्रिमत्> अश्लील'*। निरु० ६.३३

अश्व

१. ता **अश्वदा अश्नवत्** सोमसुत्वा। *√'अश्'*। ऋ० १.११३.१८

२. यदाक्षिषुर्दिव्यमज्ममश्वाः। *√'अश्'*। ऋ० १.१६३.१०., यजु० २९.२१

३. यदश्वस्य क्रविषो मक्षिकाश। *√'अश्'*। यजु० २५.३२

४. न किः **स्वश्व आनशे**। *√'अश्'*। सा० ५०.९५०

५. अथ यदश्रु संक्षरितमासीत्सोऽश्रुरभवदश्रुर्हवै तमश्व इत्याचक्षते परोऽक्षम्। *'अश्रु>अश्व'*। शत०ब्रा० ६.१.१.११

६. यद्वै तदश्रु संक्षरितमासीदेष सोऽश्वः। *'अश्रु>अश्व'*। शत०ब्रा० ६.३.१.२८

७. अश्रुष्वेव (प्रजापतेः) अश्वोऽजायत। *'अश्रु> अश्व'*। काठ०संक० १७.७

८. प्रजापतेरक्ष्यश्वयत्तत्परापतत्तदश्वोऽभवत् तदश्वस्याश्वत्वम्। *√'श्वि'*। तै०सं० ५.३.१२.१

९. प्रजापतेर्वै चक्षुरश्वयत्, तस्य यः श्वयथा आसीत्, सोऽश्वोऽभवत्। *√'श्वि'*। मै०सं० १.६.४

१०. वरुणो ह वै सोमस्य राज्ञोऽभीवाक्षि प्रतिपिपेष तदश्वयत्ततोऽश्वः समभवत्तद्यच्छ्वयथात् समभवत् तस्मादश्वो नाम। *√'श्वि'*। शत०ब्रा० ४.२.१.११

११. प्रजापतिरक्ष्यश्वयत्। तत् परापतत्। तदपः प्राविशत्। ततोऽश्वस्समभवत्। यदश्वयत् तस्मादश्वः। *√'श्वि'*। जै०ब्रा० २.२६८ (तु०तै०सं० ५.३.१२.१.,मै०सं० १.६.४)

१२. तान् (असुरान् देवाः) अश्वा भूत्वा पद्भिरपाघ्नत, यदश्वा भूत्वा पद्भिरपाघ्नत, तदश्वानामश्वत्वमश्नुते, यद्यत्कामयते य एवं वेद। *√'अश्' व्याप्तौ'*। ऐ०ब्रा० ५.१

१३. आशुः सप्तिरित्याह। अश्व एव जवं धावति। तस्मात् पुराशुरश्वोऽजायत। *'आशु>अश्व'*। तै०सं० ३.८.१३.८

१४. यस्मात्प्रजापतिरालब्धोऽभवत् तस्मादश्वो नाम। *√'अश्'*। तै०सं० ३.९.२१.४,२२.१.२

१५. प्रजापतेर्वा अक्ष्यश्वयत्तत्परापतत् तदश्वोऽभवत्तदश्वस्याऽश्वत्वम्। *√'श्वि'*। तां०ब्रा० २१.४.२

१६. अश्वः कस्माद्? अश्नुते अध्वानम्। *√'अश्' व्याप्तौ'*। निरु० २.२६

१७. महाशनो भवतीति वा। √'*अश्* *भोजने*'। निरु० २.२६

१८. अध्वानमश्नुवीताश्वः स वचनीयः। √'*अश्*'। निरु० १.१२

१९. अष्टेत्यश्वम्। √'*अश्* *व्याप्तौ*'। निरु० १.१२

२०. अश्वमश्नुवानम्। √'*अश्* *व्याप्तौ*'। निरु० ७.२०

२१. √अशू व्याप्तौ+क्वुन् (औणादिकः)। √'*अश्*'+ *क्वुन्*'। निघ० १.१४.२६

२२. अश्नोतेर्वा। अश्नुवतेऽध्वानं महाशनो भवतीति वा। √'*अश्*'+ *क्वुन्*'। निघ० १.४.२६

अश्वमेध

१. ततोऽश्वः समभवद्यदश्वत्तन्मेध्यमभूदिति तदेवाश्वमेधस्याश्वमेधत्वम्। '*अश्व*+ *मेध*'। शत०ब्रा० १०.६.५.७

अश्वत्थ

१. ततः (अश्वस्य) शकाछ्वसी (शकृतः श्वसी) अजायत, तत्पार्श्वान्मध्याच्चाश्वसद्यत्पार्श्वान्मध्याच्चाश्वसत्तदश्वत्थोऽजायत तस्य वेदो मूलं पर्णानि छन्दांसि। √'*श्वस* *प्राणने*'। काठ०संक० १८.१—३

२. अश्वो वै भूत्वाग्निर्देवेभ्योऽपाक्रामत् स यत्रातिष्ठत् तदश्वत्थस्समभवत्, तदश्वत्थस्याश्वत्थत्वम्। '*अश्व*+ √'*स्था*'। काठ० ८.२

अश्विन्

१. इमे ह वै द्यावापृथिवी प्रत्यक्षमश्विनाविमे हीदꣳ सर्वमाश्नुवातां पुष्करस्रजावित्यग्निरेवास्यै (पृथिव्यै) पुष्करमादित्योऽमुष्यै (दिवे)। √'*अश्* *व्याप्तौ*'। शत०ब्रा० ४.१.५.१६

२. यदश्विना उदजयतामश्विनावाश्नुवातां तस्मादेतदाश्विनमित्याचक्षते। √'*अश्* *व्याप्तौ*'। ऐ०ब्रा० ४.८

३. अश्विनौ यद्व्यश्नुवाते सर्वम्, रसेनान्यः ज्योतिषान्यः। √'*अश्* *व्याप्तौ*'। निरु० १२.१

४. अश्वैरश्विनावित्यौर्णवाभः। '*अश्व*>*अश्विन्*'। निरु० १२.१

अश्विनी

१. अश्विन्यश्विनोः पत्नी। *(प्रत्ययार्थप्रदर्शनम्)*। निरु० १२.४६

अषाढा

१. **अषाढासि सहमाना सहस्वराती सहस्व** पृतनायतः। √'*षह्*'। यजु० १३.२६

२. ताम् (इष्टकां देवाः) उपधायासुरान्त्सपत्नान् भ्रातृव्यानस्मात्सर्व्वस्मादसहन्त यदसहन्त तस्मादषाढा। √'*षह्* *मर्षणे*'। शत०ब्रा० ७.४.२.३३

३. यन्नासहन्त तदषाढा। '*न*+ √*षह्*'। तै०सं० १.५.२.८

अष्टन्, अष्ट

१. अष्ट, अश्नुवीतामिति। √'*अश्* *व्याप्तौ*'। निरु० १३.२

२. अष्टौ भवन्त्येताभिर्वै देवाः सर्वा अष्टीराश्नुवत तथो एवैतद् यजमाना एताभिरेव सर्वा अष्टीरश्नुवते। √'*अश्* *व्याप्तौ*'। शां०आ० १.४, कौ० ९.४०

३. यदष्टाभिर् (ऋग्भिः) अवारुन्धताष्टाभिराश्नुवत तदष्टानामष्टत्वम्। √'*अश्* *व्याप्तौ*'। ऐ०ब्रा० १.१२

४. अष्टावश्नोतेः। √'*अश्* *व्याप्तौ*'। निरु० ३.१०

अष्टरात्र

१. (प्रजापतिः) यदस्माल्लोकादमुं लोकमाष्ट, तदष्टरात्राणामष्टरात्रत्वम्। √'*अश्*'+ *रात्र*'। जै०ब्रा० २.३११

असत्

१. इदं वा अग्रे नैव किंचनासीत्। न द्यौरासीन्न पृथिवी नान्तरिक्षम्। तदसदेव सन्मनोऽकुरुत स्यामिति। '*न*+ √'*अस* *भुवि*'। तै०सं० २.२.९.१

असक्रा

१. असक्रामसंक्रमणीयम्। '*न*+ *सम्*+ √'*क्रम*'। निरु० ६.२९

असश्चन्ती

१. असज्यमान इति वा। '*न*+ √'*षञ्ज* *सङ्गे*'। निरु० ५

२. अव्युदस्यन्त्याविति वा। '*न*+ *वि*+ *उद्*+ √'*असु* *क्षेपेणे*'। निरु० ५.२

असस्तन

१. असस्तना, अस्वपथ। √'*स्वप्*'। निरु० ११.१६

असामि

१. असामि सामि प्रतिषिद्धम्। सामि स्यतेः। असुसमाप्तम्। '*न*+ √'*षो* *अन्तकर्मणि*'। निरु० ६.२३

असिक्नी

१. असिक्न्यशुक्ला, असिता। *'न+ सिता> असिता> असिक्नी'*। निरु० ९.२६

असित/आसित

१. अथार्भवः पवमानः। स ह सोऽसित एव स्तोमः। दिश एव ताः। दिशो ह व्युत्क्रामन्ति पाप्मा न सिषाय, न हैनं पाप्मा सिनोति य एवं वेद। *'न+ √'षिञ्' बन्धने'*। जै०ब्रा० १.३१३

२. असिता सितमिति वर्णनाम। तत्प्रतिषेधोऽसितम्। *'न+ सित> असित'*। निरु० ९.२६

असु

१. तस्या एतस्यै वाचः प्राणा एवाऽसुः। एषु हीदं सर्वमसूतेति। *√'षु' प्रसवैश्वर्ययोः'*। जै०उप० १.१३.१.७

२. असुरिति प्राणनाम। अस्तः शरीरे भवति। *√'असु' क्षेपणे'*। निरु० ३.८

३. असुरिति प्रज्ञानाम। अस्यत्यनर्थान्। अस्ताश्चास्यामर्थाः। *√'असु' क्षेपणे'*। निरु० १०.३४

४. असु (प्रज्ञा)। √'असु' क्षेपणे'। अस्यति क्षिप्यत्यनर्थान्, अस्ताः क्षिप्ताः अस्यामर्थाः। *√'असु' क्षेपणे'+ उ'*। निघ० .३.९.६

असुनीति

१. असुनीतिः। असून्नयति। *'असु+ √'नी'*। निरु० १०,३९

असुर

१. **असुरस्य मायिन इन्द्रो व्यास्यच्चकृवाँ ऋजिश्वना।** *√'अस्'*। ऋ० १०.१३८.३

२. तस्य (प्रजापतेः) वा असुरेवाजीवत्, तेनासुनासुरान-सृजत, तदसुराणामसुरत्वम्। *'असु> असुर'*। मै०सं० ४.२.१

३. यद्दिवा देवानसृजत तद्देवानां देवत्वं यदसूर्य्यं तदसुराणामसुरत्वम्। *'न+ सूर्य्य> असुर्य्य> असुर'*। षड्०ब्रा० ४.१

४. मनो वा असुरम्। तद्ध्यसुषु रमते। *'असु+ √'रम्'*। जै०उप० ३.३५.३

५. असुरः (मेघः)। √'असु' क्षेपणे'। अस्यति क्षिपति भूमौ जलम्। *√'असु' क्षेपणे'+ उरन्'*। निघ० १.१०.२९

६. यद्वा, अस्यते क्षिप्यते स्थाने इन्द्रेण वर्षार्थम्। *√'असु' क्षेपणे'+ उरन्'*। निघ० १.१०.२९

७. यद्वा, अस्ति तिष्ठति असुः। शरीरे वसतीत्यसुः प्राणः। ''प्राणा वा आपः''— 'पानीयं प्राणिनां प्राणाः' इत्यादिदर्शनादसुशब्देनात्र जलमुच्यते, तद्राति। *'वसु+ √'रा' दाने'+ क> वसुर> असुर'*। निघ० १.१०.२९

८. यद्वा, जलवान् प्राणवान् वा। रो मत्वर्थीयः। *'असु+ र (मत्वर्थीयः')*। निघ० १.१०.२९

९. यद्वा, √'अस' गतिदीप्त्यादानेषु'। असति गच्छत्य-न्तरिक्षे, दीप्यते स्वयम्, आदत्ते वा जलं वर्षितुम्। *√'अस्'+ उरन्'*। निघ० १.१०.२९

१०. यद्वा, √'सुर' ऐश्वर्ये'। सुरतीति सुर ईश्वरः स्वतन्त्र (इत्यर्थः)। असुरः (अनीश्वरः), इन्द्रादिपरतन्त्र इत्यर्थः। *'न+ √'सुर' ऐश्वर्ये'+ क'*। निघ० १.१०.२९

११. असुरा असुरताः स्थानेषु। *'न+ सु+ √रम्'*। निरु० ३.८

१२. अस्ताः स्थानेभ्य इति वा। *√'असु' क्षेपणे'*। निरु० ३.८

१३. अपि वासुरिति प्राणनाम। अस्तः शरीरे भवति, तेन तद्वन्तः। *'असु+ रो मत्वर्थीयः'*। निरु० ३.८

१४. असोरसुरानसृजत तदसुराणामसुरत्वम्। *'असु> असुर'*। निरु० ३.८

१५. असुरत्वं प्रज्ञावत्वं वा। अनवत्वं वा। अपि वासुरिति प्रज्ञानाम, अस्यत्यनर्थान्। अस्ताश्चास्यामर्थाः। *√'असु' क्षेपणे'*। निरु० १०.३४

१६. असुरत्वमादिलुप्तम्। *'वसुर > असुर'*। निरु० १०.३४

असूर्त्त

१. असूर्त्ते, असुसमीरिताः। *'असु+ सम्+ √'ईर्'*। निरु० ६.१५

असृज

१. **आपो वै यद्यज्ञिया मेध्या असृज्यन्त तदेका अपि नासृज्यन्तासृग्वाव तन्नासृज्यत, तदस्नोऽसृक्त्वम्।** *'न+ √'सृज्'*। काठ० ३४.८

२. प्रजापतिः पशूनसृजत, स वा असृगेव नासृजतऽसृष्टऽवा एतत्, तदसोऽसृक्त्वम्। 'न+√'सृज्'। मै०सं० ४.२.९

असौ

१. अस्ततरोऽस्मात्। √'अस्'। निरु० ३.१६

अस्कृधोयु

१. **अस्कृधोरकृध्वायुः।** कृध्विति ह्रस्वनाम। निकृत्तं भवति। **'न+√'कृत्'+उ>अकृधु, अकृधु+आयु>अकृध्वायु> अस्कृधोयु'**। निरु० ६.३

अस्तम्

१. अस्तम् (गृहम्)। √'अस' भुवि'। भवत्यङ्ग नसुखं दीप्तये हि तत्। √'अस' भुवि'+तन्'। निघ० ३.४.५

२. यद्वा, √'अस' गतिदीप्त्यादानेषु'। आदीयते स्वीक्रियते वा तदर्थिभिः। √'अस्'+तन्'। निघ० ३.४.५

३. यद्वा, √'असु' क्षेपणे'। क्षिप्यन्तेऽस्मिन् पदार्था इति वा। √'असु' क्षेपणे'+तन्'। निघ० ३.४.५

अस्तमीके

१. अस्तमीके (अन्तिकम्)। अस्तं शब्दे उपपदे मातेः। अस्तं प्राप्यते अस्मिन्, अन्तिकस्थं हि नाश्यते। 'अस्त+√'मा'+वीकन्'। (निपा०)। निघ० २.१६.५

अस्तासि

१. अस्तासि, असितासि। √'असु' क्षेपणे'। निरु० ६.१२

अस्तु

१. शोचिरस्तुर्न शर्यामसनामनु द्यून्। √'अस्'। ऋ० १.१८४.४

अस्मद्

१. आरे **अस्मद्दैव्यं** हेळो **अस्यतु।** √'अस्'। ऋ० १.११४.४

अस्मयुः

१. अस्मयुरस्मान् कामयमानः। 'अस्म+यु'। निरु० ६.२१

अस्रीवयस्

१. अन्नमस्रीवयस्तद्येषु लोकेष्वन्नं तदस्रवयोऽथो यदेभ्यो लोकेभ्यो ऽन्नंऽस्रवति तदस्रवीयः। 'अन्न+√'स्रु> अन्नस्रवीयः>अस्रवीयः'। शत०ब्रा० ८.३.३.५

अस्रेमाः

१. अस्रेमाः (प्रशस्यम्)। √'स्रिवु' गतिशोषणयोः'। न गच्छत्यकीर्तिम्। अगम्यः सत्पुरुषाणाम्, न गच्छन्त्यस्माद् गुणाः। 'न+√'स्रिव्'+मनिन्'। निघ० ३.८.१

अहन्

१. ते देवा अब्रुवन् न हार्षीद् वा अयामिति। तदहरभवत्। 'न+√'हृ> अहर्>अहन्'। जै०ब्रा० ३.३५७

२. यदहमिति तान्यहान्यभवन्। 'अहम्>अहन्'। जै०ब्रा० ३.३८०

३. अहः कस्माद? उपाहरन्त्यस्मिन् कर्माणि। 'उप+आ+√'हृ'। निरु० २.२०

अहना

१. अहना (उषा)। √'अहि' गतौ'। अहन्ते गच्छत्याकाशे प्रतिदिनं क्षयं गच्छतीति वा। √'अह्'+युच्'। निघ० १.८.१०

२. यद्वा, √'अह' व्याप्तौ'। व्याप्नोति स्वभासा लोकं व्याप्यते वाऽऽदित्यरश्मिभिः। √'अह+युच्'। निघ० १.८.१०

३. यदहम् इति तान्यहान्यभवन्। 'अहम्=अहन्'। जै०ब्रा० ३.३८०

४. देवा वा अह्नो रक्षांसि निरघ्नन्। √'हन्'। कपि०कठ०सं० ५.९

५. अहरिति हन्ति पाप्मानं जहाति च य एवं वेद। √'हन्' *हिंसायाम् या √'हा' त्यागे'*। बृह०आ० ५.५.३

अहि

१. **अहन्नहिमन्वपस्ततर्द।** √'हन्'। ऋ० १.३२.१, अथर्व० २.५.५, सा०पू० ६.३.११

२. **अहिमिन्द्र जिघांसतो** दिवि ते। √'हन्'। ऋ० १.८०.१३

३. **अहन्नहिमभिनद्रौहिणं व्यहन्।** √'हन्'। ऋ० १.१०३.२

४. यदिन्द्राहन्प्रथमजामहीनाम्। √'हन्'। ऋ० १.३२.४

५. **अहन्नहिं** शूर वीर्येण। √'हन्'। ऋ० २.११.५

६. यो हत्वाहिमरिणात्सप्तसिन्धून्। √'हन्'। ऋ० २.१२.३, अथर्व० २०.३४.३

७. ओजायमानं यो **अहिं जघान।** √'हन्'। ऋ० २.१२.११, अ० २०.३४.११

८. मदे **अहिमिन्द्रो जघान**। √'हन्'। ऋ० २.१५.१

९. **अहन्नहिं** परिशयानमर्णः। √'हन्'। ऋ० ४.१९.१, ६.३०.४

१०. **अहन्नहिमरिणात्सप्तसिन्धून्**। √'हन्'। ऋ० ४.२८.१, १०.६७.१२, अथर्व० २०.९२.१२

११. **अहन्नहिं** पपिवाँ इन्द्रो अस्य। √'हन्'। ऋ० ५.२९.३

१२. भरमिन्द्राय यद**हिं जघान**। √'हन्'। ऋ० ५.२९.८

१३. अर्कैरवर्धयन्न**हये हन्तवा** उ। √'हन्'। ऋ० ५.३१.४, सा०पू० ४.१०.३

१४. **अहिमपः** परिष्ठां **हथः**। √'हन्'। ऋ० ६.७२.३

१५. मदच्युत**महये हन्तवा** उ। √'हन्'। ऋ० ८.९६.५

१६. अधराचो **अहन्नहिम्**। √'हन्'। ऋ० १०.१३३.२,सा०उ० १८०२

१७. **अहन्नहिं** पर्वते शिश्रियाणम्। √'हन्'। अथर्व० २.५.६

१८. **अहन्नेनं** प्रथमजाम**हीनाम्**। √'हन्'। अथर्व० २.५..७

१९. अथ (वृत्रः) यदपात्समभवत् तस्मादहिः। *'अपात> अहि'*। शत०ब्रा० १.६.३.९

२०. अथ यद् (श्वित्र आङ्गि रसः स्वर्गाल्लोकात्) अहीयत तदहीनामहित्वम्। *√'हि' गतौ वृद्धौ च'*। जै०ब्रा० ३.७७

२१. अहीनानि वा एतान्यहानि न ह्येषु किञ्चन हीयते। *'न+ √'हा' त्यागे'*। ऐ०ब्रा० ६.१८

२२. अहिरयनात्। एत्यन्तरिक्षे। *√'इण्+ इन्> अयि> अहि'*। निरु० २.१७

२३. अयमपीतरोऽहिरेतस्मादेव। निर्ह्रसितोपसर्गः। आहन्तीति। *'आ+ √'हन्'*। निरु० २.१७

२४. अहिः (मेघः)। √'इण' गतौ'। एत्यन्तरिक्षे। *√'इण्+ √इन्> अयि> अहि'*। निघ० १.१०.२१

२५. यद्वा, √'अहि' गतौ'। *√'अह्'+ इन्'*। निघ० १.१०.२१

२६. यद्वा, √'अह' व्याप्तौ'। *√'अह्'+ इन्'*। निघ० १.१०.२१

२७. यद्वा, आङ्पूर्वाद्धन्तेः हिंसार्थत्वाद् गत्यर्थत्वाद्वा। आ समन्तात् हन्ति भिनत्ति उष्णमाभिमुख्येन, हन्ति गच्छत्यन्तरिक्षम्। *'आ+ √'हन्'+ इण्+ (डित्)'*। निघ० १.१०.२१

२८. यद्वा, केवलादेव हन्तेः। हिः हन्ता, न हन्ता अहन्ता, अहिः अहिंसक इत्यर्थः, सर्वदा लोकस्य वर्षप्रदत्वात्। *'न+ √'हन्'+ इण् (डित्)'*। निघ० १.१०.२१

२९. माधवेन तु वाजसनेये ''सोऽग्निषोमावभिसम्बभूव सर्वां विद्यां सर्वं यशः सर्वमन्नाद्यं सर्वां श्रियं स यत् सर्वमेतत् समभवत् तस्मादहिः। *(अर्थनिर्वचनम्)*। निघ० १.१०.२१

३०. अहिः (उदकम्)। गच्छति निम्नप्रदेशम्, आभिमुख्येन हन्ति तापम्, अहिंसकं वा प्राणिनाम्। *'आ+ √'हन्' अथवा न+ √'हन्'+ इण्'*। निघ० १.१२.३१

३१. अही (गौः)। अहिशब्दो व्याख्यातो मेघनामसु। गम्यतेऽनया क्षीरादिहविः, गम्यते दत्तया पुण्यम्। *√'इण्'+ इन्> अयि> अहि'*। निघ० २.११.४

३२. यद्वा, अंहति शृङ्गादिना मनुष्यान्। *√'अहि' गतौ+ इन्'*। निघ० २.११.४

३३. यद्वा, न हन्तव्या वा। *'न+ √'हन्'+ इन्'*। निघ० २.११.४

३४. अही (द्यावापृथिव्यौ)। गम्यते प्राणिभिः। *√'इण्'+ इन्'*। निघ० ३.३०.२२

अहिगोप

१. अहिगोपा.............अहिना गुप्ताः। *'अहि+ √'गुप्'*। निरु० २.१७

अहीन

१. अहीनानि ह वा एतान्यहानि न ह्येषु **किञ्चन हीयते**। *'न+ √'हा' त्यागे'*। ऐ०ब्रा० ६.१८

२. तान्येतान्यहीनसूक्तानीत्याचक्षते। न ह्येषु किंचन क्षीयते। *'न+ √'हा'* गो०ब्रा० २.५.१५

अह्नाय

१. अह्नाय (पुराणम्)। अव्ययम्। *(अव्ययम्)*। निघ० ३.२७.६

अह्रयाण

१. अह्रयाणोऽह्रीतयानः। *'न+ √'ह्री'+ क्त+ यान> अह्रीतयान > अह्रयाण'*। निरु० ५.१५

आकाश

१. आवपनमाकाश आकाशे हीदं सर्वं समोप्यते। *'आ+ √'वप्'*। ऐ०आ० २.३.१

२. स यस्स आकाश आदित्य एव सः। एतस्तिन् ह्युदिते सर्वमिदमाकाशते। *'आ+ √काश्'*। जै०उप० १.८.१.२

३. आकाशम् (अन्तरिक्षम्)। आङ्पूर्वात् √'काशृ दीप्तौ'। आ समन्तात् काशन्ते दीप्यन्ते सूर्यादयोऽत्र। *'आ+ √'काश्'+ घ'*। निघ० १.३.७.४

४. यद्वा, नञ् काशेः। न काशते पृथिव्यादिवत् अप्रत्यक्षत्वात्। *'न + √'काश्' + अच > अकाश > आकाश'*। निघ० १.३.७

आके

१. आके (दूरे)। आङ्पूर्वदितेः। *'आ+ √'इण्' गतौ'+ आक'*। निघ० ३.२६.१

२. यद्वा, आङ्पूर्वात् किरतेः। आकीर्णं च तद् विक्षिप्तमिव भवति। *'आ+ √'कृ'+ उ'*। निघ० ३.२६.१

३. आके (अन्तिकम्)। आङ् उपपदे क्रामतेः। आक्रम्यते गन्तृभिः। *'आ+ √'क्रम्'+ आक (निपा०)'*। निघ० २.१६.६

आकेनिपः

१. आकेनिपः (मेधाविनः)। आङ् के नि चोपपदे पततेः। के आत्मनि पतन्ति, अध्यात्मज्ञाने पतन्त इत्यर्थः। *'आ+ के+ नि+ √'पत्'+ ड'*। निघ० ३.१५.१८

आक्रन्दे

१. आक्रन्दे (सङ्ग्रामः)। √'क्रदिं आल्हादने रोदने च'। क्रन्दन्त्याह्वयन्तेऽन्योन्यमत्र, रुदन्ति वानेन बन्धुविनाश-हेतुत्वात्। *'आ+ √'क्रन्द्'*। निघ० २.१७.६

आक्षाण

१. आक्षाण आश्नुवानः। *√'अश' व्याप्तौ'*। निरु० ३.१०

आक्षार

१. एभ्यो वै लोकेभ्यो रसोऽपाक्रामत् तं प्रजापति-राक्षारेणाक्षारयद् यदाक्षारयत् तदाक्षारस्याक्षारत्वम्। *'आ+ √'क्षर्'*। ता०ब्रा० ११.५.१०

२. तस्माद्यः पुरा पुण्यो भूत्वा पश्चात् पापीयान् स्यादाक्षारं ब्रह्मसाम कुर्वीतात्मन्येवेन्द्रियं वीर्य्यं रसमाक्षारयति। *'आ+ √'क्षर्'*। ता०ब्रा० १०.११.५.११

आगम

१. मर्यादे पुत्रमाधेहि तं त्वमा **गमयागमे**। *'आ+ √'गम्'*। अथर्व० ६.८१.२

आगस्

१. आग आङ्पूर्वाद्गमेः। *'आ+ √'गम्'*। निरु० ११.२४

आग्नीध्र

१. आग्नीध्रे ह्यधारयन् यदाग्नीध्रे ऽधारयन्त तदाग्नीध्रस्याग्नीध्रत्वम्। *'आग्नि+ √'धृ'*। ऐ०ब्रा० २.३६

२. यत्तस्यामेव होत्रायमग्निभूतमिन्धानाः पुनस्तुवन्तः शंसन्तस्तिष्ठंस्तदाग्नीध्रोऽभवत्तदाग्नीध्रस्याग्नीध्रत्वम्। *'आग्नि+ √'धृ'*। गो०ब्रा० १.२.१९

आग्रयण

१. यां वाऽ अमूं ग्रावाणमाददानो वाचं यच्छत्यत्र वै साग्रेऽवदत्, तद्यत्साग्रे ऽवदत्तस्मादाग्रायणो नाम। *'अग्रे+ (अवदत्)>आग्रयण'*। शत०ब्रा० ४.२.२.६

आग्रायण

१. एतेन वै देवा अग्रं पर्यायꣳस्तदाग्रायणस्याग्रायणत्वम्। *'अग्रे> आग्रायण'*। काठ०सं० १२.७

२. ते देवा एतमाग्रायणमपश्यꣳस्तमगृह्णत तेनाग्रं पर्यायन्, यदग्रं पर्यायꣳ स्तदाग्रायणस्याग्रायणत्वम्। *'अग्रे> आग्रायण'*। काठ०सं० २७.९

आग्लागृध

१. तं वा एतमाग्लाहतं संतमाग्लागृध इत्याचक्षते परोक्षेण, परोक्षप्रिया इव हि देवा भवन्ति प्रत्यक्षद्विषः। य एष ब्राह्मणो गायनो वा नर्तनो वा भवति तमाग्लागृध इत्याचक्षते। *'आग्लाहत> आग्लागृध'*। गो०ब्रा० १.२.२१

आघृणि

१. आघृणिरागतहृणिः। *'आगत+ हृणि'*। निरु० ५.९

आङ्गिरस

१. तानङ्गिरस ऋषीनाङ्गिरसांश्चार्षेयानभ्यश्राम्यदभ्यतपत् समतप्तेभ्यः श्रान्तेभ्यस्तप्तेभ्यः सन्तप्तेभ्यो यान् मन्त्रान् अपश्यत् स आङ्गिरसो वेदोऽभवत्। *'अङ्ग+ रस> अङ्गिरस> आङ्गिरस'*। गो०ब्रा० १.१.८

२. अतो हीमान्यङ्गानि रसं लभन्ते। तस्मादाङ्गिरसः। *'अङ्ग+ रस'*। जै०ब्रा० २.११.९

आङ्गूष

१. आङ्गूषः स्तोम आघोषः। *'आ+√'घुष्'*। निरु० ५.११

आचार्य

१. आचार्यः कस्माद्? आचारं ग्राहयति। आचिनोत्यर्थान्, आचिनोति बुद्धिमिति वा। *'आ+√'चि'*। निरु० १.४

२. आचारे साधुः। *'आचार+ यत्'*। अष्टा० ४.४.९८

आच्यदोह

१. एतैर्वै सामभिः प्रजापतिरिमान् सर्वान् कामान् दुग्ध यदाच्यादुग्ध तदाच्यादोहानामाच्यादोहत्वम्। *आच्यादुग्ध> आच्यादोह'*। ता०ब्रा० २१.२.५

आजि

१. जयावेदत्र शतनीथ**माजिम्**। *√'जि 'जये'*। ऋ० १.१७९.३

२. त्वया वयमर्य **आजिं जयेम**। *√'जि 'जये'*। ऋ० ४.२०.३

३. त्वयाजिं सौश्रवसं **जयेम**। *√'जि 'जये'*। ऋ० ७.९८.४

४. **आजिं जयेम** धन्वना तीव्राः समदो **जयेम**। *√'जि 'जये'*। यजु० २९.३९

५. **अजैषं** सर्वानाजीन् वः। *√'जि 'जये'*। अथर्व० २.१४.६

६. **आजिन्न** गिर्ववाहो **जिग्युरश्वाः**। *√'जि 'जये'*। सा०पू० १.७.६

७. आजेराजयनस्य। *'आ+√'जि'*। निरु० ९.२३

८. आजवनस्येति वा। *'आ+√'जु'*। निरु० ९.२३

९. आजिः (सङ्ग्रामः)। √'अज' गतिक्षेपणयोः'। अजन्ति गच्छन्त्यत्र विजयश्रियं योद्धारः, कातराः पराभवं वा। *√'अज '+ इण्'*। निघ० २.१७.८

१०. यद्वा, क्षिप्यन्ते शस्त्राणि क्षिपन्त्याक्षिपन्ति वान्योन्यं वीर्य्यतारतम्यात्। *√ अज '+ इण्*। निघ० २.१७.८

आज्य

१. यदजोऽविन्दत् तदाज्यस्याज्यत्वम्। *अज> आज्य*। काठ०सं० २४.७; कपि०सं० ३७.८

२. आज्येन वै देवाः सर्वान् कामानजयन् सर्वममृतत्वम्। *√'जि 'जये'*। कौ०ब्रा० १४.१

३. तद्यद् (देवाः) इमाँल्लोकान् (आज्यैः) आजयंस्तदाज्यानामाज्यत्वम्। *'आ+√'जि 'जये'*। जै०ब्रा० १.१०५

४. ते वै प्रातराज्यैरेवाजयन्त आयन्, यदाज्यैरेवाजयन्त आयंस्तदाज्यानामाज्यत्वम्। *√'जि '+ इण्'*। ऐ०ब्रा० २.३६

५. यद् (देवाः) अब्रुवन्नाजिमेषामयामेति तदेषां (आज्यानां) द्वितीयमाज्यत्वम्। *'आजि+ √'इण्> आज्य*। जै०ब्रा०१.१०५

६. त आजिमायन् (देवाः) यदाजिमायंस्तदाज्यानामाज्यत्वम्। *'आजि+ √'इण्> आज्य*। ता०ब्रा० ७.२.१

आणि

१. आणिरणात्। √ऋ। निरु० ६.३२।

२. आणौ (सङ्ग्रामः)। √'अण्' शब्दार्थः। *√'अण् '+ इण्*। निघ० २.१७.३४

आण्ड

१. आणी इव व्रीडयति। *'आणि+ √व्रीड्'*। निरु० ६.३२

आताः

१. आताः (दिक्)। आङ्पूर्वादततेर्गतिकर्मणः। आभिमुख्येन गम्यन्ते प्राणिभिस्तं तं कार्य्यं प्रति। *'आ+ √'अत् '+ घञ्'*। निघ० १.६.१

२. यद्वा, आङ्पूर्वात् तनोतेः। आ तताः (आताः)। *'आ+ √'तन् '+ ड'*। निघ० १.६.१

आत्मन्

१. आत्मा अततेर्वा। *√'अत' सातत्यगमने'*। निरु० ३.१५

२. आप्तेर्वा। *√'आप्'*। निरु० ३.१५

३. अपि वाप्त इव स्यात्। यावद् व्याप्तिभूत इति वा। *√'आप्'*। निरु० ३.१५

आत्मेय

१. सो (अग्निः) ऽपोऽङ्गारेणाभ्यपातयत्। तत एकतोऽजायत। द्वितीयम्। ततः द्वितः (अजायत)। तृतीयम्। ततस्त्रितः (अजायत)। यदात्मनो निरमिमीत तदात्मेयानामात्मेयत्वम्। *'आत्मन्> आत्मेय'*। कपि० क० सं० ४७ (तु०, मै०सं० ४.१.९., शत०ब्रा० १.२.३.१)

आथर्वन्

१. तानथर्वण ऋषीनाथर्वणांश्चार्षेयानभ्यश्राम्यदभ्यतपत् समपतत् तेभ्यः श्रान्तेभ्यस्तप्तेभ्यः सन्तप्तेभ्यो यान्

मन्त्रानपश्यत् स आथर्वणो वेदो ऽभवत्। *'आथर्वन्>अथर्वन्'*। गो०ब्रा० १.१.५

आदध्न

१. आस्यदध्ना। *'आस्य+ दध्न> आदध्न'*। निरु० १.९

आददि

१. **आदद्धव्यान्याददिर्यज्ञस्यकेतुरर्हणा।** *√'अद्' या √'दा'*। ऋ० १.१२७.६

आदर्दिर

१. **आदर्दिरो भुवना दर्दरीमि।** √'दॄ'। ऋ० ८.१००.४

आदि

१. आदि वयोभ्य:। तस्मात् तान्याददानान्युपापपातमिव चरन्ति। *'आ+ √'दा'*। जै०उप० १.११.७

२. इम एव लोका आदि:। तेषु हीदं लोकेषु सर्वमाहितम्। *'आ+ √'धा'*। जै०उप० १.१९.२

आदितेय

१. अदिते: पुत्रम्। *(प्रत्ययार्थप्रदर्शनम्)*। निरु० २.१३; ७.२९

आदित्य

१. **इन्द्र इन्द्रियैर्मरुतो मरुद्भिरादित्यैर्नो अदिति: शर्म यंसत्।** 'अदिति>आदित्य'। ऋ० १.१०७.२

२. कतम आदित्या इति, द्वादशमासा: संवत्सर इति होवाच। एत आदित्या, एते हीदं सर्वमाददाना यन्ति, ते यदिदं सर्वमाददाना यन्ति, तस्माद् आदित्या इति। 'आ+√दा'+√इण्' >आदित्य'। शत०ब्रा० ११.६.३.८. (तु०जै०ब्रा० २.७७)

३. तद्यदेतेषां भूतानामादत्त, तदादित्यस्यादित्यत्वम्। 'आ+√ दा >आदित्य'। जै०ब्रा, २.२६

४. तेषां (नक्षत्राणाम्) एष उद्यन्नेव वीर्य्यं क्षत्रमादत्त, तस्मादादित्यो नाम। 'आ+√ दा'>आदित्य'। शत०ब्रा० २.१.२.१८

५. प्राणा वा आदित्या:। प्राणा हीदं सर्वमाददते। *'आ+ √'दा > आदित्य'*। जै०उप० ४.२..१९

६. यदसुराणां लोकानामादत्त। तस्मादादित्यो नाम। *'आ+ √'दा'*। तै०सं० ३.९.२१.२

७. यदेतदोमित्यादत्ते। असौ वा आदित्य एतदक्षरम्........स यदोमित्यादत्तेऽमुमेवैतदादित्यं मुख आधत्ते। *'आ+ √'दा' या 'आ+ √'धा'*। जै०ब्रा० १.३२२

८. **स्वरित्येव सामवेदस्य रसमादत्त** (प्रजापति:)। सऽसौ द्यौरभवत्। तस्य यो रस: प्राणेदत् स आदित्योऽभवद् रसस्य रस:। 'आ+√'दा'। जै०उप० १.१.१.५

९. तमाददानामादितादितेति वाचो ऽवदन्। तदादित्यस्यादित्यत्वम्। *'आ+ √'दा'+ क्त> आदित > आदित्य'*। जै०ब्रा० ३.३५६

१०. स वशमेव दिव आदत्त, क्षत्रं नक्षत्राणाम्, आत्मानमन्तरिक्षस्य, रूपं वायोर्, आज्ञां मनुष्याणाम्, चक्षु: पशूनाम्, ऊर्जमपाम्, रसमोषधीनाम्, चरथं वनस्पतीनाम्, शिश्नं वयसाम्, अर्चिमग्नेर्, हृदयं पृथिव्यै, गन्धं हिरण्यस्य, स्तनयित्नुं वाचम्, संगमं पितृणाम्, भां चन्द्रमस:। तद्यदेतेषां भूतानामादत्त तदादित्यस्यादित्यत्वम्। *'आ+ √'दा'*। जै०ब्रा० ३.३५८

११. एते हीदं सर्वमाददाना यन्ति। तस्माद् आदित्या इति। *'आ+ √'दा'*। जै०ब्रा० २.७७

१२. अदितिर्व्वै प्रजाकामौदमपचत् तत उच्छिष्टमश्नात् सा गर्भमधत्त, तत आदित्या अजायन्त। *'अदिति= आदित्य'*। गो०ब्रा० १.२.१५ (तु०, कपि० कठ०सं० ६.५)

१३. आदित्य: कस्मात्? आदत्ते रसान्, आदत्ते भासं ज्योतिषाम्। *'आ+ √'दा'*। निरु० ३.१३

१४. आदीप्तो भासेति वा। *'आ+ √'दीप्'*। निरु० ३.१३

१५. अदिते: पुत्र इति वा। *'अदिति> आदित्य'*। निरु० ३.१३

आदुरि

१. आदुरिरादराणाम्। *'आ+ √'दॄ'*। निरु० ६.३१

आधव

१. आधव आधवनात्। *'आ+ √'धू'*। निरु० ६.२९

आध्र

१. आध्र:, आढ्यालुर्दरिद्र:। (अर्थनिर्वचनम्)। निरु० १२.१४

आनुषक्

१. आनुषगिति नामानुपूर्व्यस्यानुषक्तं भवति। 'अनु+ √षञ्ज्'। निरु० ६.१४

आप:

१. आप: (अन्तरिक्षम्)। √'आप्लृ व्याप्तौ'। व्याप्नोति ह्यन्तरिक्षं सर्वं जगत्। √'*आप्*'+ *क्विप*'। निघ० १.३.८

२. आप्यते वा प्राणिभि:। √'*आप्*'+ *क्विप्*'। निघ० १.३.८

आपनीफणत्

१. आपनीफणदिति फणतेश्चर्करीतवृत्तम्। √'*फण्*'। निरु० २.२८

आपान

१. आपान आप्नुवान:। √'*आप्*'। निरु० ३.१०

आपान्तमन्यु

१. आपान्तमन्यु:, आपातितमन्यु:। '*आ*+ √'*पत्*'+ *मन्यु*> *आपातितमन्यु*'। निरु० ५.१२

आप्त्य

१. आप्त्या आप्नोते:। √'आप्'। निरु० ११.२०

२. आप्त्यम्, आप्तव्यम्। आप्त्यानाम्, आप्तव्यानाम्। √'आप्'। निरु० ११.२१

आप्य

१. सो (अग्नि:) ऽङ्गारेणापोऽभ्यपातयत्। तत एकतोऽजायत स द्वितीयमभ्यपातयत्, ततो द्वितोऽजायत स तृतीयमभ्यपातयत् ततस्त्रितो ऽजायत। यदद्भ्योऽजायन्त तदाप्यानामाप्यत्वम्। √'*आप्*'। तै०सं० ३.२.८.१०—११

२. आप्यमाप्नोते:। √'*आप्*'। निरु० ६.१४

आप्रा

१. आप्रा, आपूपुरद्। '*आ*+ √'*पूर्*'। निरु० १२.१६

आप्री

१. प्रैषेभि: प्रैषानानाप्नोत्याप्रीभिराप्रीर्यज्ञस्य। √'*आप्*'। यजु० १९.१९

३. आप्रीभिराप्नुवन्। तदाप्रीणामाप्रित्वम्। √'*आप्*'। तै०सं० २.२.८.६

३. आप्रीभिराप्रीणाति, तद्यदाप्रीणाति तस्मादाप्रियो नाम। '*आ*+ '*प्रीञ् तर्पणे कान्तौ च*'। कौ०ब्रा० १०.३

४. तद्यदेनम् (पशुम्) एताभिराप्रीभिराप्रीणात् तस्मादाप्रियो नाम। '*आ*+ '*प्रीञ् तर्पणे कान्तौ च*'। शत०ब्रा० ११.८.३.५

५. ताभि: (आप्रीभि:) स (प्रजापति:) मुखत आत्मानमाऽप्रीणीत। √'*आ*+ '*प्री*'। तै०सं० ५.१.८.३–४

६. यदाप्रियो भवन्ति यज्ञमेवाप्रीणाति। √'*आ*+ '*प्री*'। काठ० २२.१

७. यदेता आप्रियो भवन्ति यज्ञमेवैताभिर्यजमान आप्रीणीते। √'*आ*+ '*प्री*'। मै०सं० ३.९.६

८. यदेतान्याप्रिय आज्यानि भवन्त्यात्मानमेवैतैराप्रीणाति। √'*आ*+ '*प्री*'। ता०ब्रा० १५.८.२, १६.५.२३

९. स (प्रजापति:) एता आप्रीरपश्यत् ताभिरात्मानमाप्रीणीत् यज्ञो वै प्रजापतिर्यदेता आप्रियो भवन्ति। यज्ञमेवैताभिर्यजमान आप्रीणीते। √'*आ*+ '*प्री*'। मै०सं० ३.९.६

१०. तमेताभिराप्रीभिराप्याययन्ति तद्यदाप्याययन्ति तस्मादाप्रियो नाम। '*आ*+ √'*प्यायी*' वृद्धौ'। शत०ब्रा० ३.८.१.२

१२. यत्र ह वै क्व चाप्रीराज्यं प्रजापतेरेव तत्। प्रजापतिमेव तेनाप्रीणन्ति। '*आ*+ √'*प्री*'। जै०ब्रा० २.१२

१३. स (प्रजापति:) एतान्याप्रीराज्यान्यपश्यत्। तैरात्मानमाप्रीणीत। '*आ*+ √'*प्री*'। जै०ब्रा० ३.२८२

१४. आप्रिय: कस्मात्? आप्नोते:। √' *आप्*'। निरु० ८.४

१५. प्रीणातेर्वा। 'आप्रीभिराप्रीणाति' इति च ब्राह्मणम्। '*आ*+ √' *प्री*'। निरु० ८.४

आमहीयव

१. ता यदेनं (प्रजापतिम्) प्रजा: सुहिता अशिता आमहीयन्त तदामहीयवस्यामहीयत्वम्। '*आ*+ √'*मह्*'। जै०ब्रा० १.११७

२. ता: (प्रजा: प्रजापतिना) सृष्टा अमहीयन्त यदमहीयन्त तस्मादामहीयवम्। √'*मह्*'। ता०ब्रा० ७.५.१

आमाद

१. **आमाद:** क्ष्विङ्क्षास्तमदन्त्वेनी:। '*आम*+ √'*अद्*'। ऋ० १०.८७.७, अथर्व० ८३.७

आयती

१. आयती (बाहू)। √'यती' प्रयत्ने' गतिकर्मा वा' (निघ० २.१४)। आभिमुख्येन यतते कार्येषु, गच्छन्तौ वा साधनत्वम्। '*आ+√'यत्'+इन्*'। निघ० २.४.१

आयु

१. यद् (देवा:) आयुषैवायुवत तद् आयुष: आयुष्ट्वम्। '*आ+√'यु*'। जै०ब्रा० २.४४२

२. आयुषा वै देवा असुरानायुवत। '*आ+√'यु*'। तां०ब्रा० १६.३.२

३. आयुश्च वायुरयन:। √'इण्' गतौ' या √'अय' गतौ'। निरु० ९.३

४. आयो:। अयनस्य मनुष्यस्य ज्योतिषो वोदकस्य वा। √'इण्' गतौ' अथवा √'अय' गतौ'। निरु० १०.४१

५. आयोरयनस्य। √'इण्' गतौ' अथवा √'अय' गतौ'। निरु० ११.४९

६. आयव: (मनुष्या:)। √'इण्' गतौ'। गच्छन्ति ग्रामात् ग्रामम्, गमनशीला:। √'इण्'+उण्'। निघ० २.३.१७

७. आयु: (अन्नम्)। अननं प्राणनमस्ति। √'*अन' प्राणने*'। निघ० २.७.२३

आयुर्दा

१. आयुर्दाऽअग्नेऽस्यायुर्मे देहि। '*आयुस्+√'दा*'। यजु० ३.१७

आयुध

१. युधे यदिष्णान आयुधान्यृधायमाणो निरिणाति शत्रून्। √'युध्'। ऋ० १.६१.१३

२. आयुधमायोधनात्। '*आ+√'युध्*'। निरु० १०.६

३. आयुधानि (उदकानि)। √'युध' सम्प्रहारे'। आयुध्यत्यनेनायुधम्। '*आ+√'युध'+क*'। निघ० १.१२.२९

४. यद्वा, आयुध्यते सम्प्रहरति रक्षांसि। '*आ+√'युध्'+क*'। निघ० १.१२.२९

आरभ

१. आरभम्, आरब्धम्। '*आ+√'रभ' राभस्ये*'। निरु० १२.३२

आरम्भणीय

१. चतुर्विंशमेतदहरूपयन्त्याभरणीयमेतेन वै संवत्सर-मारभन्त। एतेन स्तोमांश्च छन्दांसि चेतैन सर्वादेवता अनारब्धं वै तच्छन्दोऽनारब्धा सा देवता यदेतस्मिन्नहनि नारभन्ते तदाराम्भणीयस्यारम्भणीयत्वम्। '*आ+√'रभ्*'। ऐ०ब्रा० ४.१२

२. तं चतुर्विंशेनारभन्ते तदारम्भणीयस्यारम्भणीयत्वम्। '*आ+√'रभ्*'। कौ०ब्रां० १९.३

३. वागारम्भणीयमहर्यद्यदारभते वागारम्भते वाचैव तदारभते। गो०ब्रा० १.५.४

आरित

१. आरित: प्रत्यृत: स्तोमान्। √'ऋ'। निरु० ५.१५

आरैक्

१. आरैक्, अरिचत्। √'*रिचिर्' विरेचने*'। निरु० २.१९

आर्जिकीया

१. आर्जिकीयां विपाडित्याहु:, ऋजीकप्रभवा वा, ऋजीकगामिनी वा। '*ऋजीक> आर्जिकीय*'। निरु० ९.२९

आर्त्नी

१. आर्त्नी अर्तन्यौ वा। √'*ऋत' गतौ' (सौत्रो धातु: अथर्व० ३०.१.२९)*। निरु० ९.३९

२. अरण्यौ वा। √'*ऋ' गतौ*'। निरु० ९.३९

३. आरिषण्यौ वा। '*आ+√'रिष्*'। निरु० ९.३९

आर्य

१. आर्य ईश्वरपुत्र:। *(अर्थनिर्वचनम्)*। निरु० ६.२६

आर्ष्टिषेण

१. आर्ष्टिषेण ऋष्टिषेणस्य पुत्र:। 'ऋष्टिषेण> आर्ष्टिषेण'। (ऋष्टियुक्ता सेना यस्य स) निरु० २.११

२. इषितसेनस्येति वा। *(अर्थनिर्वचनम्)*। निरु० २.११

आवया:

१. आवया: (उदकम्) आङ्पूर्वात् √'वी' गतिव्याप्तिप्रजनकान्त्यसनखादनेषु। अस्यते वीयते आभिमुख्येन गम्यते इति वा आवया:। '*आ+√'वी' +असि*'। निघ० १.१२.४६

आवह

१. आवह, आवहनात्। √'*आ+ वह्*'। निरु० ५.२६

आविद

१. स यदेनमेताभ्यो देवताभ्य आवेदयत्येताभिरनुमतः सूयते, तस्मादाविदो नाम। '*आ+* √'*विद्*'। का०शत० ब्रा० ७.२.४.३०

आविस्

१. आविरावेदनात्। '*आ+* √'*विद्*'। निरु० ८.१५

आवृत

१. **सूर्यस्यावृतमन्वावर्ते।** '*आ+* √'*वृत्*'। यजु० २.२६.२७,अथर्व० १०.५.३७

आशयत्

१. आशयदाशेतेः। '*आ+* '*शी*'। निरु० २.१६

आशा

१. विश्वा **आशा व्यानशे।** √'*अश्*'। अथर्व० ५.७.९

२. आशा दिशो भवन्ति। आसदनात्। '*आ+* '*सद्*'। निरु० ६.१

३. आशा उपदिशो भवन्ति। अभ्यशनात्। '*अभि+* '*अश्*'। निरु० ६.१

४. आशाः (दिशः)। आङ्पूर्वात् √'शद्लृ' शातने'। तं तमर्थं प्रत्यागमनात्। '*आ+* √'*शद्*'+ ड'। निघ० १.६.२

५. यद्वा, आ इत्येषोऽभीत्यस्यार्थे वर्त्तते। √'अशू' व्याप्तौ'। आशा उपदिशा भवन्त्यभ्यशनात्, परस्परादिभिः संव्याप्तेः। '*आ+* √'*अश्*'+ *घञ्*'। निघ० १.६.२

६. आ अश्नुवते आशाः इति क्षीरस्वामी। 'आ+ √'अश्'+अच्'। निघ० १.६.२

आशिर्

१. ताँ **आशिरं** पुरोळाशमिन्द्रेमं सोमं **श्रीणीहि।** √'*श्रृ*'। ऋ० ८.२.११

२. आशीराश्रयणाद्वा। '*आ+* √'*श्रि*'। निरु० ६.८

३. आश्रपणाद्वा। '*आ+* √'*श्रा*' पाके'। निरु० ६.८

आशिस्

१. आशीराशास्तेः। '*आ+* √'*शास्*'। निरु० ६.८

आशु

१. **एमाशुमाशवे** भर यज्ञश्रियं नृमादनम्। √'*अश्*'। ऋ० १.४.७

२. न ते **वज्रमन्वश्नोति** कश्चन **यदाशुभिः।** √'*अश्*'। ऋ० २.१६.३

३. आशुः (अश्वः)। 'अशू' व्याप्तौ। अश्नुतेऽध्वानम्। √'*अश्*'+ उप्'। निघ० १.१४.१५

४. अश्नोतेर्वा। √'*अश्*'+ उण्'। निघ० १.१४.१५

५. अश्नाति महाशनो भवति। √'*अश*' *भोजने*'+ उण्'। निघ० १.१४.१५

६. आशुरिति क्षिप्रनाम (निघ० २.१५) शीघ्रो वा। √'*अश*' *भोजने*'+ उण्'। निघ० १.१४.१५

७. आशुः (क्षिप्रम्)। 'अशू' व्याप्तौ'। व्याप्नोत्यनेन नरवैलक्षण्येन व्याप्तव्यम्। √'*अश*' *भोजने*'+ उण्'। निघ० २.१५.१६

आशुशुक्षणि

१. आशु इति च शु इति च क्षिप्रनामनी भवतः। क्षणिरुत्तरः क्षणोतेः। 'आशु'+शु+ √क्षण् निरु० ६.१

२. आशु शुचा क्षणोतीति वा। शुक् शोचते। 'आशु'+शुच्+ √क्षण् निरु० ६.१

३. आशु शुचा सनोतीति वा। 'आशु'+शुच्+ √षणु दाने निरु० ६.१

४. आ इत्याकर उपसर्गः पुरस्तात्। चिकीर्षितज उत्तरः। आशुशोचयिषुरिति। '*आ+* √'*शुच्*'+ *सन्+ अनि*'। निरु० ६.१

आशुषाणास

१. **आशुषाणास** इषीर्युवोः **सचाभ्यश्याम** वाजान्। √'*अश्*'। ऋ० ७.९३.८

आश्व

१. (प्रजापतिः) ता (प्रजाः) आश्वेनाश्वो भूत्वासृजत। यदाश्वेनाश्वो भूत्वासृजत तदाश्वस्याश्वत्वम्। '*अश्व*> *आश्व*'। जै०ब्रा० ३.१४

२. यद् अश्वस्सामुद्रिरपश्यत् तस्मादाश्वमित्याख्यायते। '*अश्व*> *आश्व*'। जै०ब्रा० ३.१४

३. अथो आहुराश्वेन वै देवा अश्वा भूत्वा स्वर्गं लोकमायन्निति। '*अश्व*> *आश्व*'। जै०ब्रा० ३.१४

४. ततो वै ते (देवाः) स्वर्गं लोकमाश्नुवत। √'अश्'। जै०ब्रा० ३.२५८

आष्ठा

आष्ठा (दिशः)। आङ्पूर्वात् तिष्ठतेः। आ समन्तात् स्थीयते आभिः। 'आ+ √'स्था'+ क'। निघ० १.६.४

आसन्दी

१. इयं (पृथिवी) वाऽआसन्द्यस्याᳪं हीदᳪं सर्वमासन्नम्। 'आ+ √'सद्'। शत०ब्रा० ६.७.१.१२

आसस्राण

१. आसस्राणासः। आससृवांसः। 'आ+ √'सृ'। निरु० १०.३

आसात्

१. आसात्। √'आस' उपवेशने'। अन्तिके आसते। √'आस्'+ घ'। निघ० २.१६.२

आस्थान

१. आस्थाने पर्वता अस्थुः स्थाम्न्यश्वाँ अतिष्ठिपम्। √'स्था'। अथर्व० ६.७७.१

२. आस्थाने पर्वता अस्थुः स्थाम्निं वृक्कावतिष्ठिपम्। '√स्था'। अथर्व० ७.९६.१

आस्य

१. अग्नेष्ट्वास्येन प्राश्नामि। √'अश्'। यजु० २.११

२. आस्यमस्यतेः। √'असु' क्षेपणे'। निरु० १.९

३. आस्यन्दत एतदन्नमिति वा। 'आ+ √'स्यन्द्'। निरु० १.९

४. आस्य, आस्यन्दनवन्तम्। 'आ+ √'स्यन्द्'। निरु० १०.१३

आहनस्

१. आहनः, आहंसीव भाषमाणेत्यसभ्यभाषमाणादाहना इव भवत्येतस्मादाहनः स्यात्। 'आ+ √'हन्'। निरु० ५.२

२. आहनसः, आहननवन्तः, वञ्चनवन्तः। 'आ+ √'हन्'। निरु० ४.१५

आहवे

१. आहवे (सङ्ग्रामः)। √'ह्वेञ्' स्पर्द्धायाम्'। आहूयन्तेऽत्र परस्परं योद्धारः। 'आ+ √'ह्वे'। निघ० २.१७.७

आहाव

१. आहाव आह्वानात्। √'आ+ 'ह्वे'। निरु० ५.२.६

आहुति

१. आहुतयो वै नामैता यदाहुतय एताभिर्वै देवान् यजमानो ह्वयति। 'आ+ √'ह्वे'। ऐ०ब्रा० १.२

२. तद्यदाह्वयति तस्मादाहुतिनमि। 'आ+ √'ह्वे'। शत०ब्रा० ११.२.२.६

३. तस्मिन्नग्नौ . यत्किञ्चाभ्यादधत्याहितय एवास्य ता आहितयो ह वै ता आहुतय इत्याचक्षते परोऽक्षम्। 'आ+ √'धा> आहित> आहुति'। शत०ब्रा० १०.६.२.२

४. अग्रेऽग्ना आहुतिराहूयते तदग्निहोत्रस्याग्निहोत्रत्वम्। आ+ √'ह्वे'। मै०सं० १.८.१

५. आहुतिम् अजुहवुः। 'हु'। जै०ब्रा० १.१२;१.१३

६. आहुतिं जुह्वति। 'हु'। जै०ब्रा० १.१२; १.१३

७. आहुतिं जुहोति। 'हु'। जै०ब्रा० १.१६; १.२१

८. आहुतीर् जुहोति। 'हु'। जै०ब्रा० १.१२६

९. आहुतयो हूयन्ते। 'हु'। जै०उप० ४.११.५

१०. आहूती ....आह्वान्यौ। आ+ √'ह्वे'। निरु० ९.४३

इडा

१. इडाभिरग्निरीड्यः। √'ईड्'। यजु० २१.१४

२. होता यक्षदिडाभिरिन्द्रमीडितम्। √'ईड्'। यजु० २८.३

३. होता यक्षदिडेन्यमीडितं वृत्रहन्तममिडाभि-रीड्यम्। √'ईड्'। यजु० २८.२६

४. यद्वै तदात्मानमैट्ट सेडाभवत् तदिडाया इडात्वम्। √'ईड' स्तुतौ'। मै०सं० ४.२.३.।

इत्

१. देवाँ इदेषि पथिभिः: सुगेभिः। √'इण्'। ऋ० १.१६२.२१

इदम्

१. इदम् (उदकम्)। √'इदि' परमैश्वर्ये'। देवत्वादपां परमैश्वर्य्ये विद्यते। 'इद्'+ नुम्(आगमः)+ कमि'। निघ० १२.१०१

२. इणो दमुञ् श्रीभोजदेवः। ईयते निम्नप्रदेशं गम्यते वा। √'इण्'+ दमुक्'। निघ० १.१२.१०१

३. यद्वा, इन्धे। इन्धे दीप्यते इदम्। √'इन्ध्'+ कमिन्'। निघ० १.१२.१०१

इदंयु

१. इदंयुरिदं कामयमानः। 'इदम्+ंयु'। निरु० ६.३१

इदा

१. इदा (नवम्)। इदं शब्दात् सप्तम्यन्तात् 'दा' प्रत्ययः। अस्मिन् काले। 'इदम्+ दा'। निघ० ३.२८.५

इदानीम्

१. इदानीम् (नवम्)। इदं शब्दात्। 'इदम्> इदानीम्'। निघ० ३.२८.६

इद्ध

१. इद्धम्, समिद्धम्। √'इन्ध्'। निरु० १०.२१

इध्म

१. इन्धे ह वा एतदध्वर्युः। इध्मेनाग्निं तस्मादिध्मो नाम। √'इन्ध्'। शत०ब्रा० १.३.५.१

२. इध्मः समिन्धनात्। √'इन्ध्'। निरु० ८.४

इन

१. तत्रेन इत्येतत् सनित् ऐश्वर्येणेति वा। सनितमनेनैश्वर्यमिति वा। 'षण्+ नक्'। निरु० ३.११

२. इनः (ईश्वरः)। एतेः सम्भाजनार्थे वर्त्तमानात् समुपसर्गार्थविशिष्टाद्वा। √'इण्' या सम्+ √'इण्' + नक्'। निघ० २.२२.४

इन्दु

१. इन्दुरिन्धेः। √'इन्ध्'। निरु० १०.४१

२. उनत्तेर्वा। √'इन्ध्'। निरु० १०.४१

३. इन्दु (उदकम्)। √'ञिइन्धीं दीप्तौ'। इन्धे दीप्यते स्वेन तेजसा देवतात्वात्। √'इन्ध्'+ उ> इन्धु> इन्दु'। निघ० १.१२.८४

४. यद्वा, √'उन्दीं क्लेदने'। उनत्ति भूमिमिन्दुः। √'उन्द'+ उ> उन्दु> इन्दु'। निघ० १.१२.८४

५. यद्वा, 'इदिं परमेश्वर्ये। परमेश्वरं हि जलं देवतात्वात्, प्राणिनां प्राणनस्य जीवनस्य च तदायत्ततवाच्च। √'इन्दु'+ उ'। निघ० १.१२.८४

६. इन्दुः (यज्ञः)। √'उन्दीं क्लेदने। क्लिद्यते सूयते ऽस्मिन् सोमः। √'उन्द्'+ उ'। निघ० ३.१७.१३

इन्द्र

१. नहि नु यादधीमसीन्द्रं को वीर्या परः। √'इण्'। ऋ० १.८०.१५

२. इन्द्र इन्द्रियैर्मरुतो मरुद्भिः। 'इन्द्रिय> इन्द्र'। ऋ० १.१०७.२

३. इन्दुरिन्द्र इति ब्रुवन्। 'इन्दु> इन्द्र'। ऋ० ९.६३.९

४. इन्दुमिन्द्राय मत्सरम्। 'इन्दु> इन्द्र'। ऋ० ९.६३.१७

५. इन्दुमिन्द्राय पीतये। 'इन्दु> इन्द्र'। ऋ० ९.६५.८

६. इन्द्र इषे ददातु नः। 'इष+ √'दा'। सा०पू० २.९.६

७. अस्मिन्वा इदमिन्द्रियं प्रत्यस्थादिति। तदिन्द्रस्येन्द्रत्वम्। 'इन्द्रिय> इन्द्र'। तै०सं० २.२.१०.४

८. इदमदर्शमिती इँ। तस्मादिदन्द्रो नामेदन्द्रो ह वै नाम तमिदन्द्रं सन्तमिन्द्र इत्याचक्षते परोक्षेण। परोक्षप्रिया इव हि देवाः। 'इदम्+ अदर्शम्> इदन्द्र> इन्द्र'। ऐ०आ० २.४.२, ऐ०उप० १.३.१४

९. इन्धो वै नामैष योऽयं दक्षिणे ऽक्षन्पुरुषस्तं वाऽ एतमिन्धः सन्तमिन्द्र इत्याचक्षते परोऽक्षेणेव। 'इन्ध> इन्द्र'। शत०ब्रा० १४.६.११.२

१०. स योऽयं मध्ये प्राणः। एष एवेन्द्रस्तानेष प्राणान् मध्यत इन्द्रियेणैन्द्ध यदैन्द्ध तस्मादिन्ध इन्धो ह वै तमिन्द्र इत्याचक्षते परोऽक्षम्। 'ऐन्ध> इन्ध> इन्द्र'। शत० ६.१.१.२

११. इन्द्रः इरां दृणातीति वा। 'इरा+ √'दृ'। निरु० १०.८

१२. इरां ददातीति वा। 'इरा+ √'दा'। निरु० १०.८

१३. इरां दधातीति वा। 'इरा+ √'धा'। निरु० १०.८

१४. इरां दारयतीति वा। 'इरा+ √'दारि'। निरु० १०.८

१५. इरां धारयतीति वा। 'इरा+ √'धारि'। निरु० १०.८

१६. इन्दवे द्रवतीति वा। 'इन्दु+ √'दु'। निरु० १०.८

१७. इन्दौ रमत इति वा। 'इन्दु+ √'रम्'>इन्द्र'। निरु० १०.८

१८. इन्धे भूतानीति वा। √'इन्ध्'। निरु० १०.८

१९. इदं करणादित्याग्रायणः। 'इदम्+ √'कृ> इन्द्र'। निरु० १०.८

२०. इदं दर्शनादित्यौपमन्यवः। इदम्+ √'दृश्'>इदम्+ दृ> इन्द्र'। निरु० १०.८

२१. इन्दतेर्वैश्वर्यकर्मणः। √'इदिं परमैश्वर्ये'। निरु० १०.८

२२. इदञ्छत्रूणां दारयिता वा। 'इदम्+√'दारिं'>इन्द्र'। निरु० १०.८

२३. इदञ्छत्रूणां द्रावयिता वा। 'इदम्+√'द्रावि'>इन्द्र'। निरु० १०.८

२४. दादरयिता च यज्वनाम्। 'इदम्+√'द्द' भये'> इरन्द्> इन्द्र'। निरु० १०.८

२५. तद्यादेनं प्राणं समैन्धस्तदिन्द्रस्येन्द्रत्वम् इति विज्ञायते। √'इन्ध्'। निरु० १०.८

२६. इन्द्रस्यैश्वर्यकर्मणाम्। √'इदिं परमैश्वर्ये'। निरु० १०.८

इन्द्राणी

१. इन्द्राणी इन्द्रस्य पत्नी। 'इन्द्र+ पत्नी> इन्द्राणी'। निरु० ११.३७.१२.४६

इन्द्रिय

१. शुक्रमन्धसऽ **इन्द्रस्येन्द्रियमिदं** पयोऽमृतं मधु। 'इन्द्रस्य+ इदम्> इन्द्रियं'। यजु० १९.७५.७९

२. इन्द्रियम् (धनम्)। इन्द्रः—√'इदिं परमैश्वर्ये' परमैश्वर्ययुक्त उच्यते। इन्द्रस्य लिङ्गम्। धनेन हि ऐश्वर्ययुक्त इति व्यज्यते। 'इन्द्र+ घ'। निघ० २.१०.१४

३. यद्वा, इन्द्रेण दृष्टम् इन्द्रियम्। 'इन्द्र+√'दृशिं'>इन्द्रिय'। निघ० २.१०.१४

४. यद्वा, इन्द्र आत्मा तत्कृतेन शुभाशुभेन कर्मणा सृष्टम्। 'इन्द्र> इन्द्रिय'। निघ० २.१०.१४

५. इन्द्रजुष्टं वा, आत्मना सेवितम्, तद्द्वारेण भोगोत्पत्तेः। 'इन्द्र> इन्द्रिय'। निघ० २.१०.१४

६. इन्द्रदत्तं वा, इन्द्रेण पूर्वकर्मणा वा अस्त्युपदत्तम्। 'इन्द्र> इन्द्रिय'। निघ० २.१०.१४

इभ

१. इभेन, इराभृता गणेन। 'इरा+√'भृ'। निरु० ६.१२

२. गतभयेन हस्तिनेति वा। 'इरा+√'भी'। निरु० ६.१२

इरा

१. इरा (अन्नम्)। व्याख्यातं नदीनामसु। √'इण् गतौ'। इरा बलम्। √'इण्'+ रन्'। निघ० २.७.१२

इरावती

१. इरावत्यः (नद्यः)। √'इण् गतौ। इरा बलं, तदासामस्ति। √'इण्'+ रन्+ मतुप्+ ङीप्'। निघ० १.१३.२५

इरिण

१. इरिणं निर्ऋणम्, ऋणातेः, अपार्णं भवति। '*निर्*+√'*ऋ*' + क्त> *निर्ऋण*> *इरिण*'। निरु० ९.८

२. अपरता अस्मादोषधय इति वा। '*निर्*+√'*रम्*'। निरु० ९.८

इला

१. इला (पृथिवी)। √'ईड स्तुतौ'। ईड्यते स्तूयते वास्यां यजमानो देवान्। √'ईड्'। निघ० १.१.१५

२. यद्वा, √'ञिइन्धीं दीप्तौ' इन्धे दीप्यतेऽस्यां श्रीभिः। √'इन्ध्'। निघ० १.१.१५

३. यद्वा, √'इण् गतौ'। गवा समानार्थः। √'इण्'। निघ० १.१.१५

४. यद्वा, √'इल स्वप्नक्षेपणयोः'। क्षिप्यन्तेऽस्यां भावः। स्वपन्तोऽ स्यामिति वा। √'इल'। निघ० १.१.१५

५. यद्वा, 'इला' इत्यन्ननाम गोनाम वा। इला अन्नं गौर्वा अस्यामस्तीति। अन्नवती गोमती वा इडा। '*इला+ अ' (मत्वर्थीयः) प्रत्ययः> इला*'। निघ० १.१.१५

६. इला (वाक्) √'इलं क्षेपणे'। क्षिप्यते प्रेर्य्यते उच्चारणकाले प्राणेन इला। √'इल्'। निघ० १.११.३

७. यद्वा, √'ईड स्तुतौ'। ईडति स्तूयतेऽनया देवता, ईड्यते वा या स्वयं देवतात्वात्। √'ईड्'। निघ० १.११.३

८. यद्वा, √'ञिइन्धीं दीप्तौ'। दीपयति प्रयोक्तारं, दीप्यते वा स्वेन तेजसा। √'इन्ध्'। निघ० १.११.३

९. यद्वा, इलेत्यन्ननाम, अकारो मत्वर्थीयः। यजमानानां देयेनान्नेन हविर्लक्षणेन वा तद्वती इला। '*इला+ अ' (मत्वर्थीयः)*'। निघ० १.११.३

१०. इला (अन्नम्)। ईड्यते दीप्यते भुक्तेन जाठरोऽग्निः। क्षिप्यते उदरे स्वपत्यनेन भुक्तेन न हि बुभुक्षितस्य निद्रास्ति। √'ईड्'। निघ० २.७.१३

११. इला (गौ:)। व्याख्यातं पृथिवीनामसु। ईड्यते स्तूयते देवतात्वात्, दीप्यते वा चारुतया। √'ईड्'। निघ० २.११.७

१२. गम्यते वा तदर्थिभिरिति वा। √'इण्'। निघ० २.११.७

इलीबिश

१. इलीबिशस्य, इलाबिलशयस्य। *'इला+ बिल+ शय> इलीबिश'*। निरु० ६.१९

इष्

१. पूर्वीरिषश्चरति मध्व **इष्णन्**। √'इष्'। ऋ० १.१८१.६

२. **इषा** मदन्त **इषयेम** देवा:। √'इष्'। ऋ० १.१८५.९

३. पूर्वीरिष **इषयन्तावतिक्षप:**। √'इष्'। ऋ० ८.२६.३

४. इषम् (अन्नम्)। √'इषु इच्छायाम्'। इष्यत इति। √'इष्'। निघ० २.७.१४

५. यद्वा, √'इषु गतौ'। √'इष्'। निघ० २.७.१४

इषिर

१. इषिरेण, ईषणेन वा। √'ईष्'। निरु० ४.७

२. एषणेन वा। √'इष्'। निरु० ४.७

३. अर्षणेन वा। √'ऋष्'। निरु० ४.७

इषीका

१. इषीकेषतेर्गतिकर्मण:। इयमपीतरेषीकैतस्मादेव। √'इष्'। निरु० ९.८

इषु

१. इषुरीषतेर्गतिकर्मणो वधकर्मणो वा। √'ईष्'। निरु० ९.१८

इषुधि

१. इषुधिरिषूणां निधानम्। *'इषु+ √'धा'*। निरु० ९.१३

इषोवृधीयम्

१. ता (प्रजा:) अस्य (प्रजापते:) इषा समक्ता अवर्धन्त। तद् एवेषोवृधीयस्येषोवृधीयत्वम्। *'इषा+ √'वृध्'*। जै०ब्रा० ३.१४८

२. इषे वै पञ्चममहर्वृधे षष्ठमवर्द्धन्त ह्येतर्हि यजमानमेवैतेन वर्द्धयन्ति। *'इषा+ √'वृध्'*। तां०ब्रा० १३.९.९

इष्टका

१. तद्यदस्मा ऽ इष्टे कमभवत्तस्माद्वेवेष्टका:। *'इष्ट+ कम्> इष्टक'*। शत०ब्रा० ६.१.२.२३

२. तद्यदिष्टात्समभवंस्तस्मादिष्टका:। *'इष्ट> इष्टक'*। शत० ब्रा० ६.१.२.२२

३. तद्यदिष्ट्वा पशुनापश्यत् तस्मादिष्टका:। √'इष्'। शत०ब्रा० ६.२.१.१०

४. यदिष्ट्वापश्यत् तस्मादिष्टका। √'इष्'। शत०ब्रा० ६.३.१.२

इष्टापूर्त

१. इष्टी वा एतेन यद्यजते, य एष ओदन: पच्यते, तेन पूर्ती एष वावेष्टापूर्ती य एतं पचति। *√'यज्'> इष्ट', √'पच्'> पूर्त', इष्ट+ पूर्त> इष्टापूर्त*। काठ० ८.१३

२. यज्ञेन वा इष्टी, पक्वेन पूर्ती। *√'यज्'> इष्ट', √'पच्'> पूर्त', इष्ट+ पूर्त> इष्टापूर्त*। तै०सं० १.७.३.३

इष्ट

१. आयमद्य सुकृतं प्रातरिच्छन्निष्टे: पुत्रं वसुमत रथेन। √'इष्'। ऋ० १.१२५.३

इष्टि

१. एष्टयो ह वै नाम ता इष्टय इत्याचक्षते परोक्षेण। परोक्षप्रिया इव हि देवा:। *√'एष्ट' प्रयत्ने'> एष्टय:> इष्टय:'*। तै०सं० १.५.९.२, ३.१२.२.१, ४.१

२. तम् (अश्वमेधं स्वर्गं च लोकं प्रजापति:) इष्टिभिरन्वैच्छत्। तमिष्टिभिरन्वविन्दत्। तदिष्टीनामिष्टित्वम्। √'इष' *इच्छायाम्'*। तै०सं० ३.९.१३.१, १२.२.१, ४.१

३. तम् (इन्द्रं देवा:) इष्टिभिरन्वैच्छन्। तमिष्टिभिरन्वविन्दन्। तदिष्टीनामिष्टीत्वम्। √'इष' *इच्छायाम्'*। तै०सं० १.५..९.२

४. यज्ञो वै देवेभ्य उदक्रामत् तमिष्टिभि: प्रैषमैच्छन् यदिष्टिभि: प्रैषमैच्छस्तदिष्टीनामिष्टित्वम्। √'इष' *इच्छायाम्'*। ऐ०ब्रा० १.२

५. इष्टि: (यज्ञ:) यजतेर्यज्ञवदर्थ:। √'यज्'। निघ० ३.१७.९

६. इषेर्वा। इष्यते हि स:। √'इष्'। निघ० ३.१७.९

इष्मिन्

१. ईषणिन इति वा। √'ईष्'। निरु० ४.१६

२. एषणिन इति वा। √'इष्'। निरु० ४.१६

३. अर्षणिन इति वा। √'ऋष्'। निरु० ४.१६

इह

१. एह्यग्न इहहोता नि षीदादब्धः सु पुर एता भवा नः। √'इण्'। ऋ० १.७६.२

ईक्ष

१. ईक्ष ईशिषे। √'ईश्'। निरु० ६.६

ईजान

१. मयोभुव ईजानं च यक्ष्यमाणं च धेनवः। √'यज्'। ऋ० १.१२५.४

ईडेन्य

१. होता यक्षदिडेन्यमीडितम्। √'ईड्'। यजु० २६.२६

ईड्य

१. ईळामहा ईड्याँ आज्येन। √'ईळ्'। ऋ० १०.५३.२

ईळ, ईळ्यः

१. ईळः, ईट्टेः स्तुतिकर्मणः। √'ईड्'। निरु० ८.७

२. इन्धतेर्वा। √'इन्ध्'। निरु० ८.७

३. ईळिरध्येषणाकर्मा पूजाकर्मा वा। √'ईळ्'। निरु० ७.१५

ईळते

१. ईळते याचन्ति स्तुवन्ति वर्धयन्ति पूजयन्तीति वा। √'ईळ्'। निरु० ८.२

ईर्म

१. ईर्म इति बाहुनाम। समीरिततरो भवति। √'ईर्+ मक्'। निरु० ५.२५

ईर्मान्त

१. ईर्मान्तास समीरितान्तः। *'ईर्'+ मक्+ अन्त'*। निरु० ४.१३

ईशान

१. आदित्यो वाऽईशान आदित्यो ह्यस्य सर्वस्येष्टे। √'ईश् *ऐश्वर्ये'*। शत०ब्रा० ६.१.३.१७

उक्थ

१. अग्निर्वा ऽ उक्तस्याहुतय एव थम्। *'उक्त+ थम्> उक्थम्'*। शत०ब्रा० १०.६.२.८

२. आदित्यो वा उक्। तस्य चन्द्रमा एव थम्। *उक्त+ थम्> उक्थम्'*। शत०ब्रा० १०.६.२.९

३. एष (अग्निः) उ ऽ एवोक्तस्यैतदन्नं थं तदुक्थमृक्तः। *'उ> उक्त+ थम्> उक्थम्'*। शत०ब्रा० १०.४.१.४

४. प्राण उऽ एवोक्तस्यान्नमेव थं तदुक्तमृक्तः। *'उ> उक्त+ थम्> उक्थम्'*। शत०ब्रा० १०.४.१.२३

५. प्राणो वाऽ उक्तस्यान्नमेव थम्। *'उक्त+ थम्> उक्थम्'*। शत०ब्रा० १०.६.२.१०

६. इदं शरीरं परिगृह्योत्थापयति (प्राणः)। तस्मादेतदेवोक्थमुपासीतेति। उत्+ √*'स्था' > उक्थ'*। शा०आ० ५.३, कौ० ३४.३.३

७. उक्थमिति बह्वृचाः (उपासते)। एष हीदं सर्वमुत्थापयति। *'उत्+ √'स्था' > उक्थ'*। शत०ब्रा० १०.५.२.२०

८. उक्थैरुदस्थापयन् (देवाः सोमम्)। तदुक्थानामुक्थत्वम्। उत्+ √*'स्था'> उक्थ'*। तै०सं० २.२.८.७

९. एतदेषाम् (नाम्नां वागिति) उक्थमतो हि सर्वाणि नामान्युत्तिष्ठन्ति। *'उत्+ √'स्था' > उक्थ'*। शत०ब्रा० १४.४.४.१

१०. तदिदमेवोक्थमियमेव पृथिवीतो हीदं सर्वमुत्तिष्ठति यदिदं किञ्च। *'उत्+ √'स्था'> उक्थ'*। ऐ०आ० २.१.२

११. तानुक्थैरुत्थापयति। तदुक्थानामुक्थत्वम्। *'उत्+ √'स्था' > उक्थ'*। जै०ब्रा० २.२४

१२. तान् (असुरान् देवाः) एतेरेवोक्थैः प्रत्युदतिष्ठन्। युदुक्थैः प्रत्युदतिष्ठंस्त दुक्थानामुक्थत्वम्। *'उत्+ √'स्था' > उक्थ'*। जै०ब्रा० १.१७९

१३. प्राणः (शरीरम्) प्राविशत्तत् (शरीरम्) प्राणे प्रपन्न उदतिष्ठत् तदुक्थमभवत्..........प्राण उक्थमित्येव विद्यात्। *'उत्+ √'स्था'*। ऐ०आ० २.१.४

१४. स एष एवोक्थ्यम्। एष हीदं सर्वमुत्थापयतीव। तस्मादेष एवोक्थम्। *'उत्+ √'स्था' > उक्थ'*। जै०ब्रा० ३.३७९

१५. तान् उक्थैरुत्थापयति तद् उक्थानां उक्थत्वम्। *'उत्+ √'स्था' > उक्थ'*। जै०ब्रा० २.२४

उक्थ्य

१. उक्थ्यं वचो यतस्रुचा मिथुना या सपर्यतः। √'वच्'। ऋ० १.८३.३

२. उक्थ्यं वक्तव्यप्रशंसम्। √'वच्'। निरु० ११.३१

३. उक्थ्यः (प्रशस्यम्)। √'वच् परिभाषणे'। उक्थमर्हति। स्तुत्यर्ह इत्यर्थः। √'वच्'। निघ० ३.८.६

उक्षन्

१. ततो यः प्रथमो द्रप्सः परापतत् तं बृहस्पतिरभिहायाभ्यगृह्णात्, स उक्षाऽभवत्, तदुक्ष्ण उक्षत्वमिति। अथो आहुर्यद्देवता अनुव्यौक्षत् स उक्षाऽभवत्, तदुक्ष्ण उक्षत्वमिति। √'उक्ष् सेचने'। मै०सं० २.५.७

२. यदुदौक्षत (वषट्कारकृते गायत्र्याशिशरश्छेदे) तद् बृहस्पतिरभ्यगृह्णात्, स उक्षाऽभवत्, तदुक्ष्ण उक्षत्वम्। √'उक्ष् सेचने'। काठ० १३.८

३. उक्षण उक्षतेर्वृद्धिकर्मणः। √'उक्ष्'। निरु० १२.९

४. उक्षन्त्युदकेनेति वा। √'उक्ष्'। निरु० १२.९

५. उक्षा (महत्)। उक्षतेर्वृद्ध्यर्थात्। √'उक्ष्'। निघ० ३.३.११

उक्षित

१. अक्षितः (महत्)। उक्षतिर्विध्यर्थः। इतिस्कन्दस्वामी। √'उक्ष्'। निघ० ३.३.९

उखा

१. उतद्वै देवा एतेन कर्मणैतयावृतेमांल्लोकानुदखनन्, यदुदखनंस्तस्मादुत्खोत्खा ह वै तामुखेत्याचक्षते परोऽक्षम्। 'उत्+ √'खन्'>उत्खा> उखा'। शत०ब्रा० ६.७.१.२३

उचथ

१. यद्वां मानास उचथमवोचन्। √'वच्'। ऋ० १.१८२.८

२. एता ते अग्न उचथानि वेधोऽवोचाम। √'वच्'। ऋ० ४.२.२०

उच्च

१. उच्चैरुच्चितं भवति। 'उत्+ √'चि'। निरु० ४.२४

उत्तम

१. तन्तुं तन्वानमुत्तमम्। √'तन्'। ऋ० ९.२२.६

उत्तर

१. उत्तर उद्धततरो भवति। *'उद्+ √'हन्'+ क्त> उद्+ हत> उद्धत'+ उद्धत+ तर> उद्धततर'*। निरु० २.११

उत्तरवेदि

१. तदुत्तरं वे श्रेयो विदामहीति, तदुत्तरवेद्या उत्तरवेदित्वम्। *'उत्तर+ √'विद्'*। मै०सं० ३.८.३

२. नासिका ह वाऽ एषा यज्ञस्य यदुत्तरवेदिः। अथ यदेनामुत्तरां वेदेरुपकिरति तस्मादुत्तरवेदिर्नाम। *'उत्तरा+ वेदि (उत्तरवेदि)'*। शत०ब्रा० ३.५.१.१२, (तु०तै० स० ६.२.११.४, ४.१०.३, मै०सं० ४.५.९, ६.३)

३. उद्वेद्यं तदुत्तरवेद्या (अविन्दत), तदुत्तरवेद्या उत्तरवेदित्वम्। *'उत्तर+ √'विद्'*। काठ० २५.६

उत्तान

१. उत्तान उत्ततान। *'उत्+ √'तन्'*। निरु० ४.२१

२. ऊर्ध्वतानो वा। *'ऊर्ध्व+ √'तन्'*। निरु० ४.२१

उत्तुद

१. उत्तुदस्त्वोत् तुदतु मा धृथाः शयने स्वे। 'उत्+ √'तुद्'। अथर्व० ३.२५.१

उत्स

१. उत्स उत्सरणाद्वा। 'उत्+ √'सृ'। निरु० १०.९

२. उत्सदनाद्वा। 'उत्+ √'सद्'। निरु० १०.९

३. उत्स्यन्दनाद्वा। 'उत्+ √'स्यन्द्'। निरु० १०.९

४. उनत्तेर्वा। √'उन्द्'। निरु० १०.९

५. उत्सः (कूपः)। उत्पूर्वात् सर्तेः। उद्गच्छत्यस्मात् जलम्। उत्+ √'सृ'। निघ० ३.२३.१०

६. यद्वा, उत्पूर्वात् स्यन्दते आर्द्रीक्रियते वा जलेन। 'उत्+ √'स्यन्द्'। निघ० ३.२३.१०

उत्सेध

१. उत्सेधेन वै देवा औत्सेध्यम् उदसेधन्। 'उत्+ √'सिध्'। जै०ब्रा० २.१०३

२. उत्सेधेन वै देवाः पशूनुदसेधन्। 'उत्+ √'सिध्'। तां०ब्रा० १५.९.११

३. उत्सेधेनैवाऽस्मै पशूनुत्सिध्य। 'उत्+ √'सिध्'। तां०ब्रा० १९.७.४

उद्गीथ

१. उदानिषुर्महीरिति तस्मादुदकमुच्यते। 'उद्+√'अन्'। अथर्व० ३.१३.४

२. एको वो देवो अप्यतिष्ठत् स्यन्दमाना यथावशम्। उदानीषुर्महीरिति तस्मादुदकमुच्यते। 'उत्+√'अन्'। मै०सं० २.१३.१

३. उदकमुनत्तीति सतः। √'उन्द्'। निरु० २.२४

४. उदकम् (उत्+√'खन्')। उत्खायते तद्वायुना विभज्यमानं कर्म, उत्खनति वा भूमिं स्वेन वेगेन कर्ता। 'उत्+√'खन्'। निघ० १.१२.३६

५. यद्वा, उत्पूर्वस्य वाञ्चतेः। उदञ्चतीत्युदकम्। 'उत्+√'अञ्च्'। निघ० १.१२.३६

उदन, उदन्

१. उतारुषस्य वि ष्यन्ति धाराश्चर्मेवोदभिर्व्युन्दन्ति भूम। √'उन्दीं क्लेदने'। ऋ० १.८५.५

२. उदनि, उदके। √'उन्द्'। निरु० १०.१२

उदन्यज

१. उदन्यजेवेत्युदकजे इव। 'उदक+√'जन्'। निरु० १३.१५

उदन्यु

१. उदन्युरुदन्यतेः। 'उदन्+ यु> उदन्यु'। निरु० ११.१५

उदयनीय

१. अथ यदत्रावभृथादुदेत्य यजते तस्मादेतदुदयनीयम्। 'उद्+√'यज्> उदयजनीय> उदयनीय'। शत०ब्रा० ४.५.१.२

२. उदान एवोदयनीयोऽतिरात्र उदानेन ह्युदयन्ति। 'उद्+√''इ'। गो०ब्रा० १.५.४

उदर

१. उदरं वाऽ उपयमन्युदरेण हीदꣳसर्वमन्नाद्युपयतम्। 'उद्+√'यम्'। शत०ब्रा० १४.२.१.१७

२. उरु गृणीहीत्यब्रवीत्तदुदरमभवत्। 'उरु+√'गृह्> उदर्'। ऐ०आ० २.१.४

उदान

१. ताः उदानन्। स वा उदानोऽभवत्। 'उद्+√'अन' प्राणने'। जै०उप० ४.२२.६

उदुम्बर

१. अथास्य (प्रजापतेः) इन्द्र ओज आदायोदङ्ङुदक्रामत् स उदुम्बरोऽभवत्। 'उदङ्+√'क्रम्'> उदक्रम> उदुम्बर'। शत०ब्रा० ७.४.१.३९

२. माꣳसेभ्य एवास्योर्गस्रवत् स उदुम्बरोऽभवत्। 'ऊर्ज्+√'स्रु'। शत०ब्रा० १२.७.१.९

३. सोऽब्रवीद् अयं वाव मा सर्वस्मात् पाप्मन उदभार्षीदिति यदब्रवीदुदभार्षीन्मेति तस्मादुदुम्भर उदुम्भरो ह वै तमुदुम्बर इत्याचक्षते परोऽक्षम्। 'उद्+√'भृ'> उदुम्भर> उदुम्बर'। शत०ब्रा० ७.५.१.२२

४. देवा यत्रोजं व्यभजन्त तत उदुम्बरा उदतिष्ठत्। 'ऊर्ज्+√'भज्'। मै०सं० १.६.५, ३.१.९

५. प्रजापतिर्देवेभ्य ऊर्जं व्यभजत् तत उदुम्बरः समभवत्। 'ऊर्ज्+√'भज्'। तां०ब्रा० ६.४.१

६. प्रजापतिः प्रजाभ्य ऊर्जं व्यभजत्। तद् उदुम्बरस्समभवत्। 'ऊर्ज्+√'भज्'। जै०ब्रा० १.७०

७. यद्वैतद्देवा इषमूर्जं व्यभजन्त तत उदुम्बर समभवत् तस्मात् स त्रिःसंवत्सरस्य पच्यते। √'ऊर्ज्'+√भज्'। ऐ०ब्रा० ५.३४

उद्गातृ

१. उद्गातेव शकुने साम गायसि। √'गै'। ऋ० २.४३.२

उद्गीथ

१. एष (प्राणः) उ वा ऽ उद्गीथः। प्राणो वा ऽ उत्प्राणेन हीद ꣳसर्वमुत्तब्धं वागेव गीथोच्चेति स उद्गीथः। 'उद्+ गीथ'। शत०ब्रा० १४.४.१.२५

२. सोऽसावादित्यस्स एष एव उदग्निरेव गी चन्द्रमा एव थम्। सामान्येन उदृच एव गी यजू ꣳष्येव थमित्यधिदेवतम्। अथाध्यात्मम्। प्राण एव उद्वागेव गी मन एव थम्। स एषोऽधिदेवतं चाध्यात्मं चोद्गीथः। 'उद्+ गी+ थम्'। जै०उप० १.१८.२.७-८

३. स यद् उद् इत्येतेन हीदं सर्वं उत्तब्धम्। अथ यद् गीत्येष सर्वं गिरति। अथ यत् थ इत्यन्नमेवास्यै तत्। तस्माद् एष एवोद्गीथः। 'उद्+√'गृ'= उद्+ गी, उद्+ गी+ थम्'। जै०ब्रा० ३.३७९

४. प्राण एव उद्वागेव गी मन एव थम्। 'उद्+ *गी*+ *थम्*'। जै०ब्रा० १.५७.८

उद्गीथ

१. उद् गृह्णते स्वाहोद्गृहीताय स्वाहा। उद्+ √'*ग्रह्*'। यजु० २२.२६

उद्भिद

१. स ह स उद्भिदेव स्तोमः। इन्द्राग्नी एव तौ। तौ हीदं सर्वमाजिसृत्यायामुद्भिन्ताम्। उद्+ √'*भिद्*'। जै०ब्रा० १.३१२

उद्रिण

१. उद्रिणमुदकवन्तम्। '*उदक*+ *इन्*= *उद्र*+ *इन्*'। निरु० १०.१३

उद्वत्

१. यद् (देवाः) ऊर्ध्वा स्वर्गं लोकमुदक्रामंस्तदुद्वत उद्वत्वम्। उद्+ √'*क्रम्*'। जै०ब्रा० ३.१६४

२. उद्वत इति अवतिर्गतिकर्मा। √'*अव्*'। निरु० १०.२०

उद्वृह

१. उद्वृह, उद्धर। उद्+ √'*हृ*'। निरु० ६.३

उप

१. इयं (पृथिवी) वाऽउप। द्वयेनेयमुप यद्धीदं किंच जायतेऽस्यां तदुपजायते ऽथ यन्मृछत्यस्यामेव तदुपोप्यते। √'*वप्*'। शत०ब्रा० २.३.४.९

उपजिह्विका

१. उपजिह्विका उपजिघ्र्यः। उप+ √'*घ्रा*' *अथवा अर्थनिर्वचनमिदम्*। निरु० ३.२०

उपपृक्

१. उपपर्चनः। '*उप*+ √'*पृच्*'। निरु० ६.१७

उपब्दि

१. उपब्दिः (वाक्)। उपपूर्वात् पदेर्गत्यर्थात्। उप समीपे भक्तानां गच्छति, उप आचार्य्यसमीपे गम्यत इति वा। उप+ √'*पद्*'। निघ० १.११.२६

२. यद्वा, उपपूर्वात् ददातेः। उपेत्य ददातीत्यभिलषितम्। उप+ √'*दा*'। निघ० १.११.२६

३. यद्वा, उपपूर्वात् द्यतेः। खण्डयत्यज्ञानं तर्क्यादिसमये प्रतिवादिनां वा। '*उप*+ √'*दो*' *अवखण्डने*'। निघ० १.११.२६

४. यद्वा, उपपूर्वात् दयतेः। रक्षति भक्तानीति वा उपब्दिः। उप+ √'*दय्*'। निघ० १.११.२६

उपमे

१. उपमे (अन्तिकम्)। उपपूर्वात् मिनातेः। उपच्छिद्यते ह्यन्तिकम्। '*उप* + √'*मि*'। निघ० २.१६.११

उपयज

१. यद्यजन्तमुपयजति तस्मादुपयजो नाम। '*उप*+ √'*यज्*'। शत०ब्रा० ३.८.४.१०

उपयमनी

१. अन्तरिक्षं वाऽ उपयमन्यन्तरिक्षेण हीदꣳसर्वमुपयतम्। उप+ √'*यम्*'। शत०ब्रा० १४.२.१.१७

उपर, उपल

१. उपलो मेघो भवति, उपरमन्तेऽस्मिन् अभ्राणि। '*उप*+ √'*रम्*'। निरु० २.२१

२. उपरता आप इति वा। '*उप*+ √'*रम्*'। निरु० २.२१

३. उपराः (दिशः)। उपरमन्ते आस्वभ्राणि प्राणिनो वा स्वस्वव्यापारेभ्यः। '*उप*+ √'*रम्*'। निघ० १.६.३

४. उपरः, उपलः (मेघः)। आ उपर उपल इत्येताभ्यां साधारणानि पर्वतनामभिः। यदा पर्वतस्तदा उपेत्य रमन्ते ह्यस्मिन् अभ्राणीति, मेघपक्षे आप इति। उप+ √'*रम्*'। निघ० १.६.३

उपरव

१. इन्द्रो वै वृत्रमहन्स इमां प्राविशत्, तं देवताः प्रैषमिच्छꣳस्तत्राविदꣳस्तं भूतान्युपारवन्त, यो नोऽधिपतिरभूत् तत्र विन्दामा इति तदुपरवाणा-मुपरवत्वम्। '*उप*+ √'*रु*'। मै०सं० ३.८.८

उपलप्रक्षिणी

१. उपलप्रक्षिणी। उपलेषु प्रक्षिणाति। *उपल*+ *प्र*+ √'*क्षि*'। निरु० ६.५

२. उपलप्रक्षेपिणी वा। *उपल*+ *प्र*+ √'*क्षिप्*'। निरु० ६.५

उपवसथ

१. त एतच्छविः प्रविशन्ति (विश्वेदेवाः)। त ऽएतासु वसतीवरीषूपवसन्ति स उपवसथः। '*उप*+ √'*वस्*'। शत०ब्रा० ३.९.२.७

२. यदहरस्य श्वोऽग्न्याधेयꣳ स्यात्। दिवैवाश्नीयान्मनो ह वै देवा मनुष्यस्याजानन्ति तेऽस्यैतच्छ्वोऽग्न्याधेयं विदुस्तेऽस्य विश्वे देवा गृहानागच्छन्ति तेऽस्य गृहेषूपवसन्ति स उपवसथः। '*उप*+ √'*वस्*'। शत०ब्रा० २.१.४.१

उपवेष

१. उपेव वाऽ एनेनैतद् वेवेष्टि तस्मादुपवेषो नाम। '*उप*+ √'*विष्*'। शत०ब्रा० १.२.१.३

उपशय

१. तान् (असुरान्) देवा उपशयेनैवापानुदन्त, तदुपशयस्योपशयत्वम्। '*उप*+ √'*शी*'। तै०सं० ६.६.४.४

उपसद

१. त एताभिरुपसद्भिरुपासीदन् (देवाः)। तद्यदुपासीदंस्तस्मादुपसदो नाम। '*उप*+ √'*सद्*'। शत०ब्रा० ३.४.४.४

२. ते (देवाः) ऽब्रुवन्नुपसीदामोपसदा वै महापुरं जयन्तीति त उपासीदꣳस्तदुपसदामुपसत्त्वम्। '*उप*+ √'*सद्*'। मै०सं० ३.८.१

उपस्

१. उपसि, उपस्थे। '*उप*+ √'*स्था*'। निरु० ६.६

उपस्थ

१. अपां नपादा ह्यस्थादुपस्थम्। √'*स्था*'। ऋ० २.३५.९

२. उपस्थे, उपस्थाने। '*उप*+ *स्थान*'। निरु० ७.२६; ८.१५,१८; ९.३९,४०

उपहव्य

१. इन्द्रो यतीन् सालावृकेयेभ्य प्रायच्छत्तमश्लीला वागभ्यवदत् स प्रजपतिमुपधावत् तस्मा एतदुपहव्यं प्रायच्छत्तं विश्वेदेवा उपाह्वयन्त, यदुपाह्वयन्त तस्मादुपहव्यः। '*उप*+ √'*ह्वे*'। ता०ब्रा० १८.१.२

उपांशु

१. अꣳशुर्ह वै नाम ग्रहः। स प्रजापतिस्तस्यैष प्राणः, स यदꣳशोः प्राणस्तस्मादुपाꣳशुर्नाम। '*उप*+ *अंशु*'। का०शत०ब्रा० ५.१.१.१ (तु०, शत०ब्रा० ४.१.१.२)

उपाक

१. उपाके, उपक्रान्ते। '*उप*+ √'*क्रम्*'। निरु० ८.११

२. उपाके (अन्तिकम्)। उपशब्दे उपपदे क्रामतेः। उपक्रम्यते गन्तृभिः। '*उप*+ √'*क्रम्*'। निघ० २.१६.७

उभ

१. उभौ समुब्धौ भवतः। '*सम्*+ √'*उभ*' *पूरणे*'। निरु० ४.४

उरण

१. उरण ऊर्णावान् भवति। '*ऊर्णा*+ *न* (*मत्वर्थीयः*)'। निरु० ५.२१

उरस्

१. उर्वेव मे कुर्वित्यब्रवीत् तदुरोऽभवत्। '*उरु*+ *कुरु*= *उरस्*'। ऐ०आ० २.१.४

२. तस्मा उरुरभवत्। तदुरस उरस्त्वम्। '*उरु*= *उरस्*'। जै०उप० ४.२४.२

उराण

१. उराण उरु कुर्वाणः। '*उरु*+ √'*कृ*'+ *शानच्*'। निरु० ६.१७

उरामथि

१. उरामथिः, उरणमथिः। '*उरण*+ *मथि*'। निरु० ५.२१

उरु

१. उरु, वरतमङ्गमूरु। '√*वृ*'। निरु० ८.१०

२. उरु (बहु)। उर्विति पृथिवीनामेति, उरुशब्दो व्याख्यातः। आच्छाद्यते ह्यनेनाल्पम्। √'*वृ*'। निघ० ३.१.१

उरुष्य

१. उरुष्यति रक्षाकर्मा। '*उरुष्य*'। निरु० ५.२३

उर्वशी

१. उर्वश्यप्सरा। उर्वभ्यश्नुते। '*उरु*+ √'*अश्*'। निरु० ५.१३

२. उरुभ्यामश्नुते। '*उरु*+ √'*अश्*'। निरु० ५.१३

३. उरुर्वशोऽस्याः। '*उरु*+ √'*अश्*'। निरु० ५.१३

उर्वी

१. यथेयं पृथिव्यामुर्वी एवमुरुभूर्यासम्। 'उरु= उर्वी'। शत०ब्रा० २.१.४.२८

२. ऊर्व्य ऊर्णोतेः। 'ऊर्णुञ्' आच्छादने'। निरु० २.२६

३. वृणोतेरित्यौर्णवाभः। 'वृ'। निरु० २.२६

४. उर्वी (पृथिवी)। 'ऊर्णुञ्' आच्छादने'। ऊर्णोति आच्छादयति उर्वी। महत्त्वादाच्छादयित्री भूमिः स्वस्मिन् हितानां वा पदार्थानाम्। √'ऊर्ण्'। निघ० १.१.१०

५. वृणोतेर्वा। √'वृ'। निघ० १.१.१०

६. उर्व्यः (नद्यः)। √'ऊर्णुञ्' आच्छादने', वृणोतेश्च। महत्यो नद्यः, छादयित्र्यो वा भूमेः स्वेनोदकेन। √'वृ'। निघ० १.१३.२४

७. उर्वी (द्यावापृथिव्यौ)। व्याख्यातं पृथिवीनामसु। विस्तीर्णे आच्छादयित्र्यौ वा स्वर्गाधः स्थितं लोकस्य। √'वृ'। निघ० ३.३०.१९

उलूखल

१. उरु मे करदिति (प्रजापतिरब्रवीत्) तस्मादुरुकर-मुरुकरऽह वै तदुलूखलमित्याचक्षते परोक्षम्। 'उरु+√'कृ'= उरुकर= उलूखल'। शत०ब्रा० ७.५.१.२२

२. उलूखलमुरुकरं वा। 'उरु+√'कृ'= उरुकर= उलूखल'। निरु० ९.२०

३. ऊर्ध्वखं वा। 'ऊर्ध्व+√'खन्'= ऊर्ध्वख= उलूखल'। निरु० ९.२०

४. ऊर्क्करं वा। 'ऊर्ज्+√'कृ'= ऊर्क्कर= उलूखल'। निरु० ९.२०

५. उरु मे कुर्वित्यब्रवीत् तदुलूखलमभवत्। उरुकरं वै तदुलूखलमित्याचक्षते परोक्षेणेति च ब्राह्मणम्। 'उरु+√'कृ'= उरुकर= उलूखल'। निरु० ९.२०

उल्ब

१. उल्बमूर्णोतेः। √'ऊर्णुञ्' आच्छादने'। निरु० .६.३५

२. वृणोतेर्वा। √'वृ'। निरु० ६.३५

उशती

१. पतिं न पत्नीरु**शतीरुशन्तम्**। √'वश्'। ऋ० १.६२.११

उशिज्

१. उशिग् वष्टेः कान्तिकर्मणः। √'वश्' कान्तौ'। निरु० ६.१०

२. उशिजः (मेधाविनः)। √'वश' कान्तौ'। कामयते शास्त्राण्यभ्यसितुं व्याख्यातुं वा। √'वश्'। निघ० ३.१५.१९

उशीर

१. घसेर्वेरो नामकरणः, उशीरमिति यथा। √'वश्'+ ईरन्। निरु० २.५

२. वशेः किच्च। √'वश्'+ ईरन्'। उणा० ४.३२

उषस्

१. एषो **उषा** अपूर्व्या **व्युच्छति** प्रिया दिवः। 'वि+√'उच्छ्'। ऋ० १.४६.१

२. **उच्छन्तीमुषसं** न गावः। √'उच्छ्'। ऋ० १.७१.१

३. **उषा उच्छन्ती** वयुना कृणोति। √'उच्छ्'। ऋ० १.९२.६

४. एषा दिवो दुहिता प्रत्यदर्शि **व्युच्छन्ती** युवतिः शुक्रवासाः। विश्वस्येशाना पार्थिवस्य वस्व **उषो** अद्येह सुभगे **व्युच्छ**। √'उच्छ्'। ऋ० १.११३.७

५. **व्युच्छन्ती** जीवमुदीरयन्त्युषा। 'वि+√'उच्छ्'। ऋ० १.११३.८

६. **व्युच्छन्तीमुषसं** मर्त्यासः। 'वि+√'उच्छ्'। ऋ० १.११३.११

७. **उषः** श्रेष्ठतमा **व्युच्छ**। 'वि+√'उच्छ्'। ऋ० १.११३.१२

८. शश्वत्पुरोषा **व्युवास** देवी। 'वि+√'वस्'। ऋ० १.११३.१३

९. **उषा उच्छन्ती** समिधाने अग्ना। √'उच्छ्'। ऋ० १.१२४.१

१०. मेऽवीवृधध्वमु**शतीरुषासः**। √'वश्'। ऋ० १.१२४.१३

११. रेवदुच्छ तु सुदिना **उषासः**। √'उच्छ्'। ऋ० १.१२४.९

१२. **उच्छन्त्यामुषसि** वह्निरुक्थैः। √'उच्छ्'। ऋ० १.१८४.१

१३. अभि त्वा नक्तीरु**षसो ववाशिरे**। √'वश्'। ऋ० २.२.२

१४. **उषसः** पूर्वा अध यद् **व्यूषुः**। √'उष्'। ऋ० ३.५५.१

१५. **उच्छन्तीर्मामुषसः** सूदयन्तु। √'उच्छ्'। ऋ० ४.३९.१

१६. इन्द्रसोमा **वासयथ उषासम्**। √'वस्'। ऋ० ६.७२.२

१७. **उषासो** वीरवती: सदमुच्छन्तु भद्रा:। √'उच्छ्'। ऋ० ७.४१.७

१८. व चेदुच्छन्त्यश्विना **उषास:**। √'उच्छ्'। ऋ० ७.७२.४

१९. मघोन्युषा **उच्छति** वह्निभिर्गृणाना। √'उच्छ्'। ऋ० ७.७५.५

२०. **उच्छोष:** सुजाते प्रथमा जरस्व। √'उच्छ्'। ऋ० ७.७६.६

२१. **उषा उच्छन्ती** रिभ्यते वसिष्ठै:। √'उच्छ्'। ऋ० ७.७६.७

२२. **उषा उच्छदप** स्रिध:। √'उच्छ्'। ऋ० ७.८१.६

२३. **उच्छन्नुषस:** सुदिना अरिप्रा। √'उच्छ्'। ऋ० ७.९०.४

२४. **उषा उवास** मनवे स्वर्वती। √'वस्'। ऋ० १०.११.३

२५. **उषा उच्छन्त्यप** बाधताम्। √'उच्छ्'। ऋ० १०.३५.३

२६. यदुष **औच्छ:** प्रथमा विभानाम्। √'उच्छ्'। ऋ० १०.५५.४

२७. प्रजापतिरुषसमैध्यत् स्वां दुहितरं तस्य रेत: परापतत् तदस्यां न्यषिच्यत तदश्रीणादिदं मे मा दुषदिति तत्सदकरोत् पशूनेव। *'मा+√'दुष' वैकृत्ये'= मा दुषद्= उषस्'*। ता०ब्रा० ८.२.१०

२८. यद् ओषम् इति ता उषस:। *'ओष= उषस्'*। जै०ब्रा० ३.३८०

२९. उषा: कस्माद्? उच्छतीति सत्या:। रात्रेरपर: काल:। √'उच्छ्'। निरु० २.१८

३०. उषा उच्छते:। √'उच्छ्'। निरु० १२.५

३१. उषा वष्टे: कान्तिकर्मण:। √'वश्'। निरु० १२.५

३२. उच्छतेरितरा माध्यमिका वाक्। √'उच्छ्'। निरु० १२.५

उषासानक्ता

१. उषाश्च नक्ता च। उषा व्याख्याता। नक्तेति रात्रिनाम। अनक्ति भूतान्यवश्यायेन। *√'उच्छ्' या √'वश्'= उषस्, 'अञ्ज्= नक्त, उषस्+ नक्त= उषासानक्ता '*। निरु० ८.१०

२. अपि वाऽनक्ताव्यक्तवर्णा। 'उषस् + नक्त = *उषासानक्ता*'। निरु० ८.१०

उष्णिह् (उष्णिक्)

१. उष्णिगुत्स्नानात्। 'उत्+ √'*स्ना*'। दै०ब्रा० ३.४

२. स्निह्यतेर्वा। √'*स्निह*'। दै०ब्रा० ३.४

३. अपि वोष्णोषिणो वेत्यौपमिकम्। '*उष्णीष= उष्णिह्*'। दै०ब्रा० ३.४

४. उष्णिगुत्स्नाता भवति। 'उत्+ √'*स्ना*'। निरु० ७.१२

५. स्निह्यतेर्वा कान्तिकर्मण:। √'*स्निह*'। निरु० ७.१२

६. उष्णीषिणो वेत्यौपमिकम्। '*उष्णीष= उष्णिह्*'। निरु० ७.१२

उष्णीष

१. उष्णीषं स्नायते:। √'*ष्णै' वेष्टने*'। निरु० ७.१२

उस्र, उस्रा

१. उस्रियेति गोनाम, उत्स्राविणोऽस्यां भोगा:, उस्रेति च। 'उत्+ √'स्रु'। निरु० ४.१९

२. उस्रा: (रश्मय:)। √'वस' निवासे'। वसत्येषु परतेज:, वसन्त्येषु रसा इति वा। √'*वस्*'। निघ० १.५.९

३. यद्वा, उत्पूर्वात् √'स्रु' गतौ'। उत्स्रवन्ति एभ्यो रसा:। 'उत्+ √'स्रु'। निघ० १.५.९

४. उस्रा (गौ:)। व्याख्यातं रश्मिनामसु। वसति क्षीरादि हविरस्याम्। √'*वस्*'। निघ० २.११.२

उस्रिया

१. बृहस्पतिभिर्नदद्रिं विदद्गा: **समुस्रियाभिर्वावशन्त**। √'*वश्*'। ऋ० १.६२.३

२. **उदुस्रिया:** सृजते सूर्य:। 'उद्+ √'सृज्'। ऋ० ७.८१.२

३. **उदुस्रिया असृजत** स्वयुग्भि:। 'उद्+ √'सृज्'। ऋ० १०.६७.८

४. उस्रियेति गोनाम, उत्स्राविणोऽस्यां भोगा:, उस्रेति च। 'उत्+ √'स्रु'। निरु० ४.१९

५. उस्रियेति गोनाम, उत्स्राविणोऽस्यां भोगा:, उस्रेति च। (निरु० ४.१९) उत्स्राविणोऽस्यां भोगास्ते ऊर्ध्वं स्रवन्ति गच्छन्ति क्षीरदधिनवनीतक्रमेणइति स्कन्दस्वामी। 'उत्+ √'स्रु'। निघ० २.११.३

ऊति

१. **त्वमाविथ** सुश्रवसं **तवोतिभिस्तव**। √'*अव्*'। ऋ० १.५३.१०; २.२१.१०

२. अति तस्थौ व **ऊती** मरुतो **यमावत**। √'*अव्*'। ऋ० १.६४.१३

३. अवा नो अग्न ऊतिभिर्गायत्रस्य प्रभर्मणि। √'अव्'। ऋ० १.७९.७

४. याभिर्धियोऽवथः कर्मन्निष्टये ताभिरुषु ऊतिभिश्विनागतम्। √'अव्'। ऋ० १.११२.२

५. याभिः पृश्निगुं पुरुकुत्समावतं ताभिरुषु ऊतिभिरश्विनागतम्। √'अव्'। ऋ० १.११२.७.(तु०, ऋ० १.११२.९-११,१३-१५,१७,१८, २२,२३)

६. उभे मामूती अवसा सचेतसाम्। 'अव्'। ऋ० १.१८५.९

७. ऊती अवस्यव ऊर्जं वर्धयन्तः। √'अव्'। ऋ० २.११.१३

८. अवस्यनेहसो व ऊतयः सु ऊतयो व ऊतयः। √'अव्'। ऋ० ८.४७.५

९. ऊतिरवनात्। √'अव्'। निरु० ५.३

ऊधन्, ऊधस्

१. ऊध उद्धततरं भवति। 'उद्+√'हन्'। निरु० ६.१९

२. उपोन्नद्धमिति वा। स्नेहानुप्रदानसामान्याद्रात्रिरप्यूध उच्यते। 'उप+√'नह्'। निरु० ६.१९

३. ऊधः (रात्रिः)। गोरूध उद्धततरं भवति, प्रसवकाले अङ्गान्तरेभ्य उच्छ्रितरं भवति। 'उद्+√'धृ'। निघ० १.७.२०

४. यद्वा, उपोनद्धमुपरिसृष्टमूर्ध्वमिव केनचित्। तत् स्नेहं रसानुप्रदानसामान्याद् रात्रिरप्यूध उच्यते। 'उप+√'नह्'। निघ० १.७.२०

५. यद्वा, √'उन्दी' क्लेदने'। उनत्त्यावश्येन भूतानि। √'उन्द्'। निघ० १.७.२०

६. उनत्त्यूधः— इति क्षीरस्वामी। √'उन्द्'। निघ० १.७.२०

ऊर्ज्

१. अग्ने गृणन्तमंहस उरुष्योर्जो नपात् पूर्भिरायसीभिः। √'उरुष्य'। ऋ० १.५८.८

२. उर्गित्यन्ननाम, ऊर्जयतीति सतः। √'ऊर्ज्'। निरु० ३.८

३. ऊर्क् पक्वं सुप्रवृक्कणमिति वा। (*अर्थनिर्वचनम्*) निरु० ३.८

४. ऊर्क् (अन्नम्)। ऊर्गित्यन्ननाम। ऊर्जयतीति सतः (निरु० ३.८) ऊर्जयति प्रबलति प्राणयति बलवन्तं प्राणवन्तं वा करोतीत्यर्थः। √'ऊर्ज्'। निघ० २.७.१५

५. पक्वं सुप्रवृक्कणमिति वा। (निरु० ३.८) पक्वशब्दस्य पकारलोपं कृत्वा क्वशब्दं व्यत्ययस्य वकारस्योपरि कृते रुगागमे चोर्गिति भवति। '*पक्व*+=√'ऊर्ज्'। निघ० २.७.१५

६. 'ऊर्ज' बलप्राणनयोः'। ऊर्ज्यते प्राण्यते जीव्यतेऽनया— इति भट्टभास्करमिश्रः। √'ऊर्ज्'। निघ० २.७.१५

ऊर्जस्वती

१. ऊर्जस्वत्यः (नद्यः)। √'ऊर्ज' बलप्राणनयोः'। ऊर्जयतीत्यूर्जो बलं तेन तद्वत्यः। √'ऊर्ज्'। निघ० १.१३.२८

ऊर्णा

१. ऊर्णा पुनर्वृणोतेः। √'वृ'। निरु० ५.२१

२. ऊर्णोतेर्वा। √'ऊर्णुञ्' आच्छादने'। निरु० ५.२१

ऊर्दर

१. ऊर्दरमुद्दीर्णं भवति। 'उद्+ *दीर्ण*= उद्दीर्ण'। निरु० ३.२०

२. ऊर्जे दीर्णं वा। 'उद्+ *दीर्ण*= उद्दीर्ण'। निरु० ३.२०

ऊर्ध्व

१. ऊर्ध्व उच्छ्रितो भवति। 'उत्+√'श्रि' (*अर्थनिर्वचनं वा*)। निरु० ८.१५

ऊर्ध्वबुध्न

१. ऊर्ध्वबन्धनः। 'ऊर्ध्व+√'बन्ध्'। निरु० १२.३८

२. ऊर्ध्वबोधनो वा। 'ऊर्ध्व+√'बुध्'। निरु० १२.३८

ऊर्ध्वसद्मन

१. ऊर्ध्वसद्मनेन वै देवा एषु लोकेषूर्ध्वा असीदन्। यदेषु लोकेषूर्ध्वा असीदंस्तद् ऊर्ध्वसद्मस्य ऊर्ध्वसद्मनत्वम्। 'ऊर्ध्व+√'सद्'। जै०ब्रा० १.१२८

ऊर्मि

१. ऊर्मिं प्र हेत य उभे इयर्ति। √'ऋ'। ऋ० १०.३.९

२. समुद्रादूर्मिमुदियर्ति वेनः। √'ऋ'। ऋ० १०.१२३.५

३. ऊर्मिरूर्णोतेः। √'ऊर्ण्'। निरु० ५.२३

४. ऊर्म्या (रात्रिः)। √'ऊर्णुञ्' आच्छादने'। ऊर्मिः तमः सङ्घात्, आच्छादकत्वात् लोकस्य। √'ऊर्ण्'। निघ० १.७.५

ऊहे

१. ऊहे, वसति। √'वह्'। निरु० ६.३५

ऋच्, ऋक्

१. ऊर्ध वै नामैष। तमृगिति परोक्षमाचक्षते। तस्माद् एष एवर्क्।'ऊर्ध= ऋक्'। जै०ब्रा० ३.३७९

२. एष (प्राण:) वा ऋगेष ह्येभ्य: सर्वेभ्यो भूतेभ्योऽर्चत। √'अर्च्'। ऐ०आ० २.२.२

३. अथेमानि प्रजापतिर्ऋक्पदानि शरीराणि सञ्चित्या ऽभ्यर्चत्। यदभ्यर्चत् ता एवर्चोऽभवन्। √'अर्च्'। जै०उप० १.४.१.६

४. ऋचामर्चनी। √'अर्च्'। निरु० १.८

५. एषर्ग्भवति यदेनमर्चन्ति, प्रत्यृच: सर्वाणि भूतानि। √'अर्च्'। निरु० १३.११

६. शरीरमत्र ऋगुच्यते यदेनेनार्चन्ति प्रत्यृच: सर्वाणि भूतानि। √'अर्च्'। निरु० १३.११

७. ऋक् (वाक्)। √'ऋच' स्तुतौ'। ऋच्यते स्तूयतेऽनया। √'ऋच्'। निघ० १.११.३४

८. यद्वा, √'ऋच्' स्तुतौ'। स्तूयते स्वयं देवतात्वात्। √'ऋच्'। निघ० १.११.३४

ऋक्ष

१. ऋक्षा उदीर्णानिव ख्यायन्ते। '*उद्*+ √'*ऋ*'+ √'*ख्या*'। निरु० ३.२०

ऋक्षर

१. ऋक्षर: कण्टक:, ऋच्छते:। √'ऋच्छ्'। निरु० ९.३२

ऋग्मिय

१. ऋग्मियायार्चामार्कं नरे विश्रुताय। √'*अर्च्*'। ऋ० १.६२.१

२. ऋग्मियमृग्मन्तमिति वा। 'ऋच्+ *मिय* (*मत्वर्थीय:*)> ऋग्मिय'। निरु० ७.२६

३. अर्चनीयमिति वा। √'*अर्च्* या √'ऋच्'। निरु० ७.२६

४. पूजनीयमिति वा। (*अर्थनिर्वचनम्*)। निरु० ७.२६

ऋचीषम:

१. ऋचीषम:, ऋचा सम:। 'ऋच्+ *सम*> ऋचीषम'। निरु० ६.२३

ऋजीषिन

१. ऋजीषी सोमो यत् सोमस्य पूयमानस्याऽतिरिच्यते तदृजीषमपार्जितं भवति, तेनर्जीषी। '*अप*+ √'*अर्ज गतिक्षेपणयो:*'। निरु० ५.१२

ऋजु

१. ऋञ्जति: प्रसाधनकर्मा, ऋजुरित्यप्यस्य भवति। √'ऋञ्ज्'। निरु० ६.२१

ऋजूयताम्

१. ऋजूयताम्, ऋजुगामिनाम्। 'ऋजु+ √'*गम्*'। निरु० १२.३९

२. ऋतुगामिनामिति वा। 'ऋतु+ √'*गम्*'। निरु० १२.३९

ऋज्यन्त

१. ऋज्यन्त ऋजुगामिन:। (*अर्थनिर्वचनम्*)। निरु० १०.३

ऋतम्

१. ऋतमित्युदकनाम। प्रत्यृतं भवति। √'ऋ'। निरु० २.२५

ऋतस्य योनि:

१. ऋतस्य योनि: (उदकम्)। यज्ञस्य योनि: न ह्युदकेन विना कश्चिदपि यज्ञ: कर्तुं शक्यते। (*अर्थनिर्वचनम्*)। निघ० १.१२.७०

२. ऋतस्य आगामिनो वर्षजलस्य योनिर्वा। (*अर्थनिर्वचनम्*)। निघ० १.१२.७०

ऋतु

१. उष: प्रारन्नृतूँरनु दिवो अन्तेभ्यस्परि। √'ऋ'। ऋ० १.४९.३

२. यद् ऋत्वियादसृजत तद् ऋतूनामृतुत्वम्। 'ऋत्विय> ऋतु'। जै०ब्रा० ३.१

३. ऋतुरर्तेर्गतिकर्मण:। √'ऋ'। निरु० २.२५

ऋतुथा

१. ऋतुथा, ऋतौ ऋतौ। 'ऋतु> *ऋतुथा*'। निरु० ८.१७

ऋतव्या

१. ऋतुभ्यो वा एता (इष्टका:) देवा निरमिमत, तद् ऋतव्यानामृतव्यात्वम्। 'ऋतु> ऋतव्य'। काठ० २१.३,कपि०क०सं० ३१.१८

ऋत्विज्

१. यद् ऋत्वियादजनयत् तस्माद् ऋत्विज इत्याख्यायन्ते। '*ऋत्विय> ऋत्विज्*'। जै०ब्रा० ३.१

२. स (प्रजापतिः) आत्मान्नृतत्वमपश्यत् तत ऋत्विजोऽसृजत, यदृत्वादसृजत तद् ऋत्विजा-मृत्विक्त्वम्। '*ऋतु> ऋत्विज्*'। ता०ब्रा० १०.३.१

३. ऋत्विज ऋतुयाजान् यजन्ति। '*ऋतु*+ √'*यज्*'। गो०ब्रा० २.६.१०

४. ऋत्विक् कस्मात्? ईरणः। √'*ईर्*'। निरु० ३.१९

५. ऋग्यष्टा भवतीति शाकपूणिः। '*ऋच्*+ √'*यज्*> *ऋत्विज्*'। निरु० ३.१९

६. ऋतुयाजी भवतीति वा। '*ऋतु*+ √'*यज्*'। निरु० ३.१९

ऋदूदर

१. ऋदूदरः सोमो मृदूदरो मृदूदरेष्विति वा। '*मृदु*+ *उदर*> *ऋदूदर*'। निरु० ६.४

ऋदूप

१. ऋदूपे, अर्दनपातिनौ, शब्दपातिनौ दूरपातिनौ वा। '*अर्द्*+ √'*पातय्*'। निरु० ६.३३

ऋदूवृध्

१. ऋदूवृध। मर्मण्यर्दनवेधिनौ गमनवेधिनौ शब्दवेधिनौ दूरवेधिनौ वा। √'*अर्द्*+ √'*विध्*' (*अर्थनिर्वचनं वा*)। निरु० ६.३३

ऋद्धि

१. याम् ऋद्धिम् ऋध्नोति......ऋध्नोति ताम् ऋद्धिम्। √'*ऋधु*' *वृद्धौ*'। जै०ब्रा० ३.३५८

२. ऋद्धिम्......ऋध्नोति। √'*ऋधु*' *वृद्धौ*'। गो०ब्रा० १.३.१५

३. ऋध्या ऋध्नोति। √'*ऋधु*' *वृद्धौ*'। गो०ब्रा० २.१.१२

ऋधक्

१. ऋध्नोत्यर्थे दृश्यते। √'*ऋध्*'। निरु० ४.२५

ऋबीस

१. ऋबीसमपगतभासम्। अपहृतभासम्। अन्तर्हितभासं गतभासं वा। '*अप*+ √'*हृ*'+ √'*भास्*' (*अर्थनिर्वचनं वा*)। निरु० ६.३५

ऋभु

१. ऋभव उरु भान्तीति वा। '*उरु*+ √'*भा*'। निरु० ११.१५

२. ऋतेन भान्तीति वा। '*ऋत*+ √'*भा*'। निरु० ११.१५

३. ऋतेन भवन्तीति वा। '*ऋत*+ √'*भू*'। निरु० ११.१५

४. ऋभुः (मेधावी)। ऋभुक्षा इत्यत्र व्याख्यातम्। निघ० ३.१५.८

ऋभुक्षा

१. उरुक्षयण। '*उरु*+ √'*क्षि*'। निरु० ९.३

२. ऋभूणां राजेति वा। '*ऋभु*+ √'*क्षि*'। निरु० ९.३

३. ऋभुक्षाः (महत्)। √'*ऋ*' *गतौ*'। निघ० ३.३.१०

४. यद्वा, उरुशब्दादुपपदाद् भातेर्भवतेर्वा। उरु विस्तीर्णं भाति, ऋतेन सत्येन यज्ञेन वा भाति भवति वा, ऋभुः मेधावी महत् स्थानं वा। '*उरु*+ √'*भा*' *अथवा* '*उरु*+ √'*भू*'। निघ० ३.३.१०

५. यद्वा, क्षयतेरैश्वर्य्यकर्मणः क्षियतेर्वा। ऋभूणां क्षयति ईष्टे, ऋभौ महति स्थाने निवसति वा। '*ऋभु*+ √'*क्षि*' *ऐश्वर्ये निवासे वा*'। निघ० ३.३.१०

ऋश्यदात्

१. ऋश्यदात् (कूपः)। √'*ऋषी*' *गतौ*'। ऋष्याः मृगाः। ऋष्यान् द्यति। कूपो हि दुर्ग्रहजलत्वात् ऋश्यान् खण्डयति, खण्डितत्वञ्च जलदानेच्छा न करोति। √'*ऋष्*'+ √'*दो*' *अवखण्डने*'। निघ० ३.२३.११

ऋषि

१. अजान् ह वै पृश्नींस्तपस्यमानान् ब्रह्म स्वयम्भ्वभ्यानर्षत्, तदृषयोऽभवन्, तद् ऋषीणा-मृषित्वम्। √'*ऋष्*'। तै०आ० २.९.१

२. ते यत्पुरास्मात्सर्वस्मादिदमिच्छन्तः श्रमेण तपसारिषं-स्तस्मादृषयः। √'*ऋ*' *गतौ*'। शत०ब्रा० ६.१.१.१

३. ऋषिर्दर्शनात्। √'*दृश्*'। निरु० २.११

४. स्तोमान् ददर्शेत्यौपमन्यवः। √'*दृश्*'। निरु० २.११

५. तद्यदेनांस्तपस्यमानान् ब्रह्म स्वयम्भ्वभ्यानर्षत् त ऋषयोऽभवंस्तदृषीणामृषित्वमिति विज्ञायते। √'*ऋष्*'। निरु० २.११

ऋष्वः

१. ऋष्वः (महत्)। √'ऋष्' गतौ। गम्यते हि महान् सर्वैः गतो वा भूमिम्। √'ऋष्'। निघ० ३.३.३

२. ऋषिर्दर्शनात् (निरु० २.११) इति भाष्यादपि दर्शनार्थम्। दर्शनीयो हि महान्। √'ऋष' *दर्शने*'। निघ० ३.३.३

ऋहन्

१. ऋहन् (ह्रस्वः)। √'रुह' बीजजन्मनि'। आरुह्यते हि ह्रस्वो वृक्षादिः। √'रुह्'। निघ० ३.२.१

२. यद्वा, √'रह' त्यागे'। त्यज्यते वा दीर्घार्थिभिः। √'रह्'। निघ० ३.२.१

एक

१. मनो न योऽध्वनः सद्य **एत्येकः** सत्रा सूरो वस्व ईशे। √'इण्'। ऋ० १.७१.९

२. **एकैका** ऋतुं परियन्ति सद्यः। √'इण्'। ऋ० १.१२३.८

३. तद्रूपा मिनन्तदपा **एक ईयते**। √'इण्'। ऋ० २.१३.३

४. एक इता संख्या। √'इण्' *गतौ*'। निरु० ३.१०

एकाष्टका

१. स (इन्द्रः) एकयाश्नुवत। यदेकयाश्नुवत तदेकाष्टकाया एकाष्टकात्वाम्। *'एक+√'अश्' व्याप्तौ'*। जै०ब्रा० २.३७२

एतग्वा

१. एतग्वा (अश्वः)। √'इण्' गतौ'+√'गम्लृ' गतौ'। एतं प्राप्तम्। गम्यत इति ग्वः, गन्तव्यो देशः। एतः प्राप्तो गन्तव्यो येन स एतग्वः एतग्वाः प्राप्तगन्तव्याः इति माधवः। √'इ'+√'*गम्*'। निघ० १.१४.९

२. यद्वा, एतशब्दः शुक्लपर्यायः, गमेः। एतस्य शुक्लवर्णस्यागमनमस्यास्ति। एतग्वाः शुक्लवर्णा अश्वाः। 'एत+ √'*गम्*'। निघ० १.१४.९

३. यद्वा, एत शुक्लवर्णोऽस्यास्तीति मत्वर्थीयः 'वः' प्रत्ययः (अथर्व० ५.२.१०९) 'एत+ *व*' (*मत्वर्थीयः*)। निघ० १.१४.९

एतशः

१. एतशः (अश्वः)। √'इण्' गतौ'। एतशः गमन कुशलः। √'इण्'। निघ० १.१४.१०

२. यद्वा, एतशब्दात् लोमादित्वात् (अथर्व० ५.२.१०) शस्। एतद्वा एतच्छरीर एतशः। '*एत+ श*'। निघ० १.१४.१०

एतीषादीय

१. त (देवाः) उ स्वर्गं लोकं गत्वाब्रुवन्न् आत इव बत स्वर्गे लोके सदामेति। यदब्रुवन्नेति वै साद इति तदेतीषादीयस्यैतीषादीयत्वम्। √'इण्'+√'सद्'। जै० ब्रा० ३.७८

एधस्

१. **एधोऽस्येधिषीमहि** समिदसि। √'*एध*'। अथर्व० ७.८९.४, यजु० २०.२३.२८.२५

एनस्

१. एन एतेः। √'इण्' गतौः'। निरु० ११.२४

एन्यः

१. एन्यः (नद्यः)। √'इण्' गतौः। यन्ति एभ्यः गमनस्वभावा हि नद्यः गम्यन्ते वा प्राणिभिः। √'इण्'। निघ० १.१३.६

एरिरे

१. इयर्त्तिरुपसृष्टोऽभ्यस्तः। √'ऋ' गतौः। निरु० ४.२३

एव

१. एवैरयनैः। √'इण्' *या* √'*अय्*'। निरु० २.२५,१२.२१

२. अवनेर्वा। √'*अव्*'। निरु० २.२५, १२.२१

एहः

१. एहः (क्रोधः)। √'हन्' हिंसागत्योः'। √'*हन्*'। निघ० २.१३.६

ऐलब

१. तौविलिकेऽवेलयावायमैलब **ऐलयीत्**। √'इल्'। अथर्व० ६.१६.३

ओजस्

१. ओज ओजतेर्वा। √'*ओज्*'। निरु० ६.८

२. उब्जतेर्वा। √'उब्ज्'। निरु० ६.८

३. ओजः (उदकम्)। √'उब्ज' आर्जवे'। उब्जत्यनेनेत्युर्क्। न्यग्भावयति वा स्ववेगेनानतप्रदेशम्, वर्द्धते वा वर्षासु बलबद्वा। √'उब्ज्'। निघ० १.१२.४३

४. ओजः (बलम्)। व्याख्यातमुदकनामसु। उब्जन्त्यनेन बलवत्सन्निधौ हि ऋजवो भवन्ति भीत्या, न्यग्भावयत्यनेन वा शत्रून्। वर्द्धतेऽनेन ऐश्वर्य्यादि, वर्द्धतेऽनेन व्यायामादिना। √'उब्ज्'। निघ० २.९.१

५. उषेर्जुट् च — इति श्रीभोजदेवः। ओषति दहति शत्रून्। √'उष्'+ असुन्'। निघ० २.९.१

ओण्यौ

१. ओण्यौ (द्यावापृथिव्यौ)। √'ओणृ अपनयने'। अपनयतः स्वाश्रितानां क्लेशान्। √'ओण्'। निघ० ३.३०.१५

२. यद्वा, अवतेः। √'अव्'। निघ० ३.३०.१५

ओदती

१. आपो वा ओदत्यो या दिव्यास्ता हीदं सर्वमुन्दन्त्यापो वा ओदत्यो या मुख्यास्ता हीदं सर्वमन्नाद्यमुन्दन्ति। √'उन्द्'। ऐ०आ० १.३.५

२. ओदती (उषा)। √'उन्दी क्लेदने'। उनत्त्यावश्यायेन ओदती। √'उन्द्'। निघ० १.८.४

ओदन

१. ताभ्यो (प्रजाभ्यः) ऽवर्षत्। तत ओदनोऽजायत। तमशित्वोदानान् स उदनोऽभवत्। तदुदनस्योदनत्वम्। उदनो ह वै नामैष तमोदन इति परोक्षमाचक्षते। √'उन्द्> उदन> ओदन'। जै०ब्रा० ३.३४६

२. ओदमुदकदानं मेघम्। √'उदक+ √'दा> ओदन'। निरु० ६.३४

३. ओदनः (मेघः)। उदक+ √'दा दाने'। ओदनः उदकदातेत्यर्थः। 'उदक+ √'दा'। निघ० १.१०.२६

४. यद्वा, √'उन्दी क्लेदने'। उनत्ति वनभूमिम् ओदनः। √'उन्द्'। निघ० १.१०.२६

५. उन्देर्नलोपश्च। √'उन्द्'। उणा० २.७७

ओम्

१. तानि (भूर्भुवः स्वः) शुक्राण्यभ्यतपत्तेभ्योऽभितप्तेभ्यस्त्रयो वर्णा अजायन्ताकार उकारो मकार इति तानेकधा समभरत्तदेतदो३मिति। 'अ+ उ+ म्> ओ३म्'। ऐ०ब्रा० ५.३२

२. तासामभिपीडितानां (व्याहृतीनाम्) रसः प्राणेदत्। तदेतदक्षरमभवदोमिति यदेतद्। 'अ+ उ+ म्> ओ३म्'। जै०उप० १.७.१.७

३. यदेतदोमित्यादत्ते। असौ वा आदित्यं एतदक्षरम्। 'आ+ √'दा' > ओ३म्'। जै०ब्रा० १.३२२

४. को धातुर् (ओङ्कारस्य) इत्यापृधातुरवतिमप्येके रूपसामान्यादर्थसामान्यं नेदीयस्तस्मादापेरोङ्कारः सर्वमाप्नोतीत्यर्थः। 'आप्> ओ३म्'। गो०ब्रा० १.१.२६

५. को विकारी च्यवते। प्रसारणमाप्नोतेराकारपकारौ विकार्यावादित ओङ्कारो विक्रियते। द्वितीयो मकार एवं द्विवर्ण एकाक्षर, ओमित्योङ्कारो निर्वृतः। 'आप्+ म्> ओ३म्'। गो०ब्रा० १.१.२६

६. स (ब्रह्मा) ओमित्येतदक्षरमपश्यद् द्विवर्णञ्चतुर्मात्रं सर्वव्यापि सर्वविभ्वयातयामब्रह्म। गो०ब्रा० १.१.१६

७. अवितारः, अवनीया वा। √'अव्'। निरु० १२.४०

८. अवतेष्टिलोपश्च। √'अव्'+ मन्'। उणा० १.१४२

ओमना

१. ओमना, अवनाय। √'अव्'। निरु० ६.४

ओमासः

१. ओमासः, अवितारो वा। अवनीया वा। √'अव्'। निरु० १२.४०

ओषधि

१. गोष्वदधा ओषधीषु। 'ओष+ √'धा'। ऋ० १०.७३.९

२. तां (आहुतिं प्रजापतिः) व्यौक्षद् (अग्नावत्यजत्) ओषं धयेति तत ओषधयः समभवंस्तस्मादोषधयो नाम। √'उष्'+ √'धेट् पाने'। शत०ब्रा० २.२.४.५

३. ओषधयो वाऽ अपामोद्म। यत्र ह्याप उन्दन्त्यस्तिष्ठन्ति तदोषधयो जायन्ते। 'आप+ √'उन्द्' अथवा √'उन्द्'। शत०ब्रा० ७.५.२.४७

४. ओषधय ओषद्धयन्तीति वा। √'उष्'+ √'धे'। निरु० ९.२७

५. ओषत्येना धयन्तीति वा। √'उष्+ √'धे'। निरु० ९.२७

६. दोषं धयन्तीति वा। 'दोष'+ √'धे'। निरु० ९.२७

ओह

१. ओहब्रह्माणः। ऊह एषां ब्रह्मेति वा। 'ऊह> ओह'। निरु० १३.१३

औच्चैः श्रवसः

१. औच्चैः श्रवसः (अश्वः)। अमृतमन्थने जातोऽश्व उच्चैःश्रवः। उच्चैर्महच्छ्रवः कीर्तिरस्येति। '*उच्चैः+ श्रवस्*'। निघ० १.१४.१३

औद्ग्रभण

१. औद्ग्रभणैर्वै देवा आत्मानमस्माल्लोकात् स्वर्गं लोकमभ्युदगृह्णत यदुदगृह्णत तस्मादौद्ग्रभणानि। '*उद्+ √'ग्रह्' > औद्ग्रभण*'। शत०ब्रा० ६.६.१.१२

२. तदुद्ग्रभणंस्तदौद्ग्रभणस्यौद्ग्रभणत्वम्। '*उद्ग्रभण> ओद्ग्रभण*'। मै०सं० ३.६.५

औशन

१. यदुशना काव्योऽपश्यत् तस्मादौशनमित्याख्यायते। '*उशना> औशन*'। जै०ब्रा० १.१२७

औशिज

१. औशिजः, उशिजः पुत्रः। '*उशिज्> औशिज*'। निरु० ६.१०

क

१. कं वै प्रजापतिः प्रजाभ्यः कायेनैककपालेन पुरोडाशेनाकुरुत। '*काय+ √'कृ' अथवा √'कृ> क'*, *अथवा* '*काय> क*'। शत०ब्रा० २.५.२.१३

२. स प्रजापतिरब्रवीदथ कोऽहमिति यदेवैतदवोच्च इत्यब्रवीत् ततो वै को प्रजापतिरभवत् को वै नाम प्रजापतिः। '*कोऽहम्> क*'। ऐ०ब्रा० ३.२१

३. यद्वै तद्वरुणगृहीताभ्यः (प्रजाभ्यः) कमभवत् तस्मात् कायः प्रजापतिर्वै कः, ...यत् काय आत्मन एवैना (प्रजाः) वरुणान् मुञ्चति। '*काय> क*'। मै०सं० १.१०.१०

४. कः कमनो वा। √'*कमु' कान्तौ*'। निरु० १०.२२

५. क्रमणो वा सुखो वा। √'*क्रम्*'। निरु० १०.२२

ककुभ

१. ककुप् च कुब्जश्च कुजतेर्वा। √'*कुज्*'। दै०ब्रा० ३.६

२. उब्जतेर्वा। √'*उब्ज्*'। दै०ब्रा० ३.६

३. ककुप् ककुभिनी भवति। (*अर्थनिर्वचनम्*)। निरु० ७.१२

४. ककुप् च कुब्जश्च कुजतेर्वा। √'*कुज्'+ √'कुज्'> ककुज्> ककुभ्*'। निरु० ७.१२

५. उब्जतेर्वा। √'*उब्ज्*' (*उब्ज> जुउब्> जुब्> कुभ> ककुभ*')। निरु० ७.१२

६. ककुभः (दिशः)। ककुभ्नाति विस्तारयतीति ककुप् इति क्षीरस्वामी। √'*कुभ्' विस्तारे*'। निघ० १.६.७

७. ककुप् कुभेरुच्छ्रयार्थात् उच्छ्रिता इव हि दिशो वृक्षाग्रेषूपलभ्यमानाः— इति माधवः। √'*कुभ्*'। निघ० १.६.७

८. केन प्रजापतिना विस्तारिता इति वा। '*क+ √'कुभ्' विस्तारे*'। निघ० १.६.७

ककुहः

१. ककुहः (महत्)। √'*ककु' सहने*'। सहते अभिभवति शत्रून् सहते क्षमतेऽपराधान् वा। √'*कक्'+ उह् > ककुह*'। निघ० ३.३.१९

कक्ष

१. कक्षो गाहतेः। क्स इति नामकरणः। √'*गाह्+ क्स> गह्+ स> कक्+ ष> कक्ष*'। निरु० २.२

२. ख्यातेर्वानर्थकोऽभ्यासः। √'*ख्या*' (*√ख्या+ √ख्या > कक्ष*)। निरु० २.२

३. किमस्मिन् ख्यानमिति वा। '*किम्+ √'ख्या+ क्स> कक्ष*'। निरु० २.२

४. कषतेर्वा। √'*कष्> कक्ष*'। निरु० २.२

५. हनिकमिकषिभ्यः सः। √'*कष्+ स*'। उणा० ३.६२

कक्षीवत्

१. कक्षीवान् कक्ष्यावान्। '*कक्ष्या+ मतुप्*'। निरु० ६.१०

कक्ष्य, कक्ष्या

१. कक्ष्याः प्रकाशयन्ति कर्माणि। √'*काश्'+ स> कश्+ स> कक्ष, कक्ष+ यत्> कक्ष्य*'। निरु० ३.९

२. कक्ष्या रज्जुरश्वस्य। कक्षं सेवते। '*कक्ष+ यत्*'। निरु० २.२

३. कक्ष्याः (अङ्गुलयः)। ख्यातेः कक्ष्यशब्दस्य निर्वचनम्। प्रकथनेन प्रकाशनं लक्ष्यते। अंसेन नित्यं प्रच्छादनात् प्रकाश्यते पुरुषेण कक्षो बाहुतलम्। अङ्गुलयोऽपि परम्परया कक्षो भवा इति वक्तुं शक्यते, किन्तु प्रकाशयन्ति कर्माणि अनुष्ठानेन फलेन वा। √'*ख्या*'

प्रकथने'+ स> ख्या+ ख्या+ स> कख्या+ स> कक्ष्या'। निघ० २.५.१०

४. यद्वा, कक्ष्या रज्जुः तद्बन्धनसाधनत्वात् कक्ष्या-शब्देनोच्यन्ते। निघ० २.५.१०

कच्छ

१. कच्छः खच्छः, खच्छदः। अयमपीतरो नदीकच्छ एतस्मादेव कमुदकं तेन छाद्यते। *'ख+ √'छद्'> कच्छ'*। निरु० ४.१८

कच्छप

१. कच्छपः कच्छं पाति। कच्छेन पातीति वा। कच्छेन पिबतीति वा। *'कच्छ+ √'ण'*। निरु० ४.१८

कण

१. कणतिः शब्दाणूभावे भाष्यते। अनुकणतीति। मात्राऽणूभावात् कणः। √*'कण्'*। निरु० ६.३०

कणेघात

१. कणेघातः, कणेहतः। कान्तिहतः। *'कण+ √'हन्'+ घञ्> कणेघात'*। निरु० ५.११

कण्टक

१. कण्टकः कन्तपो वा। *'कम्+ √'तप्'> कन्तप> कण्टक'*। निरु० ९.३२

२. कृन्ततेर्वा। √*'कृन्त्'*। निरु० ९.३२

३. कण्टतेर्वा स्याद्गतिकर्मणः। उद्गततमो भवति। √*'कटी' गतौ'*। निरु० ९.३२

कण्वः

१. कण्वः (मेधावी)। √'कण' शब्दे'। कणति स्तोत्रलक्षणं शब्दं करोति, कण्यते स्तूयते वा। √*'कण्'*। निघ० ३.१५.७

२. यद्वा, √'कण' निमीलने'। निमीलयति परान् वा स्वतेजसा। √*'कण्'*। निघ० ३.१५.७

कत्पय

१. कत्पयम्, सुखपयसं सुखमस्य पयः। *'क+ पयस्'*। निरु० ६.३

कनक

१. कनकम् (हिरण्यम्)। √'कनी' दीप्तिकान्तिगतिषु'। रुक्मादिवदर्थः। √*'कन्'*। निघ० १.२.९

कनीनक

१. कनीनके कन्यके। *'कन्यका> कनीनिका'*। निरु० ४.१५

कन्या

१. कन्या कमनीया भवति। √*'कमु' कान्तौ'*। निरु० ४.१५

२. क्वेयं नेतव्येति वा। *'क्व+ √'नी'*। निरु० ४.१५

३. कमनेनानीयत इति वा। √*'कम्'+ √'नी'*। निरु० १.१५

४. कनतेर्वा स्यात् कान्तिकर्मणः। √*'कनी' दीप्तिकान्ति-गतिषु'*। निरु० ४.१५

कपन

१. कपनाः कम्पनाः क्रिमयो भवन्ति। √*'कम्प्'*। निरु० ६.४

कपिञ्जल

१. कपिरिव जीर्णः। कपिरिव जवते। ईषत् पिङ्गलो वा। *'कपि+ √'जॄ'> कपिजर> कपिञ्जल'*। निरु० ३.१८

२. कपिरिव जवते। *'कपि+ √'जु' गतौ' कपिजव> कपिञ्जल'*। निरु० ३.१८

३. ईषत् पिङ्गलो वा। *'क+ पिङ्गल> कपिञ्जल'*। निरु० ३.१८

४. कमनीयं शब्दं पिञ्जयतीति वा। *'क+ √'पिञ्ज्'> कपिञ्ज> कपिञ्जल'*। निरु० ३.१८

कबन्ध

१. कबन्धं मेघम्, कवनमुदकं भवति, तदस्मिन् धीयते। *'कवन+ √'धा'> कवनध> कबन्ध'*। निरु० १०.४

२. उदकमपि कबन्धमुच्यते, बन्धिरनिभृतत्वे, कमनिभृतञ्च। *'कम्+ √'बन्ध्'*। निरु० १०.४

३. उदकमपि कबन्धमुच्यते, बन्धिरनिभृतत्वे, कमनिभृतं च। *'कम्+ √'बन्ध्'> कम्बन्ध> कबन्ध'*। निरु० १०.४

४. कबन्धम (उदकम्)। बन्धिरनिभृतत्वे (निरु० १०.४) निभृतं चञ्चलमतोऽन्यदनिभृतमचञ्चलम्, तदनिभृतम्। कबन्धः कमनीयं च तद्बन्धं चेत्यर्थः। *'कम्+ √'बन्ध्'> कम्बन्ध> कबन्ध'*। निघ० १.१२.६

५. यद्वा, कं सुखं बध्नाति स्नानपानादिना। *'क+ √'बन्ध्' > कबन्ध'*। निघ० १.१२.६

कम्

१. कम् (सुखम्)। अयमपि निपातनम्। निघ० ३.६.२०

कम्बल

१. कम्बलः कमनीयो भवति। √'*कमु कान्तौ*'। निरु० २.२

कम्बोज

१. कम्बोजाः कम्बलभोजाः। '*कम्बलभोज> कम्बोज*'। निरु० २.२

२. कमनीयभोजा वा। '*कमनीयभोज> कम्बोज*'। निरु० २.२

करणानि

करणानि (कर्म)। करोतेः। करणसाधनमिति। √'*कृ*'। निघ० २.१.१२

करन्ती

१. करन्ती (कर्म)। √'*कृञ् करणे*'। करणमभिमतं कर्तुः। √'*कृ*'। निघ० २.१.१४

करस्न

१. करस्नौ बाहू कर्मणां प्रस्नातारौ। √'*कृ*'+√'*स्ना*'> करस्न'। निरु० ६.१७

२. करस्नौ (बाहू)। कर्मणां प्रस्नातारौ (निरु० ६.१७) वेष्टयितारौ कर्मकरावित्यर्थः। √'*कृ*'+√'*स्ना*'> करस्न'। निघ० २.४.७

करांसि

१. करांसि (कर्म)। करोतेः। करांसीति कृतानि स्युः क्रियमाणानि केचन — इति माधवः। √'*कृ*'। निघ० २.१.१३

करिक्रत्

१. करिक्रत् (कर्म)। करोतेर्यङ्लुगन्तस्य। पुनः पुनः करोतीष्टप्राप्तिमनिवारञ्च। √'*कृ*'+√'*कृ*'> *करिक्रत्*'। निघ० २.१.१५

करिष्य

१. यानि **करिष्या कृणुहि** प्रवृद्ध। √'*कृ*'। ऋ० १.१६५.९

करुणम्

१. करुणम् (कर्म)। √'*कॄ विक्षेपे*'। किरति फलम्, कीर्य्यतेऽस्मिन् पात्रादीति वा। √'*कृ*'। निघ० २.१.११

२. यद्वा, √'*कृञ् हिंसायाम्*'। हिनस्ति तत् शुभं पुरुषभावमशुभं पुण्यम्। √'*कृ*'। निघ० २.१.११

करूळतिन्

१. करूळती कृत्तदती अपि वा देवं किंचित् कृत्तदन्तं दृष्ट्वैवमवक्ष्यत्। √'*कृत्*'+ *क्त*+ *दन्त*> *कृत्तदन्त*> *कृत्तदती* > *करूळती*'। निरु० ६.३०

कर्ण

१. कर्णं कृन्ततेर्निकृत्त द्वारो भवति। √'*कृन्त्*'। निरु० १.९

२. ऋच्छतेरित्याग्रायणः। ऋच्छन्तीव खे उद्गन्तामिति ह विज्ञायते। √'*ऋच्छ्*+ *न*> *अर्च्छ्*+ *न*> *कर्च्छ्*+ *न*> *कर्*+ *न*> *कर्ण*'। निरु० १.९

कर्त्तः

१. कर्त्तः (कूपः)। करोतेः। क्रियते उत्पाद्यते पुरुषैः। √'*कृ*'। निघ० २.२३.३

२. यद्वा, √'*कृञ् हिंसायाम्*'। हिंस्यन्त्यत्र चौराः पथिकादीनर्थवतः। √'*कृ*'। निघ० २.२३.३

३. कस्य ऋतः प्राप्तिरत्रेति वा। '*क*+ *ऋत*> *कर्त्त*'। निघ० २.२३.३

कर्त्तवै, कर्त्तवे

१. यदीमुश्मसि **कर्त्तवे कस्तत्**। √'*कृ*'। ऋ० १०.७४.६

२. कर्त्तवै (कर्म)। करोतेः। √'*कृ*'। निघ० २.१.१९

कर्त्तौः

१. कर्त्तौः (कर्म)। करोतेः। √'*कृ*'। निघ० २.१.१८

कर्त्वम्

१. **कृतानि** या च **कर्त्वा**। √'*कृ*'। ऋ० १.२५.११

२. वीर्या **कृधि** यानि ते **कर्त्वानि**। √'*कृ*'। ऋ० २.३०.१०

३. **कृतानी**दस्य **कर्त्वा** चेतन्ते। √'*कृ*'। ऋ० ९.४७.२

४. कर्त्वम् (कर्म)। करोतेः। √'*कृ*'। निघ० २.१.१७

कर्मन्

१. मन्युर्महि **कर्मा करिष्यतः**। √'*कृ*'। ऋ० २.२४.११

२. इन्द्रस्य **कर्म सुकृता** पुरूणि। √'*कृ*'। ऋ० ३.३०.१३

३. अत्रेः **कर्माणि कृण्वतः**। √'*कृ*'। ऋ० ८.३७.७

४. येभिः **कर्माणि** मघवञ्चकर्थ। √'*कृ*'। ऋ० १०.५४.४

५. **अक्रन् कर्म कर्मकृतः**। √'*कृ*'। यजु० ३.४७

६. यस्मात्रऽऋते किं चन **कर्म क्रियते**। √'कृ'। यजु० ३४.३

७. **कुर्वन्नेह कर्माणि**। √'कृ'। यजु० ४०.२

८. स्विष्टिं नस्तां **कृणवद्** विश्वकर्मा। √'कृ'। अथर्व० २.३५.१

९. प्रथमा यानि **कर्माणि चक्रिरे**। √'कृ'। अथर्व० ४.७.७, ५.६.२

१०. ऋचं साम यजामहे याभ्यां **कर्माणि कुर्वते**। √'कृ'। अथर्व० ७.५४.१, सा०पू० ४.२.१०

११. अथ **कर्माणि कृण्महे**। √'कृ'। अथर्व० १९.६८.१

१२. न किष्टं **कर्मणा** नशद्यश्चकार सदावृधम्। √'कृ'। सा०पू० ३.२.१, सा०उ० ११५५

१३. कर्म कस्मात्, क्रियत इति सतः। √'कृ'। निरु० ३.१

कर्वरम्

१. कर्वरम् (कर्म)। कर्वतेः, √'कृ' विक्षेपे'। किरति फलं कीर्य्यतेऽस्मिन् पात्रादीति वा। √'कृ'। निघ० २.१.८

२. यद्वा, √'कृञ्' हिंसायाम्'। हिनस्ति तत् शुभं पुरुषभावमशुभं पुण्यम्। √'कृ'। निघ० २.१.८

कलश

१. कलशः कस्मात्, कला अस्मिञ्छेरते मात्राः। *'कला+√'शी'*। निरु० ११.१२

कला

१. कलाश्च कलिश्च किरतेः, विकीर्णमात्राः। √'कृ'। निरु० ११.१२

कलि

१. कलिश्च किरतेः, विकर्णमात्राः। √'कृ'। निरु० ११.१२

कल्याण

१. कल्याणं कमनीयं भवति। √'कम्'। निरु० २.३

कवच

१. कवचं कु अञ्चितं भवति। *'कु+√'अञ्च्'> कवञ्च> कवच'*। निरु० ५.२५

२. कांचितं भवति। 'क(ईषत्)+√'अञ्च्'> कव+ अञ्च> कवञ्च>कवच'। निरु० ५.२५

३. कायेऽञ्चितं भवतीति वा। *'काय+√'अञ्च्'>कायञ्च> कायच> कवच'*। निरु० ५.२५

कवासख

१. कवासखो यस्य कपूयाः सखायः। *'कु+ सखि> कव+ सखि> कवासख'*। निरु० ६.१९

कवि

१. सदा **कवी** सुमतिमा **चके**। √'कै' शब्दे'। ऋ० १.११७.२३

२. परि वाजपतिः **कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत्**। √'क्रम'। सा०पू० १.३.१०

३. कविः क्रान्तदर्शनो भवति। √'क्रम'। निरु० १२.१३

४. कवतेर्वा। √'कु'। निरु० १२.१३

५. कविः (मेधावी)। क्रामतेः। कविः क्रान्तदर्शनः अतीतानागतविप्रकृष्ट विषयं युगपत् ज्ञानं यस्य स क्रान्तदर्शनः—इत्युव्वटः। √'क्रम्'+ इन्> क्रमि> कवि'। निघ० ३.१५.१०

६. कवतेर्वा। √'कु'+ इन्> कव+ इ> कवि'। निघ० ३.१५.१०

७. कवीनां कवीयमानानाम्। निरु० १४.१३

कशा>कशः

१. कशा प्रकाशयति भयमश्वाय। √'काश्'>कशा'। निरु० ९.१९

२. कृष्यतेर्वाऽणूभावात्। √'कृष्'> कश> कशा'। निरु० ९.१९

३. खशया। 'ख+√'शी'>खशया> कशा'। निरु० ९.१९

४. क्रोशतेर्वा। √'क्रुश्'>क्रश>कश> कशा'। निरु० ९.१९

५. कशा (वाक्)। √'काशृ' दीप्तौ'। प्रकाशयत्यर्थान्। √'काश्'+अच्> काश>कशा'। निघ० १.११.४३

६. यद्वा, खेशया सती वर्णव्यत्ययादिना कशा, वाग्घिमुखात् काशते तत उपलब्धेः। 'खे+√'शी'> खेशया>कशया>कशा'। निघ० १.११.४३

७. यद्वा, √'कश' शब्दे'। अत्र शब्दायते कशा। *'कश्'+ अच्> कशा'*। निघ० १.११.४३

८. यद्वा, √'कश' गतौ'। गच्छति गन्तव्यम्। *'कश्'+ अच्> कशा'*। निघ० १.११.४३

९. कशः (उदकम्)। √'कश गतौ'। कशति गच्छति निम्नप्रदेशम्। √'कश्'+ असुन्> कश'। निघ० १.१२.१७

१०. यद्वा, √'कश शब्दे'। मेघेभ्यः पतत् शब्दं करोतीति वा कशः। √'कश्'+ असुन्> कश'। निघ० १.१२.१७

कश्यप

१. कश्यपः पश्यको भवति। यत्सर्वं परिपश्यतीति सौक्ष्म्यात्। √'पश्य'+ क> पश्यक> कश्यप'। तै०आ० १.८.८

काक

१. काक इति शब्दानुकृतिस्तदिदं शकुनिषु बहुलम्। 'का+ का> काक'। निरु० ३.१८

२. न शब्दानुकृतिर्विद्यत इत्यौपमन्यवः। काकोऽपकालयितव्यो भवति। √'कल क्षेपे'। निरु० ३.१८

३. इण्भीकापाशल्यतिमर्चिभ्यः कन्। √'कै+ कन्> काक'। उणा० ३.४३

काकुत्

१. काकुत् (वाक्)। √'कै शब्दे'। कानं शब्दनं करोतीति काकुत्। √'कै> का, का+ कु+ तकार (उपजनः) > काकुत्'। निघ० १.११.२८

२. यद्वा, √'कक लौल्ये'। ककते चञ्चला भवति, एकस्मिन्नर्थे न प्रतितिष्ठतीत्यर्थः। तथाहि शब्दा अनेकार्था बहवः एकार्थाश्च काक्वादिनाऽभिधीयमाना अनेकार्था भवन्ति। √'कक'+ इति> ककुत्> काकुत्'। निघ० १.११.२८

काकुद

१. काकुदं तालूच्यते जिह्वा कोकुवा साऽस्मिन् धीयते। 'कोकुवा+ √'धा'>काकुद'। निरु० ५.२६

२. जिह्वा कोकुवा। कोकूयमाना वर्णान्नुदतीति वा। √'कु'+ √'कु'>कोकुवा, कोकुवा+ √'नुद्'>कोनुद> काकुद'। निरु० ५.२६

३. कोकूयतेर्वा स्याच्छब्दकर्मणः। 'कु'+ √'कु'> द> कुकुद> काकुद'। निरु० ५.२६

काञ्चनम्

१. काञ्चनम् (हिरण्यम्)। √'कचि दीप्तिबन्धनयोः'। कञ्चते वर्णेन दीप्यते बध्यते कुण्डलादिरूपेणेति। 'कञ्च्'+ युच्> काञ्चन'। निघ० १.२.१०

काटः

१. काटः (कूपः)। √'कटे चर्षावरणयोः'। आव्रियते जलार्थिभिः। √'कट्'+ घञ्> काट'। निघ० ३.२३.५

२. यद्वा, √'अट गतौ'। √'अट्'+ घञ्> आट> काट'। निघ० ३.२३.५

काण

१. काणोऽविक्रान्तदर्शन इत्यौपमन्यवः। 'न+ वि+ √'क्रम्' (अर्थनिर्वचनं वा)। निरु० ६.३०

२. काणः कणतेर्वा स्यादणूभावकर्मणः, दर्शनाऽणूभावात् काणः। √'कण्'+ घञ्> काण'। निरु० ६.३०

काणुक

१. कान्तकानीति वा। √'कन्> कान्तक> काणुक'। निरु० ५.११

२. क्रान्तकानीति वा। √'कन्> क्रान्तक> काणुक'। निरु० ५.११

३. कृतकानीति वा। √'कृ> कृतक> काणुक'। निरु० ५.११

कातुः

१. कातुः (कूपः)। √'कै शब्दे'। शब्द्यते बहुलत्वादिना। √'कै'+ तुन्> का+ तु> कातु'। निघ० ३.२३.२

२. यद्वा, कशब्दे उपपदे अततेः। कमुदकमस्मिन् अत्यते अधिगम्यते। 'क+ √'अत्'+ उण्> क+आतु> कातु'। निघ० ३.२३.२

कायमान

१. कायमान चायमानः। √'चाय्'+ शानच्> चायमान> कायमान'। निघ० ४.१४

२. कामयमान इति वा। √'कम्'+शानच्> कामयमान>कायमान'। निघ० ४.१४

कार

१. **चकर्थ कारमेभ्यः** पृतनासु प्रवन्तवे। √'कृ'। ऋ० १.१३१.५

२. उक्थेषु **कारो** प्रति नो जुषस्व मा.नो नि **कः** पुरुषत्रा नमस्ते। √'कृ'। ऋ० ३.३३.८

कारु

१. त्वं नो अग्ने सनये धनानां यशसं **कारुं कृणुहि** स्तवाना। √'कृ'। ऋ० १.३१.८

२. सेमं न **कारुमुपमन्युमुद्भिदमिन्द्रः कृणोतु** प्रसवे रथं पुरः। √'कृ'। ऋ० १.१०२.९

३. आ यद्दुवस्याद्दुवसे न **कारुरस्माञ्चक्रे** मान्यस्य मेधा। √'कृ'। ऋ० १.१६५.१४

४. **कारुनह्ना** चिच्चक्रुर्वचना गृणन्तः। √'कृ'। ऋ० ४.१६.३

५. कारुः (स्तोता)। करोतेः। कर्त्ता। √'*कृ'+ उण्> कारु*'। निघ० ३.१६.३

६. कर्ता स्तोमानाम्। √'कृ'। निरु० ६.६

कारोतरात्

१. कारोतरात् (कूपः)। करणं कारः। करोतेः कारेण खननक्रिया उत्तरः अधिकः प्रदेशान्तरादुत्कृष्टो वा। √'*कृ'>कार, कार+ उत्तर> कारोतरात्*'। निघ० ३.२३.१२

२. यद्वा, उत्खातमुदकं यस्य सः कारोतरः। √'*कृ'+ उत्खात> कारोत्खात्> कारोतरात्*'। निघ० ३.२३.२

३. कृतोदको वा। √'कृ'+क्त+उदक>कृत+उदक> कृतोदक> कारोदक> कारोतरात्'। निघ० ३.२३.२

काल

१. कालः कालयतेर्गतिकर्मणः। √'*कल' गतौ*'। निरु० २.२५

कालेय

१. तान् (असुरान् देवाः) कालेयेनैव कालेयादकालयन्त। यदकालयन्त तत् कालेयस्य कालेयत्वम्। √'*कल्' > काल> कालेय*'। जै०ब्रा० १.१५३

२. तान् (असुरान् देवाः) कालेयेनैवानुपर्यायमकालयन्त। यदनुपर्यायमकालयन्त तच्चैव कालेयस्य कालेयत्वम्। √'*कल्> काल> कालेय*'। जै०ब्रा० १.१५३

३. तेन (कालेयेन साम्ना देवाः) एनान् (असुरान्) एभ्यो लोकेभ्योऽकालयन्त यदकालयन्त तस्मात् कालेयम्। √'*कल्> काल> कालेय*'। ता०ब्रा० ८.३.१

४. यदु कलिर्वैतदन्योऽपश्यत् तस्मात् कालेय-मित्याख्यायते। '*कलि> कालेय*'। जै०ब्रा० १.१५५

काव

१. तदेतत् लोकवित् साम........। यदु कविर्भार्गवोऽपश्यत् तस्मात् कावमित्याख्यायते। '*कवि> काव*'। जै०ब्रा० १.१६६

काशि

१. काशिर्मुष्टिः काशनात्। √'*काश्*'। निरु० ६.१

काष्ठा

१. काष्ठा दिशो भवन्ति, क्रान्त्वा स्थिता भवन्ति। काष्ठा उपदिशो भवन्ति, इतरेतरं क्रान्त्वा स्थितो भवन्ति। आदित्योऽपि काष्ठोच्यते, क्रान्त्वा स्थितो भवति। आपोऽपि काष्ठा उच्यन्ते, क्रान्त्वा स्थिता भवन्तीति स्थावराणाम्। √'*क्रम्*'+ √'*स्था > क्रान्त्वा+ स्था> क्रास्था> काष्ठा*'। निरु० २.१५

२. काष्ठा (दिशः)। काष्ठा दिशो भवन्ति (निरु० २.१५) इत्यत्र स्कन्दस्वामी— क्रान्त्वा सर्वमतीत्य स्थिता आकाशवद् व्यतिरेकपक्षे। अव्यतिरेकपक्षे त एव शब्दादयः सर्वत्र सन्ति संस्थिताश्चेति। √'*क्रम्+* √'*स्था> क्रान्त्वा+ स्था> क्रास्था> काष्ठा*'। निघ० १.६.५

३. उपदिशोऽप्येवमेव। व्यतिरेकेऽपि इतरेतरापेक्षया। परत्वापरत्ववत् सर्वत्र व्यवहारोऽस्तित्वमिति। क्रान्त्वा शब्दात् पूर्वार्धं स्थिता शब्दादुत्तरार्धमित्यर्थः। √'*क्रम्+* √'*स्था' > क्रान्त्वा+ स्था> क्रास्था> काष्ठा*'। निघ० १.६.५

४. वैय्याकरणपक्षे तु √'*काशृ' दीप्तौ*'। काशन्ते दीप्यन्ते काष्ठाः। √'*काश्*'+ *क्थन्> काष्ठा*'। निघ० १.६.५

५. हनिकुषिनीरमिकाशिभ्यः क्थन्। √'*काश्*'+ *क्थन्> काष्ठा*'। उणा० २.२

कार्ष्मर्य

१. प्रजापतेर्विस्रस्तस्याग्निस्तेज आदाय दक्षिणाकर्षत् सोऽत्रोदरमद्यत्कृष्ट्वोदरमत् तस्मात् कार्ष्मर्यः। √'*कृष्*'+ √'*रम् > कार्ष+ मर> काष्मर्य*'। शत०ब्रा० ७.४.१.३९

२. यत्र वै देवा अग्रे पशुमालेभिरे तदुदीचः कृष्यमाणस्यावाङ्मेधः पपात स एष वनस्पतिरजायत, तद्यत्कृष्यमाणस्यावाङपतत् तस्मात् कार्ष्मर्यः। 'कृष्'+ √'पत्' > काष्मर्य'। शत०ब्रा० ३.८.२.१७

कास्मेहिति

१. कास्मेहितिः, कातेऽस्मास्वर्थहितिः। 'का+ अस्मासु+ ते+ हितिः> कास्मेहितिः'। निरु० ११.२५

किंशुक

१. किंशुकम्, काशनम्। √'काश्'। निरु० १२.८

२. किंशुकं क्रंशतेः प्रकाशयतिकर्मणः। √'क्रश्'> किंश> किंशुक'। निरु० १२.८

३. किञ्चित् शुकः शुकावयवविशेष इव। 'किम्+ शुक> किंशुक'। सं०शब्दा०कौ० पृ० ३३०

कि

१. किः कर्ता। √'कृ'। निरु० ६.३५

किकिरा

१. आ रिख **किकिरा कृणु**। √'कृ'। ऋ० ६.५३.७

२. हृदयमा रिख **किकिरा कृणु**। √'कृ'। ऋ० ६.५३.८

कितव

१. कितवः किं तवास्तीति शब्दानुकृतिः। 'किम्+ तव> कितव'। निरु० ५.२२

२. कृतवान् वा। आशीर्नामकः। √'कृ'+ क्तवतु> कृतवत्> कितव'। निरु० ५.२२

किमीदिन्

१. किमीदिने किमिदानीमिति चरते। 'किम्+ इदानीम्> किमीदिन्'। निरु० ६.११

२. किमिदं किमिदमिति वा। 'किमिदम्+ किमिदम्> किमीदिन्'। निरु० ६.११

कियेधा

१. कियेधाः, कियद्धा इति वा। 'कियत्+ √'धा'। निरु० ६.२०

२. क्रममाणधा इति वा। √'क्रम्'+ √'धा'। निरु० ६.२०

किरणा

१. किरणाः (रश्मयः)। √'कॄ' विक्षेपे'। किरन्ति तापमेकत्रौष्ण्येन, इतरत्र बन्धनेन। √'कॄ'+ क्यु> किरण'। निघ० १.५.२

२. कीर्य्यन्ते वा दिङ्मुखेषु, अश्वबालेनाश्वग्रीवादिषु। √'कॄ'+ क्यु> किरण'। निघ० १.५.२

३. यद्वा, कृण्वन्ति हिंसन्ति तमः, हिंस्यन्त एभिरश्वकिरणाः। √'कॄ'+ क्यु> किरण'। निघ० १.५.२

४. कॄपॄवृजिमन्दिनिधाञः क्युः। √'कॄ'+ क्यु> किरण'। उणा० २.८२

किरिक

१. नमो वः किरिकेभ्य इति। एते हीदꣳ सर्वं कुर्वन्ति। √'कृ'। शत०ब्रा० ९.१.१.२३

किरु

१. किरु, कर्ता। √'कृ'। निरु० ६.३५

किल्विष

१. किल्विषं किल्भिदम्। सुकृतकर्मणो भयम्। √'कृ'> किल, किल+ √'भी'> किल्भिद> किल्विष'। निरु० ११.२४

२. कीर्तिमस्य भिनत्तीति वा। 'कीर्ति+ √'भिद्'> किर्भिद> किल्विष'। निरु० ११.२४

३. किलेर्बुक् च। √'किल्'+ टिषच्+ बुगागमः> किल्विष'। उणा० १.५०

कीकट

१. कीकटा नाम देशोऽनार्यनिवासः। कीकटाः किंकृताः। 'किम्+ कृत> कीकट'। निरु० ६.३२

२. किं क्रियाभिरिति प्रेप्सा वा। 'किम्+ क्रिया> किंक्रिय> कीकट'। निरु० ६.३२

कीरि

१. **कीरयो** जनास उरुक्षितिं सुजनिमा **चकार**। √'कृ'। ऋ० ७.१००.४

२. सत्यामाशिषं **कृणुता** वयोधैः **कीरिम्**। √'कृ'। अथर्व० २०.९१.११

३. कीरिः (स्तोता)। √'कै' शब्दे'। स्तोत्रलक्षणं शब्दमारचयति। √'कै'+ इन्> कीरि'। निघ० ३.१६.६

कीलालम्

१. कीलालम् (अन्नम्)। √'कील' बन्धने' इति व्युत्पत्तौ सिनवदर्थः। √'कील' खण्डने' इति तु सुच्छेदमित्यर्थः। √'कील'। निघ० २.७.२७

२. अपि वा कीला जाठराग्नेर्ज्वाला, तां लाति। *'कीला+* √*'ला'*। निघ० २.७.२७

कीवत्

१. कीवतः कियतः। *'कियत्> कीवत्'*। निरु० ६.३

कीस्तासः

१. कीस्तासः (मेधाविनः)। कीर्त्तयतेः। कीर्तयन्ति प्रशस्तानर्थान्। √*'कृत' संशब्दने' + अच्'*। निघ० ३.१५.२०

कुचर

१. कुचर चरतिकर्म कुत्सितम्। *'कु+* √*'चर्' > कुचर'*। निरु० १.२०

२. अथ चेद् देवताभिधानम्, क्वायं न चरतीति। *'क्व+* √*'चर्'> कुचर'*। निरु० १.२०

कुट

१. कुटस्य कृतस्य कर्मणः। *'कृत> कुट'*। निरु० ५.२४

कुणारु

१. कुणारुं परिक्वणनम्। √*'क्वण्'+ आरु> कुणारु'*। निरु० ६.१

कुत्स

१. कुत्स इत्येतत् कृन्ततेः। ऋषिः कुत्सो भवति। √*'कृत्'+ स> कुत्स'*। निरु० ३.११

२. कर्ता स्तोमानामित्यौपमन्यवः। √*'कृ'+ स> कुस> कुत्स'*। निरु० ३.११

३. कुत्सः (वज्रः)। कृन्ततेः। कृन्तति शत्रून्। √*'कृत्'+ स> कुत्स'*। निघ० २.२०.११

४. यद्वा, √*'कुत्स' क्षेपणे'*। कुत्सयत्यनेन शत्रून्। √*'कुत्स' + घञ्'*। निघ० २.२०.११

कुन्ताप

१. कुयं ह वै नाम कुत्सितं भवति, तद्यत्तपति तस्मात् कुन्तापाः, तत्कुन्तापानां कुन्तापत्वम्। *'कुय+* √*'तप्'> कुयताप> कुन्ताप'*। गो०ब्रा० २.६.१२

कुब्ज

१. कुब्जः कुजतेर्वा। √*'कुज्'> कुब्ज'*। निरु० ७.१२

२. उब्जतेर्वा। √*'उब्ज्'> कुब्ज'*। निरु० ७.१२

३. ककुप् च कुब्जश्च कुजतेर्वा। √*'कुज्'*। दै०ब्रा० ३.६

४. उब्जतेर्वा। √*'उब्ज्'*। दै०ब्रा० ३.६

कुरु

१. कुरु कृन्ततेः। √*'कृत्'> कुरु'*। निरु० ६.२२

२. कुरवः (ऋत्विजः)। √*'कृ' विक्षेपणे'*। विक्षिपत्यहानि कर्माणि। √*'कृ'+ कु> कुरु'*। निघ० ३.१८.२

३. यद्वा, करोतेः। कुर्वन्ति कर्माणि। √*'कृ'+ कु> कुरु'*। निघ० ३.१८.२

४. कृग्रोरुच्च। √*'कृ'+ उ+ (ऋकारस्थाने उकारः) > कुरु'*। उणा० १.२४

कुरुङ्ग

१. कुरुङ्गो राजा बभूव, कुरुगमनाद्वा। *'कुरु+* √*'गम्'> कुरुङ्ग'*। निरु० ६.२२

२. कुलगमनाद्वा। *'कुल+* √*'गम्' > कुलंग> कुरंग> कुरुङ्ग'*। निरु० ६.२२

कुल

१. कुलं कुष्णातेः, विकुषितं भवति। √*'कुष' वृद्धौ> कुल'*। निरु० ६.२२

कुलिश

१. कुलिश इति वज्रनाम। कूलशातनो भवति। *'कुल+* √*'शद्'+ णिच्> कुलशातय> कुलिश'*। निरु० ६.१७

२. कुलिशः। कुलशब्द उपपदे श्यतेः। कुलपर्वतान् श्यति पक्षच्छेदेन तनूकरोति— इति स्कन्दस्वामी। *'कुल+* √*'शो'> कुलिश'*। निघ० २.२०.१२

३. यद्वा, कुलशब्दोपपदात् √*'शद्लृ' शातने'*। मेघस्यान्तं पर्वतस्य वा समुच्छ्रिताः प्रदेशाः कुलानीव तेषां शातनात्। *'कुल+* √*'शद्'+ णिच्> उ> कुलिश'*। निघ० २.२०.१२

कुल्माष

१. कुल्माषाः, कुलेषु सीदन्ति। *'कुल+* √*'सद्'> कुल्मसद > कुल्माष'*। निरु० १.४

कुल्या

१. कुल्याः (नद्यः)। √*'कुल' संस्त्याने'*। कोलन्ति संस्त्यायन्त्यस्मिन् शिलादय इति कुलं पर्वतः। कुले प्रधानभूते पर्वते भवाः कुल्याः। √*'कुल्'*। निघ० १.१३.२२

२. कुलिशनिर्वचने 'कूलशातनः' (निरु० ६.१७) मेघस्य पर्वतस्य वा समुच्छ्रिताः प्रदेशाः कुलाः। मेघस्य पर्वतस्य वा समुच्छ्रिते प्रदेशे कुले भवन्तीति कुल्याः। *'कुल (मेघो या पर्वतशिखरः)+ यत्> कुल्या'*। निघ० १.१३.२२

३. यद्वा, कुल्याऽल्पा कृत्रिमा सरित्। कुले साधु। *'कुल+ यत्> कुल्या'*। निघ० १.१३.२२

कुशय

१. कुशयः (कूपः)। कौ शेते। *'कु+ √'शीं'> कुशय'*। निघ० ३.२३.१३

कुशिक

१. कुशिको राजा बभूव, क्रोशतेः शब्दकर्मणः। √*'क्रुश्> क्रुशिक> कुशिक'*। निरु० २.२५

२. क्रंशतेर्वा स्यात् प्रकाशयतिकर्मणः। √*'क्रंश्> क्रंशिक> कुशिक'*। निरु० २.२५

३. साधु विक्रोशयिताऽर्थानामिति वा। √*'क्रश्> क्रुशिक> कुशिक'*। निरु० २.२५

कुहू

१. कुहूर्गूहतेः। √*'गूह'> कूह> कुहू'*। निरु० ११.३२

२. क्वाभूदिति वा। *'क्व√'भू'> कुहू'*। निरु० ११.३२

३. क्व सती हूयत इति वा। *'क्व+ √'ह्वे'> कुहू'*। निरु० ११.३२

४. क्वाहुतं हविर्जुहोतीति वा। *'क्व+ √'हु'> कुहू'*। निरु० ११.३२

कूप

१. कूपः कस्मात्? कुपानं भवति। *'कु+ √'पा'> कुप> कूप'*। निरु० ३.१९

२. कुप्यतेर्वा। √*'कुप' > कूप'*। निरु० ३.१९

३. कुशब्दोपपदात् पिबतेः। कुत्सितपानमत्र, कृच्छ्र-साध्यत्वाच्छौचासम्भवाद्वा। *'कु+ √'पा' पाते'+ ड> कुप> कूप'*। निघ० ३.२३.१

४. यद्वा, √*'कुप' क्रोधे'*। कुप्यन्त्यस्मै मनुष्याः दुरादान-जलत्वात्। √*'कुप'+ क > कूप'*। निघ० ३.२३.१

५. यद्वा, कवतेर्गतिकर्मणः। गम्यते जलार्थिभिः। √*'कुप'+ प > कूप'*। निघ० ३.२३.१

६. कुयुभ्यां च। √*'कु' शब्दे+ प > कूप'*। उणा० ३.२७

कूर्म

१. प्राणो वै कूर्मः प्राणो हीमाः सर्वाः प्रजाः करोति। √*'कृ'+ मन् > कूर्म'*। शत०ब्रा० ७.५.१.७

२. स यत्कूर्मो नाम। एतद्वै रूपं कृत्वा प्रजापतिः प्रजा असृजत यदसृजताकरोत्तद्यदकरोत् तस्मात् कूर्मः, कश्यपो वै कूर्मस्तस्मादाहुः सर्वाः प्रजाः काश्यप्य इति। √*'कृ'+ मन्> कूर्म'*। शत०ब्रा० ७.५.१.७

कूल

१. कूलं रुजतेर्विपरीतात्। √*'रुज्'> जुर्> कूल'*। निरु० ६.१

कृकवाकुः

१. कृकवाको पूर्वं शब्दानुकरणम्, वचेरुत्तरम्। *'कृक+ √'वच्'> कृकवाक> कृकवाकु'*। निरु० १२.१३

कृत्ति

१. कृत्तिः कृन्ततेर्यशो वाऽन्नं वा। इयमपीतरा कृत्तिरेतस्मादेव सूत्रमयी, उपमार्थे वा। √*'कृत्'> कृत्ति'*। निरु० ५.२२

२. कृत्तिः (गृहम्)। √*'कृती' छेदने'*। √*'कृत्'+ क्तिन्> कृत्ति'*। निघ० ३.४.१३

कृत्य, कृत्या

१. निचखानोत्कृत्याङ्किरामि। √*'कृ'*। यजु० ५.२३

२. आमे मांसे **कृत्यां** यां **चक्रुस्तया कृत्याकृतो** जहि। √*'कृ'*। अथर्व० ४.१७.४

३. प्रति स्म **चक्रुषे कृत्यां** प्रियां प्रियावते हर। √*'कृ'*। अथर्व० ४.१८.४

४. **कृत्यां** यां **चक्रुः** पुनः प्रति हरामि ताम्। √*'कृ'*। अथर्व० ५.३१.१—८

५. ग्रीवास्ते **कृत्ये** पादौ चापि **कर्त्स्यामि**। √*'कृ'*। अथर्व० १०.१.२१

कृत्वी

१. कृत्वी (कर्म)। √*'करोतेः'*। क्रियते कृतु। √*'कृ' तु> कृतु+ ई> कृत्वी'*। निघ० २.१.२०

२. स्कन्दस्वामी— कृत्वीति कर्मनाम, कर्मणि धने निमित्ते धनार्थं यत् कर्मेत्यर्थः। √*'कृ'*। निघ० २.१.२०

कृत्स:

१. कृत्स: (वज्र:)। √'कृन्तते:। कृन्तति शत्रून्। 'कृत्'+ स> कृत्स'। निघ० २.२०.११

२. यद्वा, √'कुत्स' क्षेपणे'। कुत्सयत्यनेन शत्रून्। √'कुत्स> कृत्स'। निघ० २.२०.११

३. स्नुव्रश्चिकृत्यृषिभ्य: कित्। √'कृत्'+ स> कृत्स'। उणा० ३.६६

कृदर

१. कृदरं कृतदरं भवति। √'कृ'+ क्त+ √'दृ > कृत+ दर> कृदर'। निरु० ३.२०

२. कृदर: (गृहम्)। √'कृती' छेदने'। कृत्यते छिद्यतेऽनेन क्लेश: परिछिन्नं वा सुशास्त्रमर्यादया। √'कृत्'>कृदर'। निघ० ३.४.२

३. कृतो दर आदरोऽत्र कृतदर:। पृषोदरादित्वात् कृदर:। √'कृत'+ दर> कृदर'। निघ० ३.४.२

४. कृदरादयश्च। 'कृत्स्न+ √'दृ'+ अरच् > कृद् + दर > कृदर'। उणा० ५.४१

कृधु

१. कृध्विति ह्रस्वनाम, निकृत्तं भवति। √'कृत्'। निरु० ६.३

२. कृधु (ह्रस्व:)। √'कृती' छेदने'। निकृन्तमिव हि तद्भवति ह्रस्वत्वादेव— इति स्कन्दस्वामी। √'कृत्'+ कु> कृतु> कृधु'। निरु० ३.२.६

कृन्तत्र

१. कृन्तत्रमन्तरिक्षं विकर्तनं मेघानाम्, विकर्तनेन मेघानामुदकं जायते। √'कृती' छेदने' > कृन्त्> कृन्तत्र'। निरु० २.२२

२. कृतेर्नुम् च। √'कृत्'+ कत्रन्+ नुम् (आगम:)> कृन्तत्र'। उणा० ३.१०९

कृप्

१. कृप् कृपतेर्वा। √'कृप'। निरु० ६.८

२. कल्पतेर्वा। √'क्लृप्'। निरु० ६.८

कृपीटम्

१. कृपीटम् (उदकम्)। √'कृपू' सामर्थ्ये'। कल्पते तापनिवारणाय। √'कृप्'+ कीटन्> कृपीट'। निघ० १.१२.९४

२. कृतॄकृपिभ्य: कीटन्। √'कृप्'+ कीटन्> कृपीट'। उणा० ४.१८६

कृशन

१. कृशनम् (हिरण्यम्)। √'कृश' तनूकरणे'। कृश्यति तनूकरोति यम्। √'कृश्'+ क्यु> कृशन'। निघ० १.२.७

२. अत्र माधवस्तु कृशिर्दीप्त्यर्थ:। कृश्यति स्वप्रभया दीप्यते। √'कृश्'+ क्यु> कृशन'। निघ० १.२.७

३. अपि वा कर्शयति संसृष्टम्। √'कृश्'+ क्यु> कृशन'। निघ० १.२.७

४. कृशमेव वा भवति संस्थानतो रजतात्। √'कृश्'+ क्यु> कृशन'। निघ० १.२.७

५. कृशनम् (रूपम्)। व्याख्यातं हिरण्यनामसु। दीप्यते हि तत्, दीप्यतेऽनेन वा तद्वान्। √'कृश्'+ क्यु> कृशन'। निघ० ३.७.१०

कृषि

१. अक्षैर्मा दीव्य: **कृषिमित्कृषस्व**। √'कृष्'। ऋ० १०.३४.१३

कृष्टि

१. कृष्टय इति मनुष्यनाम, कर्मवन्तो भवन्ति। √'कृ'+ क्तिन्+ षुग् (आगमश्च)> कृष्टि'। निरु० १०.२२

२. विकृष्टदेहा वा। √'कृ'+ क्तिन्> कृष्टि'। निरु० १०.२२

३. कृष्टय: (मनुष्या:)। √'कृष' विलेखने'। कर्षेण कर्मविशेषेण चात्र सामान्यत: कर्ममात्रं लक्ष्यते, कृष्टं कर्म तदस्यास्तीति। √'कृष्'+ क्त> कृष्ट, कृष्ट+ इ (मत्वर्थीय:)> कृष्टि'। निघ० २.३.७

४. यद्वा, शुद्धोऽपि कृषिर्विपूर्वस्यार्थे वर्तते। विविधं कृष्टो विक्षिप्तपरिकण्डूयनाद्यभिलषितक्रियानुष्ठानसमर्थ:। √'कृष'+ क्त> कृष्ट', कृष्ट+ इ (मत्वर्थीय:)> कृष्टि'। निघ० २.३.७

कृष्ण

१. कृष्णं कृष्यतेर्निकृष्टो वर्ण:। √'कृष' विलेखने'। निरु० २.२०

२. कृषेर्वर्णे। √'कृषं'+ नक्> कृष्ण'। उणा० ३.४

केत

१. केत: (प्रज्ञा)। √'चायृ' पूजानिशामनयो:'। पूज्यते। √'चाय्+ त> की+ त> केत'। निघ० ३.९.१

केतपू

१. दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं नः पुनातु। 'केत+√'पूञ्'। यजु० ९.१, ११.७, ३०.१

२. केतपूः केतं नः पुनातु। 'केत+√'पूञ्'। छा०ब्रा० १.१.१

केतु

१. केतुमक्रत पूर्वे अर्धे रजसो भानुमञ्जते। √'कृ'। ऋ० १.९२.१

२. चित्रं केतुं कृणुते चेकिताना। √'कृ' *या* √'कित्'। ऋ० १.११३.१५

३. गवां जनित्र्यकृत प्रकेतुम्। √'कृ'। ऋ० १.१२४.५

४. ऊर्ध्वं कृण्वन्त्यध्वरस्य केतुम्। √'कृ'। ऋ० ३.८.८

५. नि केतुना जनानां चिकेथे पूतदक्षसा। √'कित्'। ऋ० ५.६६.४

६. अचेति केतुरुषसः पुरस्तात्। √'चित्'। ऋ० ७.६७.२

७. केतुं कृण्वन् दिवस्परि। √'कृ'। ऋ० ९.६४.८, सा०उ० ९५९

८. सरस्वती प्र चेतयति केतुना। √'चित्'। यजु० २०.८६

९. केतुं कृण्वन्नकेतवे। √'कृ'। यजु० २९.३७, अथर्व० २०.२६.६, ४७.१२.६९.११, सा०उ० १४७०, ऋ० १.६.३

१०. चायः की। √'चाय्'+तु>की+तु>केतु'। उणा० १.७४

केपि

१. केपयः कपूयाः भवन्ति, कपूयमिति पुनाति कर्म कुत्सितं यच्च तद् दुष्पूयं भवति। '*क(कुत्सित)*+ √'पू'+ *क्यप्> कपूयाः> केपयः> केपि*'। निरु० ५.२४

केवट

१. केवटः (कूपः)। √'केवृ सेचने'। सेव्यते जलार्थिभिः। √'केव्'+ *अटन्* > केवट'। निघ० ३.२३.१४

केश

१. केशाः काशनाद्वा। √'काश्'। निरु० १२.२५

२. प्रकाशनाद्वा। 'प्र+√'काश्'। निरु० १२.२५

३. क्लिशेरन् लो लोपश्च। √'*क्लिश्*'+ *अन्> केश*'। उणा० ५.३३

केशिन्

१. केशा रश्मयः। तैस्तद्वान् भवति। 'केश+इनि (*मत्वर्थीयः*')। निरु० १२.२५

कोकुवा

१. जिह्वा कोकुवा कोकूयमाना वर्णान् नुदतीति वा। √'कु' *या* √'कू' (√'कु'+√'कु'+ *वन्> कोकुवा*')। निरु० ५.२६

२. कोकूयतेर्वा स्याच्छब्दकर्मणः। √'कु'+√'कु'+ *वन्> कोकुवा*'। निरु० ५.२६

कोश, कोष

१. कोशः कुष्णातेः। विकुषितो भवति। अयमपीतरः कोश एतस्मादेव। √'कुष' *निष्कर्षे*'+ *घञ्> कोष या कोश*'। निरु० ५.२६

२. कोशः (मेघः)। √'क्रोशतेः' शब्दकर्मणः। मेघो हि गर्जितलक्षणं शब्दं करोति। √'*क्रुश*'+ *अच्> क्रोश> कोश*'। निघ० १.१०.३०

३. कुप्यतेर्वा वृद्ध्यर्थात्। इषुमात्रमवर्द्धतेत्युक्तम्। √'*कुप*'+ *अच्> कोप> कोश*'। निघ० १.१०.३०

४. क्रोशतिश्छादनार्थ इति माधवः। पूर्ववदाच्छादयत्यसौ कृत्स्नं नभः। जलस्य कोशस्थानीयत्वात् कोश इत्यन्ये। √'*क्रुश*'+ *अच्> क्रोश> कोश*'। निघ० १.१०.३०

५. यद्वा, √'कु' शब्दे' — इति श्रीभोजदेवः। कौति गर्जितशब्दं करोतीति कोशः। √'*कु+ श> कोश*'। निघ० १.१०.३०

कौत्स

१. तदेतत्, सेन्द्रं साम। यदु कुत्सोऽ पश्यत् तस्मात् कौत्समित्याख्यायते। '*कुत्स> कौत्स*'। जै०ब्रा० १.२२८

कौरयाण

१. कौरयाणः कृतयानः। '*कृत+ यान> कौरयाण*'। निरु० ५.१५

कौशिक

१. चत्वारो वै पृश्नेः स्तना आसः स्ततस्त्रिभिर्देवेभ्यो-ऽदुहत्, कुशीभिरेकोऽनुनद्ध आसीत्, तःवा इन्द्र एवापश्यत्, तेनेन्द्रायैवादुहत्, तद्वा अस्य (इन्द्रस्य) कौशिकत्वम्। '*कुशिक> कौशिक*'। मै०सं० ४.५.७

२. कुशिको राजा बभूव, क्रोशतेः शब्दकर्मणः। √'क्रुश'+ > क्रुशिक> कुशिक> कौशिक'। निरु० २.२५

३. क्रंशतेर्वा स्यात् प्रकाशयतिकर्मणः। √'क्रुश'+ > क्रुशिक> कुशिक> कौशिक'। निरु० २.२५

४. साधु विक्रोशयिताऽर्थानामिति वा। √'क्रुश'+ > क्रुशिक> कुशिक> कौशिक'। निरु० २.२५

क्रतु

१. स नो विश्वाहा सुक्रतुरादित्यः सुपथा **करत्**। √'कृ'। ऋ० १.२५.१२

२. ज्योतींषि **कृण्वन्नवृकाणि** यज्यवेऽत्र सुक्रतुः। √'कृ'। ऋ० १.५५.६

३. संवत्सरो वाव क्रतुरेकत्रिंशस्तस्य चतुर्विंशतिरर्धमासाः षड् ऋतवः संवत्सर एव क्रतुरेकत्रिंशस्तद्यत्तमाह क्रतुरिति संवत्सरो हि सर्वाणि भूतानि करोति। √'कृ'। शत०ब्रा० ८.४.१.२१

४. स यदेव मनसा कामयतऽइदं मे स्यादिदं कुर्वीयेति स एव क्रतुः। √'कृ'। शत०ब्रा० ४.१.४.१

५. क्रतुः (कर्म)। √'करोतेः'। क्रियते हि द्विजातिभिः। √'कृ'+ कतु> क्रतु'। निघ० ३.९.५

६. क्रतुः (प्रज्ञा)। व्याख्यातं कर्मनामसु। क्रियतेऽनया धर्मादिविचारः। √'कृ'+ कतु> क्रतु'। निघ० ३.९.५

७. कृञः कतुः। √'कृ'+ कतु> क्रतु'। उणा० १.७६

क्रव्य

१. क्रव्यं विकृताज्जायत इति नैरुक्ताः। √'कृत्'। निरु० ६.११

क्रव्याद

१. क्रव्यादे क्रव्यमदते। 'क्रव्य+ √'अद्' > क्रव्याद'। निरु० ६.११

क्रिमि

१. क्रिमिः क्रव्ये मेद्यति। 'क्रव्य+ √'मिद्'> क्रव्यमि> क्रिमि'। निरु० ६.१२

२. क्रमतेर्वा स्यात्सरणकर्मणः। √'क्रम'+ इन्> क्रमिन्> क्रिमि'। निरु० ६.१२

३. क्रामतेर्वा। √'क्राम्'+ इन्> क्रामिन्> क्रिमिन्> क्रिमि'। निरु० ६.१२

४. क्रमितमिशितिस्तम्भामत इच्च। √'क्रम्'+ इन्+ इद् (आदेशः) > क्रिमि। उणा० ४.१२३

क्रिवि

१. क्रिविः (कूपः)। √'करोतेः'। क्रियते उत्पाद्यते पुरुषैः। √'कृ'+ इन्> क्रिवि'। निघ० ३.२३.८

२. कृणोतेर्वा। हिंस्यन्त्यत्र चौराः पथिकादीनर्थवतः। √'कृञ् हिंसायाम्'+ इन्> क्रिवि'। निघ० ३.२३.८

३. कृविघृष्विछविस्थविकिकीदिवि। √'कृ'+ क्विन्> कृवि'। उणा० ४.५७

क्रिविर्दती

१. क्रिविर्दती विकर्त्तनदन्ती। 'क्वि+ √'कृत्'+ दन्त> विकर्त्तनदन्त> क्रिविदन्त> क्रिविर्दती'। निरु० ६.३०

क्रीडनी

१. यद् एव प्रजा वृत्रात् पाप्मनो मुमुचाना आक्रीडन्त तस्मात् क्रीडनी। √ 'क्रीड्'। जै०ब्रा० २.२३२

क्रीडा

१. उप **क्रीळन्ति क्रीळा** विदथेषु घृष्वयः। √'क्रीळ्'। ऋ० १.१६६.२

क्रीडिन्

१. ते (मरुतः) एनम् (इन्द्रम्) अध्यक्रीडन्। तत् क्रीडिनां क्रीडित्वम्। √'क्रीड्'। तै०सं० १.६.७.५

२. तं (वृत्रं हतम्) मरुतः क्रीडयोऽध्यक्रीडंः स्तस्मात् क्रीडयः। √'क्रीड्'। मै०सं० १.१०.१६

३. देवा वै वृत्रंः हतं न व्यजानंः स्तं मरुतोऽध्यक्रीडंः स्तस्मात् क्रीडयः। √'क्रीड्'। काठ० ३६.१०

क्रूर

१. क्रूरमित्यप्यस्य भवति (कृन्ततेः)। √'कृत्'। निरु० ६.२२

२. कृतेश्छः क्रू च। √'कृत्'+ रक् > क्रू+ र> क्रूर'। उणा० २.२१

क्रौञ्च

१. यद् उ क्रुङ् आङ्गिरसोऽपश्यत् तस्मात् क्रौञ्चमित्याख्यायते। 'क्रुङ्= क्रौञ्च'। जै०ब्रा० ३.३२

२. क्रौञ्चं भवति। क्रुङ्ङेष्यमहरविन्ददेष्यमिव वै षष्ठमहरवैतेन विन्दति। 'क्रुङ्= क्रौञ्च'। तां०ब्रा० १३.९.१०—११

क्षण

१. क्षण: क्षणोतेः, प्रक्ष्णुतः कालः। √'*क्षण्*'। निघ० २.२५

क्षत्र

१. यूनः **सुक्षत्राक्षयतो** दिवो नॄन्। √'*क्षि*'। ऋ० ६.५१.४

२. प्राणो हि वै क्षत्रं त्रायते हैतं प्राणः क्षणितोः। √'*क्षणु हिंसायाम्*'+√'*त्रैङ् पालने*'>*क्षण्+ त्रा> क्षत्र*'। शत०ब्रा० १४.८.१४.४

३. क्षत्रम् (उदकम्)। √'क्षद स्थैर्ये'। माधवपक्षे क्षदिः शकलीकरणार्थो हिंसार्थश्च √'क्षद गतिहिंसनयोः' इति सुबोधिनीकारः वर्षाव्यतिरिक्तेषु ऋतुषु सूर्यरश्मिभि-राहूता ह्यापो मेघेषु घनीभूताः पाषाणवत् स्थिरा भवन्ति, जलाशयं प्राप्य वा। अश्यते भुज्यते वा। अतिपीतं श्लेष्मादि जनयित्वा प्राणिनो हिनस्ति वा। गच्छति निम्नं गम्यते वा तदर्थिभिः। √'*क्षद्*'+ *त्र> क्षत्र*'। निघ० १.१२.४५

४. यद्वा, क्षत्रशब्दो बलनाम। बलवद्धि जलम्। '*क्षत्र+ अच् (मत्वर्थीयः*')। निघ० १.१२.४५

५. क्षत्रम् (धनम्)। व्याख्यातमुदकनामसु। पूर्वजन्म-सुकृतवशेन तद्वति स्थिरं भवति, उपभोगसाधनत्वात्, हिनस्ति दारिद्र्यम्। √'*क्षद्*'+ *त्र> क्षत्र*'। निघ० २.१०.९

६. क्षतशब्दात् त्रायतेश्च। क्षतात् पापात् त्रायते। धनैरेव पापं नरा निस्तरन्तीत्युच्यते। '*क्षत*'+√'*त्रा > क्षत्र*'। निघ० २.१०.९

७. गुधृवीपचिवचियमिसदिक्षदिभ्यस्त्रः। √'*क्षद्*'+ *त्र क्षत्र*'। उणा० ४.१६८

क्षद्म

१. क्षद्मः (उदकम्)। √'क्षद स्थैर्य्ये'। स्वकार्य्ये स्थिरं भवति जलाशयं व्याप्य स्थिरं भवतीति वा। √'*क्षद्*'+ *मनिन्> क्षद्म*'। निघ० १.१२.३

२. क्षद्म (अन्नम्)। व्याख्यातमुदकनामसु। क्षुन्निवर्तनादिके स्वकार्य्ये स्थिरं भवति स्थिरो भवत्यनेन भोक्तेति वा। √'*क्षद्*'+ *मनिन्> क्षद्म*'। निघ० २.७.१९

३. माधवपक्षेक्षदिरशनार्थः। अश्यते बुभुक्षितैः। '*क्षद्*'+ *मनिन्> क्षद्म*'। निघ० २.७.१९

क्षप, क्षपा

१. क्षपः (उदकम्) √'क्षिप प्रेरणे'। क्षिपयति प्रेरयति नाशयति पिपासम्। √'*क्षिप्*'+ *असुन्*'। निघ० १.१२.३०

२. क्षपा (रात्रिः)। क्षप्यते सूर्य्यचारेण क्षपा— इति क्षीरस्वामी। √'*क्षप्*'। निघ० १.७.२

३. क्षपयन्ति क्षान्त्यां प्रेरणे क्षपयेत्—इति दैवम्। √'*क्षप्*'। निघ० १.७.२

४. क्षपः क्षपयतेर्निशा— इति च माधवः। √'*क्षप्*'। निघ० १.७.२

क्षमा

१. क्षमा (पृथिवी)। √'क्षि क्षये'। क्षायन्ति अवयवं गच्छन्त्यस्यां पदार्था इति वा। √'*क्षि*'+ *मनिन्> क्षिमा> क्षमा*'। निघ० १.१.६

२. यद्वा, √'क्षि निवासगत्योः'। क्षियन्ति निवसन्त्यस्यां प्राणिनः। √'*क्षि*'+ *मनिन्> क्षिमा> क्षमा*'। निघ० १.१.६

३. यद्वा, √'क्षि हिंसायाम्'। हिंस्यन्तेऽस्यां पापकृत इति वा। √'*क्षि*'+ *मनिन्> क्षिमा> क्षमा*'। निघ० १.१.६

४. यद्वा, √'*क्षम्*'+ *डाप्> क्षमा*'। निघ० १.१.६

क्षा

१. क्षा क्षियतेर्निवासकर्मणः, क्षियन्ति निवसन्त्यस्यां प्राणिनः। √'*क्षि*'+ *ड> क्षा*'। निरु० २.६

२. यद्वा, √'क्षि हिंसायाम्'। हिंस्यन्तेऽस्यां पापकृत इति वा। √'*क्षि+ ड> क्षा*'। निघ० १.१.५

३. यद्वा, √'क्षमूष् सहने'। क्षमते वा प्राणिजातरूपम्। √'*क्षम्*'>*क्षा*'। निघ० १.१.५

४. यद्वा, √'क्ष्मायी विधूनने'। भारं विधूनयति वा प्राणिनः स्वकीयकाले। √'*क्ष्मा> क्षा*'। निघ० १.१.५

क्षिति, क्षिती

१. क्षेति **क्षितीः** सुभगो नाम पुष्यन्। √'*क्षि*'। ऋ० ५.३७.४

२. नर उत **क्षियन्ति सुक्षितिम्**। √'*क्षि*'। ऋ० ७.७४.६

३. ध्रुवासु त्वासु **क्षितिषु क्षियन्तः**। √'*क्षि*'। ऋ० ७.८८.७

४. क्षितयः (मनुष्याः)। √'क्षि निवासगत्योः'। क्षियन्ति निवसन्ति भूमौ गच्छन्ति वा तस्याम्। √'*क्षि*'+ *क्तिच्> क्षिति*'। निघ० २.३.६.

५. क्षितिः (पृथिवी)। √'क्षि' निवासगत्योः'। क्षियन्ति निवसन्त्यस्यां प्राणिनः। √'क्षि'+ ति> क्षिति' या √'क्षि'+ क्तिन्> क्षिति'। निघ० १.१.८

६. यद्वा, √'क्षि' क्षये'। क्षायन्ति अवयवं गच्छन्त्यस्यां पदार्था इति वा। √'क्षि'+ ति' या क्तिन्'। निघ० १.१.८

७. यद्वा, √'क्षि' हिंसायाम्। हिंस्यन्ते ऽस्यां पापकृत इति वा। √'क्षि'+ ति' या 'क्तिन्'। निघ० १.१.८

क्षिप

१. क्षिपः (अङ्गुलयः)। √'क्षिप' प्रेरणे'। क्षिप्यन्ते प्रेर्य्यन्ते पुरुषेण कर्मसु, निक्षिपन्त्यास्वङ्गुलीयकादीन् इति वा। √'क्षिप्'। निघ० २.५.४

क्षिपणि

१. क्षिपणिम्, क्षेपणम्। √'क्षिप' प्रेरणे'। निरु० २.२८

२. क्षिपेः किच्च। √'क्षिप्'+ अनि> क्षिपणि'। उणा० २.१०९

क्षिपस्ती

१. क्षिपस्ती (बाहू)। √'क्षिप' प्रेरणे'। प्रेर्य्यते कर्मसु पुरुषैः। √'क्षिप्+ ति+ असुग्(आगमः) > क्षिपस्ति'। निघ० २.४.१०

२. क्षिपतः पदार्थान् इतश्चेतश्च कर्मसु। √'क्षिप' प्रेरणे'। निघ० २.४.१०

क्षिप्र

१. क्षिप्रं कस्मात्, संक्षिप्तो विकर्षः। √'क्षिप्'। निरु० ३.९

२. स्फायितञ्चिवञ्चिशकिक्षिपि.......सिधिशुभिभ्यो रक्। √'क्षिप'+ रक्'। उणा० २.१३

क्षीर

१. यदत्यक्षरत् तत् क्षीरस्य क्षीरत्वम्। √'क्षर्'। जै०ब्रा० २.२२८

२. क्षीरं क्षरतेः। √'क्षर्'। निरु० २.५

३. घसर्वेरो नामकरणः उशीरमिति यथा। √'घस्'+ ईरन्> क्षीर्'। निरु० २.५

४. क्षीरम् (उदकम्)। √'घस्लृ' अदने'। अदन्ति तदिति क्षीरम्। √'घस्'+ ईरन्'। निघ० १.१२.१४

५. घसेः किच्च। √'घस्'+ ईरन्> क्षीर'। उणा० ४.३५

क्षु

१. क्षु (अन्नम्)। √'क्षु' शब्दे'। क्षूयते शब्द्यते स्तोतृभिः स्तूयते देवतात्वादत्रं सूक्तादिभिः गुणवत्तया वा लोकैः। √'क्षु'+ कु+ डिद्भाव> क्षु'। निघ० २.७.१०

२. यद्वा, √'क्षि' निवासगत्योः'। निवसत्यनेन वा। √'क्षि'+ कु+ डिद्भाव > क्षु'। निघ० २.७.१०

क्षुम्प

१. क्षुम्पमहिच्छत्रकं भवति, यत् क्षुभ्यते। √'क्षुभ' सञ्चलने'+ प> क्षुम्प'। निरु० ५.१६

क्षुल्लक

१. क्षुल्लकः (ह्रस्वः)। क्षुधं लाति। 'क्षुध+ √'ला'+ क> क्षुल्लक'। निरु० ३.२.१०

क्षेत्र

१. क्षेत्रं क्षियतेर्निवासकर्मणः। √'क्षि'+ त्रन्> क्षेत्र'। निरु० १०.१४

क्षेत्रस्य पतिः

१. क्षेत्रस्य पतिः। क्षेत्रं क्षियतेर्निवासकर्मणः तस्य पाता वा पालयिता वा। √'क्षि'+ √'पा' या √'पाल्> क्षेत्रस्य पतिः'। निरु० १०.१४

क्षेम

१. क्षेति क्षेमेभिः साधुभिर्नकिर्यं घ्नन्ति हन्ति यः। √'क्षि'। ऋ० ८.८४.९

क्षोण

१. क्षोणस्य क्षयणस्य। √'क्षि'+ यु> क्षि+ अन> क्षयण> क्षोण'। निरु० ६.६

क्षोणि>क्षोणी

१. क्षोणिः (पृथ्वी)। √'टुक्षु' शब्दे'। क्षूयते शब्द्यते स्तूयते स्तोतृभिः। √'क्षु'+ नि> क्षोणि'। निघ० १.१.७

२. क्षवन्त्यस्यां भूतानीति वा। √'क्षु'+ नि> क्षोणि'। निघ० १.१.७

३. क्षोणी (द्यावापृथिव्यौ)। व्याख्यातं पृथिवीनामसु। √'क्षु'+ नि> क्षोणि'। निघ० ३.३०.५

क्षोद

१. क्षोदः (उदकम्)। √'क्षुदिर' सम्प्रेषणे'। क्षुद्यते क्षोदः। क्षुण्णं हि जलं पर्वतादिभ्यः शिलादिष्वधः पतनात्। √'क्षुद्'+ असुन्'। निघ० १.१२.२

क्ष्मा

१. क्ष्मया चरति। क्ष्मा पृथिवीं तस्यां चरति। विक्ष्मापयन्ती चरतीति वा। √'*क्ष्मायीं विधूनने*'। निरु० १०.७

२. क्ष्मा (पृथिवी)। √'क्षि क्षये'। √'क्षै क्षये'। क्षायन्ति अवयवं गच्छन्त्यस्यां पदार्था इति वा। '*क्षि*'+ *मनिन्*= *क्ष्मा*'। निघ० १.१.४

३. यद्वा, √'क्षि निवासगत्योः'। क्षियन्ति निवसन्त्यस्यां प्राणिनः। √'*क्षि*'+ *मनिन्*> *क्ष्मा*'। निघ० १.१.४

४. यद्वा, √'क्षि हिंसायाम्'। हिंस्यन्ते ऽस्यां पापकृत इति वा। √'*क्षि*'+ *मनिन्*> *क्ष्मा*'। निघ० १.१.४

५. यद्वा, √'क्षमूष् सहने'। क्षमते वा प्राणिजातरूपम्। √'*क्षम्*'+ डाप्> *क्ष्मा*'। निघ० १.१.४

६. यद्वा, √'क्ष्मायीं विधूनने'। भारं विधूनयति वा प्राणिनः स्वकीयकाले। √'*क्ष्मायीं विधूनने*'+ डाप> *क्ष्मा*'। निघ० १.१.४

७. क्षमेरुपधालोपश्च। √'*क्षम्*'+ *अच्*> *क्ष्मा*'। उणा० ५.६५

ख

१. समित्तान्वृत्रहाखिदत्खे अराँ इव **खेदया**। √'*खिद्*'। ऋ० ८.७७.३

२. खं पुनः खनतेः। √'*खन्*'+ *ड*> *ख*'। निरु० ३.१३.२

खजे

१. खजे (सङ्ग्रामः)। √'खज मन्थे'। खलेवत्। √'*खज्*'+ *घ*> *खजे*'। निघ० २.१७.३९

खण्ड

१. खण्डं खण्डयतेः। √'*खडि भेदने*'। निरु० ३.१०

२. ञमन्ताद् डः। √'*खन्*'+ *ड*> *खण्ड*'। उणा० १.११४

खदिर

१. खदिरेण ह सोममाचखाद तस्मात् खदिरो यदनेनाखिदत्। √'*खद स्थैर्य्ये हिंसायां च*'। शत०ब्रा० ३.६.२.१२

२. अजिरशिशिरशिथिलस्थिरस्फिरस्थविरखदिराः। √'*खद्*' + *किरच्*'। उणा० ५३.१

खनित्र

१. अगस्त्यः **खनमानः खनित्रै** प्रजामपत्यं बलमिच्छमानः। √'*खन्*'। ऋ० १.१७९.६

खल

१. खल इति सङ्ग्रामनाम, खलतेर्वा। √'*खल संचये*'। निरु० ३.१०

२. स्खलतेर्वा। अयमपीतर खल एतस्मादेव, समास्कन्नो भवति। √'*स्खल्*'। निरु० ३.१०

३. खले (सङ्ग्रामः)। √'*खज्*'+ *घ*> *खज*> *खल*'। निघ० २.१७.३८

४. यद्वा, √'स्खल संचलने'। स्खलन्ति तत्र कातराः। √'*स्खल्*'+ *घ*> *स्खल* > *खल*'। निघ० २.१७.३८

खा

१. खाः (नद्यः)। √'खन अवदारणे'। वृत्रहननादिन्द्रेण खाताः। √'*खन्*'+ *ड*+ *टाप्*> *खा*'। निघ० १.१३.३

२. यद्वा, खनन्ति भूमिं वेगेन वहन्त्यः। √'*खन्*'+ *ड*+ *टाप्*> *खा*'। निघ० १.१३.३

३. अथवा √'खै स्थैर्य्ये हिंसायाञ्च'। खायन्ति स्थिरा भवन्ति वृत्रेण रुद्धाः, हिंस्यन्ते वा तेन खाः। √'*खै*'+ *क*+ *टाप्*> *खा*'। निघ० १.१३.३

खात

१. खातः (कूपः)। √'खनु अवदारणे'। √'*खन्*'+ *क्त*> *खात*'। निघ० ३.२३.६

खिद्र

१. खिद्रं खेदनं छेदनं भेदनम्। √'*खिद्*'। निरु० ११.३७

२. खिदिछिदिभिदिभ्यो रक्। √'*खिद्*'+ *रक्*> *खिद्र*'। उणा० २.१३

खेदयः, खेदया

१. समित्तान्वृत्रहाखिदत्खे अराँ इव **खेदया**। √'*खिद्*'। ऋ० ८.७७.३

२. खेदयः (रश्मयः)। √'खिद दैन्ये'। खिद्यते खित्ते वाऽनया लोको धर्मकाले, अश्वो बन्धनकाले। √'*खिद्*'+ *घञ्*'। निघ० १.५.१

२. यद्वा, परिहन्यन्ते सर्वतो हिंस्यन्ते अनया लोक आदित्येन, अश्वो बन्धनकाले। √'*खिद्*'+ *घञ्*'। निघ० १.५.१

३. यद्वा, खिदिः खेदने वर्त्तते तथा च खेदनं छेदनम्—इति माधवः। खेदति छिनत्ति तमः। √'*खिद्*'+ *अच्*'। निघ० १.५.१

४. यद्वा, छिद्यतेऽश्वोऽनयेति खेदा अश्वरश्मिः। √'*खिद्*'+ *अच्*'। निघ० १.५.१

गङ्गा

१. गङ्गा गमनात्। √'*गम्*'। निरु० ९.२६

२. गन् गम्यद्योः। √'*गम्*'+ *गन्*> *गङ्गा*। उणा० १.१२३

गण

१. गणो गणनात्। √'*गण्*'। निरु० १.११.३८

२. गणः (वाक्)। √'गण गणने'। गण्यते या गणः। √'*गण्*'। निघ० १.११.३८

गधित

१. आगधिता परिगधिता कशीकेव जङ्ग हे। √'*ग्रह्*'। ऋ० १.१२६.६

२. गधिता, गध्यतिर्मिश्रीभावकर्मा। √'*गध्*'। निरु० ५.१५

गध्य

१. गध्यं गृह्णातेः। √'*ग्रह्*'। निरु० ५.१५

गनीगन्ति

१. गनीगन्ति, गच्छन्ति। √'*गम्*'। निरु० ९.१८

२. दाधर्ति..........गनीगन्तीति च। √'गम्' (निपातनात्)। अष्टा० ७.४.६५

गभस्ति>गभस्ती

१. गभस्तयः (रश्मयः)। गोशब्दपूर्वाद् √'भस भक्षणदीप्त्योः'। गां भूमिञ्च भासयन्ति दीपयन्ति। '*गो*+ √'*भस्*'+ *क्तिन्*'> *गभस्ति*'। निघ० १.५.७

२. यद्वा, गवि संसर्गे दीप्यते'। '*गो*+ √'*भस्*'+ *क्तिन्*'> *गभस्ति*'। निघ० १.५.७

३. यद्वा, बभस्तिरत्तिकर्मा (निघ० २.८.३)। गामुदकं भौमरसलक्षणं बभसति अदन्ति। '*गो*+ √'*भस्*'+ *क्तिन्*'> *गभस्ति*'। निघ० १.५.७

४. यद्वा, बभसति दीप्यन्ते इति गभस्तयः। '*गो*+ √'*भस्*'+ *क्तिन्*'> *गभस्ति*'। निघ० १.५.७

५. यद्वा, ग्रहेर्गभस्तिः— इति माधवः। गृह्णन्ति भौमं रसम्। √'*ग्रह*+ *क्तिन्*+ *असुगागमः*> *गहस्ति*> *गभस्ति*'। निघ० १.५.७

६. गभस्ती (बाहू) ग्रहेर्गभस्ती, गृह्णाति पदार्थानाभ्यां पुरुषाः—इति माधवः। √'*ग्रह्*'+ *क्तिन्*+ *असुगागमः*> *गहस्ति*> *गभस्ति*'। निघ० २.४.८

७. व्याख्यातो रश्मिनामसु (निघ० १.५.७) पुरुषाः अदन्त्याभ्यामन्नादीन्। '*गो*+ √'*भस्*'+ *क्तिन्*'> *गभस्ति*'। निघ० २.४.६

८. गभस्तयः (अङ्गुलयः)। √'ग्रह्'। गृह्णन्ति पदार्थानाभिः पुरुषाः इति गभस्तयः। √'*ग्रह*+ *क्तिन्*+ *असुग्* (*आगमः*) > *गहस्ति*> *गभस्ति*'। निघ० २.५.२२

गभीर

१. गभीरा (वाक्)। √'भी भये' (दिवादि)+√'रा दाने'। भीयन्ति रातीति भीरा। गवां गवां भीरा गभीरा गम्भीरा च। स्तनयित्नु— लक्षणा हि माध्यमिका वाक् श्रूयमाणैव सर्वप्राणिनां भियमादधाति। '*गो*+ √'*भी*'+ √'*रा*'> *गोभीर*> *गभीर*'। निघ० १.११.७

२. यद्वा, √'गम्लृ गतौ'। गच्छति यज्ञे, अधिगम्यते वा ज्ञानार्थिभिः। √'*गम्*'+ *ईरन्*> *गमीर*> *गभीर*'। निघ० १.११.७

३. यद्वा, √'गाधृ प्रतिष्ठालिप्सयोः ग्रन्थे च'। प्रतिष्ठिता स्वस्मिन् स्थाने, लिप्स्यन्ते वा प्राणिभिः, ग्रथिता वा गद्यपद्यादिरूपेण गभीरा गम्भीरा। √'*गाध्*'+ *ईरन्*> *गाधीर*> *गधीर*> *गभीर*'। निघ० १.११.७

४. गभीरम् (उदकम्)। √'गम्लृ गतौ'। गच्छति यज्ञेष्वाहृतं वसतीवर्य्यादिरूपेण। √'*गम्*'+ *ईरन्*> *गमीर*> *गभीर*'। निघ० १.१२.६१

५. गभीरः (महत्)। वाङ्नामसु व्याख्यातम् (निघ० १.११.७) प्रतिष्ठितो महति स्थाने लिप्यन्ते। √'*गाध्*'+ *ईरन्*> *गाधीर*> *गधीर*> *गभीर*'। निघ० ३.३.१८

६. गभीरे (द्यावापृथिव्यौ)। व्याख्यातं वाङ्नामसु (निघ० १.११.७) गम्यते सत्पुरुषैः। √'*गम्*'+ *ईरन्*> *गमीर*> *गभीर*'। निघ० ३.३०.१३

७. गभीरगम्भीरौ। √'*गम्*'+ *ईरन्*> *गभीर*'। उणा० ४.३६

गम्भर

१. गम्भरम् (उदकम्)। गभीरवत्। '*गो*+ √'*भी*'+ √'*रा*' *या* √'*गम्*'+ *ईरन् या* √'*गाध्*'+ *ईरन्*'। निघ० १.१२.६२

२. यद्वा, √'ग्रह उपादाने'। गृह्यते वसतीवर्य्यादित्वेन। 'ग्रह्+ अरन्> ग्रभर> गम्भर'। निघ० १.१२.६२

गम्भीर

१. गभीरा (वाक्)। √'भी भये' (दिवादि)+√'रा दाने'। भीयन्ति रातीति भीराः। गवां भीरा गभीरा गम्भीरा च। स्तनयित्नुलक्षणा हि माध्यमिका वाक् श्रूयमाणैव सर्वप्राणिनां भियमादधाति। *'गो+ √'भी'+ √'रा'> गोभीर> गभीर'*। निघ० १.११.८

२. यद्वा, √'गम्लृ गतौ'। गच्छति यज्ञे, अधिगम्यते वा ज्ञानार्थिभिः। *√'गम्'+ ईरन्> गमीर> गभीर'*। निघ० १.११.८

३. यद्वा, √'गाधृ प्रतिष्ठालिप्सयोः ग्रन्थे च'। प्रतिष्ठिता स्वस्मिन् स्थाने, लिप्स्यन्ते वा प्राणिभिः, ग्रथिता वा गद्यपद्यादिरूपेण गभीरा गम्भीरा। *√'गाध्'+ ईरन्> गाधीर> गधीर> गम्भीर'*। निघ० १.११.८

४. गभीरे (द्यावापृथिव्यौ)। व्याख्यातं वाङ्नामसु (निघ० १.११.८) गम्यते सत्पुरुषैः। *√'गम्'+ ईरन्> गमीर> गम्भीर'*। निघ० ३.३०.१४

५. गभीरगम्भीरौ। *√'गम्'+ ईरन्+ नुमागमश्च> गभीर'*। उणा० ४.३६

गयः

१. गयमारे अवद्य आगात्। *√'गम्'*। ऋ० १०.९९.५

२. स यदाह गयोऽसीति सोमं वा एतदाहैष ह वै चन्द्रमा भूत्वा सर्वांल्लोकान् गच्छति तद्यद्गच्छति तस्माद्गयस्तद्गयस्य गयत्वम्। *√'गम्'*। गो०ब्रा० १.५.१४

३. गयः। गमेः। *√'गम्'+ यक्> गय'*। निघ० २.२.८

४. गयः। (अपत्यम्)। √'गाङ् गतौ'। गीयते स्तूयते देवभट्टारकेत्येवमादिभिः। *√'गा+ यक्> गाय> गय'*। निघ० २.२.८

५. गयः (धनम्)। व्याख्यातमपत्यनामसु। गीयते स्तूयते होतृभिः। *√'गाङ् गतौ+ यक्> गाय> गय'*। निघ० २.१०.१२

६. गयः (गृहम्)। व्याख्यातमपत्यनामसु। √'गम्' गम्यते वासाय। गच्छत्यनेन सुखम्। *√'गम्'+ यक्> गय'*। निघ० ३.४.१

७. यद्वा, √'गीयते स्तूयते स्वास्थ्यातिशयेन, श्रवन्त्यस्मिन् स्थिता देवा इति च। *√'गाङ् गतौ+ यक्> गाय > गय'*। निघ० ३.४.१

गरुत्मत्

१. गरुत्मान् गरणवान्। *√'गॄ' >गरुत्, गरुत्+ मतुप्> गरुत्मत्'*। निरु० ७.१८

२. गुर्वात्मा महात्मेति वा। *'गुरु+ आत्मन्> गुर्वात्मन्> गरुत्मान्'*। निरु० ७.१८

३. मृग्रोरुतिः। *√'गॄ'+ उति> गरुत्*। उणा० १.९४

गर्त

१. गर्तः सभास्थाणुः, गृणातेः। सत्यसङ्गरो भवति। रथोऽपि गर्त उच्यते, गृणातेः स्तुतिकर्मणः। स्तुततमं यानम्। *√'गॄ' शब्दे स्तुतिकर्मा वा'*। निरु० ३.५

२. श्मशानसंचयोऽपि गर्त उच्यते। गुरतेः, अपगूर्णो भवति। *√'गुरी उद्यमने'*। निरु० ३.५

३. गर्त्तः (गृहम्)। √'गॄ शब्दे स्तुतिकर्मा वा'। शब्द्यते तस्मिन् स्तूयते वा। *√'गॄ+ तन्> गर्त'*। निघ० ३.४.३

४. हसिमृग्रिण्वामिदमिलूधूर्विभ्यस्तन्। *√'गॄ'+ तन्> गर्त'*। उणा० ३.८६

गर्दभ

१. गर्दभेन संभरति तस्माद्गर्दभः पशूनां भारभारितमः। *√'भृ'*। तै०सं० ५.१.५.५

२. भस्मन एव गर्दभोऽसृज्यत, तस्मात् स प्रतिरूपं तस्माद् भ्रियमाणो जीवति। *√'भृ'*। जै० ३.२६४

३. कृशृशलिकलिगर्दिभ्योऽभच्। *√'गर्द्+ अभच्> गर्दभ'*। उणा० ३.१२२

गर्भ

१. एष वै गर्भो देवानां य एष (सूर्यः) तपत्येष हीदꣳसर्वं गह्णात्येतेनेदꣳ सर्वं गृभीतम्। *√'ग्रह' > गर्भ'*। शत०ब्रा० १४.१.४.२

२. गर्भो गृभेः गृणात्यर्थे। *√'गृभ'> गर्भ'*। निरु० १०.२३

३. गिरत्यनर्थानिति वा। *'गॄ+ + भनन्> गर्भ'*। निरु० १०.२३

४. यदा हि स्त्री गुणान् गृह्णाति, गुणाश्चास्या गृह्यन्तेऽथ गर्भो भवति। *√'ग्रह'>गर्भ'*। निरु० १०.२३

५. अर्तिगृभ्यां भनन्। *√'गॄ'+ भनन्> गर्भ'*। उणा० ३.१५२

गल्दा

१. गल्दया,गालनेन। √'*गल्*'। निरु० ६.२४

२. गल्दा धमनयो भवन्ति। गलनमासु धीयते। '*गल+ √'धा'>गल्धा> गल्दा*'। निरु० ६.२४

३. गल्दा, आगलना धमनीनामित्यत्रार्थः। √'*गल्*'। निरु० ६.२४

४. गल्दा (वाक्)। √'गल' अदने'। गलनं पूरणं कामानां, गलः पूरणार्थः स्कन्दस्वामिनोक्तः, तद्ददाति। √'*गल्*'+ √'*दा*'>*गल्दा*'। निघ० १.११.५४

गव्य

१. षष्टि सहस्रमनु **गव्यमागात्**। √'*गम्*'। ऋ० १.१२६.३

गव्यूति

१. परा मे यन्ति धीतयो **गावो** न **गव्यूतिरनु**। '*गो*'। ऋ० १.२५.१६

२. **अगव्यूति क्षेत्रमागन्म** देवाः। √'*गम्*'। ऋ० ६.४७.२०

गहनम्

१. गहनम् (उदकम्)। √'गाह' विलोडने'। अवगाह्यते प्राणिभिः गहनम्। √'*गाह्*'+ *युच्> गाह+ अन> गाहन> गहन*'। निघ० १.१२.६०

गातु

१. सोमो **जिगाति गातुविद्देवानामेति** निष्कृतम्। √'*गा*'। ऋ० ३.६२.१३

२. गातुम्, गमनम्। √'*गम्*' (*अथवा अर्थनिर्वचनम्*)। निरु० ४.२१

३. गातुः (पृथिवी)। √'गाङ्' स्तुतौ'। गीयते स्तूयतेऽसौ स्तुवन्ति वास्यां स्थिता इन्द्रादीन्। √'*गा*'+ *तु> गातु*'। निघ० १.१.२०

४. यद्वा, √'गाङ्' गतौ'। गच्छन्त्यस्यां भूतानीति वा। √'*गा+ तु> गातु*'। निघ० १.१.२०

५. यद्वा, √'गै' शब्दे'। गायन्ति वास्यां स्थिता गायना इति। √'*गै*'+ *तु> गातु*'। निघ० १.१.२०

६. यद्वा, गम्यतेऽनेनेति गातुर्मार्गः। गातुः मार्गवती हि भूमिः। √'*गम्*'। निघ० १.१.२०

७. कमिमनिजनिगाभायाहिभ्यश्च। √'*गातु+ तु> गातु*'। उणा० १.७३

गातुवित्

१. सोमो **जिगाति गातुविद्देवानामेति** निष्कृतम्। √'*गा*'। ऋ० ३.६२.१३

२. देवा **गातुविदो** गातुं वित्त्वा **गातुमित**। √'*गातु+ विद्*'। यजु० २.२१, ८.२१, अथर्व० ७.९७.७

गाथा, गाथ

१. विप्राय **गाथं गायत** यं जुजोषते। √'*गै*'। सा०पू० ४.१०.१०

२. विप्राय **गाथं गायत** यं जुजोषते। √'*गै*'। सा०उ०.१११३

३. **गायद्गाथं** सुतसोमो दुवस्यन्। √'गै' शब्दे'। ऋ० १.१६७.६

४. गाथा (वाक्)। √'गै' शब्दे' अर्चतिकर्मा च' (निघ० ३.१४)। गायतीत्यसौ देवताः, गायन्ति तामिति वा गाथा। √'*गै*'+ *थन्> गाथ*', *गाथ+ टाप्> गाथा*'। निघ० १.११.३७

५. उषिकुषिगार्तिभ्यस्थन्। √'*गै*'+ *थन्> गाथा*'। उणा० २.४

गान्धर्वी

१. गान्धर्वी (वाक्)। गो+√'धृञ्' धारणे'+व प्रत्ययः। गौर्यज्ञस्य धारयितेन्द्रः। '*गो+ √'धृ*'+ *व> गोधर्व> गान्धर्व> गान्धर्वी*'। निघ० १.११.६

२. भोजस्तु गन्धेरकृच। गन्धयते अर्दयति हिनस्ति देवशत्रूनिति गन्धर्वः इन्द्रः, तस्येदम् —गान्धर्वी। ऐन्द्रीत्यर्थः। √'*गन्ध्*'+ *व+ अगागमः > गन्धर्व> गान्धर्वी*'। निघ० १.११.६

३. यद्वा, गन्धर्वा देवानां गायकाः तेषामियम्। तथा चैतरेयब्राह्मणे— सोमो वै राजा गन्धर्वेष्वासीत्। '*गन्धर्व+ अण्> गान्धर्व> गान्धर्वी*'। निघ० १.११.६

गायत्र

१. ता **गायत्रेषु गायत**। √'*गै*'। ऋ० १.२१.२

२. पुरंदर प्र **गायत्रा अगासिषुः**। √'*गै*'। ऋ० ८.१.७

३. न **गायत्रं गीयमानम्**। √'*गै*'। ऋ० ८२.१४.सा०पू० २.१२.३, सा०उ० १८०५

४. प्र **गायत्रेण गायत** पवमानं विचर्षणिम्। √'*गै*'। ऋ० ९.६०.१

५. **गायत्रं** त्वो **गायति** शक्वरीषु। √'*गै*'। ऋ० १०.७१.११

६. तं ता एतदेव (गायत्रं) साम गायन्नत्रायत। यद् गायन्नत्रायत तद्गायत्रस्य गायत्रत्वम्। √'गै'+√'त्रै'> गायत्र'। जै०ब्रा० १.१११.(तु०जै०उप० ३.६.९.४)

७. गायत्रं गायतेः स्तुतिकर्मणः। √'गै'। निरु० १.८

गायत्री

१. **गायन्ति** त्वा **गायत्रिणो**ऽर्चन्त्यकमर्किणः। √'गै'। सा०उ० १३४४, ऋ० १.१०.१, सा०पू० ३.१२.१

२. गायत्री गायतेः स्तुतिकर्मणः। √'गै'। दै०ब्रा० ३.२

३. गायतो मुखादुपततदिति हि ब्राह्मणम्। √'गै'। दै०ब्रा० ३.२

४. सा हैषा (गायत्री) गयांस्तत्रे। प्राणा वै गयास्तत्प्राणांस्तत्रे तद्यद्गयांस्तत्रे तस्माद्गायत्री नाम। √'गै'+√'त्रै' >गायत्र> गायत्री'। शत०ब्रा० १४.८.१५.७

५. सेयꣳसर्वा कृत्स्ना मन्यमाना गायद्यदगायत्तस्मादियं (पृथिवी) गायत्री। √'गै' शब्दे'। शत०ब्रा० ६.१.१.१५

६. गायत्री गायति। √'गै' शब्दे'। जै०ब्रा० १.१०२

७. गायत्री........गायेत्। √'गै' शब्दे'। षड्०ब्रा० २.१.१०

८. गायति च त्रायते च। या वै सा गायत्री। √'गै'+√'त्रै'>गायत्र> गायत्री'। छा०उप० ३.१२.१.२

९. गायत्री गायतेः स्तुतिकर्मणः। √'गै' शब्दे'। निरु० ७.१२

१०. गायत्री त्रिगमना विपरीता। 'त्रि+√'गम्'> गमत्रि> गायत्रि> गायत्री'। निरु० ७.१२

११. गायतो मुखादपतद् इति ब्राह्मणम्। √'गै' शब्दे'। निरु० ७.१२

१२. शब्दः स्तवनम्। गायति स्तौति प्रकाशयति देवतामिति गायत्री। √'गै' शब्दे'। सा०भा०दै०ब्रा० ३.२

गार

१. तेन (गारेण साम्ना देवाः) इमान् गरान् गीर्णानपाघ्नत। त एवेमे गिरयोऽभवन् तद्यद्गरान् गीर्णानपाघ्नत तदेव गारस्य गारत्वम्। √'गृ' > गर > गीर्ण> गिरि'। जै०ब्रा० १.२२३

गिर्

१. वसोरिन्द्रं वसुपतिं **गीर्भिर्गृणन्तः** ऋग्मियम्। √'गृ'। ऋ० १.९.९

२. आभिष्टे अद्य **गीर्भिर्गृणन्तो**ऽग्ने दाशेम। √'गृ'। ऋ० ४.१०.४

३. वयं **गीर्भिर्गृणन्तो** नमसोपसेदिम। √'गृ'। ऋ० ५.८.४

४. समिद्धमग्निं समिधा **गिरा गृणे**। √'गृ'। ऋ० ६.१५.७, सा०उ० १५६७

५. **गृणन्ति गिर्वणसं** शं तदस्मै। √'गृ'। ऋ० ६.३४.३

६. **गीर्भिर्**वावृधे **गृणतामृ**षीणाम्। √'गृ'। ऋ० ६.४४.१३

७. **गीर्भिर्गृणन्ति** कारवः। √'गृ'। ऋ० ८.४६, ३.५४.१

८. सुगं कृधि **गृणान** इन्द्र **गिर्वणः**। √'गृ'। ऋ० ८.९३.१०

९. **गीर्भिर्**रु स्वयशसं **गृणीमसि**। √'गृ'। ऋ० १०.९२.१४

१०. वसोरिन्द्रं वसुपतिं **गीर्भिर्गृणन्तम्**। √'गृ'। अथर्व० २०.७१.१५

११. वेधसो **गृणन्तः** कारवो **गिरा**। √'गृ'। सा०उ० १७६६

१२. गिरः स्तुतयः। गिरो गृणातेः। √'गृ'। निरु० १.१०

१३. गिरा गीत्या स्तुत्या। √'गृ'। निरु० ६.२४

१४. गीः (वाक्)। 'गृणातिरर्चतिकर्मा (निघ० ३.१४)। गृणात्यनया गीः। √'गृ'>गिर्> गीः'। निघ० १.११.३६

गिरि

१. गिरि पर्वतः समुद्गीर्णो भवति। √'गृ' (सम्+ उद्+ √'गृ'>समुद्गीर्ण (अर्थनिर्वचनम्)। निरु० १.२०

२. गिरिः (मेघः)। √'गृ' निगरणे'। अथवा √'गृ' शब्दे'। √'गृणातिः स्तुतिकर्मा ग्रावेत्यनेन समानार्थः। √'गृ'+ इ> गिरि'। निघ० १.१०.१०

३. कॄगॄशॄपॄकुटिभिदिछिदिभ्यश्च। √'गृ'+ इ> गिरि'। उणा० ४.१४४

गिरिष्ठा

१. गिरिष्ठा गिरिस्थायी। 'गिरि+√'स्था'। निरु० १.२०

गिर्वणस्

१. गिर्वणा देवो भवति, गीर्भिरेनं वनयन्ति। 'गिर्+√'वन्' + असुन्> गिर्वणस्'। निरु० ६.१४

गु

१. वनर्गू वनगामिनौ। (वन+) √'गम्'। निरु० ३.१४

गुण

१. गुणः, गणनात्। √'गण्'। निरु० ६.३६

गूढ

१. गुहा हितं गुह्यं गूढमप्स्वपीवृतं मायिनं क्षियन्तम्। *'गुहा+ हितम् = गुह्यम्= गूढम्'*। ऋ० २.११.५

२. गुहा हितं गुह्यं गूळ्हमहमप्सु। *'गुहा+ हितम्= गुह्यम्= गूढम्'*। ऋ० ३.३९.६, १०.१४८.२

गुहा

१. पूषा राजानमाघृणिरपगूळ्हं गुहा हितम्। √*'गुह्'*। ऋ० १.२३.१४

२. गुहा गूहतेः। √*'गूह्' या* √*'गुह्' संवरणे'*। निरु० १३.९

गुह्य

१. गूहता गुह्यं तमो वि यात विश्वमत्रिणम्। √*'गुह्'*। ऋ० १.८६.१०

२. गुहा हितं गुह्यं गूढमप्स्वपीवृतं मायिनं क्षियन्तम्। *'गुहा+ हितम् = गुह्यम्= गूढम्'*। ऋ० २.११.५

३. गुहा हितं गुह्यं गूळ्हमहमप्सु। *'गुहा+ हितम्= गुह्यम्= गूढम्'*। ऋ० ३.३९.६, १०.१४८.२

गूर्त

१. जगुर्या द्यावाक्षामा सिन्धवश्च स्वगूर्ताः। √*'गॄ'*। ऋ० १.१४०.१३

गूर्द

१. ते (देवा) एतत् सामापश्यंस्तेनास्तुवत् तेन गूर्दमन्नाद्यमसुराणामवृञ्जत, तस्मिन्नगूर्दन्यदगूर्दंस्तद्गूर्दस्य गूर्दत्वम्। √*'गुर्द'*। जै०ब्रा० ३.१७१

गृत्स

१. गृत्स इति मेधाविनाम, गृणातेः स्तुतिकर्मणः। √*'गॄ'*। निरु० ९.५

२. गृत्सः (मेधावी)। √*'गृधु अभिकाङ्क्षायाम्'*। अभिकाङ्क्ष्यते सर्वैः। √*'गृध्'+ स> गृत्स'*। निघ० ३.१५.३

३. यद्वा, गृणातेः स्तुतिकर्मणः। स्तुत्यो लोकस्य, स्तोता वा देवानाम्। √*'गॄ'+ सक्> गृस> गृत्स'*। निघ० ३.१५.३

४. गृधिपण्योर्दकौ च। √*'गृध्'+ स> गृत्स'*। उणा० ३.६.९

गृत्समद

१. स यत्प्राणो गृत्सोऽपानो मदस्तस्माद् गृत्समदस्तस्माद् गृत्समद इत्याचक्षत एतमेव (प्राणे) सन्तम्। √*'गृत्स+ मद> गृत्समद'*। ऐ०आ० २.२.१

२. गृत्समदो गृत्समदनः। *'गृत्स+* √*'मद् > गृत्समद'*। निरु० ९.५

गृध्र

१. गृध्र आदित्यो भवति, गृध्यतेः स्थानकर्मणो यत एतस्मिंस्तिष्ठति। √*'गृध्'*। निरु० १४.१३

२. सुसूधाञ्गृधिभ्यः क्रन्। √*'गृध्'+ क्रन्> गृध्र'*। उणा० २.२५

गृह

१. ग्राह्या गृहाः सं सृज्यन्ते। √*'ग्रह्'*। अथर्व० १२.२.३९

२. गृहाः कस्मात्, गृह्णन्तीति सताम्। √*'ग्रह्'*। निरु० ३.१३

गृह्य

१. गृह्या गृह्णानो बहुधा वि चक्ष्व। √*'ग्रह्'*। अथर्व० ५.२०.४

गो

१. अश्वावति प्रथमो गोषु गच्छति। √*'गम्'*। ऋ० १.८३.१; अथर्व० २०.२५.१

२. स गन्ता गोऽमति व्रजे। √*'गम्'*। ऋ० १.८३.३

३. गच्छथो विवरे गो अर्णसः। √*'गम्'*। ऋ० १.११२.१८

४. ऋतं वसिष्ठमुप गाव आगुः। √*'गम्'*। ऋ० ३.५६.२

५. आ गावो अग्मन्नुत भद्रम्। √*'गम्'*। ऋ० ६.२८.१, अथर्व० ४.२१.१

६. गाय गा इव चर्कृषत्। √*'गै'*। ऋ० ८.२०.१९

७. गमेमेदिन्द्र गोमतः। √*'गम्'*। ऋ० ८.४५.१०

८. नवीयसीं गमेम गोमति। √*'गम्'*। ऋ० ८.५१.३

९. स तवोती गोषु गन्ता। √*'गम्'*। ऋ० ८.७१.५

१०. अग्रियो गोषु गच्छति। √*'गम्'*। ऋ० ९.८६.१२, सा०उ० १०३३,

११. गा उत प्रास्तौदुच्च विद्वाँ अगायत्। √*'गै'*। ऋ० १०.६७.३

१२. गमध्यै यत्र गावो भूरिशृङ्गाः ऽ अयासः। √*'गम्'*। यजु० ६३

१३. शूरो यो गोषु गच्छति। √*'गम्'*। सा०महा० ९

१४. व्रजं गोमन्तं दस्युहा गमत्। √*'गम्'*। सा०उ० १६६८

१५. गमेर्डोः। √*'गम्'+ डो> गो'*। उणा० २.६८

१६. इमे वै लोका गौर्यद्धि किंच गच्छतीमांस्तल्लोकान् गच्छति। √'गम्'। शत०ब्रा० ६.१.२.३४ (तु०शत०ब्रा० ६.५.२.१७)

१७. यद्वै तद्देवा असुरानेभ्यो लोकेभ्यो गोवयꣳस्तद् गोर्गोत्वम्। 'गोवये> गो'। ता०ब्रा० १६.२.३

१८. गौरिति पृथिव्या नामधेयम्। यद्दूरं गता भवति। यच्चास्यां भूतानि गच्छन्ति। √'गम्> गो'। निरु० २.५

१९. गातेर्वौकारो नामकरणः। √'गाङ् गतौ+ ओ> गो'। निरु० २.५

२०. गव्या गमयतीषूनिति। √'गम्> गो'। निरु० २.५

२१. गौरादित्यो भवति। गमयति रसान् गच्छत्यन्तरिक्षे। √'गम्'। निरु० २.१४

२२. गावो गमनात्। 'गम्'। निरु० १२.७

२३. अथ द्यौः। यत्पृथिव्यां अधिदूरं गता भवति। यच्चास्यां ज्योतींषि गच्छन्ति। √'गम्'। निरु० २.१४

२४. गावो गमनात्। √'गम्'। निरु० १२.७

२५. गौः (पृथिवी)। √'गम्लृ गतौ'। गौरिति पृथिव्या नामधेयम्, यद्दूरं गता भवति, यच्चास्यां भूतानि गच्छन्ति' (निरु० २.५) अस्य स्कन्दस्वामी– दूरं गता भवति नैरन्तर्येणात्माकाशादिवत् दूरेऽप्युपलब्धेर्गति-क्रियाव्यवहारः। √'गम्'+ डो> गो'। निघ० १.१.१

२६. गातेर्वा स्तुत्यर्थस्य। गीयते स्तूयतेऽसाविति, गायन्ति वास्यां स्थिता इति गौः। √'गा' स्तुतौ'+ डो > गो'। निघ० १.१.१

२७. गावः (रश्मयः)। व्याख्यातः पृथिवीनामसु। गच्छन्ति सर्वतस्तमो विहन्तुं भौमं रसं वा हर्तुम्। √'गम्'+ डो> गो'। निघ० १.५.३

२८. गीयन्ते स्तूयन्ते स्वाभिमतसाधनाद् यजमानैरश्वपालैश्च। √'गम्'+ डो> गो'। निघ० १.५.३

२९. गौः (वाक्)। गच्छन्ति यज्ञेष्वाहूता। √'गम्'+ डो> गो'। निघ० १.११.४

३०. गीयते स्तूयते वा। √'गम्'+ डो> गो'। निघ० १.११.४

३१. गावः (आदिष्टोपयोजनम्)। व्याख्याता रश्मिनामसु। गन्त्र्यः। √'गम्'+ डो> गो'। निघ० १.१५.७

३३. गौः (स्तोता)। व्याख्यातं पृथिवीनामसु। गीयन्ते स्तूयन्तेऽनेन देवताः। √'गम्'+ डो> गो'। निघ० ३.१६.७

गोत्र

१. गोत्रा (पृथिवी)। √'गुङ् अव्यक्ते शब्दे'। मृगपक्ष्यादयोऽस्यामव्यक्तशब्दं कुर्वन्तीति गोत्रा। √'गु'+ त्र> गुत्र> गोत्र'। निघ० १.१.२१

२. यद्वा, गोत्रा शैलाः सन्त्यस्यामिति। √'गोत्र'+ अच् (मत्वर्थीयः) > गोत्र'। निघ० १.१.२१

३. यद्वा, गोशब्दे कर्मण्युपपदे √'त्रैङ् पालने'। गास्त्रायते रक्षति यवसोदकवत्तया। 'गो+ √'त्रै'+ क> गोत्र'। निघ० १.१.२१

४. यद्वा, गोभिरादित्यकिरणैर्वृष्टिप्रदानेन त्रायते रक्षते–इति। गो+ √'त्रै'+ क> गोत्र'। निघ० १.१.२१

५. यद्वा, गोशब्दात्तस्य समूहः इत्यस्मिन्नधिकारे ''खलगोरथात्'' (अथर्व० ४.२.५१) इति 'त्र' प्रत्ययः। गोत्रा, गवां समूहः। निघ० १.१.२१

६. गोसमूहोऽस्यामस्तीति गोत्रा। 'गो+ त्र> गोत्र'। निघ० १.१.२१

७. गोत्रः (मेघः)। √'गुङ् अव्यक्ते शब्दे'। मेघो गर्जितलक्षणमव्यक्ताक्षरं शब्दं करोति, गूयते शब्द्यते वा। √'गु'+ त्र> गोत्र'। निघ० १.१०.३

८. यद्वा, गामुदकं रश्मिभिराहृतं वर्षाव्यतिरिक्तेषु त्रायते पालयति। गो+ √'त्रै'+ क> गोत्र'। निघ० १.१०.३

९. गां पशुजातिं त्रायते वा वृष्ट्या पानीयप्रदानात्। गो+ √'त्रै'+ क> गोत्र'। निघ० १.१०.३

१०. पर्वतोऽपि निर्भरादिपतनजन्यमव्यक्तं शब्दं करोति, अभिवृष्टमुदकमुदकधारेषु धारणाद् रक्षति च गौश्च सुयवसवत्तया गोत्राः। √'गु'+ त्र> गोत्र' अथवा गो+ √'त्रै'+ क> गोत्र'। निघ० १.१०.३

११. गुधृवीपचिवचियमिसदिक्षदिभ्यस्त्रः। √'गु'+ त्र> गोत्र'। उणा० ४.१४८

गोप

१. प्राणो वै गोपाः। स हीदं सर्वम्.....गोपायति। √'गुप्'। जै०उप० २.३७.२

२. एष हीदꣳसर्वं गोपायति। √'गुप्'। शत०ब्रा० १४.१.४.९

३. गोपा एष हीदं सर्वं गोपायति। √'गुप्'। ऐ०आ० २.१.६

गोपयत्य

१. गोपयत्यम्, गोपायितव्यम्। √'*गुप' रक्षणे*'। निरु० ५.१

गौर, गौरी

१. गौरीः, रोचतेर्ज्वलतिकर्मणः। अयमपीतरो गौरो वर्ण एतस्मादेव प्रशस्यो भवति। √'*रुच्*'। निरु० ११.३९

२. गौरी (वाक्)। रोचतेर्ज्वलतिकर्मणः'। स्वया दीप्त्या ज्वलति वाग्देवतात्वात्। √'*रुच्'+ रन्> गौ+ र> गौर, गौर> ई> गौरी*'। निघ० १.११.५

३. यद्वा, √'*गूरी*' *उद्यमने*'। गुरते उद्यच्छति स्वमभिधेयम् उद्यमनं चाथ प्रकाशनम्। √'*रुच्'+ रन्> गुर> गौर> गौर> ई> गौरी*'। निघ० १.११.५

४. यद्वा, √'गुङ् अव्यक्ते शब्दे'। गवते गर्जितलक्षण-मव्यक्त शब्दं करोतीति गौरी। √'*गु'+ रन्> गुर> गौर> गौर> ई> गौरी*'। निघ० १.११.५

५. यद्वा, शुक्ल वर्णत्वात् गौरी। निघ० १.११.५

गोपा

१. एष वै गोपा य एष (सूर्यः) तपत्येष हीदꣳ सर्वं गोपायति। √'*गुपू' रक्षणे'+ आय> गोपाय> गोपा*'। शत०ब्रा० १४.१.४.९

२. प्राणो वै गोपाः। स हीदं सर्वमनिपद्यमानं गोपायति। √'*गुपू' रक्षणे*'। जै०उप० ३.६.९.२ (तु०ऐ०आ० २.१.६)

३. स सुगोपातमो जन इति, इन्द्रो वै गोपाः। √'*गुप्*'। गो०ब्रा० २.२.२०

४. गोपा गोपायिता (आदित्यः)। √'*गुपू' रक्षणे*'। निरु० ७.९

५. गोपा गोप्तृणि। √'*गुप्*'। निरु० १२.३८

गौङ्गव

१. अग्निरकामयतान्नादः स्यामिति स तपोऽतप्यत स एतद् गौङ्गवमपश्यत् तेनान्नादोऽभवद्यदन्नं वित्वा गर्दद्यदङ्गूयत्तद् गौङ्गवस्य गौङ्गवत्वम्। √'*गर्द'+ √'अङ्ग' > गौङ्गव*'। ता०ब्रा० १४.३.१९

२. गौङ्गवेन वै देवा असुरान् हत्वा घोषं गङ्गणिमकुर्वत। तदेव गौङ्गवस्य गौङ्गवत्वम्। तद् (गौङ्गवम्) ऊर्ध्वमिव च तिर्यगिव च गीयते। '*गङ्गिन्> गौङ्गव*'। जै०ब्रा० ३.१८५

३. ते (देवाः) ऽब्रुवन् गां गां वावासुराणामवृक्ष्महीति। तदेव गौङ्गवस्य गौङ्गवत्वम्। '*गो+ गो> गोगो> गौङ्गव*'। जै०ब्रा० ३.१८५

ग्ना

१. छन्दाꣳसि वै ग्नाश्छन्दोभिर्हि स्वर्गं लोकं गच्छन्ति। √'*गम्*'। शत०ब्रा० ६.५.४.७

२. ग्नाः गच्छन्त्येनाः। √'*गम्*'। निरु० ३.२१

३. ग्ना गमनात्। √'*गम्*'। निरु० १०.४७

४. ग्नाः (वाक्)। √'गम्'। गत्यर्थाः बुध्यर्थाः। जानन्ति काममिति ग्नाः। √'*गम्'+ न> ग्ना*'। निघ० १.११.४०

५. यद्वा, गच्छति, यज्ञेष्वभूत। 'छन्दांसि वै ग्नाः' इति ब्राह्मणम्— इति माधवः। तस्मात् छन्दसां गायत्र्यादीनां वागरूपत्वात् ग्नाव्यपदेशः। √'*गम्'+ न> ग्ना*'। निघ० १.११.४०

ग्मा

१. ग्मा (पृथिवी)। ग्मा गच्छतेः। गच्छन्तीहीयम्— इति माधवः। √'*गम्'+ कनिन् या मनिन्> ग्मा*'। निघ० १.१.२

ग्रभीता

१. यो **अग्रभीत्** पर्वास्या **ग्रभीता**। √'**ग्रह्**'। **अथर्व०** १.१२.२

ग्रसिष्ठ

१. ग्रसिष्ठः, ग्रसितृतमः। √'*ग्रस्*'। निरु० ६.८

ग्रह

१. तावन्तमिन्द्र ते **ग्रहमूर्जा गृह्णाम्यक्षितं** मयि **गृह्णाम्यक्षितम्** √'*ग्रह्*'। यजु० ३८.२६

२. अथ ग्रहान् गृह्णाति। √'*ग्रह्*'। शत०ब्रा० ४.५.९.३

३. एष वे ग्रहः। य एष (सूर्यः) तपति येनेमाः सर्वाः प्रजाः गृहीताः। √'*ग्रह्*'। शत०ब्रा० ४.६.५.१

४. तद्यदेनं पात्रैर्व्यगृह्णत तस्माद् ग्रहा नाम। √'*ग्रह्*'। शत०ब्रा० ४.१.३.५

५. नामैव ग्रहः। नाम्ना हीदꣳसर्वं गृहीतम्। √'*ग्रह्*'। शत०ब्रा० ४.६.५.३

६. यद् गृह्णाति तस्माद् ग्रहः। √'*ग्रह्*'। शत०ब्रा० १०.१.१.५

७. वागेव ग्रहः। वाचा हीदꣳसर्वं गृहीतम्। √'ग्रह्'। शत०ब्रा० ४.६.५.२

८. अन्नमेव ग्रहः। अन्नेन हीदꣳसर्वं गृहीतम्। √'ग्रह्'। शत०ब्रा० ४.६.५.४

९. तं (यज्ञम्) ग्रहेणानूदद्दुत्यागृह्णात् तद् ग्रहस्य ग्रहत्वम्। √'ग्रह्'। काठ० ९.१६

१०. तं (सोमम्) अघ्नन्। तस्य यशो व्यगृह्णत। ते ग्रहा अभवन्। तद् ग्रहाणां ग्रहत्वम्। √'ग्रह्'। तै०सं० २.२.८.६

११. तान् पुरस्तात् पवित्रस्य व्यगृह्णात् ते ग्रहा अभवन्। तद् ग्रहाणां ग्रहत्वम्। √'ग्रह्'। तै०सं० १.४.१.१

१२. ते (देवाः) सोममन्वविन्दन्। तमघ्नन्। तस्य यथाभिज्ञाय तनूर्व्यगृह्णत। ते ग्रहा अभवन्। तद् ग्रहाणां ग्रहत्वम्। √'ग्रह्'। तै०सं० १.३.१.२

१३. तौ (दर्शपूर्णमासौ) ग्रहेणागृह्णात् (प्रजापतिः) तद् ग्रहस्य ग्रहत्वम्। √'ग्रह्'। तै०यं० २.२.२.१

१४. यद्वित्तं (यज्ञम्) ग्रहैर्व्यगृह्णत। तद् ग्रहाणां ग्रहत्वम्। √'ग्रह्'। ऐ०ब्रा० ३.९

ग्राभ

१. **ग्राभं गृभ्णीत** सानसिम्। √'ग्रह्'। ऋ० ९.१०६.३

२. चित्रं **ग्राभं संगृभाय**। √'ग्रह्'। सा०पू० २.६.३

३. **ग्राभं गृभ्णाति** सानसिम्। √'ग्रह्'। सा०उ० ६९६

ग्रावन्

१. देववीतये त्वा **गृह्णामि** बृहद् **ग्रावासि**। √'ग्रह्'। यजु० १.१५

२. एषा त्वा रशनाग्रभीद् **ग्रावा** त्वै षोधि नृत्यतु। √'ग्रह्'। अथर्व० १०.९.२

३. **गृहाण ग्रावाणौ** सुकृतो वीर हस्त। √'ग्रह्'। अथर्व० ११.१.१०

४. ग्रावाणो हन्तेर्वा। √'हन्'। निरु० ९.८

५. गृणातेर्वा। √'गॄ'। निरु० ९.८

६. गृह्णातेर्वा। √'ग्रह्'। निरु० ९.८

७. ग्रावा (मेघः)। √'हन्तेः'। हन्यते हि मेघ इन्द्रेण "अहन्नहिम्" इति श्रूयते। हन्यतेऽनेन सोमः। √'*हन्'+ क्वनिप्> हन्+ वन्> ग्रा+ वन्> ग्रावन्*'। निघ० १.१०.२

८. यद्वा, √'गॄ' निगरणे'। गिरत्युदकं वर्षितुम्। √'*गॄ'+ क्वनिप्> ग्+ + वन्> ग्रावन्*'। निघ० १.१०.२

९. समुद्गिरति जलं वृष्टिसमये। समुद्गीर्ण इति वा अन्तरिक्षेण। √'*गॄ'+ क्वनिप्*। निघ० १.१०.२

१०. यद्वा, √'गॄ' शब्दे'। √'गृणाति' स्तुतिकर्मा' (निरु० ३.९)। गृणाति गर्जितलक्षणं शब्द करोति। स्तूयते वा वर्षार्थिभिरिति ग्रावा मेघः। √'*गॄ'+ क्वनिप्> ग्+ + वन्> ग्रावन्*'। निघ० १.१०.२

११. पर्वतोऽपि इन्द्रेण हन्यते पक्षच्छेदसमये, गिरति मेघैरभिवृष्टं जलमुद्गिरति निर्झरजलम्। समुद्गीर्ण इव वा गुहादिगतसिंहादिशब्देन शब्दकारी, स्तूयते पदार्थबाहुल्यात् प्राणिभिस्तदाश्रयिभिरिति ग्रावा। √'*हन्*' *या* √'*गॄ'+ क्वनिप्*'। निघ० १.१०.२

ग्राहि

१. **ग्राहिर्जग्राह** यदि वैतदेनम्। √'ग्रह्'। ऋ० १०.१६.१.१

२. **ग्राहिर्जग्राह** यद्येतदेनम्। √'ग्रह्'। अथर्व० ३.११.१, २०.९६.६

ग्राह्या

१. **ग्राह्या** अधि यैनं **जग्राह** पर्वसु। √'ग्रह्'। अथर्व० २.९.१

ग्रीवा

१. ग्रीवा गिरतेर्वा। √'*गॄ*'। निरु० २.२८

२. गृणातेर्वा। √'*गॄ*' *या* √'*गॄ*'। निरु० २.२८

३. गृह्णातेर्वा। √'ग्रह्'। निरु० २.२८

४. शेवायह्वजिह्वाग्रीवाऽप्वामीवाः। '*निपातनात्*'। उणा० १.१५४

ग्रीष्म

१. ग्रीष्मो ग्रस्यन्तेऽस्मिन् रसाः। √'ग्रस्'। निरु० ४.२७

२. घर्मग्रीष्मौ। √'*ग्रस्'+ मक्> ग्रीष्+ म> ग्रीष्म*'। उणा० १.१४९

घर्म

१. तद्यद् (छिन्नं विष्णोशिशरः) घृङ्ङित्यपतत् तस्माद् घर्मः। '*घृङ्> घर्म*'। शत०ब्रा० १४.१.१.१०

२. यद् घ्राꣳ३ इत्यपतत् तद् घर्मस्य घर्मत्वम्। '*घ्रा> घर्म*'। तै०आ० ५.१.५

३. घर्मं हरणम्। √'*हृ'+ मक्> हर्म> घर्म*'। निरु० ११.४२

४. घर्मः (अहन्)। √'घृ' क्षरणदीप्त्योः'। जिघर्ति दीप्यते रश्मिसंबन्धात्। √'घृ'+ मक्> घर्म'। निघ० १.९.७

५. घर्मः (यज्ञः)। √'घृ' क्षरणदीप्त्योः'। क्षरन्त्यस्मिन् सोमः, दीप्यन्तेऽत्राग्नय इति वा। √'घृ'+ मक्> घर्म'। निघ० ३.१७.१५

६. घर्मग्रीष्मौ। √'घृ'+ मक्> घर्म'। उणा० १.१४९

घास

१. पौरुषेय्या गृभो **घस्तां** नूनं **घासे**। √'घस्'। यजु० २१.४३

२. **घसन्नूनं घासे**ऽ अज्राणाम्। √'घस्'। यजु० २१.४४—४५

घासि

१. यच्च पपौ यच्च **घासिं जघास**। √'घस्'। ऋ० १.१६२.१४

२. यच्च पपौ यच्च **घासिं जघास**। √'घस्'। यजु० २५.३८

३. जनिघसिभ्यामिण्। √'घस्'+ इण्> घासि'। उणा० ४.१३१

घृण

१. घृणः (अहन्)। जिघर्तेः (√'घृ' क्षरणदीप्त्योः)। जिघर्ति दीप्यते रश्मिसंबन्धात्। √'घृ'+ नक्> घृण'। निघ० १.९.८

घृणिः

१. घृणिः (ज्वलतो नामधेयम्)। √'घृ' क्षरणदीप्त्योः'। जिघर्ति दीप्यते। √'घृ'+ नि> घृणि'। निघ० १.१७.१०

२. यद्वा, √'घृणु' दीप्तौ'। दीप्यते घृणिः। √'घृण्'+ इ> घृणि'। निघ० १.१७.१०

३. घृणिः (क्रोधः)। ज्वलन्नामसु व्याख्यातम्। क्षरत्यनेन स्वेदादिः, दीप्यतेऽनेन वा, क्रुद्धोऽग्निरिव ज्वलति हि प्रसिद्धः। √'घृ'+ नि> घृणि' या √'घृण्'+ इ> घृणि'। निघ० २.१३.३

४. घृणिपृश्निपार्ष्णिचूर्णिभूर्णयः। √'घृ'+ नित्> घृणि'। उणा० ४.५३

घृत

१. **जिघर्म्यग्निं** हविषा **घृतेन**। √'घृ'। ऋ० २.१०.४

२. आ त्वा **जिघर्मि** मनसा **घृतेन**। √'घृ'। यजु० ११.२३

३. यदम्रियत तद् घृतम्। √'घृ'। मै०सं० २.३.४

४. यद् म्रियते तद् घृतमभवत्। √'घृ'+ क्त> घृत> घृत'। तै०सं० २.३.१०.१

५. स घृङ्ङकरोत् तद् घृतस्य घृतत्वम्। 'घृङ्> घृत'। काठ० २४.७, कपि०क०सं० ३७.८

६. घृतमित्युदकनाम, जिघर्तेः सिञ्चतिकर्मणः। √'घृ'। निरु० ७.२४

७. घृतम् (उदकम्)। √'घृ' सेचने'। सेचयत्यनेन भूमिं वरुणः, सिञ्चत्यनेनेति वा। √'घृ'+ क्त> घृत'। निघ० १.१२.१०

८. यद्वा, √'घृ' क्षरणदीप्त्योः'। जिघर्ति क्षरति मेघात् पर्वतादिभ्यो वा दीप्यते वा स्वया दीप्त्या। √'घृ'+ क्त> घृत'। निघ० १.१२.१०

९. अञ्जिघृसिभ्यः क्तः। √'घृ'+ क्त> घृत'। उणा० ३.८९

१०. यदम्रियथास्तद् घृतमभवः। √'घृ'। काठ० ११.७

घृतपदी

१. तौ (मित्रावरुणौ) ततो गा३ समैरयता३ सा यत्र यत्र न्यक्रामत् ततो घृतमपीड्यत तस्माद् घृतपद्युच्यते। 'घृत+ √'पीड्'> घृतपीड> घृतपदी'। तै०सं० २.६.७.१

२. यदेवास्यै पदाद् घृतमपीड्यत तस्मात् (घृतपदीति) एवमाह। **'घृत+ √'पीड्' > घृतपीड> घृतपदी'**। तै०सं० २.६.७.४

३. यदेवास्यै (इडायै) **घृतं पदे समतिष्ठत तस्मादाह घृतपदी** (इडा) इति। **'घृत+ पद> घृतपदी'**। शत०ब्रा० १.८.१.२.६

घृतपू

१. **घृतेन नो घृतप्वः पुनन्तु। 'घृत+ √'पू'। यजु० ४.२**

घृतवती

१. घृतवती (द्यावापृथिव्यौ)। **घृतवती उदकवत्यौ।** 'घृत+ मतुप्'। निघ० ३.३०.११

घृतस्नु

१. घृतस्नूर्घृतं प्रस्नाविन्यः। **'घृत+ √'स्नु'। निरु० १२.३६**

२. घृतप्रस्राविण्यः। **'घृत+ √'स्नु' > घृतस्नु'। निरु०** १२.३६

३. घृतसारिण्यः। 'घृत+ √'सृ' > घृतसृ> घृतस्नु'। निरु० १२.३६

४. घृतसानिन्य इति वा। 'घृत+ √'षणु' दाने'> घृतसनु> घृतस्नु'। निरु० १२.३६

घृताची

१. घृताची (रात्रिः)। √'घृ' क्षरणदीप्त्योः'। सेचयन्त्यनेन भूमिं पर्जन्यः, क्षरति मेघात् दीप्तं वा स्वेन तेजसा देवतात्वादिति घृतमत्रावश्यायलक्षणं जलम्, तदञ्चति। √'घृ'+ क्त> घृत, √'अञ्च्'+ क्विन्+ ङीप्> अची, घृत+ अची> घृताची'। निरु० १.७.१६

घोरचक्षुस्

१. घोरचक्षसे घोरख्यानाय। *(अर्थनिर्वचनम्)*। निरु० ६.११

घोष

१. घोषो घुष्यतेः। √'घुष्'। निरु० ९.९

२. घोषः (वाक्)। √'घुष' शब्दार्थः'। घुष्यते शब्द्यते घोषः। √'घुष्'+ घञ्> घोष'। निघ० १.११.३०

घ्नती

१. अथो अवघ्नती हनत्यथो पिनष्टि पिंषती। √'हन्'। ऋ० १.१९१.२

घ्रंस

१. घ्रंस इत्यहर्नाम, ग्रस्यन्तेऽस्मिन् रसाः। √'ग्रस' अदने'+ घञ्'। निरु० ६.१९

२. घ्रंसः (अहः)। √'ग्रह' उपादाने'। ग्रह्यन्तेऽस्मिन् रसा अवश्याया आदित्येन। √'ग्रह्'+ घञ्> ग्रह> घ्रह> घ्रँह> घ्रँस'। निघ० १.९.६

चकार

१. चकारेति करोतिकिरती संदिग्धौ वर्षकर्मणा। √'कृ' या √'कॄ'। निरु० २.८

चक्र

१. चक्रं चकतेर्वा। √'चक्'। निरु० ४.२७

२. चरतेर्वा। √'चर्'। निरु० ४.२७

३. क्रामतेर्वा। √'क्रम्'। निरु० ४.२७

चक्रत्

१. चक्रत् (कर्म)। √'कृञ्' करणे'। करोत्यभीष्टम्। √'कृ'। निघ० २.१.१६

चक्रिया

१. चक्रियेव चक्रयुक्ते इवेति। *(अर्थनिर्वचनम्)* निरु० ३.२२

(नृ)चक्षस्

१. नृचक्षसस्ते अभि **चक्षते** हविः। √'चक्ष्'। ऋ० १०.१०७.४

२. नृचक्षसस्ते अभि **चक्षते** रयिम्। √'चक्ष्'। अथर्व० १८.४.२९

चक्षुर्दा

१. चक्षुर्दाऽअसि चक्षुर्मे देहि। 'चक्षुस्+ √'दा'। यजु० ४.३

चक्षुष्पा

१. **चक्षुष्पा** ऽ अग्नेऽसि **चक्षुर्मे पाहि**। 'चक्षुस्+ √'पा'। यजु० २.१६

चक्षुस्

१. विश्वानि देवी भुवनाभिचक्ष्या प्रतीची **चक्षुरुर्विया** विभाति। 'चक्ष्'। ऋ० १.९२.९

२. चक्षुर्वै जमदग्निर्ऋषिः यदेनेन जगत् पश्यत्यथो मनुते तस्माच्चक्षुर्जमदग्नि र्ऋषिः। *(अर्थनिर्वचनम्)*। शत०ब्रा० ८.१.२.३

३. एतद्वै मनुष्येषु सत्यं यच्चक्षुः। तस्मादाहुराचक्षाण-मन्द्रागिति। 'चक्ष्'। गो०ब्रा० २.२.२३

४. चक्षुः ख्यातेर्वा। √'ख्या'। निरु० ४.३

५. चष्टेर्वा। √'चक्ष्'। निरु० ४.३

६. चक्षेः शिच्च। √'चक्ष्+ उस्'। उणा० २.१२१

चतुर

१. चत्वारश्चलिततमा सङ्ख्या। √'चल्'। निरु० ३.१०

२. मन्दिवाशिमथिचतिचङ्किभ्य उरच्। √'चत्+ उरच्'। उणा० १.३८

चतुर्होतृ

१. चत्वारो वा एते यज्ञास्तेषां चत्वारो होतारस्तदेषां चतुर्होतृत्वम्। 'चतुर्+ होतृ'। काठ० ९.१५ (तु०मै०सं० १.९.७)

२. तस्मै (ब्रह्मणे) चतुर्थः हूतः प्रत्यशृणोत्। स चतुर्हूतोऽभवत्। चतुर्हूतो वे नामैषः तं वा एतं चतुर्हूतः सन्तं चतुर्होतेत्याचक्षते परोक्षेण। 'चतुर्+ हूतः> चतुर्हूतः> चतुर्होता'। तै०सं० २.३.११.४

३. यदेवैषु चतुर्धा होतारः। तेन चतुर्होतारः। तस्माच्चतुर्होतार उच्यन्ते। तच्चतुर्होतॄणां चतुर्होतृत्वम्। 'चतुर्+ होतृ'। तै०सं० २.३.१.१

चन्दन

१. चन्द्रश्चन्दतेः कान्तिकर्मणः। चन्दनमित्यप्यस्य भवति। √'चन्द्'। निरु० ११.५

२. बहुलमन्यत्रापि। √'चन्द्'+ युच्'। उणा० २.७९

चन्द्र

१. चन्द्रश्चन्दतेः कान्तिकर्मणः। √'चन्द्'। निरु० ११.५

२. चारु द्रमति। 'चारु+ √'द्रम्'। निरु० ११.५

३. चिरं द्रमति। 'चिर+ √'द्रम्'। निरु० ११.५

४. चमेर्वा पूर्वम्। 'चम्+ √'द्रम्'। निरु० ११.५

५. चन्द्रम्, चायनीयम्। √'चाय्'। निरु० १२.१८

६. चन्द्रम् (हिरण्यम्)। √'चदि आल्हादने दीप्तौ च'। चन्दयति, आल्हादयति तद्वत् दीप्यते वा स्वयं तैजसत्वात्। √'चन्द्'+ रक्> चन्द्र'। निघ० १.२.२

७. दीपयति धारयितॄन्, दीप्यतेऽनेन धारयितेति वा। 'चन्द्'+ रक्> चन्द्र'। निघ० १.२.२

चन्द्रमस्

१. तस्यैतच्चन्द्रं मे चन्द्रं म इत्येव वदत एतत् तेज आदत्त येनैष एतत्तपति। स यच्चन्द्रं म इत्यब्रवीत् तस्माच्चन्द्रमाः। 'चन्द्रम्+ मे> चन्द्रमाः'। जै०ब्रा० ३.३६८

२. स (इन्द्रः) चन्द्रं म आहरेति प्रालपत्, तच्चन्द्रमसश्चन्द्रमस्त्वम्। 'चन्द्रम्+ मे> चन्द्रमाः'। तै०सं० २.२.१०.३

३. चन्द्रमाश्चायन् द्रमति। √'चाय्'+ √'द्रम्> चन्द्रमाः'। निरु० ११.५

४. चन्द्रो माता। 'चन्द्र+ √'मा> चन्द्रमा'। निरु० ११.५

५. चान्द्रं मानमस्येति वा। 'चन्द्र+ √'मान> चन्द्रमा'। निरु० ११.५

६. चन्द्रे मो डित्। 'चन्द्र+ √'मि'+ असुन्'। उणा० ४.२२९

चमस्

१. चमसः कस्मात्, चमन्त्यस्मिन्निति। √'चम्'। निरु० १०.१२

२. चमसः (मेघः)। √'चमु अदने'। √'चम्'+ असच्'। निघ० १.१०.२०

चमू, चम्वौ

१. चम्वौ (द्यावापृथिव्यौ)। √'चमू अदने'। चमन्त्यनयोः। √'चम्'+ ऊ'। निघ० ३.३०.१६

२. कृषिचमितनिधनिसर्जिखर्जिभ्य ऊः स्त्रियाम्। √'चम्'+ ऊ'। उणा० १.८०

चयसे

१. चयसे चातयसि। √'चातय्'। निरु० ४.२५

चरण

१. मृगाणां चरणे चरन्। √'चर'। ऋ० १०.१३६.६

२. आदित्य एव चरणं यदा ह्येवैष उदेत्यथेदःसर्वं चरति। √'चर'। शत०ब्रा० १०.३.५.३

३. चक्षुरेव चरणं चक्षुषा ह्ययमात्मा चरति। √'चर'। शत०ब्रा० १०.३.५.३

चरथ

१. चरथाय, चरणाय। √'चर'। निरु० ४.१९

चरध्यै

१. चरध्यै, चरणाय। √'चर'। निरु० ६.२०

चरित

१. प्र पदोऽव नेनिग्धि दुश्चरितं यश्चचार। √'चर'। अथर्व० ९.५.३

चरु

१. चरुर्मृच्चयो भवति। √'चि'+ उ> चयु> चरु'। निरु० ६.११

२. चरतेर्वा। समुच्चरन्त्यस्मादापः। √'चर्'। निरु० ६.११

३. चरुः (मेघः)। √'चर गतिभक्षणयोः'। चरन्ति गच्छन्त्यस्मादापो मेघाद् वर्षाकाले, पर्वतानां निर्झरलक्षणाः चरयन्ति जलं वर्षितव्यमिति चरुर्मेघः। चरन्ति तत्र प्राणिनः, चर्य्यते भक्ष्यते स्वप्रभवपदार्थरूपेणेति चरुः पर्वतः। √'चर्'+ उ'। निघ० १.१०.१२

४. भृमृशीङ्तृचरित्सरितनिधनिमिमस्जिभ्य उः। √'चर्'+ उ'। उणा० १.७

चर्कृत्य

१. कृष्य्यश्चर्कृत्यानि कृण्वतः। √'कृ'। सा०उ० १५१६

चर्मन्

१. चर्म चरतेर्वा। √'चर्'+ *मनिन्> चर्मन्*'। निरु० २.५

२. उच्चृतं भवतीति वा। √'चृत्'+मनिन्>चृत्+मन्> चृमन्>चर्मन्'। निरु० २.५

३. सर्वधातुभ्यो मनिन्। √'चर्'+ *मनिन्*'। उणा० ४.१४६

चर्षणि

१. विशः पूर्वीः प्र **चरः चर्षणि** प्राः। √'चर्'। सा०पू० ३.१०.६, सा०उ० १७९३

२. चर्षणिः, चायितादित्यः। √'*चाय्*'+ *अनि> चायनि> चर्षणिः*'। निरु० ५.२४

३. चर्षणयः (मनुष्याः)। √'चर गतिभक्षणयोः। चरणवन्तः चरणशीलाः। √'चर्'+ *अनि> चरणि> चर्षणिः*'। निघ० २.३.८

४. यद्वा, कृषेरेतद्रूपम्। आकर्षन्ति वशीकुर्वन्ति इत्यर्थः— इति भट्टभास्करमिश्रः। √'कृष्+ *अनि> कर्षणि> चर्षणिः*'। निघ० २.३.८

५. यद्वा, चर्षणयः चायितारो द्रष्टारः सर्वेषां पदार्थानाम्। √'चाय्'+ *अनि> चायनि> चर्षणिः*'। निघ० २.३.८

चाकन्

१. चायन्निति वा। √'चाय्'। निरु० ६.२८

२. कामयमान इति वा। √'कम्'। निरु० ६.२८

चातयामः

१. चातयामः। चातयतिर्नाशने। √'चातय्'। निरु० ६.३०

चारु

१. चारु रुचेर्विपरीतस्य। √'रुच्> चरु> चारु'। निरु० ११.५

२. चारुः चरतेः। √'चर्'। निरु० ८.१५

३. हसनिजनिचरिचटिरहिभ्यो ञुण्। √'चर्'+ ञुण्> चारु'। उणा० १.३

चिकित्वत्, चिकित्व

१. न जामिभिर्वि **चिकिते** वयो नो विदा देवेषु प्रमतिं **चिकित्वान्**। √'*कित्*'। ऋ० १.७१.७

२. ऋतं **चिकित्व** ऋतमिच्चिकिद्धि। √'*कित्*'। ऋ० ५.१२.२

३. चिकित्वांश्चेतनावान्। *(अर्थनिर्वचनम्)*। निरु० २.११;८.५

चिति

१. तद्यत्पञ्च चितीश्चिनोत्येताभिरेवैनं तत्तनूभिश्चिनोति यच्चिनोति तस्माच्चितयः। √'*चि*'। शत०ब्रा० ६.१.२.१७

२. यच्चेतयमाना अपश्यंस्तस्माच्चितयः। √'चेतय्'। शत०ब्रा० ६.२.२.९

चित्

१. अचेतयदचितो देवो अर्यः। √'*चि*'। ऋ० ७.८६.७

२. चिदसि चितास्त्वयि भोगा। √'*चि*'। निरु० ५.५

३. चेतयसे इति वा। √'चेतय्'। निरु० ५.५

चित्त

१. चित्तं चेततेः। √'*चित्*'। निरु० १.६

२. चित्तम् (प्रज्ञा)। √'चिती संज्ञाने'। केतवदर्थः। √'*चित्*'+ *क्त*'। निघ० ३.९.४

चित्ति

१. **चित्तिमचित्तिं चिनवद्वि** विद्वान्। √'*चि*'। ऋ० ४.२.११

चित्य

१. चेतव्यो ह्यस्य भवति तस्माद्वेव चित्यः। √'*चि*'। शत०ब्रा० ६.१.२.१६

२. चेतव्यो ह्यासीत्तस्माच्चित्यः। √'*चि*'। शत०ब्रा० ६.२.१.१६

चित्र

१. **चित्रं** केतुं कृणुते **चेकितान**। √'*कित्*'। ऋ० १.११३.१५

२. **अचेति चित्रा** वि दूरो न आवः। √'*चिती संज्ञाने*'। ऋ० १.११३.४

३. कदस्य **चित्रं चिकिते** कदूती। √'*कित्*'। ऋ० ४.२३.२

४. येन वयं **चितयेमात्यन्यान्तं** वाजं **चित्रमृभवो** ददा नः। √'*चित्*'। ऋ० ४.३६.९

५. स **चित्र चित्रं चितयन्तमस्मे चित्रक्षत्र चित्रतमं** वयोधाम्। √'*चित्*'। ऋ० ६.६.७

६. उग्र **चित्र चेतिष्ठ** सूनृत। √'*चित्*'। ऋ० ८.४६.२०

७. चित्रं चायनीयम्। √'*चाय्*'। निरु० ४.४, १२.६, १६

८. अमिचिमिशसिभ्यः क्त्रः। √'*चि*'+ *क्त्र*> *चित्र*'। उणा० ४.१६५

चित्रामघा

१. चित्रामघा (उषा)। √'चिञ् चयने'+√'मंहतिः' दानकर्मा'। मह्यते दीयतेऽर्थिभ्यः इति मघं धनम्, चित्रमाश्चर्यभूतं धनं यस्या इति चित्रामघा। √'*चि*'+ *क्त्र*> *चित्र*', √'*मह्*+ *क*> *मघ*, *चित्र*+ *मघ*> *चित्रामघा*'। निघ० १.८.५

चित्रावसु

१. रात्रिर्वै चित्रावसुः सा हीयꣳ संगृह्येव चित्राणि वसति। '*चित्र*+ √'*वस्*'। शत०ब्रा० २.३.४.२२ (तु०तै०सं० १.५.७.५, मै०सं० १.५.९, काठ० ७.६)

चेकितान

१. सत्पतिश्चेकितान इत्ययमग्निः सतां पतिश्चेतयमान इत्येतत्। √'चेतय्'। शत०ब्रा० ८.६.३.२०

चेत

१. चेतः (प्रज्ञा)। √'*चिती* संज्ञाने'। केतवदर्थः। √'*चित*'+ *क्त*'। निघ० ३.९.३

चेतस्

१. **अचेतसं** चिच्चितयन्ति दक्षैः। √'*चित्*'। ऋ० ७.६०.६

२. **चिकित्वांसो अचेतसं** नयन्ति। √'*कित्*'। ऋ० ७.६०.६

३. प्र **चेतसा चेतयते** अनु द्युभिः। √'*चित्*'। ऋ० ९.८६.४२

चोष्कूयते, चोष्कूयमाण

१. चोष्कूयमाण इति चोष्कूयतेश्चर्करीतवृत्तम्। √'*स्कु*+ *यङ्*> √'*चोष्कूय्*'। निरु० ६.२२

च्यवन

१. च्यवन ऋषिर्भवति। च्यावयिता स्तोमानाम्। √'*च्यावय्*'। निरु० ४.१६

च्यवान

१. च्यवानम् च्यवनम्। '*च्यवन*> *च्यवान*'। निरु० ४.१९

२. च्यवाना (बाहू)। √'*च्युङ् गतौ*'। गच्छन्तः कर्मणामन्तः। √'*च्यु*+ *आनच्* > *च्यवान*'। निघ० २.४.२

च्यावन

१. एभ्यो वै लोकेभ्यो वृष्टिरपाक्रामत् तां प्रजापतिश्च्यावनेनाच्यावयद् यदच्यावयत्तच्च्यावनस्य च्यावनत्वञ्च्यावयति वृष्टिञ्च्यावनेन तुष्टवानः। √'*च्यु*+ *णिच्*> √'*च्यावय्*'। ता०ब्रा० १३.५.१३

२. तद्वै च्यवनो भार्गव एतेन साम्ना स्तुत्वा पुनर्युवाऽभवत् ....यदु च्यवनो भार्गवोऽपश्यत् तस्माच्च्यावन-मित्याख्यायते। '*च्यवन*> *च्यावन*'। जै०ब्रा० ३.१२८

च्यौत्न

१. च्यौत्नम् (बलम्)। √'*च्युङ् गतौ*'। च्यवन्ति च्यावयन्ति शत्रूननेन राज्यात्। √'*च्यु*' *या* √'*च्यावय्*'। निघ० २.९.१६

छदिस्

१. अतिच्छन्दा वै छदिश्छन्दः सा हि सर्वाणि छन्दाꣳसि छादयति। √'छद्'। शत०ब्रा० ८.२.४.५

२. छदिः (गृहम्)। √'छद्' आवरणेः। छाद्यते हि तत्। √'छद्'+ *णिच्*'। निघ० ३.४.१९

३. अर्चिशुचिहुसृपिछादिछर्दिभ्य इसिः। √'छद्'+ इसि'। उणा० २.११०

छन्दस्

१. छन्दांसि छन्दयतीति वा। √'छन्द्'। दै०ब्रा० ३.२०

२. तद्यदेनान् (देवान्) छन्दांसि मृत्योः पाप्मनोऽ छादयंस्तच्छन्दसां छन्दस्त्वम्। √'*छदि*' *अपवारणे*'। जै०ब्रा० १.२८४

३. तान्यस्मा (प्रजापतये) अच्छदयंस्तानि यदस्माऽ अच्छदयंस्तस्माच्छन्दाꣳसि। √'छदि् अर्जने'। शत०ब्रा० ८.५.२.१

४. ते (देवाः) छन्दोभिरात्मानं छादयत्विोपायन् तच्छन्दसां छन्दस्त्वम्। √'छदि् *अपवारणे*'। तै०सं० ५.६.६.१

५. देवा असुरान् हत्वा मृत्योरबिभयुस्ते छन्दाꣳस्यपश्यꣳस्तानि प्राविशꣳस्तेभ्यो यद्यदछदयत् तेनात्मानमछादयन्त, तच्छन्दसां छन्दस्त्वम्। √'छदि् *अपवारणे*'। मै०सं० ३.४.७

६. यच्छन्दोभिश्छन्नस्तस्माच्छन्दांसीत्याचक्षते। √'छदि् *संवरणे*'। ऐ०आ० २.१.६

७. छादयन्ति ह वा एनं छन्दांसि पापात्कर्मणो यस्यां कस्यांचिद्दिशि कामयते य एवमेतच्छन्दसां छन्दस्त्वं वेद इति। √'छादय्'। ऐ०आ० २.१.६

८. यदेभिरच्छादयꣳस्तच्छन्दसां छन्दस्त्वम्। √'छदि् *संवरणे*'। छा०उप० १.४.२

९. छन्दांसि छादनात्। √'छद्'। निरु० ७.१२

१०. छन्दः (स्तोता)। √छन्दतिरर्चतिकर्मा। 'छद आच्छादने'। आच्छादयति स्तोत्रैः। √'छन्द्'+ *असुन्*'। निघ० ३.१६.१०

११. चन्देरादेश्च छः। (चन्दयति आह्लादयति चन्द्यतेऽनेन वा।) √'चन्द्'+ *असुन्*> चन्दस्> छन्दस्'। उणा० ४.२२०

छन्दस्य

१. अन्नं वा एकञ्छन्दस्यमन्नꣳह्येकं भूतेभ्यश्छदयति। √'छद्'। मै०सं० २.६.१३

छन्दोम

१. तद्यच्छन्दोमितास्तस्माच्छन्दोमाः। 'छन्दस्+ √'*मा*'+ *क्त*'। कौ०ब्रा० २६.७

२. तद्यच्छन्देभ्यो निरमिमीत तच्छन्दोमानां छन्दोमत्वम्। 'छन्दस्+ √'*मा*'+ *क्त*'। जै०ब्रा० ३.१७३

छर्दिस्

१. छर्दिः (गृहम्)। √छर्द सन्दीपने'। संदीप्यते शालया। √'छर्द्'+ *इसि*'। निघ० ३.४.१८

२. अर्चिशुचिहुसृपिछादिछर्दिभ्य इसिः। √'छर्द्+ *इसि*'। उणा० २.११०

छाया

१. छाया (गृहम्)। √छो' छेदने'। वृत्तिवदर्थः। √'छो'+ *य*> *छाया*'। निघ० ३.४.२०

२. छायाकारत्वाद्वा छाया। निघ० ३.४.२०

३. माछाशसिभ्यो यः। √'छो'+ *य*'। उणा० ४.११०

जगत्

१. **जगन्मनो जगाम** दूरकम्। √'*गम्*'। ऋ० १०.५८.१०

२. इयं (पृथिवी) वै जगत्यस्याꣳ हीदꣳसर्वं जगत्। √'*गम्*'। शत०ब्रा० ६.२.१.२९, २.३२

३. जगत्, जङ्गमम्। √'*गम्*'। निरु० ९.१३; १२.६

४. जगतः (मनुष्याः)। √'गम्लृ गतौ'। गच्छति ग्रामात् ग्रामान्तरम्। √'*गम्*'+ *क्विप्*'। निघ० २.३.२१

५. वर्त्तमाने पृषद्बृहन्महज्जगच्छतृवच्च। √'*गम्*'+ *अति*' *(निपातनात्)*। उणा० २.८५

जगती

१. जगती गततमं छन्दः। जज्जगतिर्भवति क्षिप्रगतिर्जल्मला कुर्वन्नसृजतेति हि ब्राह्मणम्। √'*गम्*'+ *क्त*+ *तमप्*'। दै०ब्रा० ३.१७.(द्र० ७.१३)

२. जज्जलाकुर्वन्नसृजतेति हि ब्राह्मणम्। '*गम्*'। दै०ब्रा० ३.१८

३. तदिदꣳ सर्वं जगदस्यां तेनेयं जगती। '*गम्*'। शत०ब्रा० १.८.२.११

४. इयं वै जगत्यस्याꣳ हीदꣳ सर्वं जगत्। '*गम्*'। शत०ब्रा० १.८.२.११

५. जगती गततमं छन्दः। √'*गम्*'+ *क्त*+ *तमप्*> *गततम*> *जगत्*> *जगती*'। निरु० ७.१३

६. जलचरगतिर्वा। '*जलचर*+ *गति*> *जगती*'। निरु० ७.१३

७. जल्गल्यमानोऽसृजदिति च ब्राह्मणम्। √'*गल* *अदने*' *या* √'*गल* *स्रवणे*'। निरु० ७.१३

८. जगती (गौः)। मनुष्यनामसु 'जगतः' इत्यत्र व्याख्यातम्। गम्यते तदर्थिभिः। जगत्या छन्दसा आहार्यत्वाद् अत्राहार्याहरण्ययोरभेदेन वा जगती। √'*गम्*'+ *क्विप्*'। निघ० २.११.८

९. पूर्वेभ्यो छन्दोभ्यो महत्त्वात् गततमत्त्वम्। अतिशयेन गन्तव्यं छन्दः। '*गम्*'। सा०भा०, दै०ब्रा० ३.७

जगुरि

१. जगुरिः जङ्गम्यते। √'*गम्*'। निरु० ११.२५

जग्मानः

१. जग्मानः, सञ्जग्मानः संगच्छमानः। √'*गम्*'। निरु० ४.१२

जघन

१. आ **जङ्घन्ति** सान्वेषां **जघनाँ जघन** उप **जिघ्नते**। √'*हन्*'। ऋ० ६.७५.१३

२. जघनं जङ्घन्यते। √'*हन्*'। निरु० ९.२०

३. हन्तेः शरीरावयवे द्वे च। √'*हन्*'+ *अच्*> *हन्*+ *हन्*+ *अ*> *जघन*'। उणा० ५.३२

जङ्घन्ति

१. जङ्घन्ति, घ्नन्ति। √'*हन्*'। निरु० ९.२०

जज्झती

१. जज्झतीरापो भवन्ति शब्दकारिण्यः। √'*जज्झ्*'। निरु० ६.१६

जठर

१. जठरमुदरं भवति, जग्धमस्मिन् ध्रियते। '*जग्ध*+ √'*धृ*'। निरु० ४.७

२. धीयते वा। '*जग्ध*+ √'*धा*'। निरु० ४.७

३. जनेररष्ठ च। √'*जन्*+ *अरस्*> *जनर्*> *जठर*'। उणा० ५.३८

जन

१. **जने जनय** विश्ववारे। √'*जन्*'। ऋ० १.११३.१९

२. **जनस्य** गोपा **अजनिष्ट** जागृविः। √'*जन्*'। ऋ० ५.११.१, सा०उ० ९०७, यजु० १५.२७

३. जातं शृणोमि यशसं जनेषु। √'*जन्*'। ऋ० ५.३२.११

४. **जनाय** विभ्वतष्टं **जनयथाः** यजत्राः। √'*जन्*'। ऋ० ५.५८.४

५. **जनया** दैव्यं **जनम्**। √'*जन्*'। ऋ० १०.५३.६

६. **जनानामासत्रा** पात्रं **जनयन्त** देवाः। √'*जन्*'। यजु० ७.२४, ३३.८, सापू० १.७.५, सा०उ० ११४०

७. सऽ एव **जातः** स **जनिष्यमाणः** प्रत्यङ् जनास्तिष्ठति सर्वतोमुखः। √'*जन्*'। ऋ० ३२.४

जनश्री

१. जनश्रियं जातश्रियम्। √'*जन्*'+ *क्त*+ *श्री*'। निरु० ६.४

जनत्री

१. जनत्री जनयित्र्यौ। 'जनयित्री> जनत्री'। निरु० ८.१४

जनास

१. यो अश्मनोरन्तरग्निं **जजान** संवृक् समत्सु स **जनास** इन्द्रः। √'*जन्*'। ऋ० २.१२.३, अथर्व० २०.३४.२

२. यः सूर्यं य उषसं **जजान** यो अपां नेता स **जनास** इन्द्रः। √'*जन्*'। ऋ० २.१२.७, अथर्व० २०.३४.७

जनि, जनी

१. यमो ह **जातो** यमो **जनित्वं** जारः कनीनां पतिर्**जनीनाम्**। √'*जन्*'। ऋ० १.६६.४

२. विश्वे देवा अदितिः **पञ्चजना** अदितिर्**जातमदितिर्जनित्वम्**। √'*जन्*'। ऋ० १.८९.१०

३. अहं **प्रजा अजनयं** पृथिव्यामहं **जनिभ्यो** अपरीषु **पुत्रान्**। √'*जन्*'। ऋ० १०.१८३.३

४. आपो वै जनयोऽद्भ्यो हीदꣳसर्वं जायते। √'*जन्*'। शत०ब्रा० ६.८.२.३

५. जनीनाम्, जायानाम्। √'*जन्*' *(अर्थनिर्वचनम्)*। निरु० १०.२१, १२.४६

जनित्व

१. विश्वे देवा अदितिः **पञ्चजना** अदितिर्**जातमदिति-र्जनित्वम्**। √'*जन्*'। ऋ० १.८९.१०

२. जनित्वम्, जनिष्यमाणम्। √'*जन्*'। निरु० १०.२१

जनिता

१. अधा हि त्वा **जनिता जीजनद्वसो** रक्षोहणं त्वा **जीजनद्वसो**। √'*जन्*'। ऋ० १.२९.११

२. उदुस्रिया **जनिता** यो **जजान**। √'*जन्*'। ऋ० ३.१.१२

३. कियत्पितुर्**जनितुर्यो जजान**। √'*जन्*'। ऋ० ४.१७.१२

४. केतुं **जनिता** त्वा **जजान**। √'*जन्*'। ऋ० १०.२.६

५. हिरण्यरूपं **जनिता जजान**। √'*जन्*'। ऋ० १०.२०.९

६. अशत्रुं हि मा **जनिता जजान**। √'*जन्*'। ऋ० १०.२८.६

जनित्र, जनित्री

१. देवी **जनित्र्यजीजनद्** भद्रा **जनित्र्यजीजनत्**। √'जन्'। ऋ० १०.१३४.१—६, सा०पू० ४.३.१०, सा०उ० १०९०—९२

२. **जनित्रः** सुरया मूत्राज्जनयन्त रेतः। √'जन्'। यजु० १९.८४

३. ये जाता उत वा ये **जनित्राः**। √'जन्'। अथर्व० २.२८.३

जनिमा

१. त्वष्टा यं त्वा सु**जनिमा** जजान। √'जन्'। ऋ० १०.२.७

२. वसूनि जातो **जनिमान्योजसा**। √'जन्'। सा०उ० १३१९

जनुष

१. सुजातासो **जनुषा** पृश्निमातरः। √'जन्'। ऋ० ५.५९.६

२. जनुषम्, जन्म। √'जन्'। *(अर्थनिर्वचनम्)*। निरु० ९.४

जन्तु

१. उत ब्रुवन्तु **जन्तव** उदग्निर्वृत्रहाजनि। √'जनी'। ऋ० १.७४.३

२. स पूर्वव**ज्जनयञ्जन्तवे** धनं समानम्। √'जन्'। ऋ० ३.२.१२

३. अर्हन्तश्चिद्यमिन्धते **संजनयन्तिजन्तवः**। √'जन्'। ऋ० ५.७.२

४. जन्तवः (मनुष्याः)। √'जनी प्रादुर्भावे'। जायन्ते जन्तवः। √'जन्'+ तु'। निघ० २.३.४

५. कमिमनिजनिगाभायाहिभ्यश्च। √'जन्'+ तु'। उणा० १.७३

जन्मन्

१. जन्म (उदकम्)। √'जनी प्रादुर्भावे'। जायते सृष्टिकाले स्वकारणात्। √'जन्'+ *मनिन्*'। निघ० १.१२.१८

२. जायन्ते वास्मिन् जलचारिणो मत्स्यादयः। √'जन्'+ *मनिन्*'। निघ० १.१२.१८

३. जन्मनि, जातानि। √'जन्'। निरु० १२.२३

जन्य

१. तुरीयं स्विज्ज**नयद्विश्वजन्यः**। √'जन्'। ऋ० १०.६७.१

जप

१. यज्जपं जपित्वाऽभिहिङ्कृणोति। √''जप्'। गो०ब्रा० १.३.९

जबारु

१. जबारु जवमानरोहि। √'जू'+ *शानच्*+ √'रुह्'। निरु० ६.१७

२. जरमाणरोहि। √'जॄ'+ *शानच्*+ रुह्'। निरु० ६.१७

३. गरमाणरोहीति वा। √'गॄ'+ *शानच्*+ √'रुह्'। निरु० ६.१७

जभार

१. जभार, जहार। √'हृ'। निरु० १०.१२

जमदग्नि

१. चक्षुर्वै जमदग्निर्ऋषिः यदेनेन जगत्पश्यत्यथो मनुते तस्माच्चक्षुर्जमदग्नि र्ऋषिः। *(अर्थनिर्वचनम्)*। शत०ब्रा० ८.१.२.३

२. जमदग्नयः प्रजमिताग्नयो वा। √'जमु अदने'+ अति>जमत्, जमत्+अग्नि> जमदग्नि'। निरु० ७.२४

३. प्रज्वलिताग्नयो वा। 'जमत् (निघ० १.१७.१, ज्वलतो नामधेयम्)+अग्नि>जमदग्नि'। निरु० ७.२४

जय

१. यज्जयैर् (देवा असुरान्) अजयन् तज्जयानां जयत्वम्। √'जि'। तै०सं० ३.४.६.२ (तु०तै०रु० ३.४.४.२)

जरा

१. जरा स्तुतिः, जरतेः स्तुतिकर्मणः। √'जॄ'। निरु० १०.८

जराबोधीय

१. तं ह स्मैतेन साम्ना प्रातर्बोधयति। जार बुध्यस्वेति तदेव जराबोधीयस्य जराबोधीयत्वम्। 'जरा+ √'बुध्'। जै०ब्रा० ३.१९७

जरायु

१. जरायुर्जरया गर्भस्य। 'जरा> जरायु'। निरु० १०.३९

२. जरया यूयते वा। 'जरा+ √'यु'। निरु० १०.३९

३. किंजरयोः श्रिणः। √'जॄ'+ *ञुण्*'। उणा० १.४

जरितृ

१. वाय उक्थेभिर्जरन्ते त्वामच्छा **जरितारः**। √'जॄ' या √'जॄ'। ऋ० १.२.२

२. जरिता गरिता। √'गॄ'। निरु० १.७

३. जरिता (स्तोता)। जरतेरर्चतिकर्मणः। √'जृ' या √'जॄ'। निघ० ३.१६.२

जरूथ

१. जरूथं गरूथं गृणातेः। √'गॄ'। निरु० ६.१७

२. ज+वृञ्भ्यामूथन्। √'जॄ'+ ऊथन्'। उणा० २.६

जर्भृत्

१. विजर्भृतः, विह्रियते। √'हृ'। निरु० ९.३६

जल

१. जलम् (उदकम्)। √'जल घातने'। जलति शीतं भवति। √'जल्'। निघ० १.१२.९९

२. यद्वा, √'जन्'+√'ला'। जायत इति जः। जैः जातैः प्राणिभिः लायते आदीयते इति जलम्। √'जन्'+ ड+ √'ला'>जल'। निघ० १.१२.९९

जलाष

१. जलाषम् (उदकम्)। जशब्दोपपदेः लषेः। जैः जातैः लष्यते वाञ्छ्यते इति जलाषम्। √'जन्'+ ड+ √'लष्' घञ्> जलाष'। निघ० १.१२.१००

२. यद्वा, जलाषमिति सुखनाम, सुखहेतुत्वादपां तद्धेतौ ताच्छब्द्यम्। निघ० १.१२.१००

३. जलाषम् (सुखम्)। व्याख्यातमुदकनामसु। निघ० ३.६.१४

जल्हु

१. जल्हवः ज्वलनेन हीनाः। अस्त्यस्मासु ब्रह्मचर्यमध्ययनं तपो दानकर्मेत्यृषिरवोचत्। √'ज्वल्'+ √'हा'+ कु> जल्हु'। निरु० ६.२५

जसुरि

१. जसुरिः जस्तमिव। √'जस्'। निरु० ४.२४

२. जसिसहोरुरिन्। √'जस्'+ उरिन्'। उणा० २.७४

जहा

१. जहा जघानेत्यर्थ। √'हन्'। निरु० ४.१

जा

१. जाः (अपत्यम्)। √'जनी प्रादुर्भावे'। जायते मातृपितृभ्यां सकाशात्। √'जन्'+ ड+ टाप्'। निघ० २.२.९

जागृवि

१. जागृविर्जागरणात्। √'जागृ'। निरु० ९८

२. जॄशॄस्तॄजागृभ्यः क्विन्। √'जागृ'+ क्विन्'। उणा० ४.५५

जातरूप

१. जातरूपम् (हिरण्यम्)। √'जनी प्रादुर्भावे'+√'रुच दीप्तौ'। रोचते रूपम्। अनाहार्यतया जातं रूपमस्य जातरूपम्। √'जन्'+ क्त+ √'रूच्'+ प'। निघ० १.२.१५

२. जातं रूपं सौन्दर्यमनेन धारयितॄणामिति वा जातरूपम्। √'जन्'+ क्त+ √'रूच्'+ प'। निघ० १.२.१५

जातवेदस्

१. त्वं **वेत्थ** यति ते **जातवेदः**। 'जात+ √'विद्'। ऋ० १०.१५.१३

२. त्वं तान् **वेत्थ** यदि ते **जातवेदः**। 'जात+ √'विद्'। अथर्व० १८.२.३५

३. तद्यज्जातं जातं विन्दते तस्माज्जातवेदाः। 'जात+ √'विद्लृ लाभे'। शत०ब्रा० ९.५.१.६८

४. प्राणो वै जातवेदाः स हि जातानां वेद। 'जात+ √'विद् ज्ञाने'। ऐ०ब्रा० २.३९

५. यज्जातः पशूनविन्दत तज्जातवेदसो जातवेदस्त्वम्। 'जात+ √'विद्लृ लाभे'। मै०सं० १.८.२

६. सोऽब्रवीज्जाता वै प्रजा अनेनाविदामिति यदब्रवीज्जाता वै प्रजा अनेनाविदामिति तज्जातवेदस्यमभवत् तज्जातवेदसो जातवेदस्त्वम्। 'जात+ √'विद् ज्ञाने'। ऐ०ब्रा० ३.३६

७. जातवेदाः कस्मात्। जातानि वेद, जातानि वैनं विदुः। 'जात+ √'विद् ज्ञाने'। निरु० ७.१९

८. जाते जाते विद्यत इति वा। 'जात+ √'विद् सत्तायाम्'। निरु० ७.१९

९. जातवित्तो वा जातधनः। जात+ √'विद्लृ लाभे'। निरु० ७.१९

१०. जातविद्यो वा जातप्रज्ञानः। जात+ √'विद् ज्ञाने'। निरु० ७.१९

जात्री

१. **जातं जात्रीर्यथा हृदा**। √'जन्'। अथर्व० २०.४८.२

जान (जन्मस्थान)

१. विद्म वै ते **जायान्य जानं** यतो **जायान्य जायसे**। √'जन्'। अथर्व० ७.७६.५

जाम

१. **जनयन्योषां** बृहतः पितुर्**जाम**। √'जन्'। सा०उ० १५४७

जामातृ

१. जामाता जा अपत्यं तन्निर्माता। √'जन्'+ ड+ मातृ'। निरु० ६.९

२. नप्तृनेष्टृत्वष्टृहोतृपोतृभ्रातृजामातृमातृपितृदुहितृ। 'जाया+√'मा' या √'मृज्' *(निपातनात्)*। उणा० २.९७

जामि

१. कस्ते **जामिर्जनानाम**ग्ने को दाश्वध्वरः। √'*जनी*'। ऋ० १.७५.३

२. त्वं **जामिर्जनाना**मग्ने मित्रो असि प्रियः। √'*जन्*'। ऋ० १.७५.४

३. जामिरन्येऽ स्यां जनयन्ति जामपत्यम्। √'जन्'। निरु० ३.६

४. जमतेर्वा स्याद्गतिकर्मणो निर्गमनप्राया भवन्ति। √'जम्'। निरु० ३.६

५. जाम्यतिरेकनाम। बालिशस्य वा। समानजातीयस्य वोपजनः। *(अर्थनिर्देशमात्रम्)*। निरु० ४.२०

६. तद्यत्सामान्यामृचि समानाभिव्याहारं भवति तज्जामि भवतीत्येकम्। ....यदेव समानपादे समानाभिव्याहारं भवति तज्जामि भवतीत्यपरम्। *(अर्थनिर्देशमात्रम्)*। निरु० १०.१६

७. जामि (उदकम्)। जमतेर्गतिकर्मणः। जमति गच्छति निम्नप्रदेशं गम्यते वा जलार्थिभिः। √'जम्'+ इञ्'। निघ० १.१२.२८

८. यद्वा, √'जनीं' प्रादुर्भावे'। जायतेऽस्मात् पृथिव्यादि, जायते वा स्वकारणात्। √'जन्'+ इण्'। निघ० १.१२.२८

९. जामयः (अंगुलयः)। जमतेर्गतिकर्मणः। जमन्ति गच्छन्ति कर्माणि प्रति, अदन्त्याभिरन्नादीनि वा। √'जम्'+ इञ्'। निघ० २.५.१४

१०. जनेरेव वा। जाताः स्वकारणात्। √'जन्'+ इण्'। निघ० २.५.१४

जाया

१. विद्म वैते **जायान्य जानं** यतो **जायान्य जायसे**। √'जन्'। अथर्व० ७.७६.५

२. तद्यदब्रवीद् (ब्रह्म) आभिर्वा अहमिदं सर्वं जनिष्यामि यदिदं किञ्चेति, तस्माज्जाया अभवंस्तज्जायानां जायात्वं यच्चासु पुरुषो जायते। √'जन्'। गो०ब्रा० १.१.२

३. अर्धो ह वाऽएष आत्मनो यज्जाया तस्माद्यावज्जायां न विन्दते नैव तावत्प्रजायतेऽसर्वो हि तावद्भवति, अथ यदैव जायां विन्दतेऽथ प्रजायते। √'जन्'। शत०ब्रा० ५.२.१.१०

४. तस्माज्जायाया अन्ते नाश्नीयाद् वीर्यवान् हास्माज्जायते वीर्यवन्तमु ह सा जनयति यस्या अन्ते नाश्नाति। √'जन्'। शत०ब्रा० १०.५.२.९

५. पतिर्जायां प्रविशति गर्भो भूत्वा स मातरं तस्यां पुनर्भवो भूत्वा दशमे मासि जायते तज्जाया जाया भवति, यदस्यां जायते पुनः। √'जन्'। ऐ०ब्रा० ७.१३

६. जनेर्यक्। √'जन्'+ यक्'। उणा० ४.११२

जार

१. आदित्योऽत्र जार उच्यते। रात्रेर्जरयिता। अपि त्वयं मनुष्यजार एवाभिप्रेतः स्यात्। √'जॄ'। निरु० ३.१६

२. जारः, जरयिता। √'जॄ'। निरु० ५.२४.१०.२१

जारयायि

१. जारयायि, अजायि। √'जन्'। निरु० ६.१५

जाल

१. जालं जलचरं भवति। *'जल+ अण्> जाल'*। निरु० ६.२७

२. जले भवं वा। *'जल+ अण्> जाल'*। निरु० ६.२७

३. जलेशयं वा। *'जल+ अण्> जाल'*। निरु० ६.२७

जित

१. ग्रामजितं गोजितं वज्रबाहुं **जयन्तम्**। √'*जि*'। अथर्व० १९.१३.६

जिति

१. जितिम् अजयत्। √'*जि*'। जै०ब्रा० १.३

२. जितिं जयति.......जयति तां जितिम्। √'जि'। जै०ब्रा० ३.३५८

जिष्णु

१. **जेषि जिष्णो** हितं धनम्। √'जि'। ऋ० ६.४५.१५

२. जयांश्च जिष्णुश्चामित्राँ जयताम्। √'जि'। अथर्व० ११.९.१८

जिह्म

१. जिह्मं जिहीतेः। √'ओहाङ् गतौ'। निरु० ८.१५

जिह्वा

१. **विजेहमानः** परशुर्न **जिह्वाम्**। √'जेह्'। ऋ० ६.३.४

२. जिह्वा जोहुवा। √'ह्वे' या √'हु'। निरु० ५.२६

३. जिह्वा (वाक्)। √'लिह् आस्वादने'। लेढ्या-स्वादयत्यनया ग्रन्थविषयावसारान्। √'लिह्'+व> लिह्व>जिह्व>जिह्वा'। निघ० १.११.२९

४. यद्वा, आह्वयतेः। जोहुवाति पुनः पुनराह्वयति शब्दं करोति रसान् वादत्ते। √'ह्वे'+यङ्>ह्वे+ह्वे+य> जोहुवा>जिह्वा'। निघ० १.११.२९

५. यद्वा, जुहोतेः। जुहोत्यस्यामात्मनि। √'हु'+यङ्>हु+ हु+य>जोहुवा>जिह्वा'। निघ० १.११.२९

जीराः

१. जीराः (क्षिप्रम्)। जवतिर्गतिकर्मा। √'जु'। निघ० २.१५.५

२. जोरी च। √'जु'+ रक्+ईकारादेशः'। उणा० २.२४

जीव

१. **जीवा** स्थ **जीव्यासं** सर्वमायुर्**जीव्यासम्**। √'जीव्'। अथर्व० १९.६९.१—४

२. इन्द्र **जीव** सूर्य **जीव** देवा **जीवा** **जीव्यासमहम्**। सर्वमायुर्**जीव्यासम्**। √'जीव्'। अथर्व० १९.७०.१

जीवसे

१. जीवसे, जीवनाय। √'जीव्'। निरु० १२.३९

जीवातवे

१. जीवातवे, जीवनाय। √'जीव्'। निरु० १०.४०

जुष्टि

१. वृद्धायुमनु वृद्धयो **जुष्टा** भवन्तु **जुष्टयः**। √'जुष्'। ऋ० १.१०.१२

जुहू

१. जुह्वा वै देवा विराजमह्वयः स्तज्जुह्वा जुहूत्वम्। √'ह्वे'। काठ० १८.१९, कपि०क०सं० ,२९.७

जुह्वा

१. अनूनमग्निं **जुह्वा** वचस्या मधुपृचं धनसा **जोहवीमि**। √'हु'। ऋ० २.१०.६

२. सनाद्राजभ्यो **जुह्वा** **जुहोमि**। √'हु'। ऋ० २.२७.१, यजु० ३४.५४

जुहोति

१. जुहोतिर्दानकर्मा। √'हु'। निरु० १०.२२

जू

१. येन नपातमपां **जुनाम** मनोजुवः। √'जु'। ऋ० १.१८६.५

जूर्णि

१. अग्रेरेभो न जरत ऋषूणां **जूर्णिर्होत** ऋषिणाम्। √'जरते' *(नैघण्टुक धातुः)*। ऋ० १.१२७.१०

२. जूर्णिर्जवतेर्वा। √'जु'। निरु० ६.४

३. द्रवतेर्वा। √'दु'। निरु० ६.४

४. दुनोतेर्वा। √'दु'। निरु० ६.४

५. जूर्णिः (क्रोधः)। जूर्णिर्जवतेर्वा द्रवतेर्वा जीर्यतेर्वा (निरु० ६.४)। गच्छत्यनेन दुःखं, लोकगर्हां वा हिनस्ति परान् वा। *(पूर्ववत्)*। निघ० २.१३.९

६. जूर्णिः (क्षिपम्)। व्याख्यातं क्रोधनामसु। *(पूर्ववत्)*। निघ० २.१५.६

७. वीज्याज्वरिभ्यो निः। √'ज्वर्'+ नि'। उणा० ४.४९

जेत्व

१. आस्थाता ते जयतु **जेत्वानि**। √'जि'। ऋ० ६.४७.२६, यजु० २९.५२, अथर्व० ६.१२५.१

२. जेत्वानि, जेतव्यानि। √'जि'। निरु० ९.१२

जेन्य

१. **जनिष्ट** हि **जेन्यो** अग्रे अह्नाम्। √'जन्'। ऋ० ५.१.५

जेमन्

१. जेमने जयमने। √'*जि*'। निरु० १३.५

जोषवाक्

१. जोषवाक्यमित्यविज्ञातनामधेयं जोषयितव्यं भवति। √'*जुष्*'+ *घञ्*+ √'*वच्*'+ *घञ्*'। निरु० ५.२१

ज्ञा

१. रायो दुरो व्यृतज्ञा अजानन्। √'*ज्ञा*'। ऋ० १.७२.८

ज्ञाता

१. ज्ञाता कस्मात्। ज्ञायते:। √'*ज्ञा*'। निरु० १४.१०

ज्ञाति

१. ज्ञाति: संज्ञानात्। √'*ज्ञा*'। निरु० ४.२१

ज्मा

१. ज्मा (पृथिवी)। जमतिर्गतिकर्मा। गतौ पूर्ववदर्थ:। √'*जम्*'। निघ० १.१.३

२. यद्वा, √'जमु अदने'। अदन्ति वास्यां भूतानि। √'*जम्*'। निघ० १.१.३

३. यद्वा, √'जनी प्रादुर्भावे'। जातानि वा स्वकारणात्, जायन्ते वास्यां ओषधय:। √'*जन्*'। निघ० १.१.३

४. यद्वा, √'*अञ्जू* व्यक्तिम्रक्षणकान्तिगतिषु'। व्यक्ता सर्वेषां प्रत्यक्षा न ह्याकाशादिवदव्यक्ता पृथिवी। अक्ता सिक्ता भवति वृषेण। √'*अञ्ज्*'। निघ० १.१.३

ज्या

१. ज्या जयतेर्वा। √'*जि*'। निरु० ९.१७

२. जिनातेर्वा। √'*ज्या*'। निरु० ९.१७

३. प्रजावयतीषून् वा। √'*जावय्*'। निरु० ६.१७

ज्यानि

१. न च प्राणं रुणद्धि सर्वज्यानि जीयते। √'*ज्या*'। अथर्व० ११.३.५५

२. न च सर्वज्यानि जीयते। √'*ज्या*'। अथर्व० ११.३.५६

ज्योतिस्

१. *अथावद्योतयति.........*ज्योति इति। √'*द्युत*' दीप्तौ'। जै०ब्रा० १.३९

ज्योतिष

१. यद्वै तज्ज्योतिरभवत्तत् ज्योतिषो ज्योतिष्ट्वम्। *ज्योतिस्> ज्योतिष*'। ता०ब्रा० १६.१.१

ज्योतिष्टोम

१. अथ यदेनमूर्ध्वं सन्तं ज्योतिर्भूतमस्तुवंस्तस्माज्ज्योति: स्तोमस्तं ज्योति: स्तोमं सन्तं ज्योतिष्टोमित्याचक्षते। '*ज्योतिस्*+ √'*स्तु*'। ऐ०ब्रा० ३.४३

२. अथो यद्यज्ञस्संस्तुतो विराजमभिसंपद्यते, ज्योतिर्विराट् तस्माद् ज्योतिष्टोम इत्याख्यायते। '*ज्योतिस्*+ √'*स्तु*'। जै०ब्रा० १.६६

३. किञ्ज्योतिष्टोमस्य ज्योतिष्टोमत्वमित्याहुर्विराजꣳ-सꣳस्तुत: सम्पद्यते विराड् वै छन्दसां ज्योति:। '*ज्योतिस्*+ √'*स्तु*'। ता०ब्रा० ६.३.६

४. तस्माद्यो विराजꣳस्तोम: सम्पद्यते तं ज्योतिष्टोमो ऽग्निष्टोम इत्याचक्षते। '*ज्योतिस्*+ √'*स्तु*'। ता०ब्रा० १०.२.२

५. स्तोमे ज्योतिर्दधत इति। तस्माज्ज्योतिष्टोम इत्याख्यायते। '*ज्योतिस्*+ *स्तोम*'। जै०ब्रा० १.६६

तक्मन्

१. तक्मेत्युष्णनाम, तकत इति सत:। √'*तक्*'। निरु० ११.२५

२. तक्म (अपत्यम्)। तकतेर्गतिकर्मण:। √'*तक्*'+ *मनिन्*'। निघ० २.२.५

३. तुचेर्गत्यर्थाद्वा। √'*तुच्*'+ *मनिन्*'। निघ० २.२.५

तक्वा

१. तक्वा (स्तेन:)। 'तकतिर्गतिकर्मा' अथवा 'तक सहने'। गच्छति मोषणार्थम्, मोषणेन वा सहते अभिभवति। √'*तक्*'+ *वनिप्*'। निघ० ३.२४.२

तक्षति

१. तक्षति: करोतिकर्मा। √'*तक्ष्*'। निरु० ४.१९

तडित्, तळित्

१. तळिदित्यन्तिकवधयो: संसृष्टकर्म। ताळयतीति सत:। √'*ताडय्*'। निरु० ३.१०

२. विद्युत्तळिद् भवतीति शाकपूणि:। सा ह्यवताळयति। √'*ताळय्*'। निरु० ३.११

३. ताडेर्णिलुक् च। √'*ताडय्*'+ *इति*'। उणा० १.९८

तत

१. **ततं** मे अपस्तदु **तायते** पुनः। √'*ताय्*'। ऋ० १.११०.१

२. यज्ञैरथर्वा प्रथमः पथस्तते ततः सूर्यो व्रतपा वेन आजनि। √'*तनु*' *विस्तारे*'। ऋ० १.८३.५

३. तत इति सन्ताननाम, पितुर्वा पुत्रस्य वा। √'*तन्*'। निरु० ६.६

४. तनिमृङ्भ्यां किच्च। √'*तन्*'+ *तन्*'। उणा० ३.८८

ततनुष्टि

१. ततनुष्टिं, तितनिषुं धर्मसन्तानादपेतमलंकरिष्णु-मयज्वानम्। √'*तन्*'+ *सन्*+ *क्तिच्*> *तितनिष्टि*> *ततनुष्टि*। निरु० ६.१९

ततुरि

१. सद्यो द्युम्ना **तिरते ततुरिः**। √'*तॄ*'। ऋ० ६.६८.७

२. उपहूतेडा ततुरिरिति। तदेनां प्रत्यक्षमुपह्वयते ततुरिरिति सर्वं॑ ह्येषा पाप्मानं तरति तस्मादाह ततुरिरिति। √'*तॄ*'। शत०ब्रा० १.८.१.२२

तनय

१. **तनुष्व** मीढ्वस्तोकाय **तनयाय** मृळ। √'*तन्*'। ऋ० २.३३.१४, यजु० १६.५०

२. तनयं तनोतेः। √'*तन्*'। निरु० १०.७

३. तनयम् (अपत्यम्)। √'तनु' विस्तारे'। कुलं तनोति विस्तारयति। √'*तन्*'+ *कयन्*'। निघ० २.२.३

४. वलिमलितनिभ्यः कयन्। √'*तन्*'+ *कयन्*'। उणा० ४.१००

तना

१. तना (धनम्)। √'तनु' विस्तारे'। तनोति विस्तारयति त्रिवर्गसाधनं हि धनम्। √'*तन्*'+ *अच्*'। निघ० २.१०.१९

तनूनपात्

१. प्राणो वै तनूनपात्, स हि तन्वः पाति। '*तनू*+ √'*पा*'। ऐ०ब्रा० २.४

२. तनूनपाद् आज्यमिति कात्थक्यः। नपादित्यननन्तरायाः प्रजाया नामधेयम्। निर्णततमा भवति। गौरत्र तनूरुच्यते। तता अस्यां भोगाः। तस्याः पयो जायते। पयस आज्यं जायते। '*तनू*+ *नपात्*'। निरु० ८.५

३. अग्निरिति शाकपूणिः आपोऽत्र तन्व उच्यन्ते। तता अन्तरिक्षे, ताभ्य ओषधिवनस्पतयो जायन्ते। ओषधिवनस्पतिभ्य एष जायते। '*तनू*+ *नपात्*'। निरु० ८.५

४. नपाच्छब्दः इह पौत्रे वर्तते। यद्वा नुतशब्दस्य नपाद्भावः। पुत्रापेक्षया नीचैः सुतरां नुतो हि पौत्रः। तनोतेः। तन्वन्त्यस्यां पय आदिभोगाः इति तनूः गोनाम। अस्याः पयो जायते। पयस आज्यामिति आज्यं तनूनपात्। √'*तन्*'+ *ऊ*+ √'*नु*'+ *क्त*> *नुत*> *तनू*+ *नपात्*> *तनूनपात्*'। निघ० ५.२.३

५. अथवा तता अन्तरिक्षे इति तन्वः आपः। ताभ्य ओषधिवनस्पतयो जायन्ते ओषधिवनस्पतिभ्यो ऽग्निर्जायते इति। अग्निस्तनूनपात्। (*पूर्ववत्*)। निघ० ५.२.३

तनूपा

१. **तनूपा**ऽअग्नेऽसि **तन्वं** मे **पाहि**। '*तन्व*+ √'*पा*'। यजु० ३.१७

तन्तु

१. **तन्तुं** तनुष्व सुतसोमाय दाशुषे। √'*तन्*'। ऋ० १.१४२.१

२. नव्यं नव्यं **तन्तुमा तन्वते**। √'*तन्*'। ऋ० १.१५९.४

३. **तन्तून्** वि **तत्निरे** कवय ओतवा उ। √'*तन्*'। ऋ० १.१६४.५

४. **तन्तुं** ततं संवयन्ती समीची। √'*तन्*'। ऋ० २.३.६

५. **तन्तुं** तनुष्व पूर्व्यं यथा विदे। √'*तन्*'। ऋ० ८.१३.१४

६. **तन्तुं** तन्वानमुत्तममनु प्रवत आशत। √'*तन्*'। ऋ० ९.२२.६

७. ततं **तन्तुमचिक्रदः**। √'*तन्*'। ऋ० ९.२२.७

८. **तन्तुं** ततं परि सर्गासः। √'*तन्*'। ऋ० ९.६९.६, सा०उ० १३७०

९. **तन्तुर्विततः** पवित्रे। √'*तन्*'। ऋ० ९.७३.९

१०. **तन्तुं** तन्वानस्त्रिवृतं यथा विदे। √'*तन्*'। ऋ० ९त्र८६.३२

११. **तन्तुं** तन्वन् रजसो भानुमन्विहि। √'*तन्*'। ऋ० १०.५३.६

१२. आवरेष्वदधुस्तन्तुमाततम्। √'*तन्*'। ऋ० १०.५६.६

१३. यो यज्ञस्य प्रसाधनस्तन्तुर्देवेष्वाततः। √'तन्'। ऋ० १०.५७.२

१४. यो यज्ञो विश्वतस्तन्तुभिस्ततः। √'तन्'। ऋ० १०.१३०.१

१५. चतुस्त्रिंशत् **तन्तवो** ये **वितत्निरे**। √'तन्'। यजु० ८.६१

१६. **तन्तुं ततं** पेशसा संवयन्ती। √'तन्'। यजु० २०.४१

१७. ऋतस्य **तन्तुं विततं** विचृत्य। √'तन्'। यजु० ३२.१२

१८. अमृतस्य **तन्तुं विततं** दृशेकम्। √'तन्'। अथर्व० २.१.५

१९. **तन्तुं ततमन्वेके** तरन्ति। √'तन्'। अथर्व० ६.१२२.२

२०. उस्त्रियस्त**न्तुमाततान**। √'तन्'। अथर्व० ९.४.१

२१. सप्त **तन्तून् वितत्निरे** कवयः। √'तन्'। अथर्व० ९.९.६

२२. **तन्तुरा तायतामिति**। √'तन्'। अथर्व० १०.२.१७

२३. तत्र **तन्तुं** परमेष्ठी **ततान**। √'तन्'। अथर्व० १३.१.६

२४. सितनिगमिमसिसच्याविधाञ्क्रुशिभ्यस्तुन्।
√'तन्'+ तुन्'। उणा० १.६९

तन्त्र

१. सिरीस्**तन्त्रं तन्वते** अप्रजज्ञयः। √'तन्'। ऋ० १०.७१.९

तन्यतु

१. तन्यतुस्तनित्री। √'तन्'। निरु० १२.३०

तन्व

१. अंहोयुवस्तन्वस्तन्वते। √'तन्'। ऋ० ५.१५.३

२. यत्र शूरासस्**तन्वो वितन्वते**। √'तन्'। ऋ० ६.४६.१२

तपनी

१. तेजिष्ठया **तपनी** रक्षसस्**तप**। √'तप्'। ऋ० २.२३.१४

तपस्

१. **तपा तपिष्ठ तपसा तपस्वान्**। √'तप्'। ऋ० ६.५.४

२. अजो भागस्**तपसा** तं **तपस्व** तं ते शोचिस्**तपतु** तं ते अर्चिः। √'तप्'। ऋ० १०.१६.४, अथर्व० १८.२.८

३. त्वं **तपः परितप्या** जयः स्वः। √'तप्'। ऋ० १०.१६७.१

४. भृगूणामङ्गिरसां **तपसा तप्यध्वम्**। √'तप्'। यजु० १.१८

५. अग्ने यत्ते **तपस्तेन** तं प्रति प्रति **तपत**। √'तप्'। अथर्व० २.१९.१, २०.१, २१.१, २२.१

६. आपो यद्वस्**तपस्तेन** तं प्रति **तपत**। √'तप्'। अथर्व० २.२३.१

७. एकाष्टका **तपसा तप्यमाना** जजान। √'तप्'। अथर्व० ३.१०.१२

८. यदग्ने **तपसा तप** उप **तप्यामहे** तपः। √'तप्'। अथर्व० ७.६१.१, २

९. **तपिष्ठस्तपसा तपैनम्**। √'तप्'। अथर्व० ११.१.१६

१०. संवत्सरो वाव तपो नवदशस्तस्य द्वादश मासाः षड् ऋतवः संवत्सर एव तपो नवदशस्तद्यत्तमाह तप इति संवत्सरो हि सर्वाणि तपति। √'तप्'। शत०ब्रा० ८.४.१.१४

११. अग्ने यत्ते तपस्तेन तं प्रतितप। √'तप्'। काठ० ६.९

१२. तपः (ज्वलतो नामधेयम्)। √'तप् सन्तापे'। अथवा √'तप् दाहे'। तपतीति शरीरादि। √'तप्'+ असुन्'। निघ० १.१७.७

तपस्वत्

१. **तपा तपिष्ठ तपसा तपस्वान्**। √'तप्'। ऋ० ६.५.४

तपिष्ठ

१. **तपा तपिष्ठ तपसा तपस्वान्**। √'तप्'। ऋ० ६.५.४

२. **तपिष्ठस्तपसा तपैनम्**। √'तप्'। अथर्व० ११.१.१६

३. **तपिष्ठा** ऋतुभिस्**तपन्तु**। √'तप्'। अथर्व० ११.१.१६

४. तपिष्ठैः तप्ततमैः। √'*तप्>तप्ततम> तपिष्ठ*'। निरु० ६.१२

५. तृप्ततमैः। √'*तप्>तृप्ततम> तपिष्ठ*'। निरु० ६.१२

६. प्रपिष्ठतमैरिति वा। √'*पिष्>पिष्ठतम> तपिष्ठ*'। निरु० ६.१२

तपुषि

१. तपुषिस्तपतेः। √'तप्'। निरु० ६.३

तपुस्

१. **तपुर्मूर्धा तपतु** रक्षसः। √'तप्'। ऋ० १०.१८२.३

२. **तपूंषि** तस्मै वृजिनानि सन्तु ब्रह्मद्विषं द्यौरभि**संतपाति**। √'तप्'। अथर्व० २.१२.६

३. तपुस्तप्यतेः। √'तप्'। निरु० ६.११

४. अर्तिप+वपियजितनिधनितपिभ्यो नित्। √'तप्'+ उसि'। उणा० २.११९

तप्तकुय:

१. तप्यन्तेऽस्मै कुयानिति तप्तकुय: स्वर्गे लोके प्रतितिष्ठति। √'*तप्*'+ *कुय*'। गो०ब्रा० २.६.१२

तप्ततम

१. तप्ततमै:, तृप्ततमै:। √'*तृप्*'। निरु० ६.१२

तप्यतु

१. सूर्य्यस्तपति तप्यतुर्वृथा। √'*तप्*'। ऋ० २.२४.९

तप्यमान

१. इह तप्यन्तां मयि तप्यमाने। √'*तप्*'। अथर्व० २.१२.१

तमस्

१. आद्रोदसी ज्योतिषा वह्निरातनोत् सीव्यन्तमांसि दुधिता समव्ययत्। √'*तन्*'। ऋ० २.१७.४

२. स इत्तमोऽवयुनं ततन्वत्। √'*तन्*'। ऋ० ६.२१.३

३. त्वमा ततन्थोर्वन्तरिक्षं त्वं ज्योतिषा वि तमो ववर्थ। √'*तन्*'। यजु० ३४.२२, सा०पू० ६.३.३

४. तमस्तनोते:। √'*तन्*'। निरु० २.१६

तमस्वती

१. तमस्वती (रात्रि:)। √'तमु' काङ्क्षायाम्'। ताम्यन्त्यनेनेति। तमो ऽन्धकारं तेन तद्वती। √'*तम्*'> *तमस्* > *तमस्*+ *मतुप्*> *तमस्वती*'। निघ० १.७.१५

तर

१. तर: (बलम्)। √'तॄ' प्लवनतरणयो:'। तरत्यनेन आपदम्। √'*तॄ*'+ *असुन्*। निघ० २.९.४

तरणि

१. तरणि: (क्षिप्रम्)। √'तरते:। तृषवदर्थ:। √'*तॄ*'+ *अनि*'। निघ० २.१५.२५

२. अर्तिसृधृधम्यम्यश्यवितृभ्योऽनि:। √'*तॄ*'+ *अनि*'। उणा० २.१०४

तरस्

१. यस्य तरेम तरसा शतं हिमा:। √'*तॄ*'। ऋ० ५.५४.१९

तरस्वती

१. तरस्वत्य: (नद्य:)। √'तॄ' प्लवनतरणयो:'। तरन्त्यनेनापदमिति तरो बलं, तद्वत्य:। √'*तॄ*'+ *असुन्*> *तरस्*> *मतुप्*> *तरस्वती*'। निघ० १.१३.३१

तरुतृ

१. एष (तार्क्ष्य: वायु:) वै सहावांस्तरुतैष हीमांल्लोकान् सद्यस्तरति। √'*तॄ*'। ऐ०ब्रा० ४.२०

२. तरुतारम्, तारयितारम्। √'*तारय्*+ *तृच्*'। निरु० १०.२८

तरुष्यति

१. तरुष्यतिर्हन्तिकर्मा। √'*तरुष्य*'। निरु० ५.२

तल

१. लततेर्वा स्याद् लम्बकर्मण: विपरीतात्। यथा तलम्। √'*लत*> *तल*'। निरु० ५.२६

तलित्

१. तलित् (अन्तिकम्)। √'तड' आघाते'। √'*तड्*'+ *इति*'। निघ० २.१६.१

तव

१. तव: (बलम्)। तवतिर्वधार्थ:। √'*तव्*'। निघ० २.९.५

तविष: तविषी

१. तविषी बलनाम, तवतेर्वृद्धिकर्मण:। √'*तव्*'। निरु० ९.२५

२. तविष: (महत्)। तवतेरेव। √'*तव्*'+ *टिषच्*'। निघ० ३.३.७

३. तविषी (बलम्)। तवि: सौत्रो धातुर्वृद्ध्यर्थ:। (पूर्ववत्)। निघ० २.९.१०

४. तवेर्णिद्वा। √'*तव्*+ *टिषच्*'। उणा० १.४८

तवस

१. तवस: (महत्)। तवतिर्वृद्ध्यर्थ:। √'*तव्*+ *असच्*'। निघ० ३.३.६

तष्टा

१. तष्टेव, तक्ष्णुवन्निव। √'*तक्ष्*'। निरु० ५.२१

तस्कर

१. तस्करस्तत् करोति, यत्पापकमिति नैरुक्ता:। '*तत्*+ √'*कृ*'। निरु० ३.१४

२. तनोतेर्वा स्यात्, सन्ततकर्मा भवति, अहोरात्रकर्मा वा। √'*तन्*'। निरु० ३.१४

३. तस्कर: (स्तेन:)। '*तत्*+ √'*कृ*'। तत् करोतीति। 'करोति यत् पापकम्' इति नैरुक्ता:। '*तत्*+ √'*कृ*'+ *ट*'। निघ० ३.२४.८

४. तनोतेर्वा स्यात् सन्तानकर्मेति सम्मतम्। दिवा पथि मोषणेन, रात्रौ धनच्छेदनेन — इति स्कन्दस्वामी। √'*तन्*'+ *क्विप् अथवा* √'*तन्*'+ *डित्*'। निघ० ३.२४.८

५. तद्बृहतोः करपत्योश्चोरदेवतयोः सुट् तलोपश्च। '*तत्*+ *सुट्*+ *कर* > *तस्कर*'। अष्टा०वा० ६.१.१५७

तस्थुष

१. तस्थुषः स्थावरस्य। √'*स्था*'। निरु० १२.१६

२. तस्थुषः (मनुष्याः)। √'*ष्ठा* गतिनिवृत्तौ'। तिष्ठन्ति स्वस्मिन् धर्मे। √'*स्था*'+ *क्वसु*'। निघ० २.३.२२

ताजत्

१. ताजत् (क्षिप्रम्)। निपातः। (*निपातः*)। निघ० २.१५.२४

तात

१. एतां वाव प्रजापतिः प्रथमां वाचं व्याहरदेकाक्षरं द्व्यक्षरां ततेति तातेति। तथेवैतत् कुमारः प्रथमवादी वाचं व्याहरत्येकाक्षरद्व्यक्षरां ततेति तातेति। √'*तन्*' > *तत*> *तात*'। ऐ०आ० १.३.३

२. दुतनिभ्यां दीर्घश्च। √'*तन्*'+ *क्त*'। उणा० ३.९०

ताता (सत्य)

१. **तताना** रजांसि दाधार, यो धरुणं सत्यताता। √'*तन्*'। ऋ० १०.१११.४

ताति

१. सर्वताता, सर्वासु कर्मततिषु। *सर्व*+ √'*तन्*'। निरु० ११.२४

तामु:

१. तामुः (स्तोता)। 'स्तामुः' स्थाने केचित् 'तामुः' इति पठन्ति। √'*तमु* काङ्क्षायाम्'। कांक्षति स्तोतुम्। √'*तम्*'+ *उण्*'। निघ० ३.१६.५

ताम्र

१. ताम्रम् (रुपम्)। √'*तमु* काङ्क्षायाम्'। काङ्क्ष्यं हि तत्, तस्मात् ताम्रम्। √'*तम्*'+ *रक्*'। निघ० ३.७.१४

तायु

१. तायुरिति स्तेननाम। संस्त्यानमस्मिन् पापकमिति नैरुक्ताः। √'*स्त्या*'। निरु० ४.२४

२. तस्यतेर्वा स्यात्। √'*तसु* उपक्षये'। निरु० ४.२४

३. तायुः (स्तेनः)। '*तायृ* सन्तानपालनयोः'। पाल्यते यस्मात् सर्वम्। √'*ताय्*'+ *उण्*'। निघ० ३.२४.७

४. यद्वा, तसेरुपक्षयार्थात्। उपक्षीणोऽसाविह लोके आयुषा, यदा राज्ञा मारिष्यमाणत्वात्, परलोकेऽपि भ्रमणधर्मकत्वात् — इति स्कन्दस्वामी। √'*तस्*'+ *उण्*> *तासु*> *तायु*'। निघ० ३.२४.७

तारका

१. सलिलं वा इदमन्त (अन्तरिक्षे) आसीत् यदतरन् तत् तारकाणां तारकत्वम्। √'*तॄ*'। तै०सं० १.५.२.५

तार्क्ष्य

१. तार्क्ष्यस्त्वष्टा। तीर्णेऽन्तरिक्षे क्षियति। '*तीर्ण*+ √'*क्षि*'। निरु० १०.२७

२. तूर्णमर्थं रक्षति। '*तूर्ण*+ √'*रक्ष्*'। निरु० १०.२७

३. अश्नोतेर्वा। '*तूर्ण*+ √'*अश्*'। निरु० १०.२७

४. तार्क्ष्यः (अश्वः)। तूर्णशब्दादश्नोतेः। तूर्णमश्नुते। '*तूर्ण*+ √'*अश्*'। निघ० १.१४.१४

५. यद्वा, तीर्णेऽन्तरिक्षे क्षियतीति तार्क्ष्यः। तीर्णशब्दात् पूर्वपदम्, क्षियतेरुत्तरपदम्। अश्वो हि वेगवशादाकाशे गच्छन्निव हि दृश्यते प्रेक्षकैः। '*तीर्ण*+ √'*क्षि*'। निघ० १.१४.१४

६. यद्वा, वेगेन तार्क्ष्यसादृश्यात् तार्क्ष्य इत्युच्यते। '*तार्क्ष्यसादृश्यात्*> *तार्क्ष्य*'। निघ० १.१४.१४

७. तृक्षस्यापत्यं तार्क्ष्यः — इति क्षीरस्वामी। '*तृक्षस्यापत्यं तार्क्ष्य*'। निघ० १.१४.१४

तालु

१. तालुस्तरतेस्तीर्णतममङ्गम्। √'*तॄ*'+ *ञुण्*'> *तारु*> तालु'। निरु० ५.२६

२. लततेर्वा स्याद् लम्बकर्मणो विपरीतात्। यथा तलम्। √'*लत्*'+ *ञुण्*> *लातु*> तालु'। निरु० ५.२६

३. त्रो रश्च लः। √'*तॄ*'+ *ञुण्*' > *तारु*' > तालु'। उणा० १.५

तिग्म

१. **तेतिक्ते तिग्म** तुजसे अनीका। √'*तिज्*'। ऋ० ४.२३.७

२. तिग्मं तेजतेरुत्साहकर्मणः। √'*तिज्*'। निरु० १०.६

३. तिग्मम् (वज्रः)। √'*तिज* निशाने'। तिज्यते तीक्ष्णीक्रियते। √'*तिज्*'+ *मक्*'। निघ० २.२०.१४

४. युजिरुचितिजां कुश्च। √'*तिज्*'+ *मक्*। उणा० १.१४६

तितउ

१. तितउ परिपवनं भवति ततवद्वा। √'*तन्*'+ *क्त*+ *वति*> *ततवत्*> *तितवत्*> *तितउ*'। निरु० ४.९

२. तुन्नवद्वा। √'*तुद्*'+ *क्त*+ *वति*> *तुन्नवत्*> *तितवत्*> *तितउ*। निरु० ४.९

३. तिलमात्रतुन्नमिति वा। '*तिलमात्रतुन्न*> *तितुन्न*> *तितउ*'। निरु० ४.९

४. तनोतेर्ड उः सनवच्च। √'*तन्*'+ *उ*> *तन्*> *तन्*+ *उ*> *तितउ*'। उणा० ५.५२

तित्तिरि

१. तित्तिरिस्तरणात्। √'*तॄ*'+ *इ*> *तिरि*> *तित्तिरि*'। निरु० ३.१८

२. तिलमात्रचित्र इति वा। '*तिलचित्र* > *तित्* + *चित्र* > *तित्तिरि*'। निरु० ३.१८

तिरस्

१. तिरस्तीर्णं भवति। √'*तॄ*'। निरु० ३.२०

तीर्थ

१. **तीर्थैस्तरन्ति** प्रवतो महीरिति। √'*तॄ*'। अथर्व० १८.४.७

२. तीर्थेन हि प्रतरन्ति तद्यथा समुद्रं तीर्थेन प्रतरेयुः। √'*तॄ*'। गो०ब्रा० १.५.२

३. पातॄतुदिवचिरिचिसिचिभ्यस्थक्। √'*तॄ*'+ *थक्*'। उणा० २.७

तुक्

१. तुक् (अपत्यम्)। √'तुज' हिंसायाम्'। तोजति हिनस्ति मातापितरौ गर्भवासादिना। √'*तुज्*'+ *क्विप्*'। निघ० २.२.१

२. तुजिर्गत्यर्थः प्रेरणार्थश्च इति माधवः। गच्छत्यनेन पितृलोकं पिता गच्छत्यनेनानृण्यं पितृभ्य इति वा, प्रेर्य्यते प्रसवकाले वायुनापि वा। √'*तुज्*'+ *क्विप्*'। निघ० २.२.१

तुग्र्या

१. तुग्रया (उदकम्)। √'तुज' हिंसायाम्'। तुजन्ति हिंसन्ति तम औष्ण्येन जनानीति वा तुजो रश्मयः। तद्वान् तुग्र्यः। √'*तुज्*'+ *क्विप्*+ *र*' (*मत्वर्थीयः*)'। निघ० १.१२.२१

२. यद्वा, तुग्र आदित्यः, तत्र भवा तुग्र्या। √'*तुग्र*' > *तुग्र्या*'। निघ० १.१२.२१

३. तुग्रशब्देन ग्रीष्म उच्यते। अतिशयेनादित्य किरणवान् हि ग्रीष्मकालः। तत्र साधुः तुग्र्या। √'*तुग्र*' > *तुग्र्या*'। निघ० १.१२.२१

तुग्वन्

१. तुग्व तीर्थं भवति, तूर्णमेतदायन्ति। '*तूर्ण*+ √'*गम्*' + *वनिप्*'। निरु० ४.१५

तुजः

१. तुजः (वज्रः)। √'तुज' हिंसायाम्'। हेतिवदर्थः। √'*तुज्*'+ *अच्*'। निघ० २.२०.१३

तुज्यमानास

१. तुज्यमानासः (क्षिप्रम्)। √'तुज्' हिंसायाम्'। √'*तुज्*'+ *शानच्*'। निघ० २.१५.२०

तुञ्ज

१. तुञ्जस्तुञ्जतेर्दानकर्मणः। √'*तुञ्ज्*'। निरु० ६.१७

तुतुजि

१. तुतुजिः (क्षिप्रम्)। √'तुजि' हिंसायाम्'। तूर्णवदर्थः। √'*तुज्*'+ *किन्*> *तुज्*+ *तुज्*+ *इ*> *तुतुजि*'। निघ० २.१५.१८

तुर

१. तुरं यतीषु **तुरयन्नृ**जिप्यः। √'*तुर्*'। ऋ० ४.३८.७

२. तुर इति यमनाम, तरतेर्वा। √'*तॄ*'। निरु० १२.१४

३. त्वरतेर्वा। त्वरया तूर्णगतिर्यमः। √'*त्वर्*'। निरु० १२.१४

तुरण्यति

१. तुरण्यति, तूर्णमश्नुतेऽध्वानम्। √'*तुरण्*'। निरु० २.२८

तुरीप

१. तुरीपम्, तूर्णापि। '*तूर्ण*+ √'*आप्*'+ *कन्*> *तूर्णाप*> *तुराप*> *तुरीप*'। निरु० ६.२१

तुरीय

१. तुरीयं त्वरतेः। √'*त्वर्*'। निरु० १३.९

तुर्फरी

१. तुर्फरी क्षिप्रहन्तारौ। (*अर्थनिर्वचनम्*) √'*तृफ्*'+ *रि*'। निरु० १३.५

तुर्वणि

१. तुर्वणिस्तूर्णवनिः। '*तूर्ण+√'वन्'+ इन्> तूर्णवनि> तुर्वणि*'। निरु० ६.१४

तुर्वश

१. तुर्वशाः (मनुष्याः)। √'तुर्वी' हिंसायाम्। हिंसन्ति प्राणिनः, हिंस्यन्ते व्याध्यादिभिरिति वा। √'*तुर्व्+ अशच्*'। निघ० २.३.१५

२. यद्वा, √'तूर' त्वरणहिंसनयोः+ √अश्नोतेः'। तूर्णमश्नुवते। तूस्तूर्णमश्नुते। √'*तूर'+ क्विप्+ √'अश्*'। निघ० २.३.१५

३. यद्वा, √'वश' कान्तौ'। तुर्वशः काम एषमिति तुर्वशाः। √'*तूर'+ क्विप्+ √'वश्*'। निघ० २.३.१५

४. यद्वा, चतुर्षु धर्मार्थकाममोक्षेषु वश एषामिति चतुर्वशाः सन्तः= तुर्वशाः। (चकारलोपेन)। '*चतुर+ √'वश्*'। निघ० २.३.१५

५. तुर्वशे (अन्तिकम्)। व्याख्यातं मनुष्यनामसु। तूर्णं व्याप्यते अन्तिकम्। √'*तूर'+ क्विप्+ √'अश्*'। निघ० २.१६.४

तुवि

१. तुवि (बहु)। तवतिर्वृद्ध्यर्थः। वृद्धिर्हि बहुः। √'*तव्'+ इ> तवि> तुवि*'। निघ० ३.१.२

तुविक्ष

१. तुविक्षं बहुविक्षेपं महाविक्षेपं वा। *तुवि+ √'क्षिप्*'। निरु० ६.३३

तू

१. **विश्वतूरसि त्वं तूर्य तरुष्यतः**। √'*तरुष्य*'। ऋ० ८.९९.५; यजु० ३३.६६; अथर्व० २०.१०५.१; सा०उ० १६३७

तूताव

१. तूताव, तुताव। √'तु'। निरु० ४.२५

तूतुजान

१. तूतुजानः, तूर्णं त्वरमाणः। (*अर्थनिर्वचनम्*)। निरु० ६.२०

२. तूतुजानः (क्षिप्रम्)। √'*तुज' हिंसायाम्*'। √'*तुज्'+ कानच्*'। निघ० २.१५.१९

तूतुम्

१. तूतुम्, तूर्णम्। (*अर्थनिर्वचनम्*)। निरु० ५.२५

तूयम्

१. तूयम् (उदकम्)। तवतेर्वृद्धिकर्मणः। वर्द्धते वर्षासु। √'*तु' या √'तू'+ यत्*'। निघ० १.१२.९३

२. तूयम् (क्षिप्रम्)। व्याख्यातमुदकनामसु। वर्द्धतेऽनेन तद्वन्तः श्लाघ्याः। (*पूर्ववत्*)। निघ० २.१५.११

तूर्णाश

१. वायुर्वै तूर्णिर्वायुर्हीदं सर्वं सद्यस्तरति यदिदं किञ्च। √'*तृ*'। ऐ०ब्रा० २.३४

२. सर्वꣳह्येष पाप्मानं तरति तस्मादाह तूर्णिर्हव्यवाडिति। √'*तृ*'। शत०ब्रा० १.४.२.१२

३. तूर्णिर्हव्यवाडित्याह सर्वꣳह्येष (अग्निः) तरति। √'*तृ*'। तै०सं० २.५.९.३

४. तूर्णिः, त्वरमाणः। √'*त्वर्*'। निरु० ७.२७

५. तूर्णिः (क्षिप्रम्)। √'*जित्वरा' सम्भ्रमे*'। त्वरतेऽनेन फलमागन्तुम्। √'*त्वर्'+ नित्*'। निघ० २.१५.१२

६. वहिश्रिश्रुयुदुग्लाहात्वरिभ्यो नित्। √'*त्वर्'+ नित्*'। उणा० ४.५२

तूर्य

१. विश्वतूरसि त्वं **तूर्य तरुष्यतः**। √'*तरुष्य*'। ऋ० ८.९९.५, यजु० ३३.६६, अथर्व० २०.१०५०१, सा०उ० १६३७

तृण

१. यत्किञ्चित् तृन्द्यात् तृणं तत्। √'*तृद्*'। निरु० १.१२

२. तर्दनमिति तृणम्। √'*तृद्*'। निरु० १.१२

३. तृहेः क्नो हलोपश्च। √'*तृह्'+ क्न*'। उणा० ५.८

तृपलप्रभर्मन्

१. तृपलप्रभर्मा, तृप्रप्रहारी। √'तृप्'+रक्+प्र+√'ह'+इन्> तृप्रप्रहारिन्>तृप्रप्रभर्मन्'। निरु० ५.१२

तृपु

१. तृपुः (स्तेनः)। √'*तृप्'+ उ*'। निघ० ३.२४.१

तृप्ति

१. स दातारं **तृप्त्या तर्पयाति**। √'*तृप्*'। अथर्व० ९.५.९

२. तृप्तिः (उदकम्)। √'तृप् प्रेरणे'। तृप्यन्ति हि देवतास्तेन तर्पिताः, तृप्यन्ति तेन पीतेन प्राणिन इति वा। √'*तृप्*'+ *क्तिन्*'। निघ० १.१२.३४

तृषु, तृष्वी

१. तृष्वीति क्षिप्रनाम, तरतेर्वा। √'*तृ*'। निरु० ६.१२

२. त्वरतेर्वा। √'*त्वर्*'। निरु० ६.१२

३. तृषु (क्षिप्रम्)। √'ञित्वरा सम्भ्रमे'। तरत्यनेन फललाभमद्य, त्वरतेऽनेन फलमागन्तुम्। √'*त्वर्*'+ *पुक्*> *त्वर्षु*> *तृषु*'। निघ० २.१५.१०

तृष्णाज

१. तृष्णक् तृष्यतेः। √'*तृष्*'। निरु० ११.१५

तेज

१. तेजः (उदकम्)। √'तेजृ पालने'। तेजयति पालयति प्राणिनः पिपासादिनिवारणात्। √'*तेज्*'+ *असुन्*'। निघ० १.१२.९६

२. यद्वा, √'तिज निशाने'। अग्निजत्वादपां कार्य्य-कारणयोरभेदोपचारात् तेज इत्युक्तिः। √'*तिज्*'+ *असुन्*'। निघ० १.१२.९६

३. तेजः (ज्वलतो नामधेयम्)। √'तिज' निशाने'। निश्यति तनूः करोति तमः पापं वा। √'*तिज्*'+ *असुन्*'। निघ० १.१७.८

४. यद्वा, √'तिज् पालने'। तेजति पालयति प्राणिनां प्रकाशदानेन। √'*तेज्*'+ *असुन्*'। निघ० १.१७.८

तोक

१. तोकं तुद्यतेः। √'*तुद्*'+ *घ*> *तोद*> *तोक*'। निरु० १०.७

२. तोकम् (अपत्यम्)। √'तुद् व्यथने'। तुदतेऽनेन माता गर्भवासकाले, तुद्यते व्याध्यादिभिरिति वा। √'*तुद्*'+ *घ*'। निघ० २.२.२

३. यद्वा, √'ष्टुच् स्तुतौ'। स्तूयते तोकम्। √'*स्तु*'+ *क*> *स्तोक*> *तोक*'। निघ० २.२.२

४. यद्वा, √'तु सौत्रो धातुर्वृद्ध्यर्थः। वर्द्धते हि तत्, वर्धयते हि मातापितृभ्याम्। √'*तु*'+ *क*> *तोक*'। निघ० २.२.२

तोक्म

१. तोक्म (अपत्यम्)। √'तुजेः', स्तुचेः, तनतेः, तुद्यतेर्वा। √'*तुज्*'+ *मनिन्*' *या* √'*तन्*'+ *मनिन्*' *या* √'*तुद्*'+ *मनिन्*'। निघ० २.२.४

तोद

१. तोदस्तुद्यतेः। √'*तुद्*'+ *घ*> *तोद्*'। निरु० ५.६

२. भूमेर्विलं तोद उच्यते, तद्धि तुन्नं भवति दीर्घत्वात्। √'*तुद्*'। निरु० ५.६, दुर्गवृत्ति,पृ० ४२३

तोय

१. तोयम् (उदकम्)। √'तवतेर्वृद्धिकर्मणः। वर्द्धते वर्षासु। √'*तु*' *या* √'*तू*'+ *यत्*'। निघ० १.१२.९२

२. तुदति तोयम्— इति क्षीरस्वामी। √'*तुद्*'+ *यत्*> *तोद्य*> *तोय*'। निघ० १.१२.९२

३. यद्वा, तुदि सौत्र आवरणार्थः। √'*तुद्*'+ *यत्*'। निघ० १.१२.९२

तौरयाण

१. तौरयाणः, तूर्णयानः। '*तूर्ण*+ *यान*'। निरु० ५.१५

त्मन्

१. त्मना, आत्माना। '*आत्मन्*'। निरु० ६.२१, ११.३१

२. त्मन्या, आत्मनात्मानम्। '*आत्मन्*'। निरु० ८.१७

त्यज

१. त्यजः (क्रोधः)। √'त्यज हानौ'। त्यज्यते सत्पुरुषैः त्यज्यन्तेऽनेन प्राणा इति वा, त्यजते वा स्वधर्मः। √'*त्यज्*'+ *असुन्*'। निघ० २.१३.४

त्राता

१. देवस्त्राता त्रायतामप्रयुच्छन्। √'त्रैङ् पालने'। ऋ० १.१०६.७, ४.५६.७

२. पातं नो रुद्रा पायुभिरुत त्रायेथां सुत्रात्रा। √'त्रैङ्'। ऋ० ५.७०.३, सा०उ० ९८७

३. त्रातुस्त्रायतां नः। √'त्रैङ्'। अथर्व० ६.९९.३

त्रि

१. त्रयस्तीर्णतमा सङ्ख्या। √'*तृ*'। निरु० ३.१०

२. तरतेर्ड्रिः। √'*तृ*'+ *ड्रि*'। उणा० ५.६६

त्रिककुभ

१. तद्यदेतेषां त्रयाणां लोकानां तिस्रः ककुभो ऽन्नाद्यमवारुन्धत, तत् त्रिककुभस्य त्रिककुभत्त्वम्। '*त्रि*+ *ककुभ्*'। जै०ब्रा० १.१८५

२. ताꣳस्त्रिककुबनिधायाचरत् स एतत्सामापश्यद् यत्त्रिककुबपश्यत् तस्मात् त्रैककुभम्। *'त्रि+ ककुभ्'*। ता०ब्रा० ८.१.४

त्रित

१. त्रितस्तीर्णतमो मेधया बभूव। *√'तॄ'+ तमप्> तीर्णतम्> त्रित'*। निरु० ४.६

२. अपि वा सङ्ख्यानामैवाभिप्रेतं स्यात्। एकतो द्वितस्त्रित इति त्रयो बभूवुः। *√'तॄ'+ तन्'*। निरु० ४.६

३. त्रितस्त्रिस्थानः। *√'तॄ'+ तन्'*। निरु० ९.२५

त्रिधातु

१. तदिमान् लोकानभ्यत्यरिच्यतेन्द्रꣳ राजानमिन्द्र-मधिराजमिन्द्रꣳ स्वराजानं ततो वै स (प्रजापतिः) इमान् लोकाꣳस्त्रेधाऽदुहत्, तत् त्रिधातोस्त्रिधातुत्वम्। *'त्रि+ √'दुह्'*। तै०सं० २.३.६.१

२. यदस्मिन् (इन्द्रे) त्रीणि वीर्याण्यधत्तां तस्मात् त्रिधातुः। *'त्रि+ √'धा'*। मै०सं० २.४.६

त्रिवृत्

१. वायुर्वाऽ आशुस्त्रिवृत् स एषु लोकेषु वर्तते। *'त्रि+ √'वृत्'*। शत०ब्रा० ८.४.१.९

त्रिषधस्थ

१. स्वर्ण ये **त्रिषधस्थे निषेदुः**। *'त्रि+ √'षद्'*। ऋ० १०.६१.१४

त्रिष्टुभ्

१. त्रिष्टुप् स्तोभ इत्युत्तरपदा। *'त्रि+ √'स्तुभ्'*। दै०ब्रा० ३.१४

२. का तु त्रिता स्यात् तीर्णतमं छन्दो भवति। *√'तॄ'+ क्त+ तमप् > तीर्णतम > त्रित, त्रित + √'स्तुभ्' > त्रिष्टुभ्'*। दै०ब्रा० ३.१५

३. त्रिवृद्वज्रस्य स्तोभिनीवेत्यौपमिकम्। *√'स्तुभ्'*। दै०ब्रा० ३.१६

४. यदब्रवीत् त्रिरहं ष्टुब् अस्मीति तस्मात् त्रिष्टुप्। *'त्रि+ √'स्तुभ्'> त्रिष्टुभ्'*। जै०ब्रा० १.३२४

५. त्रिष्टुप् स्तोभत्युत्तरपदा, का त्रिता स्यात्, तीर्णतमं छन्दः। *√'तॄ'+ क्त+ तमप्> तीर्णतम> त्रित, त्रित+ √'स्तुभ्'> त्रिष्टुभ्'*। निरु० ७.१२

६. त्रिवृद् वज्रः। तस्य स्तोभनीति वा। *'त्रिवृत्> त्रि, त्रि+ √'स्तुभ्'> त्रिष्टुभ्'*। निरु० ७.१२

७. यत् त्रिरस्तोभत् तत् त्रिष्टुभस्त्रिष्टुप्त्वमिति विज्ञायते। *'त्रि+ √'स्तुभ्' > त्रिष्टुभ्'*। निरु० ७.१२

त्रेधा

१. त्रेधा, त्रिधा। *'त्रि+ √'धा'*। निरु० १२.१९

त्रैधातव्या

१. त्रिर्मा धाः इति तद्भाव त्रैधातव्या, सहस्रꣳवा अस्मै तत्प्रायच्छद् ऋचः सामानि यजूꣳषि। यद्वा इदं किंच तत् त्रैधातव्या। *'त्रि+ √'धा'*। मै०सं० २.४.३

२. यद्वै त्रिस्त्रिस्तत् त्रैधातव्यायाः समृद्धम्। *'त्रि+ √'धा'*। मै०सं० २.४.५

३. सो (वृत्रः) ऽब्रवीत् सकृन्मा धा विष्णो, द्विर्मा धा विष्णो, त्रिर्मा धा विष्ण इति, तत् त्रैधात-व्यायास्त्रैधातव्यात्वम्। *'त्रि+ √'धा'*। काठ० १२.३

त्रैशोक

१. इमे वै लोकाः सहासꣳस्तेऽ शोचꣳस्तेषामिन्द्र एतेन साम्ना शुचामपाहन्यत् त्रयाणां शोचतामपाहꣳस्तस्मात् त्रैशोकम्। *'त्रि+ √'शुच्'*। ता०ब्रा० ८.१.९

२. तद्यदेषां त्रयाणां लोकानां तिस्रश्शुचोऽपाघ्नꣳस्तत् त्रैशोकस्य त्रैशोकत्वम्। *'त्रि+ √'शुच्'*। जै०ब्रा० ३.७२

३. यदु त्रिशोकोऽपश्यत् तस्मात् त्रैशोकमित्याख्यायते। *'त्रिशोक> त्रैशोक'*। जै०ब्रा० ३.७४

त्र्यम्बक

१. अम्बिका ह वै नामास्य (रुद्रस्य) स्वसा, तयास्यैष सह भागस्तद् यदस्यैष स्त्रिया सह भागस्तस्मात् त्र्यम्बकाः (पुरोडाशाः) नाम। *'स्त्री+ अम्बक> त्र्यम्बक'*। शत० ब्रा० २.६.२.९

२. त्र्यम्बकं यजामह इति परियन्ति। या पतिकामा स्यात् सापि परीयात्। पतिवेदमेवास्यै कुर्वन्ति।. भगमेवास्यै समावपन्ति। अम्बी वै स्त्री भगनाम्नी तस्मात् त्र्यम्बकाः। *'स्त्री+ अम्बी> त्र्यम्बी> त्र्यम्बक'*। काठ० ३६.१४ (तु०मै०सं० १.१०.२०)

त्व

१. त्व इति..........सर्वनामानुदात्तम्, अर्धनामेत्येके। *(अर्थनिर्देशमात्रम्)*। निरु० १.७

२. त्वो नेम इत्यर्धस्य। त्वोऽपततः। √'तन्'। निरु० ३.२०

त्वक्ष

१. त्वक्षः (बलम्)। √'तक्षू तनूकरणे'। तनूक्रियन्ते तेन शत्रवः। √'तक्ष्+ असुन्'। निघ० २.९.६

त्वष्टृ

१. **त्वष्टास्मै** वज्रं स्वर्यं **ततक्ष**। √'तक्ष्'। ऋ० १.३२.२, अथर्व० २.५.६

२. **त्वष्टा** चित्ते युज्यं वावृधे शवस्**ततक्ष**। √'तक्ष्'। ऋ० १.५२.७

३. अस्मा इदु **त्वष्टा तक्षद्**वज्रं स्वपस्तमं स्वर्यं रणाय। √'तक्ष्'। ऋ० १.६१.६

४. **तक्षन्त्वष्टा** वज्रं पुरुहूत द्युमन्तम्। √'तक्ष्'। ऋ० ५.३१.४, सा०पू० ४.१०.४

५. अस्मा इदु **त्वष्टा तक्षद्** वज्रम्। √'तक्ष्'। अथर्व० २०.३५.६

६. वाग्वै त्वष्टा वाग्घीदं सर्वं ताष्टीव। √'तक्ष्'। ऐ०ब्रा० २.४

७. त्वष्टा तूर्णमश्नुत इति नैरुक्ताः। 'तूर्ण+√'अश्' >तू+ √'अश्'+ तृच्> त्वष्टृ'। निरु० ८.१३

८. त्विषेर्वा स्याद् दीप्तिकर्मणः। √'त्विष्'+ तृन्'। निरु० ८.१३

९. त्वक्षतेर्वा स्यात् करोतिकर्मणः। √'त्विष्'+ तृन्'। निरु० ८.१३

१०. नप्तृनेष्टृत्वष्टृहोतृपोतृभ्रातृजामातृमातृपितृदुहितृ। √'त्विष्'+ तृन्' (निपातनात्)। उणा० २.९७

थर्वति

१. थर्वतिश्चरतिकर्मा। √'थर्व्'। निरु० ११.१८

दंश

१. दंशो दशतेः। √'दंश्'। निरु० १.२०

दंस

१. दंसः (कर्म)। √'दसिं दंसनदर्शनयोः'। दर्शयति हि तत्कारणमेव, दृश्यते दृष्टिभिरिति वा। √'दंस्'+ असुन्'। निघ० २.१.३

२. अथवा, √'दसिं मोक्षणे'। दंसयति मोक्षयति पाप्मनः पुरुषं संसारादापदो वा। √'दंस्'+ असुन्'। निघ० २.१.३

३. यद्वा, √'तसु उपक्षये 'दसु' च'। उपक्षिपयितव्यं हि तदन्तर्नेतव्यमित्यर्थः। √'दस्'+ असुन्'। निघ० २.१.३

दंसि

१. दंसयः कर्माणि, दंसयन्ति एनानि। √'दंस्'। निरु० ४.२५

दक्ष

१. दक्षः (बलम्)। √'दक्ष शैघ्र्ये च'। √'दक्ष गतिहिंसनयोः'। दक्षतिरुत्साहार्थः— इति स्कन्दस्वामी। शत्रुविजये क्षिप्रो भवत्यनेन, हिंस्यन्तेऽनेन शत्रवः, प्रोत्साहितो वा भवति शत्रुविजये। √'दक्ष्'+ असुन्'। निघ० २.९.१४

दक्षाय्य

१. **दक्षाय्याय** दक्षता सखायः। √'दक्ष्'। ऋ० ७.९७.८

दक्षिण

१. अयं (दक्षिणः) बाह्वोर्वीर्यवत्तरः। तस्माद उ दक्षिणं पक्षं वयांस्यनुपरिप्लरवन्ते। √'दक्ष सामर्थ्ये'। जै०ब्रा० २.४०७

२. तद्यद् दक्षिणाभिर्यज्ञं दक्षयति तस्माद् दक्षिणा नाम। √'दक्ष्'। कौ०ब्रा० १५.१

३. दिग्घस्तप्रकृतिर्दक्षिणो हस्तः। दक्षतेरुत्साहकर्मणः। √'दक्ष्'। निरु० १.७

४. दाशतेर्वास्याद् दानकर्मणः। √'दाश्'। निरु० १.७

५. दुदक्षिभ्यामिनन्। √'दक्ष्'+ इनन्'। उणा० २.५१

दक्षिणा

१. दुहीयादिन्द्र **दक्षिणा** मघोनी। √'दुह्'। ऋ० २.१७.९

२. तं (यज्ञं) देवा दक्षिणाभिरदक्षयंस्तद्यदेनं (यज्ञम्) दक्षिणाभिरदक्षयंस्तस्माद्दक्षिणा नाम। √'दक्ष्'। शत०ब्रा० २.२.२.२, ४.३.४.२

३. यद्दक्षिणा दीयन्ते यज्ञं वा एतद्दक्षयन्ति, तद्दक्षिणानां दक्षिणात्वम्। √'दक्ष्'। मै०सं० ४.८.३

४. दक्षिणा ददाति। √'दा'। गो०ब्रा० २.१.२६

५. यद् दक्षिणाभिर्वै यज्ञं दक्षयति। तस्माद् दक्षिणा नाम। √'दक्ष्'। कौ०ब्रा० १५.१

६. दक्षाय त्वा दक्षिणां प्रतिगृह्णामीति। सोऽदक्षत दक्षिणां प्रतिगृह्य। √'दक्ष्'। तै०ब्रा० ३.११.८.८

७. दक्षिणा दक्षतेः समर्धयतिकर्मणः। व्यृद्धं समर्धयति। √'दक्ष्'। निरु० १.७

८. अपि वा प्रदक्षिणागमनाद् दिशमभिप्रेत्य। '*दक्षिण (हस्तत्वात्)> दक्षिणा*'। निरु० १.७

९. द्रुदक्षिभ्यामिनन्। √'दक्ष्'+ इनन्'। उणा० २.५१

दक्षिणाग्नि

१. तस्य योऽग्नेस्तृतीयो भागस्तं देवपितरः पर्यगृह्णन् दक्षिणतोऽनयन् स दक्षिणाग्निरभवत् तद्दक्षिणाग्नेर्दक्षिणाग्नित्वम्। '*दक्षिण+ अग्नि*'। का०सं० १५,१-३

दघ्न

१. दघ्नं दघ्यतेः स्रवतिकर्मणः। √'दघ्'। निरु० १.९

२. दस्तेर्वा स्याद् विदस्ततरं भवति। √'दस्'। निरु० १.९

३. प्रमाणे द्वयसज्दघ्नञ्मात्रचः। *प्रमाणार्थे* '*दघ्नच्' प्रत्ययः*। अष्टा० ५.२.३७

दण्ड

१. दण्डो ददतेर्धारयतिकर्मणः। √'*दा*'। निरु० २.२

२. दमनादित्यौपमन्यवः। √'दम्'+ उ'। निरु० २.२

३. ञमन्ताद् डः। √'दम्'+ ड'। उणा० १.११४

दण्ड्य

१. दण्ड्यः पुरुषो दण्डमर्हतीति वा। 'दण्ड+ *य*'। निरु० २.२

२. दण्डेन संपद्यत इति वा। 'दण्ड+ *य*'। निरु० २.२

दत्र

१. दत्रम् (हिरण्यम्)। √'डुदाञ् दाने'। दीयते पात्रे दत्रम्। √'*दा*'+ त्र'। निघ० १.२.१४

ददाश

१. ददाशः, ददासि। √'*दा*'। निरु० ११.२४

दद्राण

१. दद्राणम्, दमनशीलम्। √'*दम्*'। निरु० १४.१८

दधि

१. दधिर्यो धायि स ते वयांसि यन्ता वसूनि विधते तनूपाः। √'*धा*'। ऋ० १०.४६.१

२. तदस्मै (इन्द्राय) दध्यकुर्वन्, तदेनमधिनोत्, तद्दध्नो दधित्वम्। √'*धिव्*'। तै०सं० २.५.३.४

३. यदब्रवीद्धिनोति मेति (इन्द्रः) तस्माद् दधि। √'*धिव्*'। शत०ब्रा० १.६.८.४

४. दधि तृतीयसवनेऽधायीव वा अनेनेति तस्माद्दधि। √'*धा*'। जै०ब्रा० २.१५७

दधिक्रा

१. दधिक्रा इत्येतद् दधत् क्रामतीति वा। √'*धा*'>दधत्'+ √'*क्रम्*'+ *विट्*'। निरु० २.२७

२. दधत् क्रन्दतीति वा। '*दधत्*+ √'*क्रन्द्*'+ *विच्*'। निरु० २.२७

३. दधद् आकारी भवतीति वा। '*दधत्*+ *आ*+ √'*कृ*'+ *क्विप्*'। निरु० २.२७

४. दधिक्राः (अश्वः)। दधद्धारयत् स्वारोहिणं क्रामति, दधत् क्रन्दति हर्षार्थं ह्रेषारवं करोति। दधदित्याकारी भवति अधिष्ठितम्, ईषदवनतमध्यभागः, उद्धतकन्धरः, कुञ्चितघोणः, स्तिमितवक्षुः, कर्णशुक्तिकाकारो भवति। '*पूर्ववत्*'। निघ० १.१४.७

दधिक्रावत्

१. दधिक्रावा (अश्वः)। दधिक्रावत्। '*दधत्*+ √'*क्रम्*' *या* √'*क्रन्द्*' *या* √'*कृ*'+ *वनिप्*'। निघ० १.१४.८

दध्यञ्च्

१. दध्यङ् प्रत्यक्तो ध्यानमिति वा। √'*ध्यै*'+ √'*अञ्च्*'> *ध्यान*+ √'*अञ्च्*'> *दधि*+ *अञ्च्* > *दध्यञ्च्*'। निरु० १२.३३

२. प्रत्यक्तमस्मिन् ध्यानमिति वा। √'*ध्यै*'+ √'*अञ्च्*'> *ध्यान*+ √'*अञ्च्*' > *दधि*+ *अञ्च्*> *दध्यञ्च्*'। निरु० १२.३३

दन या दनस्

१. दनः, दानमनसः। '*दान*+ *मनस्*> *द*+ *नस्*> *दनस्*'। निरु० ६.३१

दभीति

१. दभीतेर्विश्वमधागायुधमिद्धे अग्नौ। √'*दह्*'। ऋ० २.१५.४

दभ्य

१. नाहं तं वेद दभ्यं दभत्स। √'*दम्भ्*'। ऋ० १०.१०६.४

दभ्र

१. दभ्रं दभ्नोतेः, सुदम्भं भवति। √'*दभ्*'। निरु० ३.२०

२. दभ्रम् (ह्रस्वः)। दभतिर्न्यूनार्थः। √'दभ्'+ रक्'। निघ० ३.२.८

दमूनस्

१. **दमूना** गृहपतिर्दम आँ अग्निर्भुवद् रयिपती रयीणाम्। √'दम्'। ऋ० १.६०.४

२. दमूना दममना वा। 'दम+ *मनस्*'। निरु० ४.४

३. दानमना वा। 'दान+ *मनस्*'। निरु० ४.४

४. दान्तमना वा। 'दान्त+ *मनस्*'। निरु० ४.४

५. अपि वा दम इति गृहनाम। तन्मना स्यात्। 'दम+ *मनस्*'। निरु० ४.४

६. दमेरूनसि। √'दम्'+ ऊनस्'। उणा० ४.२३६

दमे

१. दमे (गृहम्)। √'दम' उपशमने'। शाम्यतेऽनेन शीतादिः, दान्तः क्लेशः। √'दम'+ घञ्'। निघ० ३.४.१२

दर्म्मा

१. अस्माकं शत्रून् परि शूर विश्वतो **दर्म्मा दर्षीष्ट** विश्वतः। √'दृ'। यजु० ८.५३

दयति

१. दयतिरनेककर्मा। इति दानकर्मा वा विभागकर्मा वा। इति दहतिकर्मा। ....इति हिंसाकर्मा। √'दय्'। निरु० ४.१७

दर्भ

१. उभयमवेतदन्नं यद्दर्भा आपश्च ह्येता ओषधयश्च या वे वृत्राद् बीभत्समाना आपो धन्व दृभन्त्य उदायंस्ते दर्भा अभवन् यद् दृभन्त्य उदायंस्तस्माद्दर्भास्ता हैताः शुद्धा मेध्या आपो वृत्राभिप्रक्षारिता यद्दर्भा यदु दर्भास्तेनौषधयः। √'दृभ्'। शत०ब्रा० ७.२.३.२

२. तासां (अपाम्) यन्मेध्यं यज्ञियꣳ स देवमासीत् तदपोदक्रामत् ते दर्भा अभवन्। (*अर्थनिर्देशमात्रम्*)। तै०सं० ६.१.१.७

३. दृदलिभ्यां भः। √'दृ'+ *भ*'। उणा० ३.१५१

दर्मन्

१. शूर विश्वतो **दर्मा दर्षीष्ट** विश्वतः। √'दृ'। ऋ० १.१३२.६

दर्श

१. **दर्शं** नु विश्वदर्शतं **दर्शं** रथमधि क्षमि। √'दृश्'। ऋ० १.२५.१८

२. तया प्रातर्ददर्श यद्ददर्श तद्दर्शस्य दर्शत्वम्। √'दृश्'। काठ०संक० २३.८

३. प्राण एव दर्शो ददृश इव ह्यं प्राणः। √'दृश्'। शत०ब्रा० ११.२.४.५,६

दर्शपूर्णमास

१. अथाध्यात्मम्। उदान एव पूर्णमा उदानेन ह्ययं पुरुषः पूर्यतऽइव, प्राण एव दर्शो ददृश इव ह्ययं प्राणस्तदेतावन्नादश्चान्नप्रदश्च दर्शपूर्णमासौ। प्राण एवान्नादः। प्राणेन हीदमन्नमद्यतऽ उदान एवान्नप्रद उदानेन हीदमन्नं प्रदीयते। √'दृश्'>दर्शं, √'पृ' > *पूर्ण*+ *मास*'। शत०ब्रा० ११.२.४.५-६

२. अहरेव दर्शोऽहरु हीदं ददृश इव, रात्रिरेव पूर्णमा रात्र्या हीदꣳ सर्वं पूर्णमासावेव द्यौर्दर्शं एषा हीयं ददृश इवेयमेव (पृथिवी) पूर्णमा अनया हीदꣳसर्वं पूर्णमिति न्वधिदैवतम्। √'दृश्'>दर्श, √'पृ'>पूर्ण+ *मास*'। का०शत०ब्रा० ३.२.९.१

३. एष एव पूर्णमा यच्चन्द्रमा एतस्य ह्यनुपूरणं पौर्णमासीत्याचक्षतेऽथैष एव दर्शो य एष (सूर्यः) तपति ददृश इव ह्येषः। √'दृश्'>दर्शं, √'पृ> *पूर्ण*+ *मास*'। शत०ब्रा० ११.२.४.१-२

दवीय

१. दवीयः, दूरतरम्। (*अर्थनिर्देशमात्रम्*)। निरु० ९.१३

दशन्

१. दश दस्ता। √'दस्'। निरु० ३.१०

२. दृष्टार्था वा। √'दृश्'। निघ० ३.१०

दशहोतृ

१. तस्मै (ब्रह्मणे) दशमꣳहूतः प्रत्यशृणोत्। स दशहूतोऽभवत्। दशहूतो ह वै नामैषः। तं वा एतं दशहूतꣳसन्तं दशहोतेत्याचक्षते परोक्षेण, परोक्षप्रिया इव हि देवाः। '*दशम*+ *हूत*> *दशहूत*> *दशहोतृ*'। तै०सं० २.३.११.१

दस्म

१. न क्षीयन्ते नोपदस्यन्ति **दस्म**। √'दसु'। ऋ० १.६२.१२

२. इषियुधीन्धिदसिश्याधूसूभ्यो मक्। √'दस्'+ मक्'। उणा० १.१४५

दस्यु

१. दस्युर्दस्यतेः क्षयार्थात्, उपदस्यन्त्यस्मिन् रसाः, उपदासयति कर्माणि। √'दस्'। निरु० ७.२३

२. यजिमनिशुन्धिदसिजनिभ्यो युच्। √'दस्'+ युच्'। उणा० ३.२०

दस्र

१. सुदासे **दस्रा** वसु बिभ्रता रथे पृक्षो वहतमश्विना। √'दसु' उपक्षये'। ऋ० १.४७.६

२. न वो **दस्रा** उप **दस्यन्ति** धेनवः। √'दस्'। ऋ० ५.५५.५

३. दस्रा, दर्शनीयौ। √'दृश्'। निरु० ६.२६

४. दसिदम्भिवसिवाशिशीङ्हसिसिधिशुभिभ्यो रक्। √'दस्'+ रक्'। उणा० २.१३

दाक्षायण

१. स (प्रजापतिः) वै दक्षो नाम। तद्यदेनेन सोऽग्रेऽयजत तस्माद् दाक्षायणयज्ञो नामोतैनमेके वसिष्ठयज्ञ इत्याचक्षते। '*दक्ष्> दाक्षायण*'। शत०ब्रा० २.४.४.२

दाता

१. **दाता** न दात्या पशुः। √'दो'। ऋ० ५.७७

२. **देवो** न सविता वसोर्दाता वस्वदात्। √'दा'। यजु० ४.१६

दात्र

दात्रं दाशुषे दाः। √'दा'। ऋ० ६.२०.७

२. दादिभ्यश्छन्दसि। √'दाप्'+ त्र'। उणा० ४.१७१

दानव

१. आ यं नरः सुदानवो **ददाशुषे**। √'दा'। ऋ० ५.५३.६

२. अथ (वृत्रः) यदपात्समभवत् तस्मादहिस्तं दनुश्च दनायुश्च मातेव च पितेव च परिजगृहतुस्तस्माद्दानव इत्याहुः। '*दनु> दानव या दनु+ दनायु> दानव*'। शत०ब्रा० १.६.३.९

३. दानवं दानकर्माणम्। √'दा'। निरु० १०.९

दानु

१. सुदानवः कल्याणदानाः। √'दा'। निरु० ६.२३

२. दानून् दातॄनिति वा। √'दा'। निरु० ११.२१

३. दानवानिति वा। '*दनुपुत्रान्> दानवान्> दानु*'। निरु० ११.२१

४. दाभाभ्यां नुः। √'दा'+ नु'। उणा० ३.३२

दानुनस्पती

१. दानुनस्पती, दानपती। '*दान+ पती*'। निरु० २.१३

दाभ्य

१. इन्द्रं **दिप्सन्ति दिप्सवोऽदाभ्यम्**। √'दम्भ्'। ऋ० ७.१०४.२०

दामन

१. चिकेतद्दातुं **दामनो** रयीणाम्। √'दा'। ऋ० ५.३६.१

दाय

१. ददातु वीरं शतदायमुक्थ्यम्। √'दा'। ऋ० २.३२.४

दारु

१. दारु दृणातेर्वा। √'दृ'। निरु० ४.१५

२. दूणातेर्वा। तस्मादेव दु। √'दूण्'। निरु० ४.१५

३. दृसनिजनिचरिचटिरहिभ्यो ञुण्। √'दृ'+ ञुण्'। उणा० १.३

दावन्

१. दावने, दानस्य। √'दा'> दान> दावन्'। निरु० ४.१८

दाशस्पत्य

१. तस्मै विजित्यासीनाय (इन्द्राय) दशपतये दशपतय आ इत्येवोद्धारानुदहरन् (देवाः) तदेव दाशस्पत्यस्य दाशस्पत्यत्वम्। '*दशपति> दाशस्पत्य*'। जै०ब्रा० १.१७२

दाशुषे

१. ईशानकृद्दाशुषे **दशस्यन्**। √'दा'। ऋ० १.६१.११

२. **दाशद्दाशुषे** हन्ति वृत्रम्। √'दाश्'। ऋ० २.१९.४

३. याभिर्ददासि **दाशुषे** वसूनि। √'दा'। ऋ० २.३२.४

४. अग्ने दा **दाशुषे** रयिं वीरवन्तं परीणसम्। √'दा'। ऋ० ३.२५.५

५. पुत्रं **ददाति दाशुषे**। √'दा'। ऋ० ५.२५.५

६. **दात्रं दाशुषे** दाः। √'दा'। ऋ० ६.२०.७

७. दाशुषे देवेभ्यो दाशद्धविषा विवस्वते। √'दाश्'। ऋ० १०.६५.६

८. दाशद्दाशुषे सुकृते मामहस्व। √'दाश्'। ऋ० १०.१२२.३

९. ततो ददाति दाशुषे वसूनि। √'दा'। सा०पू० ६.१.२

१०. दाशुषे, दत्तवते। √'दा'। निरु० ११.११, १२.४०

दाश्वांसः

१. दाश्वासः, दत्तवन्तः। √'दा'। निरु० १२.४०

दास

१. दासाय महि दाशुषे नृतो वज्रेण दाशुषे नृतो। √'दा'। ऋ० १.१३०.७

२. दासो दस्यतेः, उपदासयति कर्माणि। √'दस्'। निरु० २.१७

३. दंसेष्टटनौ न आ च। √'दंस्'+ न'। उणा० ५.१०

दास्वत्

१. दा मदो वृषन्त्स्वभिष्टिर्दास्वान्। √'दा'। ऋ० ६.३३.१

दिति

१. दितिश्च दाति वार्यम्। √'दा'। ऋ० ७.१५.१२

दिद्युत्

१. दिद्युत् (वज्रः)। √'द्युत' दीप्तौ'। द्योतते उज्ज्वलत्वात्। √'द्युत्'+ *क्विप्, द्वित्वश्च*'। निघ० २.२०.१

२. द्यतेर्वा। द्यति शत्रून्। √'दो'+ *क्विप्*'। निघ० २.२०.१

३. दिद्युद् द्यतेर्वा। √'दो'। निरु० १०.७

४. द्युतेर्वा। √'द्यु'। निरु० १०.७

५. द्योततेर्वा। √'द्युत्'। निरु० १०.७

दिधिष, दिधिषु

१. दधन्नृतं धनयन्नस्य धीतिमादिदर्यो दिधिष्वो विभृत्राः। √'दध्'। ऋ० १.७१.३

२. दिधिषः, दातुम्। (*अर्थनिर्देशमात्रम्*)। निरु० ८.२०

दिन

१. दिनम् (अहन्)। √'दो' अवखण्डने'। द्यतितमः दिनम्। √'दो'+ नक्'। निघ० १.९.९

२. बहुलमन्यत्रापि। √'दो'+ इनच्'। उणा० २.५०

दिप्सन्त

१. दिप्सन्त इद्रिपवो नाह देभुः। √'दम्भ्'। ऋ० १.१४७.३

२. दिप्सन्त इद्रिपवो नाह देभुः। √'दम्भ्'। ऋ० ४.४.१३

३. इन्द्रं दिप्सन्ति दिप्सवोऽदाभ्यम्। √'दम्भ्'। ऋ० ७.१०४.२०

४. दिप्सन्ति ये चास्य राष्ट्रदिप्सवः। √'दम्भ्'। अथर्व० १०.३.१६

दिव्

१. दोषावस्तर्दीदीवांसमनु द्यून्। √'दी'। ऋ० ४.४.९

२. त्वं विशो अनयो दीद्यानो दिवः। √'दी'। ऋ० ६.१.७

३. उदग्ने भारत द्युमदजस्रेण दविद्युतत्। √'द्युत'। ऋ० ६.१६.४५, सा०उ० १३८५

४. दिव उदितां व्यद्यौत्। √'द्युत्'। ऋ० ६.५१.५

५. अग्ने दीदयसि द्यवि। √'दी'। ऋ० ८.४४.२९

६. पनीयसी समिद् दीदयति द्यवि। √'दी'। अथर्व० १८.४.८८

७. अग्ने यद्दीदयद्दिवि। √'दी'। सा०उ० १३९८

८. द्यौः (अहः)। √'द्युत' दीप्तौ'। द्योतते किरणसम्बन्धात्। √'द्युत+ डो'। निघ० १.९.२

९. यद्वा, √'द्यु' अभिगमने'। अभिगच्छन्त्यस्मिन् स्वं स्वमभिमतप्रदेशं प्राणिनः। √'द्यु'+ डो'। निघ० १.९.२

दिव, दिवा

१. अद्युतदिव वा अद इति तद्दिवो दिवत्वम्। √'द्युत्'। ता०ब्रा० २०.१४.२

२. हो इति तृतीयमूर्ध्वमुदस्यत्। तत् अदोऽभवत्। अद्युतदिव वा अद इति। तद्दिवो दिवत्वम्। √'द्युत्'। जै०ब्रा० २.२४४

३. द्यावौ द्योतनात्। √'द्युत्'। निरु० २.२०

४. दिवो द्योतनकर्माणम्। √'द्युत्'। निरु० १४.१२

५. दिवा (अहन्)। द्योतनात्। √'द्युत्'। निघ० १.९.१०

दिविष्टि

१. दिविष्टिषु दिव एषणेषु। '*दिव्*+ √'*इष्*'+ *क्तिन्*'। निरु० ६.२२

दिवेदिवे

१. दिवेदिवे (अहन्)। √'दिवु क्रीडाविजिगीषाव्यवहार-द्युतिस्तुतिमोदमदस्वप्नकान्तिगतिषु'। दिव्यन्तेऽस्मिन्निति द्यौः। √'*दिव्*'+ *डिवि*'। निघ० १.९.११

दिव्य

१. सं **दिव्येन दीदिहि** रोचनेन। √'*दी*'। यजु० २७.१, अथर्व० २.६.१

२. दिव्यो दिविजः। √'*दिव्*'+ √'*जन्*'। निरु० ७.१८

दिश

१. **दिशं न दिष्टामृजूयेव** यन्ता। √'*दिश्*'। ऋ० १.१८३.५

२. दिशः कस्मात्? दिशतेः। आसदनात्। √'*दिश्*'। निरु० २.१५

३. अपि वाऽभ्यशनात्। *(अर्थप्रदर्शनमात्रम्)*। निरु० २.१५

दीक्षा

१. द्यौर्दीक्षा। तथादित्यो दीक्षया दीक्षितः। √'*दिश्*'+ √'*ईक्ष्*'। *(दृष्टव्यः 'दीक्षित')*। तै०सं०३.७.७.५

२. दिशो दीक्षा। तथा चन्द्रमा दीक्षया दीक्षितः। √'*दिश्*'+ √'*ईक्ष्*'। तै०सं० ३.७.७, ६,७

३. पृथिवी दीक्षा। तथाग्निर्दीक्षया दीक्षितः। √'*दिश्*'+ √'*ईक्ष्*'। तै०सं०३.७.७, ४,५

४. वाग्वाव दीक्षितो वाग्दीक्षा वागिदं सर्वं क्षियति वाचि वावेदं सर्व क्षितम्। √'*क्षि*'। जै०ब्रा० २.५४

५. सैषानुपूर्वा दीक्षा तद्य एवं दीक्षन्ते दीक्षिष्यमाणा, एव ते सत्रिणां प्रायश्चित्तं न विन्दन्ते। √'दीक्ष्'। गो०ब्रा० १.४.६

दीक्षित

१. तद्यथा पतिं जाया अनिमेषमीक्षेरन्नेवमेवैना (दिशः) एवमिदं दीक्षमाणमीक्षन्ते। तद्यद् दिग्भिरीक्षितस्तस्माद् दीक्षितः। '*दिश्*'+ √'*ईक्ष्*'। जै०ब्रा० २.५२

२. स वै धीक्षते। वाचे हि धीक्षते यज्ञाय हि धीक्षते यज्ञो हि वाग् धीक्षितो ह वै नामैतद्यद् दीक्षित इति। √'*धीक्ष्* > *धीक्षित* > *दीक्षित*'। शत०ब्रा० ३.२.२.३०

३. कस्यस्विद्धेतोर्दीक्षित इत्याचक्षते, श्रेष्ठां धियं क्षियतीति तं वा एतं धीक्षितं सन्तं दीक्षित इत्याचक्षते परोक्षेण। '*धी*+ √'*क्षि*' *निवासगत्योः*'। गो०ब्रा० १.३.१९

दीधिति

१. दीधितयोऽङ्गुलयो भवन्ति, धीयन्ते कर्मसु। √'*धा*'। निरु० ५.१०

२. दीधितयः (रश्मयः)। √'दीधिङ् दीप्तिदेवनयोः'। धीयन्ते विधीयन्ते प्रेष्यन्ते रसहरणादिकर्मस्वादित्येन, धार्य्यंते वा वर्षार्थमेभिरुदकमादित्येन। √'*दीधि*'+ *क्तिच्*'। निघ० १.५.६

३. दीधितयः (अङ्गुलयः)। अङ्गुलीयकादिधारणाद् दीप्यन्ते। √'*दीधि*'+ *क्तिच्*'। निघ० २.५.२१

४. दीव्यन्ति क्रीडन्त्याभिरिति वा। √'*दीधि*'+ *क्तिच्*'। निघ० २.५.२१

५. दधातेर्व्युत्पन्नो दीधितिशब्दः। √'*धा*'। निघ० २.५.२१

दीधिम

१. दीधिम, अनुध्यायाम्। √'*ध्यै*'। निरु० ६.८

दीर्घ

१. दीर्घं द्राघतेः। √'*द्राघ्*'। निरु० २.१६

दुक्ष

१. विदुक्षः, विदूदुष इति। √'*दुष्*'। निरु० ३.२

दुघाम्, दुघ

१. ऋतस्य धाराः **सुदुघा दुहानाः**। √'*दुह्*'। ऋ० ७.४३.४

२. इषं दुहन्**सुदुघां** विश्वधायसम्। √'*दुह्*'। ऋ० १०.१२२.६

३. कामं कामदुघे **धुक्ष्व**। √'*दुह्*'। यजु० १२.७२

४. रोदसी **दुघे दुहे** धेनुः सरस्वती। √'*दुह्*'। यजु० २१.३४

५. **दुहाथां** धर्म **दुघे** इव धेनू। √'*दुह्*'। अथर्व० ४.२२.४

६. उप ह्वये **सुदुघां** धेनुमेतां सुहस्तो गोधुगुत **दोहदेनाम्**। √'*दुह्*'। अथर्व० ९.१०.४

७. दुघाम्, दोहनाम्। √'*दुह्*'। निरु० ११.४३

दुन्दुभि

१. दुन्दुभिरिति। शब्दानुकरणम्। '*दुन्दु*+ *दुन्दु इति शब्देन भाति > दुन्दुभि*'। '*दुन्दु*+ √'*भा*'+ *कि*'। निरु० ९.१२

२. दुमो भिन्न इति वा। '*दुम*+ √'*भिद्*' > *दुम*+ *भिद्*> *दुम*+ *दिभ्*> *दुम*+ *दुभ्* > *दुन्दुभि*'। निरु० ९.१२

३. दुन्दभ्यतेर्वा स्याच्छब्दकर्मणः। √'*दुन्दुभ्य्*'। निरु.,९.१२

४. शब्दानुकरणनिमित्तकमेतन्नाम। √'*दुन्दुभ्य्*'। निघ० ५.३.८

५. द्रुमशब्द वा रेफान्तलोपः। भिदेश्चाद्यन्तविपर्ययः। '*द्रुम्*>*द्रुम*, √'*भिद्*' > *दिभ्* >*दुभ्*>*दुम्*+ *दुभ्*>*दुन्दुभि*'। निघ० ५.३.८

६. दुन्दुभ्यतेर्वा नैरुक्तधातोवर्धकर्मणः। √'*दुन्दुभ्य्*'। निघ० ५.३.८

दुर

१. माद्रिः शरदिभर्दुरो वरन्त वः। √'*वृ*'। ऋ० २.४५.५

२. अपावृणोद्दुरो अश्मव्रजानाम्। √'*वृ*'। ऋ० १०.१३९.६

३. वि नो राये दुरो वृधि। √'*वृ*'। सा०उ० ७८३

दुरित

१. दुरितानि, दुर्गतिगमनानि। (*अर्थप्रदर्शनमात्रम्*)। निरु० ६.१२

दुरोण

१. जने नर शेव आहूर्यः सन्मध्ये निषत्तो **रण्वो दुरोणे**। √'*रम्*'। ऋ० १.६९.२

२. पुत्रो न जातो **रण्वो दुरोणे**। √'*रम्*'। ऋ० १.६९.३

३. दुरोण इति गृहनाम। दुरवा भवन्ति, दुस्तर्पाः। √'*दुर्*'+ √'*अव्*'। निरु० ४.५

४. दुरोणे (गृहम्)। '*दुः*+√'*अव*'। दुरवा भवन्ति दुस्तर्पाः (निरु० ४.५) दुश्शब्दपूर्वस्यावतेः रक्षणार्थस्य तर्पणार्थस्य वा। '*दुर्*'+ √'*अव्*'+ *नक्*'। निघ० ३.४.७

दुर्ग

१. दुर्गाणि दुर्गमानि स्थानानि। '*दुर्*+ √'*गम्*'। निरु० ७.२०, १४.३३

दुर्णामन्

१. दुर्णामन् क्रिमिर्भवति पापनामा। '*दुर्*+ *नामन्*'। निरु० ६.१२

दुर्धा

१. **दुर्धां** दधाति परमे व्योमन्। '*दुर्*+ √'*धा*'। ऋ० १०.१०९.४, अथर्व० ५.१७.६

दुर्य्य

१. दुर्य्याः (गृहम्)। √'*दुर्वी* हिंसार्था'। हिंसन्ति मीनाति हि तं दुःखम्। √'*दुर्व्*'+ *यत्*'। निघ० ३.४.९

२. यद्वा, दुःशब्दपूर्वात्+√'*या*'। दुःखेन प्राप्यन्ते। दुर्'+ √'*या*'+ *क*'। निघ० ३.४.९

३. दुरः गृहद्वाराणि अर्हन्तीति व दुर्य्या गृहा उच्यन्ते— इत्युवटः। '*दुर्*+ √'*दुर्य्य्*'। निघ० ३.४.९

दुर्वर्तु

१. दुर्वर्तुर्दुर्वारः। '*दुर्*+ √'*वृ*'। निरु० ४.१७

दुवस्य

१. दुवस्यतिराप्नोतिकर्मा। √'*दुवस्य*'। निरु० १०.२०

दुष्टर

१. **दुष्टरस्तरन्नरातीर्वर्चो** धा यज्ञवाहसे। √'*तृ*'। ऋ० ३.२४.१

२. अगन्निन्द्र श्रवो बृहद्द्युम्नं दधिष्व **दुष्टरम्**। उत्ते शुष्मं **तरामसि**। √'*तृ*'। ऋ० ३.३७.१०

३. दुष्टरस्तरन्नरातीरिति दुस्तरो ह्येष रक्षोभिर्नाष्ट्राभिः। '*दुस्*'+ √'*तृ*'। शत०ब्रा० ५.२.४.१६

दुहितृ

१. दुहिता दुर्हिता। '*दुर्*+ *हित*'। निरु० ३.४

२. दूरे हिता। '*दूर्*+ *हित*'। निरु० ३.४

३. दोग्धेर्वा। √'*दुह्*'। निरु० ३.४

दूही

१. दुर्धियः पापधियः। '*दुर्*+ *धी*> *दूढी*'। निरु० ५.२३

दूढ्य

१. दूढ्यं दुर्धियं पापधियम्। '*दुर्*+ *धी*'। निरु० ५.२, ५.२३

दूत

१. सं **दूतो अद्यौदुषसो विरोके**। √'*धु*'। ऋ० ३.५.२

२. अजिरो **दूतो अद्रवत्**। √'*दु*'। ऋ० ८.१०१.३

३. दूतो जवतेर्वा। √'*जु*'। निरु० ५.१

४. द्रवतेर्वा। √'*दु*'। निरु० ५.१

५. वारयतेर्वा। √'*वृ*'। निरु० ५.१

दूर

१. दूरं कस्मात्, दुतं भवति। √'*दु*'। निरु० ३.१९

२. दुरयं वा। '*दुर्*+ √'*इ*'। निरु० ३.१९

३. दुरीणो लोपश्च। '*दुर्*+ √'*इ*+ *रक्*'। उणा० २.२०

दूरे अन्ते

१. दूरे अन्ते (द्यावापृथिव्यौ)। 'दुःशब्दोपपदात्+ √'इण्'। अन्तो अततेः (निरु० ४.२५)। दुःखेन गम्यते दूरमतोऽह्यादेर्मध्याच्च सततगतौ भवति, न कदाचिदादौ मध्ये वास्ति— इति स्कन्दस्वामी। दूरे अन्तमवसानगतिर्ययोः। 'दुस्+ √'इ'+ रक्> दूरे, √'अत्'+ तन्> अन्ते'। निघ० ३.३०.२३

दूरेदृशम्

१. दूरेदृशं दूरे दर्शनम्। 'दूरे+ √'दृश्'। निरु० ५.१०

दूर्वा

१. सोऽब्रवीत् (प्रजापतिः)। अयं (प्राणः) वाव माधूर्वीदिति यदब्रवीदधूर्वीन्मेति तस्माद् धूर्वा, धूर्वा ह वै तां दूर्वेत्याचक्षते परोऽक्षम्। √'धुर्व्' > धूर्वा > दूर्वा'। शत०ब्रा० ७.४.२.१२

दृक्

१. संदृक्, संदृष्टा भूतानाम्। √'दृश्'। निरु० १०.२६

२. संदृक्, संदर्शयितेन्द्रियाणाम्। √'दृश्'। निरु० १०.२६

दृक्षसे

१. दृक्षसे, दृश्यसे। √'दृश्'। निरु० ४.१२

दृळहा, दृळह

१. इन्द्रेण रोचना दिवो **दृळहानि दृंहितानि** च। √'दृह्'। ऋ० ८.१४.९

२. दृळहा, दृढानि। √'दृह्'। निरु० ६.१९

दृति

१. दृतिः (मेघः)। √'दृ विदारणे'। दीर्य्यते इन्द्रेण। √'दृ'+ ति'। निघ० १.१०.२५

२. दृतिवत् स्यन्दमानाधारत्वाद्वा। √'दृ'+ ति'। निघ० १.१०.२५

३. दृणातेर्ह्रस्वः। √'दृ'+ ति'। उणा० ४.१८५

दृशीकम्

१. दृशीकम्, दर्शनीयम्। √'दृश्'। निरु० १०.८

दृशे

१. रुशद् **दृशे** **ददृशे** नक्तया चिदरूक्षितं **दृश** आ रूपे अत्रम्। √'दृश्'। ऋ० ४.११.१

२. दृशे, दर्शनाय। √'दृश्'। निरु० १२.१५

देभुः

१. देभुः, दभ्नुवन्ति। √'दम्भ्'। निरु० ५.१२

देव

१. ओमासश्चर्षणीधृतो विश्वे **देवास** आ गत। **दाश्वांसो दाशुषः** सुतम्। √'दा'। ऋ० १.३.७

२. राया **देवि दास्वती**। √'दा'। ऋ० १.४८.१

३. श्रुष्टीवानो हि **दाशुषे देवा** अग्ने विचेतसः। √'दा'। ऋ० १.४५.२

४. धेनुं **देवा अदत्तन**। √'दा'। ऋ० १.१३९.७

५. **देवो ददौ** मर्त्याय स्वधावान्। √'दा'। ऋ० ४.५.२

६. वामं वामं त आदुरे **देवो ददात्व**र्यमा। √'दा'। ऋ० ४.३०.२४

७. पुनर्वै **देवा अददुः**। √'दा'। ऋ० १०.१०९.६

८. वेदोऽसि येन त्वं **देव** वेद **देवेभ्यो** वेदोऽभवस्तेन मह्यं वेदो भूयाः। √'विद'। यजु० २.२१

९. त्वं **देवेभ्यो देवत्रा दत्त**। √'दा'। यजु० ६.२७

१०. शुक्रेण **देव दीद्यत्**। √'दी'। यजु० १९.४०

११. **देवा ददतु** भर्तवे। √'दा'। अथर्व० ३.५.३

१२. नैतां ते **देवा अददुः**। √'दा'। अथर्व० ५.१८.१

१३. भूम्यां **देवेभ्यो ददाति**। √'दा'। अथर्व० १२.१.२२

१४. त्वादुर्गार्हपत्याय **देवाः**। √'दा'। अथर्व० १४.१.५०

१५. **देवा ददत्वा**सुरं तद्। √'दा'। अथर्व० २०.१३५.१०

१६. **दिदीहि देव देवयुः**। √'दी'। ऋ० ९.१०८.९

१७. **दिदीहि देव देवयुम्**। √'दी'। सा० पू० ५.११.२, सा०उ० १०११

१८. तस्मै पितॄन्त्ससृजानाय दिवाभवत्, तेन देवानसृजत् तद्देवानां देवत्वम्। 'दिव> देव'। मै०सं० ४.२.१

१९. तस्मै मनुष्यान्त्ससृजानाय (प्रजापतये) दिवा (दिवसः) देवत्रा (द्योतनशीलः) अभवत्। तदनु देवानसृजत। तद्देवानां देवत्वम्। दिव> देव'। तै०सं० २.३.८.३

२०. दिवा वै नोऽभूदिति। तद्देवानां देवत्वम्। 'दिव> देव'। तै०सं० २.२.९.९

२१. देवो दानाद्वा। √'दा'। निरु० ७.१५

२२. दीपनाद्वा। √'दीप्'। निरु० ७.१५

२३. द्योतनाद्वा। √'द्युत्'। निरु० ७.१५

२४. द्युस्थानो भवतीति वा। √'दिव्'। निरु० ७.१५

२५. देवानां देवनकर्मणामादित्यरश्मीनाम्। ......देवानां देवनकर्मणामिन्द्रियाणाम्। √'दिव्'। निरु० १४.१३

देवगोपा

१. देवगोपा, देवी गोप्त्री देवान् गोपायत्विति। देवा एनां गोपायन्त्विति वा। 'देव+ √'गुप्'। निरु० ११.४६

देवताता

१. देवताता (यज्ञ:)। √'दिवु क्रीडादौ'। दीव्यन्ति स्तुवन्त्यत्र देवता:। देव एव देवता। √'दिव्' > देव, देव+ तल् > देवता, देवता+ तातिल् > देवताता'। निघ० ३.१७.१०

देवत्रा

१. देवत्रा, देवान्। *(त्रप्रत्ययस्यार्थनिर्देशमात्रम्)*। निरु० ८.६.२०

देवपत्नी

१. देवपत्न्यो देवानां पत्न्य:। 'देव+ पत्नी'। निरु० १२.४४

देवयन्त

१. देवयन्त:, देवान् कामयमाना। *(प्रत्ययस्यार्थ-निर्देशमात्रम्)*। निरु० ८.१८

देवयु

१. इषस्पते दिदीहि देव देवयु:। √'दी'। ऋ० ९.१०८.९

२. इषस्पते दिदीहि देव देवयुम्। √'दी'। सा०पू० ५.११.२, सा०उ० १०११

३. देवयव: (ऋत्विज:)। देव+√'या'। देवान् यान्ति हवि: प्रदानसमये। 'देव+ √'या'+ कु'। निघ० ३.१८.८

देवया

१. देवया, देवेज्या। 'देव+ √'यज्'। निरु० १२.५

देवर

१. देवर: कस्मात्, द्वितीयो वर उच्यते। 'द्वि+ वर> देवर'। निरु० ३.१५

२. देवरो दीव्यतिकर्मा। √'दिव्'। निरु० ३.१५

३. अर्तिकमिभ्रमिचमिदेविवासिभ्यश्चित्। √'दिव्'+ अर'। उणा० ३.१३२

देववाहन

१. मनो वै देववाहनं मनो हीदं मनस्विनं भूयिष्ठं वनीवाह्यते। 'देव+ √'वह्'। शत०ब्रा० १.४.३.६

देवश्रुत

१. देवश्रुतं तं देवा एनं श्रृण्वन्ति। 'देव+ √'श्रु'+ क्त'। निरु० २.१२

देवसव

१. यो वै सोमेन सूयते स देवसव:। य: पशुना सूयते स देवसव:। 'देव+ √'षु'। तै०सं० २.७.५.१

देवहूति

१. देवहूतया। ये देवान् आह्वयन्त। 'देव+ √'ह्वे'+ क्तिन्'। निरु० ५.२५

देवाची

१. देवान् प्रत्यक्तया। 'देव+ √'अञ्च्'। निरु० ६.८

देवापि

१. देवापिर्देवानामाप्त्या स्तुत्या च प्रदानेन च। 'देव+ √'आप्'। निरु० २.११

देवाव्य

१. देवाव्यमिति यो देवानवदित्येतत्। 'देव+ √'अव्'। शत०ब्रा० ६.३.१.२०

देवि

१. प्रजां देवि दिदिड्ढि न:। √'दिह्'। ऋ० २.३२.६

२. देवि दाशुषे मर्त्याय। √'दा'। ऋ० ६.६४.६

३. दिदेष्टु देव्यदिती रेक्ण:। √'दिश्'। ऋ० ७.४०.२

४. रायो देवी ददातु न:। √'दा'। ऋ० १०.१४१.२

५. वाग्देवी ददातु न: स्वाहा। √'दा'। यजु० ९.२९

६. या देवीरन्ताँ अमितोऽददन्त। √'दा'। अथर्व० १४.१.४५

देविका

१. अथैष क: प्रजापतिस्तद्यद्देव्यश्च कश्च तस्माद्देविका: पञ्च भवन्ति पञ्च हि दिश:। 'देवी+ क *(प्रजापति)*> देविका'। शत०ब्रा० ९.५.१.३९

देवी, ऊर्जाहुती

१. देवी ऊर्जाहुती। देव्या ऊर्जाह्वान्यौ। द्यावापृथिव्याविति वा। अहोरात्र इति वा। सस्यं च समा चेति कात्थक्य:। 'देव्यौ+ ऊर्क्+ आ+ √'ह्वे'+ क्तिन्'। निरु० ९.४२,४३

२. देवी ऊर्जाहुती (पृथिवीस्थानी)। ऊर्जा हेतुभूतया आह्वातव्ये। 'देव्यौ+ ऊर्क्+ आ+ √'ह्वे'+ क्तिन्'। निघ० ५.३.३६

देवीजोष्ट्री

१. देवी जोष्ट्री देव्यौ जोषयित्र्यौ। द्यावापृथिव्याविति वा। अहोरात्र इति वा। सस्यं च समाचेति कात्थक्यः। 'देवी+ √'जुष्'+ ष्ट्रन्'। निरु० ९.४१

दैवत

१. तद्यानि नामानि प्राधान्यस्तुतीनां देवतानां तद्दैवत-मित्याचक्षते। 'देवता> दैवत'। निरु० ७.१

दैवानीक

१. ततो वै ते (देवाः) ऽग्निनैवानीकेनासुरानजयन्। तदेव दैवानीकस्य दैवानीकत्वम्। 'देव+ अनीक'। जै०ब्रा० ३.२७५

दैव्या होतारा

१. दैव्या होतारा दैव्यौ होतारौ। 'देव+ √'ह्वे'+ तृच्'। निरु० ८.११

२. दैव्याहोतारा (पृथिवीस्थानी)। उभयत्राकारो द्विवचनस्य। आह्वातारौ देवानाम्। पार्थिवमध्यमावग्नी उच्येते। 'देव+ √'ह्वे'+ तृच्'। निघ० ५.२.९

दोस्

१. दोः द्रवतेः। √'द्रु'। निरु० ४.३

दोह, दोहा

१. दुहे सायं दुहे प्रातर्दुहे मध्यं दिनं परि। दोहा ये अस्य संयन्ति तान् विद्मानु पदस्वतः। √'दुह्'। अथर्व० ४.११.२

२. नास्मै पृश्निं वि दुहन्ति येऽस्या दोहमुपासते। √'दुह'। अथर्व० ५.१७.१७

दोहद्

१. दोहद्, दोग्धि। √'दुह'। निरु० ११.४३

दोहस्

१. वृषा वृष्णे दुदुहे दोहसा दिवः। √'दुह'। ऋ० १०.११.१, अथर्व० १८.१.१८

दौर्गह

१. दौर्गहः (अश्वः)। 'दुर्+√'ग्रह्'। अश्वहृदयानभिज्ञै-र्गृहीतुमशक्यत्वात् दुर्गह उच्यते। दुर्गह एव दौर्गहः। 'दुर्+ √'ग्रह्'+ खल्'। निघ० १.१४.१२

२. यद्वा, गाहे वा। दुःखेन गहितत्वात् दुर्गाहं जलमुच्यते—इति माधवः, तत्र भवो दौर्गहः। 'दुर्+ √'गाह्'+ खल्+ अण्'। निघ० १.१४.१२

द्यु

१. द्युरित्यह्नो नामधेयम्, द्योतत इति सतः। √'द्युत्'। निरु० १.६

द्युगत्

१. द्युगत् (क्षिप्रम्)। निपातः। (*निपातनात्*)। निघ० २.१५.२३

द्युमत्

१. द्युमान्, द्योतनवान्। √'द्युत्'>द्यु, द्यु+ मतुप्'। निघ० ६.१९

द्युम्न

१. द्युम्नं द्योततेः। यशो वाऽन्नं वा। √'द्युत्'। निरु० ५.५

२. द्युम्नम् (धनम्)। √'द्युत् दीप्तौ'। दीप्यते धनम्। √'द्युत्'+ मक्+ न'। निघ० २.१०.१३

३. यद्वा, √'द्यु अभिगमने'— इति क्षीरस्वामी। √'द्यु'+ मक्+ नक्'। निघ० २.१०.१३

द्योतना

१. द्योतना (उषा)। ण्यन्तात् √'द्युत दीप्तौ'। द्योतयति सर्वान् पदार्थान् प्रकाशकत्वम्। √'द्युत्'+ युच्'। निघ० १.८.११

२. यद्वा, द्योतते स्वयं द्योतना। √'द्युत्'+ युच्'। निघ० १.८.११

द्रप्स

१. द्रप्सः संभृतः प्सानीयो भवति। √'भृ'+ √'प्सा'> भ्र+ प्स > द्रप्स'। निरु० ५.१४

द्रवत्

१. द्रवत् (क्षिप्रम्)। √'द्रु गतौ'। द्रवत्यनेनेन। √'द्रु'+ *अति*'। निघ० २.१५.३

४. आदस्य वातो अनु वाति शोचिः। √'वा'। ऋ० १.१४८.४; यजु० १५.६२

५. यदस्य वातो अनु वाति शोचिः। √'वा'। ऋ० ४.७.१०

६. प्र वाता वान्ति पतयन्ति विद्युतः। √'वा'। ऋ० ५.८३.४

७. मिहं न वातो वि ह वाति भूम। √'वा'। ऋ० १०.३१.९

८. न्यग्वातोऽव वाति। √'वा'। ऋ० १०.६०.११; अथर्व० ६.९१.२

९. द्वाविमौ वातौ वात। √'वा'। ऋ० १०.१३७.२; अथर्व० ४.१३.२

१०. आ वातु परोन्यो वातु यद्रपः। √'वा'। ऋ० १०.१३७.२

११. आ वात वाहि भेषजं वि वात वाहि यद्रपः। √'वा'। ऋ० १०.१३७.३; अथर्व० ४.१३.३

१२. यदा ते वातो अनु वाति। √'वा'। ऋ० १०.१४२.४

१३. वात आ वातु भेषजम्। √'वा'। ऋ० १०.१८६.१; सा०पू० २.७.१०

१४. वाता वान्तु दिशोदिशः। √'वा'। अथर्व० ४.१५.८

१५. सविद्युतं भवतु वातु वातः। √'वा'। अथर्व० ४.१५.१६

१६. अहमेव वात इव प्रवामि। √'वा'। अथर्व० ४.३०.८

१७. शं नो वातो वातु। √'वा'। अथर्व० ७.६९.१

१८. शं वातो वातु हृदे। √'वा'। अथर्व० ८.२.१४

१९. येभिर्वात इषितः प्रवाति। √'वा'। अथर्व० १०.८.३५

२०. वातस्य प्रवामुपवामनुवात्यर्चिः। √'वा'। अथर्व० १२.१.५१

२१. शिवा नो वाता इह वान्तु भूमौ। √'वा'। अथर्व० १२.३.१२

२२. वाता इह वातु भूमौ। √'वा'। अथर्व० १८.१.३९

२३. वाता उप वान्तु शग्माः। √'वा'। अथर्व० १८.२.२१

२४. यदिदं सर्वं वाति तस्माद् वातः। √'वा'। जै०ब्रा० २.५६

२५. वाते वाति। √'वा'। जै०ब्रा० ३.११४

२६. वाता वायन्ते। √'वा'। षड्०ब्रा० ६.८.२

२७. वायुर्वा अग्नेस्तेजस्तस्माद् यद्रयङ् वातो वाति तदग्निरन्वेति। √'वा'। मै०सं० ३.१.१०; काठ० १९.८

२८. वातो वायात्। √'वय' गतौ'। गो०ब्रा० १.३.१३

२९. वातो वातीति सतः। √'वा'। निरु० १०.३४

३०. वातः, वचनः। √'वच्'। निरु० १०.७

३१. वात आ वातु। √'वा'। निरु० १०.३५

३२. हसिमृग्रिण्वामिदमिलूपूधूर्विभ्यस्तन्। √'वा+ तन्'। उणा० ३.८६

वातरंहा

१. वातरंहा (क्षिप्रम्)। √'वा' गतिगन्धनयोः'+√'रमु' क्रीडायाम्'। वातवत् रंहो यस्य। √'वा'+ तन्+ '√रम्' + असुन्+ हुगागमश्च'। निघ० २.१५.२६

वाताप्य

१. वाताप्यमुदकं भवति। वात एतदाप्यायति। 'वात+ आ+ '√प्याय्'। निरु० ६.२८

वात्सप्र

१. यद्वेव वत्सं स्पृशति तस्माद् वात्सप्रं सूक्तम्। 'वत्स+ '√स्पृश्'। कौ०ब्रा० २.४

वादी

१. सुमङ्गलो भद्रवादी वदेह। √'वद्'। ऋ० २.४२.२

२. लोहितेन द्विषन्तं विध्यतीति ब्रह्मवादिनो वदन्ति। √'वद्'। अथर्व० १५.१.८

वाम

१. वंसीमहि वामं श्रोमतेभिः। √'वन्'। ऋ० ६.१९.१०

२. वामस्य वननीयस्य। √'वन्'। निरु० ४.२६

३. वामं वननीयं भवति। √'वन्'। निरु० ६.३१; ११.४६

४. वामः (प्रशस्यः)। √'वन' सम्भक्तौ'। सम्भजनीयो हि प्रशस्यः। √'वन्'+ मक्'। निघ० ३.८.९

५. अर्तिस्तुसुहुसृधृक्षिक्षुभायावापदियक्षिनीभ्यो मन्। √'वा'+ मन्'। उणा० १.१४०

वामदेव, वामदेव्य

१. तं देवा अब्रुवन्नयं वै नः सर्वेषां वाम इति तस्माद् वामदेवस्तस्माद् वामदेव इत्याचक्षत एतमेव (प्राणम्) सन्तम्। 'वाम+ देव'। ऐ०आ० २.२.१

२. यदब्रुवन् (देवाः) इयद्वा वेदमासेदं वाव नो देवानां वाममिति वामदेव्यस्य वामदेव्यत्वम्। 'वाम+ वेद> वामदेव> वामदेव्य'। जै०ब्रा० १.१४४

वामभृत्

१. देवासुराः संयत्ता आसन्। ते वामं वसुं संन्यदधत तद्देवा वामभृता अवृञ्जत, तद्वामभृतो वामभृत्त्वम्। '*वाम*+'√*भृ*'। तै०सं० ५.५.३.३

वाय

१. वायो वेः पुत्रः। '*वेः पुत्रः*> *वाय*'। निरु० ६.२८

२. वेति च य इति च चकार शाकल्यः। √'*वा*'+ *यत्*'। निरु० ६.२८

वायु

१. यदिदं सर्वं युते तस्माद् वायुः। √' *यु*'। जै०ब्रा० २.५६

२. वायुर्वा अग्नेस्तेजस्तस्माद् वायुमग्निरन्वेति। √'*इ*'। मै०सं० ३.१.१०; काठ० १९.८

३. वायुर्वातेः। √'*वा*'। निरु० १०.१

४. वेतेर्वा स्याद्गतिकर्मणः। √'*वी*'। निरु० १०.१

५. एतेरिति स्थौलष्ठीविः। अनर्थको वकारः। √'*इ*'। निरु० १०.१

६. वायुरयनः। √'*इ*'। निरु० १०.१

७. कृवापाजिमिस्वदिसाध्यशूभ्य उण्। √'*वा*'+ *उण्*'। उणा० १.१

वार्

१. अपकामं स्यन्दमाना **अवीवरत** वो हि कम्। इन्द्रो वः शक्तिभिर्देवीस्तस्माद् **वार्नाम** वो हितम्। √'*वृ*'। अथर्व० ३.१३.३

२. **वारिदं वारयातै वरणावत्यामधि**। तत्रामृतस्यासिक्तं तेना ते **वारये** विषम्। √'*वृ*'। अथर्व० ४.७.१

३. अपकामं स्यन्दमाना अवीवरत वो हि कम्। इन्द्रो वः शक्तिभिर्देवीस्तस्माद् वार्नाम वो हितम्। √'*वृ*'। मै०सं० २.१३.१

४. यदवृणोत्तस्माद्वाः। √'*वृ*'। शत०ब्रा० ६.१.१.९

५. वाः (उदकम्)। √'*वृञ्*' वरणे'। वृतं हि तदिन्द्रेण। √'*वृ*'। निघ० १.१२.८

वार

१. शतं शश्वन्वतीनां **शतवारेण वारये**। √'*वृ*'। अथर्व० १९.३६.६

वारवन्तम्

१. वारवन्तम्, बालवन्तम्। बाला दंशवारणार्था भवन्ति। '*बालवन्तम्*+ *वारवन्तम्*(√'*वृ*)'। निरु० १.२०

वारवन्तीय

१. अग्निर्वा इदं वैश्वानरो दहन्नैतस्माद् देवा अबिभयुस्तं वरणशाखयाऽ वारयन्त यदवारयन्त तस्माद् वारवन्तीयम्। √'*वारय्*'। तां०ब्रा० ५.३.९

२. तं (अग्निं प्रजापतिः) वारवन्तीयेनाऽऽवारयत तद्वारवन्तीयस्य वारवन्तीयत्वम्। √'*वारय्*'। तै०सं० ५.५.८.१

३. सो (अग्निः) ऽश्वो वारो भूत्वा पराङैत्। तं वारयन्तीयेनावारयत। तद्वारवन्तीयस्य वारयन्तीयत्वम्। √'*वारय्*'। तै०सं० १.१.८.३

४. यदवारयत् तद्वारवन्तीयस्य वारयन्तीयत्वम्। √' *वारय्*'। तै०सं० १.५.१२.१

५. वारवन्तीयं पशुकामः कुर्वीत.......। (प्रजापतिः) तान् (पशून्) वारवन्तीयेनावारयत। यदवारयत तद्वारवन्तीयस्य वारवन्तीयत्वम्। '*वारय्*'। √'*वारय्*'। जै०ब्रा० १.१७२

६. प्रजापतिः पशूनसृजत। तेऽस्मात्सृष्टा अपाक्रामन्। तान् वारवन्तीयेनैव वरणशाखामाच्छाद्यावारयत। यदवारयत तद्वारवन्तीयस्य वारवन्तीयत्वम्। तस्माद्वरणं भिषज्यमाहुः। √'*वारय्*'। जै०ब्रा० २.४१३

वारि

१. वारि वारयति। √'*वारय्*'। निरु० ९.२

२. वारि (उदकम्)। ऊर्णोतेः। वार्य्यतेतत् सेत्त्वादिभिः पुरुषैः। √'*उण्*'+ '*इण्*'। निघ० १.१२.९८

३. वसिवपियजिराजिव्रजिसदिहनि वाशिवादिवारिभ्य इञ्। √'*वारय्*'+*इञ्*'। उणा० ४.१२६

वार्य

१. तद्देवस्य सवितुर्वार्यं **वृणीमहे**। √'*वृ*"। ऋ० ४.५३.१

२. **तद्वार्यं वृणीमहे वरिष्ठम्**। √'*वृ*"। ऋ० ८.२५.१३

३. वार्यं वृणोतेरथापि वरतमम्। √'*वृ*"। निरु० ५.१

वार्श

१. यदु वृशोऽपश्यत् तस्माद् वार्शमित्याख्यायते। '*वृशु*> *वार्श*'। जै०ब्रा० ३.९६

वाल, वाली

१. वाला दंशवारणार्था भवन्ति। √'*वृ*"। निरु० १.२०

२. वालं पर्वं वृणोतेः। √'वृ"। निरु० ११.३१

वालखिल्य

१. प्राणा वै वालखिल्याः प्राणेनैवैतदुपधाति ता यद् वालखिल्या नाम यद्वाऽ उर्वरयोरसम्भिन्नं भवति खिल इति वै तदाचक्षते वालमात्रादु हेमे प्राणा असम्भिन्नास्ते यद्वालमात्रादसंभिन्नास्तस्माद् वालखिल्याः। '*वाल+ खिल= वालखिल्य*'। शत०ब्रा० ८.३.४.१ (तु०, कौ०ब्रा० ३०.८)

वावशान

१. वावशानो वष्टेर्वा। √'*वश्*'। निरु० ५.१

२. वाश्यतेर्वा। √'*वाश्*'। निरु० ५.१

वावृधानः

१. वावृधानः, वर्धमानः। √'*वृध्*'। निरु० १०.२७

वाश, वाशी

१. ते (देवाः) वाश इत्येव वशमसुराणामवृञ्जत। तदेव वाशस्य वाशत्वम्। √'*वश्*'। जै०ब्रा० ३.२२०

२. वाशीति वाङ्नाम। वाश्यत इति सत्याः। √'*वाश्*'। निरु० ४.१६

३. वाशीति (वाक्)। 'वाशृ' शब्दे'। कर्मणि कारके वा दृश्यते। √'*वाश्*'+ इञ्+ ङीष्'। निघ० १.११.११

वास

१. राजा सिन्धूनामवसिष्ट **वासः**। √'*वस्*'। ऋ० ९.८९.२

वासर

१. वासराणि वेसराणि। √'*वेस्' (निघ० २.६.५ कान्तिकर्मा)*'। निरु० ४.७

२. विवासनानि गमनानीति वा। '*वि+* √'*वासय्*'। निरु० ४.७

३. वासरम् (अहः)। √'वस' निवासे'। विवासयति अपनयति शीतादिकम्। √'*वासय्+ अरच्*'। निघ० १.९.४

४. यद्वा, वसेः स्वार्थे णिच्। वसत्यस्मिन् सुखेनेति वासरम्। √'*वस्*'+ *णिच्> वासि, वासि+ अरच्*'। निघ० १.९.४

५. यद्वा, √'वासृ' दीप्तौ'। दीप्यते वासरम्। √'*वास्+ अरच्*'। निघ० १.९.४

६. यद्वा, विपूर्वात् सर्तेगत्यर्थात्। विविधं सराणि सृतानि विस्तीर्णानीत्यर्थः।
'*वि+* √'*सृ*'+ *अच्(पृषोदरादित्वात्)*। निघ० १.९.४

७. वासराणि वेसराणि (निरु० ४.७) इति भाष्ये स्कन्दस्वामी—वेसरशब्दस्यायमेकारस्याकारः। '*वेसर > वासर*'। निघ० १.९.४

८. अर्तिकमिभ्रमिचमिदेविवासिभ्यश्चित्। √'*वासय्+ अरच्*'। उणा० ४.१३२

वासव

१. अग्निर्वसुभिर्वासवः। ....इन्द्रो वसुभिर्वासवः। '*वसु> वासव*'। निरु० १२.४१

वास्तु

१. वास्तुर्वसतेर्निवासकर्मणः। √'*वस्*'। निरु० १०१६

वास्तोष्पति

१. वास्तोष्पतिः। वास्तुर्वसतेर्निवासकर्मणः। तस्य पाता वा पालयिता वा। √'*वस्*'+ '*पा*' *या पाल्*'। निरु० १०१६

वाहस्

१. वज्रवाहो वृषणे मदाय सुयुजो **वहन्तु**। √'*वह्*'। ऋ० ६.४४.१९

२. बृहस्पतिं सहवाहो **वहन्तु**। √'*वह्*'। ऋ० ७.९७.६

३. भोजमश्वाः सुष्ठुवाहो **वहन्ति**। √'*वह्*'। ऋ० १०.१०७.११

४. उक्त्वा **वहन्तु** मरुत उदवाहा उदप्रुतः। √'*वह्*'। अथर्व० १८.२.२२

५. **अवाड्ढव्येषितो हव्यवाहः**। √'*वह्*'। अथर्व० १८.४.१

६. वाहः, अभिवहनस्तुतिं.......मन्यन्ते। √'*वह्*'। निरु० ४.१६

वाहिष्ठ

१. आ वो **वाहिष्ठो वहतु स्तवध्यै**। √'*वह्*'। ऋ० ७.३७.१

२. वाहिष्ठः वोढृतमः। √'*वह्' (प्रत्ययार्थ प्रदर्शनम्)*'। निरु० ५.१

वि

१. वि वरुषसा सूर्येण गोभिरन्धः। √'*वृ*'। ऋ० १.६२.५

२. चित्रा वि दुरो न **आवः**। √'*वृ*'। ऋ० १.११३.४

३. अथो अद्येदं व्यावो मघोनी। √'*वृ*'। ऋ० १.११३.९

४. विदसद्वाजप्रमहः समिषो वरन्त। √'वृ'। ऋ० १.१२१.१५

५. त्वं ताँ अग्न उभयन्वि विद्वान् वेषि। √'वी'। ऋ० १.१८९.७

६. वेर्न गर्भं परिवीतमश्मन्यनन्ते अन्तरश्मनि। √'वी'। ऋ० १.१३०.३

७. जसुर्वेर्न वेवीयते मतिः। √'वी'। ऋ० १०.३३.२

८. विरिति शकुनिनाम। वेतेर्गतिकर्मणः। √'वी'। निरु० २.६

९. वातेर्डिच्च। √'वा'+ इञ्'। उणा० ४.१३५

विंशति

१. प्रजापतेर्विस्रस्तादाप आयंस्तास्वितास्वविशद् यदविश-त्तस्माद्विंशतिः। √'विश्'। शत०ब्रा० ७.५.२.४४

२. विंशतिर्द्विर्दशतः। 'द्वि+ दशत्'। निरु० ३.१०

विकट

१. विकटो विक्रान्तगतिरित्यौपमन्यवः। (*अर्थप्रदर्शन-मात्रम्*)। निरु० ६.३०

२. कुटतेर्वा स्याद्विपरीतस्य। विकुटितो भवति। √'कुट्'। निरु० ६.३०

विक्रान्ति

१. एषा वै देवानां विक्रान्तिर्यद् दर्शपौर्णमासौ, य एवं विद्वान् दर्शपौर्णमासौ यजते देवानामेव विक्रान्ति-मनुविक्रमते। √'क्रम्'। तै०सं० २.५.६.१,२

विखाद

१. विखादः (सङ्ग्रामः)। √'खद' स्थैर्ये हिंसायाञ्च'। विशिष्टं स्थैर्य्यमत्र शत्रूणां हिंसनं वा। 'वि+ √'खद्'। निघ० २.१७.३

विग्र

१. विग्रः (मेधावी)। विपूर्वात् गृणातेः। विविधं गृणात्यर्थान्। 'वि+ √'गृ'+ ड'। निघ० ३.१५.२

विघन

१. तेन (विघनेन) एनम् (इन्द्रम्) अयाजयत् (प्रजापतिः) स (इन्द्रः) हैष्ट्वैव सर्वा मृधो व्यहत, यद् व्यहत, तद्विघनस्य विघनत्वम्। 'वि+ √'हन्'। जै०ब्रा० २.१४१

२. इन्द्रः..........एतं विघनमपश्यत्तेन पाप्मानं भ्रातृव्यं व्यहन्। 'वि+ √'हन्'। तां०ब्रा० १९.१८.२

३. तेन (इन्द्रः) सर्वा मृधो व्यहत यद्व्यहत तद्विघनस्य विघनत्वम्। 'वि+ √'हन्'। तां०ब्रा० १९.१९.१

विचित

१. शुक्रस्ते ग्रह्यो विचितस्त्वा विचिन्वन्तु। 'वि+ √'चि'। यजु० ४.२४

विजामातृ

१. विजामातुः। असुसमाप्ताज्जामातुः। विजामातेति शश्वद् दाक्षिणाजाः क्रीता पतिमाचक्षते। असुसमाप्त इव वरोऽभिप्रेतः। (*अर्थप्रदर्शनमात्रम्*)। निरु० ६.९

विज्ञ

१. एतः (मनः, प्राणः, चक्षुः, श्रोत्रम्, वाक्) इह विज्ञाः। वि ह वै ज्ञायते श्रेयान् भवति य एवं वेद। 'वि+ √'ज्ञा'। जै०ब्रा० १.२.६९

वितत

१. यज्ञस्य दोहो विततः पुरुत्रा सो अष्टधा दिवमन्वाततान। 'वि+ √'तन्'। यजु० ८.६२

वितर

१. वितरं विकीर्णतरमिति वा। '*विकीर्ण— तर> वितर*'। निरु० ८.९

२. विस्तीर्णतरमिति वा। '*विस्तीर्णतर> वितर*'। निरु० ८.९

वितस्ता

१. वितस्ता विदग्धा विवृद्धा महाकूला। 'वि+ '√तसु 'वृद्धौ'। (*धात्वर्थप्रदर्शनमात्रम्*)। ९.२६

२. वौ तसेः। 'वि+ √'तस्'। उणा० ४.१८३

वितान

१. तद् एतद् वितानं यद् इमान् लोकान् व्याप्तम्। √'वि+ 'आप्'। जै०ब्रा० ३.३८०

वित्त

१. विन्दन्ति विद्युतो वित्तं मे अस्य रोदसी। √'विद्'। ऋ० १.१०५.१

२. पदं **विन्दन्ति** विद्युतो **वित्तं** मे अस्य रोदसी। √'*विद्*'। अथर्व० १८.४.८९

विदत्र

१. आहं पितॄन्सुविदत्राँऽ **अवित्सि**। √'*विद्*'। यजु० १९.५६, अथर्व० १८.१.४५

विदथ

१. प्रियासः सुवीरासो **विदथमावदेम**। √'*वद्*'। ऋ० २.१२.१५

२. **बृहद्वदेम विदथे** सुवीराः। √'*वद्*'। ऋ० २.१४.१२, १५.१०, १८.९, १९.९,२३.१९, २४.१६

३. **विदथे** शस्यमानेन्द्र यत्ते जायते **विद्धि**

४. तस्य। √'*विद्*'। ऋ० ३.३९.१

५. **वेद** यस्त्रीणि **विदथानि**। √'*विद्*'। ऋ० ६.५१.२

६. विदथानि वेदनानि। √'*विद्*'। निरु० ६.७

७. विदथः (यज्ञः)। √'विद' ज्ञाने'। ज्ञायते

८. हि यज्ञः। √'*विद्*'। निघ० ३.१७.५

९. यद्वा, √विद' विचारणे'। विचार्यते हि

१०. विद्वद्भिः। √'*विद्*'। निघ० ३.१७.५

११. यद्वा, √'विद्लृ' लाभे'। लभते हि

१२. दक्षिणादिरत्र। √'*विद्*'। निघ० ३.१७.५

१३. यद्वा, √विद' सत्तायाम्'। भावयत्यनेन

१४. फलम्। √'*विद्*'। निघ० ३.१७.५

१५. रुविदिभ्यां डित्। √'*विद्*'+ *अथ*'। उणा० ३.११५

विदान

१. विदान इति विद्वानित्येतत्। √'*विद्*> *विद्वान्*> *विदान*'। शत०ब्रा० ६.४.२.७

विद्मन्

१. विद्मनापसम्, विदितकर्माणम्। '*विद्*'। निरु० ११.३३

विद्या

१. **विद्यां** चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयं सह। √'*विद्*'। यजु० ४०.१४

२. आपो वै विद्या अद्भिर्हीदꣳसर्वं विहितम्। '*वि*+ √'*धा*'। शत०ब्रा० ८.२.२.८

विद्युत्

१. **विद्युन्न दविद्योत्** स्वेभिः शुष्मैः। √'*द्युत्*'। ऋ० ६.३.८

२. स हि **द्युता विद्युता** वेति साम। √'*द्युत्*'। ऋ० १०.९२.२

३. पदं **विन्दन्ति विद्युतो** वित्तं मे अस्य रोदसी। √'*द्युत्*'। अथर्व० १८.४.८९, साम०पू० ४.७.९

४. तान् (देवान् प्रजापतिः) व्यद्यत् (पाप्मनः सकाशात् वियोजितवान्)। यद् व्यद्यत् तस्माद्विद्युत्। '*वि*+ √'*अद्*'। तै०सं० ३.१०.९.१

५. वाग्वा वा इदमद्युतदिति। सैषा विद्युदभवत्। √'*द्युत्*'। जै०ब्रा० ३.३८०

६. विद्युद् ब्रह्मेत्याहुः। विदानाद् विद्युद् विद्यत्येन सर्वस्मात् पाप्मानो य एवं वेद विद्युत् ब्रह्मेति विद्युद्ध्येव ब्रह्म। √'*विद्*'। शत०ब्रा० १४.८.७.१

विद्रध

१. विद्रधे विद्धयोः। '*विद्ध*> *विद्रध*'। निरु० ४.१५

विद्वान्

१. **वेददविद्वाञ्छृणुवच्च विद्वान्**। √'*विद्*'। ऋ० ५.३०.३

२. **विद्वान्**मना देवेषु **विविदे** मितद्रुः। √'*विद्*'। ऋ० ७.७.१

३. स **विद्वान्** ज्येष्ठं मन्येत स **विद्याद्** ब्राह्मणं महत्। √'*विद्*'। अथर्व० १०.८.२०

विधर्ता

१. **धर्त्ता** च **विधर्त्ता** च **विधारयः**। '*वि*+ √'*धारय्*'। यजु० १७.८२

२. विधर्ता, विधारयिता। '*वि*'+ √'*धारय्*'। निरु० १२.१४.२

विधान

१. मासां **विधानमदधा** अधि। √'*धा*'। ऋ० १०.१३८.६

विधेम

१. विधेम, विधतिर्दानकर्मा। √'*विध्*'। निरु० १०.२३

विधवा

१. विधवा विधातृका भवति। '*वि*+ √'*धा*'। निरु० ३.१५

२. विधवनाद्वा। '*वि*+ √'*धू*'। निरु० ३.१५

३. विधावनाद्वेति चर्मशिराः। '*वि*+ √'*धाव्*'। निरु० ३.१५

४. अपि वा धव इति मनुष्यनाम। तद्वियोगाद्विधवा। '*वि*+ √'*धव्*+ *टाप्*'। निरु० ३.१५

विधाता

१. धात्रा व्याख्यातः। '*वि*+ √'*धा*'। निरु० ११.११

२. विधाता (मेधावी)। विपूर्वाद् दधातेः। वेधः शब्दवदर्थः। '*वि*+ √'*धा*+ *तृच्*'। निघ० ३.१५.३

विधु

१. विधु विधमनशीलम्। '*वि*+ √'*धम्*'। निरु० १४.१८

२. पृभिदिव्यधिगृधिधृषिहृषिभ्यः। √'*व्यध्*+ *कु*'। उणा० १.२३

विनङ्गृस

१. विनङ्गृसौ (बाहू)। विनम्य ग्रसतोऽन्नादकर्मेति माधवः। '*वि*+ √'*ग्रस्*'+ *अच्*। निघ० २.४.५

विनुत्ति

१. यद् व्युनदन्त तद्विनुत्तेर्विनुत्तित्वम्। '*वि*+ √'*उन्द्*'। जै०ब्रा० २.१०४

विन्धे

१. विन्धे विन्दामि। √'*विद्*'। निरु० ६.१८

विप, विपा

१. विपः (अङ्गुलयः)। √'विप्' प्रेरणे'। प्रेर्य्यन्ते पुरुषैः कार्येषु। √'*विप्*'+ *क्विप्*'। निघ० २.५.९

२. विपः (मेधाविनः)। √'विप' क्षेपे'। विप्रवदर्थः। √'*विप्*'+ *क्विप्*'। निघ० २.५.९

३. विपा (वाक्)। √'विप' क्षेपे'। प्रेर्य्यते मनसा विपा। √'*विप्*'+ *क्विप्*'। निघ० २.५.९

विपन्यवः

१. विपन्यवः (मेधाविनः)। विपतेः। √'*विप्*'+ *कन्युच्*'। निघ० ३.१५.१७

२. यद्वा, विविधं पननं स्तुतिः। '*वि*+ √'*पन्*'+ *कु*'। निघ० ३.१५.१७

विपश्चित्

१. विपश्चित् (मेधाविनः)। विपो वाचश्चेतयते। '*विप*+ √'*चित्*'। निघ० ३.१५.१६

२. विपश्यंश्चेतयते— इति क्षीरस्वामी। पश्यतेः रूपम्। '*वि*+ √'*दृश्*+ √'*चित्*' = *वि*+ *पश्*+ *चित्*= *विपश्चित्*'। निघ० ३.१५.१६

विपाश्

१. विपाड् विपाटनाद्वा। '*वि*+ √'*पट्*'। निरु० ९.२६

२. विपाशनाद्वा। '*वि*+ √'*पाश्*'। निरु० ९.२६

३. पाशा अस्यां व्यपाश्यन्त वसिष्ठस्य मुमुर्षतः, तस्माद् विपाडुच्यते। '*वि*+ √'*पाश्*'। निरु० ९.२६

४. विप्रापणाद्वा। '*वि*+ *प्र*+ √'*आप्*'। निरु० ९.२६

५. विपाशि विमुक्तपाशि। '*वि*+ √'*पाश्*'। निरु० ९.२६

६. विधर्ता, विधारयिता। '*वि*'+ √'*धारय्*'। निरु० १२.१४

विप्र

१. विप्राणां व्यापनकर्मणामादित्यरश्मीनाम्। 'वि+√'आप्' निरु० १४.१३

२. विप्रः (मेधावी)। √'टुवप्' बीजसन्ताने'। उप्यतेऽस्मिन्नतिशयेन मेधा। √'*वप्*'+ *रन्* (*निपातनात्*)'। निघ० ३.१५.१

३. यद्वा, √'विप' क्षेपे'। क्षिपत्यनया पापं वा। √'विप्+रन्'। निघ० ३.१५.१

४. यद्वा, विप इति अङ्गुलिनामसु व्याख्यातम्। सास्यास्तीति रो मत्वर्थीयः। वाङ्मयी हि मेधा। √'*विप्*'+ र (*मत्वर्थीयः*)'। निघ० ३.१५.१

५. यद्वा, वि+√'प्रा' पूरणे'। विशेषेण पूरयति विद्यार्थिनामपेक्षाः। '*वि*+ √'*प्रा*'+ *क*'। निघ० ३.१५.१

६. ऋजेन्द्राग्रवज्रविप्रकुब्रक्षुरखुरभद्रोग्रभेरभेलशुक्रशुक्ल-गौर०। √'*वप्*'+ *ऋन्*' (*निपातनात्*)'। उणा० २.२९

विभाती

१. उषो **विभातीरनु** भासि पूर्वीः। √'*भा*'। ऋ० ३.६.७

विभावरी

२. विभावरी (उषस्)। '*वि*+ √'*भा*' *दीप्तौ*'। विशेषेण भाति दीप्यते आदित्यकिरणसम्बन्धात्। *वि*+ √'*भा*' + *वनिप्*+ *ङीप्*'। निघ० १.८.१

३. वनो र च। 'वि+√'भा'+वनिप्+रेफादेशश्च+ङीप्। अष्टा० ४.१.७

विभावा

१. यो भानुर्विभावा **विभाति**। √'*भा*'। ऋ० १०.६.२

विभीदक/वैभीदक

१. वैभीदक इध्मो भिनत्त्येवैनम्। '*वि*+ √'*भिद्*'। तै०सं० २.१.५.७-८

२. विभीदको विभेदनात्। *'वि+ √'भिद्'*। निरु० ९.८

विभु

१. विभु विभ्वाभवत्समृते मातरिश्वा। √*'भू'*। ऋ० १.१९०.२

विमद

१. विमदेन वै देवा असुरान् व्यमदन्। *'वि+ √'मद्'*। कौ०ब्रा० २२.६

विमना

१. विमना, विभूतमना। *(उपसर्गार्थप्रदर्शनम्)*। निरु० १०.२६

विमुक्ति

१. अथ यत्पुरास्तादुदयनीयस्यातिरात्रस्य विमुच्यते सा विमुक्ति:। *'वि+ √'मुच्'*। ऐ०ब्रा० ६.२३

२. विमुक्तिमनु (देवा:) विमुच्यन्ते। *'वि+ √'मुच्'*। जै०ब्रा० २.३७३

३. अथातो हीनश्च युक्तिश्च विमुक्तिश्च.......एवेदिन्द्रमिति विमुञ्चति। ....नूष्टुत इति विमुञ्चति। *'वि+ √'मुच्'*। गो०ब्रा० २.६.५

वियत्

१. वियत् (अन्तरिक्षम्)। 'वि+√'यमु' उपरमे'। विगतं यमनमरमस्मादिति वियत्, अन्तरिक्षं हि सर्वत्र व्याप्तत्वाात् न कुत्रचित् उपरतम्। *'वि+ √'यम्'+ क्विप्'*। निघ० १.३.२

२. यद्वा, वियच्छति न विरमति— इति क्षीरस्वामी। *'वि+ √'दाण्'= वि+ यच्छ्'*। निघ० १.३.२

३. यद्वा, विपूर्वात् √'यती' प्रयत्ने'। विविधं यतन्तेऽस्मिन् प्राणिन:, आकाशे हि सर्वे व्याप्रियन्ते। *'वि+ √'यत्'+ क्विप्'*। निघ० १.३.२

वियात

१. वियात इत्येतत् वियातयत इति वा। *'वि+ √'यत्'+ णिच्'*। निरु० ३.१०

२. वियातयेति वा। *'वि+ √'यत्'+ णिच्'*। निरु० ३.१०

वियुते

१. वियुते द्यावापृथिव्यौ वियवनात्। *'वि+ √'यु'*। निरु० ४.२५

विरप्शी

१. विरप्शी (महत्)। √'रप' व्यक्तायां वाचि'। विविधं रपतीति विरप्शा: ते स्तोतार:, तेऽस्य सन्तीति विरप्शी। *'वि+ √'रप्'+ शक्'*। निघ० ३.३.२२

२. यद्वा, विविधं रपणं तदस्यास्तीति। *'वि+ √'रप्'+ शक्'*। निघ० ३.३.२२

विराज्

१. प्रजापतिर्वि राजति विराडिन्द्रोऽभवद् वशी। *'वि+ √'राज्'*। अथर्व० ११.५.१६

२. विराड् विरमणाद्। *'वि+ √'रम्'*। दै०ब्रा० ३.१२

३. विराजनाद्वा। *'वि+ √'राज्'*। दै०ब्रा० ३.१२

४. विराड् विराजनाद्वा। विराजनात्सम्पूर्णाक्षरा। *'वि+ √'राज्'*। निरु० ७.१३

५. विराधनाद्वा। विराधनादूनाक्षरा। *'वि+ √'राध्'*। निरु० ७.१३

६. विप्रापणाद्वा। विप्रापणादधिकाक्षरा। *'वि+ प्र+ √'आप्'*। निरु० ७.१३

विरिष्टम् (नाश:)

१. यज्ञस्य विरिष्टमनु यजमानो विरिष्यते, यजमानस्य विरिष्टमन्वृत्विजां विरिष्यन्त, ऋत्विजां विरिष्टमनु दक्षिणा विरिष्यन्ते, दक्षिणानां विरिष्टमनु यजमान: पुत्रपशूभिर्विरिष्यते, पुत्रपशूनां विरिष्टमनु यजमान: स्वर्गेण लोकेन विरिष्यते, स्वर्गस्य लोकस्य विरिष्टमनु तस्यार्द्धस्य योगक्षेमो विरिष्यते। *'वि+ √'रिष्'*। गो०ब्रा० १.१.१३

२. ऋत्विजां च विनाशाय राज्ञो जनपदस्य च। संवत्सरविरिष्टं तद् यज्ञो विरिष्यते। *'वि+ √'रिष्'*। गो०ब्रा० २.२.५

विलम्बसौपर्ण

१. यदन्तरात्मा पक्षौ विलम्बते तस्माद् विलम्बिसौपर्णम्। *'वि+ √'लम्ब्'*। ता०ब्रा० १४.९.२०

विवक्षसे

१. ववक्षिथ विवक्षसे इत्येते वक्तेर्वा। √*'वच्'*। निरु० ३.१३

२. वहतेर्वा। √*'वह्'*। निरु० ३.१३

विवर्त

१. संवत्सरो वाव विवर्तोऽष्टाचत्वारिंᳬ शस्तस्य षड्विंᳬशतिरर्धमासास्त्रयोदश मासा सप्तर्तवो द्वे अहोरात्रे तद्यत्तमाह विवर्त इति संवत्सराद्धि सर्वाणि भूतानि विवर्तन्ते। *'वि+* √*'वृत्'*। शत०ब्रा० ८.४.१.२५

विवस्वत्

१. **वावसाना विवस्वति** सोमस्य पीत्या गिरा। √*'वस्'*। ऋ० १.४६.१३

२. धिया **संवसानां विवस्वतः**। √*'वस्'*। ऋ० ९.२६.४

३. असौ वाऽ आदित्यो विवस्वानेष ह्येहोरात्रे विवस्ते तमेष (मृत्युः) वस्ते सर्वतो ह्यनेन परिवृतः। *'वि+* √*'वस्'*। शत०ब्रा० ५.२.४

४. विवस्वान् विवासनात्। *'वि+* √*'वासय्'*। निरु० ७.२६

५. विवस्वन्तः (मनुष्याः)। √'वस' निवासे'। विविधं वसनं विवः, तद्वन्तो विवस्वन्ताः। सर्वस्यापि मनुष्यस्य यतः किञ्चित् विवसनमस्ति। √*'वस्'+ विच्+ मतुप्'*। निघ० २.३.२४

विवाक्

१. विवाक् (सङ्ग्रामः)। 'वि+√'वच्'। विविधा विरुद्धा वाचो यत्र योद्धानाम्। *'वि+* √*'वच्'*। निघ० २.१७.२

विवासति

१. विवासतिः परिचर्यायाम्। आशास्तेर्वा। (*अर्थ-प्रदर्शनार्थम्*)। निरु० ११.२३

विश

१. जराबोध तद्विविड्ढि **विशे विशे** यथयाय। √*'विश्'* या √*'विष्'*। ऋ० १.२६.१०; २७.१०; सा०पू० १.२.५; सा०उ० १६६३

२. यज्ञो वै विशो यज्ञे हि सर्वाणि भूतानि विष्टानि। √*'विश्'*। शत०ब्रा० ८.७.३.१०

३. विशः (मनुष्याः)। √'विश' प्रवेशने'। विशन्ति अनुप्रविशन्ति सर्वकर्मस्वधिकारित्वेन। √*'विश्'+ क्विप्'*। निघ० २.३.५

४. यद्वा, अनुप्रविष्टाः आत्मीयभूराजादेः श्रिता इत्यर्थः। √*'विश्'+ क्विप्'*। निघ० २.३.५

५. विशः (अङ्गुलयः)। √'विश' प्रवेशने'। विशन्ति साधनभावं कार्येषु। √*'विश्'+ क्विप्'*। निघ० २.३.५

विश्वकद्राकर्ष

१. विश्वकद्राकर्षः। वीति चकद्र इति श्वगतौ भाष्यते। द्रातीति गतिकुत्सना। कद्रातीति द्रातिकुत्सना। चकद्राति कद्रातीति सतोऽनर्थकोऽभ्यासः। तदस्मिन्नस्तीति विश्वकद्रः। *'वि+ कुत्सित+* √*'द्रा'+* √*'कृष्'= वि+ कद्र+ आ+ कर्ष= वि+ चकद्र+ आकर्ष= विश्वकद्राकर्ष'*। निरु० २.३

विश्पति

१. विश्पतिः, सर्वस्य पाता वा पालयिता वा। *'(विश्व)+* √*'पा' या* √*'पाल्'*। निरु० १२.२९

विश्व

१. **विशां** न **विश्वो** अमृतः स्वाधीः। √*'विश्'*। ऋ० १.७०.२

२. **विश्वा** ओषधीराविवेश। √*'विश्'*। ऋ० १.९८.२; यजु० १८.७३

३. निविशन्ते सुवते चाधि **विश्वे**। √*'विश्'*। ऋ० १.१६४.२२

४. **विश्व वेवेष्टि** द्रविणमुपक्षु। √*'विष्'*। ऋ० १०.६१.२२

५. समुद्रमाविवेश स इदं **विश्वं** भुवनं विचष्टे। √*'विश्'*। ऋ० १.११४.४

६. **विश्वान्देवाञ्जगत्याविवेश**। √*'विश्'*। ऋ० १०.१३०.५

७. य **आविवेश** भुवनानि **विश्वा**। √*'विश्'*। यजु० ८.३६

८. यस्यामिदं **विश्वं** भुवनमाविवेश। √*'विश्'*। यजु० ९.५

९. विश्वं भुवनमाविवेश। √*'विश्'*। यजु० १८.३०

१०. येषु **विश्वं** भुवनमाविवेश। √*'विश्'*। यजु० २३.५०

११. **आविशत्** कलशं सुतो **विश्वा**। √*'विश्'*। सा०पू० ५.३.३

१२. स्कम्भ इदं **विश्वं** भुवनमाविवेश। √*'विश्'*। अथर्व० १०.७.३५

१३. **विश्वा** वसून्या **विश**। √*'विश्'*। सा०उ० ९०५

१४. अशूप्रुषिलटिकणिखटिविशिभ्यः क्वन्। √*'विश्'+ क्वन्'*। उणा० १.१५१

विश्वकर्मन्

१. अथो विश्वकर्मणे। विश्वं वै तेषां कर्म्म कृतं सर्वं जितं भवति ये संवत्सरमासते। *'विश्व+* √*'कृ'*। शत०ब्रा० ४.६.४.५

२. अयं वै वायुर्विश्वकर्मा योऽयं पवतऽ एष हीदꣳसर्वं करोति। *'विश्व+ √'कृ'*। शत०ब्रा० ८.१.१.७; ६.१.१७

३. विश्वा मे कर्म कृतानीति विश्वकर्मा ह्यभवत्। √*'विश्व+ 'कृ'*। काठ० ३६.१०

४. विश्वानि मे कर्माणि कृतान्यासन्निति विश्वकर्मा हि सोऽभवद् (इन्द्रः) वृत्रꣳ हत्वा। *'विश्व+ √'कृ'*। मै०सं० १.१०.१६

५. विश्वकर्मा सर्वस्य कर्ता। *'विश्व+ √'कृ'*। निरु० १०.२५

विश्वजित्

१. विश्वजिता (देवाः) विश्मजयन्। *'विश्व+ √'जि'*। ता०ब्रा० २२.८.४

२. ततो वा इदमिन्द्रो विश्वमजयद् यद्विश्वमजयद् तस्माद्विश्वजित्। *'विश्व+ √'जि'*। ता०ब्रा० २२.८.५

३. यद् (इन्द्रः) विश्वमजयद् यद्विश्वमजयद् तस्माद्विश्वजित्। *'विश्व+ √'जि'*। ता०ब्रा० १६.४.५

४. विश्वजिता वै प्रजापतिः सर्वाः प्रजा अजनयत् सर्वमुदयत् तस्माद्विश्वजित्। *'विश्व+ √'जि'*। कौ०ब्रा० २५.१३

५. इन्द्रो विश्वजिदिन्द्रो हीदं सर्वं विश्वमजयत्। *'विश्व+ √'जि'*। कौ०ब्रा० २४.१

विश्वथा

१. विश्वथा, विश्व इव। (*प्रत्ययार्थप्रदर्शनम्*)। निरु० ३.१६

विश्वधा

१. मर्तं शंसं **विश्वधा वेति धायसे**। *√'वी'+ √'धा'*। ऋ० १.१४१.६

विश्वमिन्व

१. विश्वमिन्वा विश्वमाभिरेति यज्ञे। *'विश्व+ √'इ'*। निरु० ८.१०

विश्वरूप

१. त्वष्टुर्ह वै पुत्रः त्रिशीर्षा षडक्षः आस तस्य त्रीण्येव मुखान्यासुस्तद्यदेव रूप आस तस्माद् विश्वरूपो नाम। (*अर्थनिर्वचनम्*)। शत०ब्रा० १.६.१;५.५.४.२

विश्वव्यचः

१. असौ वाऽआदित्यो विश्वव्यचाः, यदा ह्येवैष उदेत्यथेद सर्वं व्यचो भवति। *'विश्व+ √'व्यच्'*। शत०ब्रा० ८.१.२.१; ६.१.१.८

विश्वसृज

१. एतेन (सहस्रसंवत्सरसत्रेण) विश्वसृज इदं विश्वमसृजन्त। यद्विश्वमसृजन्त। तस्माद्विश्वसृजः। *'विश्व+ √'सृज्'*। तै०सं० ३.१२.९.८ (तु०, ता०ब्रा० २५.१८.२)

विश्वामित्र

१. तस्येदं विश्वं मित्रमासीद्यदिदं किञ्च तस्माद् विश्वामित्रस्तस्माद् विश्वामित्र इत्याचक्षत एतम् (प्राणम्) सन्तम्। *'विश्व+ मित्र'*। ऐ०आ० २.२.१

२. विश्वस्य ह वै मित्रं विश्वामित्र आस विश्वं हास्मै मित्रं भवति य एवं वेद। *'विश्व+ मित्र'*। ऐ०ब्रा० ६.२०.२१

विश्वे देवाः

१. विश्वेदेवाः सर्वे देवाः। *'विश्व+ देव'*। निरु० १२.३९

विष

१. ब्रह्मचारी चरति **वेविषद् विषः**। *√'विष्'*। ऋ० ५.१७.५

२. विषमित्युदकनाम विष्णातेः। विपूर्वस्य स्नातेः शुद्ध्यर्थस्य। *'वि+ √'स्ना'*। निरु० १२.२६

३. विपूर्वस्य वा सचतेः। *'वि+ √'सच्'*। निरु० १२.२६

४. विषम् (उदकम्)। √'विष्लृ' व्याप्तौ'। वेवेष्टि व्याप्नोति सर्वं विषम्। √*'विष्'+ क'*। निघ० १.१२.१५

५. यद्वा, विपूर्वात् √'ष्णा' शौचे'। विशेषेण स्नात्यनेनेति विषम्, तद्धि प्रथमं शौचसाधनम्। *'वि+ √'स्ना'+ ड'*। निघ० १.१२.१५

६. यद्वा, विपूर्वात् सचतेः। तद्धि स्नानपानावगाहनार्थिभिः सेव्यते। *'वि+ √'सच्'+ ड'*। निघ० १.१२.१५

विषु

१. विषुरूपे विषमरूपे। *'विषमरूप= विषरूप'*। निरु० ११.२३; १२.१७

विषुण

१. विषुरूपस्य विषमस्य। *'विषम= विषुण'*। निरु० ४.१९

विष्टीमन्

१. यद्देवासो ललामगुं **प्रविष्टीमिनमाविषुः**। **√'विष्'**। अथर्व० २०.१३६.४

विष्ट्वी

१. विष्ट्वी (कर्म)। √'विष्लृ' व्याप्तौ'। वेवेष्टि व्याप्नोति कतर्न्, व्याप्तं विस्तृतं वा। √'*विष्'+ क्विन्+ तुडागमश्च'*। निघ० २.१.६

विष्ठा

१. दिशो वाऽ अस्य (सूर्यस्य) बुध्न्या उपमा विष्ठाः। ता ह्येष उपवितिष्ठते। '*वि*+ √'*स्था*'। शत०ब्रा० ७.४.१.१४

विष्ठित

१. विष्ठितम्, स्थावरम्। (*वि*+)√'*स्था*'। निरु० ९.१३

विष्णु

१. अथ यद्विषितो भवति तद्विष्णुर्भवति। √'*विष्*'। निरु० १२.१८

२. विष्णुर्विशतेर्वा। √'*विश्*'। निरु० १२.१८

३. व्यश्नोतेर्वा। '*वि*+ √'*अश्*'। निरु० १२.१८

४. विष्णोर्व्याप्तिकर्मणाम्। √'*विष्*'। निरु० १४.१२

५. विष्णुः (यज्ञः)। √'विष्लृ' व्याप्तौ'। विशेषेणाप्नोति स्वर्गम्। √'*विष्*'+ *नु*'। निघ० ३.१७.१२

६. विष्णुः। व्याख्यातो यज्ञनामसु। तीव्ररश्मिद्वारेण सर्वत्र ह्याविशति। √'*विश्*'+ *नु*'। निघ० ३.१७.१२

७. विषेः किच्च। √'*विष्*'+ *णु*'। उणा० ३.३९

विष्णुक्रम

१. विष्णुक्रम देवा विष्णुर्भूत्वेमांल्लोकानक्रमन्त

२. यद्विष्णुर्भूत्वाक्रमन्त तस्माद् विष्णुक्रमाः।

३. '*विष्णु*+ √'*क्रम्*'। शत०ब्रा० ६.७.२.१०

विष्पित

१. विष्पितो विप्राप्तः। '*विप्राप्त*= *विष्पित*'। निरु० ६.२०

विश्वच्, विश्वञ्च्

१. प्राणो वै विष्वङ्। सोऽयं विष्वञ्चति। '*विषु*+ √'*अञ्च्*'। जै०ब्रा० १.१६६

विस्रुह

१. विस्रुह आपो भवन्ति विस्रवणात्। √'*स्रु*'। निरु० ६.३

विहाया

१. विहायाः (महत्)। जहातेर्जिहीतेर्वा। √'*हा*' *त्यागे*' या √'*हा*' *गतौ*' (*निपातनात्*)। निघ० ३.३.१२

वीज

१. वीजम् (अपत्यम्)। √'वी' प्रजननकान्त्यसनखादनेषु'। वेति प्रजायते गच्छत्यनेनानृण्यं पितेति वा। √'*वी*'+ *अच्*'। निघ० २.२.१५

२. वीज्यते वा वीजं वाजिलौकिकः— इति क्षीरस्वामी। √'*वीज्*' *या* √'*वी*'। निघ० २.२.१५

३. वीजिः स्यात् प्रेरणक्रिया— इति माधवः। प्रेर्य्यते हि कार्य्यकारणाय वा वीजम्। √'*वीज्*'। निघ० २.२.१५

वीळ

१. अक्ष **वीळ** **वीळित** **वीळयस्व** मा। √'*वीळ्*'। ऋ० ३.५३.१९

वीळु

१. यद्वीळयसि **वीळु** तत्। √'वीळ्'। ऋ० ८.४५.६

वीड्वी

१. धिषणे **वीड्वी** सती **वीडयेथाम्**। √'*वीड्*'। यजु० ६.२३

वीति

१. यस्य दूतो क्षये **वेषि** हव्यानि **वीतये**। √'*वी*'। ऋ० १.७४.४

वीर

१. वीरो वीरयत्यमित्रान्। '*वि*+ √'*ईर्*'। निरु० १.७

२. वेतेर्वा स्याद्गतिकर्मणः। √'*वी*'। निरु० १.७

३. वीरयतेर्वा। √'*वीर्*'। निरु० १.७

४. स्फायितञ्चिवञ्चिशकिक्षिपिक्षुदिसृपि०। √'*अज्*'+ *रक्*'= *वी*+ *र*= *वीर*'। उणा० २.१३

वीरुध्

१. वि यो **वीरुत्सु** **रोधन्**महित्वोत प्रजा उत प्रसूष्वन्तः। √'*रुध्*'। ऋ० १.६७.५

२. पृक्षुधो **वीरुधो** दंसु **रोहति**। √'रुह्'। ऋ० १.१४१.४

३. वीरुध ओषधयो भवन्ति विरोहणात्। '*वि*+ √'*रुह्*'। निरु० ६.३

वीर्य

१. वीर्याय वीरकर्मणे। (*अर्थप्रदर्शनमात्रम्*) निरु० १०.१९

वीडिता

१. वीळियतिश्च व्रीळयतिश्च संस्तम्भकर्माणौ। √'*वीळय्*'। निरु० ५.१६

वीलु

१. वीलु (बलम्)। वीलयति संस्तम्भकर्मा। संस्तब्धो दृढो भवति अनेन, संस्तम्भ्यन्तेऽनेन शत्रव इति वा। √'*वील्*'+ उ'। निघ० २.९.१५

वीवर्ह

१. **वीवर्हेण** विष्वञ्चं **वि वृहामसि**। '*वि*+ √'*वृह्*'। अथर्व० २०.९६.२३

वृक्

१. वृक् (बलम्)। √'वृजी' वर्जने'। वर्ज्यन्तेऽनेन प्राणैः। √'*वृज्*'+ *क्विप्*'। निघ० २.९.२२

वृक

१. वृकश्चन्द्रमा भवति। विवृतज्योतिष्को वा। '*वि*+ √'*वृ*'। निरु० ५.२०

२. विकृतज्योतिष्को वा। '*वि*+ √'*कृ*'। निरु० ५.२०

३. विक्रान्तज्योतिष्को वा। '*वि*+ √'*क्रम्*'। निरु० ५.२०

४. आदित्योऽपि वृक उच्यते। यदावृङ्क्ते। √'*वृज्*'। निरु० ५.२०

५. श्वाऽपि वृक उच्यते। विकर्तनात्।........ वृद्धवाशिन्यपि वृक्युच्यते। '*वि*+ √'*कृन्त्*'। निरु० ५.२०

६. वृको लाङ्गलं भवति विकर्तनात्। '*वि*+ √'*कृन्त्*'। निरु० ६.२६

७. वृकः (वज्रः)। √'वृक' आदाने'। आदत्ते शत्रुप्राणान्। √'*वृक*'+ *क*'। निघ० २.२०.७

८. वृणक्तेर्वा। हेतिर्विदर्थः। √'*वृज्*'। निघ० २.२०.७

९. वृकः (स्तेनः)। व्याख्यातमृत्विङ्नामसु। वारको मार्गस्य। √'वृज्'। निघ० २.२०.७

१०. सृवृभूशुषिमुषिभ्यः कक्। '*वृ*'+ √'*कक्*'। उणा० ३.४१

वृक्तबर्हिष्

१. वृक्तबर्हिषः (ऋत्विजः)। √'वृजी' वर्जने'+बर्हिः (शब्दो व्याख्यातः उदकनामसु)। वृक्तं बर्हिर्यैः। √*वृज्*'+ *क्त*+ *बर्हिस्*'। निघ० ३.१८.४

वृक्ष

१. तष्टेव **वृक्षं** वनिनो नि **वृश्चसि** परश्वेव नि **वृश्चसि**। √'*व्रश्च्*'। ऋ० १.१३७.४

२. **वृश्चामि** तं कुलिशेनेव **वृक्षम्**। √'*व्रश्च्*'। अथर्व० २.१२.३

३. वृक्षो वृश्चनात्। √'*व्रश्च्*'। निरु० २.६; १२.२९

४. वृत्वा क्षां तिष्ठतीति वा। √'*वृत्*'+ *क्षा*'। निरु० १२.२९

५. वृतक्षये वा। '*वृत*+ *क्षय*'= *वृक्ष*'। निरु० १२.२९

६. स्नुव्रश्चिकृत्यषिभ्यः कित्। √'*व्रश्च्*'+ *स*'। उणा० ३.६६

वृजन

१. वृजनम् (बलम्)। √'वृजी' वर्जने'। वर्ज्यन्तेऽनेन प्राणैः। √'*वृज्*'+ *क्यु*'। निघ० २.९.२१

२. कृपृवृजिमन्दिनिधाञः क्युः। √'*वृज्*'+ *क्यु*'। उणा० २.८२

वृजिन

१. वृजिनानि, वर्जनीयानि। '*वर्जनीय*= *वृजिन*'। निरु० १०.४१

२. वृजेः किच्च। √'*वृज्*'+ *इनच्*'। उणा० २.४८

(सु)वृत्

१. **सुवृद्रथो वर्तते** दक्षिणायाः। '*सु*+ √'*वृत्*'। ऋ० १०.१०७.११

वृत

१. वृतम् (धनम्)। √'वृङ्' सम्भक्तौ'। सम्भज्यते सर्वैः। √'*वृ*'+ *क्त*'। निघ० २.१०.२८

वृत्त

१. अभी न आ **ववृत्स्व** चक्रं न **वृत्तमर्वतः**। √'*वृत्*'। ऋ० ४.३१.४

वृत्र

१. **वृत्रं** ज़घन्वाँ अप **तद्ववार**। √'*वृ*'। ऋ० १.३२.११

२. वि **वृश्चद्वज्रेण वृत्रमिन्द्रः**। √'*व्रश्च्*'। ऋ० १.६१.१०

३. अपो **वव्रिवांसं वृत्रं** जघान। √'*वृ*'। ऋ० २.१४.२

४. इन्द्रो **वृत्रमवृणोच्छर्धनीतिः**। √'*वृ*'। ऋ० ३.३४.३; यजु० ३३.२६; अथर्व० २०.११.३

५. **वृत्रं** जघन्वाँ **अवृणीत** सोमम्। √'*वृ*'। ऋ० ३.३६.८

६. अपो **वृत्रं वव्रिवांसं** पराहन्। √'*वृ*'। ऋ० ४.१६.७; अथर्व० २०.७७.७

७. **वृत्रं वरिवः** पूरवे कः। √'*वृ*'। ऋ० ४.२१.१०

८. यद् **वृत्रमपो वव्रिवांसम्**। √'*वृ*'। ऋ० ६.२०.२

९. **वृत्रं** यदुग्रो **व्यवृश्चद्**। √'व्रश्च्'। ऋ० १०.११३.६

१०. युष्मा ऽ इन्द्रो **अवृणीत वृत्रमतूर्य्ये**। √'वृ'। यजु० १.१३

११. जघान **वृत्रं** विदुरो **ववार**। √'वृ'। यजु० २०.३६

१२. यदिमांल्लोकानवृणोत् तद्वृत्रस्य वृत्रत्वम्। √'वृ'। तै०सं० २.५.२.१

१३. वृत्रो ह वाऽ इद॑ꣳसर्वं वृत्वा शिश्ये। यदिदमन्तरेण द्यावापृथिवी स यदिद॑ꣳ सर्वं वृत्वा शिश्ये तस्माद् वृत्रो नाम। √'वृ'। शत०ब्रा० १.१.३.४

१४. स यद्वर्तमानः समभवत्। तस्माद् वृत्रः। √'वृत्'। शत०ब्रा० १.३.६.९

१५. स इषुमात्रमिषुमात्रं विष्वङ्ङवर्धत, स इमाँल्लोकानवृणोद् यदिमाँल्लोकानवृणोत्तद् वृत्रस्य वृत्रत्वम्। √'वृध्' या √'वृ'। तै०सं० २.४.१२.२

१६. यत् प्रावर्तयत् स एव वृत्रोऽभवत्। √'वृत्'। जै०ब्रा० २.१५५

१७. वृत्रो वृणोतेर्वा। √'वृ'। निरु० २.१७

१८. वर्ततेर्वा। √'वृत्'। निरु० २.१७

१९. वर्धतेर्वा। √'वृध्'। निरु० २.१७

२०. वृत्रः (मेघः)। वृणोतेराच्छादनार्थात्। आच्छादयति ह्यसौ कृत्स्नं नभः। √'वृ'+ष्ट्रन्'। निघ० १.१०.२८

२१. वर्त्ततेर्वा गतिकर्मणः। गच्छत्यसौ कृत्स्नं नभः। √'वृत्'+ रक्'। निघ० १.१०.२८

२२. वर्द्धतेर्वा वृद्ध्यर्थात्। वर्द्धते हि वर्षासु मेघः। √'वृध्'+ त्रन्'। निघ० १.१०.२८

२३. ब्राह्मणोक्ता एवामी त्रयोऽप्यर्थाः। यदिमाँल्लोकानवृणोत् तद्वृत्रस्य वृत्रत्वम्, स इषुमात्रमिषुमात्रं विष्वङ् अवर्द्धत। √'वृ' या √'वृध्'। निघ० १.१०.२८

२४. वृत्रम् (धनम्)। व्याख्यातं मेघनामसु। आच्छादयति दारिद्र्यम्। आच्छाद्यते वा राजतः करादिभयात्। √'वृ' या √'वृध्'। निघ० २.१०.२७

२५. गत्यर्थौ रयिवदर्थः। √'वृ' या √'वृध्'। निघ० २.१०.२७

२६. वृद्धौ ब्रह्मवदर्थः। √'वृ' या √'वृध्'। निघ० २.१०.२७

२७. स्फायितञ्चिवञ्चिशकिक्षिपिक्षुदिसृपि०। √'वृत्'+रक्'। उणा० २.१३

वृत्रतूर्ये

१. वृत्रतूर्ये (सङ्ग्रामः)। वृत्रशब्दो मेघनामसु, अत्रासुरः शत्रुवचनः। √'तुरि' गतित्वरहिंसनयोः'। वृत्रतूर्येते ऽनेनास्मिन् वा। 'वृत्र+ √'तुर्'+ यक्'। निघ० २.१७.३२

वृत्रहा

१. **वृत्रं** हनति **वृत्रहा** शतक्रतुः। 'वृत्र+ √'हन्'। ऋ० ८.८९.३; सा०पू० ३.३.५; यजु० ३३.९०

२. **वृत्राणि वृत्रं जहि**। 'वृत्र+ √'हन्'। अथर्व० २०.५.३

३. अयं नो राजा वृत्रहा राजा भूत्वा वृत्रं वध्यात्। 'वृत्र+ √'हन्'। तै०सं० १.८.९.२

वृथा

१. बर्हिर्न यत्सुदासे **वृथा** वर्गंहो राजन्व**रिवः** पूरवे कः। √'वृजी' वर्जने'। ऋ० १.६३.७

वृद्ध

१. **वृद्धस्य** चिद् **वर्धतो** द्यामिनक्षतः। √'वृध्'। ऋ० १.५१.९

२. **वृद्धस्य** चिद्वर्धतामस्य तनूः। √'वृध्'। ऋ० ६.२४.७

वृधा

१. मर्या इव **सुवृधो** वावृधुर्नरः। √'वृध्'। ऋ० ५.५९.५

२. तं त्वा भ्रातरः **सुवृधा वर्धमानमनु** जायन्ताम्। √'वृध्'। अथर्व० २.१३.५

३. सुवृधा, सुवर्धयित्रा। √'वृध्'। निरु० ३.११

वृन्द, वृन्दारक

१. वृन्दं बुन्देन व्याख्यातम्। वृन्दारकश्च। बुन्द इषुर्भवति, भिन्दो वा। √'*भिन्द्*'+ घञ्= *भिन्द्*= बुन्द'। निरु० ६.३४

२. भयदो वा। '*भी*'+ '*दा*'= *भिद*= बुन्द= वृन्द'। निरु० ६.३४

३. भासमानो द्रवतीति वा। √'*भास्*'+ √'*द्रु*'। निरु० ६.३४

वृषण

१. निषद्या **वृष्णः** सोमस्य **वृषणा वृषेथाम्**। √'वृष्'। ऋ० १.१०८.३

२. **वृषणं** त्वा वयं **वृषन्वृषणः** समिधीमहि। √'*वृष्*'। ऋ० ३.२८.१५; अथर्व० २०.१०२.३

वृषन्

१. व्यन्त्विति वै योषा, वेत्विति वृषा। √'*वी*'। शत०ब्रा० १.५.३.१५

वृषन्धि

१. वृषन्धिः (मेघः)। √'वृषु' सेचने' इत्यनेन वृषा। शत्रुजयादिसाधनात्वात् कामानां वर्षिता यज्ञः, सन्निधीयतेऽन्निन्द्रेण प्रहारकाले। √'*वृष्*'+ *कनिन्*+ √'*धा*+ *कि*'। निघ० १.१०.२७

२. विषन्धिः— इति केषुचित् कोशेषु दृष्टम्। तदा विषं जलं धीयतेऽस्मिन्निति। '*विष*+ √'*धा*'+ *कि*'। निघ० १.१०.२७

वृषभ

१. उभे **वृषा वृषत्वा वृषभो** न्यृञ्जते। √'*वृष्*'। ऋ० १.५४.२

२. यस्य ते पीत्वा **वृषभो वृषायते**। √'*वृष्*'। ऋ० ९.१०८.२

३. वृषभो वर्षितापाम्। √'*वृष्*'। निरु० ४.८; ७.२३

४. वृषभः प्रजां वर्षतीति वा। √'*वृष्*'। निरु० ९.२२

५. अतिबृहति रेत इति वा। (*अर्थप्रदर्शनमात्रम्*)। निरु० ९.२२

६. तद्वृषकर्मा वर्षणाद् वृषभः। √'*वृष्*'। निरु० ९.२२

७. ऋषिवृषिभ्यां कित्। √'*वृष्*'+ *अभच्*'। उणा० ३.१२३

वृषल

१. वृषल वृषशीलो भवति। '*वृषशील*= *वृषल*'। निरु० ३.१६

२. वृषाशीलो वा। '*वृषाशील*= *वृषल*'। निरु० ३.१६

३. वृषादिभ्यश्चित्। √'*वृष्*'+ *कल*'। उणा० १.१०६

वृषा

१. उभे **वृषा वृषत्वा वृषभो** न्यृञ्जते। 'वृष्'। ऋ० १.५४.२

२. **वृष्णस्ते वृष्ण्यं** शं वो **वृषा** वनं **वृषा** मदः। सत्यं **वृषन् वृषेदसि**। √'*वृष्*'। ऋ० ९.६४.२

३. **वृषा** वर्षिता। √'*वृष्*'। निरु० ३.१६

४. कनिन् युवृषितक्षिराजिधन्विद्युप्रतिदिवः। √'*वृष्*+ *कनिन्*'। उणा० १.१५६

वृषाकपायी

१. वृषाकपायी वृषाकपेः पत्नी। '*वृषाकपिः*= (*तस्य पत्नी*) *वृषाकपायी*'। निरु० १२.९

वृषाकपि

१. आदित्यो वै वृषाकपिः तद्यत्कम्पमानो रेतो वर्षति तस्माद् वृषाकपिः, तद्वृषाकपेर्वृषाकपित्वम्। √'*वृष्*'+ *कम्पय्*'। गो०ब्रा० २.६.१२

२. अथ यद्रश्मिभिरभिकम्पयन्नेति, तद्वृषा— कपिर्भवति। वृषाकम्पनः। √'*वृष्*'+ '*कम्पय्*'। निरु० १२.२७

वृषाग्नि

१. वृषाग्निं वृषणं भरन्नित्याह वृषा ह्येष वृषाऽग्निः। '*वृषा*+ *अग्नि*'। तै०सं० ५.१.५.७

वृष्टि

१. यूयं **वृष्टिं वर्षयथा** पुरीषिणः। √'*वृष्*'। ऋ० ५.५५.३

२. अद्भ्यो वा एष ओषधीभ्यो वर्षति यर्हि वर्षत्योषधयो रशनौषधीरेव नेदीयो वृष्ट्याः करोति, ताजक् प्रवर्षति। √'*वृष्*'। काठ० २६.६; कपि०सं० ४१.४

३. तम् (पाप्मानं प्रजापतिः) अवृश्चत्। यदवृश्चत् तस्माद् वृष्टिः। √'*व्रश्च्*'। तै०सं० ३.१०.९.१

४. ततो वृष्टिरजायत। तस्माद् यदा स्तनयत्यथ वर्षति। √'*वृष्*'। जै०ब्रा० ३.३८०

वृष्ण

१. निषद्या **वृष्णः** सोमस्य **वृषणा वृषेथाम्**। √'*वृष्*'। ऋ० १.१०८.३

२. **वृष्णस्ते वृष्ण्यं** शवो **वृषा** वनं **वृषा** मदः। सत्यं **वृषन् वृषेदसि**। √'*वृष्*'। ऋ० ९.६४.२

वेतस

१. ता (आपः) प्रजापतिमब्रुवन्। यद्वै नः कमभूदवाक्त-दगादिति सोऽब्रवीदेष व एतस्य वनस्पतिर्वेत्त्विति वेत्तु संवेत्तु सोऽह वै वेतस इत्याचक्षते परोक्षम्। √'*विद्*'= *वेत्तु*= *वेतस*'। शत०ब्रा० ९.१.२.२२

२. वेञस्तुट् च। √'*वे*'+ *तुडागमः*+ *असच्*'। उणा० ३.११८

वेद

१. वेदोऽसि येन त्वं देव वेद देवेभ्यो वेदोऽभवस्तेन मह्यं वेदो भूयाः। √'*विद्*'। यजु० २.२१

२. यज्ञो वै देवेभ्यस्तिरोऽभवत् तं देवा वेदेन अविन्दꣳस्तद् वेदस्य वेदत्वम्। √'*विद्लृ' लाभे*'। मै०सं० १.४.८,

३. वेदिर्वै देवेभ्योऽपाक्रामत् तां वेदेनान्वविन्दँस्तद्वेदस्य वेदत्वम्। √'*विद्लृ' लाभे*'। काठ० ३१.१२ (तु०, मै०सं० ४.१.१३)

४. यज्ञो वै देवेभ्योऽपाक्रामत् तां वेदेनान्वविन्दँस्तद्वेदस्य वेदत्वम्। √'*विद्लृ' लाभे*'। काठ० ३२.६

५. वेदेन वेदिं विविदुः पृथिव्याम्। √'*विद्' ज्ञाने*'। काठ० ३१.१४

६. वेदेन वै देवा असुराणां वित्तं वेद्यमविन्दत तद्वेदस्य वेदत्वम्। √'*विद्लृ' लाभे*'। तै०सं० १.७.४.६

७. स (अन्नमयः पुरुषः) यां जायमानो वाचमवदत् स एव त्रयो वेदोऽभवत्। √'*वद्*'। जै०ब्रा० ३.३८०

८. वेदः (धनम्)। √'विद्लृ' लाभे'। विदन्त्येतत्, लभ्यते वाऽनेन धर्मादिः। √'*विद्*'+ *असुन्*'। निघ० २.१०.४

वेदि

१. तद्वै देवा इमाम् (पृथिवीम्) अविन्दत, तद्वेद्या वेदित्वम्। √'*विद्लृ' लाभे*'। मै०सं० ३.८.३

२. वेदिर्देवेभ्योऽपाक्रामत्, तं देवा वेदेनाविन्दन्। √'*विद्लृ' लाभे*'। मै०सं० ४.१.१३

३. वेदिर्वै देवेभ्योऽपाक्रामत् तां वेदेनान्वविन्दँस्तद्वेदस्य वेदत्वम्। √'*विद्लृ' लाभे*'। काठ० ३१.१२ (तु०, मै०सं० ४.१.१३)

४. तद्यत् किञ्चासुराणाꣳस्वमासीत्, तद्देवा वेद्याविन्दत, तद्वेद्या वेदित्वम्। √'*विद्लृ' लाभे*'। मै०सं० ३.८.३

५. वेदेन वेदिं विविदुः पृथिव्याम्। √'*विद्' ज्ञाने*'। काठ० ३१.१४

६. यन्वेवात्र विष्णुमन्वविन्दंस्तद्वेदिर्नाम। √'*विद्लृ' लाभे*'। शत०ब्रा० १.२.५.१०

७. यद्वा असुराणां वित्तमासीत् तद्देवा वेद्याऽविन्दत तद्वेद्या वेदित्वम्। √'*विद्लृ' लाभे*'। काठ० २५.६

८. तद्यदेनेन (यज्ञेन विष्णुना) इमाꣳसर्वाꣳ (पृथिवीम्) समविन्दत। तस्माद्वेदिर्नाम। '*विद्लृ' लाभे*'। शत०ब्रा० १.२.५.७

९. तं (यज्ञम्) वेद्यामन्वविन्दन् यद्वेद्यामन्वविन्दं-स्तद्वेदेर्वेदित्वम्। √'*विद्लृ' लाभे*'। ऐ०ब्रा० ३.९

१०. हृपिषिरुवृतिविदिछिदिकीर्तिभ्यश्च। √'*विद्*'+ *इन्*'। उणा० ४.१२०

वेद्या

१. वेधाः (मेधाविनः)। विपूर्वात् दधातेः। विदधाति काव्यादिः। '*वि*+ √'*धा*'+ *असुन्*'। निघ० ३.१५.६

वेन

१. **वनिनो** वन्त वार्यं बृहस्पतिर्यजति **वेन** उक्षभिः। √'*वन्*'। ऋ० १.१३९.१०

२. **वेनन्ति वेनाः** पतयन्त्या दिशः। √'*वेन्*'। ऋ० १०.६४.२

३. अयं वै वेनोऽस्माद्वा ऊर्ध्वा अन्ये प्राणा वेनन्त्यवाञ्चोऽन्ये तस्माद्वेनः। √'*वेन्*' (*निघ० २.६.४ कान्तिकर्मा*)।

४. असावादित्यो वेनो यद्वै प्रजिजनिषमाणोऽवेनत् तस्माद्वेनः। √'*वेन्*'। शत०ब्रा० ७.४.१.१४

५. वेनः वेनतेः कान्तिकर्मणः। √'*वेन्*'। निरु० १०.३८

६. वेनः (मेधाविनः) अजतेः। वीभावः। गच्छति सत्कारं लोके, अवगच्छत्यर्थान्, अवगच्छत्यस्मादर्थसंशयान्, गच्छत्येनं विद्यार्थिनः, क्षिपत्यनर्थान् पापं वा। √'*अज्*'+ ≕ *वी*+ ≕ *वेन*'। निघ० ३.१५.५

७. यद्वा, वेनतेः कान्तिकर्मणो गतिकर्मणो वा। √'*वेन्*'+ *घ*'। निघ० ३.१५.५

८. वेनः (यज्ञः)। वेनः व्याख्यातं मेधाविनामसु। गच्छत्यनेन स्वर्गम्, प्रक्षिप्यते देवतोद्देशेन नास्मिन् हव्यम्, तेनात्र देवता काम्यन्ते वा। √'*अज्*'+ ≕ *वी*+ ≕ *वेन*'। निघ० ३.१७.२

९. धाप+वस्यज्यतिभ्यो नः। √'*अज्*'+ ≕ *वी*+ ≕ *वेन*'। उणा० ३.६

वेप

१. वेपः (कर्म)। विपि प्रेरणार्थः। प्रेर्य्यन्तेऽस्मिन् कर्मकराः। √'*विप्*'+ *असुन्*'। निघ० २.१.५

२. यद्वा, 'वेपृ' कम्पने'। √'*वेप्*'+ *असुन्*'। निघ० २.१.५

वेष

१. वेषाय वामिति वेवेष्टीव हि यज्ञम्। √'*विष्*'। शत०ब्रा० १.१.२.१

२. वेषः (कर्म)। √'विष्लृ' व्याप्तौ'। वेवेष्टि व्याप्नोति कर्तॄन्, व्याप्तं विस्तृतं वा। √'*विष्*'+*अच्*'। निघ० २.१.४

३. यद्वा, वेवेष्टि— इत्यत्तिकर्मसु (निघ० २.८.५)। परिवेवेष्टि भोजयति स्वफलं कर्तॄन्। √'*विष्*'+*अच्*'। निघ० २.१.४

वैखानस

१. तदिन्द्रो ह वै विखानाः स यदिन्द्र एतत्सामापश्यत् तस्माद् वैखानसमित्याख्यायते। '*विखान*= *वैखानस*'। जै०ब्रा० ३.१९०

२. विखननाद् वैखानसः। '*वि*+ √'*खन्*'। निरु० ३.१७

वैतस

१. वैतसो वितस्तं भवति। '*वि*+ √'*तस्*'। निरु० ३.२१

वैयश्व

१. यदु व्यश्वोऽपश्यत् तस्माद् वैयश्वमित्याख्यायते। '*व्यश्व*= *वैयश्व*'। जै०ब्रा० ३.२२१

वैरूप

१. देवा वै तृतीयेनाह्ना स्वर्गं लोकमायंस्तानसुरा रक्षांस्यन्ववारयन्त ते विरूपा भवत विरूपा भवतेति भवन्त आयंस्ते यद्विरूपा भवत विरूपा भवतेति भवन्त आयंस्तद्वैरूपं सामाऽभवत् तद्वैरूपस्य वैरूपत्वम्। '*विरूप*= *वैरूप*'। ऐ०ब्रा० ५.१

वैश्वानर

१. यद्विश्वं भूतमवारयत तद्वैश्वानरयोर्वैश्वानरत्वम्। '*विश्व*+ *नर*+ √'*वृ*'। जै०ब्रा० ३.८

२. वैश्वानरः कस्मात्? विश्वान् नरान् नयति, विश्व एनं नरा नयन्तीति वा। '*विश्व*+ (*नर*+)√'*नी*'= *विश्वनर*= *विश्वानर*= *वैश्वानर*'। निरु० ७.२१

३. अपि वा विश्वानर एव स्यात्। प्रत्यृतः सर्वाणि भूतानि तस्य वैश्वानरः। '*विश्वान्*+ √'*ऋ*'+ *अच्*= *विश्वानर*= *वैश्वानर*'। निरु० ७.२१

वैश्वामित्र

१. यदु विश्वामित्रोऽपश्यत् तस्माद् वैश्वामित्रमित्याख्यायते। '*विश्वामित्र*= *वैश्वामित्र*'। जै०ब्रा० ३.२३९

वैष्टम्भ

१. अहर्वा एतत् (तृतीयम्) अव्लीयत तद्देवा वैष्टम्भैर्व्यष्टभ्नुव स्तद्वैष्टम्भस्य वैष्टम्भत्वम्। '*वि*+ √'*स्तम्भ्*'। ता०ब्रा० १२.३.१०

वैसर्जन

१. उपसमिद्भिर्वै देवा इमांल्लोकान् व्यजयन्। तान् वैसर्जनैरभिव्यसृजन्त यथा ग्रामस्संग्रामाद् विसृज्यते तद्वैसर्जनानां वैसर्जनत्वम्। '*वि*+ √'*सृज्*'। काठ० २६.२ (तु०, कपि०सं० ४०.५)

२. एतर्हि वा एष देवैस्तन्वं विसृज्यते, तद्वैसर्जनानां वैसर्जनत्वम्। '*वि*+ √'*सृज्*'। काठ० २६.२ (तु०, कपि०सं० ४०.५)

३. सोऽनृण इमांल्लोकानभिसृजमान एति, तद्वैसर्जनानां वैसर्जनत्वम्। '*वि*+ √'*सृज्*'। काठ० २६.२ (तु०, कपि०सं० ४०.५)

४. यद्वैसर्जनानि जुहोति। स यदिदꣳसर्वं विसृज्यते तस्माद् वैसर्जनानि नाम। '*वि*+ √'*सृज्*'। का०शत०ब्रा० ४.६.३.२; शत०ब्रा० ३.६.३.२

५. यदा वै स (सोमो राजा) ततः प्रच्यवतेऽथ स तत्तेभ्यो विसृज्यते, तद्वैसर्जनानाꣳ वैसर्जनत्वम्। '*वि*+ √'*सृज्*'। मै०सं० ३.९.१

वौषट्

१. वौषडिति वौगिति वाऽएष (अग्निः) षडितीꣳ षट्चितिकमन्नम्। '*वौक्*+ *षट्*= *वौषट्*'। शत०ब्रा० १०.४.१.१३

व्यचस्वती

१. व्यचस्वतीः, व्यञ्चनवत्यः। '*वि*+ √'*अञ्च्*'। निरु० ८.१०

व्यथि

१. व्यथिः (क्रोधः)। √'व्यथ' भयचलनयोः'। बिभेत्यस्मात् सज्जनः। चलति वाऽनेन स्वधर्मात्। √'*व्यथ्*'+ *इन्*'। निघ० २.१३.११

व्यधनि

१. कृतव्यधनि विध्य तम्। √'*व्यध्*'। अथर्व० ५.१४.९

व्यन्त

१. व्यन्त इत्येषोऽनेककर्मा। पश्यतिकर्मा.......खादतिकर्मा। (*धात्वर्थप्रदर्शनम्*)। निरु० ४.१९

व्यन्न

१. अन्नं वै व्यन्ने, हीमानि सर्वाणि भूतानि विष्टानि। √'*विष्*'। शत०ब्रा० १४.८.१३.३

व्याघ्र

१. व्याघ्रो व्याघ्राणाद्। '*वि*+ *आ*+ √'*घ्रा*'। निरु० ३.१८

२. व्यादाय हन्तीति वा। '*वि*+ *आ*+ √'*दा*'+ √'*हन्*'। निरु० ३.१८

व्यान

१. दक्षिणादिग्व्यानेत्यनुप्राणद् व्यानमेवास्मिँस्तददधात्। '(*वि*)+ √'*अन्*'। शत०ब्रा० ११.८.३.६

२. व्यानो ह्युपाꣳशुसेवनोऽन्तरिक्षꣳह्येव व्यनन्नभिव्यनिति। '*वि*+ √'*अन्*'। शत०ब्रा० ४.१.२.२७

व्यानशि

१. व्यानशिः (बहु)। विपूर्वादश्नोतेः। विविधं व्याप्नोति। '*वि*+ √'*अश्*'+ *कि*'। निघ० ३.१.८

व्याहृति

१. अथैता अमृतव्याहृतीरभिव्याहरति भूर्भुवस्स्वः। '*वि*+ *आ*+ √'*हृ*'। जै०ब्रा० १.३२७

व्युष्टि

१. ते देवा एतां व्युष्टीपश्यन्, ता उपादधत, ततो वा इदं व्यौच्छद्यस्यैता उपधीयन्ते व्येवास्मा उच्छत्यथो तम एवाप हते। '*वि*+ √'*उच्छ्*'। तै०सं० ५.३.४.७

२. व्युष्टिर्वा एष द्विरात्रो व्येवाऽस्मै वासयति। √'वस्'। तां०ब्रा० १८.११.११

३. व्युष्टिर्वै दिवा व्येवास्मै वासयति। √'वस्'। तां०ब्रा० ८.९.१३

व्योमन्

१. व्योमन्, व्यवने। '*वि*+ √'*अव्*'= *व्यवन*= *व्योमन्*'। निरु० ११.४०; १३.१०

२. व्योम (अन्तरिक्षम्)। विपूर्वादवतेर्व्याप्तर्थत्वात्। व्यवति व्याप्नोति सर्वं जगत्। '*वि*+ √'*अव्*'+ *मनिन्*'। निघ० १.३.३

३. यद्वा, अवतिर्गत्यर्थः। अवनं गमनं विविधमस्मिन् विद्यते। '*वि*+ √'*अव्*'+ *मनिन्*'। निघ० १.३.३

४. यद्वा, अवतिः रक्षणार्थः। विशेषेणावति प्राणिनो ऽवकाशप्रदानेन। '*वि*+ √'*अव्*'+ *मनिन्*'। निघ० १.३.३

५. यद्वा, उणादौ तु √'व्येञ्' संवरणे। संव्रियते तद्वायुनां व्योम। √'*व्ये*'+ *मनिन्*' (*निपातनात्*)। निघ० १.३.३

६. व्योम (दिक्)। व्याख्यातमन्तरिक्षनामसु। √'*व्ये*'+ *मनिन्*' (*निपातनात्*)। निघ० १.६.६

७. यद्वा, अञ्जेर्वा ओमन्— इति माधवः। विविधं ओममन्नमस्मिन् विद्यत इति व्योम। √'*अञ्ज्*'+ *मनिन्*= *ओमन्*= *व्योमन्*'। निघ० १.३.३

८. व्योम (उदकम्)। निरुक्तमन्तरिक्षनामसु। व्यवति प्राणिनः संवृणोति भूमिमिति वा। √'*व्ये*'+ *मनिन्*'। निघ० १.१२.५४

९. नामन्सीमन्व्योमन्रोमन्लोमन्पाप्मन्ध्यामन्। '*व्ये*'+ *मनिन्*' (*निपातनात्*)। उणा० ४.१५२

व्योमसद्

१. एष (सूर्य्यः) वै व्योमसद् व्योम वा एतत् सद्मनां यस्मिन्नेष आसन्नस्तपति। '*व्योमन्*+ √'*सद्*'। ऐ०ब्रा० ४.२०

व्रज

१. व्रजो व्रजत्यन्तरिक्षे। √'*व्रज्*'। निरु० ६.२

२. व्रजः (मेघः)। √'व्रज' गतौ'। व्रजत्यन्तरिक्षे व्रजत्यनेनेन्द्र इति वा व्रजो मेघः। मेघवाहनो हीन्द्रः पर्वतोऽपि पक्षच्छेदात् पूर्वमन्तरिक्षे व्रजति। अथवा स्वशरीरेण भूमिमन्तरिक्षं च व्रजति। व्रजन्ति तत्र प्राणिन इति वा। √'*व्रज्*'+ *घ*'। निघ० १.१०.११

व्रत

१. वामनु **व्रतानि वर्त्तते** हविष्मान्। √'*वृत्*'। ऋ० १.१८३.३

२. व्रतमिति कर्मनाम। वृणोतीति सतः। इदमपीतरद् व्रतमेतस्मादेव वृणोतीति सतः। √'*वृ*'। निरु० २.१३

३. निवृत्तिकर्मा वारयतीति सतः। √'*वारय्*'। निरु० २.१३

४. अन्नमपि व्रतमुच्यते, यदावृणोति शरीरम्। √'*वृ*'। निरु० २.१३

५. व्रतम् (कर्म)। वृणोतीति सतः (निरु० २.१३)। अत्र स्कन्दस्वामी— शुभमशुभं वा वृणोति निबध्नाति कर्त्तारम्। ......इदमपीतरद् व्रतम्, गुडलवणस्त्र्यादि-

२. अन्तः **पतत्पतत्र्यस्य** पर्णम्। √'*पत्*'। ऋ० ४.२७.४

३. पतेरत्रिन्। √'*पत्*'+ *अत्रिन्*'। उणा० ४.७०

पति

१. उत नो अस्य पूर्व्यः **पतिर्दन्वीतं पातं** पयस उस्रियायाः। √'*पा*'। ऋ० १.१५४.४

२. **पते पाहि** चतसृभिर्वसो। √'*पा*'। ऋ० ८.६०.९

३. **पाहि पाहि** यज्ञं **पाहि** यज्ञपतिं **पाहि** मां यज्ञन्यम्। √'*पा*'। यजु० २.६

४. बृहस्पतिर्न परि **पातु** पश्चाद्। √'*पा*'। अथर्व० २०.८९.११

५. पाता वा। √'*पा*'। निरु० १०.११, १२.१४.१६, १७, ४२

६. पालयिता वा। √'*पाल्*'। निरु० १०.११, १२, २१, ४२, १४.१६, १७, ४२

७. पातेर्डति। √'*पा*'+ *डति*'। उणा० ४.५८

पतिष्ठ

१. हित्वा न ऊर्जं प्र **पतात्पतिष्ठः**। √'*पत्*'। ऋ० १०.१६५.५

पथ

१. **प्रपथे पथामजनिष्ट** पूषा **प्रपथे** दिवः **प्रपथे पृथिव्याः**। √'*प्रथ्*'। अथर्व० ७.९.१

पथिन्

१. प्रति **पन्थामपद्महि**। √'*पद्*'। यजु० ४.२९

२. पन्थाः पततेर्वा। √'*पत्*'। निरु० २.२८

३. पद्यतेर्वा। √'*पद्*'। निरु० २.२८

४. पन्थतेर्वा। √'*पन्थ्*'। निरु० २.२८

५. पतः न्थ च। √'*पत्*'+ *इन्*'। उणा० ४.१२

पथ्या

१. पथ्या, स्वस्ति पन्था अन्तरिक्षं तन्निवासात्। '*पथिन्> पथ्या*'। निरु० ११.४५

पद

१. वेदा यो वीनां **पदमन्तरिक्षेण पतताम्**। √'*पत्*'। ऋ० १.२५.७

२. जरयन्ती वृजनं **पद्वदीयत उत्पातयति** पक्षिणः। √'*पत्*'। ऋ० १.४८.५

३. स यदिमानि सर्वाणि भूतानि पादि तस्मात् पदम्। '*पाद> पद*'। ऐ०आ० २.२.२

४. पादः पद्यतेः, तन्निधानात् पदम्। पशुपादप्रकृतिः प्रभागपादः। प्रभागपादसामान्यादितराणि पदानि। √'*पद्*'। निरु० २.७

पदवी

१. पदवी पदं वेत्ति। '*पद*+ √'*विद्*'। निरु० १४.१३

पदि

१. पदिर्गन्तुर्भवति, यत् पद्यतेः। √'*पद्*'। निरु० ५.१८

पपुरि

१. हविषा जारो अपां **पिपर्ति पपुरिर्नरा**। √'*पॄ*'। ऋ० १.४६.४

२. पिपर्ति पपुरिरिति पृणातिनिगमौ वा। √'*पॄ*'। निरु० ५.२४

३. प्रीणातिनिगमौ वा। √'*प्री*'। निरु० ५.२४

पप्तता

१. पप्तता, अपतत। √'*पत्*'। निरु० ११.१४

पप्तिन्

१. **सुपप्तनी** पेतथुः क्षोदसो महः। √'*पत्*'। ऋ० १.१८२.५

पप्रि

१. स नः **पप्रि पारयाति** स्वस्ति नावा पुरुहूतः। √'*पॄ*'। ऋ० ८.१६.११

पयते

१. पयते, प्यायते। √'*प्या*'। निरु० ११.४२

पयस्

१. यदीमृतस्य **पयसा पियानो** नयन्नृतस्य पथिभी रजिष्ठैः। √'*प्याय्*'। ऋ० १.७९.३

२. वीतं **पातं पयस** उस्रियायाः। √'*पा*'। ऋ० १.१५३.४

३. मिमाति मायुं **पयते पयोभिः**। √'*पय्*'। ऋ० १.१६४.२८, अथर्व० ९.१.८, ९.१०.६

४. तदाहना अभवत् **पिप्युषी पयोंऽशोः पीयूषं** प्रथमं तदुक्थ्यम्। √'*प्या*'। ऋ० २.१३.१

५. जामर्येण **पयसा पीपाय**। √'*प्या*'। ऋ० ४.३.९

६. अभि स्वेन **पयसा पीप्यानाः**। √'*प्या*'। ऋ० ७.३६.६

७. **पयो** यदस्य **पीपयत**। √'प्या'। ऋ० ९.६.७

८. तां **पीपयत पयसेव** धेनुम्। √'प्या'। ऋ० १०.६४.१२

९. **पीपयद्यथा** नः सहस्रधारा **पयसा** मही गौः। √'प्या'। ऋ० १०.१३३.७

१०. पयः पिबतेर्वा। √'पा'। निरु० २.५

११. प्यायतेर्वा। √'प्या'। निरु० २.५

१२. पयः (अन्नम्)। √'पयं गतौ'। पीयते ह्यन्नं। वर्द्धते हि तेन भुक्तेन। √'पय्'+ असुन्'। निघ० २.७.३

पयस्वती

१. पयस्वती (रात्रिः)। पयोऽस्या अस्तीति। *'पयस्+ मतुप्+ ङीप्'*। निघ० १.७.१४

२. पयस्वत्यः (नद्यः)। √'पा पाने'। पीयते इति पयः= उदकं तद्वत्यः। *√'पा'+ असुन्> पयस्, पयस्+ मतुप्'*। निघ० १.१३.२९

३. प्यायतेर्वा। वर्द्धतेऽनेन पीतेन प्राणिन इति पयः। उदकं तद्वत्यः। *√'प्या'+ असुन्> पी+ अस्> पयस्, पयस्+ मतुप्'*। निघ० १.१३.२९

पर

१. आमासु **पूर्षु परो** अप्रमृष्टां नारातयः। √'पृ'। ऋ० २.३५.६

२. देवा वै यद्यज्ञेन नावरुन्धत, तत्परैरवारुन्धत, तत्पराणां परत्वम्। *√'पृ' पूरणे'*। तै०सं० ३.३.६.१

३. परैर्वै देवा आदित्यं स्वर्गं लोकमपारयन्, यदपारयंस्तत् पराणां परत्वम्। *√'पृ' पूरणे'*। काठ० ३.३.६, ता०ब्रा० ४.५.३

परमेष्ठिन्

१. अयं वा इदं परमोऽभूदिति। तत्परमेष्ठिनः परमेष्ठित्वम्। *'परम> परमेष्ठिन्'*। तै०सं० २.२.१०.५

२. आपो वै प्रजापतिः परमेष्ठी ता हि परमे स्थाने तिष्ठन्ति। *'परम+ √'स्था'*। शत०ब्रा० ८.२.३.१३

३. तत एतं परमेष्ठी प्राजापत्यो यज्ञमपश्यद् यद्दर्शपौर्णमासौ ताभ्यामयजत,................स आपोऽभवत्................परमाद्वाऽ एतत्स्थानाद् वर्षति यद्दिवस्तस्मात् परमेष्ठी नाम। *'परम+ परमेष्ठिन्'*। शत०ब्रा० ११.१.६.१६

४. परमे कित्। *'परम+ √'स्था'+ इन्'*। उणा० ४.१०

परशु

१. **शिशीते** नूनं **परशुं** स्वायसम्। *'पर+ √'शो'*। ऋ० १०.५३.९

२. परशुः (वज्रः)। √'शॄ हिंसायाम्'। परान् शृणातीति परशुः— इति दण्डनाथवृत्तिः। *'पर+ √'शॄ'+ कु'*। निघ० २.२०.१८

३. परान् श्यतीति परशुः— इति क्षीरस्वामी। *'पर+ √'शो'*। निघ० २.२०.१८

४. आङ्परयोः खनिशॄभ्यां डिच्च। *'पर+ √'शॄ'+ कु'*। उणा० १.३३

पराक

१. पराकेण वै देवाः स्वर्गं लोकमायन्। स्वर्गकामो यजेत। पराङेवैतेन लोकमाक्रमते। *'पर+ आ+ √'क्रम्'*। ता०ब्रा० २१.८.२

२. यद्वा, एतस्याकदन्तस्य पराक् तत् पराकस्य पराकत्वम्। *'पर+ आक (दन्त)> पराक'*। तां०ब्रा० २१.८.३

३. पराके पराक्रान्ते। *'पर+ आ+ √'क्रम्' अथवा 'परा+ √'क्रम्'*। निरु० ५.९

४. पराके (दूरे)। परापूर्वाद् √एतेः। *'परा+ √'इ'+ आक'*। निघ० ३.२६.२

५. यद्वा, परापूर्वात् √किरतेः। पराकीर्णं च तद् विक्षिप्तमिव भवति। *'परा+ √'कृ'+ ड'*। निघ० ३.२६.२

पराच्

१. पराचैः पराञ्चैरचितः। *'परा+ √'अञ्च्'*। निरु० ११.२५

२. पराचैः (दूरे)। ''नीचैरिति वदन्नियं पराकैः'' इति भट्टभास्करमिश्रः। *'परा+ √'अञ्च्'*। निघ० ३.२६.३

परावत्

१. परावतः प्रेरितवतः। *'प्र+ √'ईर्'*। निरु० ११.४८

२. परागताद् वा। *'परा+ √'गम्'*। निरु० ११.४८

३. परावतः (दूरे)। प्रोपसर्गात् परोपसर्गाद्वा ईरयतेः। प्रकर्षेण ईरयति विक्षिप्तं परागतमिव वा तद्भवति। *'प्र+ ईर्+ वति'*। निघ० ३.२६.५

४. यद्वा, वहतेः परोपसर्गात्। परागतमिव वा तद्भवति। *'परा+ √'वह्'+ वति'*। निघ० ३.२६.५

पराशर

१. पराशः पराशीर्णस्य वसिष्ठस्य स्थविरस्य जज्ञे। *परा+ √'शॄ'*। निरु० ६.३०

२. इन्द्रोऽपि पराशर उच्यते। पराशातयिता यातूनाम्। *परा+ √'शातय्'*। निरु० ६.३०

परिक्षित

१. अग्निर्हीमाः प्रजा परिक्षेत्यग्निं हीमाः प्रजाः परिक्षियन्ति। *परि+ √'क्षि'*। ऐ०ब्रा० ६.३२

२. संवत्सरो वै परिक्षित्, संवत्सरो हीदं सर्वं परिक्षियतीति। *परि+ √'क्षि'*। गो०ब्रा० २.६.१२

३. अग्निर्वै परिक्षित्, संवत्सरो हीदं सर्वं परिक्षियतीति। *परि+ √'क्षि'*। गो०ब्रा० २.६.१२

४. संवत्सरो वै परिक्षित्, संवत्सरो हीमाः प्रजाः परिक्षेति, संवत्सरं हीमाः प्रजाः परिक्षियन्ति। *'परि+ √'क्षि'*। ऐ०ब्रा० ६.३२

परितक्म्या

१. परितक्म्या रात्रिः, परित एनां तक्म। *'परितः+ तक्मन्'*। निरु० ११.२५

परिधि

१. यं **परिधिं पर्य्यधत्था**ऽअग्ने देवपणिभिर्गुह्यमानः। *परि+ √'धा'*। यजु० २.१७

२. इमं जीवेभ्य **परिधिं दधामि**। *√'धा', (परि)+ √'धा'*। अथर्व० १२.२.२३

३. परिधीन् परिदधाति रक्षसामपहत्यै। *परि+ √'धा'*। तै०सं०२.६.६.२

९. परिधीन् परिदधाति। *√'परि'+ √'धा'*। शत०ब्रा० १.३.३.१३

१०. यत् परिधयः परिधीयन्ते यज्ञस्य गोपीथाय परिधीन् परिधत्ते। *√'परि'+ √'धा'*। गो०ब्रा० २.१.१

११. रक्षसां वा एतेऽनवजयाय परिधीयन्ते यत्परिधयः। *'परि+ √'धा'*। काठ० २६.७, कपि०क०सं० ४१.५

१२. यं परिधिं पर्यधत्था अग्ने देवपणिभिर्वीयमाणः। *परि+ √'धा'*। तै०सं० १.१.१३.२

१३. यं परिधिं पर्यधत्था अग्ने देवपणिभिरिध्यमानः। *परि+ √'धा'*। कपि०सं० ४७.११

परिपति

१. मनो वै परिपतिः, मनः एव तेन प्रीणाति। *√'प्री'*। गो०ब्रा० २.२.३

२. मनो वै परिपतिर्मन एष प्रीणाति। *√'प्री'*। तै०सं० ६.२.२.३

परिमर

१. तद् ब्रह्मणः परिमर इत्युपासीत। पर्येणं म्रियन्ते द्विषन्तः। परि येऽप्रिया भ्रातृव्याः। *'परि+ √'मृ'*। तै०आ० ९.१०.४, तै०उप० ३.१०.४

२. यो ह वै ब्रह्मणः परिमरं वेद पर्येनं द्विषन्तो भ्रातृव्याः परि सपत्ना म्रियन्ते। *'परि+ √'मृ'*। ऐ०ब्रा० ८.२८

परिमाद

१. आपो वै परिमादोऽद्भिर्हीदं सर्वं परिमत्तम्। *परि+ √'मद्'*। शां०आ० १.४

परिषस्वजाना

१. परिषस्वजाना, परिष्वजमाना। *'परि+ √'स्वज्'+ शानच्'*। निरु० ९.१८

परिस्रुत्

१. शिश्ना देवास्य रसोऽस्रवत् सा परिस्रुदभवत्। *परि+ √'स्रु'*। शत०ब्रा० १२.७.१.७ (तु०जै०ब्रा० २.१५६)

परुच्छेप

१. असुरीन्द्रं प्रत्यक्रमत पर्वन्पर्वन्मुष्कान्कृत्वा तामिन्द्रः प्रतिजिगीषन् पर्वन् पर्वञ्छेपांस्यकुरुत। ....इन्द्र उ वै परुच्छेपः। 'पर्वन्+शेप >परु+शेप>परुच्छेप'। कौ०ब्रा० २३.४

२. परुच्छेप ऋषिः पर्ववच्छेपः। 'पर्वन्+शेप'। निरु० १०.४२

३. परुषि परुषि शेपोऽस्येति वा। 'परुष्+शेप'। निरु० १०.४२

परुष

१. परुषे, पर्ववति भास्वतीत्यौपमन्यवः। **'पर्वन्+ उषच्** *(मत्वर्थीयः)* **> परु+ उष > परुष'। निरु० २.६**

२. पृनहिकलिभ्य उषच्। *√'पृ'+ उषच्'*। उणा० ४.७६

परुष्णी

१. इरावती परुष्णीत्याहुः, पर्ववती भास्वती कुटिलगामिनी। *'पर्वन्+ उसि+ न(मत्वर्थीयः)> परुष्णी'*। निरु० ९.२६

पर्जन्य

१. **पर्जन्यः** पिता स उ नः **पिपर्तु**। √'पृ'। अथर्व० १२.१.१२

२. पर्जन्यो भूत्वा (प्रजापतिः) प्रजानां जनित्रमभवत्। *'प्रजा+ जनित्र > पर्जन्य'*। जै०ब्रा० १.३१४

३. पर्जन्यस्तृपेराद्यन्तविपरीतस्य, तर्पयिता जन्यः। √*'तृप्'> पृत्+ √'जन्'+ यक्> पर्जन्य'*। निरु० १०.१०

४. परो जेता वा। *'पर+ √'जि'+ यक्> पर्जन्य'*। निरु० १०.१०

५. परो जनयिता वा। *'पर+ √'जन्'+ यक्> पर्जन्य'*। निरु० १०.१०

६. प्रार्जयिता वा रसानाम्। *'प्र+ √'अर्ज्'+ यक्> पर्जन्य'*। निरु० १०.१०

७. पर्जन्यः। √*'पृष्'+ अन्य> पृषन्य> पर्जन्य'*। उणा० ३.१०३

पर्ण

१. कृष्णं नियानं हरयः **सुपर्णा** अपो वसाना दिवमु**तपतन्ति**। √'पत्'। ऋ० १.१६४.४७

२. त्रिधातुना **पतथो** विर्न **पर्णैः**। √'पत्'। ऋ० १.१८३.१

३. नाके सु**पर्ण**मुप य**त्पतन्तम्**। √'पत्'। ऋ० १०.१२३.६, अथर्व० १८.३.६६, सा०पू० ३.९.८, सा०उ० १८४६

४. **सुपर्णा** अपो वसाना दिवमु**त्पतन्ति**। √'पत्'। अथर्व० ६.२२.१

५. अपचितः प्र **पतत सुपर्णो** वसतेरिव। √'पत्'। अथर्व० ६.८३.१

६. पर्णमभिषुणयः सोमं वै राजानं यत् सुपर्ण आजहार तस्य तत्पर्णमपतत्, स एव पर्णोऽभवत्। स एवास्य संन्यङ्गः। √'पत्'। जै०ब्रा० १.३५५

७. यत्र वै गायत्री सोममच्छापतत् तदस्याऽआहरन्त्याऽ अपादस्ताभ्यायत्य पर्णं प्रचिच्छेद गायत्र्यै वा सोमस्य वा राज्ञस्तत्पतित्वा पर्णोऽभवत् तस्मात् पर्णो नाम। √'पत्'। शत०ब्रा० १.७.१.१

८. अश्वपर्णैरश्वपतनैः। √'पत्'। निरु० ११.१४

९. धाप+वस्यज्यतिभ्यो नः। √'पृ'+ न'। उणा० ३.६

पर्तृ

१. तां अंहसः **पिपृहि पर्तृभि**ष्ट्वं शतं **पूर्भि**र्यविष्ठ्य। √'पृ'। ऋ० ७.१६.१०

२. **पर्षि** तोकं तनयं **पर्तृभिः**। √'पृ'। सा०उ० १६२४

पर्याय

१. यत् पर्यायैः पर्य्यायमनुदन्त, तस्मात् पर्य्यायाः, तत् पर्य्यायाणां पर्य्यायत्वम्। *'पर्याय= पर्य्याय'*। गो०ब्रा० २.५.१

२. यत् पर्यायैः पर्यायमनुदन्त, तत् पर्यायाणां पर्यायत्वम्। *'पर्याय= पर्याय'*। ऐ०ब्रा० १६.५

पर्वत

१. पर्ववान् पर्वतः। *'पर्व+ तप् (मत्वर्थीयः)'*। निरु० १.२०

२. पर्वतः (मेघः)। √'पृ' पालनपूरणयोः'। पृणन्ति पालयन्ति अवयविनं पूर्य्यन्ते वा तेन इति पर्वाणि। यद्वा, प्रीणयन्ति स्वाश्रयमिति। पर्वाण्यवयवाः, सन्त्यस्य इति मत्वर्थीयस्तप् प्रत्ययः। √'पृ'+ *वनिप्> पर्व, पर्व+ तप्> पर्वत'*। निघ० १.१०.९

३. यद्वा, √'पर्व पूरणे'। पर्वति पूरयति वर्षेण भूमिं स्वशरीरेणाकाशं वा पर्वतोऽपि निर्झरनदीप्रवाहादिना भूमिं स्वोन्नत्याकाशञ्च पूरयति। √*'पर्व्'+ अतच्'*। निघ० १.१०.९

४. यद्वा, प्रीणयन्ति स्वाश्रयमिति। √*'प्री'+ वनिप्> पर्व, पर्व+ तप्> पर्वत'*। निघ० १.१०.९

५. भृमृदृशियजिपर्विपच्यमितमिनमिहर्य्यिभ्यो ऽतच्। √*'पर्व्'+ अतच्'*। उणा० ३.११०

पर्वन्

१. पर्व पुनः पुणाते। √'पृ'+ *वनिप्> पर्व'*। निरु० १.२०

२. प्रीणातेर्वा, अर्धमासपर्व देवान् अस्मिन् प्रीणन्तीति। √*'प्री'+ वनिप्'*। निरु० १.२०

३. स्नामदिपद्यर्तिपृशकिभ्यो वनिप्। √'पृ'+ *वनिप्'*। उणा० ४.११४

पर्शु

१. पर्शुः स्पृशतेः, संस्पृष्टा पृष्ठदेशम्। √*'स्पृश्'*। निरु० ४.३

२. स्पृशेः श्वण्शुनौ च। √'स्पृश्'+ शुन्'। उणा० ५.२७

पलाश

१. पलाशं पलाशनात्। 'पल+ √'अश्'। निरु० १२.२९

पलित

१. पलितस्य पालयितुः। 'पालयितृ'। निरु० ४.२६

२. फलेरिजादेश्च पः। √'फल्'+ इत> फलित> पलित'। उणा० ५.३४

पवन

१. स्योना मापः **पवनैः पुनन्तु**। √'पू'। अथर्व० १८.३.११

पवमान

१. आ नः **पवस्व** धारया **पवमान** रयिं पृथुम्। √'पू'। ऋ० ९.३५.१

२. देवेभ्यः सोम **पवमान पूयसे**। √'पू'। ऋ० ९.८६.३०

३. **पवमान पवसे** धाम गोनाम्। √'पू'। ऋ० ९.९७.३१, सा०पू० ५.७.२

४. **पवमानः पुनातु** मा। √'पू'। अथर्व० ६.१९.१-२

पवा

१. अया **पवा पवस्वैना** वसूनि। √'पू'। सा०पू० ५.७.९

२. उत न एना **पवया पवस्व**। √'पू'। सा०पू० ११०५

पवि

१. पविः शल्यो भवति, यद्विपुनाति कायम्। √'पू'। निरु० १२.३०

२. पविः (वाक्)। √'पूञ् पवने'। पुनाति हि वाक्। पूयते वा सङ्कीर्तनादिना। पूयतेऽनयेति वा शुद्धिकरणं हि वाक्। √'पू'+ इ'। निघ० १.११.१५

३. पविः (वज्रः)। √'पवतिर्गतिकर्मा'। गन्ता शत्रून्, गम्यतेऽनेन यश इति च। √'पू'+ इ> पवि'। निघ० २.२०.५

पवित्र

१. क्रतुं **पुनानः** कविभिः **पवित्रैः**। √'पू'। ऋ० ३.१.५

२. त्रिभिः **पवित्रैरपुपोद्ध्यर्कम्**। √'पू'। ऋ० ३.२६.८

३. मध्वः **पुनानः** कविभिः **पवित्रैः**। √'पू'। ऋ० ३.३१.१६

४. मध्वः **पुनन्ति** धारया **पवित्रैः**। √'पू'। ऋ० ३.३६.७

५. आ **पवस्व** मदिन्तम **पवित्रं** धारया कवे। √'पू'। ऋ० ९.२४.६, सा०उ० ३०.१२०८

६. यत्ते **पवित्रमर्चिवदग्ने** तेन **पुनीहि** नः। √'पू'। ऋ० ९.६७.२४

७. **पवित्र** आ वाचं **पुनन्ति** कवयः। √'पू'। ऋ० ९.७३.७

८. **पुनातु** वसोः **पवित्रेण** शतधारेण। √'पू'। यजु० १.३

९. उत्पुनाम्यच्छिद्रेण **पवित्रेण**। √'पू'। यजु० १.३१

१०. सविता **पुनात्वच्छिद्रेण पवित्रेण**। √'पू'। यजु० ४.४

११. वायोः **पूतः पवित्रेण** प्रत्यङ्। √'पू'। यजु० १९.३

१२. **पवित्रेण पुनीहि** मा। √'पू'। यजु० १९.४०

१३. **पवित्रेण** पृथिवि मोत् **पुनामि**। √'पू'। अथर्व० १२.१.३०

१४. **पूताः पवित्रैः पवन्ते**। √'पू'। अथर्व० १२.३.२५

१५. त्वां **पवित्रमृषयोऽभरन्त** त्वं **पुनीहि** दुरितान्यस्मत्। √'पू'। अथर्व० १९.३३.३

१६. **पवस्व** वाजसातये **पवित्रे** धारया सुतः। √'पू'। सा०उ० १०१६

१७. **पवस्व** देववीरति **पवित्रं** सोम रंह्या। √'पू'। सा०उ० १०३७

१८. **पवित्रेणात्मानं पुनते** सदा। √'पू'। सा०उ० १३०२

१९. अयं वै पवित्रं योऽयं (पवते)। √'पू'। शत०ब्रा० १.१.३.२, ७.१.१२

२०. येन देवाः पवित्रेणात्मानं पुनते सदा सहस्रधारेण पवमानः पुनातु मा। √'पू'। काठ०संक० ९६.२

२१. आपो वै पवित्रम्। अद्भिरेवापुनत। √'पू'। जै०ब्रा० १.१२१

२२. पवित्रेण पुनीहि मा। √'पू'। तै०ब्रा० १.४.८.१

२३. पवित्रमर्चिषि.......पुनीमहे, इति। पवित्रेण सवेन........पुनीमहे, इति। √'पू'। तै०ब्रा० १.४.८.२

२४. पवित्रं पुनातेः। √'पू'। निरु० ५.६

२५. पवित्रम् (उदकम्)। √'पूञ् पवने'। पुनात्यनेनात्मानं स्नातः। √'पू'+ इत्र> पवित्र'। निघ० १.१२.८२

पवी

१. पवी रथनेमिर्भवति, यद्विपुनाति भूमिम्। √'पू'। निरु० ५.५

पवीता, पविता

१. **पवीतारः पुनीतन** सोममिन्द्राय **पातवे**। √'पू'। सा०उ० १०५०, ऋ० ९.४.४

२. वैश्वानरः पविता मा पुनातु। √'पू'। अथर्व० ६.११९.३

पवीरवत्

१. पविः शल्यो भवति, यद्विपुनाति कायम्। तद्वत् पवीरमायुधं तद्वानिन्द्रः पवीरवान्। √'पू'+ इ> *पवि*', '*पवि+ मतुप्> पवीरवान्*'। निरु० १२.३०

पश्

१. स्पाशनैरिति वा। √'*स्पश्*'। निरु० ५.३

२. स्पर्शनैरिति वा। √'*स्पृश्*'। निरु० ५.३

३. पानैरिति वा। √'*पा*'। निरु० ५.३

पशव्य

१. पशव्यं यत्पश्यसि चक्षसा सूर्यस्य। √'*पश्*'। ऋ० ७.९८.६, अथर्व० २०.८७.३

पशु

१. एतान् पञ्च पशूनपश्यत् (अग्निः)। पुरुषमश्वं गामविजं यदपश्यत् तस्मादेते पशवः। √'*पश्*'। शत०ब्रा० ६.२.१.२

२. तेषु (पशुषु) एतम् (अग्निं प्रजापतिः) अपश्यत् तस्माद् वेवैते पशवः। √'*पश्*'। शत०ब्रा० ६.२.१.४

३. पशुः पश्यतेः। √'*पश्*'। निरु० ३.१६

४. अर्जिदृशिकम्यमिपंसिबाधामृजिपशितुक् धुक्दीर्घ-हकारश्च। '*दृश्*'+ *कु*> *पश्*+ *उ*'। उणा० १.२७

पशुपति

१. ओषधयो वै पशुपतिस्तस्माद् यदा पशव ओषधीर्लभन्तेऽथ पतीयन्ति। '*पशु*+ √'*पत्*'। शत०ब्रा० ६.१.३.१२

पश्यत

१. असौ वा आदित्यः पश्यतः। एष एव तदजायत। एतेन हि पश्यति। √'*पश्*'। जै०उप० १.१८.१.६

पस्त्य

१. पस्त्यम् (गृहम्)। √'पस संगतौ'। पसन्त्यस्मिन्। √'*पस्*'+ *क्यच् (औणादिकः)*। निघ० ३.४.६

२. यद्वा, √'पत्लृ गतौ'। निपातनात् सकार उपजनः। √'*पस्*'+ *क्यच् (औणादिकः)*। निघ० ३.४.६

पांसु

१. अथ यदेतद् भस्मोद्धृत्य परावपन्त्येष एवासन् पाꣳसवः। '*पर*+ √'*अस्*'। शत०ब्रा० २.३.२.३

२. पाँसवः पादैः सूयन्त इति वा। '*पाद*+ √'*सू*'। निरु० १२.१९

३. पन्नाः शेरत इति वा। '*पन्न*+ √'*शी*'। निरु० १२.१९

४. पंसनीया भवन्तीति वा। √'*पंस्*'। निरु० १२.१९

५. अर्जिदृशिकम्यमिपंसिबाधामृजिपशितुक्धुक्दीर्घहकारश्च। √'*पंस्*'+ *कु*> *पांस्*+ *उ*= *पांसु*'। उणा० १.२७

पांसुर

१. पांसुरे प्यायनेऽन्तरिक्षे। √'*प्याय्*'+ *उरच्*> *प्यायुर*> *पांसुर*'। निरु० १२.१९

२. अपि वोपमार्थे स्यात्। ....पांसुल इव पदं न दृश्यत इति। (*अर्थप्रदर्शनमात्रम्*)। निरु० १२.१९

पाक

१. उत मेधं शृतपाकं पचन्तु। √'*पच्*'। ऋ० १.१६२.१०, यजु० २५.३३

२. पाकः पक्तव्यो भवति। √'*पच्*'। निरु० ३.१२

३. पाकः (प्रशस्यम्)। √'पातेः'। रक्ष्यते राजादिना गुणवत्त्वात्। √'*पा*'+ *कन्*'। निघ० ३.८.८

पाङ्क्त

१. पञ्चभिः वै व्याहृतिभिरिदं देवा अजयंस्......पांक्तो यज्ञः। '*पञ्चन्*= *पाङ्क्त*'। जै०ब्रा० २.३५६

२. ते यत् पञ्चादन्यद्भूत्वा कल्पेतां तस्मादाहुः पाङ्क्तो यज्ञः पाङ्क्ताः। '*पञ्चन्*= *पाङ्क्त*'। गो०ब्रा० २.३.२०

३. पाङ्क्तो ह्ययं पुरुषः पञ्चधा विहितः लोमानि त्वगस्थिमज्जामस्तिष्कम्। '*पञ्चन्*= *पाङ्क्त*'। गो०ब्रा० २.६.८

४. पञ्चगृहीतं भवति। पाङ्क्ता हि पशवः। '*पञ्चन्*= *पाङ्क्त*'। तै०ब्रा० १.६.३.२

५. पाङ्क्तो ह्ययं पुरुषः पञ्चधा विहितो लोमानि त्वङ्मांसमस्थिमज्जा। '*पञ्चन्*= *पाङ्क्त*'। गो०ब्रा० २.६.८

पाजस्

१. पाजः पालनात्। √'*पा*'। निरु० ६.१२

२. पाजः (बलम्)। √'पा रक्षणे'। बलेन हिंस्यते सर्वम्। √'*पा*'+ *असुन्*+ *जुडागमः*'। निघ० २.९.२

३. पातेर्बले जुट्च। √'*पा*'+ *असुन्*+ *जुडागमः*'। उणा० ४.२०४

पाणि

१. पाणि: पणायते: पूजाकर्मण:। √'*पणाय्*'। निरु० २.२६

२. अशिपणाय्योरुडायलुकौच।
√'*पणाय्*'+ *इण्*+ *आयलुक्च*। उणा० ४.१३४

पात्र

१. मत्स्यपायि ते महः **पात्रस्येव**। √'*पा*'। ऋ० १.१७५.१

२. इदं त्यत्पात्रमिन्द्रपानमिन्द्रस्य प्रियममृत**मपायि**। √'*पा*'। ऋ० ६.४४.१६

३. **पात्रेषु पिबतो** जनान्। √'*पा*'। यजु० १६.६२

४. **पात्रान्त्सोमं त्वापाययद्**। √'*पा*'। अथर्व० १०.१०.९

५. देवपात्रेणैव तद्देवतास्तर्पयति। √'तृप्'=त्रप् (वर्ण-विपर्ययेण)=पत्र=पात्र'। गो०ब्रा० २.३.१

६. देव पात्रेणैव तद्देवतास्तर्पयति। √'तृप्'=त्रप् (वर्णविपर्ययेण) =पत्र=पात्र'। ऐ०ब्रा० १२.११

७. तद्देवता अनु प्रपिबन्ति देवपात्रेणैव तद्देवातास्तृप्यन्ति इति। √'तृप्'=त्रप्(वर्णविपर्ययेण) =पत्र=पात्र'। ऐ०ब्रा० १२.११

८. पात्रं पानात्। √'*पा*'। निरु० ५.१

पाथस्

१. विष्णुर्गोपा: परमं **पाति पाथ:**। √'*पा*'। ऋ० ३.५५.१०

२. उदकमपि पाथ उच्यते पानात्। अन्नमपि पाथ उच्यते पानादेव। √'*पा*'। निरु० ६.७

३. उदके थुट्च। √'*पा*'+ *असुन्*+ *थुडागम:*'। उणा० ४.२०५

पाद

१. पाद: पद्यते:। ......पशुपादप्रकृति: प्रभागपाद:। प्रभाग-पादसामान्यादितराणि पदानि। √'*पद्*'। निरु० २.७

पादु

१. पादु: पद्यते:। √'*पद्*'। निरु० ५.१९

पान्त

१. पान्तम्, पानीयम्। √'*पा*'। निरु० ७.२५

पाप

१. पातापेयानाम्। '*पाता*+ √'*पा*' > *पाप*'। निरु० ५.२

२. पापत्यमानोऽवाङेव पततीति वा। √'*पत्*'। निरु० ५.२

३. पापत्यतेर्वा स्यात्। √'*पत्*'+ √'*पत्*'। निरु० ५.२

४. पानीविषिभ्य: प:। √'*पा*'+ *प*'। उणा० ३.२३

पायु

१. अदब्धेभि: **पायुभि: पाह्यस्मान्**। √'*पा*'। ऋ० १.९५.९

२. पुरां दर्त्त: **पायुभि: पाहि** शग्मै:। √'*पा*'। ऋ० १.१३०.१०

३. शिवेभिर्न: **पायुभि: पाहि** शग्मै:। √'*पा*'। ऋ० १.१४३.८

४. **पाहि** वो अग्ने **पायुभिरजस्रै:**। √'*पा*'। ऋ० १.१८९.४

५. ते **पायव:** सध्र्यञ्चो निषधाग्ने तव न: **पान्त्वमूर**। √'*पा*'। ऋ० ४.४.१२

६. **पातं** नो रुद्रा **पायुभि:**। √'*पा*'। ऋ० ५.७०.२

७. **पायुभिष्ट्वं** शिवेभिरद्य परि **पाहि** नो गयम्। √'*पा*'। ऋ० ६.७१.३, यजु० ३३.६९.८४

८. सदा नो दिव्य: **पायु:** सिषक्तु यूयं **पात** स्वस्तिभि: सदा न:। √'*पा*'। ऋ० ७.३७.८

९. विश्वेभि: **पातु पायुभिर्नि** सूरीन्। √'*पा*'। ऋ० ७.३८.३

१०. शिवेभि: **पाहि पायुभि:**। √'*पा*'। ऋ० ८.६०.८

११. **पातु** नो देवी सुभगा सरस्वती **पात्वग्नि:** शिवा ये अस्य **पायव:**। √'*पा*'। अथर्व० ५.३.२

१२. तेभिर्नो अध **पायुभिर्नु पाहि** दुहितर्दिव:। √'*पा*'। अथर्व० १९.४७.५

१३. कृवापाजिमिस्वदिसाध्यशूभ्य उण्। √'*पा*'+ *उण्*'। उणा० १.१

पार

१. स्वस्ति न: **पिपृहि पारमासाम्**। √'*पृ*'। ऋ० ३.३१.२०

२. पारं परं भवति। '*पर*> *पार*'। निरु० २.२४

पारयन्ती

१. पारयन्ती पारं नयन्ती। '*पार*+ √'*नी*'। निरु० ९.१८

पारावतघ्नी

१. पारावतघ्नीं पारावारघातिनीम्। पारं परं भवति। '*पारावार*+ *घातिनी*> *पारावत*+ *घ्नी*> *पारावतघ्नी*'। निरु० २.२४

पारिप्लव

१. तद्यत्पुन: पुन: (संवत्सरम्) परिप्लवते तस्मात् पारिप्लवम्। '*परि*+ √'*प्लु*'। शत०ब्रा० १३.४.३.१५

पार्थिव

१. दीर्घं पृथु **पप्रथे** सद्म **पार्थिवम्**। √'*प्रथ्*'। ऋ० ५.८७.७

२. आ ये विश्वा **पार्थिवानि पप्रथत्**। √'*प्रथ्*'। ऋ० ८.९४.१०

पार्वती

१. पार्वत्यः (नद्यः)। पर्वतशब्दो निरुक्ते मेघपर्वतानां नामत्वेन (निघ० १.१०.९) तस्यापत्यम्। '*पर्वत (अपत्यम्)> पार्वती*'। निघ० १.१३.२६

पार्श्व

१. पार्श्वं पर्शुमयमङ्गं भवति। '*पर्शु*'। निरु० ४.३

२. पार्श्वौ (द्यावापृथिव्यौ)। √'स्पृश' संस्पर्शने'। संस्पृशतो व्याप्नुतः सर्वान् पदार्थान्। √'*स्पृश्'+ श्वण्> स्पृश्+ श्व> पृ+ श्व> पार्श्व*'। निघ० ३.३०.७

३. स्पृशेः श्वण्शुनौ च। √'*स्पृश्'+ श्वन्*'। उणा० ५.२७

पावमानी

१. तेन सहस्रधारेण **पावमानी पुनन्तु** नः। √'*पू*'। सा०उ० १३०२

पावान

१. घृतं **घृतपावानः पिबत** वसां **वसापावानः पिबत**। √'*पा*'। यजु० ६.१९

पावीरवी

१. पविः शल्यो भवति। यद्विपुनाति कायम्। तद्वानिन्द्रः पवीरवान्। तद्देवता वाक् पावीरवी। पावीरवी च दिव्या वाक्। √'*पू'> पवि, पवि+ मतुप्> पवीरवान्> पावीरवी*'। निरु० १२.३०

पाश

१. पाशः पाशयतेर्विपाशनात्। √'*पाश्*'। निरु० ४.२

पाश्या

१. पाश्या पाशसमूहः। '*पाश> पाश्या*'। निरु० ४.२

पिंषती

१. अथो अवघ्नती हन्त्यथो **पिनष्टि पिंषती**। √'*पिष्*'। ऋ० १.१९१.२

पिजवन

१. पिजवनः पुनः स्पर्धनीयजवो वा। '*स्पर्धनीयजव> पिजवन*'। निरु० २.२४

२. अमिश्रीभावगतिर्वा। *अमिश्रितजवन > मिजवन > पिजवन*'। निरु० २.२४

पित

१. **अपिन्वतमपितः पिन्वतं** धियः। √'*पिवि*'। ऋ० ७.८२.३

पितु

१. महः **पितुः पपिवाञ्चार्वान्ना**। √'*पा*'। ऋ० १.६१.७

२. मे **पाह्यथर्य पितुं** मे **पाहि**। √'*पा*'। यजु० ३.३७

३. पितुरित्यन्ननाम। पातेर्वा। √'*पा' रक्षणे*'। निरु० ९.२४

४. पिबतेर्वा। √'*पा' पाते*'। निरु० ९.२४

५. प्यायतेर्वा। √'*प्याय्*'। निरु० ९.२४

६. पितुः (अन्नम्)। √'पा' रक्षणे'। रक्षितव्यं ह्यन्नम्। √'*पा+ तु> पातु > पितु*'। निघ० २.७.६

पितुषणि

१. पितुषणिरित्यन्नं वै पितु दक्षिणा वै पितु तामेनेन सनोत्यन्नसनिमेवैनं (सोमम्) तत्करोति। '*पितु+* √'*षण्*'। ऐ०ब्रा० १.१३

पितृ

१. ऋतवः खलु वै देवाः पितरः। ऋतुनेव देवान् पितॄन् प्रीणाति। तान् प्रीतान् मनुष्याः पितरोऽनु प्रपिपते। √'*प्री*'। तै०सं० १.३.१०.५, (तु०तै०सं० ५.४.११.४, काठ०संक० ६९.१)

२. यत् पीतत्वं तत्पितॄणां पितृत्वम्। √'*पा' पाने*'। षड्०ब्रा० ५.१.१

३. कव्यस्यामृतस्य पातृत्वम्। तेन पितृणां पितृत्वम्। √'*पा' पाने*'। सायणभाष्य, षड्०ब्रा० ५.१.१

४. पिता पातावा। √'*पा*'। निरु० ४.२१

५. पालयिता वा। √'*पाल्*'। निरु० ४.२१

पिनाक

१. पिनाकं प्रतिपिनष्ट्यनेन। √'*पिष्*'। निरु० ३.२१

२. पिनाकादयश्च। √'*पा'+ आक*'। उणा० ४.१६

पिन्वन्त्यपीया

१. नद्यदेव वृत्रं हतमापो व्यायन् यत्रापिन्वंस्तस्मात् पिन्वन्त्यपीया। √'*पिन्व्'+ अपीय (अप्= अपीय)*। कौ०ब्रा० १५.३

२. पिन्वन्त्यो मरुत: सुदानव इति पिन्वन्त्यपीयापो वै पिन्वन्त्यपीया। √'*पिन्व्*'+ *अपीय* (*अप्*=*अपीय*)। कौ०ब्रा० १५.३

पिपर्ति

१. पिपर्ति पपुरिरिति पृणातिनिगमौ वा। √'*पृ*'। निरु० ५.२१

२. प्रीणातिनिगमौ वा। √'*प्री*'। निरु० ५.२१

पिपीलिका

१. पिपीलिका पेलतेर्गतिकर्मण:। √'*पेल्*'। दै०ब्रा० ,३.९

२. पिपीलिका पेलतेर्गतिकर्मण:। √'*पेल्*'। निरु० ७.१३

पिप्पल

१. पिप्पलम् (उदकम्)। √'पृ' पालनपूरणयो:'। पिपर्ति पिप्पलम्। √'*पृ*'+ *कल*'। निघ० १.१२.१३

२. अपि प्लवते:— इति नैरुक्ता:—इति क्षीरस्वामी। √'प्लुङ् गतौ'। गच्छत्यपि। अपिशब्दात् तिष्ठतीति च गम्यते। '*अपि*+ √'*प्लु*'+ *ड*> *पिप्पल*'। निघ० १.१२.१३

पियारु

१. पियारुं देवपीयुं पायतिर्हिंसाकर्मा। √'*पीय्*'। निरु० ४.२५

पिश:

१. आ रोदसी विश्वपिश: **पिशाना:**। √'*पिश्*'। ऋ० ७.५७.३

पिशुन

१. पिशुन: पिंशते: विपिंशतीति। √'*पिंश्*'। निरु० ६.११

२. क्षुधिपिशिमथिभ्य: कित्। √'*पिंश्*'+ *उनन्*'। उणा० ३.५५

पिष्ट

१. पिष्टम् (रुपम्)। √'पिशं अवयवे'। पिशितम्= अवयवशो विभक्तमित्यर्थ: —इति स्कन्दस्वामी। √'*पिश्*'+ *क्त*'। निघ० ३.७.९

२. यद्वा, √'पिश्'। आश्लेषणार्थ:— इति माधव:। आश्लिष्यत्याश्रयम्। √'*पिश्*'+ *क्त*'। निघ० ३.७.९

पीप्यान

१. पीप्यानेव, पायमानेव। √'*पा*'। निरु० २.२७

पीयूष

१. तदाहना अभवत् **पिप्युषी पयोऽशो: पीयूषं** प्रथमं तदुक्थ्यम्। √'*प्या*'। ऋ० २.१३.१

२. अंशो: **पीयूषमपिबो** गिरिष्ठाम्। √'*पा*'। ऋ० ३.४८.२

३. पीयेरूषन्। √'*पीङ् पाने*'+ *ऊषन्*'। उणा० ४.७७

पुत्र

१. स वह्नि: **पुत्र: पित्रो: पवित्रवान्पुनाति** धीरो भुवनानि मायया। √'*पूञ् पवने*'। ऋ० १.१६०.३

२. पुन्नाम नरकमनेकशततारं तस्मात् त्रातीति पुत्रस्तत् पुत्रस्य पुत्रत्वम्। '*पुत्*+ √'*त्रै*'। गो० १.१.२

३. पुत्र: पुरु त्रायते। '*पुरु*+ √'*त्रै*'। निरु० २.११

४. निपरणाद्वा। '*नि*+ √'*पृ*'। निरु० २.११

५. पुन्नरकं ततस्त्रायत इति वा। '*पुत्*+ √'*त्रै*'। निरु० २.११

६. पुवो ह्रस्वश्च। √'*पू*'+ *क्त्र*> *पु*+ *त्र*> पुत्र'। उणा० ४.१६६

पुनर्वसू

१. यो वै तम् (पुनराधेयम्) अग्रा आधत्त स तेन वसुना समभवत्, तत्पुनर्वसो: पुनर्वसुत्वं तस्मात् पुनर्वसा (पुनराधेय:) आधेय:। '*पुनर्*+ *वसु*'। मै०सं० १.७.२

२. यो वै तमाधत्त स तेन वसुना समभवत्, तस्मात् पुनर्वसु:। '*पुनर्*+ *वसु*'। काठ० ८.१५, कपि०क०सं० ८.३

पुनश्चिति

१. तद्यच्चित्तं सन्तं पुनश्चिनोति तस्मात् पुनश्चिति:। '*पुनर्*+ √'*चि*'। शत०ब्रा० ८.६.३.१३

पुम्

१. पुमान् पुरुमना भवति। '*पुरु*+ *मनस्*'। निरु० ९.१५

२. पुंसतेर्वा। √'*पुंस्*'। निरु० ९.१५

३. पातेर्डुम्सुन्। √'*पा*'+ *डुम्सुन्*'। उणा० ४.१७९

पुर्

१. ताँ अंहस: **पिपृहि पर्तृभिष्ट्वं** शतं **पूर्भिर्यविष्ठ्य**। √'*पृ*'। ऋ० ७.१६.१०

पुरन्धि

१. पुरन्धिर्बहुधी:। तत्क: पुरन्धि। भग: पुरस्तात् तस्यान्वादेश इत्येकम्। '**पुरु+धी**'। निरु० ६.१३

२. इन्द्र इत्यपरम्। स बहुकर्मतमः। पुरां च दारयितृतमः। 'पुर्+ √'दारय्'। निरु० ६.१३

३. पुरन्धी (द्यावापृथिव्यौ)। पुराणि धीयन्तेऽनयोः। 'पुर्+ √'धा'+ कि'। निघ० ३.३०.२

पुरश्चरण

१. अथैतं विष्णुं यज्ञम्। एतैर्यजुभिः पुर इवैव बिभ्रति तस्मात् पुरश्चरणं नाम। 'पुरम्+ चरण'। शत०ब्रा० ४.६.७.४

पुराण

१. पुराणं कस्मात्। पुरा नवं भवति। 'पुरा+ नव'। निरु० ३.१९

पुरीष

१. पुरीषं पृणातेः। √'पृ'। निघ० २.२२

२. पूरयतेर्वा। √'पूर्'। निरु० २.२२

३. पुरीषम् (उदकम्)। √ पृ+ 'पालनपूरणयोः'। पूरयति जगत् प्रलयकाले, पूर्य्यतेऽनेन तडागादि पालकं वा जगत् शस्योत्पत्तिहेतुत्वात्। √'पृ'+ ईषन्'। निघ० १.१२.१२

४. प्रीणातेर्वा। प्रीणाति जगत् पुरीषम्। √'प्री+ कीषन्'। निघ० १.१२.१२

५. शृपृभ्यां किच्च। √'पृ'+ ईषन्'। उणा० ४.२८

पुरु

१. पुरु (बहु)। पृणातेः। √'पृ'+ कु'। निघ० ३.१.३

२. पृभिदिव्यधिगृधिधृषिहृषिभ्यः। √'पृ'+ कु'। उणा० १.२३

पुरुभोज

१. पुरुभोजाः (मेघः)। √'भुज' पालनाभ्यवहारयोः'। पुरु बहु प्राणिजातं भुनक्ति पालयति वृष्टिप्रदानेन मेघः, पर्वतो हि दुर्भिक्षादेः रक्षति। 'पुरु+ √'भुज'+ असु'। निघ० १.१०.६

२. पुरु अभ्यवहरति। बहुभिर्भुज्यते पाल्यते अभ्यवह्रियते वा। 'पुरु+ √'भुज'+ असु'। निघ० १.१०.६

पुरुष

१. पुरं यो ब्राह्मणो वेद यस्याः पुरुष उच्यते। 'पुर> पुरुष'। अथर्व० १०.२.२८.३०

२. इमे वै लोका पूरयमेव पुरुषो योऽयं (वायुः) पवते सोऽस्यां पुरि शेते, तस्मात्पुरुषः। √'पूर्'> पुर्', पुर्+ √'शी'। शत०ब्रा० १३.६.२.१

३. प्राण एष स पुरि शेते, स पुरि शेत इति पुरिशयं सन्तं प्राणं पुरुष इत्याचक्षते। 'पुर्+ √'शी'। गो०ब्रा० १.१.३९

४. स वाऽ अयं पुरुषं सर्वासु पूर्षु पुरिशयः। 'पुर्+ √'शी'। शत०ब्रा० १४.५.५.१८

५. पुरुषः पुरिषादः। 'पुर्+ √'सद्'। निरु० २.३

६. पुरिशयः। 'पुर्+ √'शी'। निरु० २.३

७. पूरयतेर्वा। पूरयत्यन्तरित्यन्तरपुरुषमभिप्रेत्य। √'पूर्' या √'पृ'। निरु० २.३

८. उदान उव पूर्णमा उदानेन ह्ययं पुरुषः पूर्यतऽ इव। √'पृ' या √'पूर्'। शत०ब्रा० ११.२.४.५–६

९. पुरुषः सर्वासु पूर्षु पुरिशयः। पुर्+ √'शी'। शत०ब्रा० १४.५.५.१८

१०. पुरः कुषन्। 'पुर+ कुषन्'। उणा० ४.७५

पुरुषाद

१. पुरुषादः, पुरुषानदनाय। 'पुरुष+ √'अद्'। निरु० २.६

पुरुषमेध

१. तस्य (पुरुषस्य वायोः) यदेषु लोकेष्वन्नं तदस्यान्नं मेधस्तद्यदस्यैतदन्नं मेधस्तस्मात् पुरुषमेधोऽथो यदस्मिन् मेध्यान् पुरुषानालभते तस्माद्वेव पुरुषमेधः। 'पुरुष+ मेध'। शत०ब्रा० १३.३.६.१

२. पुरुषं वै देवाः पशुमालभन्त तस्मादालब्धान्मेध उदक्रामत् सोऽश्वं प्राविशत्। 'पुरुष+ मेध'। ऐ०ब्रा० २.८

पुरुहूत

१. हुवे नु शक्रं पुरुहूतमिन्द्रमिदं हविर्मघवा वेत्विन्द्रः। 'पुरु+ √' ह्वेञ्'। सा०पू० ३.११.२

पुरूरवस्

१. पुरूरवा बहुधा रोरूयते। 'पुरु+ √'रु'। निरु० १०.४६

पुरोगाः

१. पुरोगाः, पुरोगामी। 'पुरस्+ √'गम्'। निरु० ८.२१

पुरोडाश

१. त (देवाः) एतान् पुरोडाशाँ अपश्यꣳस्ताननुसेवनं निरवपꣳ स्तैः पुरोऽदृꣳहन्, सवनानि वाव ते पुरोऽकुर्वत, यत् पुरोऽदृꣳहꣳस्तत् पुरोडाशानां पुरोडाशत्वम्। 'पुरस्+√'दृंह्'। काठ० २९.१, कपि०सं० ४५.२

२. पुरो वा एतान देवा अक्रत यत्पुरोडाशस्तत् पुरोडाशानां पुरोडाशत्वम्। 'पुरस्+√'कृ'। ऐ०ब्रा० २.२३

३. स (कूर्मरुपेणाच्छत्र पुरोडाशः) वा एभ्यः (मनुष्येभ्यः) तत्पुरोऽदशयत्। य एभ्यो यज्ञं प्रारोचयत्तस्मात् पुरोदाशः पुरोदाशो ह वै नामैतद्यत्पुरोडाश इति। 'पुरस्+√'दंश्' या √'दाश्'। शत०ब्रा० १.६.२.५

पुरोरुच्

१. अथ वै पुरोरुगसावेव योऽसौ (सूर्यः) तपत्येष हि पुरस्तस्माद् रोचते। 'पुरस्+√'रुच्'। कौ०ब्रा० १४.४

२. तं (यज्ञं) पुरोरुग्भिः (देवाः) प्रारोचयन्, यत्पुरोरुग्भिः प्रारोचयंस्तत्पुरोरुचां पुरोरुक्त्वम्। 'पुरस्+√'रुच्'। ऐ०ब्रा० ३.९.(तु०, शत०ब्रा० ३.९.३.२८)

पुरोहित

१. प्रथमः पुरोहितमिति पुर एव वा एनमेतद् दधते। 'पुरस्+√'धा'। जै०ब्रा० ३.६३

२. पुरोहितः पुर एनं दधाति। 'पुरस्+√'धा'। निरु० २.१२

पुलकाम

१. पुलुकामः पुरुकामः। 'पुरु+ काम'। निरु० ६.४

पुष्कर

१. इन्द्रो वृत्रꣳहत्वा नास्तृषीति मन्यमानोऽपः प्राविशत्ता अब्रवीद् बिभेमि वै पुरं मे कुरुतेति स योऽपाꣳरस आसीत् तमूर्ध्वꣳसमुदौहंस्तामस्मै पुरमकुर्वंस्तद्यदस्मै पुरमकुर्वंस्तस्मात् पुष्करं पुष्करꣳ ह वै तत्पुष्करमित्याचक्षते परोऽक्षम्। 'पुर्+√'कृ'। शत०ब्रा० ७.४.१.१३

२. पुष्करमन्तरिक्षं पोषति भूतानि, उदकं पुष्करं पूजाकरं पूजयितव्यं वा। √'पुष्'। निरु० ५.१४

३. इदमपीतरत्पुष्करमेतस्मादेव पुष्करं वपुष्करं वा। 'वपुस्+√'कृ'। निरु० ५.१४

४. पुष्करम् (अन्तरिक्षम्)। √'पुष' पुष्टौ'। पोषयति भूतानि अवकाशप्रदानेन उदकदानाद्युपकारेण च। √'पुष्'+ करन्'। निघ० १.३.१३

५. पुष्कं वारि राति पुष्करम् — इति क्षीरस्वामी। 'पुष्क+√'रा'+ क'। निघ० १.३.१३

६. यद्वा, वपुरित्युदकनाम। तत्कर्तुं शीलमस्य। वपुष्करं सद् वकारलोपेन पुष्करम्। 'वपुस्+√'कृ'+ ट'। निघ० १.३.१३

७. पुषः कित्। √'पुष्'+ करन्'। उणा० ४.४

पुष्ट

१. पुष्टेषु पोषेषु। √'पुष्'। निरु० १३.४

पुष्टि

१. वसो **पुष्टिं** न **पुष्यसि**। √'पुष्'। ऋ० ६.२.१, सा०पू० १.९.४

पुष्प

१. पुष्पं पुष्पतेः। √'पुष्प्'। निरु० ५.१४

पूतीक

१. इन्द्रो वृत्राय वज्रमुदयच्छत्। स यत्र यत्र पराक्रमत तन्नाध्रियत। सोऽब्रवीत्। ऊतिर्वै मे धा इति। तदूतिकानामूतिकत्वम्। यदूतीका भवन्ति। यज्ञायैवोतिं दधति। 'ऊति (√'अव्')> ऊतीक> पूतीक'। तै०आ० ५.२.९,१०

२. तस्य (सोमस्य) ये ह्रियमाणस्याꣳशवः परापतꣳस्ते पूतीका अभवन्। √'पत्'। ता०ब्रा० ८.४.१

३. गायत्री सोममाहरत्तस्या अनुविसृज्य सोमरक्षि पर्णमच्छिनत्तस्य योꣳशुः परापतत् स पूतीकोऽभवत् तस्मिन् देवा ऊतिमविन्दन्नूतिको वा एष यत्पूतीकानभिषुण्वन्त्यूतिमेवास्मै विन्दन्ति। √'पत्'+ 'ऊति > पतूतीक> पूतीक'। ता०ब्रा० ९.५.४

४. तस्य (सोमाहरणागतस्य गायत्रीरुपस्य श्येनस्य) सोमरक्षिरनुविसृज्य नखमच्छिनत्, ततो योऽꣳशुरमुच्यत, स पूतिकोऽभवदूतिका वै नामैते, यदूतीकानभिषुण्वन्त्यूतिमेव यज्ञाय कुर्वन्ति। 'ऊतीका> पूतीका'। काठ० ३४.३

पूरु

१. विश्वानि **पूरोरप पर्षि** वह्निः। √'पृ'। ऋ० १.१२९.५

२. पूरवः पूरयितव्याः। √'पूर्' या √'पॄ'। निरु० ७.२३

३. पूरवः (मनुष्याः)। √'पूरीँ आप्यायने'। पूरयितव्या कामानाम्। पूताः शुद्धाः स्नानार्थिभिरित्यर्थः। √'पूर्'+ उ'। निघ० २.३.२०

पूर्ण

१. पूर्णम् (उदकम्)। √'पॄ' पालनपूरणयोः रक्षितं सेत्वादिना, तदर्थिभिः पूरितं वा कटहादिषु। √'पॄ'+ क्त'। निघ० १.१२.७५

२. यद्वा, √'पूरीँ आप्यायने'। उपभोगक्षीणं आप्यायितम्। √'पूर्'+ क्त'। निघ० १.१२.७५

पूर्ति

१. दैवीं **पूर्तिर्**दक्षिणा देवयज्या न कवारिभ्यो नहि ते **पृणन्ति**। √'पॄ'। ऋ० १०.१०७.३

पूर्वथा

१. पूर्वथा पूर्व इव। 'पूर्व+ थाल्'। निरु० ३.१६

पूर्ववाह

१. न्याहवनीयो गार्हपत्यमकामयत। नि गार्हपत्य आहवनीयम्। तौ विभाजं नाशक्नोत्। सोऽश्वः पूर्व्ववाड् भूत्वा प्राञ्चं पूर्वमुदवहत्। तत्पूर्व्ववाहः पूर्त्ववाट्त्वम्। 'पूर्व+ √'वह्'। तै०सं० १.१.५.६

पूर्व्य

१. पूर्व्यम् (पुराणम्)। √'पूर्वं पूरणे'। वयः प्रवृत्तिं पूरयतीति, पूर्वस्मिन् काले भवं पूर्व्यम्। √'पूर्व'+ अच्> पूर्व, पूर्व+ यत्> पूर्व्य'। निघ० ३.२७.५

पूषन्

१. पूषाऽपोषयत्। √'पुष्'। तै०सं० १.६.२२

२. स शौद्रं वर्णमसृजत पूषणमियं (पृथिवी) वै पूषेयꣳ हीदꣳ सर्वं पुष्यति यदिदं किंच। √'पुष्'। शत०ब्रा० १४.४.२.२५

३. अयं वै पूषा योऽयं पवतऽएष हीदꣳ सर्वं पुष्यति। शत०ब्रा० १४.२.१.९

४. पूषा पिष्टभाजन इति। √'पिष्'। गो०ब्रा० २.१.२

५. यद्रश्मिपोषं पुष्यति तत्पूषा भवति। √'पुष्'। निरु० १२.१६

६. पूषा (पृथिवी)। √'पुष् पुष्टौ'। पुष्यति धान्यादिभिः समृद्धा भवति। पोषयति वान्नैः प्रजाः। √'पुष्'+ कनिन्'। निघ० १.१.१९

७. 'सर्वार्थपोषणात् पूषा' इति भट्टभास्करमिश्रः। √'पुष्'+ कनिन्'। निघ० १.१.१९

८. यद्वा, √'पुष् धारणे'। धारयति सर्वाणि भूतानि पोषयत्याभरणानीति। √'पुष्'+ कनिन्'। निघ० १.१.१९

९. पूषा पोषयतीति तस्य प्रत्यक्षं रूपम्— इति माधवः। √'पुष्'+ कनिन्'। निघ० १.१.१९

पृक्ष

१. पृक्ष (अन्नम्)। √'पृचीँ सम्पर्के'। सम्पृक्तं हि तज्ज्ञातृभिः। √'पृच्'+ क्विप्'। निघ० २.७.५

२. पृञ्चतिर्दानार्थ इति वा। √'पृञ्'+ क्विप्'। निघ० २.७.५

३. पृक्षे (सङ्ग्रामः)। √'पृचीँ सम्पर्के'। सम्पृचन्तेऽस्मिन् परस्परं योद्धारः। √'पृच्'+ स'। निघ० २.१७.३३

पृच

१. वस्वीरु षु वां भुजः **पृञ्चन्ति** सु वां **पृचः**। √'पृच्'। ऋ० ५.७४.१०

पृतना

१. पृतनाः (मनुष्याः)। √'पृङ् व्यायामे'। व्याप्रियन्तेऽत्र योद्धारः। √'पृ'+ तनन्'। निघ० २.१७.१८

पृतनाज

१. पृतनाजम्, पृतनाजितम्। 'पृतना+ √'जि'। निरु० १०.२८

पृतनाजित्

१. यत्पृतनामजयंस्तत्पृतनाजितः पृतनाजित्त्वम्। जयति पृतनां द्विषन्तं भातृव्यं य एवं वेद। 'पृतना+ √'जि'। जै०ब्रा० २.९१

२. तदेतत्पृतनाजिदेव सूक्तं यन्मरुत्वतीयमेतेन हेन्द्रः पृतना अजयत्। 'पृतना+ √'जि'। कौ०ब्रा० १५.३

पृतनाज्य

१. पृतनाज्यमिति सङ्ग्रामनाम, पृतनानामजनात्। 'पृतना+ √'अज्'। निरु० ९.२४

२. जयनाद्वा। 'पृतना+ √'जि'। निरु० ९.२४

३. पृतनाज्यम् (सङ्ग्रामः)। पृतनाशब्दोपपदाद् अञ्जतेः। पृतनानां सेनानामजनं यत्र। *'पृतना+ √'अञ्ज्'+ यत्'*। निघ० २.१७.९

पृतनाषाट्

१. अयमग्निः पृतनाषाट् सुवीरो येन देवा असहन्त दस्यून्। *'पृतना+ √'षह्'*। अथर्व० ११.१.२

पृत्सु

१. पृत्सु (सङ्ग्रामः)। पृतनाशब्दश्च सङ्ग्रामनामसु पठितोऽपि विकृतत्वात् पुनः पाठः। *'पृतना> पृत्'*। निघ० २.१७.२१

२. पदादिषु मांस्पृत्स्नूनामुपसंख्यानम्। *'पृतना स्थाने 'पृत्' आदेशः'*। अष्टा०वा० ६.१.६३

पृथक्

१. पृथक् प्रथतेः। √*'प्रथ्'*। निरु० ५.२५

पृथिवी

१. स धारयत्**पृथिवीं पप्रथच्च**। √*'प्रथ्'*। ऋ० २.१५.२

२. अन्तादिवः **पप्रथ** आ **पृथिव्याः**। √*'प्रथ्'*। ऋ० ३.६१.४

३. **प्रथिष्ट** यामन्पृथिवी चिदेषाम्। √*'प्रथ्'*। ऋ० ५.५८.७

४. **अप्रथतं पृथिवीं** मातरं वि। √*'प्रथ्'*। ऋ० ६.७२.२

५. तत्**पृथिवीमप्रथयः**। √*'प्रथ्'*। ऋ० ८.८९.५, सा०पू० ६.२.७, सा०उ० ३०.१४२९

६. **अप्रथयन्पृथिवीं** मातरं वि। √*'प्रथ्'*। ऋ० १०.६२.३

७. द्यावा **पृथिवी अप्रथेताम्**। √*'प्रथ्'*। ऋ० १०.८२.१

८. **प्रथस्वती प्रथस्व पृथिव्य**सि। √*'प्रथ्'*। यजु० १३.१७

९. **पृथु प्रथमानं पृथिव्याम्**। √*'प्रथ्'*। यजु० २९.४

१०. **पृथिवी** नः **प्रथतां** राध्यतां नः। √*'प्रथ्'*। अथर्व० १२.१.२

११. मन्ये वां द्यावा**पृथिवी** सुभोजसौ ये **अप्रथेथाम्**। √*'प्रथ्'*। सा०पू० ६.४.८

१२. प्रथेः षिवन्षवन्ष्वनः संप्रसारणं च। √*'प्रथ्'+ षिवन्'*। उणा० १.१५०

१३. अप्रथत पृथिवी। √*'प्रथ्'*। तै०सं० २.१.२.३

१४. तामप्रथयत् सा पृथिव्यभवत्। √*'प्रथ्'*। शत०ब्रा० ६.१.१.१५, ३.७

१५. यदप्रथत तत्पृथिवी। √*'प्रथ्'*। काठ० ८.२

१६. स (प्रजापतिः) वराहो रूपं कृत्वोपन्यमज्जत्। स पृथिवीमध आर्च्छत् तस्य उपहत्योदमज्जत्, तत्पुष्करपर्णेऽप्रथयत् यदप्रथयत् तत्पृथिव्यै पृथिवीत्वम्। √*'प्रथ्'*। तै०सं० १.१.३.६,७

१७. साऽप्रथत, सा पृथिव्यभवत्, तत्पृथिव्यै पृथिवीत्वम्। √*'प्रथ्'*। तै०सं० ७.१.५.१

१८. यद् (प्रजापतिः) अप्रथयत् तस्मात् पृथिवी। √*'प्रथ्'*। जै०ब्रा० ३.३१८

१९. प्रथनात् पृथिवीत्याहुः। √*'प्रथ्'*। निरु० १.१२

२०. प्रथनात् पृथिवीत्याहुः। ....अथ वै दर्शनेन पृथुः। अप्रथिता चेदप्यन्यैः। √*'प्रथ्'*। निरु० १.१३

२१. पृथिव्याः प्रथनकर्मणाम्। √*'प्रथ्'*। निरु० १४.१२

२२. पृथिवी (अन्तरिक्षम्)। √*'प्रथ् प्रख्याने'*। प्रथते पृथिवी। √*'प्रथ्'+ ष्विन्+ ङीष्'*। निघ० १.३.९

पृथु

१. स देवो देवान् प्रति **पप्रथे पृथु**। √*'प्रथ्'*। ऋ० २.२४.११

२. दीर्घं **पृथु पप्रथे** सद्म **पार्थिवम्**। √*'प्रथ्'*। ऋ० ५.८७.७

३. **पृथु प्रथमानं पृथिव्याम्**। √*'प्रथ्'*। यजु० २९.४

४. प्रथिम्रदिभ्रस्जां सम्प्रसारणं सलोपश्च। √*'प्रथ्'+ कु'*। उणा० १.२८

पृथुज्रय

१. पृथुज्रयाः पृथुजवः। *'पृथु+ √'जु'*। निरु० ५.९

पृथुष्टुका

१. स्तुकः स्त्यायतेः सङ्घातः। *'पृथु+ √'स्त्या'*। निरु० ११.३२

२. पृथुकेशस्तुके पृथुष्टुके वा। *'पृथु+ √'स्तु'*। निरु० ११.३२

पृथ्वी, पृथिवी

१. स धारयत्**पृथिवीं पप्रथच्च**। √*'प्रथ् विस्तारे'*। ऋ० १.१०३.२

२. पृथ्वी (भूमिः)। √*'प्रथ् प्रख्याने'*। प्रथतेऽसाविति पृथुः। पृथ्वी विस्तीर्णेत्यर्थः। √*'प्रथ्'+ कु+ ङीष्'*। निघ० १.१.११

३. यद्वा, अन्तर्भावितण्यर्थात् प्रथतेः। ब्रह्मणा पूर्वमेव विस्तारितेत्यर्थः। √*'प्रथ्'+ कु+ ङीष्'*। निघ० १.१.११

४. पृथुना राज्ञा अवतारिता पृथ्वी— इति क्षीरस्वामी। 'पृथु+ ङीष्'। निघ० १.१.११

५. पृथ्वी (द्यावापृथिवी)। व्याख्यातं पृथिवीनामसु। प्रथिता विस्तारिता ब्रह्मणा सृष्टिकाले। 'पृथु+ ङीष्'। निघ० ३.३०.२०

पृश्नि

१. पृश्निरादित्यो भवति। प्राश्नुतं एनं वर्णा इति नैरुक्ताः। प्र+ √'अश्'। निरु० २.१४

२. संस्प्रष्टा रसान्। संस्प्रष्टा भासं ज्योतिषाम्। संस्प्रष्टो भासेति वा। √'स्पृश्'। निरु० २.१४

३. पृश्निः। प्रपूर्वादश्नोतेः। प्राश्नुत एनं शुक्लो वर्णः। 'प्र+ √'अश्'+ नि'। निघ० १.४.२

४. स्पृशतेर्वा। संस्पृष्टा रसान्। संस्पृष्टा भासं ज्योतिषामस्पृष्टो भासेति वा पृश्निरादित्यः। √'स्पृश्+ नि'। निघ० १.४.२

५. घृणिपृश्निपार्ष्णिचूर्णिभूर्णयः। √'स्पृश्'+ नि'। उणा० ४.५३

पृश्निगर्भ

१. पृश्निगर्भाः प्राष्टवर्णगर्भाः। 'प्र+ √'अश्'+ गर्भ'। निरु० १०.३९

पृषती

१. पृषत्यः (आदिष्टोपयोजनानि)। √'पृषु' सेचने। प्रावृषि सर्वतः पृषत्यो विचित्रा मेघमाला मरुताम्। √'पृष्' (निपातनात्)= पृषत्, पृषत्+ ङीष्'। निघ० १.१५.६

पृष्ठ्य

१. यद् (आङ्गिरसः स्वर्गं लोकम्) अभ्यस्पृशन्त तस्मात् पृश्यस्तं वा एतं स्पृशं सन्तं पृष्ठ्य इत्याचक्षते परोक्षेण। √'स्पृश्'= पृष्ठ्य। गो०ब्रा० १.४.२३

पृष्ठ

१. ते देवा एतं संवत्सरश्रममपश्यस्तेनैनदभ्याश्राम्यं-स्तदूर्ध्वमुपश्रयत, तद्दिविस्पृष्टमतिष्ठत् यद्दिविस्पृष्टमतिष्ठत् तत्स्पृष्टानां स्पृष्टत्वम्, स्पृष्टानि ह वै नामैतानि, तानि पृष्ठानीति परोक्षमाख्यायन्ते। √'स्पृश्'+ क्त> स्पृष्ट> पृष्ठ। जै०ब्रा० ३.११७

२. पृष्ठं स्पृशतेः, संस्पृष्टमङ्गैः। √'स्पृश्'। निरु० ४.३

३. तिथपृष्ठगूथयूथप्रोथाः। √'पृष्'+ थक् (निपातनात्)। उणा० २.१२

पृष्ठ्य

१. अयमेव स्पृष्ट्यो योऽयं (वायुः) पवते। एतेन हीदं सर्वं स्पृष्टम्। स्पृष्ट्यो ह वै नामैषः। तं पृष्ठ्य इति परोक्षमाचक्षते। सर्वान् कामान् स्पृशति य एवं वेद। √'स्पृश्' > स्पृष्ट्य> पृष्ठ्य'। जै०ब्रा० २.३१

२. सर्वैः पृष्ठ्यैः (आङ्गिरसाः) स्वर्गं लोकमभ्यस्पृशन्त यदभ्यस्पृशन्त तस्मात् स्पृश्यस्तं वा एतं स्पृश्यं सन्तं पृष्ठ्य इत्याचक्षते परोक्षेण। √'स्पृश्'> स्पृश्य> पृष्ठ्य'। गो०ब्रा० १.४.२३

पेय

१. **पीपाय** स्वादू रसो मधु**पेयो** वराय। √'या'। ऋ० ६.४४.२१

पेरु

१. **प्रीणन्ति** तं नरो हितमव मेहन्ति **पेरवः**। √'प्री'। ऋ० ९.७४.४

पेशस्

१. पेश इति रूपनाम, पिंशतेर्विपिंशतं भवति। √'पिंश्'। निरु० ८.११

२. पेशः (हिरण्यम्)। √'पिश' गतौ'। अय इत्यनेन समानार्थम्। √'पिश्'+ असुन्'। निघ० १.२.६

३. पेशः (रूपम्)। व्याख्यातं हिरण्यनामसु। पेशसः पिष्टवदर्थः। √'पिश्'+ असुन्'। निघ० ३.७.११

पैजवन

१. पैजवनः पिजवनस्य पुत्रः। 'पिजवन> पैजवन'। निरु० २.२४

पैद्व

१. पैद्वः (अश्वः)। √'पद' गतौ। पद्यते गच्छति, पद्यतेऽनेनेति वा। पदैः पैद्वो गतिक्रियायाम्—इति माधवः। √'पद्'+ व'। निघ० १.१४.११

पोता

१. **पवमानः** सो अद्य नः **पवित्रेण** विचर्षणिः। यः **पोता** स **पुनातु** नः। √'पू'। ऋ० ९.६७.२२, यजु० १९.४२

२. यत्तस्यामेव होत्रायां वायुभूतं पुनन्तस्तुवन्तः शंसन्तस्तिष्ठंस्तत् पोताऽभवत् पोतुः पोतृत्वम्। √'पू'। गो०ब्रा० १.२.१९

पोत्र

१. मरुत: पिबत ऋतुना **पोत्रात्** यज्ञं **पुनीतन**। √'पु'। ऋ० १.१५.२

पोष

१. सहस्रपोषं **पुषेयम्**। √'पुष्'। यजु० २.२६

२. ऋचां त्व: **पोषमास्ते पुपुष्वान्**। √'पुष्'। ऋ० १०.७१.११

पौंस्य

१. पौंस्यानि (बलम्)। √'पुंसि' अभिवर्द्धने'। √'पुंस्'+ यत् *(निपातनात्)*। निघ० २.९.२४

२. पौंस्ये (सङ्ग्राम:)। बलनामसु व्याख्यातम्। अभिवर्द्धतेऽनेन। √'पुंस्'+ यत् *(निपातनात्)*। निघ० २.१७.४०

पौरुमद्ग या पौरुमुद्ग

१. तद्यत् (देवा असुरान्) पूर्वेऽमज्जयंस्तद्वेव पौरुमुद्गस्य पौरुमुद्गेत्वम्। *'पूर्व+* √'*मस्ज्*'> *पुरस्+ मुद्ग> पौरुमुद्ग*'। जै०ब्रा० ३.४३

२. देवाश्च वासुराश्चास्पर्द्धन्त ते देवा असुराणां पौरुमद्गेन पुरोऽमज्जयन् यत् पुरोऽमज्जयंः स्तस्मात् पौरुमद्गम्। *'पुरस्+* √'*मस्ज्*'> *पुरस्+ मुद्ग> पौरुमुद्ग*'। ता०ब्रा० १२.३.१४

पौरुहन्मन

१. ते देवा अकामयन्त पूर्वमेवासुरान् हन्यामेति। त एतत् सामापश्यन्। तेनास्तुवत। तेनासुरान् पूर्वेऽघ्नन्। तद्यत् पूर्वेऽघ्नन् तद्वेव पौरुहन्मनस्य पौरुहन्मनत्वम्। *'पूर्व+* √'*हन्*'। जै०ब्रा० ३.२१५

२. यद् उ पुरुहन्मा वैखानसोऽपश्यत् तस्मात् पौरुहनमनमित्याख्यायते। *'पुरुहन्मन्> पौरुहन्मन्*'। जै०ब्रा० ३.२१५

पौर्णमासी

१. एष एव पूर्णमा यच्चन्द्रमा एतस्य ह्यनुपूरणं पौर्णमासीत्याचक्षते। *'पूर्णमा> पौर्णमासी*'। शत०ब्रा० ११.२.४.१,२

२. तं (चन्द्रमसं) देवा यागत आप्यायित:। पुनरप्याप्याययन्त स पूर्ण: पौर्णमासीमुपावसत् तत् पौर्णमास्या: पौर्णमासीत्वम्। *'पूर्ण+* √'*वस्*'। काठ०संक० २३.१०

प्र

१. प्राणो वै प्र, प्राणं हीमानि सर्वाणि भूतान्यनुप्रयन्ति। *'प्राण> प्र*'। ऐ०ब्रा० २.४०

२. प्रे (प्र+इ) ति पशवो वितिष्ठन्तऽ ए (आ+इ)ति समावर्तन्ते। *'प्र+* √'*इ*'। शत०ब्रा० १.४.१.६

३. प्रे (प्र+इ) ति च वा इदं सर्वम्, ए (आ+इ) ति च। *'प्र+* √'*इ*'। जै०ब्रा० १.१८०

४. प्रे (प्र+इ) ति वै प्राण ए (आ+इ) ति उदान:। *'प्र+* √'*इ*'। शत०ब्रा० १.४.१.५

५. प्रे (प्र+इ) ति वै रेत: सिच्यतऽ ए (आ+इ) ति प्रजायते। *'प्र+* √'*इ*'। शत०ब्रा० १.४.१.६

प्रकलविद्

१. प्रकलविद् वणिग् भवति। कलाश्च वेद प्रकलाश्च। *'प्र+ कला+* √'*विद्*'। निरु० ६.६

प्रक्ष

१. तस्य (पशो:) शिरश्छित्त्वा (देवा:) मेघं प्राक्षारयन्त्स प्रक्षोऽभवत् तत्प्रक्षस्य प्रक्षत्वम्। *'प्र+* √'*क्षर्*'। तै०सं० ६.३.१०.२

प्रगाथ

१. स यदिदं सर्वमभिप्रागाद् यदिदं किञ्च तस्मात् प्रगाथास्तस्मात् प्रगाथा इत्याचक्षत एतमेव (प्राणं) सन्तम्। *'प्र+* √'*गा*'। ऐ०आ० २.२.२

२. तद् यद् (देवा:) गाथायै रसं प्रावृहन्त, तत् प्रगाथस्य प्रगाथत्वम्। *'प्र+ गाथा*'। जै०ब्रा० ३.४१

३. तद् यद् (ऋग्) गाथायै रसं प्रावृहत, तद्व एव प्रगाथस्य प्रगाथत्वम्। *'प्र+ गाथा*'। जै०ब्रा० ३.४१

प्रचेतन

१. प्रचेतन प्रचेतयेन्द्र द्युम्नाय न इषे। *'प्र+* √'*चित्*'। साम०महा० २

प्रजनन

१. प्रजननेनैवेमा: प्रजा: (प्रजापति:) ससृजे........ तस्माद्धिमा: प्रजा: प्रजननेनैव प्रजायन्ते। *'प्र+* √'*जन्*'। का०शत०ब्रा० ३.१.१२.१०

प्रजा

१. इमा: **प्रजा** अजनयन्मनूनाम्। √'जन्'। ऋ० १.९६.२

२. पुपोष **प्रजा: पुरुधा जजान**। 'पुरु+ √'जन्'। ऋ० ३.५५.१९

३. **जनयन्प्रजा** भुवनस्य राजा। √'जन्'। ऋ० ९.९७.४०

४. **प्रजां जनयतु प्रजापति:**। √'जन्'। ऋ० १०.८५.४३

५. **प्रजायस्व प्रजया** पुत्रकाम:। 'प्र+ √'जन्'। ऋ० १०.१८३.१

६. **प्र जायस्व प्रजया** पुत्रकामे। 'प्र+ जन्'। ऋ० १०.१८३.२

७. अहं **प्रजा अजनयं** पृथिव्याम्। √'जन्'। ऋ० १०.१८३.३

८. सुप्रजा: **प्रजा: प्रजनयन्** परीहि। 'प्र+ √'जन्'। यजु० ७.१८

९. येन **प्रजा** विश्वकर्मा **जजान**। √'जन्'। यजु० १३.४५

१०. **प्रजापतिर्जनयति प्रजा** इमा:। √'जन्'। अथर्व० ७.१९.१

११. इह **प्रजा जनय** पत्ये अस्मै। √'जन्'। अथर्व० १४.२.२४, ३१

१२. आवां **प्रजां** जनयतु **प्रजापति:**। √'जन्'। अथर्व० १४.२.४०

१३. ताविह सं भवाव **प्रजामा जनयावहै**। √'जन्'। अथर्व० १४.२.७१

१४. स **प्रजापति:** सुवर्णमात्मन्नपश्यत् तत् **प्राजनयत्**। 'प्र+ √'जन्'। अथर्व० १५.१.२

१५. तस्मात्पश्चाद् वरीयस: प्रजननादिमा: प्रजा: प्रजायन्ते। 'प्र+ √'जन्'। शत०ब्रा० ३.५.१.११

१६. प्रजा: (अपत्यम्)। प्रपूर्वात् √'जन्'। 'प्र+ √'जन्' + उ'+ टाप्> प्रजा'। निघ० २.२.१४

प्रजापति

१. प्रजापति: प्रजानां प्रजनयिता। 'प्र+ √'जन्'+ पति'। जै०ब्रा० २.३८८

२. तपो वै तप्त्वा प्रजापतिर्विधायात्मानं मिथुनं कृत्वा प्रजया च पशुभिश्च प्राजायत। 'प्र+ √'जन्'+ पति'। मै०सं० १.९.६

३. प्रजननं प्रजापति:। 'प्र+ √'जन्'+ पति'। शत०ब्रा० ५.१.३.१०.(तु०जै०ब्रा० २.१४७)

४. तद्यदब्रवीत् प्रजापत्ते: प्रजा: सृष्ट्वा पालयस्वेति, तस्मात् प्रजापतिरभवत्, तत् प्रजापते: प्रजापतित्वम्। 'प्रजा+ √'पाल्'। गो०ब्रा० १.१.४

४. प्रजापति: प्रजानां पाता वा पालयिता वा। 'प्रजा+ √'पा' या √'पाल्'। निरु० १०.४२

५. प्रजापति: (यज्ञ:)। प्रजाशब्द: पतिशब्दश्च अपत्यनामसु कर्मनामसु च व्याख्यातौ। प्रजापतिर्वृष्ट्यादिहेतुत्वात्। 'प्रजा+ पति'। निघ० ३.१७.१४

प्रणीता

१. यदाप: प्राणयंस्तस्मादाप: प्रणीतास्तत् प्रणीतानां प्रणीतत्वम्। 'प्र+ √'नी'। शत०ब्रा० १२.९.३.८

प्रणोद

१. ऋचा कपोतं नुदत **प्रणोदमिषम्**। √'नुद्'। ऋ० १०.१६५.५

प्रतद्वसु

१. प्रतद्वसु, प्राप्तवसु। 'प्र+ √'आप्'+ क्त+ वसु'। निरु० ६.२१

प्रतर

१. **प्र** तार्यग्ने **प्रतरं** न आयु:। 'प्र+ √'तॄ'। ऋ० ४.१३.६, १०.१२६.८

प्रतिगर

१. गृणाति ह वाऽ एतद्धोता यच्छंसति। तस्मा एतद् गृणते प्रत्यवाध्वर्युरागृणाति तस्मात् प्रतिगरो नाम। 'प्रति+ √'गॄ' शब्दे'। शत०ब्रा० ४.३.२.१

प्रतिधा

१. प्रतिधा, प्रतिधानेन। 'प्रति+ √'धा'। निरु० ५.११

प्रतिधुक्

१. तस्य (इन्द्रस्य) प्रतिधुक् प्रातस्सवनेऽवानयत्, प्रतीव वा अनेनाऽधायीति तस्मात् प्रतिधुक्। 'प्रति+ √'धा'। जै०ब्रा० २.१५७

२. यत् (इन्द्रस्येन्द्रियं वीर्यं पशव:) प्रत्यदुहन्, तत् प्रतिधुष: प्रतिधुक्त्वम्। 'प्रति+ √'दुह्'= प्रतिधुष्= प्रतिधुक्'। तै०सं० २.५.३.३

प्रतिमा

१. असौ वै लोकः प्रतिमैष ह्यन्तरिक्षलोके प्रतिमित इव। *'प्रति+* √*'मा'*। शत०ब्रा० ८.३.३.५

प्रतिमान

१. प्रतिमानानि................यैरेनं प्रतिमिमते। *'प्रति+* √*'मा'*। निरु० ५.१२

प्रतिरव

१. प्राणो वै प्रतिरवाः प्राणान् हीदꣳसर्वं प्रतिरतम्। *'प्रति+* √*'रम्'*। शत०ब्रा० १४.२.२.३४

प्रतिराध

१. ता वै प्रतिराधैः प्रत्यराध्नुवन्। तद्यत्प्रतिराधैः प्रत्यराध्नुवन् तस्मात्प्रतिराधास्तत्प्रतिराधानां प्रतिराधत्वम्। *'प्रति+* √*'राध्'*। गो०ब्रा० २.६.१३

प्रतिष्ठा

१. यो ह वै प्रतिष्ठां वेद प्रति ह तिष्ठत्यस्मिंश्च लोकेऽमुष्मिंश्च, चक्षुर्ह प्रतिष्ठा। *'प्रति+* √*'स्था'*। शा०आ० ९.२

२. प्रतिष्ठा त्रयस्त्रिंश इति पश्चात् त्रयस्त्रिꣳशद् देवता, देवतास्वेव प्रतितिष्ठन्ति। *'प्रति+* √*'स्था'*। काठ० २०.१३

३. प्रतिष्ठा (ह्रस्वः)। प्रतिपूर्वात् तिष्ठतेः'। प्रतितिष्ठति। *'प्रति+* √*'स्था'+ क'*। निघ० ३.२.५

प्रतिष्ठावती

१. यस्य प्रतिष्ठावतीः पश्चात्, प्रत्येव तिष्ठति। *'प्रतिः+* √*'स्था'*। तै०सं० ५.३.४.६

प्रतिष्ठिता

१. प्रतिष्ठिता वै स्थावराः (आपः)। पश्चादेव प्रतितिष्ठति। *'प्रति+* √*'स्था'*। तै०आ० १.२४.२

प्रतिहर्तृ

१. धेनुः प्रतिहर्तुः, प्रतीव३ ह्येषा (धेनुः) हरति, प्रतीव प्रतिहर्ता। *'प्रति+* √*'हृ'*। मै०सं० ४.४.८

प्रतीक

१. प्रतीकं प्रत्यक्तं भवति, प्रतिदर्शनमिति वा। *'प्रति+* √*'अञ्च्'*। निरु० ७.३१

प्रतीची

१. प्रतीची, प्रत्यक्ते। *'प्रति+* √*'अञ्च्'*। निरु० ८.१५

प्रतीच्य

१. प्रतीच्यम् (निर्णीतान्तर्हितम्)। प्रतिपूर्वात् चिनोतेः। *'प्रति+* √*'चि'+ य'*। निघ० ३.२५.५

प्रतूर्ति

१. संवत्सरो वाव प्रतूर्तिरष्टादशस्तस्य द्वादशमासाः पञ्चऽर्तवः संवत्सर एव प्रतूर्तिरष्टादशस्तद्यत्तमाह प्रतूर्तिरिति संवत्सरो हि सर्वाणि भूतानि प्रतरति। *'प्र+* √*'तॄ'*। शत०ब्रा० ८.४.१.१३

प्रत्न

१. प्रत्नः पुराणः। (*अर्थप्रदर्शनमात्रम्*)। निरु० १२.३१

२. प्रत्नम् (पुराणम्)। प्रात्। *'प्र+ तनप्+ न'*। निघ० ३.२७.१

३. नश्च पुराणे प्रात्। *'प्र+ तनप्+ न'*। अष्टा०वा० ५.४.२५

प्रत्नथा

१. प्रत्नथा प्रत्न इव। *'प्रत्न+ थाल् (अष्टा० ५.३.१११)*। निरु० ३.१६

प्रथम

१. एणं **प्रथमो अध्यतिष्ठत्**। √*'स्था'*। ऋ० १.१६३.२

२. प्रथम इति मुख्यनाम। प्रतमो भवति। *'प्र+ तमप्'*। निरु० २.२२

३. प्रथेरमच्। √*'प्रथ्'+ अमच्'*। उणा० ५.६८

प्रथा

१. घर्मोऽसि विश्वायुरुरु**प्रथा**ऽ उरु **प्रथस्वो**रु। ते यज्ञपतिः **प्रथताम्**। √*'प्रथ्'*। यजु० १.२२

२. उरु**प्रथाः प्रथमानं** स्योनम्। √*'प्रथ्'*। यजु० २०.३९

प्रधन

१. प्रधन इति सङ्ग्राम नाम। प्रकीर्णान्यस्मिन् धनानि भवन्ति। *'प्रकीर्ण+ धन> प्रधन'*। निरु० ९.२३

प्रधि

१. प्रधिः प्रहितो भवति। *'प्र+* √*'धा'+ कि'*। निरु० ४.२७

प्रपद

१. यत्प्रपदाभ्यां प्रापद्यत ब्रह्मेमं पुरुषं तस्मात् प्रपदे, तस्मात् प्रपद इतयाचक्षते। *'प्र+* √*'पद्'*। ऐ०आ० २.१.४

प्रपाण

१. अप: **सुप्रपाणे पिबन्ती:**। √'*पा*'। ऋ० ६.२८.७, अथर्व० ४.२१.७, ७.७५.१

प्रपित्व

१. प्रपित्वे प्राप्ते। '*प्र*+ √'*आप्*'+ *क्त*> *प्राप्त*> *प्रपित्व*'। निरु० ३.२०

प्रभर

१. प्रभरा, प्रहर। '*प्र*+ √'*हृ*'। निरु० ६.२०

प्रभृथ

१. प्रभृथस्य प्रभृतस्य। '*प्र*+ √'*भृ*'+ *क्त*'। निरु० ११.४९

प्रमगन्द

१. प्रमगन्दोऽत्यन्तकुसीदकुलीनः, मगन्दः कुसीदी, माङ्गदो मामागमिष्यतीति च ददाति, तदपत्यं प्रमगन्दः। '*माम्*+ *आ*+ √'*गम्*+ √'*दा*'। निरु० ६.३२

२. प्रमगन्दः प्रमदकः, योऽयमेवास्ति लोको न पर इति प्रेप्सुः। '*प्र*+ √'*मद्*'>*प्रमदक*> *प्रमेगन्द*'। निरु० ६.३२

प्रय

१. प्रयः (उदकम्)। √'*प्रीञ्* तर्पणे'। तृप्यन्तेऽनेन देवताः। √'*प्री*'+ *असुन्*'। निघ० १.१२.३७

२. यद्वा, प्रपूर्वात् यमतेः। प्रकर्षेण गच्छन्ति प्रयः। '*प्र*+ √'*यम्*'+ *असुन्*'। निघ० १.१२.३७

३. प्रयः (अन्नम्)। व्याख्यातमुदकनामसु। '*प्र*+ √'*यम्*'+ *असुन्*'। निघ० २.७.४

प्रयज्यु

१. कवि **कविमियक्षसि प्रयज्यो**। √'*यज्*'। यजु० ३३.५५

प्रया

१. **प्रयाभिर्यासि** दाश्वांसम्। √'*या*'। यजु० २७.२७

प्रयाज

१. ततो देवा अर्चन्तः श्राम्यन्तश्चेरुस्तऽ एतान् प्रयाजान् ददृशुस्तैरयजन्त तैर्ऋतून्त्संवत्सरं प्रयजन्नृतुभ्यः संवत्सरात्सपत्नानन्तरायँस्तस्मात् प्रजयाः, प्रज्या ह वै नामैतद्यत्प्रयाजा इति। '*प्र*+ √'*यज्* > *प्रजा*> *प्रयाज*'। शत०ब्रा० १.५.३.३

प्रयुत्

१. यद् (वसवः) इमान् लोकान् प्रायुवंस्तस्मादु हैते प्रयुतो नामापि स्तोमाः। '*प्र*+ √'*यु*'। जै०ब्रा० २.२०८

प्रवत्

१. प्रवत् इति अवतिर्गतिकर्मा। '*प्र*+ √'*अव्*'। निरु० १०.२०

प्रवत्वती

१. प्रवत्वति प्रवणवति। '*प्रवणवती*> *प्रवत्वती*'। निरु० ११.३७

प्रवय

१. प्रवयाः (पुराणम्)। प्रगतं वयो यस्य। वयः कालमात्रमत्र। '*प्र*+ *वय*'। निघ० ३.२७.३

प्रवर्ग्य

१. अथ यत् प्रावृज्यत तस्मात् प्रवर्ग्यः। '*प्र*+ √'*वृज्*'। शत०ब्रा० १४.१.१.१०

२. तं न सर्वस्मा ऽ इव प्रवृञ्ज्यात्। सर्वं वै प्रवर्ग्यः। '*प्र*+ √'*वृज्*'। शत०ब्रा० १४.२.२.४६

३. तस्य (यज्ञस्य) धनुर्विप्रमाणः शिर उदवर्तयत्। तद् द्यावापृथिवी अनु प्रावर्तत। यत्प्रावर्तत। तत्प्रवर्ग्यस्य प्रवर्ग्यत्वम्। '*प्र*+ √'*वृत्*'। तै०आ० ५.१.५

प्रवह्लिका

१. तद्यथाभिर्ह वै देवा असुराणां रसान् प्रववृहुस्तस्मात् प्रवह्लिकाः। तत्प्रवह्लिकानां प्रवह्लिकात्वम्। '*प्र*+ √'*वृह्*'। गो०ब्रा० २.६.१३

प्रवातेज

१. प्रवातेजाः प्रवणेजाः। 'प्रवण+√'ईज्'+घ>प्रवणेज >प्रवातेज अथवा प्रवणे√'जन्'। निरु० ९.८

प्रवास

१. एकया सह **प्र प्रवासेव वसतः**। '*प्र*+ √'*वस्*'। ऋ० ८.२९.८

प्रशस्ति

१. यं जनासो हविष्मन्तो मित्रं न सर्पिरासुतिमप्रशंसन्ति प्रशस्तिभिः। '*प्र*+ √'*शस्*'। ऋ० ८.७४.२, सा०उ० १५६५

प्रसाक्षते

१. प्रसाक्षते। साक्षतिराप्नोतिकर्मा। √'*साक्ष्*'। निरु० ११.२१

प्रसारण

१. प्राणो वै समञ्चन प्रसारणं यस्मिन् वाऽअङ्गे प्राणो भवति तत्संचाञ्चति प्र च सारयति। *'प्र+ √'सृ'*। शत०ब्रा० ८.१.४.१०

प्रसिति

१. प्रसितिः प्रसयनात्, तन्तुर्वा जालं वा। *'प्र+ √'सि'*। निरु० ६.१२

प्रस्कण्व

१. प्रस्कण्वः कण्वस्य पुत्रः, कण्वप्रभवो यथा प्राग्रम्। *'प्र(भवः)+ कण्व > प्रस्कण्व'*। निरु० ३.१७

प्राञ्च्

१. प्राङ्, प्राञ्चयति। *'प्र+ √'अञ्च्'*। निरु० १४.२३

प्राण

१. नमस्ते **प्राण प्राणते**। *'प्र+ √'अन्'*। अथर्व० ११.४.८

२. **प्राणो** ह सर्वस्येश्वरो यश्च **प्राणति** यच्च न। *प्र+ √'अन्'*। अथर्व० ११.४.१०

३. यच्च **प्राणति प्राणेन**। *'प्र+ √'अन्'*। अथर्व० ११.७.२३

४. एष (योऽयं दक्षिणेऽक्षन् पुरुषो मृत्युनामासः) उ एव प्राणः। एष हीमाः सर्वाः प्रजाः प्रणयति तस्यैते प्राणाः। *प्र+ √'नी'*। शत०ब्रा० १०.५.२.१४

५. एषा हीदं देवता सर्वं प्राणयत। तद्यत् प्राणयत तस्मात् प्राणः। *प्र+ √'नी'*। जै०ब्रा० ३.३७७

६. प्राणो हीदं सर्वं प्राणेत। तद्यत् प्राणेत तस्मात् प्राणः। *प्र+ √'नी'*। जै०ब्रा० २.५७

७. प्राणेन प्राणिति। *'प्र+ √'अन्'*। जै०ब्रा० १.२०

८. यद्वै प्राणेनान्नमात्मन्प्रणयते तत्प्राणस्य प्राणत्वम्। *प्र+ √'नी'*। शत०ब्रा० १२.९.१.१४

९. उद्यन्न खलु वा आदित्यः सर्वाणि भूतानि प्रणयति तस्मादेनं प्राण इत्याचक्षते। *'प्र+ √'नी'*। ऐ०ब्रा० ५.३१

१०. प्राणः प्रणीतानि ह भूतानि प्राणः प्रणीताः प्रणीतास्ते। *प्र+ √'नी'*। गो०ब्रा० १.२.११

११. प्राणो वै वायुः, प्राणमेव प्रीणाति। *√'प्री'*। गो०ब्रा० २.१.२६

१२. प्राणो वा आयतिः, प्राणमेव तेन प्रीणाति। *√'प्री'*। गो०ब्रा० २.२.३

प्राणभृत्

१. अङ्गानि प्राणभृन्त्यङ्गानि हि प्राणान् बिभ्रति। *प्राण+ √'भृ'*। शत०ब्रा० ८.१.३.१

२. अन्नं प्राणभृदन्नं हि प्राणान् बिभर्ति। *प्राण+ √'भृ'*। शत०ब्रा० ८.१.३.१

प्रातर्

१. तं देवाः प्राणयन्त स प्रणीतः प्रातायत प्रातायतीं३ तत्प्रातरभवत्। *'प्र+ √'नी'+ क्त> प्रणीत> प्रातर्'*। ऐ०आ० २.१.५

२. प्राततेररन्। *'प्र+ √'अत्'+ अरन्'*। उणा० ५.५९

प्रातरनुवाक

१. प्रातर्वै स (प्रजापतिः) तं देवेभ्योऽन्वब्रवीद् यत्प्रातरन्वब्रवीत् तत्प्रातरनुवाकस्य प्रातरनुवाकत्वम्। *प्रातर्+ अनु+ √'वच्'*। ऐ०ब्रा० २.१५

२. यदेवैनं प्रातरन्वाह तत्प्रातरनुवाकस्य प्रातरनुवाकत्वम्। *प्रातर्+ अनु+ √'वच्'*। कौ०ब्रा० ११.१

प्रायणीय

१. तद्यत् प्राणेत तस्मादप्येतत् प्रायणीयमहः। *'प्र+ √'नी'*। जै०ब्रा० २.५७

२. प्राण एव प्रायणीयः। *'प्र+ √'नी'*। काठ० ३४.६

३. प्रायणीयेन वा अह्ना देवाः स्वर्गं लोकं प्रायन् यत् प्रायंस्तत् प्रायणीयस्य प्रायणीयत्वम्। *'प्र+ √'इ'* *अथवा प्र+ √'अय्'*। ता०ब्रा० ४.२.२

५. स्वर्गं वा एतेन लोकं प्रयन्ति, यत् प्रायणीयं तत् प्रायणीयस्य प्रायणीयत्वम्। *'प्र+ √'इ'*। काठ० २३.७, कपि०सं० ३६.५.(तु०, ऐ०ब्रा० १.७)

६. प्रायणीयेन वा अह्ना देवा स्वर्गं लोकं प्रायन्। यत् प्रायंस्तत् प्रायणीयस्य प्रायणीयत्वम्। *'प्र+ √'इ'*। जै०ब्रा० २.३७७

७. पुरुषो वाव संवत्सरस्तस्य पादावेव प्रायणीयोऽतिरात्रः। पादाभ्यां हि प्रयन्ति। *'प्र+ √इ्'*। गो०ब्रा० १.५.३

८. पुरुषो वाव संवत्सरः, तस्य प्राण एव प्रायणीयोऽतिरात्रः प्राणेन हि प्रयन्ति। *'प्र+ √इ्'*। गो०ब्रा० १.५.४

१. तस्य प्राणऽएव प्रायणीयोऽतिरात्रः प्राणेन हि प्रयन्ति। *'प्र+ √'इ'*। शत०ब्रा० १२.२.४.१

प्रायणीयोदयनीय

१. प्राण एव पूर्वोऽतिरात्र उदान उत्तरः। तौ प्रायणीयोदयनीयाविति परोक्षमाचक्षते। *'प्राण> प्रायणीय, उदान> उदयनीय, प्रायणीय+ उदयनीय प्रायणीयोदयनीय'*। जै०ब्रा० ३.३१९

२. प्राणोदानावेव यत्प्रायणीयोदयनीये। *'प्राण+ उदान> प्राणोदान> प्रायणीयोदयनीय'*। कौ०ब्रा० १०.७.५

प्रावृष्

१. **अभ्यवर्षीत्तृष्यावतः प्रावृष्यागतायाम्।** *'प्र+ √'वृष्'*। ऋ० ७.१०३.३

प्रावेप

१. प्रावेपा, प्रवेपिणः। *'प्र+ आ+ √'वेप'+ अच्'*। निरु० ९.८

प्राशु

१. प्राशुः (क्षिप्रम्)। प्रकर्षाऽर्थोऽतिरिक्तः आशुशब्दात्। *'प्र+ आशु'*। निघ० २.१५.१७

प्रुष्व

१. **प्रुष्णते** स्वाहा शीकायते स्वाहा **प्रुष्वाभ्यः** स्वाहा। *√'प्रुष्'*। यजु० २२.२६

प्रेङ्ख

१. प्र प्रेङ्ख ईङ्खयावहै शुभे कम्। *'प्र+ ईङ्ख'*। ऋ० ७.८८.३

२. अयं वै प्रेङ्खो योऽयं (वायुः) पवते। एष ह्येषु लोकेषु प्रेङ्खत इति तत् प्रेङ्खस्य प्रेङ्खत्वम्। *'प्र+ ईङ्ख'*। ऐ०आ० १.२.३

प्रेति

१. यज्वानः सनकाः **प्रेतिमीयुः**। *√'इण्'*। ऋ० १.३३.४

प्रैष

१. यज्ञो वै देवेभ्य उदक्रामत् तं (देवाः) प्रैषैः प्रैषमैच्छन् तत्प्रैषाणां प्रैषत्वम्। *√'प्रेष् अथवा प्र+ √'इष्'*। ऐ०ब्रा० ३.९ (तु०तै०सं० २.२.८.५, शत०ब्रा० ३.९.३.२८)

प्लक्ष, प्रक्ष

१. तस्य मेधं प्लाक्षारयन् (देवाः) स प्लक्षोऽभवत्, तत् प्लक्षस्य प्लक्षत्वम्। *√'प्लुष्' (अस्पष्टम्)*। मै०सं० ३.१०.२

२. तस्यावाङ् मेधं पपात। स एष वनस्पतिरजायत तं देवाः प्रापश्यंस्तस्मात् प्रख्यः प्रख्यो ह वै नामैतत् यत् प्लक्षः। *'प्र+ √'ख्या' > प्रख्य> प्रक्ष'*। शत०ब्रा० ३.८.३.१२

३. प्लुषेरच्चोपधायाः। *√'प्लुष्+ स'*। उणा० ३.६३

प्सर

१. प्सरः (रूपम्)। √'स्फुर' स्फुलने'। स्फुरति हि तत्। *√'स्फुर्'+ असुन्'*। निघ० ३.७.१२

प्सु

१. प्सुः (रूपम्)। √'स्फुर' स्फुलने'। स्फुरति हि तत्। *√'स्फुर्+ डुन्'*। निघ० ३.७.७

फलिग

१. फलिग (मेघः)। √'फल'। प्रतिफलति तत् फलम्। तदस्मिन्नस्तीति फलि स्वच्छमुदकं तद्गच्छन्त्याधारत्वेन मेघो वर्षिष्यमाणं पर्वतो हि वृष्टमिति विशेषः। *√'फल्'+ इन्+ √'गम्'+ ड'*। निघ० १.१०.१७

२. यद्वा, फलवत्= स्नानपानादिप्रयोजनवत् उदकं फलि, तद्गच्छतीति पूर्ववत्। *√'फल्+ इनि+ √'गम्'+ ड'*। निघ० १.१०.१७

३. माधवस्तु—फलिर्भेदनकर्मापि भिन्दन् गच्छति फलसंयुक्तो गच्छतीति वा। (*पूर्ववत्*)। निघ० १.१०.१७

फल्गुनी

१. अर्जुन्यो वै नामैतास्ता एतत्परोऽक्षमाचक्षते फल्गुन्य इति। *'अर्जुनी> फल्गुनी'*। शत०ब्रा० २.१.२.११

२. फलेर्गुक्च। *√'फल्'+ उनन्+ गुकागमः'*। उणा० ३.५६

बंहिष्ठ

१. बंहिष्ठः (महत्)। √'बहि' वृद्धौ'। अतिशयेन बहुलो बंहिष्ठः। *√'बंह्'+ इष्ठन्'*। निघ० ३.३.२४

बकुर

१. बकुरो भास्करः। *'भास्+ कर'*। निरु० ६.२५

२. भयंकरः। *'भय+ कर'*। निरु० ६.२५

३. भासमानो द्रवतीति वा। *√'भास्'+ √'द्रु'*। निरु० ६.२५

बत

१. बतो बलादतीतो भवति। *'बल+ अतीत'*। निरु० ६.२८

बधिर

१. बधिरो बद्धश्रोत्रः। √'बन्ध्'। निरु० १०.४१

२. रुचिरुधिबन्धिशुषिभ्यः किरच्। √'बन्ध्'+ किरच्'। उणा० १.५१

बन्ध

१. पतिर्बन्धेषु बध्यते। √'बन्ध्'। ऋ० १०.८५.२८, अथर्व० १४.१.२६

बन्धु

१. बन्धुः संबन्धनात्। √'बन्ध्'। निरु० ४.२१

२. बन्धुः (धनम्)। √'बन्ध' बन्धने। बध्नात्यनेन भृत्यादीन्। √'बन्ध्'+ उ'। निघ० २.१०.२१

३. यद्वा, बन्धुरिव बन्धुः। 'बन्धु (इव)> बन्धु'। निघ० २.१०.२१

४. शृस्वृस्निहित्रप्यसिवसिहनिक्लिदिबन्धिमनिभ्यश्च। √'बन्ध्'+ उ'। उणा० १.१०

बब्धानाम्

१. बब्धानाम्: बाबध्यमानान्। √'बन्ध्'। निरु० १०.९

बब्धाम्

१. बब्धाम्, बभस्तिरत्तिकर्मा। √'भस्'। निरु० ५.१२

बभ्रु

१. बभ्रुणां बभ्रुवर्णानां हरणानाम्। √'हृ'। निरु० ९.२८

२. भरणानामिति वा। √'भृ'। निरु० ९.२८

३. कुर्भ्रश्च। √'भृ'+कु>भृ+भृ+उ> बभ्रु'। उणा० १.२२

बर्हण

१. बर्हणा परिबर्हणा। (*अर्थप्रदर्शनमात्रम्*) √'बृह्'। निरु० ६.१८

बर्हस्

१. बर्हा, परिवृढः। √'वृह्'। निरु० ६.१७

बर्हिस्

१. बर्हिः परिबर्हणात्। √'बृह्'। निरु० ८.८

२. बर्हिः (अन्तरिक्षम्)। √'बृहिं वृद्धौ'। बृंहते वर्द्धतेऽनेन प्राणिजातम्, सर्वे हि प्राणिनः आकाशे वर्द्धन्ते। √'बृंह्'+ इसि'। निघ० १.३.४

३. परिवृद्धं वा स्वयं विभुत्वात्। √'बृंह्'+ इसि'। निघ० १.३.४

४. बृंहेर्नलोपश्च। √'बृंह्'+ इसि'। उणा० २.१११

बर्हिषत्

१. बर्हिषत् (महत्)। √'बृह' वृद्धौ'। परिवृद्धे स्थाने स्यादिति हि महान्। √'बृंह्'+ इसि+ √'अस्'+ क्विप्'। निघ० ३.३.२५

बल

१. बलं कस्माद्? बलं भरं भवति बिभर्तेः। √'भृ'। निरु० ३.९

बलभिद्

१. यद् (बलभिदा ऋतुना यजते) बलमेवास्मै भिनत्ति। 'बल+ √'भिद्'। ता०ब्रा० १९.७.३

बलाहक

१. बलाहकः (मेघः)। बलाकाभिर्हीयते गम्यते इति बलाहकः। 'बलाका+ √'हा'। निघ० १.१०.२३

२. वारिवाहको वा। 'वारि+ वाहक। निघ० १.१०.२३

३. वराहशब्दाद्वा। 'वराह्+ कन्> वराहक> बलाहक'। निघ० १.१०.२३

बहु

१. बहु कस्मात्? प्रभवतीति सतः। 'प्र+ √'भू'। निरु० ३.१३

२. लङ्घिबंह्योर्नलोपश्च। √'बंह्'+ कु'। उणा० १.२९

बहुले

१. बहुले (द्यावापृथिव्यौ)। 'बंहिष्ठः' इति महन्नामसु व्याख्यातम्। बहुभिः पदार्थैस्तद्वत्यौ। 'बहु> बहुल'। निघ० ३.३०.१२

बाध

१. बाधः (बलम्)। √'बाधृ' विलोडने'। बाध्यतेऽनेन शत्रवः। √'बाध्'+ घञ्'। निघ० २.९.८

बार

१. बारम्, द्वारम्। 'द्वार> बार्'। निरु० १०.४

बाल

१. बालो बलवर्ती भर्तव्यो भवति। √'भृ'+ घञ्> भार> बाल'। निरु० ९.१०

२. अम्बास्मा अलं भवतीति वा। *'अम्बा+ अलम्'*। निरु० ९.१०

३. अम्बास्मै बलं भवतीति वा। *'अम्बा+ बल'*। निरु० ९.१०

४. बलो वा प्रतिषेधव्यवहितः। *'अ+ बल> ब+ अ+ ल> बाल'*। निरु० ९.१०

बाहु

१. बाहू कस्मात्? प्रबाधत आभ्यां कर्माणि। √*'बाध्'*। निरु० ३.८

२. बाहू (बाहू)। √'बाधृ लोडने'। गमयत्याभ्यां कर्माणि, बाधते परानाभ्यामिति वा। √*'बाध्'+ उ> बाधु> बाहु'*। निघ० २.४.८

३. अर्जिदृशिकम्यमिपंसिबाधामृजिपशितुकुधुकुदीर्घहकाश्च। √*'बाध्'+ कु'*। उणा० १.२७

विठ

१. बिठमन्तरिरक्षम्। बिठं बीरिटेन व्याख्यातम्। √*'वी'*+ √*'ईर्'* या √*'भास्'*+ ईर् या √*'भी'*+ तन् या √*'भा'+ तन्'*। निरु० ६.३०

विभ्युष

१. यद्वा, दक्षस्य **विभ्युषो अविभ्यद्**। √*'भी'*। ऋ० ६.२३.२

विल

१. बिलं भरं भवति, बिभर्तेः। √*'भृ'*। निरु० २.१७

विल्म

१. बिल्मं भिल्मम्। √*'भिद्'*। निरु० १.२०

२. भासनमिति वा। √*'भास्'*। निरु० १.२०

विल्व

१. बिल्वं भरणाद्वा। √*'भृ'*। निरु० १.१४

२. भेदनाद्वा। √*'भिद्'*। निरु० १.१४

विस

१. बिसं बिस्यतेर्भेदनकमणो वृद्धिकर्मणो वा। √*'बिस्'*। निरु० २.२४

बीरिट

१. बीरिटं तैटीकिरन्तरिक्षमेवाह पूर्वं वयतेरुत्तरमिरतेः वयांसीरन्त्यस्मिन्। √*'वी'*+ √*'ईर्'+ इटन्'*। निरु० ५.२७

२. भांसि वा। *'भास्+* √*'ईर्'*। निरु० ५.२७

३. बीरिटमन्तरिक्षम्। भियो वा ततिः। √*'भी'+ तन्'*। निरु० ५.२८

४. भासो वा ततिः। √*'भास्'+ तन्'*। निरु० ५.२८

बुधा

१. प्र **बुध्यस्व सुबुधा बुध्यमाना**। √*'बुध्'*। अथर्व० १४.२.७५

बुध्न

१. बुध्नमन्तरिक्षं बद्धा अस्मिन् धृता आप इति वा। इदमपीतरद् बुध्नमेतस्मादेव, बद्धा अस्मिन् धृताः प्राणा इति। √*'बन्ध्'*। निरु० १०.४४

२. बुध्नः, बन्धनः। √*'बन्ध्'*। निरु० १२.३८

३. बोधनो वा। √*'बुध्'*। निरु० १२.३८

४. बन्धेर्ब्रधिबुधी च। √*'बन्ध्'+ नक्> बुध्+ न> बुध्न'*। उणा० ३.५

बुध्न्य

१. योऽहिः स बुध्न्यः। बुध्नमन्तरिक्षम्। तन्निवासात्। √*'बन्ध्'* या √*'बुध्> बुध्न> बुध्न्य'*। निरु० १०.४४

बुन्द

१. बुन्द इषुर्भवति भिन्दो वा। √*'भिन्द्'+ घञ्> भिन्द> बुन्दा'*। निरु० ६.३२

२. भयदो वा। √*'भी+* √*'दा' >भिद> बुन्द'*। निरु० ६.३२

३. भासमानो द्रवतीति वा। √*'भास्'*+ √'द्रु'। निरु० ६.३२

बुर्बुर

१. बुर्बुरम् (उदकम्)। √'पृ' पालनपूरणयोः'। वपुषः शरीरस्य पूरकं पालकं वा वपुः पुरं सत्। √'पृ'+ क> पुर, वपुस्+ पुर> बुर्बुर'। निघ० १.१२.२२

बुस

१. बुसमित्युदकनाम, ब्रवीतेः शब्दकर्मणः। √*'ब्रू'*। निरु० ५.१९

२. भ्रंशतेर्वा। √*'भ्रंश्'*। निरु० ५.१९

३. बुसम् (उदकम्)। विपूर्वात् स्नातेः। विशेषेण स्नात्यनेनेति बुसम्। तद्धि प्रथमं शौचसाधनम्। *'वि+* √*'स्ना'*+ क> बुस'। निघ० १.१२.२०

४. भ्रंशतेर्वा। √'भ्रंश्'+ अच्'। निघ० १.१२.२०

५. यद्वा, 'बुस' उत्सर्गे'। बुस्यते उत्सृज्यतेमेघैरिति बुसम्। √'बुस्'+ क'। निघ० १.१२.२०

बृबदुक्थ

१. बृबदुक्थो महदुक्थ:। वक्तव्यमस्मा उक्थमिति। 'बृहत्+ उक्थ> बृहदुक्थ > बृबदुक्थ:'। निरु० ६.४

२. वक्तव्यमस्मा उक्थमिति बृबदुक्थो वा। √'ब्रू'+ अति> बृहत् (उणा० २.८५) अथवा √'ब्रू'+ अति> ब्रबत्> बृबत्, बृबत्+ उक्थ> बृबदुक्थ'। निरु० ६.४

बृबूक

१. बृबूकमित्युदकनाम, ब्रवीते: शब्दकर्मण:। √'ब्रू'। निरु० २.२२

२. भ्रंशतेर्वा। √'भ्रंश्'। निरु० २.२२

३. बृबूकम् (उदकम्)। ब्रवीते: शब्दार्थात् भ्रंशतेर्वा उभाभ्यां समुदितधातुभ्याम्। तद्धि विपतत् साध्याकारं शब्दं करोति, भ्रश्यति दिवोऽनावरणत्वात्, मेघेभ्यो भ्रश्यति शब्दवच्चेति। √'ब्रु'+ √'भ्रंश्'+ ऊक> ब्रू+ भ्रंश् + ऊक> बृ+ बू+ ऊक> बृबूक'। निघ० १.१२.१९

बृहत्

१. बृहत् महतो नामधेयं परिवृ(बृ)ढं भवति। √'वृ(बृ)ह्'। निरु० १.७

२. बृहत् (महत्)। √'बृहिं' वृद्धौ'। परिवृद्धं हि भवति महत्त्वम्, वर्द्धतेऽस्मिन्नैश्वर्य्यादि, वर्द्धतेऽनेन समाश्रित:। √'बृह्' (निपातनात्)। निघ० ३.३.४

बृहत्क

१. बृहत् वाव न इदं कमभूद् येन स्वर्गं लोकं व्यापामेति। तदेव बृहत्कस्य बृहत्कत्वम्। 'बृहत्+ क'। जै०ब्रा० ३.५८

बृहती

१. ते (देवा:) ऽब्रुवन् स्वर्गं लोकं गत्वा बृहती वा इयमभूद् ययेदं व्यापामेति। तदेव बृहत्यै बृहतीत्वम्। √'बृह्'। जै०ब्रा० १.१२०

२. बृहती मर्य्या ययेमाँल्लोकान् व्यापामेति तद् बृहत्या बृहत्त्वम्। √'बृह्'। ता०ब्रा० ७.४.३

३. बृहती बृंहतेर्वृद्धिकर्मण:। √'बृह्'। दै०ब्रा० ३.११

४. बृहती परिबर्हणात्। √'बृह्'। निरु० ७.१२

बृहस्पति

१. **बृहस्पते** देवनिदो नि **बर्हय**। √'बृह्'। ऋ० २.२३.८

२. बृहस्पतिर्ब्रह्म ब्रह्मपति:। 'ब्रह्म+ पति'। तै०सं० २.५.७.४, (तु०, तै०सं० ३.११.४.२)

३. वाग्वै बृहती तस्या एष पतिस्तस्मादु बृहस्पति:। 'बृहती(वाक्)+ पति'। शत०ब्रा० १४.४.१.२२

४. बृहस्पतिर्बृहत: पाता वा। 'बृहत्+ √'पा'। निरु० १०.११

५. पालयिता वा। 'बृहत्+ √'पाल्'। निरु० १०.११

बेकनाटन्

१. बेकनाटा: खलु कुसीदिनो भवन्ति। द्विगुणकारिणो वा। 'द्वि+ √'कृ' > बे+ क> बेक, बेकृ√'नट्'। निरु० ६.२६

२. द्विगुणदायिनो वा। 'द्वि+√'दा'>बे+द>बेक (शेषं पूर्ववत्)। निरु० ६.२६

३. द्विगुणं कामयन्त इति वा। 'द्वि+√'कामय्'>बे+क> बेक' (शेषं पूर्ववत्)। निरु० ६.२६

बेकुरा

१. बेकुरा (वाक्)। √'भा' दीप्तौ'। कान्तिं करोतीति। √'भा'+ √'कृ'+ क> भाकर> भेकुर> बेकुरा'। निघ० १.११.५७

ब्रध्न

१. ब्रध्न: (अश्व:)। ब्रध्नं परिवृढम्। √'बृह्'। निघ० १.१४.१६

२. ब्रध्न: (महत्)। व्याख्यातमश्वनामसु। बध्नाति स्वगुणै: सर्वान् वेतनदानेन भृत्यादीन्। √'बन्ध्'। निघ० ३.३.२

३. बन्धेब्रधिबुधी च। √'बन्ध्'+ नक्> ब्रध्+ न> ब्रध्न'। उणा० ३.५

ब्रह्म

१. एष हीदं सर्वं बिभर्ति। तस्माद् एष एव ब्रह्म। भर्म ह वै नामैष:। तद् ब्रह्मेति परोक्षम् आचक्षते। √'भृ'= भर्म= ब्रह्मन्'। जै०ब्रा० ३.३७९

२. तदेतद् ब्रह्मयशश्श्रिया परिवृढम्। √'वृह' या √'बृह' *परिवृढौ'*। जै०ब्रा० ४.२४.११

३. तद्यदिन्द्र उष्णीषी ब्रह्मवेदो भूत्वा दक्षिणतः परीत्योपातिष्ठत्तद् ब्रह्माऽभवत्तद् ब्रह्मणो ब्रह्मत्वम्। *'ब्रह्मवेद= ब्रह्म' (अर्थनिर्वचनम्)*। गो०ब्रा० १.२.१९

ब्रह्मचारी

१. **ब्रह्मचारी चरति** वेविषद्विषः। *'ब्रह्म+* √*'चर्'*। ऋ० १०.१०९.५, अथर्व० ५.१७.५

ब्रह्मणस्पति

१. एष (प्राणः) उ ऽ एव ब्रह्मणस्पतिः। वाग्वै ब्रह्म तस्या एष पतिस्तस्मादु ह ब्रह्मणस्पतिः। *'ब्रह्म+ पति'*। शत०ब्रा० १४.४.१.२३

२. ब्रह्मणस्पतिः ब्रह्मणः पाता वा। *'ब्रह्मन्+* √*'पा'*। निरु० १०.१२

३. पालयिता वा। *'ब्रह्मन्+* √*'पाल्'*। निरु० १०.१२

ब्रह्मद्विषे

१. ब्रह्मद्विषे ब्राह्मणद्वेष्ट्रे। *'ब्राह्मण+ द्वेष्टृ> ब्रह्मद्विष्'*। निरु० ६.११

ब्रह्मन्

१. एतदेषां (वागिति नाम्नां) ब्रह्मेतद्धि सर्वाणि नामानि बिभर्ति। √*'भृ'*। शत०ब्रा० १४.४.४.१

२. एष हीदं सर्वं बिभर्ति। तस्मादेष एव ब्रह्म। भर्म ह वै नामैषः। तद् ब्रह्मेति परोक्षमाचक्षते। √*'भृ'+ मनिन्> भर्मन्> ब्रह्मन्'*। जै० ३.३७९

३. ब्रह्म परिबृढं सर्वतः। √*'बृह्'*। निरु० १.८

४. ब्रह्म (अन्नम्)। √*'वृहिं वृद्धौ'*। परिवृढं भवति सर्वप्राणिभिः। सर्वदा ृुज्यमानमप्यनुपक्षीयमाणत्वात्। स्वभावतो वा परिवृद्धं सर्वस्य जगतो भरणात्। √*'वृह्'+ मनिन्'*। निघ० २.७.२५

५. यद्वा, वर्द्धतेऽनेन भूतानीति वा। जातान्यन्नेन वर्द्धन्ते। √*'वृह्'+ मनिन्'*। निघ० २.७.२५

६. ब्रह्म (धनम्)। व्याख्यातमन्ननामसु। वर्द्धन्तेऽनेन धर्मादयः, बृंहकं वा भोगानाम्। √*'वृह्'+ मनिन्'*। निघ० २.१०.२४

७. बृंहेर्नोऽच्च। √*'बृंह्'+ मनिन्'*। उणा० ४.१४७

भक्ष

१. तयोरहमनु **भक्षं भक्षयामि**। √*'भक्ष्'*। यजु० ८.३७

२. पुण्यांश्च **भक्षान् भक्षयति**। √*'भक्ष्'*। सा०उ० १३०३

भग

१. **भगो विभक्ता** शवसावसा गमद्। √*'भज्'*। ऋ० ५.४६.६

२. **भगं** च रत्नं च **विभजन्तमायोः**। √*'भज्'*। ऋ० ५.४९.१

३. राजा चिद्यं **भगं भक्षीत्याह**। √*'भज्'*। ऋ० ७.४१.२, अथर्व० ३.१६.२

४. भगो भजतेः। √*'भज्'*। निरु० १.७

५. स्त्रीभगस्तथा स्यात्। भजतेः। √*'भज्'*। निरु० १.७

६. भगः (धनम्)। √*'भज् सेवायाम्'*। भज्यते सेव्यते भोगार्थिभिः। √*'भज्'+ घ'*। निघ० २.१०.१०

७. यद्वा, सेव्यतेऽनेन हेतुना तद्वान्। (*पूर्ववत्*)। निघ० २.१०.१०

भगवान्

१. **भग एव भगवाँ** ऽ अस्तु देवास्तेन वयं **भगवन्त** स्याम। *'भग > भगवान्'*। यजु० ३४.३८, अथर्व० ३.१६.५

भन्दना

१. भन्दतेः स्तुतिकर्मणः। √*'भन्द्'*। निरु० ५.२

भद्र

१. भद्रे भन्दनीये। √*'भन्द्'*। निरु० ११.१९

२. भाजनवति वा। √*'भाजय्'*। निरु० ११.१९

३. भद्रं भगेन व्याख्यातम्। भजनीयं भूतानाम्। √*'भज्'*। निरु० ४.१०

४. अभिद्रवणीयं भवद्रमयतीति वा। √*'द्रु'+* √*'रमय्'*। निरु० ४.१०

५. भाजनवद्वा। √*'भाजय्'*। निरु० ४.१०

भर

१. **भराय** सु **भरत** भागमृत्वियम्। √*'भृ'*। ऋ० १०.१००.२

२. भर इति सङ्ग्रामनाम। भरतेर्वा। √*'भृ'*। निरु० ४.२४

३. हरतेर्वा। √*'हृ'*। निरु० ४.२४

४. आभर, आहर। √*'हृ'*। निरु० १२.६

भरण

१. नो **भर संभरणं** वसूनाम्। √'*भृ*'। ऋ० ७.२६.२

भरत

१. अग्निर्वै भरतः स वै देवेभ्यो हव्यं भरति। √'*हृ*'। कौ०ब्रा० ३.२

२. एष (अग्निः) हि देवेभ्यो हव्यं भरति, तस्माद् भरतोऽग्निरित्याहुः। √'*हृ*'। शत०ब्रा० १.४.२.२, ५.१.८

३. प्रजापतिर्वै भरतः स हीदꣳ सर्वं बिभर्ति। √'*भृ*'। शत०ब्रा० ५.८.१.१४

४. भृमृदृशियजिपर्विपच्यमितमिनमिहर्य्यिभ्योऽतच्। √'*भृ* + *अतच्*'। उणा० ३.११०

भरन्ती

१. भरन्ती, हरन्ती। √'*हृ*'। निरु० ११.३६

भरद्वाज

१. एष उ एव बिभ्रद्वाजः प्रजा वै वाजस्ता एष बिभर्ति यद् बिभर्ति तस्माद् भरद्वाजस्तस्माद् भरद्वाज इत्याचक्षत एतमेव सन्तम्। √'भृ'>बिभ्रद्+वाज>बिभ्रद्वाज>भरद्वाज'। ऐ०आ० २.२.२

२. मनो वै भरद्वाज ऋषिरन्नं वाजो यो वै मनो बिभर्ति सोऽन्नं वाजं भरति तस्मान्मनो भरद्वाज ऋषिः। √'भृ'+वाज'। शत०ब्रा० ८.१.१.९

३. वाजोऽन्नं विज्ञानं वा बिभर्ति येन श्रोत्रेण तत् (ऋषिः;विज्ञापकः कर्णः)। √'भृ'+वाज'। दया० यजुर्वेदभाष्य १३.५५

भरित्रे

१. भरित्रे (बाहू)। बिभर्ति रश्मीनादित्य इव। √'*भृ*'+ *इत्र*'। निघ० २.४.१२

भरीम

१. उभे **बिभृत** उभयं **भरीमभिः**। √'*भृ*'। ऋ० १०.६४.१४

भरे

१. भरे (सङ्ग्राम)। √'डुभृञ् धारणपोषणयोः'। बिभर्ति पोषयति सुभटानां धैर्य्यं यशो वा। √'*भृ*'+ *अच्*'। निघ० २.१७.५

२. यद्वा, बिभ्रत्यनेन जयलक्ष्मीं योद्धाः। √'*भृ*'+ *अच्*'। निघ० २.१७.५

३. यद्वा, √'*भृ* भर्त्सने'। भर्त्स्यन्ते हि तत्र शत्रवः। √'*भृ*'+ *अच्*'। निघ० २.१७.५

४. हरतेर्वा भः। ह्रियन्ते हि यत्र योद्ध+णामायूंषि धनानि च। √'*हृ*'+ *अच्*> *हर*> *भर*'। निघ० २.१७.५

भर्तृ

१. **बिभर्ति भर्ता** विश्वस्योच्छिष्टः। √'*भृ*'। अथर्व० ११.७.१५

भर्म, भर्मण

१. भर्म (हिरण्यम्)। √'डुभृञ् धारण-पोषणयोः'। भ्रियते धार्य्यते, अङ्गुल्यादिभिर्धार्य्यते आपदर्थमिति वा, पोषयत्यनेन कुटुम्बमिति वा। √'*भृ*'+ *मनिन्*'। निघ० १.२.११

२. भर्मणे, भरणाय। √'*भृ*'। निरु० ७.२५

भर्वति

१. भर्वतिरत्तिकर्मा। √'*भर्व्*'। निरु० ९.२३

भव

१. पर्जन्यो वै भवः पर्जन्याद्धीदꣳ सर्वं भवति। √'*भू*'। शत०ब्रा० ६.१.३.१५

भाग

१. यद्विभजासि स्वधावो **भागम्**। √'*भज्*'। ऋ० १०.११.८, अथर्व० १८.१.२६

२. यदद्य **भागं** विभजासि नृभ्य। √'*भज्*'। ऋ० १.१२३.३

३. आर्यमृतस्य **भागे** यजमान**माभजत्**। √'*भज्*'। ऋ० १.१५६.५

भामिन्

१. भामिनः, भानुमतः। '*भानुमत्*> *भामिन्*'। निरु० १४.२५

भविष्यत्

१. भविष्यत् (उदकम्)। भवतेरेव। जलं हि आगमिन्यपि काले विद्यते, प्रलयेऽपि जलत्वस्य नाशाभावात्। √'*भू*'+ *इट्*+ *स्य*+ *शतृ*'। निघ० १.१२.५१

भानु

१. **भानुना** चित्रो **विभात्यर्चिषा**। √'*भा*'। ऋ० २.८.४

२. **भास्युत्ते शोचिर्भानवो** द्यामपप्तन्। √'*भा*'। ऋ० ६.६४.२

३. चित्र**भानु**रुषसां **भात्य**ग्रे। √'*भा*'। ऋ० ७.९.३

४. सुसंदृशा **भानुना** यो **विभाति**। √'*भा*'। ऋ० ७.९.४

५. अस्मे श्रेष्ठेभि**र्भानुभि**र्वि **भाहि**। √'*भा*'। ऋ० ७.७७.५

६. यो **भानुभि**र्वि**भावा विभाति**। √'*भा*'। ऋ० १०.६.२

७. रोदसी **भानुना भात्य**न्तः। √'*भा*'। ऋ० १०.४५.४, यजु० १२.६, २१,२३

८. बृहद्भि**र्भानुभि**र्**भासन्**। √'*भास्*'। यजु० १२.३२

९. भानुः (अहः)। √'भा' दीप्तौ'। भात्यादित्याधिकरण-सम्बन्धादेव। '*भा*+ *नु*'। निघ० १.९.३

१०. रश्मिर्भानुरिति माधवोक्तमहर्भवितुमर्हति। √'*भा*+ *नु*'। निघ० १.९.३

११. दाभाभ्यां नु। √'*भा*+ *नु*'। उणा० ३.३२

भाम

१. भामः (क्रोधः)। भामतेः यद्वा √'भा' दीप्तौ'। दीप्यते तेन तद्वान्। √'*भाम्*'+ *घञ्*' *अथवा* √'*भा*'+ *मन्*'। निघ० २.१३.५

२. अर्तिस्तुसुहुसृधृक्षिक्षुभायावापदियसिनीभ्यो मन्। √'*भा*' + *मन्*'। उणा० १.१४०

भार

१. **गर्भो भारं भरत्या** चिदस्य। √'*भृ*'। ऋ० १.१५२.३

२. **षड्भाराँ** एको अचरन्**बिभर्ति**। √'*भृ*'। ऋ० ३.५६.२

३. **बिभर्ति भारं** पृथिवी न भूम। √'*भृ*'। ऋ० ७.३४.७

४. गिरौ **भारं हरन्निव**। √'*भृ*'। यजु० २३.२६,२७

५. गर्भो **भारं भरति**। √'*भृ*'। अथर्व० ९.१०.३

भारत

१. श्रेष्ठं यविष्ठ **भारता**ग्ने द्युमन्ता**भर**। √'*भृ*'। ऋ० २.७.१

२. अथो यदैवेष देवेभ्यो हव्यं वहति तस्माद् भारतः। √'*हृ*'। जै०ब्रा० ३.६२

३. महान् ह्येष यदग्निः....................ब्राह्मणो ह्येष भारतेत्याहैष हि देवेभ्यो हव्यं भरति। √'*हृ*'। तै०सं० २.५.९.१

४. एष (अग्निः) उ वा इमाः प्रजाः प्राणो भूत्वा बिभर्ति तस्माद्वेवाह भारतेति। *(भरतवत्)* √'*भृ*'। शत०ब्रा० १.५.१.८

५. भारताः (ऋत्विजः)। 'भृञ् भरणे'। यज्ञद्वारेण नॄन् सं भरतीति स्कन्दस्वामी। √'*भृ*'+ *अतच्*'। निघ० ३.१८.१

६. बिभर्तेर्वा। पुष्यन्ते दक्षिणाभिः। √'*भृ*'+ *अतच्*'। निघ० ३.१८.१

भारती

१. भारती, भरत आदित्यस्तस्य भाः। '*भरत> भारती*'। निरु० ८.१३

२. भारती (वाक्)। √'डुभृञ् धारणपोषणयोः'। बिभर्ति जगद्वर्षप्रदानेन, स्वाभिधेयं वा ध्रियते प्राणिभिः व्यवहारसाधनत्वेन। √'*भृ*'+ *अतच्* > *भरत*, *भरत*+ *अण्*+ *ङीप्*'। निघ० १.११.१६

३. अथवा 'अग्निर्भरतः, प्राणो भूत्वा हवींषि बिभर्ति' इति वाजसनेयकम्, तदीया भारती। √'*भृ*'+ *अतच्*> *भरत*, *भरत*+ *अण्*+ *ङीप्*। निघ० १.११.१६

४. अथवा भरतः (निघ० ३.१८.१) ऋत्विङ्नाम, तदीया स्तुतिसाधनत्वात् भारती। '*भरत (तस्येदम्) भारती*'। निघ० १.११.१६

भारद्वाज

१. भरणाद् भारद्वाजः। √'*भृ*'। निघ० ३.१७

भार्म्यश्व

१. भार्म्यश्वो भृम्यश्वस्य पुत्रः। '*भृमि*+ *अश्व*> *भृम्यश्व* *(तस्यपुत्रः)*> *भार्म्यश्व*'। निरु० ९.२४

भाव

१. **भवा** वरूथं गृणते **विभावो भवा**। √'*भू*'। ऋ० १.५८.९

भाव्य

१. भाव्यस्य, भावयव्यस्य राज्ञः। '*भावयव्य*> *भाव्य*'। निरु० ९.१०

भास

१. वृषा हरिः शुचिरा **भाति भासा**। √'*भा*'। ऋ० ७.१०.१

२. चिकिद्वि**भाति भासा**। √'*भा*'। ऋ० १०.३.१, सा०उ० १५४६

३. स्वर्भानुर्वा आसुर आदित्यं तमसाविध्यत् स न व्यरोचत तस्यात्रिर्भासेन तमोऽपाहन् स व्यरोचत यद्वै तद्भा अभवत्तद्भासस्य भासत्वम्। √'*भास्*' या √'*भा*'। ता०ब्रा० १४.११.१४

भास्वती

१. भास्वती (उषा)। 'भासृ दीप्तौ'। भासत इति भासः प्रकाशः। भासा तद्वती भास्वती। √'*भास्*'+ *क्विप्> भास्, भास्+ मतुप्+ ङीप्> भास्वती*'। निघ० १.८.३

२. भास्वत्यः (नद्यः)। 'भा दीप्तौ'। भा दीप्तिः, तद्वत्यः, दीप्तिमतो हि तद्यः। √'*भास्*'+ *क्विप्> भास्, भास्+ मतुप्+ ङीप्> भास्वती*'। निघ० १.१३.३४

भिद

१. भिनत्पुरो न **भिदो** अदेवीः। √'*भिद्*'। ऋ० १.१७४.८

भीम

१. भीमो बिभ्यत्यस्मात्। √'*भी*'। निरु० १.२०

२. भियः षुग् वा। √'*भी*'+ *मक्*'। उणा० १.१४८

भीमला

१. भीमम्बत मलमपावधिषेतेति। तस्माद् भीमलाधियो वा एताः। धियो वा इमा मलमपावधिषेतेति। तस्मादु भीमलाः। '*भीम+ मल*'। जै०ब्रा० १.५७.१

भीष्म

१. भीष्मोऽप्येतस्मादेव। √'*भी*'। निरु० १.२०

२. भियः षुग् वा। √'*भी*'+ *षुक+ मक्*'। उणा० १.१४८

भुज्यु

१. यज्ञो वै भुज्युर्यज्ञो हि सर्वाणि भूतानि भुनक्ति। √'*भुज्*'। शत०ब्रा० ९.४.१.११

२. भुजिमृङ्भ्यां युक्त्यकौ। √'*भुज्*'+ *युक्*'। उणा० ३.२१

भुरण्यु

१. भुरण्युरिति क्षिप्रनाम। भुरण्युः शकुनिः। भूरिमध्वानं नयति। √'*भुरण्य्*'+ *क्यु*'। निघ० २.१५.१४

२. भुरण्युः (क्षिप्रम्)। भुरण्यतिर्गतिकर्मा'। (पूर्ववत्)। निघ० २.१५.१४

भुरिक्

१. भरणाद् भुरिगित्युच्यते। √'*भृ*'। दै०ब्रा० ३.२१

२. भुरिजौ (बाहू)। √'ह्रञ् हरणे'। हरतः पदार्थान् कर्मकरणसामर्थ्यं वा। √'*ह्*'+ *इजि> हुरिज्> भुरिज्> भुरिक्*'। निघ० २.४.९

३. यद्वा, 'डुभृञ् धारणपोषणयोः'। बिभृतो वा पदार्थान् कर्मकरणसामर्थ्य वा। √'*भृ*'+ *इजि*'। निघ० २.४.९

४. भृञ उच्च। √'*भृ*'+ *इजि*'। उणा० २.७३

भुव

१. परिभुवः परि **भवन्ति** विश्वतः। √'*भू*'। ऋ० १.१६४.३६

२. स विश्वा **भुव आभवः**। √'*भू*'। ऋ० १०.१५३.५, अथर्व० २०.३९.८

३. अग्निर्वै भुवोऽग्नेर्हीदं सर्वं भवति। √'*भू*'। शत०ब्रा० ८.१.१.४

४. भुवः, भूतानां भवति। √'*भू*'। निरु० ७.२७

५. भुवे, भावाय। √'*भू*'। निरु० ७.२८

६. भूरञ्जिभ्यां कित्। √'*भू*'+ *असुन्*'। उणा० ४.२१८

भुवन

१. अभि यो विश्वा **भुवना बभूव**। √'*भू*'। ऋ० ४.१६.५

२. विश्वाभि **भुवना भवत्**। √'*भू*'। ऋ० ८.९२.६

३. शं नो **भवतु भुवनस्य** यस्पतिः। √'*भू*'। यजु० ३६.२

४. सना ता का चित् **भुवना भवीत्वा**। √'*भू*'। ऋ० २.२४.५

५. भुवनाय, भावनाय। √'*भू*'। निरु० ७.२५

६. भुवनानि, भूतानि। √'*भू*'। निरु० ८.१४; १०.११,३४

७. भुवनम् (उदकम्)। 'भू सत्तायाम्'। भवन्त्यनेन सर्वे पदार्था इति भुवनम्। √'*भू*'+ *क्युन्*'। निघ० १.१२.५०

८. भूसूधूभ्रस्जिभ्यश्छन्दसि। √'*भू*'+ *क्युन्*'। उणा० २.८१

भुवस्पति

१. प्रच्यवस्व भुवस्पतऽ इति भुवनानाᳩ ह्येष (सोमः) पतिः। '*भुवन+ पति*'। शत०ब्रा० ३.३.४.१४

भू

१. भूः (अन्तरिक्षम्)। 'भवतेः'। भवत्यस्माद् वृष्ट्यादिः। √'*भू*'+ *क्विप्*'। निघ० १.३.१०

२. भूः (पृथिवी)। 'भू सत्तायाम्'। भवन्त्यस्यां सर्वमिति भूः। √'*भू*'+ *क्विप्*'। निघ० १.३.१०

३. भूरिति व्याहरेद् भूतो वै प्रजापतिर्भूतिमेवोपैति। 'भूत> भूति> भू'। काठ० ३५.१७

४. स हैष भूरेव नाम यज्ञक्रतुः एतेन ह वै यज्ञेनेष्ट्वा प्रजापतिरभवत्। यदभवत् तस्माद् भूः। √'भू'। जै०ब्रा० २.१४७

भूत

१. **भूते** हविष्मती **भवैष**। √'भू'। अथर्व० ६.८४.२

२. भूतम् (उदकम्)। 'भू सत्तायाम्'। पूर्वमेव सत् भूतम्, प्रथम दृष्टत्वात्। √'भू'+ क्त'। निघ० १.१२.४९

३. अथवा √'भू प्राप्तौ'। प्राप्यं पिपासितैः। √'भू'+ क्त'। निघ० १.१२.४९

४. यद्वा, पञ्चसु पृथिव्यादिषु महाभूतेष्वन्तर्भावात् भूतमित्युच्यते। √'भू'+ क्त'। निघ० १.१२.४९

भूतेच्छन्दस्

१. तद्यदेतानि देवाः सर्वेभ्यो भूतेभ्यो ऽ च्छादयन्, तस्मात् भूतेच्छन्दस्तद् भूतेच्छन्दां भूतेच्छन्देत्वम्। 'भूत+ √'छदि' *संवरणे*'। गो०ब्रा० २.६.१४

भूति

१. स एष प्राणः स एष भूतिश्चाभूतिश्च। तं भूतिरिति देवा उपासाञ्चक्रिरे, ते बभूवुः। √'भू'। ऐ०आ० २.१.८

भूतेछद

१. तद्यदेतान् (असुरान्) इमे देवाः सर्वेभ्योऽछादयं-स्तस्माद् भूतेछदस्तद् भूतेछदां भूतेछदत्वम्। 'भूत+ √'छद्'। गो०ब्रा० २.६.१४

भूमि

१. अभूद्वा इदमिति। तद् भूमेर्भूमित्वम्। √'भू'। जै०ब्रा० २.२४४ (तु०, तै०सं० १.१.३.७)

२. अभूदिव वा इदमिति। तद् भूमेर्भूमित्वम्। √'भू'। ता०ब्रा० २०.१४.२,

३. अभूद्वा ऽइयं प्रतिष्ठेति। तद् भूमिरभवत्। √'भू'। शत०ब्रा० ६.१.१.१५, ३.७

४. भूमिर्भूत्वा (प्रजापतिः) भूतं भव्यमभवत्। √'भू'। जै०ब्रा० १.३१४

५. यदभवत्तद् भूमिः। √'भू'। काठ० ८.२

६. इयं वै भूमिरस्यां वै स भवति यो भवति। √'भू'। शत०ब्रा० ७.२.१.११

७. तद् इदम् अभवत्। अभूद् वा इदम् इति। तद् भूमेर्भूमित्वम्। √'भू'। जै०ब्रा० २.२४४

८. भूमिः (पृथिवी)। भवतेः मि प्रत्ययः'। अर्थः पूर्ववत् (भूवत्)। √'भू'+ *मि*'। निघ० १.१.१८

९. अभूत भूमिस्तथा अभूद्वा इदमिति तद् भूम्यै भूमित्वम्, इति श्रुतिः। √'भू'। निघ० १.१.१८

१०. भुवः कित्। √'भू'+ *मि*'। उणा० ४.४६

भूरि

१. **भूर्य्यस्मिन् भवा** विश्वायुर्धरुणो रयीणाम्। √'भू'। ऋ० १.७३.४

२. सतश्च गोपां **भवतश्च भूरेः**। √'भू'। ऋ० १.९६.७

३. **भूरिदा भूरि** देहि नो मा दभ्रं **भूर्या भर**। √'भृ'। ऋ० ४.३२.२०

४. विष्णोः परमं पदमव**भारि भूरि**। √'भृ'। यजु० ६.३

५. भूरीति बहुनो नामधेयम्। प्रभवतीति सतः। 'प्र+ भू'। निरु० २.७

६. भूरि, बहूनि। (*अर्थप्रदर्शनमात्रम्*)। निरु० ११.२१

७. भूरि (बहु)। भवतेः। भवति तत् सर्वस्यानुग्रहप्रदा। √'भू'+ *क्रिन्*'। निघ० ३.१.४

८. अदिशदिभूशुभिभ्यः क्रिन्। √'भू'+ *क्रिन्*'। उणा० ४.६६

भूरिदा

१. **भूरिदा भूरि** देहि नो मा दभ्रं **भूर्या भर**। √'भृ'। ऋ० ४.३२.२०

भूरिदावत्तर

१. भूरिदावत्तरौ बहुदातृतरौ। '*भूरिदातृतर> भूरिदावत्तर*'। निरु० ६.९

भृगु

१. रातिं **भरद्भृगवे** मातरिश्वा। √'भृ'। ऋ० १.६०.१

२. ताभ्यः श्रान्ताभ्यस्तप्ताभ्यः संतप्ताभ्यो (अद्भ्यः) यद्रेत आसीत्तदभृज्यत यदभृज्यत तस्माद् भृगुः समभवत् तद् भृगोर्भृगुत्वम्। √'भ्रस्ज'। गो०ब्रा० १.१.३

३. भृगुर्भृज्यमानः। √'भ्रस्ज्'। निरु० ३.१७

४. प्रथिम्रदिभ्रस्जां सम्प्रसारणं सलोपश्च। √'भ्रस्ज्'+ कु'। उणा० १.२८

भृत

१. उक्थभृतं सामभृतं बिभर्ति ग्रावाणं बिभ्रत्प्र वदात्यग्रे। √'भृ'। ऋ० ७.३३.१४

२. सुप्रीतं सुभृतं बिभृत। √'भृ'। यजु० ८.२६

३. तस्मै बलिं राष्ट्रभृतो भरन्ति। √'भृ'। अथर्व० १०.८.१५

भृति

१. वज्रिवो भृतिं न प्र भरामसि। √'भृ'। ऋ० ८.६६.११

२. भृतिं न भरा मतिभिर्जुजोषते। √'भृ'। सा०पू० ५.१०.८

भृमि

१. भृमिभ्राम्यतेः। √'भ्रम्'। निरु० ६.२०

२. भ्रमेः सम्प्रसारणञ्च। √'भ्रम्'+ इन्'। उणा० ४.१२२

भृम्यश्व

१. भृम्यश्वो भृमयोऽस्याश्वाः। 'भृमि+ अश्व'। निरु० ९.२४

२. अश्वभरणाद्वा। √'भृ'+ अश्व'। निरु० ९.२४

भेकुरि

१. भेकुरयो नामेति भाकुरयो ह नामैते भाः हि नक्षत्राणि कुर्वन्ति। √'भा'+√'कृ'> भाकुर>भेकुरि'। शत०ब्रा० ९.४.१.९

भेत्

१. भेत्, अभिनत्। √'भिद्'। निरु० ७.२३

भेषज

१. भेषजम् (उदकम्)। 'भिषज्' चिकित्सायाम्'। भिषज्यन्त्यनेन भेषजम्। √'भिषज्'+ घ'। निघ० १.१२.३९

२. यद्वा, भेषजमस्मिन्नस्तीति भेषजम्। 'भेषज+ अच् (मत्वर्थीयः)। निघ० १.१२.३९

३. भेषजम् (सुखम्)। व्याख्यातमुदकनामसु। 'भेषज+ अच्। निघ० ३.६.१३

४. भियः षुग्घ्रस्वश्च। √'भी' (निपातनाद्)। उणा० १.१३८.१

भोजन

१. भोजनं तद्वास्व भुनजामहै। √'भुज्'। ऋ० ७.८१.५

२. भोजनम् (धनम्)। 'भुज' पालनभ्यव हारयोः'। √'भुज्'+ ल्युट्'। निघ० २.१०.१८

३. यद्वा, भुज्यते तद्बहिः। भुज्यन्ते ऽनेन विषया इति वा। पाल्यतेऽनेन इति वा। √'भुज्'+ ल्युट्'। निघ० २.१०.१८

भ्रातृ

१. भ्राता भरतेर्हरतिकर्मणो हरते भागम्। √'भृ'। निरु० ४.२६

२. भर्तव्यो भवतीति वा। √'भृ'। निरु० ४.२६

भ्राश्य

१. नि तिग्मानि भ्राशयन् भ्राश्यान्। √'भ्राश्'। ऋ० १०.११६.५

मंहिष्ठ

१. कस्त्वा सत्यो मदानां मंहिष्ठो मत्सदन्धसः। √'मद्'। ऋ० ४.३१.२, यजु० ३६.५

मक्षु

१. मक्षु (क्षिप्रम्)। 'टुमस्जो' शुद्धौ'। क्रियायाः पापतो वो मज्जयति चिरकालमिति। √'मस्ज्'+ षुक्'। निघ० २.१५.२

मख

१. मख इत्येतद्यज्ञनामधेयं छिद्रप्रतिषेधसामर्थ्यात् छिद्रं खमित्युक्तं तस्य मेति प्रतिषेधः। मा यज्ञं छिद्रं करिष्यतीति। 'मा (निषेध)+ ख(छिद्र)> मख'। गो०ब्रा० २.२.५

२. सुमखम्, सुमहद्। 'महत्> मख'। निरु० ११.९, १२.३

३. मखः (यज्ञः)। √'मह' पूजायाम्'। महन्त्यत्र देवताः। √'मह्'+ ख+ हलोपश्च'। निघ० ३.१७.११

४. यद्वा, √'मख' गतौ'। वेनवदर्थः। √'मघ'+ घ'। निघ० ३.१७.११

मगन्द

१. प्रमगन्दस्य, मगन्दः कुसीदी। मामागमिष्यतीति च ददाति। तदपत्यं प्रमगन्दः। अत्यन्त कुसीदिकुलीनः। 'माम्+ आ+ √'गम्'+ √'दा'। निरु० ६.३२

२. प्रमदको वा। योऽयमेवास्ति लोको न पर इति प्रेप्सुः। *'प्र+ √'मद्'> प्रमदक> प्रमगन्द'*। निरु० ६.३२

मघ

१. यदी वाजस्य गोमतः स्तोतृभ्यो **मंहते मघम्**। √*'मह्'+ क'*। ऋ० १.११.३

२. शूरो **मघा** च **मंहते**। √*'मंह्'*। ऋ० ९.१.१०

३. स्तोतृभ्यो **मंहते मघम्**। √*'मंह्'*। सा०उ० ८२९

४. मघमिति धननामधेयं मंहतेर्दानकर्मणः। √*'मंह्'*। निरु० १.७

५. मघम् (धनम्)। मंहतिर्दानकर्मा। दीयते ऽर्थिभ्यः। √*'मंह्'+ क'*। निघ० २.१०.१

मघवान्

१. स उ एव मखः, स विष्णुः। तत इन्द्रो मखवानभवन् मखवान् ह वै तं मघवानित्याचक्षते परोऽक्षम्। *'मखवान्> मघवान्'*। शत०ब्रा० १४.१.१.१३

मघोनी

१. मघोनी मघवती। मघमिति धननामधेयम्। मंहतेर्दानकर्मणः। √*'मंह्'*। निरु० १.७

मङ्गल

१. मङ्गलं गिरतेर्गृणात्यर्थे। *'(मम)+ √'गृ'+ अच्> (मम)+ गर> मङ्गल'*। निरु० ९.४

२. गिरत्यनर्थानितिवा। *'(मम)+ √'गृ'+ अच्> (मम)+ गर> मङ्गल'*। निरु० ९.४

३. अङ्गलमङ्गवत्। *'(मम)+ अङ्ग+ ल (मत्वर्थीयः)> (मम)+ अङ्गल> मङ्गल'*। निरु० ९.४

४. मज्जयति पापकमिति नैरुक्ताः। √*'मस्ज्'+ अलच्> मस्जल> मङ्गल'*। निरु० ९.४

५. मां गच्छत्विति वा। *'माम्+ √'गम्'+ डलच्> माम्+ गल> मङ्गल'*। निरु० ९.४

६. मङ्गेरलच्। √*'मङ्ग्'+ अलच्'*। उणा० ५.७०

मज्मना

१. मज्मना (बलम्)। √*'टुमस्जों शुद्धौ'*। मज्जयति शत्रून्। √*'मस्ज्'+ मनिन्'*। निघ० २.९.२३

मण्ड

१. मण्डो मदेर्वा। √*'मद्'*। निरु० ९.५

२. मुदेर्वा। √*'मद्'*। निरु० ९.५

३. जमन्ताड् डः। √*'मन्'+ ड'*। उणा० १.११४

मण्डूक

१. मण्डूका मज्जूका मज्जनात्। √*'मस्ज्'+ ऊकन्> मज्जूक> मण्डूक'*। निरु० ९.५

२. मदतेर्वा मोदतिकर्मणः। √*'मद्'+ ऊकन्> मदूक> मण्डूक'*। निरु० ९.५

३. मन्दतेर्वा तृप्तिकर्मणः। √*'मन्द्'+ ऊकन्> मन्दूक> मण्डूक'*। निरु० ९.५

४. मण्डयतेरिति वैय्याकरणाः। √*'मण्ड'+ ऊकन्> मण्डूक'*। निरु० ९.५

५. मण्ड एषामोक इति वा। *'मण्ड+ ओकस्> मण्डोक> मण्डूक'*। निरु० ९.५

६. शलिमण्डिभ्यामूकण्। √*'मण्ड्'+ ऊकन्'*। उणा० ४.४३

मति

१. वाग्वै मतिर्वाचा हीदꣳ सर्वं मनुते। √*'मन्'*। शत०ब्रा० ८.१.२.७

२. मतयः (मेधाविनः)। मन्यतेः। ज्ञायन्तेऽस्मादर्थाः। √*'मन्'+ क्तिन्'*। निघ० ३.१५.२२

३. यद्वा, मतिरस्यास्तीति वा। *'मति> मति (मत्वर्थीयस्य लुक्)'*। निघ० ३.१५.२२

मतुथाः

१. मतुथाः (मेधाविनः)। मतं ज्ञानं तुथो मनुष्यैः। तेन मनतुथाः सन्तः पृषोदरादित्वेन मतुथाः। √*'मन्'+ थक्'*। निघ० ३.१५.२३

मत्सखि

१. मत्सखा ममसखा। *'मम+ सखा'*। निरु० १३.४

२. मदनसखा। *'मदन+ सखा'*। निरु० १३.४

मत्सर

१. **मत्स्यपायि** ते महः पात्रस्येव हरिवो **मत्सरो** मदः। √*'मद्'*। ऋ० १.१७५.१

२. मत्सरः सोमः। मन्दतेस्तृप्तिकर्मणः। √*'मन्द्'*। निरु० २.५

३. मत्सर इति लोभनाम। अभिमत्त एनेन धनं भवति। √*'मन्द्'*। निरु० २.५

४. कृधूमदिभ्यः कित्। √'मद्'+ सरन्'। उणा० ३७३

मत्स्य

१. मत्स्या मधा उदके स्यन्दते। 'मधु+√'स्यन्द्'। निरु० ६.२७

२. माद्यन्तेऽन्योन्यं भक्षणायेति वा। √'मद्'+ √'भक्ष्'। निरु० ६.२७

३. जनिदाच्युसुवृमदिषमिनमिभृञ्भ्य इत्वन्त्वन्त्वण्-क्निन्शक्स्यढडटीटचः। √'मद्'+ स्य'। उणा० ४.१०५

मद

१. ते त्वा **मदा अमदन्तानि** वृष्णा। √'मद्'। ऋ० १.५३.६

२. स त्वामदद् वृषा **मदः** सोमः। √'मद्'। ऋ० १.८०.२

३. कस्त्वा सत्यो **मदानां मंहिष्ठो मत्सदन्धसः**। √'मद्'। ऋ० ४.३१.२, यजु० ३६.५

४. आयवः पवन्ते **मद्यं मदम्**। √'मद्'। ऋ० ९.२३.४

५. ते त्वा **मदा अमदन्**। √'मद्'। अथर्व० २०.२१.६

६. ते त्वा मदा इन्द्र मादयन्तु। √'मद्'। ऋ० ७.२३.५,अथर्व० २०.१२.५

७. इन्द्राय **मद्वा मद्यो** मदः। √'मद्'। ऋ० ९.८६.३५

८. ते त्वा **मदा अमदन्**। √'मद्'। अथर्व० २०.२१.६

९. मदाय मदनीयाम। √'मद्'। निरु० ४.८

मदिर

१. इन्द्रं ते रसो **मदिरो ममत्तु**। √'मद्'। ऋ० ९.९६.२१

मदिष्ठ

१. **मदिष्ठ** आस यस्येन्द्रो वृत्रहत्ये **ममादु**। √'मद्'। ऋ० ६.४७.२

मधु

१. यज्ञं **मधुना मिमिक्षितम्**। √'मिह्'। ऋ० १.३४.३

२. **मध्वा** यज्ञं **मिमिक्षितम्**। √'मिह्'। ऋ० १.४७.४

३. **मादयध्वं** मरुतो **मध्वो** अन्धसः। √'मद्'। ऋ० १.८५.६, अथर्व० २०.१३.२

४. यस्त्री त्री पूर्णा **मधुना** पदान्यक्षीयमाणा स्वधया **मदन्ति**। √'मद्'। ऋ० १.१५४.४

५. **मध्वा मदेम** सह नू समानाः। √'मद्'। ऋ० ३.५८.६

६. **मधुपेयाय** सोमा अस्मिन्यज्ञे वृषणा **मादयेथाम्**। √'मद्'। ऋ० ४.१४.४

७. **अमन्दत** मघवा **मध्वो** अन्धसः। √'मद्'। ऋ० ५.३४.२

८. अस्य **मध्वः** पिबत **मादयध्वम्**। √'मद्'। ऋ० ७.३८.८, यजु० ८.१८.२१.११

९. **मध्वो** वो नाम मारुतं यजत्राः प्र यज्ञेषु शवसा **मदन्ति**। √'मद्'। ऋ० ७.५७.१

१०. **मन्दयन्निन्द्राय मधुमत्तमः**। √'मद्'। ऋ० ९.६७.१६

११. **ममद्धि** सोमं **मधुमन्तमिन्द्र**। √'मद्'। ऋ० १०.९६.१३

१२. **मधु** पिबन्तु **मदन्तु**। √'मद्'। यजु० २१.४२

१३. मधु सोममित्यौपमिकं माद्यतेः। इदमपीतर-न्मध्वेतस्मादेव। √'मद्'। निरु० ४.८

१४. मधुर्धमतेर्विपरीतस्य। √'धम्'>मध् >मधु'। निरु० १०.३१

१५. मधु (उदकम्)। मेघोदरवर्ति सलिलं मध्वित्युच्यते। तत्र पुनर्वैद्युतात्मा दह्यमानान् सरः स्वर्णेन तद्गतेनैव वायुना ध्मायमानं धमति। धमतिर्गतिकर्मा वा, अन्तर्णीतण्यर्थो निःकालने द्रष्टव्यः। निधाम्र्यते निःकल्यते हि तन्मेघात्। √'धम्' >मध् >मधु'। निघ० १.१२.११

१६. यद्वा, √'मद् तृप्तौ'। माद्यन्ति हि तेन पीतेन प्राणिनः। √'मद्'+ उ > मदु > मधु'। निघ० १.१२.११

१७. यद्वा, मधुवत् स्वादुत्वात् मध्वित्युच्यते। 'मधु> मधु' *(मत्वर्थीयलोपः)*। निघ० १.१२.११

१८. यद्वा, √'मन ज्ञाने'। मन्यते अतिशयेन जनैः इति मधु। मननीयं मधु— इति भट्टभास्करमिश्रः। √'मन्'+ उ> मनु> मधु'। निघ० १.१२.११

१९. मनेर्धश्छन्दसि। √'मन्'+ उसि'। उणा० २.११८

मधुच्छन्दस्

१. मधु ह स्म वा ऋषिभ्यो मधुच्छन्दाश्छन्दति तन्मधुच्छन्दसो मधुच्छन्दस्त्वम्। 'मधु+ √'छन्द्'। ऐ०आ० १.१.३

मध्य

१. सूर्यस्य **मध्ये** दिवः स्वधया **मादयेथे**। √'मद्'। ऋ० १.१०८.१२, ऋ० १०.१२.१४

मनस्

१. उत **मन्ये** पितुरद्रुहो मनः। √'*मन्*'। ऋ० १.१५९.२

२. वि मे **मनश्चरति** दूर आधीः किं स्विद् वक्ष्यामि किमु नू **मनिष्ये**। √'*मन्*'। ऋ० ६.९.६

३. अन्योदर्यो **मनसा मन्तवा** उ। √'*मन्*'। ऋ० ७.४.८

४. माद्यत्यनेन। √'*मदीं' हर्षे*'। माध०, धातु० ४.१००

५. मनो भूत्वा (प्रजापतिः) सर्वममनुत। √'*मन्*'। जै०ब्रा० १.३१४

६. तन्मनोऽमनुत। √'*मन्*'। जै०ब्रा० ३.३३४

७. मनो मनोतेः। √'*मन्*'। निरु० ४.४

मनश्चित्

१. मनश्चित् (मेधीवी)। मनः शब्दोपपदात् √'चितीं संज्ञाने'। मनसा चेतयते। '*मनस्*+ √'*चित्*'। निघ० ३.१५.१५

मनस्य

१. मनस्य मनस्वीभावे। (*अर्थप्रदर्शनमात्रम्*)। निरु० ३.७

मनस्वी

१. य एव मनुष्याणां मनुष्यत्वं वेद। मनस्व्येव भवति। नैनं मनुः जहाति। '*मनुष्य*+ √'*विद्*'। तै०सं० २.३.८.३

मनीषा

१. मनीषया मनस ईषया। '*मनस्*+ *ईषा*'। निरु० २.२५.९.१०

मनीषी

१. मनीषिणः (मेधाविनः)। √'मनु अवबोधने'। मनीषा प्रज्ञाऽस्यास्ति। √'*मन्*'+ *ईषन्*'। निघ० ३.१५.११

२. यद्वा, मनस ईषा स्तुतिः प्रज्ञा वा मनीषा। '*मनस्*+ *ईषा*'। निघ० ३.१५.११

मनु

१. प्रजापतिर्वै मनुः स हीदꣳ सर्वममनुत। √'*मन्*'। शत०ब्रा० ६.६.१.१९

२. मनुर्मननात्। √'*मन्*'। निरु० १२.३३

३. शृस्वृस्निहित्रप्यासिवसिहनिक्लिदिबन्धिमनिभ्यश्च। √'*मन्*'+ *उ*'। उणा० १.१०

मनुष्य

१. स (प्रजापतिः) देवान्त्सृष्ट्वामनस्यतेव, तेन मनुष्यानसृजत, तन्मनुष्याणां मनुष्यत्वम्। य एवं मनुष्याणां मनुष्यत्वं वेद मनस्वान् ह भवति। √'*मनस्*' *उपतापे*'। मै०सं० ४.२.१

२. स (प्रजापतिः) पितॄन्त्सृष्ट्वा मनस्यैत्। तदनु मनुष्यानसृजत। तन्मनुष्याणां मनुष्यत्वम्। य एवं मनुष्याणां मनुष्यत्वं वेद। मनस्व्येव भवति। नैनं मनुः जहाति। √'*मनस्* *उपतापे*'। तै०सं० २.३.८.३

३. मनुष्याः कस्मात्, मत्वा कर्माणि सीव्यन्ति। √'*मन्*'+ √'*षिव्*'। निरु० ३.७

४. मनस्यमानेन सृष्टा वा। मनस्यतिः पुनर्मनस्वीभावे। √'*मनस्*'+ *सृज्*'। निरु० ३.७

५. मनोरपत्यम्। '*मनोः (अपत्यम्)*> *मनुष्य*'। निरु० ३.७

६. मनुषो वा। '*मनुष्*+ *यत्*'। निरु० ३.७

७. मनोर्जातावञ्यतौ षुक् च। '*मनु*+ *षुक् (आगम)*+ *यत्*'। अथर्व० ४.१.१६१

मनोता

१. तिस्रो वै देवानां मनोतास्तासु हि तेषां मनांस्योतानि, वाग्वै देवानां मनोता तस्यां हि तेषां मनांस्योतानि, गौर्हि देवानां मनोता तस्यां हि तेषां मनांस्योतानि, अग्निर्वै देवानां मनोता तस्मिन् हि तेषां मनांस्योतान्यग्निः सर्वा मनोता अग्नौ मनोताः संगच्छन्ते। '*मनस्*+ *ओत*'। ऐब्रा० २.१० (तु०, कौ०ब्रा० १०.६)

मन्तु

१. यमस्य यो **मनवते सुमन्तु**। √'*मन्*'। ऋ० १०.१२.८

मन्त्र

१. **मन्त्रं मनसा** वनोषितम्। √'*मन्*'। ऋ० १.३१.१३

२. मन्त्रा मननात्। √'*मन्*'। निरु० ७.१२

मन्थ

१. द्वितीयं ज्यायोऽन्नाद्यमजायत। तदभिसंपद्य व्यमथ्नत। स मन्थोऽभवत्। तन्मन्थस्य मन्थत्वम्। √'*मथ्*>*मन्थ*'। जै०ब्रा० ३.३४६; ३.३५०

मन्दमान

१. मन्दमानाय, मोदमानाय। √'*मुद्*'। निरु० ११.९

मन्दिन्

१. एमेनं सृजता सुते **मन्दिमिन्द्राय मन्दिने**। √'*मद्*'। ऋ० १.९.२

२. **मन्दन्तु** त्वा **मन्दिनो** वायविन्दवः। √'*मद्*'। ऋ० १.१३४.२

३. **मन्दन्तु** त्वा **मन्दिनः** सुतासः। √'*मद्*'। ऋ० २.११.११

४. मन्दी मन्दतेः स्तुतिकर्मणः। √'*मन्द्*'। निरु० ४.२४

मन्दु

१. मन्दू मदिष्णू। √'*मन्द्*'+ *उ*'। निरु० ४.१२

२. अपि वा मन्दुना तेनेति स्यात्। '*मन्दुना> मन्दु (तृतीयाविभक्तेर्लुक्)*। निरु० ४.१२

मन्द्रजिह्व

१. मन्द्रजिह्वं मन्दनजिह्वम्। '*मन्दनजिह्व> मन्द्रजिह्व*'। निरु० ६.२३

२. मोदनजिह्वमिति वा। '*मोदनजिह्व> मन्द्रजिह्व*'। निरु० ६.२३

मन्द्रा

१. मन्द्रा, मदना। √'*मद्*'। निरु० ११.२८.२९

२. मन्द्रा (वाक्)। √'मदि् स्तुतिमोदमदस्वप्न-कान्तिगतिषु'। गच्छति स्वाभिधेयं प्राप्नोति, अधिगम्यते वा तदर्थिभिः। √'*मन्द्*'। निघ० १.११.९

मन्द्राजनी

१. मन्द्राजनी (वाक्)। मन्द्रशब्दो व्याख्यातः। मन्द्रमजनं गमनं क्षेपणं प्रेरणमुच्चारणं वा यस्याः सा मन्द्राजनी। '*मन्द्र*+ √'*अज्*'+ *ल्युट्*'। निघ० १.११.१०

मन्धाता

१. मन्धाता (मेधावी)। √'मन्'+ल्युट्', दधातेस्तृच्। मानस्य ज्ञानस्य विधातयिता। √'*मन्*+ *ल्युट्*'+ √'*धा*'+ *तृच्*'। निघ० ३.१५.१२

मन्मन्

१. मन्माति मननानि। √'*मन्> मनन> मन्म*'। निरु० ८.६

२. मन्म, मनः। √'*मन्> मनस्> मन्म*'। निरु० ६.२२, १०.५, ४२

मन्यु

१. मन्युर्मन्यतेर्दीप्तिकर्मणः क्रोधकर्मणो वधकर्मणो वा। मन्यन्त्यस्मादिषवः। √'*मन्*'। निरु० १०.२९

२. मन्युः (क्रोधः)। √'*मन ज्ञाने*'। ज्ञायते त्याज्यत्वेन। √'*मन्*'+ *युच्*'। निघ० २.१३.१०

३. यद्वा, मन्यतेर्दीप्तिकर्मणः। दीप्यतेऽनेन तद्वान्। √'*मन्*'+ *युच्*'। निघ० २.१३.१०

४. यजिमनिशुन्धिदसिजनिभ्यो युच्। √'*मन्*'+ *युच्*'। उणा० ३.२०

ममतु

१. यस्य प्रिये **ममत्तुर्यथयस्य** न रोदसी महिमानं **ममाते**। √'*माङ्*'। ऋ० ३.३२.७

ममसत्यम्

१. ममसत्यम् (सङ्ग्रामः)। मम सत्यं जय इति योद्धृणां वाक्यविषयत्वान्ममसत्यमित्याचक्षते। *मम+ सत्यम्+ जयः> ममसत्सम्*'। निघ० २.१७.१२

मय

१. मयः (सुखम्)। √'मिञ् हिंसायाम्'। हिनस्ति दुःखम्। √'*मि*'+ *असुन्*'। निघ० ३.६.७

मयूख

१. मयूखाः (रश्मयः)। √'डुमिञ् प्रक्षेपणे'। मिन्वन्ति तमः मयूखाः। √'*मि*'+ *ख*+ *ड्यूडागमः*'। निघ० १.५.१२

२. मयतिर्गत्यर्थः। गच्छन्ति सर्वलोकेषु मयूखाः। √'*मय्*'+ *ख*+ *ऊडागमः*'। निघ० १.५.१२

३. माङ् ऊखो मय च। √'*मा*'+ *ऊख> मय*+ *ऊख> मयूख*'। उणा० ५.२५

मरते

१. मरते, म्रियते। √'*मृ*'। निरु० ११.३८

मरीचिता

१. मरीचिपाः (रश्मयः)। √'मृङ् प्राणत्यागे'। म्रियते तमोऽस्मिन्निति मरीचिः रश्मिः (अत्र मरीचिशब्देन मरीचिमान सूर्य उच्यते)। मरीचिमत्सूर्य्यमण्डलं पान्ति मरीचिपाः। √'*मृ*'+ *ईचि*+ √'*पा*'+ *क*'। निघ० १.५.११

मरुत्

१. **मरुतो मृळयन्तु** नः √'*मृळ्*'। ऋ० १.२३.१२

२. रोदसी हि **मरुतश्चक्रिरे** वृधे **मदन्ति** वीरा। √'*मद्*'। ऋ० १.८५.१

३. **मादयध्वं मरुतो** मध्वो अन्धसः। √'मद्'। ऋ० १.८५.६

४. धमन्तो वाणं **मरुतः** सुदानवो **मदे** सोमस्य रण्यानि चक्रिरे। √'मद्'। ऋ० १.८५.१०

५. सुभगः स प्रयज्यवो **मरुतो** अस्तु **मर्त्यः**। √'मृ'। ऋ० १.८६.७

६. यद्वा **मरुत्वः** परमे सधस्थे यद्वावमे वृजनो **मादयासे**। √'मद्'। ऋ० १.१०१.८

७. **मरुद्भिरस्मिन्** यज्ञे बर्हिषि **मादयस्व**। √'मद्'। ऋ० १.१०१.९

८. **अमन्दन्मा मरुतः** स्तोमो अत्र। √'मद्'। ऋ० १.१६५.११

९. यव्या साधारण्येव **मरुतो मिमिक्षु**। √'मिह्'। ऋ० १.१६७.४

१०. तेषु णो **मरुतो मृळयन्तु**। √'मृळ्'। ऋ० १.१६९.५

११. स्तुतासो **मरुतो मृळयन्तु**। √'मृळ्'। ऋ० १.१७१.३

१२. अप्तूर्ये **मरुत** आपिरेषोऽमन्दन्। √'मद्'। ऋ० ३.५१.९

१३. **मृळत** नो **मरुतो** मा। √'मृळ्'। ऋ० ५.५५.९

१४. हये नरो **मरुतो मृळता** नः। √'मृळ्'। ऋ० ५.५७.८,५८.८

१५. स्वया मत्या **मरुतः** सं **मिमिक्षुः**। √'मिक्ष्'। ऋ० ५.५८.५

१६. दशस्यन्तो नो **मरुतो मृळन्तु**। √'मृळ्'। ऋ० ७.५७.१७

१७. **मर्जयन्मरुतो** दाशुषो गृहे। √'मृज्'। ऋ० १०.१२२.५

१८. यज्ञे **मरुतो मृळता** नः। √'मृड्'। अथर्व० १.२०.२

१९. मृग्रोरुतिः। √'मृ'+ उति'। उणा० १.९५

२०. मरुतो मितराविणो वा। √'मा'+ √'रु'। निरु० ११.१३

२१. मितरोचिनो वा। √'मा'+ √'रुच्'। निरु० ११.१३

२२. महद् द्रवन्तीति वा। 'महत्+ √'द्रु'। निरु० ११.१३

२३. मरुत् (हिरण्यम्)। मातेः पूर्वं रोतेर्वोत्तरार्धम्। मितममितं वा रोचते। मितममितं वा रोचयति। √'मा'+ √'रुच्'। निघ० १.२.१३

२४. यद्वा, म्रियतेर्धातोः रुतिप्रत्यये रूपम्। म्रियन्तेऽनेन पुरुषा इति मरुत्—एतदर्थं हि चौरादिभिः पुरुषाः हन्यन्ते। √'मृ'+ उति'। निघ० १.२.१३

२५. मरुतः (ऋत्विजः)। व्याख्यातं हिरण्यनामसु। √'मृ'+ उति'। निघ० ३.१८.६

मरुत्वत्

१. उन्मा **ममन्द** वृषभो **मरुत्वान्**। √'मद्'। ऋ० २.३३.६

२. मरुत्वान् मरुद्भिस्तद्वान्। 'मरुत्+ मतुप्'। निरु० ४.८

मरुद्वृधा

१. मरुद्वृधाः सर्वा नद्यो मरुत एना वर्धयन्ति। 'मरुत्+ √'वृध्'। निरु० ९.२६

मर्ज्य

१. एतं **मृजन्ति मर्ज्यमुप** द्रोणेष्वायवः। √'मृज्'। ऋ० ९.१५.७, सा०उ० १२६.८

२. एतं **मृजन्ति मर्ज्यं** पवमानं दश क्षिपः। √'मृज्'। ऋ० ९.४६.६

३. कविं **मृजन्ति मर्ज्यम्**। √'मृज्'। ऋ० ९.६३.२०

मर्डिता

१. नह्यन्यं बळाकरं **मर्डितारं** शतक्रतो। त्वं न इन्द्र **मृळया** √'मृळ्'। ऋ० ८.८०.१

मर्त्त

१. मर्त्ताः (मनुष्याः)। √'मृङ् प्राणत्यागे'। म्रियन्ते मर्याः। √'मृ'+ तन् > मर्त्त'। निघ० २.३.१३

२. हसिमृग्रिण्वामिदमिलूपूधूर्विभ्यस्तन्। √'मृ'+ तन्'। उणा० ३.८६

मर्त्य

१. यो **ममार** प्रथमो **मर्त्यानाम्**। √'मृङ्'। अथर्व० १८.३.१३

२. मर्त्याः (मनुष्याः)। √'मृङ् प्राणत्यागे'। म्रियन्ते मर्त्यः। √'मृ'+ यत्+ तुडागमश्च'। निघ० २.३.१२

मर्य

१. मर्यो मनुष्यो मरणधर्मा। √'मृ'। निरु० ३.१५

२. मर्या इति मनुष्यनाम। मर्यादाभिधानं वा स्यात्। *(अर्थप्रदर्शनमात्रम्)*। निरु० ४.२

३. मर्याः (मनुष्याः)। √'मृङ् प्राणत्यागे'। म्रियन्ते मर्याः। √'मृ'+ यत्'। निघ० २.३.११

४. छन्दसि निष्टक्र्यदेवहूयप्रणीयोन्नीयोच्छिष्यमर्यस्तर्याध्वर्यखन्य०। √'मृ+ यत्'। अष्टा० ३.१.१२३

मर्यादा

१. मर्यादा मर्यैरादीयते। *'मर्य+ आ+ √'दा'*। निरु० ४.२

२. मर्यादा मर्यादिनोर्विभागः। *'मर्य+ आदि+ ड'*। निरु० ४.२

मलिम्लुच

१. मलिम्लुचः (स्तेनः)। 'मलि+√'म्लुच्' स्तेयकरणे'। मलमस्यास्ति इति मलिनः। मलिनश्चासौ म्लुचश्च। *'मलिन+ √'म्लुच्'+ क'*। निघ० ३.२४.१२

मह

१. महो यदमन्महि मरुतां नाम भद्रम्। *√'मह्'*। ऋ० ४.३९.४

२. मह इत्यन्नम्। अनेन वाव सर्वे प्राणा महीयन्ते। *√'मह्'*। तै०आ० ७.५.३, तै०उप० १.५.३

३. मह इत्यादित्यः। आदित्येन वाव सर्वे लोका महीयन्ते। *√'मह्'*। तै०आ० ७.५.२, तै०उप० १.५.२

४. मह इति चन्द्रमाः। चन्द्रमसा वाव सर्वाणि ज्योतीꣳषि महीयन्ते। *√'मह्'*। तै०आ० ७.५.२, तै०उप० १.५.२

५. पशवो वे महस्तस्माद्यस्यैते बहवो भवन्ति भूयिष्ठमस्य कुले महीयन्ते। *√'मह्'*। शत०ब्रा० ११.८.१.३

६. मह इति ब्रह्म। ब्रह्मणा वाव सर्वे वेदा महीयन्ते। *√'मह्'*। तै०आ० ७.५.३, तै०उप० १.५.३

७. महोदेव इत्येष हि महान् देवः। *(अर्थप्रदर्शनमात्रम्)*। निरु० १३.७

महत्

१. महान् कस्मात्? मानेनान्याञ्जहातीति शाकपूणिः। *'मान+ √'हा'*। निरु० ३.१३

२. मंहनीयो भवतीति वा। *√'मंह्'*। निरु० ३.१३

३. महत् (महत्)। मानेनान्यान् जहातीति शाकपूणिर्मंहनीयो भवतीति वा (निरु० ३.१३) मानेन स्वगुणेन परिमाणेन अन्यान्, यदपेक्ष्य तस्य महत्त्वं, तान् जहाति अतिक्रामति मानशब्दात् जहातेश्च शाकपूणिः। निर्वचनलाघवात् मंहतेः पूजाकर्मणो वदत्याचार्य्यः—इति स्कन्दस्वामी। *'मान+ √'हा'*। निघ० ३.३.१

४. महत् (उदकम्)। *√'मह' पूजायाम्'*। महति महयति वा देवतामनेन पुरुषस्येति महत्, मह्यते वा देवतात्वात्। *√'मह्' (निपातनात्)*। निघ० १.१२.५२

५. यद्वा, मानशब्दाज्जहातेश्च। मानेन स्वगतेन परिमाणेन अन्यान् स्वस्मादूनप्रमाणान् पदार्थान् जहाति अतिक्रामति दशोत्तराण्यवराणि सप्त— इत्यत्र विष्णुपुराणे सर्वमहत्त्वं जलतत्त्वस्योक्तम्। 'मान+√*'हा' (पृषोदरादित्वात्)*। निघ० १.१२.५२

६. वर्त्तमाने पृषद्बृहन्महज्जगच्छतृवच्च। *√'मह्'+ अति'*। उणा० २.८५

महाधने

१. महाधने (सङ्ग्रामः)। √'मह' पूजायाम्'+√'धवि:' प्रीणनार्थः'। धिनोतीति धनम्, प्रीणयतीति सङ्ग्रामो तद्द्वारा। महच्चासौ धनञ्च महाधनम्। महद्धनमर्थोऽनेनेति वा। *√'मह्'+ √'धन्व्'+ अच्'*। निघ० २.१७.४१

महानाम्नी

१. तानि सर्वाणि छन्दांसि संभृत्य तैरिन्द्रो वृत्रमहन्, यन्महान्तमहंस्तस्मान्महानाम्नयः। *'महत्+ √'हन्'*। जै०ब्रा० ३.१११

२. यन् (इन्द्रः) महान्तम् (वृत्रम्) अहंस्तस्मान्महानाम्नयः। *'महत्+ √'हन्'*। जै०ब्रा० ३.१११

३. यदब्रवीन् (प्रजापतिः) महद् बतासामिदं मानमभूदिति तन्महामानीनां महामानित्वं महामानयो ह वै नामैतास्ता महानाम्नय इति परोक्षमाख्यायन्ते। *'महत्+ मान> महामानी> महानाम्नी'*। जै०ब्रा० ३.१०४

४. महान् घोष आसीत् तन्महानाम्न्यः। *'महत् (घोष)= महानाम्नी'*। तां०ब्रा० १३.४.१

महाव्रत

१. महद् व्रतमिति तन्माहाव्रतस्य महाव्रतत्वम्। *'महत्+ व्रत'*। तै०सं० १.२.६.१

२. महन्मर्य्या व्रतं यदिममधिन्वीदिति तन्महाव्रतस्य महाव्रतत्वम्। *'महत्+ व्रत'*। ता०ब्रा० ४.१०.१

३. महद्वा ऽ इदं व्रतमभवद्येनायꣳ समहास्तेति तस्मान्महाव्रतीयो नाम। *'महत्+ व्रत'*। शत०ब्रा० ४.६.४.२

४. ता (देवताः) यदब्रुवन् — महते व्रतं हराम इति तन्महाव्रतस्य महाव्रतत्वम्। *'महत्+ व्रत'*। जै०ब्रा० २.४०९

५. प्रजापतिर्वाव महाꣳस्तस्यैतद्व्रतमन्नमेव। *'महत्+ व्रत'*। तां०ब्रा० ४.१०.२

महिष

१. महिष (महत्)। महतेः। महद्वदर्थः। √*'मह्'+ टिषच्'*। निघ० ३.३८

२. महिषः (महत्)। महतेः+सदेः। महि महति स्थाने सीदन्नास्ते महिषः। √*'मह्'+ क्विप्+* √*'सद्'+ उ (सप्तमी विभक्तेरलुक्)*। निघ० ३.३.८

३. अग्निर्वै महिषः स हीदं जातो महान्त्सर्वमैष्णात्। *'महत्+* √*'इष्'*। शत०ब्रा० ७.३.१.२३

४. महिषाः, महत्यन्तरिक्षलोके आसीनाः। √*'मह्'+* √*'आस्'*। निरु० ७.२६

५. महान्त इति वा। *(अर्थप्रदर्शनमात्रम्)* √*'मह्'*। निरु० ७.२६

६. महिषः............महान् भवति। *(अर्थप्रदर्शनमात्रम्)* √*'मह्'*। निरु० १४.१३

७. अविमह्योष्टिषच्। √*'मह्'+ टिषच्'*। उणा० १.४५

मही

१. महीयम्, महतीयम्। √*'मह्'*। निरु० ४.२१

२. मही (पृथ्वी)। √'मह पूजायाम्'। मह्यते प्रजाभिः महति वा देवताः स्वभारावतरणाय। √*'मह्'+ इन्'*। निघ० १.१.१२

३. यद्वा, मानशब्दाज्जहातेश्च मही। मानेन स्वगुणेन परिमाणेन स्वस्मादूनं परिमाणं पातालं जहाति अतिक्रामति। *'मान+* √*'हा' (पृषोदरादित्वात्)*। निघ० १.१.१२

४. मही (वाक्)। √'मह पूजायाम्'। मह्यते पूज्यतेऽनया देवता इति वा। √*'मह्'+ इन्'*। निघ० १.११.४७

५. मही (गौः)। मही व्याख्यातं पृथिवीनामसु। मह्यते पूज्यते सर्वदेवतात्मकत्वात् उपभोगसाधनत्वाद्वा। मह्यन्तेऽनया देवाः पय आदीनां हविषां तदायत्तत्वात्। √*'मह्'+ इन्'*। निघ० २.११.५

६. मही (द्यावापृथिव्यौ)। व्याख्यातं पृथिवीनामसु। महत्यौ पूजनीये वा। √*'मह्'+ इन्'*। निघ० ३.३०.१८

महीय

१. महीया माँसान्यस्य तानि। माँसैर्हि सह महीयते। √*'मह्'*। जै०उप० १.४८.५

महेन्द्र

१. यन्महानिन्द्रोऽभवत्तन्महेन्द्रस्य महेन्द्रत्वम्। 'महत्+ इन्द्र'। ऐ०ब्रा० ३.२१

मह्ना

१. मह्ना बलस्य महत्त्वेन। *'महत्त्व> मह्ना (अर्थप्रदर्शनमात्रं वा)*। निरु० १०.१०.११.३७

मांश्चत्व

१. मांश्चत्वः (अश्वः)। √'मन ज्ञाने'। मक्षु चरतीति। √*'मन्+* √*'चर्'*। निघ० १.१४.१८

मांस

१. मांसं माननं वा। √*'मन्'*। निरु० ४.३

२. मानसं वा। *'मनस्'*। निरु० ४.३

३. मनोऽस्मिन्त्सीदतीति वा। *'मनस्+* √*'सद्'*। निरु० ४.३

४. मनेदीर्घश्च। √*'मन्'+ स'*। उणा० ३.६४

मा

१. चन्द्रमा वै मा मासः। तस्मान्मेत्याह। मा इति हैतत् परोक्षेण वा। √*'मा'*। जै०उप० ३.३.२.६

२. अयं वै (पृथिवी) लोको मा। अयं हि लोको मित इव। √*'मा'*। शत०ब्रा० ८.३.३.५

माङ्गद

१. मामागमिष्यतीति च ददाति। *'माम्+ आ+* √*'गम्'+* √*'दा'*। निरु० ६.३२

मातरिश्वन्

१. **मातरिश्वा यदमिमीत मातरि।** √*'माङ्'*। ऋ० ३.२९.११

मातवा

१. मातवा, मननाय। √*'मन्'*। निरु० ११.४२

मातृ

१. वाश्रेव विद्युन्मिमाति वत्सं न **माता** सिषक्ति। √*'माङ्'*। ऋ० १.३८.८

८. गौरमीमेदनु वत्सं मिषन्तं मूर्द्धानं हिङ्ङकृणोन्मातवा उ। √'माङ्'। ऋ० १.१६४.२८

३. **मातरिश्वा यदमिमीत मातरि**। √'माङ्'। ऋ० ३.२९.११

४. **मात्राया मातुर्मात्राधि निर्मिता**। √'माङ्'। अथर्व० ८.९.५

५. माताऽन्तरिक्षं निर्मीयन्तेऽस्मिन् भूतानि। √'मा'। निरु० २.८

६. मातरो भासो निर्मात्र्यः। √'मा'। निरु० १२.७

७. मातरः (नद्यः)। √'माङ् माने'। निर्मीयते प्रजापतिना, मान्ति आसु आप इति वा मातृवल्लोकस्य रक्षिका इति वा, नदीमातृक इति हि देशस्य व्यपदेशः। √'मा'+ तृन् या तृच्'। निघ० १.१३.३६

मात्रा

१. सं **मात्राभिर्ममिरे** येमुरुर्वी। √'माङ्'। ऋ० ३.३८.३

२. यज्ञस्य **मात्रां** वि **मिमीत** उ त्वः। √'माङ्'। ऋ० १०.७१.११

३. **मात्राया मातुर्मात्राधि निर्मिता**। √'माङ्'। अथर्व० ८.९.५

४. इयं **मात्रा मीयमाना मिता**। √'मा'। अथर्व० ११.१.६

५. इमां **मात्रां मिमीमहे** यथापरं न मासातै। √'मा'। अथर्व० १८.२.३८—४४

६. **अमासि मात्रां** स्वरगाम्। √'मा'। अथर्व० १८.२.४५

७. **मात्रे** नु ते **सुमिते** इन्द्र। √'मा'। अथर्व० २०.७६.६

८. यद्वेव **मिमीते** तस्मान्मात्रा। √'मा'। शत०ब्रा० ३.९.४.८

९. मात्रा मानात्। √'मा'। निरु० ४.२५

१०. हुयामाश्रुभसिभ्यस्त्रन्। √'मा'+ त्रन्'। उणा० ४.१६९

मादिल

१. त (देवाः) एतत् सामापश्यन्। तेनास्तुवत। ततो वै तेषां मद्वान् सोमोऽभवत्, सोममदस्यामाद्यन्। तदेव मादिलस्य मादिलत्वम्। ·'मद्वान्> मादिल'। ऐ०आ० २.२.१

माध्यम्

१. **माध्यंदिने** सवने **मत्सदिन्द्रः**। √'मद्'। ऋ० ५.४०.३

माध्यम

१. स (प्राणः) यदिदं सर्वं मध्यतो दधे यदिदं किंच, तस्मान्माध्यमास्तस्मान्माध्यमा इत्याचक्षत एतमेव (प्राणं) सन्तम्। 'मध्य+√'धा'। ऐ०आ० २.२.१

मान

१. सद्मेव प्राचो वि **मिमाय मानैः**। √'मा'। ऋ० २.१५.३

२. **मानेनेव** तस्थिवाँ अन्तरिक्षे वियो **ममे** पृथिवीं सूर्येण। √'मा'। ऋ० ५.८५.५

३. माने, निर्माणे। √'मा'। निरु० २.२२

मानवी

१. मनुर्ह्येतामग्रेऽजनयत तस्मादाह मानवीति। 'मनु= मानवी'। शत०ब्रा० १.८.१.२६

मानुष

१. तद् देवाश्चर्षयश्चोपसमेत्याब्रुवन्। मेदं दुषदिति। यदब्रुवन् मेदं दुषदिति तन्मादुषस्य मादुषत्वम्। मादुषं ह वै नामैतत्। तन्मानुषमित्याख्यायते। 'मा+ इदम्+ दुषत्> मादुष> मानुष'। जै०ब्रा० ३.२६३

२. यदब्रुवन्मेदं प्रजापते रेतो दुषदिति तन्मादुषमभवत् तन्मादुषस्य मादुषत्वं मादुषं ह वै नामैतद्यत्मानुषं तन्मादुषं सन्मानुषमित्याचक्षते। 'मा+ इदम्+ दुषत्> मादुष> मानुष'। ऐ०ब्रा० ३.३३

माया

१. यदिन्द्राहन्प्रथमजामहीनामान्**मायिनाममिनाः** प्रोत **माया**। √'मीञ् हिंसायाम्'। ऋ० १.३२.४

२. ते **मायिनो ममिरे** सुप्रचेतसः। √'माङ्'। ऋ० १.१५९.४

३. **मायाविनो ममिरे** अस्य **मायया**। √'मा'। ऋ० ९.८३.३

४. माया (प्रज्ञा)। √'माङ् माने'। मीयन्ते परिच्छिद्यन्तेऽनया पदार्थाः। √'मा'+ य'। निघ० ३.९.९

५. माछाशसिभ्यो यः। √'मा'+ य'। उणा० ४.११०

मायाविन्

१. **मायाविनो ममिरे** अस्य **मायया**। √'मा'। ऋ० ९.८३.३, सा०पू० ६.२.२, सा०उ० ८७७

मायिन्

१. प्र **मायिनाममिनाद्** वर्पणीतिः। √'माङ्'। ऋ० ३.३४.३

२. **मायिनो ममिरे** रूपमस्मिन्। √'माङ्'। ऋ० ३.३८.७

२. नि **मायिनो ममिरे** रूपमस्मिन्। √'*माङ्*'। ऋ० ३.३८.७

३. न ता **मिनन्ति मायिनो** न धीराः। √'*मीङ्*'। ऋ० ३.५६.१

मायु

१. **मिमाति मायुं** पयते पयोभिः। √'*माङ्*'। ऋ० १.१६४.२८, अथर्व० ९.१.८.१०.६

२. **मिमाति मायुं** ध्वसनावधिश्रिता। √'*माङ्*'। ऋ० १.१६४.२९, अथर्व० ९.१०.७

३. मिमाति मायुं शब्दं करोति। √'*मा*'। निरु० २.९

४. मायुः (वाक्)। √'डुमिञ् प्रक्षेपणे'। क्षिप्यते प्रेर्य्यते उच्चार्य्यते इति मायुः, प्रक्षिपति वृष्ट्युदकं भूमाविति वा। √'*मि*'+ *उण्*'। निघ० १.११.२७

५. कृवापाजिमिस्वदिसाध्यशूभ्य उण्। √'*मि*'+ *उण्*'। उणा० १.१

मायुक

१. मायुकः (ह्रस्वः)। √'डुमिञ् प्रक्षेपणे'। प्रक्षिप्यतेऽनायासेन। √'*मि*'+ *उण्*+ *क*'। निघ० ३.२.४

मारुत

१. यदु मरुतोऽपश्यन् तस्मान्मारुतमित्याख्यायते। '*मरुत्*+ *मारुत*'। जै०ब्रा० ३.२३७

मार्गीयव

१. यन्मृगयुर्देवोऽपश्यत्तस्मान्मार्गीयवमित्याख्यायते। '*मृगयु*> *मार्गीयव*'। जै०ब्रा० ३.२१२

मार्जाली

१. **मार्जाल्यो मृज्यते** स्वे दमूनाः। √'*मृज्*'। ऋ० ५.१.८

मार्तण्ड

१. स वा इन्द्र ऊर्ध्व एव प्राणमानुदश्रयत मृर्तामितरमाण्डवापद्यत, स वाव मार्तण्डो यस्येमे मनुष्याः प्रजाः। '*मृत*+ *आण्ड*> *मार्तण्ड*'। मै०सं० १.६.१२

मास

१. **यस्मान्मासा निर्मितास्त्रिंशदराः**। √'*मा*'। अथर्व० ४.३५.४

२. इमां **मिमीमहे** यथापरं न **मासातै**। √'*मा*'। अथर्व० १८.२.३८—४४

३. सो(अन्नमयः पुरुषः)ऽब्रवीद् इमा (ऋतवः) वै मे सद् अभूद् इति। त एव मासा अभवन्। '*मे*+ *सद्*= *मास*'। जै०ब्रा० ३.३८०

४. मासा मानात्। √'*मा*'। निरु० ४.२७

मासकृत्

१. मासकृन्मासानां चार्धमासानां च कर्ता चन्द्रमा। '*मास*+ √'*कृ*'। निरु० ५.२१

माहिन

१. माहिनः (महत्)। √'महतेः'। √'*मह्*'+ *इनण्*'। निघ० ३.३.१७

मित्र

१. राजा न **मित्रं** प्र **मिनाति** धीरः। √'*मि*'। ऋ० ९.९७.३०

२. युजं न जना **मिनन्ति मित्रम्**। √'*मि*'। ऋ० १०.८९.८

३. प्र ये **मित्रं** प्रार्यमणं दुरेवाः प्र सङ्गिरः प्र वरुणं **मिनन्ति**। √'*मि*'। ऋ० १०.८९.९

४. मित्रः प्रमीतेस्त्रायते। √'*मि*'+ √'*त्रा*'। निरु० १०.२१

५. संमिन्वानो द्रवतीति वा। √'*मिन्व्*'+ √'*द्रु*'। निरु० १०.२१

६. मेदयतेर्वा। √'*मिद्*'। निरु० १०.२१

७. अमिचिमिशसिभ्यः क्त्रः। √'*मि*'+ *क्त्र*'। उणा० ४.१६५

मित्रगुप्त

१. ते हेमे लोका मित्रगुप्तास्तस्मादेषां लोकानां न किञ्चन मीयते। √'*मा*'। शत०ब्रा० ६.५.४.१४

मिथुन

१. मिथुनौ कस्मात्, मिनोतिः श्रयतिकर्मा। थु इति नामकरणः। नयतिः परः। समाश्रितावन्योन्यं नयतः। √'*मि*'+ *थु*+ √'*नी*'। निरु० ७.२९

२. (मिनोतिः श्रयतिकर्मा)। थकारो वा। वनिर्वा। (समाश्रितावन्योन्यं) वनुतो वा। √'*मि*'+ *थ*+ *वन्*'। निरु० ७.२९

३. मनुष्यमिथुनावप्येतस्मादेव। मेथन्तावन्योन्यं वनुत इति वा। √'*मिथ्*'+ *वन्*'। निरु० ७.२९

४. क्षुधिपिशिमिथिभ्यः कित्। √'मिथ्'+ उनन्'। उणा० ४.५५

मिव्वहु

१. मिव्वहुम् (धनम्)। √'मिह' सेचने'। सिच्यतेऽर्थिभ्यो दातृभिः। √'मिह्'। निघ० २.१०.११

मीव्हे

१. मीव्हे (सङ्ग्रामः)। मीव्हम्— इति धननामसु व्याख्यातम्। मीव्हार्थत्वात् सङ्ग्रामोऽपि मीव्हम्। √'मिह्'। निघ० २.१७.१७

२. यद्वा, मीव्हमस्मिन्नस्तीति। 'मीव्ह+ यत्(मत्वर्थीयः) तस्य लुक् (अष्टा०वा० ४.४.१२८)। निघ० २.१७.१७

मुक्षीजा

१. मुक्षीजा मोचनाच्च सयनाच्च ततनाच्च। √'मुच्'+ √'सि'+ तन्'। निरु० ५.१९

मुञ्ज

१. मुञ्जो मुच्यत इषीकया। √'मुच्'। निरु० ९.८

मुद

१. ओषधयो वै मुदः ओषधिभिर्हीदꣳ सर्वं मोदते। √'मुद्'। शत०ब्रा० ९.४.१.७

मुद्गल

१. मुद्गलो मुद्गवान्। 'मुद्ग+ ल (मत्वर्थीयः)। निरु० ९.२४

२. मुद्गगिलो वा। √'मुन्द्'+ √'गिल्'। निरु० ९.२४

३. मदनं गिलतीति वा। 'मदन+ √'गिल्'। निरु० ९.२४

४. मदंगिलो वा। √'मद्'+ √'गिल्'। निरु० ९.२४

५. मुदंगिलो वा। √'मुद्'+ √'गिल्'। निरु० ९.२४

मुषीवत्

१. मुषीवान् (स्तेनः)। √'मुष' स्तेये'। मुषीमोषण-मस्यास्ति। अत्र परोक्षहर्त्ता चौरो मुषीवान्, प्रत्यक्षहर्त्ता हुरश्चित्' इति माधवः। √'मुष्'+ अच्+ ङीष् > मुषी, मुषी+ वनिप्'। निघ० ३.२४.११

मुष्टि

१. मुष्टिर्मोचनाद्वा। √'मुच्'। निरु० ६.१

२. मोषणाद्वा। √'मुष्'। निरु० ६.१

३. मोहनाद्वा। √'मुह्'। निरु० ६.१

मुसल

१. मुसलं मुहुः सरम्। 'मुहुर्+ √'सृ'। निरु० ९.३५

मुहुर्

१. मुहुर्मूढ इव कालः। √'मुह्'+ उसि'। निरु० २.२५

२. मुहेः किच्च। √'मुह्'+ उस्'। उणा० २.१२२

मुहुर्त

१. स (प्रजापतिः) पञ्चदशाह्नो रुपाण्यपश्यदात्मनस्तन्वो मुहुर्तांल्लोकम्पृणाः पञ्चदशैव रात्रेस्तद्यन्मुहु त्रायन्ते तस्मान्मुहुर्ताः। √'मुहुर्'+ √'त्रा'। शत०ब्रा० १०.४.२.१८

२. मुहुर्तो मुहुर्ऋतुः। 'मुहुर्+ ऋतु'। निरु० २.२५

मूजवत्

१. मूजवान् पर्वतो मुञ्जवान्। 'मुञ्जवान्> मूजवान्'। निरु० ९.८

मूत्र

१. एवा ते मूत्रं मुच्यताम्। √'मुच्'। अथर्व० १.३.६—९

२. सिविमुच्योष्टेरू च। √'मुच्'+ ष्ट्रन्'। उणा० ४.१६४

मूर

१. मूराः मूढाः। 'मूढ> मूर'। निरु० ६.८

मूर्धन्

१. मूर्धा मूर्त्तमस्मिन् धीयते। 'मूर्त्त+ √'धा'। निरु० ७.२७

मूल

१. मूलं मोचनाद्वा। √'मुच्'। निरु० ६.३

२. मोषणाद्वा। √'मुष्'। निरु० ६.३

३. मोहनाद्वा। √'मुह्'। निरु० ६.३

४. मूशक्यविभ्यः क्लः। √'मू'+ क्ल'। उणा० ४.१०९

मूष, मूषिका

१. मूषिका पुनर्मुष्णातेः। मूषोऽप्येतस्मादेव। √'मुष्'। निरु० ४.५

२. मुषेर्दीर्घश्च। √'मुष्'+ किकन्'। उणा० २.४३

मृग

१. अस्मन्मृगं न व्रा मृगयन्ते। √'मृग्'। ऋ० ८.२.६

२. मृगो मार्ष्टेर्गतिकर्मणः। √'मृज्'। निरु० १.२०; १३.३

३. मृगः, मृगमयोऽस्या दन्तः। *'मृग+ अच् (मत्वर्थीयः)'*। निरु० ९.१९

४. मृगयतेर्वा। √*'मृग्'*। निरु० ९.१९

५. मृगाणां मार्गणकर्मणामादित्यरश्मीनाम्। √*'मृग्'*। निरु० १४.१३

मृळति

१. मृळतिर्दानकर्मा। √*'मृळ्'*। निरु० १०.१५

मृळयति

१. मृळयतिरुपदयाकर्मा पूजाकर्मा वा। √*'मृळय्'*। निरु० १०.१६

मृत्यु

१. **मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।** √*'मुच्'*। यजु० ३.६०

२. स समुद्रादमुच्यत स मुच्युरभवत्तं वा एतं मुच्युं सन्तं मृत्युरित्याचक्षते परोक्षेण परोक्षप्रिया इव हि देवा भवन्ति प्रत्यक्षद्विषः। √*'मुच्' >मुच्यु> मृत्यु'*। गो०ब्रा० १.१.७

३. मृत्युर्मारयतीति सतः। √*'मारय्'*। निरु० ११.६

४. मृतं च्यावयतीति शतबलाक्षो मौद्गल्यः। *'मृत+ √'च्यावय्' (√'मृ'+ √'च्यु'>मृच्यु> मृत्यु')*। निरु० ११.६

५. मृत्युः मदेर्वा। √*'मद्'*। निरु० ११.७

६. मुदेर्वा। √*'मुद्'*। निरु० ११.७

७. भुजिमृङ्भ्यां युक्त्युकौ। √*'मृ'+ त्युक्'*। उणा० ३.२१

मृधः

१. मृधः (सङ्ग्रामः)। मृधिर्हिंसार्थः। √*'मृध्'*। निघ० २.१७.२०

मृध्रवाच्

१. मृध्रवाचः, मृदुवाचः। *'मृदुवाच्> मृध्रवाच्'*। निरु० ६.३१

मेघ

१. मेघः कस्मात्? मेहतीति सतः। √*'मिह्'*। निरु० २.२१

२. मेघः (मेघः)। √'मिह् सेचने'। मेहति सिञ्चति वर्षेण भूमिं मेघः। √*'मिह्'*। निरु० १.१०.२४

मेथति

१. मेथतिराक्रोशकर्मा। √*'मिथ्' या √'मेथ्'*। निरु० ४.२

मेदस्

१. मेदोरुपा हि पशवः, सर्वो वै पशोर्मेद्यतोऽङ्गानि मेद्यन्ति। √*'मिद्'*। मै०सं० ३.१०.३ (तु०, तै०सं० ६.३.११.१)

२. मेदो मेद्यतेः। √*'मिद्'*। निरु० ४.३

मेध मेधा

१. मेधा मतौ धीयते। *'मति+ √'धा'*। निरु० २.१९

२. मेधा (धनम्)। √'मिधृ' √'मेधृ' सङ्गमे च, चकारात् हिंसामेधयोश्च। सङ्गच्छतेऽनेन सर्वं तद्वता, हिंस्यते वा तद्वान् चौरादिभिः। √*'मिध्' या √'मेध्'+ घञ्'*। निघ० २.१०.२२

३. यद्वा, मतौ धीयते अर्जयितव्यं रक्षितव्यं दातव्यमिति धनवता बुद्धौ धनं धार्य्यते। मतिशब्दोपपदात् √'धा' धातोः। *'मति+ √'धा'*। निघ० २.१०.२२

४. मेधः (यज्ञः)। व्याख्यातं धननामसु। गच्छन्त्यत्र देवता हविर्गृहीतुं दक्षिणार्थं वा सदस्यात्, हिनस्त्यनेन पापं वा। *'मति+ √'धा'*। निघ० ३.१७.४

मेधाविन्

१. मेधावी कस्मात् मेधया तद्वान् भवति। *'मेधा+ विनि'*। निरु० २.१९

२. अस्मायामेधास्रजो विनिः। *'मेधा+ विन्'*। अष्टा० ५.२.१२१

मेना

१. मेना मानयन्त्येनाः। √*'मानय्'*। निरु० ३.२१

२. मेना (वाक्)। √'मान् पूजायाम्'। पूज्यतेऽनया गुर्वादिरुपदेशवाक्येन, पूज्या वा देवतात्वात्। ''मेनां गर्जितशब्दम्''— इतिमाधवः। √*'मान्'+ इनच्'*। निघ० १.११.१९

मेनि

१. मेनिः (वज्रः)। मन्यतेः कान्तिकर्मणः। काम्यते हि आयुधम्। √*'मन्'+ कि'*। निघ० २.२०.१५

२. यद्वा, √'मिञ् हिंसायाम्'। हेतिवदर्थः। √*'मि'+ नि'*। निघ० २.२०.१५

मेलि

१. मेलिः (वाक्)। सम्पृक्ता ह्यर्थेन वाक्। ''मेलिः स्यात् त्राणयोजनात्'' इति माधवः। √*'मेल्'+ इञ्'*। निघ० १.११.२०

मेष

१. मेषो मिषतेः। √'*मिष्*'। निरु० ३.१६

मेहना

१. मंहनीयं धनमस्ति। √'*मंह्*'। निरु० ४.४

२. यन्म इह नास्तीति वा। '*मे+ इह+ न*'। निरु० ४.४

मोकी

१. मोकी (रात्रिः)। √'मुच्लृ मोक्षणे'। मुञ्चन्त्यस्यामवश्यायं मध्यमः। मुञ्चन्ति प्राणिनः स्वस्वव्यापारात् मोक्। तदस्यामस्तीति। √'*मुच्*'+ *इन्*'। निघ० १.७.१८

मौजवत

१. मौजवतो मूजवति जाताः। '*मूजवत् (जातः)> मौजवत*'। निरु० ९.८

यकृत्

१. यकृद् यथा कथा च कृत्यते। '*यथा+* √'*कृत्*' > *यकृत्*'। निरु० ४.३

यजत

१. यजतस्य, यथयस्य। '*यथय> यजत*'। निरु० ८.७

यजत्र

१. देवी देवेभिर्यजते **यजत्रैः**। √'*यज्*'। ऋ० ४.५६.२

२. **यजत्र** यक्षद्राजन्त्सर्वतातेव नु द्यौः। √'*यज्*'। ऋ० ६.१२.२

३. देवी देवेषु **यजता यजत्र**। √'*यज्*'। ऋ० १०.११.८, अथर्व० १८.१.२६

यजध्यै

१. यजध्यै, यजनाय। √'*यज्*'। निरु० ८.१२

यजमान

१. **यजास्यग्ने** बृहद्यजमानो वयो धाः। √'*यज्*'। ऋ० ३.२९.८

२. **यजमान** इयक्षत्यभीदयज्वनो भुवत्। √'*यज्*'। ऋ० ८.३१.१५–१८

३. यो ह वै.........अतियजते, पुनर्ह सोऽमुष्मिन् लोके यजमान आस्ते। √'*यज्*'। जै०ब्रा० १.२३३

४. द्विर्ह वै यजमानो जायते मिथुनादन्यज्जायते यज्ञादन्यत्। √'*यज्*'। जै०ब्रा० १.२५६

यजिष्ठ

१. **यजिष्ठं** त्वा **यजमाना** हुवेम। √'*यज्*'। ऋ० १.१२७.२

२. **यजिष्ठेन** मनसा **यक्षि** देवान्। √'*यज्*'। ऋ० ३.१५.५, यजु० १८.७५

३. **यजिष्ठः** स प्र **यजतामृतावा**। √'*यज्*'। ऋ० ६.१५.१३

४. **यजिष्ठो** देवाँ ऋतुशो **यजाति**। √'*यज्*'। ऋ० १०.२.५

५. अग्ने **यजिष्ठो** अध्वरे देवान् देवयते **यज**। √'*यज्*'। सा०पू० १.११.४

यजीयान्

१. अग्ने **यजस्व** हविषा **यजीयान्**। √'*यज्*'। ऋ० २.९.४

२. स देवान् **यक्षदिषितो यजीयान्**। √'*यज्*'। ऋ० ३.४.३

३. स नो **यक्षद्देवताता यजीयान्**। √'*यज्*'। ऋ० ३.१९.१

४. **यजस्व** होतरिषितो **यजीयान्**। √'*यज्*'। ऋ० ६.११.१

५. **यक्षद्देवताता यजीयान्**। √'*यज्*'। ऋ० १०.५३.१

६. स एनान् **यक्षीषितो यजीयान्**। √'*यज्*'। ऋ० १०.११०.३, यजु० २९.२८

७. **यजीयान्देवं** त्वष्टारमिह **यक्षि** विद्वान्। √'*यज्*'। ऋ० १०.११०.९, यजु० २९.३४, अथर्व० ५.१२.९

८. यजीयान् यष्टृतरः। ('*प्रत्ययार्थप्रदर्शनम्*')। निरु० ८.८

यजुस्

१. एष (वायुः) हि यन्नेवेदꣳ सर्वं जनयत्येतं यन्तमिदमनु प्रजायते तस्माद् वायुरेव यजुः। '*यत्+* √'*जन्*'। शत०ब्रा० १०.३.५.१–२

२. अयमेवाकाशो जूः। यदिदमन्तरिक्षमेतꣳ ह्याकाशमनु जवते तदेतद्यजुर्वायुश्चान्तरिक्षं च यच्च जुश्च तस्माद्यजुः। '*यत्+* √'*जु*'>*यज्जू* > *यजुस्*'। शत०ब्रा० १०.३.५.१,२

३. यजुरित्येष (पुरुषः)। हीदꣳसर्वं युनक्ति। √'*युज्*'। शत०ब्रा० १०.५.२.२०

४. यजुभिर्यजन्ति। √'*यज्*'। काठ० संक० २७.१

५. यजो ह वै नामैतद्यजुरिति। √'*यज्*'। शत०ब्रा० ४.६.७.३

६. स एष एव यजुः। एष हीदं सर्वं जरयतीव। √'जॄ'। जै०ब्रा० ३.३७९

७. प्राणो वै यजुः प्राणे हीमानि सर्वाणि भूतानि युज्यन्ते। √'युज्'। शत०ब्रा० १४.८.१४.२

८. अर्तिप+वपियजितनिधनितपिभ्यो नित्। √'यज्'+ उस्'। उणा० २.११९

यज्ञ

१. **यज्ञं** नो **यक्षतामिमम्**। √'यज्'। ऋ० १.१३.८,१४२.८, १८८.७

२. या ते धामानि हविषा **यजन्ति** ता ते विश्वा परिभूरस्तु **यज्ञम्**। √'यज्'। ऋ० १.१९.१९

३. यो वां **यज्ञैः** शशमानो ह दाशति कविर्होता **यजति** मन्मसाधनः। √'यज्'। ऋ० १.१५१.७

४. **यज्ञेन यज्ञमयजन्त** देवाः। √'यज्'। ऋ० १.१६४.५०; १०.९०.१६, यजु० ३१.१६, अथर्व० ७.५.१

५. **यज्ञेन** वर्द्धत जातवेदसमग्निं **यजध्वे** हविषा तना गिरा। √'यज्'। ऋ० २.२.१

६. **सुयज्ञा** आविवासन्तो मरुतो **यजन्ति**। √'यज्'। ऋ० ५.४५.४

७. **ईजे यज्ञेभिः** शशमे शमीभिः। √'यज्'। ऋ० ६.३.२

८. **यज्ञेभिः** सूनो सहसो **यजासि**। √'यज्'। ऋ० ६.४.१

९. **ईजे यज्ञेषु यथायम्**। √'यज्'। ऋ० ६.१६.४

१०. **यज्ञस्य** केतुमरुषं **यजध्यै**। √'यज्'। ऋ० ६.४९.२

११. **यज्ञे** अस्मिन् विदुष्टरा द्रविणमा **यजेथाम्**। √'यज्'। ऋ० १०.७०.७

१२. इमं **यज्ञमयजन्त** पूर्वे। √'यज्'। ऋ० १०.१३०.६

१३. **यजन्ति** ता ते विश्वा परिभूरस्तु **यज्ञम्**। √'यज्'। यजु० ४.३७

१४. **अयजन्तोर्जा यद्यज्ञमयजन्त** देवाः। √'यज्'। यजु० १७.५५

१५. अजातो वै पुरुषः, स वै यज्ञेनैव जायते। √'जन्'। मै०सं० ३.६.७

१६. अजातो ह वै तावत्पुरुषो यावन्न यजते, स यज्ञेनैव जायते। 'यत्+ जन्'। जै०उप० ३.३.८.४

१७. स (सोमः) तायमानो जायते स यज्जायते तस्माद्यज्ञो यज्ञो ह वै नामैतद्यज्ञ इति। 'यत्+ √'जन्'। शत०ब्रा० ३.९.४.२३

१८. तद्यदेनेन सोऽग्रेऽयजत, तस्माद् यज्ञो नाम। √'यज्'। शत०ब्रा० २.४.४.२

१९. किमु स यज्ञेन यजेत्। 'यज्'। मै०सं० १.४.५

२०. यज्ञः कस्मात्? प्रख्यातं यजतिकर्मेति नैरुक्ताः। √'यज्'+ नङ्> यज्ञ'। निरु० ३.१९

२१. याच्ञो भवतीति वा। *'याच्ञा> यज्ञ'*। निरु० ३.१९

२२. यजुरुन्नो भवतीति वा। *'यजुस्+ उन्न> यजुरुन्न> यज्ञ'*। निरु० ३.१९

२३. बहुकृष्णाजिन इत्यौपमन्यवः। *'अजिन्> इजिन> यजिन> यज्ञ'*। निरु० ३.१९

२४. यजूंष्येनं नयन्तीति वा। *'यजुस्+ √'नी'> यजुर्नय> यजन> यज्ञ'*। निरु० ३.१९

२५. यज्ञः (यज्ञः)। √'यज्'। इज्यन्तेऽत्र देवताः। √'यज्'। निघ० ३.१७.१

यज्ञायज्ञीय

१. यज्ञायज्ञा वो अग्नये इति भवति। एष ह वै यज्ञोयज्ञो यद् यज्ञायज्ञीयम्। यज्ञं यज्ञं वहतीति ह वै यज्ञायज्ञीयस्य यज्ञायज्ञीयत्वम्। *'यज्ञ+ यज्ञ'*। जै०ब्रा० १.१७३

२. यज्ञे यज्ञे नो भविष्यतीति (देवाः) अब्रुवन्। तद् यज्ञायज्ञीयमभवत्। तद् यज्ञायज्ञीयस्य यज्ञायज्ञीयत्वम्। *'यज्ञ+ यज्ञ'*। तां०ब्रा० ८.६.३

यथय

१. स **यथयो यजतु यथयाँ** ऋतून्। √'यज्'। ऋ० १०.११.१, अथर्व० १८.१.१८

२. **यजामहै यथयान्** हन्त देवान्। √'यज्'। ऋ० १०.५३.२

३. देवा देवीं **यजतां यथयामिह**। √'यज्'। ऋ० १०.१०१.९

यथयाय

१. यथयाय, यजनाय। *'यजन> यथय'*। निरु० १०.८

यत्

१. **यच्छं** च योश्च मनुरायेजे। √'यज्'। ऋ० १.११४.२

२. **यया** वाचा **यजति** पज्रियो वाम्। √'यज्'। ऋ० १.१२०.५

३. शुचि **यत्ते** रेक्ण **आयजन्त**। √'यज्'। ऋ० १.१२१.५

४. वि **यदस्थाद्यजतो** वातचोदितः। √'यज्'। ऋ० १.१४१.७

यतस्त्रुक्

१. यतस्त्रुचः (ऋत्विजः)। √'यमु उपरमे'+√'स्त्रु गतौ'। √'यम्'+ क्त+ √'स्त्रु'+ *क्विप्*'। निघ० ३.१८.५

यति

१. उद्यतिं च श्लोक **यंसत्सवितेव** प्र बाहू। √'*यम्*'। ऋ० ११०.३

यदु

१. यदवः (मनुष्याः)। √'यमु उपरमे'। यम्यते नियम्यते आचार्य्येण अपथप्रवृत्ताः, राज्ञा वा। √'*यम्*'+ *दुक्*'। निघ० २.३.१८

यन्तृ

१. वायुर्वै यन्ता वायुना हीदं यतमन्तरिक्षं न समृच्छति। √'*यम्*'। ऐब्रा० २.४१

यम

१. एष वै यमो य एष (सूर्यः) तपत्येष हीदꣳ सर्वं यमयत्येतेनेदꣳ सर्वं यतम्। √'*यम्*'। शत०ब्रा० १४.१.३.४

२. स यमो देवानामिन्द्रियं वीर्यमयुवत तद्यमस्य यमत्वम्। √'*यु*'। तै०सं० २.१.४.३-४

३. अग्निर्वै यम इयं (पृथिवी) यम्याभ्याꣳ हीदꣳ सर्वं यतम्। √'*यम्*'। शत०ब्रा० ७.२.१.१०

४. एष वै यमो य एषोऽन्तश्चन्द्रमसि। एषं हीदं सर्वं यमिति। √'*यम्*'। जै०ब्रा० १.२८

५. यमो यच्छतीति सतः। √'*यम्*'। निरु० १०.१९

यमिष्ठ

१. सं या रश्मेव **यमतुर्यमिष्ठा**। √'*यम्*'। ऋ० ६.६७.१

यमुना

१. यमुना प्रयुवती गच्छतीति वा। √'*यु*'। निरु० ९.२६

२. प्रवियुतं गच्छतीति वा। √'*यु*'। निरु० ९.२६

३. अजियमिशीङ्भ्यश्च। √'*यम्*'+ *उनन्*'। उणा० ३.६१

यम्या

१. यम्या (रात्रिः)। √'यम उपरमे'। उपरमयति प्राणिनां चेष्टाः। √'*यम्*'+ *यक् अथवा* √'*यम्*'+ *यत्* (*अष्टा०* ३.१.१००)। निघ० १.७.७

२. अथवा यमनीया उपरमयितव्या आदित्यचारेणेति। (*पूर्ववत्*)। निघ० १७.७

यव

१. ततो देवेभ्यः सर्वा एवौषधयः ईयुर्यवा हैवेभ्यो नेयुः। तद्वै देवा अस्पृण्वन्त। त एतैः सर्वाः सपत्नानामोषधीरयुवत यदयुवत तस्माद्यवा नाम। √'*यु*'। शत०ब्रा० ३.६.१.८-९

२. योऽसुराणां (अर्धमासः=कृष्णपक्षः) स यव यवायुवत हितं देवाः। √'*यु*'। शत०ब्रा० १.७.२.२६

३. स यो देवानाम् (अर्धमासः;शुक्ल पक्षः) आसीत्। स यवायुवत हि तेन देवाः। √'*यु*'। शत०ब्रा० १.७.२.२६

४. स यो (अर्धमासः) देवानामासीत्, स यवाऽयुवत हि तेन देवा, योऽसुराणाꣳसो यवा नहि तेनासुरा अयुवत। √'*यु*'। शत०ब्रा० १.७.२.२६

५. यवैर्वा आदित्या अङ्गिरसां यज्ञमयुवत। यद्यज्ञं यवैरयुवत तद्यवानां यवत्वम्। √'*यु*'। जै०ब्रा० २.११७

यवयावान

१. **यवयावानो** देवा **यावयन्त्वेनम्**। √'*यु*'। अथर्व० ९.२.१३

यविष्ठ

१. एतद्धास्य (अग्नेः) प्रियं धाम यद्यविष्ठ इति यद्वै जात इदꣳ सर्वमयुवत तस्माद्यविष्ठ। √'*यु*'। शत०ब्रा० ७.५.२.३८

यव्य

१. यव्याः (नद्यः)। केषुचित्कोशेषु 'यव्याः' इतीदं नाम दृष्टम्। √'यु मिश्रणे'। वर्षासु मेघैरुदकेन मिश्रणीयाः, अन्येषु सूर्य्यरश्मिभिराकृष्टेन पृथग्भवन्तो वा। √'*यु*'+ *यत्*'। निघ० १.१३.२

२. अथवा √'युञ् बन्धने'। बध्यते आसु सेतुरिति यव्याः। √'*यु*'+ *यक्*'। निघ० १.१३.२

३. यद्वा, यवेभ्यो धान्यविशेषेभ्यो हिता। '*यव*+ *यत्*'। निघ० १.१३.२

यशस्

१. उषस्तमश्यां **यशसं** सुवीरम्। √'*अश्*'। ऋ० १.९२.८

२. यशः (उदकम्)। √'अश व्याप्तौ'। अश्नोति व्याप्नोति जगत्। √'*अश्*'+ *असुन्*'। निघ० १.१२.५५

३. यद्वा, √'अश्' भोजने'। अश्यते वा प्राणिभिः। √'अश्'+ असुन्'। निघ० १.१२.५५

४. यशः (अन्नम्)। व्याख्यातमुदकनामसु। यशो यशेर्दीप्त्यर्थात्। √'अश्'+ असुन्'। निघ० २.७.२८

५. यशः (धनम्)। व्याख्यातमन्ननामसु। √'अश्'+ असुन्'। निघ० २.१०.२३

६. अशेर्देवने युट् च। √'अश्'+ असुन्'। उणा० ४.१९२

यह

१. यहः (उदकम्)। यातेर्ह्वयतेश्च। यातं प्रातः पिपासितैः, हुतं च यज्ञे देवतात्वात्। √'या'+ √'ह्वे'+ असुन्'। निघ० १.१२.४२

२. यहः (बलम्)। व्याख्यातमुदकनामसु। प्राप्यते आह्वयते वा अनेन शत्रुः। √'या'+ √'ह्वे'+ असुन्'। निघ० २.९.१८

यहु

१. यहुः (अपत्यम्)। यातेर्ह्वयतेश्च। यातः प्रातः पुण्यवशेन स्वनाम्ना हूयते च। √'या'+ √'ह्वे'+ कु'। निघ० २.२.११

यह्व

१. यह्व इति महतो नामधेयम्। यातश्च हूतश्च भवति। √'या'+ √'ह्वे'। निरु० ८.८

२. यह्वः (महत्)। यजतेः। यजते देवपूजादिकं करोति। √'यज्'+ वन्'। निघ० ३.३.१३

३. यद्वा, √'यसु' प्रयत्ने'। यस्यति प्रयत्यते शत्रुत्वा-ज्जयादौ। √'यस्'+ क्वन्'। निघ० ३.३.१३

४. यद्वा, यह्व इति महतो नामधेयम्। यातश्च हूतश्च भवति (निरु० ८.८) इति भाष्ये यातश्चासावाहूतश्च वार्थिभिः, हूतश्चासौ शरणार्थिभिः। (स्कन्दस्वामी)। √'या'+ √'ह्वे'+ क'। निघ० ३.३.१३

५. शेवायह्वजिह्वाग्रीवाऽप्वामीवा। √'यज्'+ वन् *(निपातनात्)*। उणा० १.१५४

यह्वी

१. यह्व्यः (नद्यः)। √'या' प्रापणे'। याति तांस्तान् प्रदेशान्, प्राप्यन्ते वा प्राणिभिः। √'या'+ अ *(निपातनात्)*। निघ० १.१३.२

२. यद्वा, यह्व इति महन्नाम (निघ० ३.३.१३) यह्व्यः महत्यो नद्यः। 'यह्व+ ङीप्'। निघ० १.१३.२

३. द्विधातुजं वा इदं नाम यातेर्ह्वेञः। याताश्च प्राणिभिः हूताश्च यज्ञेषु। √'या'+ √'ह्वे' *(पृषोदरादित्वात्)*। निघ० १.१३.२

याज

१. जीवयाजं **यजते** सोमपाः दिवः। √'यज्'। ऋ० १.३१.१५

२. शतयाजं स **यजते**। √'यज्'। अथर्व० ९.४.१८

याज्या

१. याज्यया यजति। अन्नं वै याज्या। 'यज्'। गो०ब्रा० २.३.२२

यादु

१. यादुः (उदकम्)। √'या' प्रापणे'। याति निम्नप्रदेशं यादुः। √'या'+ उ+ दुडागमश्च'। निघ० १.१२.४८

यादृश्मिन्

१. यादृश्मिन्, यादृशे। *'यादृशे> यादृश्मिन्'*। निरु० ६.१५

यान

१. एह **यातं** पथिभिर्देवयानैः। √'या'। ऋ० १.१८३.६

याम

१. यद्यामं **यान्ति** वायुभिः। √'या'। ऋ० ८.७.४

२. अर्तिस्तुसुहुसृधृक्षिक्षुभायावापदियक्षिनीभ्यो मन्। √'या'+ मन्'। उणा० १.१४०

याविहात्र

१. यवा च हि वाऽ अथवा यवेतीवाथ येनैतेषाः होता भवति तद्याविहोत्रमित्याचक्षते। *'यव+ होता'*। शत० ब्रा० १.७.२.२६

युक्त

१. **युक्तं युयुक्षे** योग्यं च। √'युज्'। ऋ० १०.२७.९

२. **अयुक्तं युनजद्ववन्वान्**। √'युज्'। ऋ० १०.२७.९

युक्ति

१. (अहीनस्य) तद्यच्चतुर्विंशेऽहन् युज्यते सा युक्तिः। √'युज्'। ऐ०ब्रा० ६.२३

२. अथातो हीनस्य युक्तिश्च विमुक्तिश्च व्यन्तरिक्ष-मतिरदित्यहीनं युङ्क्ते।......नूनं सा ते इत्यहीनं युङ्क्ते। √'युज्'। गो०ब्रा० २.६.५

युग

१. युञ्जन्ति हरी इषिरस्य गाथयोरौ रथ उरुयुगे। √'युज्'। ऋ० ८.९८.९

२. युगे युगे क्षेमकामासः सदसो न युञ्जते। √'युज्'। ऋ० १०.९४.२

३. युनक्त सीरा वि युगा तनुध्वम्। √'युज्'। ऋ० १०.१०१.३, यजु० १२.६८

४. सीरा युञ्जन्ति कवयो युगा वि तन्वते पृथक्। √'युज्'। ऋ० १०.१०१.४, यजु० १२.६७, अथर्व० ३.१७.१

५. युनक्त सीरा वि युगा तनोत। √'युज्'। अथर्व० ३.१७.२

युज्, युञ्ज्

१. स्वायुजो अरुषीर्गा अयुक्षत। √'युज्'। ऋ० १.९२.२, सा०उ० १७५६

२. ऋतधीतिभिर्ऋतयुग्युजानः। √'युज्'। ऋ० ६.३९.२

३. संयुजे युजे अश्वाँ अयुक्षत। √'युज्'। ऋ० ८.४१.६

४. प्र मा युयुज्रे प्रयुजो जनानाम्। √'युज्'। ऋ० १०.३३.६

५. येषां दुर्युज आयुयुज्रे। √'युज्'। ऋ० १०.४४.७, अथर्व० २०.९४.७

६. युजो युज्यन्ते कर्मभिः। √'युज्'। यजु० २३.३७

७. एतौ ग्रावाणौ सयुजा युङ्धि। √'युज्'। अथर्व० ११.१.९

८. सहयुञ्जम्, सहयुजम्। √'युज्'। निरु० ९.२४

युध

१. शूरा इव प्रयुधः प्रोत युयुधुः। √'युध्'। ऋ० ५.५९.५

२. अयुद्ध इद्युधा वृतम्। √'युध्'। सा०उ० १३४०

युयुवि

१. द्विषो युयोतु युयुविः। √'यु'। ऋ० ५.५०.३

युवति

१. आस्थापयन्त युवतिं युवानः। √'यु'। ऋ० १.१६७.६

२. युवतिम्, प्रयुवतिम्। √'यु'। निरु० १०.२९

युवन्

१. युवा प्रयौति कर्माणि। √'यु'। निरु० ४.१९

२. कनिन् युवृषितक्षिराजिधन्विद्युप्रतिदिवः। √'यु'+ *कनिन्*'। उणा० १.१५६

यूथ

१. यूथं यौतेः। समायुतं भवति। √'यु'। निरु० ४.२४

२. तिथपृष्ठगूथयूथप्रोथाः। √'यु'+ *थक्*'। उणा० २.१२

यूप

१. तं (देवाः) वै (यज्ञम्) यूपेनैवायोपयंस्तद्यूपस्य यूपत्वम्। √'युप्'। ऐ०ब्रा० २.१

२. ते (देवाः) ऽकामयन्तेमं नो (स्वर्गम्) लोकमन्यो नानुप्रजानीयादिति, ते दिशोऽयोपयन् यद्दिशोऽयोपयꣳस्तद् यूपस्य यूपत्वम्। √'युप्'। काठ० २६.६, कपि०सं० ४१.४

३. ते (देवाः) यूपेन योपयित्वा स्वर्गं लोकमायन्, तमृषयो यूपेनैवानु प्राजानन्। तद्यूपस्य यूपत्वम्। √'युप्'। तै०सं० ६.३.४.७

४. यज्ञेनैव वै देवाः स्वर्गꣳ लोकमायꣳस्तेऽमन्यन्ताऽनेन वै नोऽन्ये लोकमन्वारोक्ष्यन्तीति, तꣳ यूपेनायोपयꣳस्तद् यूपस्य यूपत्वम्। √'युप्'। मै०सं० ३.९.४

५. यदनेन (यूपेन देवा यज्ञम्) अयोपयंस्तस्माद्यूपो नाम। √'युप्'। शत०ब्रा० १.६.२.१, ३.१.४.३, २.२.२

६. कुयुभ्यां च। √'यु'+ प'। उणा० ३.२७

योक्त्र

१. समाने योक्त्रे सह वो युनज्मि। √'युज्'। अथर्व० ३.३०.६

२. योक्त्राणि योजनानीति। √'योजय्'। निरु० ३.९

३. योक्त्राणि (अङ्गुलयः)। √'युजिर् योगे'। युञ्जन्ति पदार्थानाभिरिति, युक्ता वा स्वहस्तेन, संयम्यते आभिः क्लेशादय इति वा। √'युज्'+ ष्ट्रन्'। निघ० २.५.१६

योग

१. योगाय ब्रह्मयोगैर्वा युनज्मि। √'युज्'। अथर्व० १०.५.१

२. योगाय क्षत्रयोगैर्वा युनज्मि। √'युज्'। अथर्व० १०.५.२

३. **योगायेन्द्र योगैर्वा युनज्मि**। √'*युज्*'। अथर्व० १०.५.३

४. **योगाय सोमयोगैर्वा युनज्मि**। √'*युज्*'। अथर्व० १०.५.४

५. **योगायाप्सुयोगैर्वा युनज्मि**। √'*युज्*'। अथर्व० १०.५.५

६. तौ **यौक्षे** प्रथमो **योग** आगते। √'*युज्*'। अथर्व० १९.१३.१

७. तौ **युञ्जीत** प्रथमौ **योग** आगते। √'*युज्*'। सा०उ० १८६९

योग्य

१. **युक्तं युयुक्षे योग्यं** च। √'*युज्*'। अथर्व० ८.९.७

योजन

१. योजनानि (अङ्गुलयः)। √'*युजिर्* योगे'। युञ्जन्ति पदार्थानाभिरिति, युक्ता वा स्वहस्तेन, संयम्यते आभिः क्लेशादय इति वा। √'*युज्*'+ *युच्*'। निघ० २.५.१७

योध

१. त्वा **योधो** मन्यमानो **युयोध**। √'*युध्*'। ऋ० ६.२५.५

योनि

१. **योनिस्तदित्त्वा युक्ता** हरयो वहन्तु। √'*युज्*'। ऋ० ३.५३.४

२. योनिरन्तरिक्षं महानवयवः परिवीतो वायुना। अयमपीतरो योनिरेतस्मादेव। परियुतो भवति। √'*यु*'। निरु० २.१९

३. स्त्रीयोनिरभियुत एनां गर्भः। √'*यु*'। निरु० २.१९

४. योनिः (उदकम्)। √'*यु* मिश्रणे'। युतं मितं सम्पृक्तं सर्वपदार्थैः। √'*यु*'+ *नि*'। निघ० १.१२.६९

५. यद्वा, वेतेः परिवीतं हि जलं वायुना तीरेण वा। √'*वी*'+ *नि*>*ई*+ *उ*+ *नि*>*यु*+ *नि*> *योनि*'। निघ० १.१२.६९

६. यद्वा, योनिः कारणमन्त्रस्य। √'*वी*'+ *नि*>*ई*+ *उ*+ *नि*> *यु*+ *नि*> *योनि*'। निघ० १.१२.६९

७. योनिः (गृहम्)। व्याख्यातमुदकनामसु। मिश्र्यतेऽनेन सुखम्। पृथग्भूयन्तेऽनेनानिष्टा इति परिवीतो वा प्राकारादिना जायेव। √'*यु*'+ *नि*'। निघ० ३.४.१४

८. वहिश्रिश्रुयुद्रुग्लाहात्वरिभ्यो नित्। √'*यु*'+ *नि*'। उणा० ४.५२

योषा

१. व्यन्त्विति वै योषा, वेत्विति वै वृषा। √'*वी*'। शत०ब्रा० १.५.३.१५

२. योषा यौतेः। √'*यु*'। निरु० ३.१५

योस्

१. शंयोः, शमनं च रोगाणां यावनं च भयानाम्। √'*शम्*'+ √'*यु*'। निरु० ४.२१

यौक्ताश्व

१. यदु युक्ताश्वोऽपश्यत्तस्माद् यौक्ताश्वमित्याख्यायते। '*युक्ताश्व* > *यौक्ताश्व*'। जैब्रा० ३.२४

२. युक्ताश्वो वा आङ्गिरसः शिशू जातौ विपर्य्यहर-त्तस्मान्मन्त्रोऽपाक्रामत् स तपोऽतप्यत स एतद्यौक्ताश्वमपश्यत्तं मन्त्र उपावर्तत तद्वाव स तर्ह्यकामयत कामसनि साम यौक्ताश्वं काममेतेनावरुन्धे। '*युक्ताश्व*>*यौक्ताश्व*'। तां०ब्रा० ११.८.८

यौधजय

१. यदु युधाजीवो वैश्वामित्रोऽपश्यत् तस्माद्वेव यौधजयमित्याख्यायते। '*युधाजीव*>*यौधजय*'। जैब्रा० १.१२२

२. युधा मर्य्या अजैष्मेति तस्माद्यौधाजयम्। '*युधा*+ √'*जि*'। ता०ब्रा० ७.५.१५

३. यदिन्द्रो युधाजीवन्नेतत् सामापश्यत् तद्यौधाजयस्य यौधाजयत्वम्। '*युधा*+ √'*जीव्*'। जैब्रा० ६.१२२

रंसु

१. रंसु रमणात्। √'*रम्*'। निरु० ६.१७

रक्षस्

१. यो नः कश्चिद्रिरिक्षति **रक्षस्त्वेन** मर्त्यः। √'*रिष्*'। ऋ० ८.१८.१३

२. प्रजावती पत्ये **रक्षन्तु रक्षसः**। √'*रक्ष्*'। अथर्व० १४.२.७

३. देवान् ह वाऽ अग्नी आधास्यमानान्। तानसुररक्षसानि ररक्षुर्नाऽग्निर्जनिष्यते नाऽग्नी आधास्यध्वऽइति तद्यदरक्षंस्तस्माद्रक्षांसि। √'*रक्ष्*'। शत०ब्रा० २.१.४.१५

४. देवान्ह वै यज्ञेन यजमानांस्तानसुररक्षसानि ररक्षुर्न यक्ष्यध्व इति तद्ययदरक्षंस्तस्माद्रक्षांःसि। √'*रक्ष्*'। शत०ब्रा० १.१.१.१६

५. रक्षो रक्षितव्यमस्मात्। √'रक्ष्'। निरु० ४.१८

६. रहसि क्षणोतीति वा। 'रहस्+ √'क्षण्'। निरु० ४.१८

७. रात्रौ नक्षत इति वा। 'रात्रि+ √'नक्ष्'। निरु० ४.१८

रक्षण

१. रक्षा णो अग्ने तव **रक्षणेभी रारक्षाण**। √'रक्ष्'। ऋ० ४.३.१४

रजनि

१. इदं **रजनि रजय** किलासं पलितं च यत्। √'रञ्ज्'। अथर्व० १.२३.१

रजस्, रजसी

१. रजो रजतेः। ज्योति रज उच्यते। उदकं रज उच्यते। लोका रजांस्युच्यन्ते। असृगहनी रजसी उच्येते। √'रञ्ज्'। निरु० ४.१९

२. रजसी (द्यावापृथिव्यौ)। √'रञ्ज् रागे'। रजके स्वगुणे भूतानाम्। √'रञ्ज्'+ *असुन्*'। निघ० ३.३०.८

३. रजो रजतेर्गतिकर्मणः— इति माधवः। गम्यते पुण्यवद्भिः। √'रञ्ज्'+ *असुन*'। निघ० ३.३०.८

४. भूरञ्जिभ्यां कित्। √'रञ्ज्'+ *असुन्*'। उणा० ४.२१८

रजिष्ठ

१. रजिष्ठैर्ऋजुतमैः। 'ऋजिष्ठ> रजिष्ठ'। (*प्रत्ययार्थ-प्रदर्शनम्*)। निरु० ८.१९

२. रजस्वलतमैः। (*अर्थप्रदर्शनमात्रम्*)। निरु० ८.१९

३. तपिष्ठतमैरिति वा। (*अर्थप्रदर्शनमात्रम्*)। निरु० ८.१९

रण

१. रणाय रमणीयाय। √'रम्'। निरु० ९.२७, ११.५०. १४.२७

२. रणाय रमणीयाय सङ्ग्रामायाय। √'रम्'। निरु० ४.८,१०.४७

३. रणः (सङ्ग्रामः)। √'रणः' शब्दार्थः'। रणन्ति दुन्दुभयोऽत्र योद्धा वा परस्परं शब्दायन्ते। √'रण्'+ *अप्*'। निघ० २.१७.१

४. यद्वा, रमतेः। रमणीयो हि सङ्ग्रामो विचित्र-कर्माधिष्ठानत्वात्। √'रम्'+ न'। निघ० २.१७.१

रण्य

१. रण्यौ रमणीयौ। √'रम्'। निरु० ६.३३

२. सङ्ग्राम्यौ वा। '*ग्राम्य> रण्य*'। निरु० ६.३३

रति

१. इह **रतिरिह रमध्वम्**। √'रम्'। यजु० ८.५१

रत्न

१. रत्नधातमं रमणीयानां धनानां दातृतमम्। √'रम्'। निरु० ७.१५

२. रत्नम् (धनम्)। √'रमु क्रीडायाम्'। रमणीयं हि तत्। रमतेऽस्मिन् — इति क्षीरस्वामी। √'रम्'+ न'। निघ० २.१०.७

३. रमेस्त च। √'रम्'+ *न> रत्+ न>* रत्न'। उणा० ३.१४

रथ

१. सूरे दुहिता **रुहद्रथम्**। √'रुह्'। ऋ० १.४.५

२. प्र यद्रथेषु पृषतीरयुग्ध्वं वाजे अद्रिं मरुतो **रंहयन्तः**। √'रंह्'। ऋ० १.८५.५

३. आ वामूर्जानी **रथमश्विनारुहत्**। √'रुह्'। ऋ० १.११९.२

४. अश्वासो न **रथ्यो रारहाणाः**। √'रंह्'। ऋ० १.१४८.३

५. श्रद्धायाहं **रथे रुहम्**। √'रुह्'। ऋ० ८.१.३१

६. तं वा एतं रसं सन्तं रथ इत्याचक्षते। 'रस्> रथ'। गो०ब्रा० १.२.२१

७. रथो रंहतेर्गतिकर्मणः। √'रंह्'। निरु० ९.११

८. स्थिरतेर्वा स्याद् विपरीतस्य। √'*स्थिर्> रथ*'। निरु० ९.११

९. रममाणोऽस्मिंस्तिष्ठतीति वा। √'रम्'+ √'*स्था*'। निरु० ९.११

१०. रपतेर्वा। √'रप्'। निरु० ९.११

११. रसतेर्वा। √'रस्'। निरु० ९.११

१२. हनिकुषिनीरमिकाशिभ्यः क्थन्। √'रम्'+ *क्थन्*'। उणा० २.२

रथन्तर

१. रथम्मर्य्याः क्षेप्लातारीदिति तद्रथन्तरस्य रथन्तरत्वम्। 'रथ+ √'तॄ'। ता०ब्रा० ७.६.४

२. रथा ह (असुरा रक्षांसि च) नामासुः। ते (देवाः स्वर्गं लोकं गत्वा) अब्रुवन्नतारिष्म वा इमान् रथानिति। तदेव रथन्तरस्य रथन्तरत्वम्। 'रथ+ √'तॄ'। जै०ब्रा० १.१३५

३. रसतमꣳह वै तद्रथन्तरमित्याचक्षते परोऽक्षम्। *'रसतम>रथन्तर'*। शत०ब्रा० ९.१.२.३६

रथर्यति

१. रथर्यतीति सिद्धस्तत्प्रेप्सुः। *'रथ+ हर्यति'*। निरु० ६.२८

२. रथं कामयत इति वा। *'रथस्+ यु'*। निरु० ६.२८

रथ्य

१. रथ्या अश्वाः, रथस्य वोढारः। *'रथ+ यत्'*। निरु० १०.३

रध

१. **रन्धयन्मो** अहं द्विषते **रधम्**। √*'रध्'*। ऋ० १.५०.१३

रन्त

१. रन्त, अरमन्त। √*'रम्'*। निरु० १२.४३

रन्ति

१. रक्षतेह **रन्तिरिह रमतामिह**। √*'रम्'*। यजु० २२.१९

रन्धि

१. **रारधुष्टे** भेदस्य चिच्छर्धतो विन्द **रन्धिम्**। √*'रन्ध्'*। ऋ० ७.१८.१८

रभस

१. रभसः (महत्)। √*'रभ' राभस्ये'*। रभते महान्ति कर्माणि, संरभ्यते वा शत्रुषु। √*'रम्'+ असच्'*। निघ० ३.३.२०

२. अत्यविचमितमिनमिरभिलभिनभितपिपतिपनि पणिमहिभ्योऽसच्। √*'रभ्'+ असच्'*। उणा० ३.११७

रम्

१. प्राणो वै रं प्राणे हीमानि सर्वाणि भूतानि रतानि। √*'रम्'*। शत०ब्रा० १४.८.१३.३

रम्णाति

१. रम्णातिः संयमनकर्मा विसर्जनकर्मा वा। √*'रम्'*। निरु० १०.९

रम्भ

१. रम्भः पिनाकमिति दण्डस्य। रम्भ आरभन्त एनम्। √*'रभ्'*। निरु० ३.२१

रम्भिणी

१. ऐषामंसेषु **रम्भिणीव रारभे**। √*'रभ्'*। ऋ० १.१६८.३

रयि

१. अस्मे **रयि** नासत्या बृहन्तमपत्यसाचं श्रुत्यं **रराथम्**। √*'रा'*। ऋ० १.११७.२३

४. यस्मा ऊमासो अमृता **अरासत रायस्पोषं** च हविषा ददाशुषे। √*'रा'*। ऋ० १.१६६.३

३. अस्मे **रयिं रासि** वीरवन्तम्। √*'रा'*। ऋ० २.११.१३

४. इह प्रजामिह **रयिं रराणा**। √*'रा'*। ऋ० ४.३६.९

५. सुवीरं **रयिं** गृणते **रिरीहि**। √*'रा'*। ऋ० ६.६५.६

६. क्षुरं **रास्व रायो** विमोचन। √*'रा'*। ऋ० ८.४.१६

७. ऊर्जां पते **रयिं रास्व** सुवीर्यम्। √*'रा'*। ऋ० ८.२३.१२

८. **रयिं** सोम **रिरीहि** नः। √*'रा'*। ऋ० ९.११.९, सा०उ० १४४९

९. इह प्रजामिह **रयिं रराणः**। √*'रा'*। ऋ० १०.१८३.१

१०. प्र नो **राये** पनीयसे **रत्सि**। √*'रा'*। सा०पू० १.९.१

११. रयिरिति धननाम। रातेर्दानकर्मणः। √*'रा'*। निरु० ४.१७

१२. रयिः (उदकम्)। √*'रीङ्' गतौ'*। रीयते गच्छति रयिः। √*'री'+ इ'*। निघ० १.१२.७३

१३. यद्वा, रातेः। दीयते पिपासितेभ्यः। √*'रा'+ इ+ युगागमश्च'*। निघ० १.१२.७३

१४. रयिः (धनम्)। व्याख्यातमुदकनामसु। गम्यते प्राप्यते पुण्येन गच्छत्यनेन तृप्तिं भोगसाधनत्वात्, यशो वाऽऽदत्ते, दीयतेऽर्थिभ्य इति वा। (*पूर्ववत्*) निघ० २.१०.८

रम्भ

१. **रम्भं** न जिव्रयो **ररम्भा** शवसस्पते। √*'रम्भ्'*। ऋ० ८.४५.२०

रयिष्ठ

१. सो (प्रजापतिः) ऽब्रवीद् अस्थाद् वा इयं मयि रयिरिति। तदेव रयिष्ठस्य रयिष्ठत्वम्। *'रयि+ √'स्था'*। जैब्रा० ३.२३०

रराण

१. रराणो रातिरभ्यस्तः। √*'रा'*। निरु० २.२

ररिवान्

१. ररिवान्। रातिरभ्यस्तः। √*'रा'*। निरु० ४.२५

रशना

१. रशनाः (अङ्गुलयः)। √'रशि बन्धनार्थः'। बध्नन्ति बन्धनीयं, बध्यते आभिरिति वा। √'रश्'+'युच्'। उणा० २.७६

रश्मि

१. रश्मिर्यमनात्। √'यम्'। निरु० २.१५

२. रश्मयः (रश्मयः)। √'रशिः' यमनार्थः'। बध्नन्युदकमथवा बध्यन्ते तैरुदकमश्वो वा। √'रश्'+ मि'। निघ० १.५.४

३. यद्वा, √'अशू व्याप्तौ'। अश्नुवते सर्वं जगत् अश्वग्रीवादि वा रश्मयः। √'अश्'+ मि+ रशादेशश्च'। निघ० १.५.४

४. अश्नोते रश च। √'अश्'+ मि> रश्+ मि>रश्मि'। उणा० ४.४७

रस, रसा

१. रसा नदी, रसतेः शब्दकर्मणः। √'रस्'। निरु० ११.२५

२. रसः (उदकम्)। रसतिः शब्दार्थः'। रसति हि तन्मेघपर्वतादिभ्यः पतत्। √'रस्'+ अच्'। निघ० १.१२.३५

३. यद्वा, √'रस आस्वादने'। रस्यते आस्वाद्यते जिह्वया लिह्यते इति रसः। √'रस्'+ घ'। निघ० १.१२.३५

४. यद्वा, रसोऽपां गुणः, गुणगुणिनोरभेदोपचारेणाख्यायते। रसवान् रसः। '(रसवान्)>रस'। निघ० १.१२.३५

५. यद्वा, रसतिरर्चतिकर्मा। अर्च्यते देवतात्वात्, अर्च्यतेऽनेन देवता इति वा। √'रस्'+ अच्'। निघ० १.१२.३५

६. रसः (अन्नम्)। व्याख्यातमुदकनामसु। √'रस्'+ अच्'। निघ० २.७.१६

राका

१. रातेः राका। √'रा'। तै०सं० ३.४.९.१

२. राका रातेर्दानकर्मणः। √'रा'। निरु० ११.३०

३. कृदाधारार्चिकलिभ्यः कः। √'रा'+ क'। उणा० ३.४०

राजन्

१. वि राजति वशा हि सत्या वरुणस्य राज्ञः। √'राज्'। अथर्व० १.१०.१

२. राजा राजतेः। √'राज्'। निरु० २.३

३. कनिन् युवृषितक्षिराजिधन्विद्युप्रतिदिवः। √'राज्'+ कनिन्:'। उणा० १.१५६

राजन्य

१. सोऽरज्यत ततो राजन्योऽजायत। √'रञ्ज्'। अथर्व० १५.८.१

२. राजेरन्यः। √'राज्'+ अन्य'। उणा० ३.१००

राजयक्ष्म

१. राजानः (सोमम्) यक्ष्म आरदिति, तद्राजयक्ष्मस्य जन्म, यत्पापीयानभवत्तत्पापयक्ष्मस्य यज्जायाभ्यो ऽविन्दत्तज्जायेन्यस्य। 'राजन्+ यक्ष्म'। तै०सं० २.३.५.२

२. स (चन्द्रमाः) रोहिण्यामेवावसत्, तं तस्मिन्नृते यक्ष्मोऽगृह्णात्.......यद्राजानं यक्ष्मोऽगृह्णात्, तद् राजयक्ष्मस्य जन्म। 'राजन्+ यक्ष्म'। काठ० ११.३

३. सोमस्य वै राज्ञोऽर्धमासस्य रात्रयः पत्न्य आसन्, तासाममावस्यां च पौर्णमासीं च नोपैत्, ते एनमभि समनह्येतां तं (सोमम्) यक्ष्म आर्च्छद्, राजानं (सोमम्) यक्ष्म आरदिति तद्राजयक्ष्मस्य जन्म, यत्पापीयानभवत्, तत् पापयक्ष्मस्य यज्जायाभ्या-मविन्दत् तज्जायेन्यस्य। 'राजन्+ यक्ष्म'। तै०सं० २.५.६.४-५

राजसूय

१. ततो वै (वरुणः) सर्वेषां देवानां राज्यायासूयत। 'राज्य+ √'षु'। जै०ब्रा० २.१९६

राड्

१. एकराळस्य भुवनस्य राजसि। √'राज्'। ऋ० ८.३७.३

२. विशां पतिरेकराट् त्व वि राज। √'राज्'। अथर्व० ३.४.१

३. प्रजापतिर्विराजति विराडिन्द्रोऽभवद् वशी। √'राज्'। अथर्व० ११.५.१६

४. राड् राजतेः। √'राज्'। निरु० १२.४६

राति

१. स नो रास्व राष्ट्रमिन्द्रजूतं तस्य ते रातौ यशसः स्याम। √'राज्'। अथर्व० ६.४०.२

रातिषाच

१. त्वां **रातिषाचा** अध्वरेषु **सश्चिरे**। '*राति*+ √'*षच्*'। ऋ० २.१.१३

रात्रि

१. यदरात्समिति तत्रात्रय:। √'*रा*'। जै०ब्रा० ३.३८०

२. रातं वा अस्मा अभूदिति सो एव रात्रिरभवत्। √'*रा*'। जै०ब्रा० ३.३५७

३. रात्रि: कस्मात्, प्ररमयति भूतानि नक्तंचारीणि, उपरमयतीतराणि ध्रुवीकरोति। √'*रम्*'। निरु० २.१८

४. रातेर्वा स्याद् दानकर्मण:। प्रदीयन्तेऽस्यामवश्याया:। √'*रा*'। निरु० २.१८

५. राशदिभ्यां त्रिप्। √'*रा*'+ *त्रिप्*'। उणा० ४.६८

राधस्

१. राध इति धननाम, राध्नुवन्त्येतेन। √'*राध्*'। निरु० ४.४

२. राध: (धनम्)। √'*राध* संसिद्धौ'। राध्नुवन्ति साध्नुवन्ति धर्मादीन् पुरुषार्थान्— इति स्कन्दस्वामी। √'*राध्*'+ *असुन्*'। निघ० २.१०.१७

३. राध्यतेऽनेन धर्मादिरिति वा। राधिर्हिंसार्थोऽपि। हिनस्ति दारिद्र्यम्। √'*राध्*'+ *असुन्*'। निघ० २.१०.१७

रामा

१. रामा रमणायोपेयते न धर्माय। कृष्णजातीयैतस्मात् सामान्यात्। √'*रम्*'। निरु० १२.१३

राम्या

१. राम्या (रात्रि:)। √'*रमु* क्रीडायाम्'। प्ररमयति भूतानि नक्तञ्चराणि, उपरमयति दिवाचराणि स्वव्यापारेभ्य:। माधवस्तु— सर्वभूतानि रमयति। √'*रमय्*+ *ण्यत्*'। निघ० १.७.६

२. स्वाश्रये रमते राम:, तदर्हति राम्या। √'*रम्*'+ *ण*+ *यत्*'। निघ० १.७.६

३. यद्वा, रमणं राम:। स्त्रीभि: सहक्रीडा राम:, तत्र साधु: राम्या। √'*रम्*'+ *घञ्*>*राम, राम*+ *यत् (तत्र साधु:)*'। निघ० १.७.६

राय

१. राय: (धनम्)। √'*रा* दाने'। दीयतेऽर्थिभ्य: तदेव प्राप्यते वा पूर्वकृतेन पुण्येन। √'*रा*'+ *डै*+ *जस्*'। निघ० २.१०.१६

रारण

१. रारण, रमे। √'*रम्*'। निरु० ११.३९

रारन्धि

१. रध्यतिर्वशगमनेऽपि दृश्यते। √'*रन्ध्*'। निरु० १०.४०

राष्ट्रदा

१. **राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै देहि** वृषसेनोऽसि **राष्ट्रं** मे **देहि** स्वाहा। '*राष्ट्र*+ √'*दा*'। यजु० १०.२-३

२. **राष्ट्रदा राष्ट्रं** मे **दत्त** स्वाहा। '*राष्ट्र*+ √'*दा*'। यजु० १०.३-४

राष्ट्रभृद्

१. राजानो वै राष्ट्रभृतस्ते हि राष्ट्राणि बिभ्रति। '*राष्ट्र*+ √'*भृ*'। शत०ब्रा० ९.४.१.१

राष्ट्री

१. राष्ट्री (ईश्वर:)। राजतेरैश्वर्यकर्मण:। √'*राज्*'। निरु० २.२२.१

रासभ

१. यत्तदरसदिवैष रासभ:। √'*रस्*'। शत०ब्रा० ६.३.१.२८

२. यदरसदिव स रासभोऽभवत्। √'*रस्*'। शत०ब्रा० ६.१.१.११

३. रासभौ (आदिष्टोपयोजने)। √'*रासृ* शब्दे'। रासते शब्दं करोतीति रासभ:, तौ रासभौ। √'*रास्*'+ *अभच्*'। निघ० १.१५.४

४. रासिवल्लिभ्यां च। √'*रास्*'+ *अभच्*'। उणा० ३.१२५

रास्पिन्

१. रास्पिनो रास्पी रपतेर्वा। √'*रप्*'। निरु० ६.२१

२. रसतेर्वा। √'*रस्*'। निरु० ६.२१

रिक्थ

१. न जामये तान्वो **रिक्थमारैक्**। √'*रिचिर्*'। ऋ० ३.३१.२

२. रिक्थम् (धनम्)। रिचे:। रेक्णवदर्थ:। √'*रिच्*'+ *थक्*'। निघ० २.१०.३

३. पातॄतुदिवचिरिचिसिचिभ्यस्थक्। √'*रिच्*'+ *थक्*'। उणा० २.७

रिक्वा

१. रिक्वा (स्तेनः)। √'रिचिर् वियोजने'। वियोजयत्यर्थैरर्थतः, वियुज्यते वा प्राणैः। √'*रिच्*'+ *क्वनिप्*'। निघ० ३.२४.५

रिप

१. रिपः (पृथ्वी)। √'रेपृ गतौ'। गौरित्यनेन समानार्थः। √'रेप्'+ *क्विप्*'। निघ० १.१.१३

२. यद्वा, √'रिफ कत्थनयुद्धनिन्दाहिंसादानेषु'। कत्थन-युद्धादीनस्यां कुर्वन्ति तत्कारिणः। √'*रिफ्*'+ *क्विप्*'। निघ० १.१.३

३. यद्वा, √'लिप उपदेहे'। गोमयादीना आलिप्यते इति लिप्। रलयोरभेदः। √'*लिप्*'। निघ० १.१.३

४. यद्वा, √'रप √'लप व्यक्तायां वाचि'। आलपन्त्यस्यां प्राणिनः इति रिप्, जसि रिपः। √'रप्'। निघ० १.१.३

रिपु

१. स्वयं **रिपुस्तन्वं रीरिषीष्ट**। √'*रिष्*'। ऋ० ६.५१.७

२. रिपुः (स्तेनः)। √'रिफ कत्थनयुद्धनिन्दाहिंसादानेषु'। रिफति मोषणार्थं युद्धते हिनस्ति वा निन्द्यते च सत्पुरुषैः। √'*रिफ्*'+ उ'। निघ० ३.२४.४

३. रपेरिच्चोपधायाः। √'*रप्*'+ *कु*>*रपु*> *रिपु*'। उणा० १.२६

रिभ्वा

१. रिभ्वा (स्तेनः)। √'रभ राभस्ये'। रभते मोषणविद्यां वेगेन करोति। √'रभ्'+ *वनिप्*'। निघ० ३.२४.३

रिशादस्

१. रिशादसः रेशयदासिनः। √'*रिश्*'+ √'*अस्*' (*दुर्ग*)> *रेशयदासिन्*>*रिशादस्*'। निरु० ६.१४

२. रेशयदारिणः, इति केचिदधीयते निर्वचनम्। √'*रिश्*'+ √'*दृ*' >*रेशयदारिन्* >*रिशादस्*'। दुर्ग, निरुक्तवृत्ति ६.१४ पृ० ५४१

रिष

१. रिषे, रेषणाय। √'*रिष्*'। निरु० १०.४५

रिषण्यु

१. **रिषण्यवो** गर्भे सन्तं **रेषणा रेषयन्ति**। √'*रिष्*'। ऋ० १.१४८.५

रिहन्ति

१. रिहन्ति लिहन्ति। √'*लिह्*'। निरु० १०.३९

रिहाया

१. रिहायाः (स्तेनः)। √'रिह कत्थनादौ'। रिपुवदर्थः। √'*रिह्*'+ *असुन्*+ *आयुडागमः*'। निघ० ३.२४.६

रुक्म

१. श्रिये **रुक्मो न रोचत** उपाके। √'रुच्'। ऋ० ४.१०.५

२. तत्ते **रुक्मो न रोचत** स्वधावः। √'रुच्'। ऋ० ४.१०.६

३. वि **यद्रुक्मो न रोचस** उपाके। √'रुच्'। ऋ० ७.३.६

४. युजिरुचितिजां कुश्च। √'रुच्'+ *मक्*'। उणा० १.१४६

५. सुरुक्मे, सुरोचने। √'रुच्'। निरु० ८.११

६. रुक्मम् (हिरण्यम्)। √'रुच दीप्तौ'। रोचते तदतिशयेन दीप्यते तेन तददिति च रुक्मम्। √'रुच्'+ *मक्*'। निघ० १.२.३

रुग्ण

१. **रुजदरुग्णं** वि वलस्य सानुम्। √'रुच्'। ऋ० ६.३९.२

रुच्

१. दिवो**रुचः सुरुचो रोचमाना**। √'रुच्'। ऋ० ३.७.५

२. देवेभिर्देव **सुरुचा रुचानः**। √'रुच्'। ऋ० ३.१५.६

३. भरद्वाजेषु **सुरुचो रुरुच्याः**। √'रुच्'। ऋ० ६.३५.४

४. प्रत्नवद्रोचयन् **रुचः**। √'रुच्'। ऋ० ९.४९.५; सा०उ० १४३९

५. प्राणो वै रुक्, प्राणेन हि रोचते। √'रुच्'। शत०ब्रा० ७.५.२.१२

६. सुरुच आदित्यरश्मयः। सुरोचनात्। √'रुच्'। निरु० १.७

रुचि

१. **रुचिरसि रोचोऽसि**। स यथा त्वं **रुच्या रोचोऽ**स्येवाहं पशुभिश्च ब्राह्मणवर्चसेन च **रुचिषीय**। √'रुच्'। अथर्व० १७.१.२१

२. इगुपधात् कित्। √'रुच्'+ *इन्*'। उणा० ४.१२१

रुजाना

१. रुजाना नद्यो भवन्ति, रुजन्ति कूलानि। √'रुज्'। निरु० ६.४

२. रुजाना: (नद्य:)। √'रुजों भङ्गे'। रुजन्ति कूलानि। √'रुज्'। निघ० १.१३.८

रुद्र

१. कतमे रुद्रा इति दशेमे पुरुषे प्राणा आत्मैकादशस्ते यदस्मान्मर्त्याच्छरीरादुत्क्रामन्त्यथ रोदयन्ति। तद्यद्रोदयन्ति तस्माद्रुद्रा इति। √'रोदय्'। शत०ब्रा० ११.६.३.७

२. तद्यद्रुदितात्समभवंस्तस्माद्रुद्रा:। √'रुद्'। शत०ब्रा० ९.१.१.६

३. तानीमानि भूतानि च भूतानां च पति: संवत्सर ऽ उषसि रेतोऽसिञ्चत् स संवत्सरे कुमारोऽअजायत, सोऽरोदीत्......यदरोदीत् तस्माद् रुद्र:। √'रुद्'। शत०ब्रा० ६.१.३.८—१०

४. तां (इषुं रुद्र:) व्यसृजत् तया पुरस्समरुजद्यत् समरुजत् तद्रुद्रस्य रुद्रत्वम्। √'रुज्'। काठ० २५.१, कपि०सं० ३८.४

५. दश पुरुषे प्राणा इति होवाच। आत्मैकादश:। ते यदोत्क्रामन्तो यन्त्यथ रोदयन्ति, तस्माद्रुद्रा इति। √'रोदय्'। जैब्रा० २.७७

६. यदरोदीत् तद्रुद्रस्य रुद्रत्वम्। √'रुद्'। तै०सं० १.५.१.१ (शत०ब्रा० ६.१.३.१०)

७. सोऽरोदीत्, तद्वा अस्यैतन्नाम रुद्र इति। √'रुद्'। मै०सं० ४.२.१२

८. प्राणो वै रुद्रा:। प्राणा हीदं सर्वं रोदयन्ति। √'रोदय्'। जै०उप० ४.२.१.६

९. ते यदाऽस्मान्मर्त्याच्छरीरादुत्क्रामन्त्यथ रोदयन्ति। तद्यद्रोदयन्ति तस्माद्रुद्रा इति। √'रोदय्'। बृह०उप० ३.९.४

१०. रुद्रो रौतीति सत:। √'रु'। निरु० १०.५

११. रोरूयमाणो द्रवतीति वा। √'रु'+ √'द्रु'। निरु० १०.५

१२. रोदयतेर्वा। √'रुद्'। निरु० १०.५

१३. यदरुदत्तद्रुद्रस्य रुद्रत्वम्। इति काठकम्। √'रुद्'। निरु० १०.५

१४. यदरोदीत्तद्रुद्रस्य रुद्रत्वमिति हारिद्रविकम्। √'रुद्'। निरु० १०.५

१५. रुद्र: (स्तोता)। रौते:। स्तोत्रलक्षणशब्दवान्। √'रु'+ *क्विप्* >रुत्, रुत्+ र (*मत्वर्थीय:*) >रुद्र:'। निघ० ३.१६.१२

१६. यद्वा, रौते:। रुच्छब्दं करोति। यो रुवन् एति, रौतीति वक्तुं शक्यते। √'रु'+ *क्विप्* >रुत्> रुद्र'। निघ० ५.४.३

१७. रोरूयमाणोऽत्यर्थं शब्दं कुर्वन् मेघोदरस्थो द्रवतीति। √'रु'+ √'द्रु'+ रक्'। निघ० ५.४.३

१८. स हि शत्रुकलत्राणि रोदयति। √'रोदय्'+ रक्'। निघ० ५.४.३

१९. रोदेर्णिलुक् च। √'रोदय्'+ रक्> रुद्+ र> रुद्र'। उणा० २.२२

रुशत्

१. रुशदिति वर्णनाम, रोचतेर्ज्वलतिकर्मण:। √'रुच्'। निरु० २.२०, ६.१३

रुह

१. **रुहो रुरोह** रोहित आ **रुरोह**। √'रुह्'। अथर्व० १३.१.४

२. सर्वा **रुरोह रोहितो रुह:**। √'रुह्'। अथर्व० १३.१.२६

३. **रोहति रुहो रुरोह रोहित:**। √'रुह्'। अथर्व० १३.३.२६

रूप

१. रूपं रोचते:। √'रुच्'। निरु० २.३, ३.१३

२. खष्पशिल्पशष्पवाष्परूपपर्पतल्पा:। √'रु'+ प(*निपातनात्*)। उणा० ३.२८

रेक्णस्

१. रेक्ण इति धननाम, रिच्यते प्रयत:। √'*रिच्*'। निरु० ३.२

२. रेक्ण: (धनम्)। √'रिचिर' विरेचने'। रिच्यते अवतिष्ठते प्रयत: म्रियमाणस्य धनं धनिना सह न म्रियत इत्यर्थ:। √'*रिच्*'+ *असुन्*+ *नुडागमश्च*'। निघ० २.१०.२

३. रेक्णो धनं रिचे: प्रेरणार्थात्— इति माधव:। प्रेर्य्यतेऽनेन दत्तेन भृत्यादि: कर्मसु। √'*रिच्*'+ *असुन्*+ *नुडागमश्च*'। निघ० २.१०.२

४. रिचेर्धने धिच्च। √'*रिच्*'+ *असुन्*+ *नुडागमश्च*'। उणा० ४.२००

रेजते

१. भ्यसते रेजत इति भयवेपनयो:। √'*रेज्*'। निरु० ३.२१

रेणु

१. तमं **इयर्ति रेणुं** बृहदर्हरिष्वणि:। √'*ऋ*'। ऋ० १.५६.४

२. **रेणुं रेरिहत्** किरणं ददश्वान्। √'*रिह्*'। ऋ० ४.३८.६

३. **इयर्मि रेणुमभि**भूत्योजा:। √'*ऋ*'। ऋ० ४.४२.५

४. अनिवृरीभ्यो निच्च। √'*री*'+ *णु*'। उणा० ३.३८

रेतस्

१. रेत: (उदकम्)। √'*रि*' √'*रीङ् स्रवणे*'। रीयते स्रवति रेत:। √'*रि*'+ *या* √'*री*'+ *असुन्*+ *तुडागमश्च*'। निघ० १.१७.१६

२. यद्वा, वृष्टिलक्षणानामपां देवानां रेतस्त्वाद्रेत उच्यते। √'*री*'+ *असुन्*+ *तुडागमश्च*'। निघ० १.१२.१६

३. स्रुरीभ्यां तुट्च। √'*री*'+ *असुन्*+ *तुडागमश्च*'। उणा० ४.२०३

रेतोधा

१. सोमो **रेतोधा**स्तस्याहं देवयज्यया सु**रेतोधा** रेतो **धिषीय**। '*रेतस्*+ √'*धा*'। काठ० ५.४

२. वाजी **रेतोधा रेतो दधाति**। '*रेतस्*+ √'*धा*'। यजु० २३.२०

रेभस्

१. रेभ: (स्तोता)। रेभतिरर्चतिकर्मा। स्तौति। √'*रेभ्*'+ *अच्*'। निघ० ३.१६.१

रेवत्य:

१. रेवत्य: (नद्य:)। 'स्रवत्य: स्थाने रेवत्य:' केषुचित् कोशेषु दृश्यते। तदा रयि इत्युदकनाम। रयिरासामस्तीति। '*रयि*+ *मतुप्*'। निघ० १.१३.२७

रेवान्

१. वृषभ नो **ररीथा** मा ते **रेवत:** सख्ये रिषाम। √'*रा*'। ऋ० ६.४४.११

२. रेवन्तो हि पशवस्तस्मादाह रेवती रमध्वमिति। √'*रम्*'। शत०ब्रा० २.३.४.२६, ३.७.३.१३

रेषण

१. **रिषण्यवो** गर्भे सन्तं **रेषणा रेषयन्ति**। √'*रिष्*'। ऋ० १.१४८.५

रैभी

१. अथ रैभी: शंसति.......रेभन्तो वै देवाश्च ऋषयश्च स्वर्गं लोकमायन्, तथैवैतद्यजमाना रेभन्त एव स्वर्गं लोकं यन्ति। '*रेभृ*' *शब्दे*'। गो०ब्रा० २.६.१२

रैवत

१. रैवत: (मेघ:)। रेवत्यो गाव: 'पशवो वै रेवती:' इति श्रुते:। तस्येदमित्यण्। मेघो हि सर्वत्र वर्षति यवसं पानीयं च जनयित्वा तदीयो भवति, पर्वतस्तद्वत्तया। '*रेवती*+ *अण्*'। निघ० १.१०.१६

२. यद्वा, रयिरस्यास्तीति मतुपि। सर्वस्य धनस्येशितृत्वान् रेवान् इन्द्र:, मघवेति हि तस्य नाम तदीयो रैवत:। '*रयि*+ *मतुप्*> *रेवत्*, *रेवत्*+ *अण्*'। निघ० १.१०.१६

रोच

१. **रुचिरसि रोचो**ऽसि। स यथा त्वं **रुच्या रोचो**ऽस्येवाहं पशुभिश्च ब्राह्मणवर्चसेन च **रुचिषीय**। √'**रुच्**'। अथर्व० १७.१.२१

रोचना

१. **रोचन्तो रोचना** दिवि। √'*रुच्*'। ऋ० १.६.१

२. प्र **रोचना रुरुचे** रण्वसंदृक्। √'*रुच्*'। ऋ० ३.६१.५

३. **अरूरुचद्** वि दिवो **रोचना** कवि:। √'*रुच्*'। ऋ० ९.८५.९

४. **रोचन्ते रोचना** दिवि। √'*रुच्*'। यजु० २३.५, अथर्व० २०.२६.४, १७.१०, अथर्व० २०.६९.९, सा०उ० १४६८

रोद

१. **अरूदद्** गृहे **रोदेन** कृण्वत्यघम्। √'*रुद्*'। अथर्व० १४.२.६०

रोदस्, रोदसी

१. आ **रोदसी** वृषभो **रोरवीति**। √'*रु*'। ऋ० ६.७३.१, अथर्व० १८.३.६५, अथर्व० २०.९०.१, सा०पू० १.७.९

२. **रोदसी** वृषभो **रोरवीति**। √'*रु*'। ऋ० १०.८.१

३. आ धां रोहन्ति रोदसी। √'रुह्'। यजु० १७.६८, अथर्व० ४.१४.४

४. यदरोदीत् (प्रजापतिः) तदनयोः (द्यावापृथिव्योः) रोदस्त्वम्। √'रुद्'। तै०सं० २.२.९.४

५. न ह्येतं जातं रोदन्ति। इमे ह वाव रोदसी। √'रुद्'। जै०उप० १.३२.४

६. रोदसी रोधसी द्यावापृथिव्यौ विरोधनात्। √'रुध्'। निरु० ६.१

७. रोदसी रुद्रस्य पत्नी। '*रुद्रस्य पत्नी*> *रोदसी*'। निरु० ११.४९,१२.४६

८. रोदसी (द्यावापृथिव्यौ)। रुधेः। आभ्यां हि विविधं रुद्धानि सर्वभूतानि। √'रुध्'+ *असुन्*+ *ङीप्*'। निघ० ३.३०.४

रोधचक्र

१. रोधचक्राः (नद्यः)। √'रुधिर्' आवरणे'+डुकृञ् करणे'। रोधस्य निरोधस्य चक्रं करणं कृत्तिरासां विद्यते इति रोधचक्राः। नद्यो वृष्ट्या प्राणिनां स्वैर-सञ्चरणनिरोधकारिणः। √'रुध'+ घञ्+ √'कृ'+ क'। निघ० १.१३.११

२. यद्वा, रोधः तीरं तस्य करणं निर्माणमासां विद्यते तीरवत्यो हि नद्यः। 'रोधस्+ √'कृ'। निघ० १.१३.११

३. यद्वा, रुधेः। रुध्यतेऽनेन जलप्रवाह इति रोधः शब्दः करणं निर्माणमासां विद्यते। √'रुध्'+ घञ्+ √'कृ'। निघ० १.१३.११

रोधस्

१. रोधः कूलं निरुणद्धि स्रोतः। √'रुध्'। निरु० ६.१

रोधस्वती

१. रोधस्वत्यः (नद्यः)। रोधसा तीरेण तद्वत्यः। 'रोधस्'। निघ० १.१३.३३

रोरुवद्

१. रोरुवद्, रोरूयमाणः। √'रु'। निरु० ५.१६

रोह

१. तेन **रोहान्** रुरुहुर्मेध्यासः। √'रुह्'। अथर्व० ४.१४.१

२. रोहितं देवा यन्ति सुमनस्यमाना स मा **रोहैः** सामित्यै रोहयतु। √'रुह्'। अथर्व० १३.१.१३

रोहत

१. एतेन ह वा इन्द्रः सप्त स्वर्गाल्लोकानारोहत्। √'रुह्'। गो०ब्रा० २.६.१०

२. एतेन ह वा इन्द्रः सप्त स्वर्गाँल्लोकानारोहत् इति। √'रुह्'। गो०ब्रा० २.६.१०

रोहणी

१. **रोहण्यसि रोहण्यस्थ्नश्छिन्नस्य रोहणी। रोहयेद**-मरुन्धति। √'रुह्'। अथर्व० ४.१२.१

रोहस्

१. दिवो **रोहांस्यरुहत्**पृथिव्याः। √'रुह्'। ऋ० ६.७१.५

रोहिणी

१. तया (रोहिण्या देवाः) रोहमरोहꣳस्तद् रोहिण्या रोहिणीत्वम्। √'रुह्'। काठ० ८.१

२. सा (विराट्) तत ऊर्ध्वारोहत्। सा रोहिण्यभवत्। तद्रोहिण्यै रोहिणीत्वम्। √'रुह्'। तै०सं० १.१.१०.६

३. प्रजापती रोहिण्यामग्निमसृजत तं देवा रोहिण्यामादधत, ततो वै ते सर्वान् रोहानरोहन्। √'रुह्'। तै०सं० १.१.२.२

४. तं (अग्निम्) देवा रोहिणीमादधत ततो वै ते सर्वान् रोहानरोहन्। √'रुह्'। तै०सं० १.१.२.२

५. यमु हैव तत्पशवो मनुष्येषु काममरोहँस्तमु हैव पशुषु कामꣳरोहन्ति य एवं विद्वान् रोहिण्यां (अग्नी) आधत्ते। √'रुह्'। शत०ब्रा० २.१.२.७

६. अग्निश्च ह वा आदित्यश्च रोहिणावेताभ्याꣳ हि देवताभ्यां यजमानाः स्वर्गं लोकꣳ रोहन्ति। √'रुह्'। शत०ब्रा० १४.२.१.२

७. रुहेश्च। √'रुह्'+ इनन्'। उणा० २.५६

रोहित

१. **रुहो रुरोह रोहित** आ **रुरोह**। √'रुह्'। अथर्व० १३.१.४

२. **रोहितं** देवा यन्ति सुमनस्यमानाः स मा **रोहैः** सामित्यै **रोहयतु**। √'रुह्'। अथर्व० १३.१.१३

३. **रुरोह रोहितो** रेतसा सह। √'रुह्'। अथर्व० १३.१.१५

४. **रोहितो** दिवमारुहन्महतः पर्यर्णवात्। सर्वा **रुरोह रोहितो रुहः**। √'रुह्'। अथर्व० १३.१.२६

५. प्रजां च रोहामृतं च **रोह रोहितेन** तन्वं सं स्पृशस्व। √'रुह्'। अथर्व० १३.१.३४

६. **रोहितो** दिवमारुहत्। √'रुह्'। अथर्व० १३.२.२५

७. **रोहति रुहो रुरोह रोहितः**। √'रुह्'। अथर्व० १३.३.२६

८. रुहेरश्च लो वा। √'रुह्'+ *इतन्*'। उणा० ३.३९

९. रोहितः (नद्यः)। √'रुह् बीजजन्मनि'। रोहन्त्याभिर्बीजानि, तज्जलेन हि बीजानि प्ररोहन्ति। √'रुह्'+ *इति*'। निघ० १.१३.१८

१०. रोहितः (आदिष्टोपयोजनानि)। √'रुह्'। रोहन्ति आरोहन्ति रथं वहन्त्यादिवमिति रोहितः। (*पूर्ववत्*)। निघ० १.१५.२

रोहितकूलीय

१. यदु (विश्वामित्रः) कूले रोहिताभ्यामुदजयत्तस्माद् रोहितकूलीये इत्याख्यायते। '*रोहित+ कूल*'। जै०ब्रा० ३.१८३

२. रोहितकूलीयं भवत्याजिजित्यायै। एतेन वै विश्वामित्रो रोहिताभ्याᳬ रोहितकूल आजिमजयत्। '*रोहित+ कूल*'। ता०ब्रा० १४.३.११—१२

रौरव

१. अग्निर्वै रूरस्तस्यैतद् रौरवम्। '*रूर> रौरव*'। ता०ब्रा० ७.५.१०

२. ते (असुराः) प्रत्युष्यमाणा अरवन्त यदरवन्त तस्माद् रौरवम्। √'रु'। ता०ब्रा० ७.५.११

३. ते (असुराः) ऽभितप्यमाना अरवन्त। यदभितप्यमाना अरवन्त तद्रौरवस्य रौरवत्वम्। तदाग्नेयं साम। √'रु'। जै०ब्रा० ३.१४८

४. यदग्नी रूरुरेतत्सामापश्यत् तस्माद्वेव रौरवमित्याख्यायते। '*रूरु> रौरव*'। जै०ब्रा० १.१२२

५. यदु रूर इति वृध्रोऽपश्यत् तस्माद्वेव रौरवमित्याख्यायते। '*रूर> रौरव*'। जै०ब्रा० १.१२२

रौहिण

१. रौहिणम् (मेघः)। √'रुह् बीजजन्मनि'। रोहः आरोहणम्, आदित्यपक्ष्यादीनामस्मिन्नस्तीति रोहि अन्तरिक्षम्। तत्र भवः रौहिणः। अन्तरिक्षेण हि गच्छति मेघः, पक्षच्छेदात् पूर्वं पर्वतश्चेति तत्र भव इति वक्तुं शक्यते। √'रुह्'+ *इनि> रोहि, रोहि+ अण् (प्रकृतिभाव) > रौहिण*'। निघ० १.१०.१५

२. यद्वा, √'रुह्'+इनच्' रोहिण इन्द्रः, तस्येदं रौहिणः'। आरोहति मेघमिन्द्रः स्ववाहनत्वात्। √'रुह्'+ *इनच्> रोहिण> रौहिण*'। निघ० १.१०.१५

रौहिणक

१. अथ रौहिणकम्। एतेन वै प्रजापतिरेकशफानां पशूनां काममारोहत्। तद्यत्काममारोहत् तद्रौहिणकस्य रौहिणकत्वम्। √'रुह्'। जै०ब्रा० २.१४

२. एतेर्वै देवाः स्वर्गं लोकमारोहन्। यदरोहंस्तस्माद् रौहिणकानि। √'रुह्'। जै०ब्रा० २.६१

लक्ष्मी

१. लक्ष्मीर्लाभाद्वा। √'*लभ्*'। निरु० ४.१०

२. लक्षमाणाद्वा। √'*लक्ष्*'। निरु० ४.१०

३. लप्स्यनाद्वा। √'*लभ्*'। निरु० ४.१०

४. लाञ्छनाद्वा। √'*लाञ्छ्*'। निरु० ४.१०

५. लषतेर्वा स्यात्प्रेप्साकर्मणः। √'*लष्*'। निरु० ४.१०

६. लग्यतेर्वा स्यादाश्लेषकर्मणः। √'*लग्*'। निरु० ४.१०

७. लज्जतेर्वा स्यादश्लाघाकर्मणः। √'*लस्ज्*'। निरु० ४.१०

८. लक्षेर्मुट् च। √'*लक्ष्*'+ *ई+ मुडागमश्च*'। उणा० ३.१६०

लता

१. लततेर्वा स्याद् लम्बकर्मणः। √'*लत्*'। निरु० ५.२६

लाङ्गल

१. लाङ्गलं लङ्गतेः। √'*लङ्ग्*'। निरु० ६.२६

२. लाङ्गूलवद्वा। '*लाङ्गूल> लाङ्गल*'। निरु० ६.२६

३. लङ्गेर्वृद्धिश्च। √'*लङ्ग+ कल*'। उणा० १.१०८

लाङ्गूल

१. लाङ्गूलं लगतेः। √'*लग्*'। निरु० ६.२६

२. लङ्गतेः। √' *लङ्ग*। निरु० ६.२६

३. लम्बतेर्वा। √'*लम्ब्*'। निरु० ६.२६

४. खर्जिपिञ्जादिभ्यश्च ऊरोलचौ। √' *लङ्ग+ ऊलच्*'। उणा० ४.९१

लाजा

१. लाजा लाजतेः। '*लाज्*'। निरु० ६.९

लिबुजा

१. लिबुजा व्रततिर्भवति, लीयन्ते विभजन्तीति। √'*ली*'+ √'*भज्*'। निरु० ६.२८

लोकम्पृणा

१. असावादित्यो लोकम्पृणा, एष हीमाँल्लोकान् पूरयति। *लोक*+ √'*पृ*'। शत०ब्रा० ८.७.२.१

लोध

१. लोधं लुब्धम्। √'*लुभ् > लुब्ध> लोध*'। निरु० ४.१४

लोमन्

१. लोम लुनातेर्वा। √'*लू*'। निरु० ३.५

२. लीयतेर्वा। √'*ली*'। निरु० ३.५

३. नामन्सीमन्व्योमन्रोमन्लोमन्पाप्मन्ध्यामन्। √'*लू*'+ *मनिन्* (निपातनात्)। उणा० ४.१५२

लोष्ट

१. लोष्ट (रुजतेः) अविपर्ययेण। √'*रुज्*'+ *क्त> रुष्ट> लोष्ट*'। निरु० ६.१

लोह

१. लोहम् (हिरण्यम्)। 'लुह' कत्थनादौ'। कत्थते श्लाघतेऽनेनात्मा, त्रिवर्गसाधनत्वात् पुरुषैः सम्प्रार्थ्यते वा। √'*लुह्*'+ *घञ्*'। निघ० १.२.८

२. यद्वा, लुनातेः। लुनाति छिनत्ति पापसम्बन्धं पात्रे दीयमानम्। √'*लू*'+ ह'। निघ० १.२.८

वंश

१. वंशो वनशयो भवति। '*वन*+ √'*शी*'। निरु० ५.५

२. वननाच्छ्रूयत इति वा। √'*वन्*'+ √'*श्रु*'। निरु० ५.५

वक्त्वानि

१. **वक्त्वानि** परो वदात्यवरेण पित्रा। √'*वद्*'। ऋ० ६.९.२

२. स **वक्त्वान्यृतुथा वदाति**। √'*वद्*'। ऋ० ६.९.३

वक्म्य

१. प्र तं **विवक्मि वक्म्यो** य एषाम्। √'*वच्*'। ऋ० १.१६७.७

वक्षस्

१. वक्षो भासाध्यूढम्। इदमपीतरद्वक्ष एतस्मादेव। अध्यूढं काये। √'*वह्*'। निरु० ४.१६

२. पचिवचिभ्यां सुट् च। √'*वच्*'+ *असुन्*+ *सुडागमश्च*'। उणा० ४.२२१

३. वृतृवदिवचिवसिहनिकमिकषिभ्यः सः। √'*वच्*'+ *स*'। उणा० ३.६२

वक्षणा

१. वक्षणाः (नद्यः)। √'वक्ष' रोषे'। वक्षन्ति क्रुध्यन्तीव हि ताः वर्षासमये वेगेन गच्छन्त्यः। √'*वक्ष्*'+ *युच्*'। निघ० १.१३.९

२. यद्वा, √'वह' प्रापणे'। स्वयं प्रवहन्ति हि ताः। √'*वह्*'+ *युच्*'। निघ० १.१३.९

३. वक्षतिः प्राप्तिकर्मणः स्यात्— इति माधवः। प्राप्यन्ते हि ताः प्राणिभिः, प्राप्नुवन्ति वा समुद्रं निम्नं वा। √'*वह्*'+ *युच्*'। निघ० १.१३.९

वक्षति

१. वक्षति, वहति। √'*वह्*'। निरु० ७.१६

वग्नुः

१. वग्नुः (वाक्)। √'वच' परिभाषणे'। वग्नुः वाचो समानोऽर्थः। √'*वच्*'। निघ० १.११.२५

वच्

१. इदं पित्रे मरुतामु**च्यते वचः**। √'*वच्*'। ऋ० १.११४.६

२. प्र पुनानाय वेधसे सोमाय **वच उच्यते**। √'*वच्*'। सा०पू० ५.१०.८

वचन

१. **अवोचाम** निवचनान्यस्मिन्। √'*वच्*'। ऋ० १.१८९.८

वज्र

१. अस्यदेव शवसा शुषन्तं वि **वृश्चद्वज्रेण** वृत्रमिन्द्रः। √'*व्रश्च्*'। ऋ० १.६१.१०

२. वज्रः कस्मात्, वर्जयतीति सतः। √'*वृज्*'। निरु० ३.११

३. वज्रः (वज्रः)। √'व्रज' गतौ'। √'*व्रज्*'+ *रन्*'। निघ० २.२०.९

४. वृणक्तेर्वा। वर्जयति प्राणैः शत्रून्। √'वृज्'+ रन्'। निघ० २.२०.९

५. अन्ये वर्जयतिमेव विनाशार्थमाहुः। विनाशयति शत्रून्। √'वर्जय्'। निघ० २.२०.९

वणिज्

१. वणिक् पण्यं नेनेक्ति। 'पण्य+ √'निज्'। निरु० २.१७

२. पणेरिज्यादेश्च वः। √'पण्'+ इज्> वण्> इज्> वणिज्'। उणा० २.१७

वर्तनी

१. अथ वर्तन्यौ बृहद्रथन्तरे। एताभ्यां ह वा एष एतद् वर्तते। √'वृत्'। जै०ब्रा० २.६१

वत्स

१. **ववाशिरेऽग्रं वत्सं** न स्वसरेषु धेनवः। √'वश्'। ऋ० २.२.२

वदत्

१. प्रैते **वदन्तु** प्र वयं **वदाम** ग्रावभ्यो वाचं **वदता वदद्भ्यः**। √'वद्'। ऋ० १०.९४.१

वध

१. रक्षसां त्वा **वधायावधिष्म** रक्षोऽ**वधिष्म**। √'वध्'। यजु० ९.३८

२. वधः (बलम्)। √'हन्' हिंसागत्योः'। हन्यतेऽनेन शत्रुः। √'हन्'+ अप्> वध्+ अ> वध'। निघ० २.९.१९

३. वधः (वज्रः)। हन्तेः। √'हन्'+ अप्> वध्+ अ> वध'। निघ० २.९.१९

वधू

१. यां कल्पयन्ति **वहतौ वधूमिव**। √'वह्'। अथर्व० १०.१.१

२. वध्वः (नद्यः)। √'वह' प्रापणे'। वहन्ति उह्यन्ते वा भूम्याम्। √'वह्+ ऊ> वहू> वधू'। निघ० १.१३.१६

३. यद्वा, समुद्रस्य भार्य्यात्वात्, वध्व इत्युच्यते। √'वह्+ ऊ> वहू> वधू'। निघ० १.१३.१६

४. वहेर्वधूश्च। √'वह्+ ऊ> वहू> वधू'। उणा० १.८३

वन

१. **वना वनन्ति** धृषता रुजन्तः। √'वन्'। ऋ० ६.६.३

२. वनं वनोतेः। √'वन्'। निरु० ८.३

३. वना वनानीति वा। 'वनानि> वना'। निरु० ८.३

४. वधेनेति वा। 'वधेन> वना'। निरु० ८.३

५. वनानां वननकर्मणामादित्यरश्मीनाम्। √'वन्'। निरु० ८.३

६. वनानां वननकर्मणामिन्द्रियाणाम्। √'वन्'। निरु० ८.३

७. वनम् (रश्मिः)। √'वन' संभक्तौ'। वन्यते सेव्यते शीतादिनिवारणाय। √'वन्'+ घ'। निघ० १.५.८

८. अथवा वनतिहिंसार्थः। वन्यते हिंस्यतेऽनेन तमः। √'वन्'+ घ'। निघ० १.५.८

९. यद्वा, √'वनु' याचने'। वन्यते याच्यते वृष्टिप्रदानाय। √'वन्'+ घ'। निघ० १.५.८

१०. यद्वा, √'वन' शब्दे'। वन्यते शब्द्यते स्तूयते स्तोतृभिः। √'वन्'+ घ'। निघ० १.५.८

११. वनम् (उदकम्)। √'वन' संभक्तौ'। वन्यते सेव्यते वनम्। √'वन्'+ घ'। निघ० १.५.८

वनर्गु

१. वनर्गु वनगामिनौ। 'वन+ √'गम्'। निरु० ३.१४

२. वनर्गुः (स्तेनः)। 'वन+ √'गम्'। तस्करो हि मोषणार्थं सदा वनं गच्छति। 'वन+ √'गम्'+ डु+ रुडागमश्च'। निघ० ३.२४.९

वनस्पति

१. वनानां पाता वा। 'वन+ √'पा'। निरु० ८.३

२. पालयिता वा। 'वन+ √'पाल्'। निरु० ८.३

वनिन्

१. **वनिनो** वन्त वार्यं बृहस्पतिर्यजति **वेन** उक्षभिः। √'वन्'। ऋ० १.१३९.१०

वनीयान्

१. वनीयान् वनयितृतमः। (प्रत्ययार्थप्रदर्शनमात्रम्)। निरु० १२.५

वनुष

१. स्पृधो **वनुष्यन्वनुषो** नि जूर्व। √'वनुष्'। ऋ० ६.६.६

वनुष्यति

१. वनुष्यतिर्हन्तिकर्मा। अनवगतसंस्कारो भवति। √'वनुष्य्'। निरु० ५.२

वन्दारु

१. **वन्दारुस्ते** तन्वं **वन्दे** अग्ने। √'*वद्*'। ऋ० १.१४७.२

२. **वन्दारुष्टे** तन्वं **वन्दे**ऽ अग्ने। √'*वद्*'। यजु० १२.४२

वपा

१. तां यदवपंस्द्वपायै वपात्वम्। √'*वप्*'। जै०ब्रा० २.२६१

वपु

१. वपुः (उदकम्)। √'टुवप्' बीजसन्ताने'। उप्यतेऽनेन बीजम्, बीजवपने जलं हि साधकतमं भवति। √'*वप्*'+ *उसि*'। निघ० १.१२.९०

२. वपुः (रूपम्)। व्याख्यातमुदकनामसु। उप्यते स्वाश्रयः। √'*वप्*'+ *उसि*'। निघ० १.१२.९०

३. अर्तिप+वपियजितनिधनितपिभ्यो नित्। √'*वप्*'+ *उसि*'। उणा० २.११९

वप्ता

१. **वप्तेव** श्मश्रु **वपसि** प्र भूम। √'*वप्*'। ऋ० १०.१४२.४

२. **वप्ता वपसि** केशश्मश्रु। √'*वप्*'। अथर्व० ८.२.१७

वम्री

१. वम्र्यो वमनात्। √'*वम्*'। निरु० ३.२०

वम्रक

१. वम्रकः (ह्रस्वः)। √'टुवम' उद्गिरणे'। न्यूनार्थः। √'*वम्*'+ *रक्*'। निघ० ३.२.७

वय

१. वयाः शाखाः वेतेः। वातायनाः भवन्ति। √'वी'। निरु० १.४

२. वयः (अन्नम्)। √'वी' गतिप्रजननकान्त्यसनखादनेषु'। √'*वी*'+ *असुन्*'। निघ० २.७.७

३. यद्वा, √'वय' गतौ' इति वा। √'*वय्*'+ *असुन्*'। निघ० २.७.७

४. वयः (कूपः)। √'वृञ्' सम्भक्तौ'। सम्भज्यते जलार्थिभिः। √'*वृ*'+ *क*'। निघ० २.७.७

वयुन

१. वयुनं वेतेः कान्तिर्वा प्रज्ञा वा। निरु० ५.१४

२. वयुनम् (प्रशस्यम्)। अजतेः वीभावः। अस्तेमवदर्थः। √'*अज्*'+ *उनन्*> *वी*+ *उन*> *वयुन*'। निघ० ३.८.१०

३. वयुनं वेतेः कान्तिर्वा प्रज्ञा वा इति भाष्यम्। मत्वर्थीयस्य लुक्, कान्तिमान् प्रज्ञावान् वा। '*वयुन*' (*मत्वर्थीयस्य लुक्*)'। निघ० ३.८.१०

४. वयुनम् (प्रज्ञा)। व्याख्यातं प्रशस्यनामसु। गतौ शचीवदर्थः, क्षेपणेऽसुवत्। (*पूर्ववत्*)। निघ० ३.८.१०

५. अजियमिशीङ्भ्यश्च। √'*अज्*'+ *उनन्* > *वी* + *उन* > *वयुन*'। उणा० ३.६

वयुनावित्

१. वयुनाविदित्येष (प्रजापतिः) हीदं वयुनमविन्दत्। '*वयुन*+ √'*विद्*'। शत०ब्रा० ६.३.१.१६

वयोनाधाः

१. छन्दांसि वै देवा वयोनाधाः। छन्दोभिर्हीदं सर्वं वयुनद्धम्। '*वयुन*+ √'*नह्*'। शत०ब्रा० ८.२.२.८

वर

१. गव्यं यव्यं यन्तो दीर्घाहेषं **वरमरुण्यो वरन्त**। √'*वृ*'। ऋ० १.१४०.१३

२. भद्रं वै **वरं वृणुते**। √'*वृ*'। ऋ० १०.१६४.२

३. वरं वृणीष्वेति वृणा इति स वरमवृणीत। √'*वृ*'। गो०ब्रा० १.१.२३

४. वरं वृणीष्वेति। √'*वृ*'। गो०ब्रा० १.२.१७

५. वरं वृणीष्वेति वृणा३ इति, स वरमवृणीतास्यामेव। √'*वृ*'। गो०ब्रा० १.२.१९

६. वरं ते वृणावहा........तावेतमेव वरमवृणाताम्। √'*वृ*'। ऐ०ब्रा० ६.३

७. तौ वै वो वरं वृणावहा इति.........तावेतमेव वरमवृणाताम्। √'*वृ*'। ऐ०ब्रा० ८.४

८. स वै वो वरं वृणा इत वृणीष्वेति स एतमेव वरमवृणीत। √'*वृ*'। ऐ०ब्रा० १३.९

९. तावब्रूतां वरं वृणावहै। √'*वृ*'। तै०आ० ५.१.६

१०. वरो वरयितव्यो भवति। √'*वृ*'। निरु० १.७

वरण

१. त्वामग्ने **वृणुते** ब्राह्मणा इमे शिवो अग्ने **संवरणे** भवा नः। √'*वृ*'। अथर्व० २.६.३

२. **वरणो वारयाता** अयं देवो वनस्पतिः। √'*वृ*'। अथर्व० ६.८५.१; १०.३.५

३. **अवारयन्त वरणेन** देवाः। √'वृ'। अथर्व० १०.३.२

४. पापाद् **वरणो वारयिष्यते**। √'वृ'। अथर्व० १०.३.४

५. अयं मणिर्**वरणो वारयिष्यते**। √'वृ'। अथर्व० १०.३.६

६. वधाद् **वरणो वारयिष्यते**। √'वृ'। अथर्व० १०.३.७

७. सुयुरुवृञो युच्। √'वृ'+ युच्'। उणा० २.७५

वरणावती

१. **वारिदं वारयातै वरणावत्यामधि**। √'वृ'। अथर्व० ४.७.१

वरन्ते

१. वरन्ते, वारयन्ति। √'*वारय्*'। निरु० १०.२९

वराह

१. तेऽब्रुवन् (देवपाणयो नामासुराः) यद्वा आसा (देवगवीनाम्) वरम् (पयः) अभूत्तदहास्तेति, तद्वराहो भूत्वासुरेभ्योऽधि देवानगच्छत्। '*वर्+ अह*'। मै०सं० १.६.३

२. स (इन्द्रः) तं (वराहं वाममोषं सप्तानां गिरीणां परस्तादसुराणां वित्तं वेद्यं बिभ्रतम्) अहन्। (इन्द्रो विष्णुमब्रवीत्) एतम् (हतम्) आहरतेति। तमेभ्यो (देवेभ्यः) यज्ञ एव (विष्णुरूपः) यज्ञं (वराहाख्यम्) आहर। '*वर+ आ+* √'*ह*'। तै०सं० ६.२.४.२-३

३. वराहो मेघो भवति। वराहारः। 'वराहारमहार्षीः' इति च ब्राह्मणम्। '*वर+ आ+* √'*ह*'। निरु० ५.४

४. अयमपीतरो वराह एतस्मादेव। वृहति मूलानि। वरं वरं मूलं वृहतीति वा।........अङ्गिरसोऽपि वराहा उच्यन्ते।...........अथाप्येते देवगणा वराहा उच्यन्ते। √'*वृह्*'। निरु० ५.४

५. वराहः (मेघः)। वृणोतेः=वरः, वरशब्दे कर्मण्युपपदे आङ्पूर्वाद्धरतेः। वरमुदकमाहरतीति वराहः। '*वर+ आ+* √'*ह*'*+ अण्*'। निघ० १.१०.१३

६. यद्वा, वर उदकलक्षणः आहारोऽस्येति वा वराहः। (निरु० ५.४)। '*वर+ आहार*'। निघ० १.१०.१३

७. वरमाहारमाहार्षीः— इति च ब्राह्मणम्। '*वर+ आहार*'। निघ० १.१०.१३

८. यद्वा, वरशब्दे उपपदे हरतेराङ् पूर्वात्। वराहाकारो वा कृष्णो मेघो वराहसादृश्येन वर्तते। '*वर+ आ+* √'*ह*'*+ ड*'। निघ० १.१०.१३

९. यद्वा, √'वृहू' उद्यमने'। वरमुत्कृष्टमुदकं वृहति उद्यच्छति वर्षितुम्। √'*वृह्*'। निघ० १.१०.१३

१०. यद्वा, वरशब्दे उपपदे जुहोतेर्दानार्थात्। वरमुदकं ददाति आदत्ते वा, वर्षितुमिति वराहो मेघः। पर्वतोऽपि वरमुत्कृष्टं पदार्थमाहारयति प्राणिभिः। वर आहारोऽत्रेति वा। वराहवत् कृष्णवर्ण इति वा। '*वर+* √'*हु*'*+ ड*'। निघ० १.१०.१३

११. यद्वा, वरं मूलं वृहत्युद्यच्छत्यस्मादिति वा। वरं वरमित्यत्रैकस्य वरशब्दस्य निवृत्तिः। वरशब्दाद् वृहेश्च वराह इत्यर्थः। '*वर+* √'*वृह्*'। निघ० १.१०.१३

वरिव

१. वरिवः (धनम्)। √'वृञ्' वरणे'। भ्रंशं व्रियते, वरिवसो हेतुत्वाद्वा वरिवः। √'*वृ*'*+* √'*वृ*'*+ असुन्*'। निघ० २.१०.५

वरिष्ठ

१. तद्वार्यं **वृणीमहे वरिष्ठम्**। √'वृ'। ऋ० ८.२५.१३

२. वरिष्ठम्, वर्षिष्ठम्। '*वर्षिष्ठ> वरिष्ठ*'। निरु० ५.१

वरी

१. वर्य्यः (नद्यः)। √'वृञ्' वरणे' या √'वृङ्' सम्भक्तौ'। वरणीयाः सम्भजनीया वा वर्य्यः। √'*वृ*'*+ इ+ ङीष्*'। निघ० १.१३.२३

२. इदं नाम माधवः 'ऋतावर्य्यः' इत्यपठत्। ऋतमित्युदकनाम (निरु० २.२५) मत्वर्थीयो वनिप्। वनो र च (अष्टा० ४.१.७) ङीबरेफौ। '*ऋत+ वनिप्> ऋतावर+ ङीप्> ऋतावरी*'। निघ० १.१३.२३

वरीयस्

१. वरीयो वरतरम्। (*प्रत्ययार्थप्रदर्शनमात्रम्*)। निरु० ८.९

२. उरुतरं वा। (*अर्थप्रदर्शनमात्रम्*)। निरु० ८.९)

वरुण

१. इन्द्रा**वरुण**योरहं सम्राजोरव आ **वृणे**। √'वृ'। ऋ० १.१७.१

२. वामं **वरुण** शंस्यम्। वामं ह्या**वृणीमहे**। √'वृ'। ऋ० ८.८३.४

३. तद्धि वयं **वृणीमहे वरुण**। √'वृ'। ऋ० १०.१२६.२

४. यच्च (आपः) वृत्वाऽतिष्ठंस्तद्वरणोऽभवत्तं वा एतं वरणं सन्तं वरुण इत्याचक्षते परोक्षेण। √'*वृ*'*+ वरण> वरुण*'। गो०ब्रा० १.१.७

५. वरुणो वृणोतीति सतः। √'वृ'। निरु० १०.३

६. कृवृदारिभ्य उनन्। √'वृ'+ उनन्'। उणा० ३.५३

वरुणानी

१. वरुणानी वरुणस्य पत्नी। '*वरुणस्य (पत्नी) वरुणानी*'। निरु० १२.४६

२. वरुणस्य स्त्री वरुणानी। '*वरुण+ आनुक्+ ङीष्*'। अष्टा० ४.१.४९

वरूत्र

१. अहोरात्राणि वै वरूत्रयोऽहोरात्रैर्हीदꣳ सर्वं वृतम्। √'वृ'। शत०ब्रा० ६.५.४.६

वरूथ

१. **वृणीमहे**ऽध स्मा नस्त्रिवरूथः शिवो भव। √'वृ'। ऋ० ६.१५.९

२. वरूथम् (गृहम्)। √'वृञ्' वरणे'। √'वृ'+ ऊथन्'। निघ० ३.४.१७

३. ज+वृञ्भ्यामूथन्। √'वृ'+ ऊथन्'। उणा० २.६

वरेण्य

१. आ मन्द्रश्च सनिष्यन्तो **वरेण्यं वृणीमहे**। √'वृ'। ऋ० ३.२.४

२. तां **सवितुर्वरेण्यस्य** चित्रामाहं **वृणे**। √'वृ'। यजु० १७.७४

३. वरेण्यः, वरणीयः। '*वरणीय> वरेण्य*'। निरु० १२.१३

४. वृञ एण्यः। √'वृ'+ एण्य'। उणा० ३.९८

वर्ग

१. वर्गः (बलम्)। √'वृजी' वर्जने'। वर्ज्यन्तेऽनेन प्राणैः। √'वृज्'+ घञ्'। निघ० २.९.२०

वर्चस्

१. वर्चः (अन्नम्)। √'वर्च' दीप्तौ'। दीप्तिकरं ह्यन्नं शरीरादेः। √'वर्च्'+ असुन्'। निघ० २.७.२६

वर्च्चोदा, वर्चोदा

१. **वर्च्चोदा**ऽ अग्नेऽसि **वर्च्चो** मे देहि। '*वर्च्चस्+* √'*दा*'। यजु० ३.१७

२. **वर्चोदा**ऽ असि **वर्चो** मे देहि। '*वर्चस्+* √'*दा*'। यजु० ४.३

वर्ण

१. वर्णो वृणोतेः। √'वृ'। निरु० २.३

२. कृवृजृसिद्रूपन्यस्वपिभ्यो नित्। √'वृ'+ न'। उणा० ३.१०

वर्तनि

१. सं **वर्तयति वर्तनिं** सुजातता। √'वृत्'। ऋ० १०.१७२.४; अथर्व० १९.१२.१; सा०पू० ४.११.५

२. **वर्तनिरनु** वावृत एकमित पुरु। √'वृत्'। अथर्व० ७.२१.१

३. **वर्तनीरनु** वावृत एक इत्। √'वृत्'। सा०पू० ४.३.३

वर्धन

१. सुते सुते **वावृधे वर्धनेभिः**। √'वृध्'। ऋ० ३.३६.१

वर्प

१. वर्प इति रूपनाम। वृणोतीति सतः। √'वृ'। निरु० ५.८

२. वर्प (रूपम्)। √'वृङ्' सम्भक्तौ'। भज्यते हि तत्। √'वृ'+ *असुन्+ पुडागमश्च*'। निघ० ३.७.३

३. वृणोतेर्वा। √'वृ'+ *असुन्*'। निघ० ३.७.३

४. वृङ्शीभ्यां रूपस्वाङ्गयोः पुट् च। √'वृ'+ *असुन्+ पुडागमश्च*'। उणा० ४.२०२

वर्म

१. वर्म (गृहम्)। वृणोतेर्मन्। व्रियते तेन सम्भज्यते वा गृहिभिः। √'वृ+ मन्'। निघ० ३.४.१५

वर्वृतान

१. वर्वृतानाः, वर्तमानाः। √'वृत्'। निरु० ९.८

वर्ष,वर्षा

१. **अवर्षीर्वर्षमुदु** षू गृभाय। √'वृष्'। ऋ० ५.८३.१०

२. **वर्षो वर्षीयसि** यज्ञे यज्ञपतिं धाः। √'वृष्'। यजु० ६.११

३. सर्गा **वर्षस्य वर्षतो वर्षन्तु** पृथिवीमनु। √'वृष्'। अथर्व० ४.१५.४

४. **अभ्यवर्षीद् वर्षेण** पृथिवीम्। √'वृष्'। अथर्व० ११.५.१७

५. यद्वर्षति तद्वर्षाणाम् (रूपम्)। √'वृष्'। शत०ब्रा० २.२.३.८

६. तस्माद् वैश्यो वर्षास्वादधीत। विड्ढि वर्षा। √'*विष्*'। शत०ब्रा० २.१.३.५

७. वर्षा वर्षत्यासु पर्जन्यः। √'वृष्'। निरु० ४.२७

८. वृतॄवदिवचिवसिहनिकमिकषिभ्यः सः। √'वृ'+स'। उणा० ३.६२

वल

१. वलो वृणोतेः। √'वृ'। निरु० ६.२

२. वलः (मेघः)। √'वृ' आवरणे'। व्रियते ऽनेन दिश आकाशश्च मेघः पर्वतेनापि स्वशरीरेण भूमिराकाशश्च संव्रियते। '*वृ*'+*अप्*'। निघ० १.१०.४

३. यद्वा, √'वल' संवरणे'। '*वल्*'+*घ*'। निघ० १.१०.४

वलिशानः

१. वलिशानः (मेघः)। √'वल' संवरणे'+√'ईश' ऐश्वर्ये'। संवृण्वन्नाकाशमीष्टे दुर्भिक्षादेर्मनुष्यादीन् रक्षितुं वलीशान इति। '*वल्*'+*क्विप्*+√'*ईश्*'+*शानच्*'। निघ० १.१०.७

वल्गु

१. वल्गुः (वाक्)। √'वल' संवरणे'। संवृणोत्याच्छादयति जगत् व्याप्नोतीति यावत्। √'*वल्*'+*उ*+ *गुगागमश्च*'। निघ० १.११.५३

२. यद्वा, वल्गतिः शब्दार्थः। गर्जितादिलक्षणं शब्दं करोतीति वल्गुः। √'*वल्ग्*'+*उ*'। निघ० १.११.५३

३. वलेर्गुक् च। √'*वल्*'+*उ*+ *गुगागमश्च*'। उणा० १.१९

ववक्षिथ, विवक्षसे

१. ववक्षिथ, विवक्षसे इत्येते वक्तेर्वा। √'*वच्*'। निरु० ३.१३

२. वहतेर्वा साभ्यासात्। √'*वह्*'। निरु० ३.१३

३. ववक्षिथ, विवक्षसे (महत्) आख्यातपदे। निघ० ३.३.१४—१५

वव्रि

१. वव्रीति रूपनाम, वृणोतीति सतः। √'*वृ*'। निरु० २.९

२. वव्रिः (रूपम्)। √'वृञ्' वरणे'। तद्धि स्वाश्रयमावृणोति व्रियते वा। √'*वृ*'। निघ० ३.७.२

वषट्कार

१. वषट्कारो हैष परोऽक्षं यद्वेट्कारः। '*वेट्कार*> *वषट्कार*'। शत०ब्रा० ९.३.३.१४

२. स वै वौगिति करोति। वाग्वै वषट्कारो वाग्रेतो रेत एवैतत् सिञ्चति षडित्यृतवो वै षट् तदृतुष्वेवैतद्रेतः सिच्यते तदृतवो रेतः सिक्तमिमाः प्रजाः प्रजनयन्ति तस्मादेवं वषट्करोति। '*वाच्*+ *षट्*+ √'*कृ*'। शत०ब्रा० १.७.२.२१

वसतीवरी

१. तदासु विश्वान् देवान्संवेशयत्येते वै वसतां वरं तस्माद् वसतीवर्यो नाम। '*वसत्*+ *वर*'। शत०ब्रा० ३.९.२.१६

२. वसतु नु इदमिति तद्वसतीवराणां वसतीवरीत्वम्। '*वसतु*+ √'*वृ*'+ *वसतीवरी*'। तै०सं० ६.४.२.१

वसिष्ठ

१. तं (प्राणम्) यद्देवा अब्रुवन्नयं वै नः सर्वेषां वसिष्ठ इति तस्माद् वसिष्ठस्तस्माद् इत्याचक्षत एतमेव (प्राणः) सन्तम्। √'*वस्*'। ऐ०आ० २.२.२

२. यद्वै नु श्रेष्ठस्तेन वसिष्ठऽथो यद्वस्तृतमो वसति तेनोऽएव (प्राणः) वसिष्ठः। √'*वस्*'+ *क्विप्*+ *इष्ठन्*'। शत०ब्रा० ८.१.१.६

३. येन वै श्रेष्ठस्तेन वसिष्ठः (हिङ्कारः)। '*श्रेष्ठ*> *वसिष्ठ*'। (*प्रत्ययार्थप्रदर्शनम्*)। गो०ब्रा० २३.९

वसु

१. यज्ञं वष्टु धियावसुः। √'*वश्*'। यजु० २०.८४

२. **वस्वाजावद्रिं वावसनस्य** नर्त्तयन्। √'*वस्*'। ऋ० १.५१.३

३. कतमे वसव इति। अग्निश्च पृथिवी च वायुश्चान्तरिक्षं चादित्याश्च द्यौश्च चन्द्रमाश्च नक्षत्राणि चैते वसव एते हीदꣳसर्वं वासयन्ते ते यदिदꣳसर्वं वासयन्ते तस्माद्वसव इति। √'*वासय्*'। शत०ब्रा० ११.६.३.६ (जै०ब्रा० २.७७)

४. ते देवा अब्रुवन्। अमा वै नोऽद्य वसुर्वसति यो नः प्रावात्सीदिति। √'*वस्*'। शत०ब्रा० १.६.४.३

५. एतेषु हीदं सर्वं वसु हितम् इति। तस्माद् वसव इति। '*वसु*= *वसु*'। जै०ब्रा० २.७७

६. यद्वै किञ्च विन्दते तद्वसु। √'*विद्*'। काठ० १०.६

७. वसवो यद्विवसते सर्वम्। '*वि*+ √'*वस्*'। निरु० १२.४१

८. वसवो आदित्यरश्मयो विवासनात्। '*वि*'+√'*वस्*'। निरु० १२.४१

९. वसवः (रश्मयः)। √'वस' निवासे'। वसन्ति लोकेषु, वसन्त्यत्र रसाः, वसत्यत्र तेजः। √'वस्'+ उ'। निघ० १.५.१०

१०. यद्वा, √'वस' आच्छादने'। आच्छादयति वा लोकान् वृष्ट्या। √'वस्'+ उ'। निघ० १.५.१०

११. विवासयति वा तमः। √'वस्'+ उ'। निघ० १.५.१०

१२. वासयितारो वा लोकानां वृष्ट्यादि प्रदानेन। √'*वासय्*'। निघ० १.५.१०

१३. वसु (धनम्)। वस्वी रात्रिनामसु। वस्ते आच्छादयति तिरोभावयति दारिद्र्यम्। √'*वस्*'। निघ० २.१०.१५

वसुधिति

१. वसुधिती वसुधान्यै। '*वसु*'+ √'*धा*'। निरु० ९.४२

वसुधेय

१. वसुधेयस्य वसुधानाय। '*वसु*'+ √'*धा*'। निरु० ९.४२—४३

वसुवन

१. वसुवने वसुवननाय। '*वसु*+ √'*वन्*'। निरु० ९.४२,४३

वसूयु

१. वसुयवः वसुकामाः। ('*यु*' *प्रत्ययार्थप्रदर्शनम्*)। निरु० ६.६

२. वसूयुरिन्द्रो वसुमानित्यर्थः। ('*यु*' *प्रत्ययार्थप्रदर्शनम्*)। निरु० ६.६

वसोर्धारा

१. अत्रैव सर्वोऽग्निः संस्कृतः, स एषोऽत्र वसुस्तस्मै देवा एतां धारां प्रागृह्णंस्तयैनमप्रीणंस्तद्यदेतस्मै वसवऽ एतां धारां प्रागृह्णंस्तस्मादेनां वसोधरित्याचक्षते। '*वसु*+ *धारा*'। शत०ब्रा० ९.३.२.१

२. तद्यदेषा वसुमयी धारा तस्मादेनां वसोधरित्याचक्षते। '*वसुमयी*+ *धारा*'। शत०ब्रा० ९.३.२.४

वस्तो

१. वस्तोः (अहन्)। वस्ते ज्योतिरिति वस्तोः। वस्ते आच्छादयतीति ज्योतिः। √'*वस्*'+ तोसुन्'। निघ० १.९.१

वस्त्र

१. **वसित्वा** हि मियेध्य **वस्त्राण्यूर्जां** पते। √'*वस्*'। ऋ० १.२६.१

२. **वस्त्रेणेव वासया** मन्मना शुचिम्। √'*वस्*'। ऋ० १.१४०.१

३. युवं **वस्त्राणि** पीवसा **वसाथे**। √'*वस्*'। ऋ० १.१५२.१

४. भद्रा **वस्त्राण्यर्जुना वसाना**। √'*वस्*'। ऋ० ३.३९.२

५. गव्या **वस्त्रेव वासयन्तः**। √'*वस्*'। ऋ० ८.१.१७

६. स तु **वस्त्राण्यध** पेशनानि **वसानः**। √'*वस्*'। ऋ० १०.१.६

७. वस्त्रं वसतेः। √'*वस्*'। निरु० ४.२४

८. सर्वधातुभ्यः ष्ट्रन्। √'*वस्*'+ ष्ट्रन्। उणा० ४.१६०

वस्त्रमधि

१. वस्त्रमधि वस्त्रमाथिनम्। '*वस्त्रमाथिन्> वस्त्रमथि*'। निरु० ४.२४

वस्वी, वस्व

१. ते हि **वस्वो वसवानास्ते** अप्रमूरा महोभिः। √'*वस्*'। ऋ० १.९०.२

२. वस्वी (रात्रिः)। √'वस' आच्छादने'। वस्ते आच्छादयति तमो लोकमिति अवश्यायस्तमो वा, तद्वती वसुः। √'*वस्*'+ *उ> वसु+ ई> वस्वी*'। निघ० १.७.२३

३. यद्वा, प्रशस्यवचनाद्वसुशब्दात् ङीष्, सर्वभूतरमणत्वाद् रात्र्याः प्राशस्त्यम्। '*वसु*+ *ङीष्*'। निघ० १.७.२३

वहतुम्

१. वहतुम्, वहनम्। √'*वह्*'। निरु० १२.११

वहिष्ठ

१. **वहिष्ठास्तेभिर्न** इन्द्राभि **वक्षि** वाजम्। √'*वह्*'। ऋ० ६.२१.१२

२. आ त्वा **वहन्तु** हरयो **वहिष्ठाः**। √'*वह्*'। ऋ० ६.४०.३

३. **वहिष्ठा** अभि प्रयो नासत्या **वहन्तु**। √'*वह्*'। ऋ० ६.६३.७

४. **वहिष्ठैरश्वैः** सुवृता रथेना देवान्वक्षि। √'*वह्*'। ऋ० १०.७०.३

५. यं ते **वहन्ति** हरितो **वहिष्ठाः**। √'*वह्*'। अथर्व० १३.२.७

६. एधिवह्योश्चतुः। √'*वह्*+ *चतु*'। उणा० १.७७

वह्नि

१. घृतपृष्ठा मनोयुजो ये त्वा **वहन्ति वह्नयः**। √'*वह्*'। ऋ० १.१४.६

२. प्रति धुरं **वहन्ति वह्नयः**। √'वह्'। ऋ० ८.३.२३

३. अभि **वह्निरमर्त्यः** सप्त पश्यति **वावहिः**। √'वह्'। ऋ० ९.९.६

४. **वह्निं वहतु** जातवेदाः। √'वह्'। यजु० २९.३

५. अष्टधा युक्तो **वहति वह्निः**। √'वह्'। ऋ० १३.३.१९

६. वह्निरसि हव्यवाहनः। √'वह्'। तां०ब्रा० १.४.५

७. वहति ह वै वह्नेर्द्धुरः। √'वह्'। गो०ब्रा० २.५.१५

८. वह्नयो वोढारः। √'वह्'। निरु० ८.३

९. वह्निः (अश्वः)। √'वह्' प्रापणे'। √'वह्'+नि'। निघ० १.१४.६

१०. वहिश्रिश्रुयुद्रुग्लाहात्वरिभ्यो नित्। √'वह्'+नि'। उणा० ४.५२

वह्मा

१. स नो वक्षदनिमान सुवह्मा। √'वह्'। ऋ० ६.२२.७

वाग्दीक्षा

१. वाग्वाव दीक्षितो वाग्दीक्षा वागिदं सर्वं क्षियति वाचि वावेदं सर्वं क्षितम्। '*वाच्+ इदम्+ 'क्षि*'। जै०ब्रा० २.५४

वाघतः

१. वाघतः, वोढोरो मेधाविनो वा। √'वह्'। निरु० ११.१६

२. वाघतः (मेधाविनः)। √'वह'। निवहति ग्रन्थार्थान्। √'वह्'+ इति (*निपातनात्*)। निघ० ३.१५.२४

३. वाघतः (ऋत्विजः)। व्याख्यातं मेधाविनामसु। वहन्ति हवींषि। √'वह्'+ इति(*निपातनात्*)। निघ० ३.१५.२४

वाच्

१. **अवोचाम** रहूगणा अग्नये मधुमद्**वचः**। √'वच्'। ऋ० १.७८.५

२. सूरेऽवोचन्त चर्षणयो **विवाचः**। √'वच्'। ऋ० ६.३१.१

३. वाक् कस्माद्? वचेः। √'वच्'। निरु० २.२३

४. वाक् (वाणी)। उच्यन्ते इति वाक् इन्द्रियम्, तत्कार्य्यः शब्दोऽप्युच्यते इति वाक्, उच्यतेऽनया अर्थः इति वाक्, स्तनयित्नुलक्षणा माध्यमिकां साप्युच्यते इति वाक्, तदधिष्ठात्र्यपि देवता वागिष्यते। √'*वच्+ क्विप्*'। निघ० १.११.५०

५. क्विब्वचिप्रच्छिश्रिस्रुद्रुप्रुज्वां दीर्घोऽ संप्रसारणं च। √'*वच्'+ क्विप्*'। उणा० २.५८

वाचस्पति

१. वाचस्पतिर्वाचः पाता वा। '*वाच्+* √'*पा*'। निरु० १०.१७

२. पालयिता वा। '*वाच्+* √'*पाल्*'। निरु० १०.१७

वाज

१. तं त्वा **वाजेषु वाजिनं वाजयामः**। √'*वज्*' *या* √'*वाज्*'। ऋ० १.४.९

२. वाजः (अन्नम्)। √'वज' गतौ'। नियम्यते अभिगम्यते हि तत्सर्वैः। गच्छत्यनेनादत्तेन सुखेन, भुक्तेन तृप्तिं वा गच्छत्यनेन शुद्धेन सत्त्वशुद्धिं भोक्ता। √'*वज्+ घञ्*'। निघ० २.७.२

३. यद्वा, गत्यर्थाः बुद्ध्यर्थाः, जानात्यनेन भुक्तेन धर्मम्। √'*वज्+ घञ्*'। निघ० २.७.२

४. वाजः (बलम्)। व्याख्यातमन्ननामसु। गच्छन्त्यनेन शत्रून् प्रति जिगीषवः। गम्यतेऽधिगम्यते व्यायामदिना यत्नेन। √'*वज्+ घञ्*'। निघ० २.७.२

५. यद्वा, वाजयतेः प्रेरणार्थात्— इति माधवः। अनेन शत्रून् प्रेरयति विद्रावयतीति। √'*वाजय्*'। निघ० २.७.२

वाजगन्ध्य

१. वाजगन्ध्यं गध्युत्तरपदम्। '*वाज+* √'*गध्*'। निरु० ५.१५

वाजजित्

१. बृहस्पतेर्वाजजितो **वाजं जेषाम्**। '*वाज+* √'*जि*'। यजु० ९.१३

२. त (देवाः)। एतत् सामापश्यत्। तेनास्तुवत। ते वाजजिगीवा विश्वधनानीत्येवासुराणां यद्धनं ये पशवो यदन्नाद्यमासीत् तदवृञ्जत तदेव वाजिजितो वाजजित्त्वम्। '*वाज (√'वृज्)+* √'*जि*'। जै०ब्रा० ३.२९९

३. ते वाजिजिगीवेत्येवान्नाद्यमसुराणामवृञ्जत। तदेव वाजजितो वाजजित्त्वम्। '*वाज(√'वृज्)+* √'*जि*'। जै०ब्रा० ३.२९९.३.१५१

४. वाजजिद्भवति सर्वस्याप्त्यै सर्वस्य जित्यै। '*वाज+* √'*जि*'। ता०ब्रा० १३.९.२०; १५.११.२

वाजपेय

१. वाजपेयो वा एषः, य एष तपति, वाजमेतेन यजमानः स्वर्गं लोकमाप्नोति। *'वाज+ √'आप्'*। गो०ब्रा० २.५.८

२. वाजपेयो वा एष वाजमेवैतेन........आप्नोति। *'वाज+ √'आप्'*। तां०ब्रा० १८.७.१

वाजसातौ

१. वाजसातौ (सङ्ग्रामः)। वाजोऽन्नं दीयते येन। *'वाज+ √'षण्'*। निघ० २.१७.३६

वाजस्पत्य

१. वाजस्पत्यं वाजपतनम्। *'वाज+ √'पत्'*। निरु० ५.१५

वाजिनी, वाजिनीवती

१. वाजिनी (उषा)। वाजो बलं वेगो वा तेन तद्वती वाजिनी। कासौ उषसः स्वभूता तेन तद्वती वाजिनीवती। *'वाज+ इनि+ मतुप्+ ङीप्'*। निघ० १.८.८

२. यद्वा, वाजो हविर्लक्षणमन्नाद्यस्या अस्तीति वाजिनी यागसन्ततिः, तद्वती वाजिनीवती। *'वाज+ इनि+ मतुप्+ ङीप्'*। निघ० १.८.८

३. यद्वा, वाजमन्नं तद्वती वा वाजिनी, कासौ अवयवभूतेनान्नेन तद्वती अत्र संहविः, तया अन्नसंहत्या तद्वती वाजिनीवती। *'वाज+ इनि+ मतुप्+ ङीप्'*। निघ० १.८.८

४. यद्वा, द्वावेतौ मत्वर्थीयौ तयोरेकार्थेनातितरो मत्वर्थीयः, अतिशयेनान्नवतीत्यर्थः। वाजिनीवती त्विषा हि सर्वेऽन्नं लभन्ते— इति माधवः। *'वाज+ इनि+ मतुप्+ ङीप्'*। निघ० १.८.८

वाजी

१. तं त्वा **वाजेषु वाजिनं वाजयामः**। √*'वज्' या* √*'वाज्'*। ऋ० १.४.९

२. इन्द्र **ऋभुभिर्वाजिभिर्वाजयन्निह**। √*'वज्'*। ऋ० ३.६०.७

३. यत्सद्यो वाजान्त्समजयत्। तस्माद्वाजी नाम। √*'जि'*। तै०सं० ३.९.२१.२

४. वाजी वेजनवान्। √*'विज्'*। निरु० २.२८; ३.३

५. वाजिनेषु, वाग्यज्ञेषु। *'वाच्+ यज्ञ> वाजिन'*। निरु० १.२०

६. वाजी (अश्वः)। √'वज' गतौ'। वाजो वेगः। वाजोऽस्यास्तीति वाजी। √*'वज'+ घञ्> वाज, वाज+ इनि> वाजिन्'*। निघ० १.१४.४

७. यद्वा, वाजोऽन्नं, देवतात्वे हविर्लक्षणेन, अश्वजातीयत्वे तज्जात्युचितमुद्गाद्यन्नेन तद्वान्। √*'वज'+ घञ्> वाज, वाज+ इनि> वाजिन्'*। निघ० १.१४.४

८. वाजाः पक्षाः अभूवन्नस्येति वाजी— क्षीरस्वामी। √*'वज'+ घञ्> वाज, वाज+ इनि> वाजिन्'*। निघ० १.१४.४

९. यद्वा, √'ओविजी' भयचालनयोः'। वेजनवान् वा। वेजनं कम्पनं कम्पितः स्वयम्, कम्पयिता वा परेषामित्यर्थः। √*'विज्' (पृषोदरादित्वात्)>वाजी'*। निघ० १.१४.४

वाजे

१. वाजे (सङ्ग्रामः)। वाजशब्दो व्याख्यातः बलनामसु। √*'वज्' या* √*'विज्'*। निघ० २.१७.४२

वाणः, वाणी

१. वाणी, आपो वा वहनात्। √*'वह्'*। निरु० ६.२

२. वाणीः, वाचो वा वदनात्। √*'वद्'*। निरु० ६.२

३. वाणीः (वाक्)। √'वणि' शब्दे'। √*'वण्'*। निघ० १.११.१२

४. वाणः (वाक्)। √'वणि' शब्दे'। वण्यते शब्द्यते वाणः। √*'वण्'*। निघ० १.११.१२

५. यद्वा, वणनं शब्दनं वाणः। स्तुतिमती हि वाक्। √*'वण्'*। निघ० १.११.१२

वाणीची

१. वाणीची (वाक्)। √'वणि' शब्दे'+√'अञ्चु'। वाणीं स्तुतिरूपां वाचमञ्चतीति गच्छतीति। √*'वण्+ इञ्+ '√अञ्च्'+ क्विन्+ ङीप्'*। निघ० १.११.१३

वात

१. उत स्म ते वनस्पते **वातो** वि **वात्यग्रमित्**। √*'वा'*। ऋ० १.२८.६

२. तपुर्जम्भो वन आ **वातचोदितो** यूथे न साह्वाँ अव **वाति** वंसगः। √*'वा'*। ऋ० १.५८.५

३. तन्नो **वातो** मयोभु **वातु**। √*'वा'*। ऋ० १.८९.४

द्रवि

१. द्रविर्न द्रावयति दारु धक्षत्। √'द्रु'। ऋ० ६.३.४

द्रविण

१. धनं द्रविणमुच्यते। यदेनमभिद्रवन्ति। √'द्रु'। निरु० ८.१

२. बलं वा द्रविणम्। यदेनेनाभिद्रवन्ति। √'द्रु'। निरु,८.१

३. द्रविणम् (बलम्)। √'द्रु गतौ'। √'द्रु'+ इनन्'। निघ० २.९.२६

४. द्रविणम् (धनम्)। व्याख्यातं बलनामसु। रयिवदर्थः। √'द्रु'+ इनन्'। निघ० २.१०.२५

५. द्रुदक्षिभ्यामिनन्। √'द्रु'+ इनन्'। उणा० २.५१

द्रविणस्

१. द्रविणस इति द्रविणसादिन इति वा। 'द्रविण+ √'सादय्'। निरु० ८.१

२. द्रविणसानिन इति वा। 'द्रविण+ √'सानय्'। निरु० ८.१

द्रविणोदा

१. द्रविणोदा इति द्रविणꣳ ह्येभ्यो ददाति। 'द्रविण+ √'दा'। शत०ब्रा० ६.३.३.१३

२. द्रविणोदाः कस्मात्? धनं द्रविणमुच्यते। यदेनमभिद्रवन्ति। बलं वा द्रविणम्। यदेनेनाभिद्रवन्ति। तस्य दाता द्रविणोदाः।...........तत्को द्रविणोदाः? इन्द्र इति क्रौष्टुकिः। स बलधनयोर्दातृतमः। √'द्रु'+ इनन्> द्रविण, द्रविण+ दा> द्रविणोदा'। निरु० ८.१

द्रु

१. दारु दृणातेर्वा, द्रूणातेर्वा, तस्मादेव द्रु। √'दॄ' या √'द्रू'। निरु० ४.१५

द्रुघण

१. द्रुघणः द्रुममयो घनः। 'द्रुममय+ घन> द्रुमघन> द्रुघन> द्रुघण'। निरु० ९.२३

द्रुपद

१. द्रुपदे, दारुपाद्योः। 'दारु+ पादु> द्रु+ पाद> द्रुपद'। निरु० ४.१५

द्रुह्यु

१. द्रुह्यवः (मनुष्याः)। √'द्रुह जिघांसायाम्'। द्रोहं परेषामिच्छन्ति। 'द्रुह'+ क्विप्> द्रोह+ क्यच्+ उ> द्रुह्यु'। निघ० २.३.१६

द्रोण

१. द्रोणं द्रुममयं भवति। 'द्रुममय'। निरु० ५.२६

२. कृवृजृसिद्रुपन्यनिस्वपिभ्यो नित्। √'द्रु'+ न। उणा० ३.१०

द्रोण्य

१. द्रुद्रवद् द्रोण्यः पशुः। √'द्रु'। ऋ० ५.५०.४

द्वार

१. अपावृणोदिष इन्द्रः परीवृता द्वारः इषः परीवृताः। √'वृ'। ऋ० १.१३०.३

२. द्वारोच्छन्तीरव्रञ्छुचयः पावकाः। √'वृ'। ऋ० ४.५१.४

३. द्वारो जवतेर्वा। √'जू'। निरु० ८.९

४. द्रवतेर्वा। √'द्रु'। निरु० ८.९

५. वारयतेर्वा। √'वारय्'। निरु० ८.९

द्वि

१. द्वौ द्रुततरा सङ्ख्या। √'द्रु'। निरु० ३.१०

द्विज

१. द्विर्ह वै यजमानो जायते मिथुनादन्यज्जायते यज्ञादन्यत्। तद्यन्मिथुनाज्जायते तदस्मै लोकाय जायते। अथ यद्यज्ञाज्जायते तदमुष्मै लोकाय जायते। गन्धर्वलोकाय जायते देवलोकाय जायते स्वर्गलोकाय जायते। 'द्वि+ √'जन्'। जै०ब्रा० १.२५९

द्विता

१. द्विता द्वैधम्। 'द्वैध'। निरु० ५.३

द्विबर्हस

१. द्विबर्हा द्वयोः स्थानयोः परिबृढो मध्यमे च स्थाने उत्तमे च। 'द्वि+ √'बृह्'। निरु० ६.१७

द्वैगत

१. तदेतत् स्वर्ग्यं साम............स यदयास्यो ऽमुष्माल्लोकादमुं लोकमगच्छत् स इमौ लोकौ द्विरनुसमचरत्, तद् द्वैगतस्य द्वैगतत्वम्। 'द्वि+ √'गम्'। जै०ब्रा० ३.२१६

२. द्विगद्वा एतेन भार्गवो द्विः स्वर्गं लोकमगच्छदागत्य पुनरगच्छद् द्वयोः कामयोरवरुद्ध्यै द्वैगतं क्रियते। 'द्वि+ √'गम्'। ता०ब्रा० १४.९.३२

धत्त

१. धत्त, दास्यसि। √'*दा*'। निरु० ८.१८

धन

१. द्युमन्तं शुष्मं मघवत्सु**धत्तन**। **धन**स्पृतमुक्थ्यम्। √'*धा*'। ऋ० १.६४.१४

२. यदुदीरत आजयो धृष्णवे **धीयते धना**। √'*धा*'। ऋ० १.८३.३

३. **धनानां धर्त्तर**वसा विपन्यवः। √'*धृ*'। ऋ० १.१०२.५

४. **अधायि** वृषा चोदस्व महते **धनाय**। √'*धा*'। ऋ० १.१०४.७

५. **धने** हिते सर्त्तवे **प्रत्यधत्तम्**। √'*धा*'। ऋ० १.११६.१५

६. अस्मै **दधिरे** कृत्नवे **धनम्**। √'*धा*'। ऋ० २.१३.१०

७. सं सृष्टं **धन**मुभयं समाकृतमस्मभ्यं **धत्ताम्**। √'*धा*'। अथर्व० ४.३१.७

८. इदं **धनं** नि **दधे**। √'*धा*'। अथर्व० ११.१.२८

९. धृष्णवे **धीयते धना** युक्ष्वा। √'*धा*'। ऋ० २०.५६.३

१०. यदुदीरत आजयो धृष्णवे **धीयते धनम्**। √'*धा*'। सा०पू० ४.७.६, सा०उ० १००४

११. कृपृवृजिमन्दिनिधाञः क्युः। √'*धा*'+ *क्यु*'। उणा० २.८१

१२. धनं कस्माद्, धिनोतीति सतः। √'*धिन्व्*'। निरु० ३.९

धनिष्ठ

१. माता यद्वीरं **दधनद्धनिष्ठा**। √'*दध्*' *या* √'*धा*'। ऋ० १०.७३.१

धनुस्

१. धनुर्धन्वतेर्गतिकर्मणो वधकर्मणो वा, धन्वन्त्यस्मादिषवः। √'*धन्व्*'। निरु० ९.१६

२. अर्तिप+वपियजितनिधनितपिभ्यो नित्। √'*धन्*'+ *उस्*'। उणा० २.११९

धन्वन्

१. धन्वाऽन्तरिक्षं धन्वन्त्यस्मादापः। √'*धन्व्*'। निरु० ५.५

२. धन्व (अन्तरिक्षम्)। √'धवि' गतौ'। धन्वन्ति गच्छन्ति अस्मादापः। √'*धन्व्*'+ *कनिन्*'। निघ० १.३.५

३. यद्वा, √'धन' धान्ये' अनेकार्थत्वादर्थनार्थः। धन्यते अर्थ्यतेऽवकाशप्रदानाय देवतात्वात् स्वं स्वमभीष्टं वा। √'*धन्*'+ *क्वनिप्*'। निघ० १.३.५

४. कनिन् युवृषितक्षिराजिधन्विद्युप्रतिदिवः। √'*धन्व्*'+ *कनिन्*'। उणा० १.१५६

धमति

१. धमतिर्गतिकर्मा। √'*धम्*'। निरु० ६.२

धमनि

१. धमनिः (वाक्)। धमतिर्गतिकर्मा। गम्यते ज्ञायते अनया अर्थः, ज्ञायते वा विद्वद्भिः साध्वसाधुविभागेन। √'*धम्*'+ *अनि*'। निघ० १.११.१७

२. यद्वा, 'धमति' इति वधकर्मस्वपि पठ्यते (निघ० २.१९)। हन्यतेऽनया शापक्रोशादिरूपयेति तथा च "वज्र एव वाक्" इति ब्राह्मणम् (ऐ०ब्रा० २.३.३)। √'*धम्*'+ *अनि*'। निघ० १.११.१७

३. अर्तिसृधृधम्यम्यश्यवितृभ्योऽनिः। √'*धम्*'+ *अनि*'। उणा० २.१०४

धरुण

१. ऋतेन ऋतं **धरुणं धारयन्त**। √'*धृ*'। ऋ० ५.१५.१

२. **दाधार** यो **धरुणं** सत्यताता। √'*धृ*'। ऋ० १०.१११.४

३. **धर्ता ध्रियस्व धरुणे** पृथिव्याः। √'*धृ*'। अथर्व० १२.३.३५

४. **धर्ता** ह त्वा **धरुणो धारयाता**। √'*धृ*'। अथर्व० १८.३.२९

५. अथ यद्धरुण एकविंश इत्यसौ हि स आदित्यः। एतस्मिन् वा इदं सर्वं धृतम्। √'*धृ*'। जै०ब्रा० ३.३०९

६. असावेवादित्यो धरुण एकविंशस्तद्यत्तमाह धरुण इति यदा ह्येवैषोऽस्तमेत्यथेदं सर्वं ध्रियते। √'*धृ*'। शत०ब्रा० ८.४.१.१२

७. धरुणो मातरं धयन्नित्यग्निमेवैतत्पृथिवीं धयन्तमाह। √'*धेट्* *पाने*'। शत०ब्रा० ४.६.९.९

८. धरुणम् (उदकम्)। √'धृञ् धारणो'। धारयति जगत् धरुणम्। √'*धृ*'+ *णिच्*+ *क्युन्*'। निघ० १.१२.२४

धर्णसि

१. धर्णसि (बलम्)। √'धृञ् धारणे'। ध्रियतेऽनेन राज्यादि। √'*धृ*'+ *असि*'। निघ० २.९.२५

धर्ता

१. **धर्त्ता च विधर्त्ता च वि धारयः**। √'*धृ*'। यजु० १७.८२

२. त्रितो **धर्ता दाधार** त्रीणि। √'*धृ*'। अथर्व० ५.१.१

३. **धर्ता ध्रियस्व धरुणे** पृथिव्याः। √'*धृ*'। अथर्व० १२.३.३५

४. **धर्ता** ह त्वा **धरुणो धारयाता**। √'*धृ*'। अथर्व० १८.३.२९

५. विधर्ता, विधारयिता। √'*धारय्*'। निरु० १२.१४

६. धर्ता, धारयिता। √'*धारय्*'। निरु० १२.३०

धर्मन्

१. अतो **धर्मणि धारयन्**। √'*धृ*'। ऋ० १.२२.१८; यजु० ३४.४३; सा०उ० १६७०

२. **धर्म्मणाधि** दाने व्य१ वनी**रधारयः**। √'*धृ*'। ऋ० २.१३.७

३. इतो **धर्माणि धारयन्**। √'*धृ*'। अथर्व० ७.२६.५

४. पृथिवीं **धर्मणा धृताम्**। √'*धृ*'। अथर्व० १२.१.१७

५. वृषा **धर्माणि दध्रिषे**। √'*धृ*'। सा०पू०५.४.८, सा०उ० ७८१

६. एष धर्मो य एष (सूर्यः) तपत्येष हीदꣳ सर्वं धारयत्येतेनेदꣳ सर्वं धृतम्। √'*धारय्*'। शत०ब्रा० १४.२.२.२९

७. धर्मणे, धारणाय। √'*धृ*'। निरु० ७.२५

८. धर्माणम्, धारयितारम्। √'*धारय्*'। निरु० ९.२५

९. अर्तिस्तुसुहुसृधृक्षिक्षुभायावापदियक्षिनीभ्यो मन्। √'*धृ*'+ *मन्*'। उणा० १४०

धर्मधृत

१. सोमा इन्द्रो वरुणो मित्रो अग्निस्ते देवा धर्मधृतो धर्मं धारयत्वित्येते वै देवा धर्मधृतो यदिमे प्राणाः। '*धर्म*+ √'*धृ*'। मै०सं० ४.४.२

धव

१. धवाः (मनुष्याः)। √'धूञ् कम्पने'। √'धुञ् वा। धूनयति, धुनोति स्वावयवान् धवः। √'*धू*'+ *अच्*'। निघ० २.३.३

२. यद्वा, मनुष्या मृत्युतो वेपन्ते। √'*धू*'+ *अच्*'। निघ० २.३.३

३. यद्वा, √'धावु गतिशुद्ध्योः'। इतश्चेतः शरणार्थिनो धावन्ति धवाः। √'*धाव्*'+ *अच्*'। निघ० २.३.३

धाता, धातृ

१. विश्वेभिर्धायि **धातृभिः**। √'*धा*'। अथर्व० २०.६०.२, सा०उ० ८२५

२. अयमिह प्रथमो **धायि धातृभिः**। √'*धा*'। ऋ० ४.७.१, यजु० १५.२६.३३.६

३. सं **धाता** समुदेष्ट्री **दधातु** नौ। √'*धा*'। ऋ० १०.८५.४७

४. चक्षुर्धाता **दधातु** नः। √'*धा*'। ऋ० १०.१५८.३

५. **धाता** गर्भं **दधातु** ते। √'*धा*'। ऋ० १०.१०४.१, अथर्व० ५.२५.६

६. अयमिह प्रथमो **धायि धातृभिः**। √'*धा*'। यजु० ३.१५

७. गर्भं **धाता दधातु** ते। √'*धा*'। अथर्व० ५.२५.५

८. **धाता दधातु** नो रयिम्। √'*धा*'। अथर्व० ७.१७.१

९. **धाता दधातु** दाशुषे। √'*धा*'। अथर्व० ७.१७.२

१०. **धाता** विश्वा वार्या **दधातु**। √'*धा*'। अथर्व० ७.१७.३

११. **धाता दधातु** सुमनस्यमानः। √'*धा*'। अथर्व० ७.१९.१

१२. **धाता दधातु** सविता त्रायमाणः। √'*धा*'। अथर्व० ८.१.१५

१३. वर्म **धाता दधातु** मे। √'*धा*'। अथर्व० ८.५.१८

१४. **धाता** पुष्टिं **दधातु** मे। √'*धा*'। अथर्व० १९.३१.३

१५. यद् (प्रजापतिर्दिक्षु प्रतिष्ठायेदꣳ सर्वम्) दधद्विदध-दतिष्ठत्तस्माद् धाता। √'*धा*'। शत०ब्रा० ९.५.१.३५

१६. धाता मे धाम्ना सुधां दधातु। √'*धा*'। काठ० ५.५

१७. धाता सर्वस्य विधाता। √'*धा*'। निरु० ११.१०

धातु

१. य उ त्रिधातु पृथिवीमुत द्यामेको **दाधार** भुवनानि विश्वा। √'*धा*'। ऋ० १.१५४.४

२. त्रिधातुभिररुषीभिर्वयो **दधे** रोचमानो वयो **दधे**। √'*धा*'। सा०उ० १५९२

३. धातुर्दधातेः। √'*धा*'। निरु० १.२०

४. सितनिगमिमसिसच्यविधाञ्क्रुशिभ्यस्तुन्। √'*धा*'+ *तुन्*'। उणा० १.६९

धाना

१. द्रोणकलशे धाना भवन्ति, तासां हस्तैरादधति। √'*धा*'। गो०ब्रा० २.४.६

२. धाना भ्राष्ट्रे हिता भवन्ति, फले हिता भवन्तीति वा। √'*धा*'। निरु० ५.१२

३. धाप+वस्यज्यतिभ्यो नः। √'*धा*'+ *न*'। उणा० ३.६

धान्य

१. **धत्ते धान्यं** पत्यते वसव्यैः। √'*धा*'। ऋ० ६.१३.४

२. **धान्यमसि धिनुहि** देवान्। √'*धिवि*'। यजु० १.२०

३. धान्यमसि धिनुहि देवान्, इति धान्या हि देवान् धिनवदित्यु हि हविर्गृह्यते। √'*धिन्व्*'। शत०ब्रा० १.२.१.१८

४. धान्यमसि धिनुहि देवान्। √'*धिन्व्*'। तै०सं० १.१.६.१, मै०सं० १.१.७, ४.१.७, काठ० १.६, ३१.५, कपि०क०सं० ,१.६, ४७.५

५. दधातेर्यन्नुट् च। √'*धा*'+ *यत्*+ *नुडागमः*'। उणा० ५.४८

धामन्

१. प्रिया **धामान्यमृता दधानः**। √'*धा*'। ऋ० ३.५५.१०

धामहे

१. धामहे, दधीमहि। √'*धा*'। निरु० १२.६

धायसे

१. **अन्तर्महो, समृते धायसे धुः**। √'*धा*'। ऋ० ३.३८.३

धायु

१. यस्मै **धायुरदधा** मर्त्याय। √'*धा*'। ऋ० ३.३०.७

धाय्या

१. तद्धैको पुरस्ताद् धाय्ये दधत्यन्नं धाय्ये, मुखत इदमन्नादं दध्म इति वदन्तस्तदु तथा न कुर्य्यात्। √'*धा*'। शत०ब्रा० १.४.१.३७

२. धाय्याभिर्वै प्रजापतिरिमांल्लोकानधयद्यं यं काममकामयत। √'*धेट्* *पाने*'। ऐ०ब्रा० ३.१८

३. यत्र यत्र वै देवा यज्ञस्य छिद्रं निरजानंस्तद्धाय्याभि-रपिदधुस्तद् धाय्यानां धाय्यात्वम्। √'*धा*'। ऐ०ब्रा० ३.१८

धारका

१. धारका ह वै नामैषतया ह वै प्रजापतिः प्रजा धारयाञ्चकार। √'*धृ*'। शत०ब्रा० ११.६.२.१०

धारा

१. तद्यदब्रवीत् (ब्रह्म) आभिर्वा अहमिदं सर्वं धारयिष्यामि यदिदं किञ्चेति तस्माद् धारा अभवंस्तद्धाराणां धारात्वं यच्चासु ध्रियते। √'*धृ*'। गो०ब्रा० १.१.२

२. धारा (वाक्)। √'धृञ् धारणे'। लोकस्य धारयित्री वर्षप्रदानेन स्वाभिधेयस्य वा। √'*धृ*'+ *णिच्*+ *अच्*'। निघ० १.११.२

धासि

१. धासि (अन्नम्)। √'डुधाञ् धारणपोषणयोः'। दीयतेऽर्थिभ्यो धारयति प्राणान् वा। √'*धा*'+ *क्सि*'। निघ० २.७.११

धिषणा

१. भग **त्रातर्धिषणे** सातये **धाः**। √'*धा*'। ऋ० ३.५६.६

२. देवी **धिषणा धाति** देवम्। √'*धा*'। ऋ० ७.९०.३,यजु० २७.२४

३. धिषणा वाक्। धिषतेर्दधात्यर्थे। √'*धिष्*'। निरु० ८.३

४. धीसादिनीति वा। '*धी*+ √'*सद्*'। निरु० ८.३

५. धीसानिनीति वा। '*धी*+ √'*षण्*'। निरु० ८.३

६. धिषणा (वाक्)। √'धृञ् धारणे'+'षणु दाने'। धारयत्यर्थमिति धीः बुद्धिः। धारयति कर्त्तारं फलप्रदानेनेति धीः कर्मबुद्धिः कर्म वा। सनोति सम्भजते इति धिषणा। √'*धृ*'> *धी*, √'*षण्*'+ *अच्*> *सना*, *धी*+ *सना*> *धिषणा*'। निघ० १.११.४४

७. यद्वा, √'ञिधृषा' प्रागल्भ्ये'। प्रगल्भसमर्था रक्षितुं जगद् वर्षप्रदानेनेत्यर्थः। √'*धृष्*'+ *क्यु*> *धिष्*+ *अन*> *धिषणा*'। निघ० १.११.४४

८. यद्वा, √'धिषि' धारणे'। वाचि स्वाभिधेयं धारयति सम्बन्धस्य नित्यत्वात्। √'*धिष्*'+ *क्यु*'। निघ० १.११.४४

९. शब्दायते वा मेघे अधिश्रिता। √'*धिष्*'+ *क्यु*'। निघ० १.११.४४

१०. धिषणे (द्यावापृथिव्यौ)। व्याख्यातं वाङ्नामसु। स्वं रक्षितुं प्रगल्भे समर्थे, धारयित्र्यौ वा देवमनुष्यादीन्, शब्द्यते स्तूयते वा। √'*धिष्*'+ *क्यु*'। निघ० १.११.४४

११. धृषेर्धिष च संज्ञायाम्। √'धृष्'+क्यु>धिष+ यु>धिष+ अन>धिषणा'। उणा० २.८३

धिष्ण्या

१. प्राणा वै देवा धिष्ण्यास्ते हि सर्वा धिय इष्णन्ति। 'धी+√'इष्'। शत०ब्रा० ७.१.१.२४

२. धिष्ण्यो धिषणा भवः। 'धिषणा>धिष्ण्या'। निरु० ८.३

३. सानसिवर्णसिपर्णसितण्डुलाङ्कुशचषालेल्वलपल्वलधिष्ण्यशल्याः। √'धृष्'+ ण्य > धिष्+ ण्य > धिष्ण्य'। उणा० ४.१०८

धी

१. एषु विश्वपेशसं **धियं धाः**। √'धा'। ऋ० १.६१.१६

२. विदन्तीमत्र नरो **धियन्धाः**। √'धा'। ऋ० १.६७.२

३. श्रमयुवः पदव्यो **धियन्धाः**। √'धा'। ऋ० १.७२.२

४. भर्गो देवस्य **धीमहि**। **धियो** यो नः प्रचोदयात्। √'ध्यै' या √'धीङ्'। ऋ० ३.६२.१०, यजु० २२.९, ३०.२, ३६.३, सा०उ० १४२१

५. **धीभिः** क्षत्रं राजाना प्रदिवो **दधाथे**। √'धा'। ऋ० ३.३८.५

६. एषेऽवसे **दधीत धीः**। √'धा'। ऋ० ५.४१.५

७. अत्र पत्नीरा **धिये धुः**। √'धा'। ऋ० ५.४१.६

८. **धियं** वो अप्सु **दधिषे** स्वर्षा। √'धा'। ऋ० ५.४५.११

९. सरस्वती वीरपत्नी **धियं धात्**। √'धा'। ऋ० ६.४९.७

१०. अग्ने साधन्नृतेन **धियं दधामि**। √'धा'। ऋ० ७.३४.८

११. अभि वो देवी **धियं दधिष्व**। √'धा'। ऋ० ७.३४.९

१२. ऐषु विश्वपेशसं **धियं धाः**। √'धा'। अथर्व० २०.३५.१६

१३. वाजाय श्रवसे **धियं दधुः**। √'धा'। सा०उ० १५०६

१४. अस्तु श्रौषट् पुरो अग्निं **धिया दध**। √'धा'। ऋ० १.१३९.१

१५. **दधानः** शुचिपेशसं **धियम्**। √' धा'। ऋ० १.१४४.१

१६. **धियंधियं** वो देव्या उ **दधिष्वे**। √'धा'। ऋ० १.१६८.१

१७. धीरसीरिति ध्यायते हि वाचेत्थं चेत्थं च। √'ध्यै'। काठ० २४.३, कपि०सं० ३७.४

१८. धीरसीरित्याह यद्धि मनसा ध्यायति, तद्वाचा वदति। √'ध्यै'। तै०स० ६.१.७.४-५

१९. यद्वाव ध्यायतीत्थमसा३ दित्थमसा३दिति, तदस्या (वाचः) धीत्वम्। √'ध्यै'। मै०सं० ३.७.५

२०. धियं धारयितारम्। √'धारय्'। निरु० ८.७

२१. धीः (कर्म)। √ धृञ् आधारे'। धारयति कर्त्तारं फलप्रदानेन। √'धृ'+ क्विप्'। निघ० २.१.२१

२२. यद्वा, दधातेः। धारयति कर्त्तारमिति, ददाति वा फलं धीः कर्म। √'धा'+ क्विप्'। निघ० २.१.२१

२३. यद्वा, ध्यायतेः। ध्यायते चिन्त्यते कर्तृभिरेवं कर्त्तव्यमिति। √'ध्यै'+ क्विप्'। निघ० २.१.२१

२४. धीः (प्रज्ञा) व्याख्यातं कर्मनामसु। √'धा' धारणपोषणयोः'। निधीयते द्रव्येषु। √'धा'+ क्विप्'। निघ० ३.९.७

२५. यद्वा, √'धृञ् आधारे'। धारयत्यर्थान्। √'धृ'+ क्विप्'। निघ० ३.९.७

२६. ध्यायतेः। ध्यायन्तेऽनया देवता। √'ध्यै'+ क्विप्'। निघ० ३.९.७

धीति

१. **दधन्नृतं धनयन्नस्य धीतिम्**। √'धन्'। ऋ० १.७१.३

२. ऊर्ध्वा **धीतिः** प्रत्यस्य प्रयामन्य**धायि**। √'धा'। ऋ० १.११९.२

३. **अधायि धीतिरससृग्रम्**। √'धा'। ऋ० १०.३१.३

४. धीतयः (अङ्गुलयः)। √ धीङ् आदाने'। धीयन्ते पुरुषैः कर्मसु। √'धी'+ क्तिच्'। निघ० २.५.७

५. यद्वा, √'दधातेः'। धारयन्ति कर्मसाधनानि वा। √'धा'+ क्तिच्'। निघ० २.५.७

धीर

१. धीराः प्रज्ञानवन्तो ध्यानवन्तः। √'ध्यै'। निरु० ४.१०

२. धीरो धीमान्। 'धी+ र' (मत्वर्थीयः)'। निरु० ३.१२

३. धीरः (मेधावी)। √'दधातेः'। धत्ते श्रुतमर्थम्। ददाति वा विद्या शिष्येभ्यः। √'धा+ क्रन्'। निघ० ३.१५.४

४. यद्वा, धीः प्रज्ञा कर्म वा, रो मत्वर्थीयः। 'धी+ र' (मत्वर्थीयः)। निघ० ३.१५.४

५. धियमीरयति– इति क्षीरस्वामी। 'धी+ √'ईर्'। निघ० ३.१५.४

६. सुसूधाञ्गृधिभ्यः क्रन्। √'धा+ क्रन्'। उणा० २.२५

(गो) धुक्

१. **गोधुगुत दोहदेनाम्**। √'दुह'। अथर्व० ९.१०.४

धुनि

१. धुनिर्धूनोतेः। √'धू'। निरु० ५.१२

२. धुनयः (नद्यः)। √'धूञ् कम्पने'। धुन्वन्ति कम्पयन्ति तीरवृक्षादीनि, कम्पन्ते वा स्वयं गमनशीलत्वात्। √'धू'+ नि'। निघ० १.१३.७

धुर

१. **धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्वतं** योऽस्मान् **धूर्वति** तं **धूर्व** यं वयं **धूर्वामः**। √'धूर्व्'। यजु० १.८

२. एताभिस्तद्देवा असुरानधूर्वन्। यदधूर्वंस्तस्माद् धुरोऽभवन्। √'धुर्व्' या √'धूर्व्'। जै०ब्रा० १.३१८ (तु०जै०ब्रा० १.९९)

३. तेन पुरुषेणासुरानधूर्वन्, यदधूर्वंश्स्तद्धुरां धूस्त्वम्। √'धुर्व्' या √'धूर्व्'। षड्०ब्रा० २.३

४. धूरसि, धूर्व धूर्वन्तं, धूर्व तं योऽस्मान् धूर्वति, तं वयं यं वयं धूर्वामः। √'धुर्व्' या √'धूर्व्'। तै०सं० १.१.४.१

५. धूरसि ध्वर ध्वरन्तम्। √'ध्वृ'। मै०सं० १.१.४, ३.७.८

६. धूरसि ध्वर ध्वरन्तमित्याह रक्षसां ध्वरायै रक्षसामन्तरित्यै। √'ध्वृ'। मै०सं० ३.७.८

७. यद् देवा असुरान् अधूर्वंस्तद् तद् धुरां धूस्त्वम्। √'धुर्व्' या √'धूर्व्'। जै०ब्रा० १.९९

८. धूर्धूर्वतेर्वधकर्मणः। इयमपीतरा धूरेतस्मादेव विहन्ति वहम्। √'धूर्व्'। निरु० ३.९

९. धारयतेर्वा। √'धारय्'। निरु० ३.९

१०. धुरः (अङ्गुलयः)। 'धूर्वतेर्वधकर्मणः। धूर्वन्ति घ्नन्त्युपक्षयन्ति कर्माणि। हिंसन्ति परानाभिरिति वा। √'धूर्व्'+ क्विप्'। निघ० २.५.१८

११. धारयतेर्वा। अङ्गुल्या हि धार्य्यं सुवर्णादि धारयति। √'धारय्+ क्विप्'। निघ० २.५.१८

धूति

१. दिवश्च ग्मश्च **धूतयः**। यत्सीमन्तं न **धूनुथ**। √'धूञ्'। ऋ० १.३७.६

धूम

१. स यत् (मृतं शरीरम्) धुनोति तस्माद् धुनः। धुनो ह वै नामैषः। तं धूम इति परोक्षमाचक्षते परोक्षेणैव। परोक्षप्रिया इव हि देवाः। √'धू'। जै०ब्रा० १.४९

२. इषियुधीन्धिदसिश्याधूसूभ्यो मक्। √'धू'+ मक्'। उणा० १.१४५

धूर्ति

१. न यं **धूर्वन्ति धूर्तयः**। √'धूर्व्'। ऋ० ८.४५.९

धृषत्

१. स्वक्षत्रं यस्य **धृषतो धृषन्मनः**। √'धृष्'। ऋ० १.५४.३

धृष्टास

१. **नाधृषे** भवो दानामह्ना तदेषाम**धृष्टासो** नाद्रयः। √'धृष्'। ऋ० ५.८७.२

धेतन

१. धेतन, धावत। √'धाव्'। निरु० ६.२७

धेना

१. धेना दधातेः। √'धा'। निरु० ६.१७

२. धेना (वाक्)। √'दधातेः। स्वमभिधेयं वर्षप्रदानेन लौकिकाय वा। √'धा'+ शानच्'। निघ० १.११.३९

३. यद्वा, √'धेट् पाने'। धयन्ति तामिति धेना। √'धे'+ न'। निघ० १.११.३९

४. यद्वा, आस्वादः। धीयते पीयते आस्वाद्यते वानेन, धयन्ति प्राणमिति वा धेना। (पूर्ववत्)। निघ० १.११.३९

५. यद्वा, √'धिवि प्रीणनार्थः'। प्रीणयति हि वाक् सुष्ठु प्रयुक्ता। √'धिन्व्'+ न'। निघ० १.११.३९

६. धेना वाक् प्रीणनाद्धि वा— इति माधवः। निघ० १.११.३९

७. धेट इच्च। √'धे'+ न'। उणा० ३.११

धेनु

१. तुभ्यं **धेनुः** सवर्दुघा विश्वा वसूनि दोहते। √'दुह्'। ऋ० १.१३४.४

२. तां वां **धेनुं** न वासरीमंशुं दुहन्त्यद्रिभिः सोमं दुहन्त्यद्रिभिः। √'दुह्'। ऋ० १.१३७.३

३. उपह्वये सुदुघां **धेनु**मेतां सुहस्तो गोधुगुत दोहदेनाम्। √'दुह्'। ऋ० १.१६४.२६, अथर्व० ९.१०.४

४. उषासानक्ता **सुदुघेव धेनुः**। √'दुह्'। ऋ० १.१८६.४

५. **दुहाना धेनु**र्वृजनेषु कारवे। √'दुह्'। ऋ० २.२.९

६. **दुहानां धेनुं** पिप्युषीमसश्चतम्। √'दुह्'। ऋ० २.३२.३

७. स्व आ दमे सु दुघा यस्य धेनुः। √'दुह्'। ऋ० २.३५.७

८. धेनू सबर्दुघे धापयेते समीची। √'धेट्'। ऋ० ३.५५.१२

९. कया भुवा नि दधे धेनुरुधः। √'धा'। ऋ० ३.५५.१, ऋ० १०.२७.१४

१०. धेनुः प्रत्नस्य काम्यं दुहाना। √'दुह्'। ऋ० ३.५८.१

११. ऋताय धेनु परमे दुहाते। √'दुह्'। ऋ० ४.२३.१०

१२. धेनुरिव पयो अस्मासु धुक्ष्व। √'दुह्'। ऋ० ४.५७.२

१३. धेनवो वां मधुमद्वां सिन्धवो मित्र दुहे। √'दुह्'। ऋ० ५.६९.२

१४. धेनुं न त्वा सूयवसे दुदुक्षन्। √'दुह्'। ऋ० ७.१८.४

१५. ऊर्जं दुहाना धेनुः। √'दुह्'। ऋ० ८.१००.११

१६. धेनु सुदुघा पूयमानः। √'दुह्'। ऋ० ९.९७.५०

१७. दुहे धेनुः सरस्वती। √'दुह्'। यजु० २.त्र५५.६५

१८. धेनुर्गौर्न वयो दधुः। √'धा'। यजु० २१.१९

१९. रोदसी दुघे दुहे धेनुः सरस्वती। √'दुह्'। यजु० २१.३४

२०. दोग्ध्री धेनुः। √'दुह्'। यजु० २२.२२

२१. दुहाथां घर्मदुघे इव धेनू। √'दुह्'। अथर्व० ४.२२.४

२२. दुहां ध्रुवेव धेनुरनपस्फुरन्ती। √'दुह्'। अथर्व० १२.१.४५

२३. कोशं दुहन्ति कलशं चतुर्बिलामिडां धेनुं मधुमतीं स्वस्तये। √'दुह्'। अथर्व० १८.४.३०

२४. त्रिरस्मै सप्तधेनवो दुदुह्रिरे। √'दुह्'। सा०पू० ५.९.१

२५. तस्य (अदित्यै) धेनुर्दक्षिणा धेनुरिव वा इयं (पृथिवी) मनुष्येभ्यः सर्वान् कामान् दुहे। √'दुह्'। शत०ब्रा० ५.३.१.४

२६. ता धेनुभिराधयन्। √'धेट्' पाने'। जै०ब्रा० २.१५७

२७. धेट इच्च। √'धे'+ नु'। उणा० ३.३४

२८. आपो वाव धेनवस्ता हीदं सर्वं धिन्वन्ति। √'धिन्व्'। ऐ०आ० १.३.५, (तु०कौ० १२.१)

२९. धेनुरिव पयो अस्मासु धुक्ष्व। √'दुह्'। तै०सं० १.१.१४.३

३०. धेनुरिव वा इयं (पृथिवी) मनुष्येभ्यः सर्वान् कामान् दुग्धे। √'दुह्'। का०शत०ब्रा० १.२.१.१२

३१. धेनुरिव वा इयं (पृथिवी) मनुष्येभ्यः सर्वान् कामान् दुहे। √'दुह्'। का०शत०ब्रा० १.२.१.२१

३२. तस्यै (अदित्यै) धेनुर्दक्षिणा धेनुरिव वा इयं (अदितिः=पृथिवी) मनुष्येभ्यः सर्वान् कामान् दुहे। शत०ब्रा० ५.३.१.४

३३. धेनुर्धयतेर्वा। √'धेट्' पाने'। निरु० ११.४२

३४. धिनोतेर्वा। √'धिन्व्'। निरु० ११.४२

३५. धेनुः (वाक्)। √'धेट्' पाने'। धयति तामिति धेनुः, पीयते हि वा तत्प्रवृत्तवृष्टिद्वारेण। √'धे'+ नु'। निघ० १.११.५२

३६. धेनुवद् दोग्ध्री सर्वकामान् इति वा। √'दुह्'। निघ० १.११.५२

धेनुष्टरी

१. धेनुर्वा एषा सती न दुहे तस्माद् धेनुष्टर्युच्यते। √'दुह्'। काठ० १३.६

धेय

१. देवा दधिरे भागधेयम्। √'धा'। ऋ० १०.११४.३

ध्मातरी

१. ध्मातेव धमति शिशीते ध्मातरी यथा। √'ध्मा'। ऋ० ५.९.५

ध्माता

१. ध्मातेव धमति शिशीते ध्मातरी यथा। √'ध्मा'। ऋ० ५.९.५

ध्रुव

१. तद्यदेतं (असुराः) न शेकुरुद्धन्तुं तस्माद् ध्रुवो नाम। √'हन्'। शत०ब्रा० ४.२.४.१९

२. तां (पृथिवीम्) देवा ध्रुवेणादृꣳहन्, तद् ध्रुवस्य ध्रुवत्वम्। √'दृह्'। तै०सं०६.५.२.२

ध्वस्मन्वत्

१. ध्वस्मन्वत् (उदकम्)। √'ध्वंसु' गतौ च'। ध्वस्म ध्वंसनं मेघेभ्यः पर्वतादिभ्यो वा अधःपतनं निम्नप्रदेशगमनम् जलार्थिकर्तृकं वा गमनमस्यास्तीति। 'ध्वंस्+ मनिन्'। निघ० १२.२७

नंसन्ते

१. नंसन्ते, नमन्ते। √'नम्'। निरु० ४.१५

न

१. सिन्धुर्न क्षोदः प्र नीचीरैनोन्नवन्त गावः स्वर्दृशीके। √'नव्'। ऋ० १.६६.५

२. पशुं न नष्टमिव दर्शनाय विष्णाप्वं ददथुः। √'नश्'। ऋ० १.११६.२३

३. न तत्ते अन्या उषसो नशन्त। √'नश्'। ऋ० १.१२३.११

४. सं पत्नीभिर्न वृषणो नसीमहि। √'नश्'। ऋ० २.१६.८

नक्त

१. नक्तेति रात्रिनाम। अनक्ति भूतान्यवश्यायेन। √'अञ्ज्'। निरु० ८.१०

२. अपि वाऽनक्ताऽव्यक्तवर्णा। 'न+ अक्त'। निरु० ८.१०

नक्षत्र

१. तन्नक्षत्राणां नक्षत्रत्वं यन्न क्षियन्ति। 'न+ √'क्षि'। गो०ब्रा० २.१८

२. ते ह देवा ऊचुः। यानि वै तानि क्षत्राण्यभूवन्न वै तानि क्षत्राण्यभूवन्निति। तद्वै नक्षत्राणां नक्षत्रत्वम्। 'न+ क्षत्र (√'क्षि')'। शत०ब्रा० १.२.२.१९ (तु०, तै०सं० २.७.१८.३)

३. यो वा इह यजते। अमुꣳस लोकं नक्षते। तन्नक्षत्राणां नक्षत्रत्वम्। √'नक्ष्'। तै०सं० १.५.२.५

४. यो वै बहु ददिवान् बह्वीजानोऽग्निमुत्सादयतेऽक्षित्तद् वै तस्य, तदीजाना वै सुकृतोऽमुं लोकं नक्षन्ति ते वा एते यन्नक्षत्राणि। √'नक्ष्'। मै०सं० १.८.६

५. स (आदित्यः)........आदत्त क्षत्रं नक्षत्राणाम्। 'क्षत्र= नक्षत्र'। जै०ब्रा० २.२६

६. न वा इमानि क्षत्राण्यभूवन्न वै तानि क्षत्राण्यभूवन्निति तद्वै नक्षत्राणां नक्षत्रत्वम्। 'न+ क्षत्र'। तै०ब्रा० २.७.१८.३

७. अमुꣳ स लोकं नक्षते। तन्नक्षत्राणां नक्षत्रत्वम्। √'नक्ष्'। तै०ब्रा० १.५.२.५

८. नक्षत्राणि नक्षतेर्गतिकर्मणः। √'नक्ष्'। निरु० ३.२०

९. नेमानि क्षत्राणीति च ब्राह्मणम्। 'न+ क्षत्र' (√'क्षि')। निरु० ३.२०

१०. अमिनक्षियजिवधिपतिभ्योऽत्रन्। √'नक्ष्'+ अत्रन्'। उणा० ३.१०५

नक्षद्दाभम्

१. नक्षद्दाभम्। अश्नुवानदाभम्। (√'नक्ष्'+ √'दभ्') (धात्वर्थनिर्देशमात्रम्)। निरु० ६.३

२. अभ्यशनेन दभ्नोतीति वा। (√'नक्ष्'+ √'दभ्') (धात्वर्थनिर्देशमात्रम्)। निरु० ६.३

नग्ना

१. नग्ना (वाक्)। न गच्छति पितृकुलात् बाल्यात् अनावरणापि न लज्जामिति वा। ग्नाशब्दः पूर्वमेव निरुक्तः, इह नपूर्वः। 'न+ ग्ना (√'गम्+ न')'। निघ० १.११.४२

नद

१. पुरुषो वै नदस्तस्मात् पुरुषो वदन्सर्वः संनदतीव। √'नद्'। ऐ०आ० १.३.५

२. प्राणो वै नदस्तस्मात् प्राणो नदन्सर्वः संनदतीव। √'नद्'। ऐ०आ० १.३.८

३. ऋषिर्नदो भवति, नदतेः स्तुतिकर्मणः। √'नद्'। निरु० ५.२

४. नदस्य, नदनस्य। √'नद्'। निरु० ५.२

५. नदः (स्तोता)। √'नदतिः स्तोतृकर्मा'। √'नद्'+ अच्'। निघ० ३.१६.४

नदनु

१. नदनुः (सङ्ग्रामः)। √'णद अव्यक्ते शब्दे'। √'नद्'+ अनुङ्'। निघ० २.१७.४

नदी

१. यददः संप्रयतीरहावनदता हते। तस्मादा नद्यो नाम स्थ ता वो नामानि सिन्धवः। √'नद्'। अथर्व० ३.१३.१

२. यददः सम्प्रयतीरहा अनदता हते। तस्मादा न३द्यो नामस्थ ता वो नामानि सिन्धवः। √'नद्'। मै०सं० २.१३.१

३. नद्यः कस्मान्नदना इमा भवन्ति, शब्दवत्यः। √'नद्'। निरु० २.२४

४. नद्यः (सरितः)। √'णद अव्यक्ते शब्दे'। नदन्ति नद्यः √'नद्'+ अच्+ ङीप्'। निघ० १.१३.३७

नना

१. नना नमतेर्माता वा दुहिता वा। √'नम्'। निरु० ६.६

२. नना (वाक्)। √'नमतेः। नमयत्यनयेति नना। √'नम्'+ न'। निघ० १.११.४२

नन्त्व

१. यो **नन्त्वान्यानमन्**। √'नम्'। ऋ० २.२४.२

नपात्

१. नपात् (अपत्यम्)। नञ्पूर्वात् √पतेः। न पातयति न तेन पततीत्युक्तम्। *'न+ √'पत्+ णिच्'*। निघ० २.२.१३

नभन्ताम्

१. नृभन्तामूमा भूवन्। *'न+ √'भा' (या √'भू')*। निरु० १०.५

नभन्व

१. नभन्वः (नद्यः)। √'णभ' हिंसायाम्'। नभन्ते, नभ्यन्ति, नभ्नन्ति इति नभन्वः। नद्यो हि बाधकाः कूलादीनाम्। √'णभ्'+ नु'। निघ० १.१३.१५

नभस्

१. प्र **नभस्व** पृथिवि भिन्द्धी इदं दिव्यं **नभः**। √'नभ्'। अथर्व० ७.१८.१

२. तस्मै प्र **भाति नभसो** ज्योतिषीमान्। √'*भा*'। अथर्व० १८.४.१४

३. **नभो न रूपं** जरिमा मिनाति। (*अत्रार्थनिर्देशमात्रम्*)। ऋ० १.७१.१०

४. तद्यद्वै तन्नभो नामाभीर्वै सा। न हि तत्प्राप्य कस्माच्चन बिभेति। तस्मात्तन्नभः। *'न+ √'भी'*। जै०ब्रा० १.३०

५. नभ आदित्यो भवति। नेता रसानाम्। नेता भासाम्। ज्योतिषां प्रणयः। √'*नम्*'+ √'*भास्*'। निरु० २.१४

६. अपि वा भन एव स्याद्विपरीतः। *'भासन> भन> नभ> अथवा √'भन्द्' (निघ० १.१६.७)> भन> नभ'*। निरु० २.१४

७. न न भातीति वा। *'नृन+ √'भा'*। निरु० २.१४

८. नभः (उदकम्)। √'णह' बन्धने'। नह्यते हि तन्मेघैर्दिवि भूमौ सेचनादिभिः, नह्यति प्राणिनां मनांसीति वा। प्राणिनो हि यत्रोदकं विद्यते तत्रैव स्थातुं मनः कुर्वते। √'*नह्*'+ *असुन्*'। निघ० १.१२.४

९. यद्वा, न न भातीति वा। एकस्य नञो लोपः, इतरस्य नलोपाभावः। भात्येव स्वया दीप्त्या देवतात्वात्। *'न+ न+ √'भा'*। निघ० १.१२.४

१०. यद्वा, नभ इव नभः। *'नभः> नभस्'*। निघ० १.१२.४

११. नहेर्दिवि भश्च। √'*नह्*'+ *असुन्> नहस्> नभस्*'। उणा० ४.२१२

१२. नभितपिपतिपनिपणिमहिभ्योऽसच्। √'*नभ्*'+ *असच्*'। उणा० ३.११७

नभसी

१. नभसी (द्यावापृथिव्यौ)। √'णह' बन्धने'। साहचर्यात् उभे अपि नभः शब्देनोच्यते। सम्बध्यते पुण्यवद्भिः। √'*नह्*'+ *असुन्*'। निघ० ३.३०.७

नमस्

१. ना **नमन्ते** राजा चिदेभ्यो **नम** इत् कृणोमि। √'*नम्*'। ऋ० १०.३४.८

२. उप यो **नमो नमसि** स्तभायन्। √'*नम्*'। ऋ० ४.२१.५

३. **समनमन्नेवा** मह्यं **संनमः** सं **नमन्तु**। √'*नम्*'। ऋ० ४.३९.१,३,५,७

४. तन्नम इत्युपासीत। नम्यन्तेऽस्मै कामाः। √'*नम्*'। तै०आ० ९.१०.४, तै०उप० ३.१०.४

५. नमः (अन्नम्)। √'णम' प्रह्वत्वे'। उपनतं जातमात्रेभ्यो भूतेभ्यः पूर्वजन्मकृतकर्मवशात्, नम्यते देवतात्वात्, नम्यन्त्यनेन हेतुना तद्वन्तः प्रयोजनस्य च हेतुत्वेन विवक्षा। √'*नम्*'+ *असुन्*'। निघ० २.७.२२

६. नमः (वज्रः)। √'नमतेः। नेमिवदर्थः। √'*नम्*'+ *असुन्*'। निघ० २.२०.४

नमुचि

१. **नम्या** यदिन्द्र सख्या परावति निबर्हयो **नमुचिं नाम** मायिनम्। √'*नम्*'। ऋ० १.५३.७

नर

१. नराः मनुष्याः, नृत्यन्ति कर्मसु। √'*नृत्*'। निरु० ५.१

२. नरः (अश्वः)। √'णीञ्' प्रापणे'। नयन्ति आरोहिणम्, कर्मणां नेतारो वा नराः। √'*नी*'+ *ऋन्*'। निघ० १.१४.२३

३. नरः (मनुष्यः)। √'णीञ्' प्रापणे'। नयन्ति संसार चक्रम्, पदार्थत्वात् देशान्तरं नीयन्ते वा स्थानोत्तरकालेन। √'*नी*'+ *ऋन्*'। निघ० २.३.२

४. यद्वा, √'नृतीं' गात्रविक्षेपे'। नृत्यन्ति गात्रविक्षेपं हि कुर्वते नियमेन, गात्राणि विक्षिप्यन्ति कर्मसु तानि

कुर्वन्तः। √'नृत्'+ हन्+ डिदवद्भाव'। निघ० २.३.२

५. नयतेर्डिच्च। √'नृत्'+ ऋ'। उणा० २.१०२

नरक

१. नरकं न्यरकं नीचैर्गमनम्। 'नि+ √'ऋ'> नि+ अर> न्यरक'। निरु० १.११

२. नास्मिन् रमणं स्थानमल्पमप्यस्तीति वा। 'न+ √'रम्'। निरु० १.११

नराशंस

१. प्रजा वै नरस्ता अन्तरिक्षमनु वावद्यमानाः प्रजाश्चरन्ति यद्वै वदति शꣳसतीति वै तदाहुस्तस्मादन्तरिक्षं नराशꣳसः। 'नर+ √'शंस्'। शत०ब्रा० १.८.२.१२

२. नराशंसो यज्ञ इति कात्थक्यः। नरा अस्मिन्नासीनाः शंसन्ति। 'नर+ √'शंस्'। निरु० ८.६

३. अग्निरिति शाकपूणिः। नरैः प्रशस्यो भवति। 'नर+ √'शंस्'। निरु० ८.६

नर्य, नर्य्य

१. नर्यम्पङ्क्तिराधसन्देवा यज्ञन्नयन्तु नः। √'नी'। यजु० ३७.७, सा०पू० १.६.२

२. नर्यो मनुष्यो नृभ्यो हितः। 'नृ+ यत्'। निरु० ११.३६

३. नरापत्यमिति वा। 'नरस्यापत्यम्> नर्य'। निरु० ११.३६

नव

१. नवं कस्माद्, आनीतं भवति। 'आ+ √'नी'। निरु० ३.१९

२. नवम् (नूतनम्)। √'णु स्तुतौ'। नूयते स्तूयते, अचिरकृतत्वेन रमणीयत्वादिति। √'नु'+ अप्'। निघ० ३.२८.१

नवग्व

१. नवग्वा नवगतयः। 'नव+ √'गम्'। निरु० ११.१९

२. नवनीतगतयो वा। 'नवनीत+ √'गम्'। निरु० ११.१९

नवन्

१. नव न वननीया। 'न+ √'वन्'। निरु० ३.१०

२. नावाप्ता वा। 'न+ अव+ √'आप्'। निरु० ३.१०

३. सप्यशूभ्यां तुट् च। √'नु'+ कनिन्'। उणा० १.१५७

नवनीत

१. यन्नवमित्यब्रुवꣳस्तन्नवनीतस्य नवनीतत्वम्। 'नव > नवनीत'। काठ० २४.७, कपि०सं० ३७.८

२. यन्नवमैतत्तन्नवनीतमभवत्। नव> नवनीत'। तै०सं० २.३.१०.१, मै०सं० २.३.४ (तु०, काठ० ११.७)

नवेदा

१. नवेदाः (मेधाविनः)। 'द्विनञ्पूर्वाद् √ विदेः'। न वेत्ति। 'न+ न+ √'विद्'। निघ० ३.१५.९

२. नभ्राण्नपान्नवेदा०। (निपातनात्) न वेत्तीति नवेदाः। न+√ विद्'+असुन्'। अथर्व० ६.३.७५

नव्य

१. नव्यं नवतरम्। 'नव> नव्य'। निरु० ६.९

२. नव्यम् (नवम्)। नवमेव नव्यम्। 'नव+ यत्'। निघ० ३.२८.४

३. यद्वा, नौतेः। √'नु'+ यत्'। निघ० ३.२८.४

नसन्त

१. नसन्त। नसतिराप्नोतिकर्मा। √'नस्'। निरु० ७.१७

२. नमतिकर्मा वा। √'नम्'। निरु० ७.१७

नहुष्

१. नहुषः (मनुष्याः)। √'णह बन्धने'। नह्यन्ते कर्मभिः पूर्वकृतैः, संसारे नह्यन्ति वा नहनीयम्। √'नह्'+ उस्'। निघ० २.३.९

नाक

१. तम् (त्रयस्त्रिंश स्तोमम्) उ नाक इत्याहुर्न हि प्रजापतिः कस्मै चनाऽकम्। 'न+ अक'। तां०ब्रा० १०.१.१८

२. संवत्सरो वाव नाकः षट्त्रिꣳ शस्तस्य चतुर्विꣳ शरर्धमासा द्वादश मासास्तद्यत्तमाह नाक इति न हि तत्र गताय कस्मै चनाकं भवति। 'न+ अक'। शत०ब्रा० ८.४.१.२४

३. स्वर्गो वै लोको नाकः, यस्यैता (नाकसद इष्टकाः) उपधीयन्ते, नास्मा अकं भवति। 'न+ अक'। तै०सं० ५.३.७.१

४. सो (प्रजापतिः) ऽब्रवीन्न वै म इदमकमभूदिति तन्नाकस्य नाकत्वम् 'न+ अक'। जै०ब्रा० ३.३४५

५. नाक आदित्यो भवति। नेता रसानाम्, नेता भासाम्, ज्योतिषां प्रणयः, कमिति सुखनाम, तत्प्रतिषिद्धं प्रतिषिध्येत। *'न+ न+ क > न+ अक> नाक'*। निरु० २.१४

६. नाकम् ....वै तत्र किञ्चन जग्मुषे कम्। *'न+ अक'*। मै०सं० ३.३.१

७. अथ यज्ञायज्ञीयम्। सह स नाक एव स्तोमः। आदित्य एव सः। एष हि न कस्मै चनाकमुदयति। *'न+ अक'*। जै०ब्रा० १.३१३

नाकसद

१. तद्यदेतस्मिन्नाके स्वर्गे लोके देवा असीदंस्तस्माद्देवा नाकसदः। *'नाक+ √'सद्'*। शत०ब्रा० ८.६.१.१

२. न वा अमुं लोकं जग्मुषे किंचनाकं तन्नाकसदां नाकसदत्वम्। *'न+ अकसद> नाकसद'*। काठ० २१.२, कपि०सं,३१.१७

३. यद् (विश्वे देवाः) अब्रुवन् न सदाम वै स्वर्गे लोके नाक इति तन्नाकसदां नाकसत्त्वम्। *'न+ अक+√'सद्'*। जै०ब्रा० २.२१०

नाथविन्दु

१. नाथविन्दून्येतान्यहानि यत् छन्दोमा नाथमेवैतैर्विन्दते। *'नाथ+ √'विद्'*। ता०ब्रा० १४.११.२४

नाद

१. नादः (स्तोता)। √'नदतेः। भवत्यस्मात् स्तुतिः। √'नद्'+ घञ्'। निघ० ३.१६.९

नानद

१. नानदेन व इन्द्रो नानद्यमानमहन् यन्नानद्यमान-महंस्तन्नानदस्य नानदत्वम्। √'नद्'। जै०ब्रा० ३.८०

२. स (इन्द्रः) यदस्तृत्वा व्यनदत् तन्नानदमभवत् तन्नानदस्य नानदत्वम्। √'नद्'। जै०ब्रा० १.२०३

३. सोऽभिहतो (वृत्र इन्द्रेण) व्यनदद्यद् व्यनदत् तन्नानदं सामाऽभवत् तन्नानदस्य नानदत्वम्। √'नद्'। जै०ब्रा० ३.८०

नाना

१. धीरासः पदं कवयो **नयन्ति नाना**। √'नी'। ऋ० १.१४६.४

नाभि

१. नाभिः सन्नहनात्। √'नह्'। निरु० ४.२१

२. नाभ्या सन्नद्धा गर्भा जायन्ते इत्याहुः। √'नह्'। निरु० ४.२१

३. नहो भश्च। *√'नह्'+ इञ्> नाहि> नाभिः'*। उणा० ४.१२७

नामन्

१. **नम्या** यदिन्द्र सख्या परावति निबर्हयो **नमुचिं** नाम मायिनम्। √'नम्'। ऋ० १.५३.७

२. कोऽसि कतमोऽसि कस्यासि को **नामासि**। यस्य ते **नामामन्महि**। √'मन्'। यजु० ७.२९

३. इदमपीतरन्नामैतस्मादेव। अभिसन्नामात्। √'नम्'। निरु० ४.२७

४. नाम (उदकम्)। √'नमतेः। नम्यते पुरुषैर्देवतात्वात्। नमयति नदीतीरनिकटवर्तिनो वेतसादीन्। *√'नम्'+ मनिन्'*। निघ० १.१२.७९

५. अथवा √'अम' गत्यादिषु या √'अम' रोगे'। न अमन्ति गच्छन्त्यनेन। न हि स्नानपानोपयोगिजले विद्यमाने प्राणिनोऽन्यत्र गच्छन्ति। *'न+ √'अम्'+ मनिन्'*। ऋ० १.१२.७९

६. नामन्सीमन्व्योमन्रोमन्लोमन्पाप्मन्ध्यामन्। *√'म्ना'+ मनिन्> (निपातनात्) नामन्'*। उणा० ४.१५२

नाराशंस

१. येन नराः प्रशस्यन्ते स नाराशंसो मन्त्रः। *'नर+ √'शंस्'*। निरु० ९.९

नार्य

१. नार्यः (यज्ञः)। √'नृ' नये'। नयति स्वर्गं कर्त्तारम्, नीयतेऽत्रानुष्ठानेन वा। *√'नृ'+ ण्यत्'*। निघ० ३.१७.६

नाली

१. नालीः (वाक्)। √'नल' गन्धे'। गन्धनं हिंसात्मकं सूचनम्, सूचयति परमर्हाणि। *√'नल्'+ इञ्'*। निघ० १.११.१८

नासत्य

१. नासत्यौ चाश्विनौ। सत्यावेव नासत्यावित्यौर्णवाभः। *'न+ असत्य'*। निरु० ६.१३

२. सत्यस्य प्रणेताराविवत्याग्रायणः। *'सत्य+ √'नी'*। निरु० ६.१३

३. नासिकाप्रभवौ बभूवतुरिति वा। *'नासिका (प्रभवौ)> नासत्य'*। निरु० ६.१३

४. सत्सु साधवः सत्याः, न सत्या असत्याः, न असत्या नासत्या। *'न+ असत्य'*। अष्टा०का० ६.३.७५

नासिका

१. नासिका नसतेः। √'नस्'। निरु० ६.१७

निग्राभ्या

१. तद्यदेना उरसि (इन्द्रः) न्यगृह्णीत तस्मान्निग्राभ्या नाम। *'नि+ √'ग्रह्'*। शत०ब्रा० ३.९.४.१५

निघण्टु

१. निघण्टवः कस्मात्, निगमा इमे भवन्ति। छन्दोभ्यः समाहृत्य समाहृत्य समाम्नाताः। ते निगन्तव एव सन्तो निगमनान्निघण्टव उच्यन्त इत्यौपमन्यवः। *'नि+ √'गम्' + तु> निगन्तु> निघण्टु'*। निरु० १.१

२. अपि वाऽऽहननादेव स्युः। समाहता भवन्ति। *'आ+ √'हन्'+ तु> आहन्तु> निहन्तु> निघण्टु'*। निरु० १.१

३. यद्वा, समाहृता भवन्ति। *'सम्+ आ+ √'हृ'+ तु> समाहर्तु> निहर्तु> निघण्टु'*। निरु० १.१

निघृष्व

१. निघृष्व (ह्रस्वः)। √'घृषु सङ्घर्षे'। अत्र न्यूनार्थः। *'नि+ √'घृष्'+ क'*। निघ० ३.२.३

निचुम्पुण या निचुकुण

१. निचुम्पुणः सोमः, निचान्तपृणः, निचमनेन प्रीणाति। *'नि+ √'चम्'+ √'पृ'*। निरु० ५.१८

२. समुद्रोऽपि निचुम्पुण उच्यते। निचमनेन पूर्यते। *'नि+ √'चम्'+ √'पृ'*। निरु० ५.१८

३. अवभृथोऽपि निचुम्पुण उच्यते, नीचैरस्मिन् क्वणन्ति। *'नीचैः+ √'क्वण्'*। निरु० ५.१८

निण्य

१. निण्यं निर्णामम्। *'निर्+ √'नम्'*। निरु० २.१६

२. निण्यम् (निर्णीतान्तर्हितम्)। 'निर्'शब्दोपपदात् √'नयतेः'। निर्णीतं बहिर्नीतम्, निर्गतमन्तर्हितं वा। *'निर्+ √'नी'+ यत्'*। निघ० ३.२५.१

निदहाति

१. निदहाति निश्चयेन दहति भस्मीकरोति। *'नि+ √'दह्'*। निरु० ७.२०

निधा

१. सु **निधा निहितः** कविः। √*'धा'*। ऋ० ३.२९.१२

२. निधा पाश्या भवति यन्निधीयते। *'नि+ √'धा'*। निरु० ४.२

निधि

१. बहुधा देवानां **निहितो निधिः**। *'नि+ √'धा'*। अथर्व० १२.४.२९

निनंसै

१. निनंसै, निनमाम। *'नि+ √'नम्'*। निरु० २.२७

२. निनमा इति वा। *'नि+ √'नम्'*। निरु० २.२७

निपात

१. निपाता उच्चावचेष्वर्थेषु निपतन्ति। *'नि+ √'पत्'*। निरु० १.४

नियान

१. नियानम्, निरयणम्। (*अर्थप्रदर्शनम्*)। निरु० ७.२४

नियुत्

१. नि यद्युवेथे **नियुतः** सुदानू। √*'यु'*। ऋ० १.१८०.६

२. नियुतो नियमानाद्वा। *'नि+ √'यम्'*। निरु० ५.२८

३. नियोजनाद्वा। *'नि+ √'युज्'*। निरु० ५.२८

४. नियुतः (आदिष्टोपयोजनम्)। निपूर्वात् √'यु मिश्रणे'। नियुवन्ति मिश्रयन्ति तृणपर्णादीनि, आत्मानं रथेन वा। *'नि+ √'यु'+ क्विप्'*। निघ० १.१५.१०

५. यद्वा, निपूर्वात् √'यमु उपरमे'। नियम्यन्ते सारथिना नियुतः। *'नि+ √'यम्'+ उति'*। निघ० १.१५.१०

नियुत्वत्

१. निर्युवाणो अशस्तीर्नियुत्वाँ इन्द्र सारथिः। *'निर्+ √'यु'*। ऋ० ४.४८.२

२. नियुत्वान् नियुतोऽस्याश्वाः। *'नियुत्+ मतुप्'*। निरु० ५.२८

३. नियुत्वान् (ईश्वरः)। नियुच्छब्दो व्याख्यातः (निघ० १.१५.१०) नियुतो ऽश्वाः ताभिस्तद्वान्। *'नि+ √'यु' या √'यम्'+ मतुप्'*। निघ० २.२२.३

निरजे

१. निरजे, निरजनाय। *'निर्+ √'अज्'*। निरु० ६.२

निरिणाति

१. निरिणातिः प्रीतिकर्मा दीप्तिकर्मा वा। *'नि+ √'रि'*। निरु० १४.२४

निर्ऋति

१. इयं (पृथिवी) वै निर्ऋतिरियं वै तं निरर्पयति यो निर्ऋच्छति। *'नि+ √'ऋच्छ्'*। शत०ब्रा० ७.२.१.११, (तु०तै०सं० १.६.१.१, शत०ब्रा० ५.२.३.३)

२. निर्ऋतिर्निरमणात्। *'नि+ √'रम्'*। निरु० २.७

३. ऋच्छतेः कृच्छ्रापत्तिरितरा। *√'ऋच्छ्'*। निरु० २.७

४. निर्ऋतिर्निरमणात् (निरु० २.७) अस्य स्कन्दस्वामी 'निरमणात्' निश्चलत्वेनावस्थानात् — इत्यर्थः। *'नि+ √'रम्'+ क्तिन्'*। निघ० १.१.६

५. रमन्ते वास्यां भूतानि— इति। *'नि+ √'रम्'+ क्तिन्'*। निघ० १.१.१६

निर्णिक्

१. निर्णिक् (रूपम्)। √'णिजिर्' शौचपोषणयोः'। निर्णिक्तं हि तत्, पोषयति वा प्रीतिम्। *'नि+ 'णिज्'+ क्विप्'*। निघ० ३.७.१

निर्णीत

१. निर्णीतं कस्मात्, निर्णिक्तं भवति। *'निर्+ √'निज्'*। निरु० ३.१९

निद

१. निदः, निन्दितारम्। *√'निन्द्'*। निरु० १०.४२

निर्बाध

१. तैरसुरानेभ्यो लोकेभ्यो निरबाधन्त, तन्निर्बाधानां निर्बाधत्वम्। *'निर्+ √'बाध्'*। मै०सं० ३.२.१

२. निर्बाधैर्वै देवा असुरान् निर्बाधेऽकुर्वत, तन्निर्बाधानां निर्बाधत्वम्। *'निर्+ √'बाध्'*। तै०सं० ५.१.१०.४

निर्मथ

१. सुनिर्मथा निर्मथितः सुनिधा निहितः कविः। *√'मथ्'*। ऋ० ३.२९.१२

निर्वचन

१. अपिहितस्यार्थ परोक्षवृत्तावतिपरोक्षवृत्तौ वा शब्दे निःष्कृष्य वचनं निर्वचनम्। *'निर्+ √'वच्'*। दुर्ग, निरु० वृ० २.१

२. यथा शब्दलक्षणपरिज्ञानं सर्वशास्त्रेषु व्याकरणादेवं शब्दार्थनिर्वचनपरिज्ञानं निरुक्तात्। दुर्ग, निरु० वृ०भू० पृ० ३

३. तदपि निरुक्तमित्युच्यते, एकैकस्य पदस्य संभाविता अवयवार्थास्तत्र निःशेषेण उच्यन्ते। *'निर्+ √'वच्'*। सायण, ऋ० भा० पृ० १२९

४. निर्+'वच्' भावे क्तः। निर्वचने पदानामवयवार्थाः सम्भाविता निःशेषेण उच्यन्ते। *'निर्+ √'वच्'*। वाचस्पत्यम्, भा० ५ पृ० ४०८६

५. निरुक्तं निर्वचनं नान्यत्। *'निर्+ √'वच्'*। शां०भा०, छान्दो० ८.३.३

निवत्

१. निवत इति, अवतिर्गतिकर्मा। *'नि+ √'अव्'*। निरु० १०.२०

निवार

१. देवा ओषधीषु पक्वास्वाजिमयुस्ता बृहस्पतिरुदजयत्, स एतान् निवारान् न्यवृणीत, तन्निवाराणां निवारत्वम्। *'नि+ √'वृ'*। मै०सं० १.११.७.(तु०काठ० १४.७)

निविद्, निवित्

१. तामनु त्वा निविदं जोहवीमि **विद्यामेषं** वृजनं जीरदानुम्। *√'विद्'*। ऋ० १.१७५.६

२. अथ वै निविदसावेव योऽसौ (सूर्यः) तपत्येष हीदं सर्वं निवेदयन्नेति। *'नि+ √'विद्'*। कौ०ब्रा० १४.१

३. तं (यज्ञम्) वित्त्वा निविद्भिर्न्यवेदयन् यद्वित्त्वा निविद्भिर्न्यवेदयंस्तन्निविदां निवित्त्वम्। *'नि+ √'विद्'*। ऐ०ब्रा० ३.९ (तु०तै०सं० २.२.८.५, शत०ब्रा० ३.९.३.२८)

४. निवित् (वाक्)। निपूर्वात् √'विद्' ज्ञाने'। नितरां वेदयति ज्ञापयति स्वमभिधेयम्। *'नि+ √'विद्'+ णिच्+ क्विप्'*। निघ० १.११.२३

निवेष्ट

१. यदेनान् (अङ्गिरसः) सर्वाभ्यो दिग्भ्यः पशवो ऽभिन्यवेष्टन्त तन्निवेष्टस्य (साम्नः) निवेष्टत्वम्। *'नि+ √'विष्'+ क्त'*। जै०ब्रा० ३.२५०

निश्रृंभा

१. निश्रृंभा निश्रथ्यहारिणः। *'नि+ √'श्रथ्'+ √'हृ'*। निरु० ६.३

निषाद

१. निषादः कस्मात्, निषदनो भवति, निषण्णमस्मिन् पापकमिति नैरुक्ताः। *'नि+ √'सद्'*। निरु० ३.८

निष्कृति

१. **निष्कृतिः** सेमं **निष्कृधि** पूरुषम्। *'निस्+ √'कृ'*। अथर्व० ५.५.४

निष्षपिन्

१. निष्षपी स्त्रीकामो भवति विनिर्गतसपः, सपः सपतेः स्पृशतिकर्मणः। *'निस्+ √'सप्'*। निरु० ५.१६

निहव

१. वसिष्ठौ वै जीतो हतपुत्रोऽकामयत प्रजां पशून् निह्वयेयेति। स एतत् सामाऽपश्यत्। तेनास्तुत। तेनायिही आयिही इत्येव प्रजां पशून् न्यह्वयत। तद्वैव निहवस्य निहवत्वम्। *'नि+ √'ह्वे'*। जै०ब्रा० ३.२८६

नीच

१. नीचैर्निचितं भवति। *'नि+ √'चि'*। निरु० ४.२४

२. नौ दीर्घश्च। *'नि+ √'चि'+ डसि'*। उणा० ५.१३

नीचायमान

१. नीचायमानं नीचैरयमानम्। *'नीचैः+ √'इण्'+ शानच्'*। निरु० ४.२४

नीचीनबार

१. नीचीनबारं नीचीनद्वारम्। *'नीचीन+ द्वार'*। निरु० १०.४

नीति, नीती

१. **ऋजुनीती** नो वरुणो मित्रो **नयतु** विद्वान्। √*'नी'*। ऋ० १.९०.१

२. **सुनीतिभिर्नयसि** त्रायसे जनम्। √*'नी'*। ऋ० २.२३.४

३. यमादित्यासो **नयथा सुनीतिभिः**। √*'नी'*। ऋ० १०.६३.१३

नीर

१. नीरम् (उदकम्)। √'णीञ् प्रापणे'। नयति प्रापयति शुद्धिं नीयते वा पुरुषेण स्वाभिमतकार्य्यसम्पादनाय। √*'नी+ रन्'*। निघ० १.१२.७२

नील

१. नीलम् (गृहम्)। √'णीञ् प्रापणे'। नीयन्तेऽत्र पदार्थाः, नयति मुखनिःश्वसनमिति वा। √*'नी'+ उडच्'*। निघ० ३.४.८

नीवार

१. स (बृहस्पतिः) नीवारान्निरवृणीत् तन्नीवाराणां नीवारत्वम्। *'नि+ √'वृ'*। तै०सं० १.३.६.७

नूतन

१. नूतनैः नवतरैः। *'नव+ तरप्> नूतर> नूतन'*। निरु० ७.१६

२. नूतनम् (नवम्)। नवस्य नू—आदेशः। *'नव+ तरप्> नूतर> नूतन'*। निघ० ३.२८.३

नूत्नम्

१. नूत्नम् (नवम्)। नौतेरेव। √*'नु'+ न'*। निघ० ३.२८.२

नृ

१. सं **यन्नृन्न** रोदसी **निनेय**। √*'नी'*। ऋ० ७.२८.३

२. **नृभिर्यतो** वि **नीयसे**। √*'नी'*। ऋ० ९.२४.३, १००.८, सा०उ० ९६३

३. एष **नृभिर्वि नीयते**। √*'नी'*। सा०उ० १२८८

४. नयतेर्डिच्च। √*'नी'+ ऋ'*। उणा० २.१०२

नृचक्षस्

१. **नृचक्षसस्ते** अभि **चक्षते** हविः। √*'चक्ष्'*। ऋ० १०.१०७.४

२. **नृचक्षसस्ते** अभि **चक्षते** रयिम्। √*'चक्ष्'*। अथर्व० १८.४.२९

३. चक्षेर्बहुलं शिच्च। *(नॄन् चष्टे पश्यति)*। *'नृ'+ √'चक्ष्' + असि'*। उणा० ४.२३४

नृपाण

१. नृपाणं नरपाणम्। *'नर+ पान> नरपाण> नृपाण'*। निरु० ५.२६

नृमण

१. नृमणम् (बलम्)। नॄन् नतम् (निरु० ११.९)। नॄन् शत्रुभूतान् प्रति नमति। ण्यर्थो वा नमिः, नमयति प्रह्वीकरोति—इति स्कन्दस्वामी। *'नृ+ √'नम्'+ ल्युट्> नृ+ नमन> नृमण'*। निघ० २.९.९

२. नृमणम् (धनम्)। व्याख्यातं बलनामसु। नमति प्रह्वीकरोत्यर्थिभ्यस्तद्वस्तु। '*नृ + √'नम्' + ल्युट् > नृ+ नमन> नृमण*'। निघ० २.१०.२०

नृम्ण

१. नृम्णं बलं नृन् नतम्। नृ+ √'*नम्*'। निरु० ११.९

नेम

१. नेमोऽपनीतः। '*अप+ √'नी*'। निरु० ३.२०

२. नेमः (अन्नम्)। √'णीञ् प्रापणे'। नमयति सुगतिं दातारम्, नीयते देहयात्रा अनेनेति वा। √'*नी*'+ *मन्*'। निघ० २.७.२०

३. अर्तिस्तुसुहुसृधृक्षिक्षुभायावापदियक्षिनीभ्यो मन्। √'*नी*' + *मन्*। उणा० १.१४०

नेमधित

१. नेमधिताः (सङ्ग्रामः)। 'नेमपूर्वाद् √दधातेः'। नेमशब्दो दानपर्य्यायः। '*नेम+ √'धा'+ क्त*'। निघ० २.१७.१३

२. सुधितवसुधितनेमधितधिष्वधिषीय च। '*नेम+ √'धा'+ क्त्वा*'। अष्टा० ७.४.४५

नेमि

१. नेमिं **नमन्ति** चक्षसा। √'*नम्*'। ऋ० ८.९७.१२, अथर्व० २०.५४३

२. नेमिः (वज्रः)। √नयतेः। नयति शत्रून् विनाशं, नीयन्तेऽनेन वा ऐश्वर्य्यात्। √'*नी*'+ *भि*'। निघ० २.२०.२

३. यद्वा, √'णमु प्रह्वत्वे'। नमयति शत्रून्। √'*नम्*'+ *कि*। निघ० २.२०.२

४. नियो मिः। √'*नी*'+ *मि*। उणा० ४.४४

नेषणि

१. **नयिष्ठा** उ नो **नेषणि**। √'*नी*'। ऋ० १०.१२६.३

नेषतम्

१. स नो **नेषन्नेषतमैरमूरो**ऽग्निर्वामं सुवितंसस्योअच्छा। √'*नी*'। ऋ० १.१४२.१२

नैचाशाख

१. नैचाशाखम्, नीचाशाखो नीचैः शाखः। '*नीचैः+ शाख> नीचाशाख> नेचाशाख*'। निरु० ६.३२

नैतोश

१. नितोशस्यापत्यं नेतोशम्। '*नितोश> नैतोश*'। निरु० १३.५

नोधस्

१. नोधा ऋषिर्भवति, नवनं दधाति।, स यथा स्तुत्या कामानाविष्कुरुत एवमुषा रुपाण्याविष्कुरुते। √'*नु*'+ √'*धा*'। निरु० ४.१६

२. नुवो धुट् च। √'*नु*'+ *असि+ धुडागमः*'। उणा० ४.२२७

नौ

१. उदना न **नावमनयन्त** धीशः। √'*नी*'। ऋ० ५.४५.१०

२. इन्दुं **नावा अनूषत**। √'*नू*'। ऋ० ९.४५.५

३. नौः प्रणोत्तव्यो भवति। √'*नुद्*'। निरु० ५.२३

४. नमतेर्वा। √'*नम्*'। निरु० ५.२३

५. नौः (वाक्)। √'नुद् प्रेरणे'। नुद्यते प्रेर्य्यते मूलाधारादिस्थानेभ्यः प्राणेन। √'*नुद्*'+ *डौ*'। निघ० १.११.४५

६. नमतेर्वा। नम्यते वा देवतात्वात्। √'*नम्*'+ *डौ*'। निघ० १.११.४५

७. ग्लानुदिभ्यां डौः। √'*नुद्*'+ *डौ*'। उणा० २.६५

नौधस

१. देवा वै ब्रह्म व्यभजन्त तान्नोधाः काक्षीवत आगच्छतेऽब्रुवन्नृषिर्न आगःस्तस्मै ब्रह्म ददामेति तस्मा एतत्साम प्रायच्छन् यन्नोधसे प्रायच्छःस्तस्मान्नौधसम्। '*नोधस्> नौधस*'। तां०ब्रा० ७.१०.१०

२. यदु नोधाः काक्षीवतोऽपश्यत् तस्मान्नौधस-मित्याख्यायते। '*नोधस् > नौधस्*'। जै०ब्रा० १.१४७

न्यग्रोध

१. अधि यज्ञेनेष्ट्वा स्वर्गं लोक मायंस्तत्रैतांश्चमसान्न्युब्जंस्ते न्यग्रोधा अभवन्। न्युब्जा इति हाप्येनानेतर्ह्याचक्षते कुरुक्षेत्रे ते ह प्रथमजा न्यग्रोधानां तेभ्यो हान्ये ऽधिजाताः। '*नि+ √'उब्ज्*'। ऐ०ब्रा० ७.३०

२. ते यन्न्यञ्चोऽरोहंस्तस्मान्न्यङ् रोहति न्यग्रोहो न्यग्रोहो वे नाम तन्न्यग्रोहं सन्तं न्यग्रोध इत्याचक्षते। '*नि+ √'अञ्च्'> न्यक्, न्यक्+ √'रुह्'> न्यग्रोह> न्यग्रोध*'। ऐ०ब्रा० ७.३०

पक्तिः, पक्तीः

१. **पचात्पक्तीरुत** भृज्जातिधानाः। √'*पच्*'। ऋ० ४.२४.७

२. **पचन्पक्तीरपिबः** सोममस्य। √'*पच्*'। ऋ० ५.२९.११

३. **पक्तिः पच्यते** सन्ति धानाः। √'*पच्*'। ऋ० ६.२९.४

४. **पचता पक्तीरवसे** कणुध्वम्। √'*पच्*'। ऋ० ७.३२.८, सा०पू० ३.६.३

५. **पचन् पक्तीः पचन्** पुरोडाशान्। √'*पच्*'। यजु० २१.५९, २८.२३,४६

पक्षिन्

१. जरयन्ती वृजनं पद्वदीयत **उत्पातयति पक्षिणः**। √'*पत्*'। ऋ० १.४८.५

२. यथा वातो यथा मनो यथा **पतन्ति पक्षिणः**। √'*पत्*'। अथर्व० १.११.६

३. यो वै विद्वांऽसस्ते पक्षिणो येऽविद्वांऽसस्ते ऽपक्षास्त्रिवृत्पञ्चादशावेव स्तोमौ पक्षौ कृत्वा स्वर्गं लोकं प्रयन्ति। '*पक्ष> पक्षिन्*'। ता०ब्रा० १४.१.१३

पङ्क्ति

१. पञ्चपदा वै पंक्तिः। '*पञ्चन्+ ति*'। जै०ब्रा० ३.२०६

२. पञ्चपदा पङ्क्तिः। '*पञ्चन्+ ति*'। तां०ब्रा० १२.१.९; ऐ०ब्रा० २३.३; शत०ब्रा० ९.२.३.४१; कौ०ब्रा० १.३; ऐ०आ० १.३.८

३. पङ्क्तिः पञ्चिनी पञ्चपदा। '*पञ्चन्+ ति*'। दै०ब्रा० ३.१३

४. पञ्चाक्षरा पङ्क्तिः। '*पञ्चन्*'। तै०ब्रा० २.७.१०.२

५. पङ्क्तिः पञ्चपदा। '*पञ्चन्*'। गो०ब्रा० १.३.८

६. पङ्क्तिं पञ्चपदाम्। '*पञ्चन्*'। गो०ब्रा० १.३.१०

७. पञ्चपदा पङ्क्तिः। '*पञ्चन्*'। गो०ब्रा० १.४.२४;४.४

८. पङ्क्ति पञ्चपदा। '*पञ्चन्+ ति*'। निरु० ७.१२

९. पङ्क्तिविंशतित्रिंशच्चत्वारिंशत्पञ्चाशत्षष्टिसप्तत्यशीतिनवतिशतम्। 'पञ्च परिमाणमस्य>पङ्क्ति'। '*पञ्चन् + ति*'। अष्टा० ५.१.५९

पज्रहोषिन्

१. पज्रहोषिणः प्रार्जितहोषिणौ। '*प्र+ √'अर्ज्> प्रार्ज> पज्र, पज्र+ होषिन्> पज्रहोषिन्*'। निरु० ५.२२

पञ्चन्

१. पञ्च पृक्ता सङ्ख्या, स्त्रीपुंनपुंसकेष्वविशिष्टा। √'*पृच्*'। निरु० ३.८

पञ्चजन

१. पञ्चजनाः (मनुष्याः)। √'पचि विस्तारे'। एकादिभ्यो विस्तीर्णा पञ्चसङ्ख्या। जायन्ते जनाः। √'*पच्*'+ *कन्+ √'जन्*'। निघ० २.३.२३

२. पञ्चभिर्भूतैर्जाताः पञ्चजनाः— इति क्षीरस्वामी। '*पञ्चन्+ √'जन्*'। निघ० २.३.२३

पञ्चहोतृ

१. तस्मै ब्रह्मणे पञ्चमः हूतः प्रत्यशृणोत्। स पञ्चहूतोऽभवत्। पञ्चहूतो वै नामैषः। तं वा एतं पञ्चहूतंऽसन्तं पञ्चहोतेत्याचक्षते परोक्षप्रिया इव हि देवाः। '*पञ्चम+ हूत (√'हे') > पञ्चहूत> पञ्चहोता*'। तै०सं० २.३.११.३-४

पट्

१. पड्भिः, पानैरिति वा। √'*पा*'। निरु० ५.३

२. स्पाशनैरिति वा। √'*स्पश्*'। निरु० ५.३

पणि

१. जरितारः सत्या विपन्यामहे वि पणिर्हितावान्। √'*पण्*'। ऋ० १.१८०.७

२. पणिर्वणिग् भवति। पणिः पणनात्। √'*पण्*'। निरु० २.१७

पण्डक

१. पण्डकः पण्डगः। '*पण्ड+ √'गम्*'। निरु० ६.३२

२. प्रार्दको वा प्रार्दयत्याण्डौ। आण्डावाणी इव व्रीडयति। '*प्र+ √'अर्द्> प्रार्दक> पण्डक*'। निरु० ६.३२

पतङ्ग

१. अवो दिवा **पतयन्तं पतङ्गम्**। √'*पत्*'। ऋ० १.१६३.६

२. दिवा **पतयन्तं पतङ्गम्**। √'*पत्*'। यजु० २९.१७

३. आशुर्विपश्चित् **पतयन् पतङ्गः**। √'*पत्*'। अथर्व० १३.२.३१

४. पतन्निव ह्येष्वङ्गेष्वति रथमुदीक्षते। पतङ्ग इत्याचक्षते। √'*पत्*'+ *अङ्ग*'। जै०उप० ३.६.७.२

५. पतेरङ्गच् पक्षिणि। √'*पत्*'+ *अङ्गच्*'। उणा० १.११९

पतत्रिन्

१. तृतीयमस्य नकिरा दधर्षति वयश्चन **पतयन्तः पतत्रिणः**। √'*पत्*'। ऋ० १.१५५.५

विषयनिवृत्तिरूपं कर्म। 'एतस्मादेव' रूपसामान्यात् प्रसक्तं व्रतं निरुच्यते 'वारयतीति सतः'। 'निवृत्तिरूपो हि संकल्पः, तदतिक्रम्य प्रमादात् प्रवर्तमानं पुरुषं वारयति' इति। व्रतं कर्मोच्यते। कस्मात्? वारयते तद्धि संकल्पपूर्वकं प्रवृत्तिरूपमग्निहोत्रादिकर्मप्रत्यवायं वारयतीति पुरुषः प्रवर्तमानः.........। भोजनमपि व्रतं क्षुधानिवारयणात्। √'*वृ*'+ *अतच्*'। निघ० २.१.७

६. व्रत्यते वर्ज्यते सर्वभोगोऽत्रेति सुबोधनीकारः। व्रतिश्च वर्जनार्थः। 'अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि' (यजु० १.५) इत्यादौ व्रतशब्दे निवृत्तिकर्मता। '*व्रत*+ *घ*'। निघ० २.१.७

व्रतति

१. व्रततिर्वरणाच्च सयनाच्च ततनाच्च। √'*वृ*'+ √'*सि*' (*बन्धने*')+ √'*तन्*'= *व्र*+ *सि*+ *त*= *व्र*+ *त*+ *सि*= *व्रतसि*= *व्रतति*'। निरु० ६.२८

व्रन्दिन्

१. व्रन्दी व्रन्दतेर्मृदुभावकर्मणः। √'*व्रन्द्*'। निरु० ५.१५

व्रा

१. व्राः, व्रात्याः। '*व्रात्य*= *व्र*'। निरु० ५.३

व्राताः

१. व्राताः (मनुष्याः)। √'*वृञ्*' वरणे'। वृण्वन्ति स्वमभितं देवताभ्यः तपसाराधितेभ्यः प्रव्रियन्ते वा यज्ञादौ। √'*वृ*'+ *क्त*+ *आडागमश्च*'। निघ० २.३.१४

२. यद्वा, व्रातो धान्यादिसञ्चयः। तद्वन्तो व्राताः। '*व्रात*+ *अप्* (*मत्वर्थीयः*)= *व्राताः*'। निघ० २.३.१४

३. यद्वा, व्रतमिति कर्मनाम (निघ० २.१.७) अन्नं वा, तदीयाः व्राताः। '*व्रत*+ *अण्*'। निघ० २.३.१४

व्राधत्

१. व्राधत् (महत्)। ब्रन्धातेः। √'*ब्रन्ध्*+ *इति*'। निघ० ३.३.२१

शंयु

१. शंयुर्ह वै बार्हस्पत्यः सर्वान् यज्ञाञ्छमयांचकार। √'*शम्*'। कौ०ब्रा० ३.८

शंयोः

१. शं योः, शमनं च रोगाणां यावनं च भयानाम्। √'*शम्*'+ √'*यु*'। निरु० ४.२१

शकट

१. शकटं शकृदितं भवति। '*शकृत्*+ *इत्*= *शकृदित*= *शकट*'। निरु० ६.२२

२. शनकैस्तकतीति वा। '*शनकैः*+ √'*तक्*'। निरु० ६.२२

३. शब्देन तकतीति वा। '*शब्द*+ √'*तक्*'। निरु० ६.२२

४. शकादिभ्योऽटन्। √'*शक्*'+ *अटन्*'। उणा० ४.८२

शकुनि

१. शकुनिः शक्नोत्यन्नेतुमात्मानम्। √'*शक्*'+ *उत्*+ √'*नी*' = *शकुन्नी*= *शकुनि*'। निरु० ९.३

२. शक्नोति नदितुमिति वा। √'*शक्*'+ √'*नद्*'। निरु० ९.३

३. शक्नोति तकितुमिति वा। √'*शक्*'+ √'*तक्*'। निरु० ९.३

४. सर्वतः शङ्करोऽस्त्विति वा। √'*शम्*'+ √'*कृ*'। निरु० ९.३

५. शक्नोतेर्वा। √'*शक्*'। निरु० ९.३

६. शकेरुनोन्तोन्त्युनयः। √'*शक्*'+ *उनि*'। उणा० ३.४९

शक्ति

१. पशवो वै शक्तिर्यो वै पशूनां भूयिष्ठभाग्भवति, स तच्छक्नोति यच् शिक्षति। √'*शक्*' या √'*शिक्ष्*'। मै०सं० ४.२.९

२. शक्तिः (कर्म)। शक्नोतेः। शक्यते कर्तुं शक्यते वानया परलोकं जेतुम्। √'*शक्*'+ *क्तिन्*'। निघ० २.१.२५

शक्म

१. शक्म (कर्म)। √'शक्लृ' शक्तौ'। शक्यते अनेनाभिमतं प्राप्तुं, शक्नोतीष्टं साधयितुं वा, शक्यते कर्त्तुमिति वा। √'*शक्*'+ *मनिन्*'। निघ० २.१.९

२. अशिशकिभ्यां छन्दसि। √'*शक्*'+ *मनिन्*'। उणा० ४.१४८

शक्र

१. स **शक्रः** उत नः **शकदिन्द्रो** वसु दयमानः। √'*शक्*'। ऋ० १.१०.६

२. स नः **शक्रश्चिदा शकद्** दानवाँ अन्तराभरः। √'*शक्*'। ऋ० ८.३२.१२

३. स्फायितञ्चिवञ्चिशकि०। √'*शक्*'+ *रक्*'। उणा० २.१३

शक्वरी

१. एताभिर्वा इन्द्रो वृत्रमशकद्धन्तुं तद्यदाभिर्वृत्रमशकद्धन्तुं तस्माच्छक्वर्यः। √'*शक्*'। कौ०ब्रा० २३.२

२. एषा वै सप्तपदा शक्वरी, यद्वा एतया देवा अशिक्षन्, तदशक्नुवन्। √'*शक्*'। तै०सं० २.६.२.६

३. तद्यदद्य स्तुत्वा श्वोऽशक्नुवंस्तच्छक्वरीणां शक्वरीत्वम्। √'*शक्*'। जै०ब्रा० ३.१०४

४. यदशक्नोत् (इन्द्रः) तस्माच्छक्वर्यः। √'*शक्*'। जै०ब्रा० ३.१११

५. यदिमांल्लोकान् प्रजापतिः सृष्ट्वेदं सर्वमशक्नोद्यदिदं किञ्च तच्छक्वर्योऽभवंस्तच्छक्वरीणां शक्वरीत्वम्। √'*शक्*'। ऐ०ब्रा० ५.७

६. अशकामेति तदासां (गवाम्) शक्वरीत्वम्। √'*शक्*'। मै०सं० ४.२.१२

७. एतेन शक्नुहीति तच्छक्वरीणा शक्वरीत्वम्। √'*शक्*'। तां०ब्रा० १३.४.१

८. शक्वर्य ऋचः शक्नोतेः। √'*शक्*'। निरु० १.८

९. तद्याभिर्वृत्रमशकद्धन्तुं तच्छक्वरीणां शक्वरीत्वम् इति विज्ञायते। √'*शक्*'। निरु० १.८

१०. शक्वरी (बाहू)। √'शक्लृ' शक्तौ'। शक्नुतः कर्माणि कर्त्तुम्। √'*शक्*'+ *वनिप्*+ *ङीष्*+ *रेफादेशश्च (अष्टा० ४.१.७)*'। निघ० २.४.११

११. शक्वरी (गौः)। व्याख्यातं बाहुनामसु। शक्नोति क्षीरादिप्रदानेन तद्वन्तं प्रीणयितुं स्पर्शनेन वा पापमपनेतुम्। √'*शक्*'+ *वनिप्*+ *ङीष्*+ *रेफादेशश्च (अष्टा० ४.१.७)*'। निघ० २.११.९

१२. यद्वा, शक्वरीशब्दसम्बन्धादभेदेन वा शक्वरी। '*शक्वरी*= *शक्वरी*'। निघ० २.११.९

१३. स्नामदिपद्यर्तिपृशकिभ्यो वनिप्। √'*शक्*'+ *वनिप्*+ *ङीष्*+ *रेफादेशश्च (अष्टा० ४.१.७)*'। उणा० ४.११४

शग्म

१. शग्म (सुखम्)। शम् शब्दे उपपदे गमेः। सुखं गम्यतेऽनेन दुष्कृतादिशमनेन वा। √'*शम्*+ √'*गम्*'+ *क*'। निघ० ३.६.१२

२. यद्वा, शक्नोतेः। शक्नोति तृप्तिं जनयितुम्। √'*शक्*'+ *मक्*'। निघ० ३.६.१२

शग्म्य

१. शग्म्येन संगमेन। '*सम्*+ √'*गम्*'। निरु० ३.४

शची

१. शची (वाक्)। √'शच' गतौ'। शचते गच्छति यज्ञम्, शच्यते गम्यते ज्ञायतेऽनयार्थः। √'*शच्*'+ *इन्*+ *ङीष्*'। निघ० १.११.४९

२. यद्वा, √'शच' व्यक्तायां वाचि'। शचते व्यक्ता वाचः करोतीति वा। √'*शच्*'+ *इन्*+ *ङीष्*'। निघ० १.११.४९

३. शची (कर्म)। √'शच' व्यक्तायां वाचि'। शचन्ते व्यक्ता वाचः कुर्वन्त्यस्यामिति शची। √'*शच्*'+ *इन्*+ *ङीष्*'। निघ० १.११.४९

४. क्षीरस्वामी तु 'शचति शची' √'शच' √'श्वच' गतौ' इति व्याख्यातम्। √'*शच्*'+ *इन्*+ *ङीष्*'। निघ० १.११.४९

५. शची (प्रज्ञा)। व्याख्यातं कर्मनामसु। गम्यन्ते अवगम्यन्तेऽनयार्थाः, गच्छत्यनया इष्टप्राप्तिरनिष्ट-परिहारञ्च। √'*शच्*'+ *इन्*+ *ङीष्*'। निघ० १.११.४९

शत

१. शतं दशदशतः। '*दश*+ *दशत*= *शत*'। निरु० ३.१०

२. शतम् (बाहु)। दशदशांशभावस्त च निपात्यते। '*दश*+ *दशत*= *शत (अष्टा० ५.१.५९)*'। निघ० ३.१.९

३. 'दशदशतः' इति निरुक्तम् (निरु० ३.१०) निपातनसामर्थ्यात् बहुमात्रेऽपि वर्त्तते। (*निपातनात्*)। निघ० ३.१.९

शतभिषक्

१. यच्छतमभिषज्यन् तच्छतमभिषक्। '*शत*+ *अभि*+ √'*सञ्ज्*'। तै०सं० १.५.२.९

शतरा

१. शतरा (सुखम्)। शतं बहु, अनेकमिन्द्रियप्रसादादि राति ददाति। '*शत*+ √'*रा*'+ *क*'। निघ० ३.६.२

शतरुद्रिय

१. तद्यदेतꣳशतशीर्षाणꣳ रुद्रमेतेनाशमयंस्तस्माच्छत-शीर्षरुद्रशमनीयꣳ शतशीर्ष रुद्रशमनीयं ह वै तच्छतरुद्रियमित्याचक्षते परोऽक्षम्। '*शीतशीर्षरुद्र-शमनीय*= *शतरुद्रिय*'। शत०ब्रा० ९.१.१.७

२. ते देवा एतच्छतरुद्रियमपश्यन्। तेनैनम् (रुद्रम्) अशमयन्। √'*शम्*'। कपि०सं० ३१.२१

३. ते (देवाः)ऽब्रुवन्। अन्नमस्मै (रुद्राय) सम्भराम तेनैनꣳशमयामेति तस्मा एतदन्नं समभरञ्छान्तदेवत्यं तेनैनमशमयंस्तद्यदेतं देवमेतेनाशमयंस्तस्माच्छान्तदेवत्यꣳ शान्तदेवत्यꣳह वै तच्छतरुद्रियमित्याचक्षते परोऽक्षम्। '*शान्तदेवत्य= शतरुद्रिय*'। शत०ब्रा० ९.१.१.२

४. प्रजापतिरेतच्छतरुद्रियमपश्यत्, तेनैनम् (रुद्रम्) अशमयत्। √'*शम्*'। मै०सं० ३.३.४

शतर्चिन्

१. तं (इमं पृथिवीलोकं) शतं वर्षाण्यभ्यार्चत् तस्माच्छतर्चिनस्तस्माच्छतर्चिन इत्याचक्षत एतमेव (प्राणं) सन्तम्। '*शत*+ √'*अर्च्*'। ऐ०आ० २.२.१

शतसा

१. शतसाः, शतसानिनी। '*शत*+ √'*षण्*'। निरु० १०.२९

शत्रु

१. पुरू सहस्रा नि **शिशामि** साकमशत्रुं हि मा जनिता जजान। √'*शो*'। ऋ० १०.२८.६

२. शत्रुः, शमयिता। √'शम्'। निरु० २.१६

३. शातयिता वा। √'*शातय्*'। निरु० २.१६

४. रुशतिभ्यां क्रुन्। √'*शातय्*'+ *क्रुन्*'। उणा० ४.१०४

शन्तनु

१. शंतनुः शं तनोऽस्त्विति वा। '*शम्*+ *तनु*'। निरु० २.१२

२. शमस्मै तन्वा अस्त्विति वा। '*शम्*'+ *तनु*'। निरु० २.१२

शपन

१. या **शशाप शपनेन**। √'*शप्*'। अथर्व० १.२६.३; ४.१७३

शब्द

१. शब्दः (वाक्)। शपत्याक्राशे शापयित्यां दानौ। शपतेऽनेनेति शब्दः संस्कृता वाक्। √'*शप्*'। निघ० १.११.३२

२. यद्वा, शब्दनं शब्दः—इति क्षीरस्वामी। √'*शब्द्*'। निघ० १.११.३२

३. खेऽन्तरिक्षे शब्दं करोतीति वा। (*अस्पष्टम्*)। निघ० १.११.३२

४. शाशपित्यां ददनौ। √'*शप्*'+ *दन्*'। उणा० ४.९८

शम्

१. शम् (सुखम्)। निपातोऽयम्। (*निपातः*)। निघ० ३.६.१९

२. यद्वा, शाम्यते! शामयितृ क्लेशानाम्। √'*शम्*'+ *विन्*'।

३. शं शमनम्। √'*शम्*'। निरु० ४.२१

शमी

१. ईजे यज्ञेभिः **शशमे शमीभिः**। √'*शम्*'। ऋ० ६.३.२

२. तेजसा **शमीभिः शम्यन्तु** त्वा। √'*शम्*'। यजु० २३.४०

३. तꣳ(अग्निं प्रजापतिः) शम्या समैन्धत्, तमशमयत्, तञ्शम्याः शमीत्वम्। √'*शम्*'। मै०सं० १.६.५

४. वनस्पतीन् वा उग्रो देव उदौषत्, तꣳ शम्याꣳअध्यशमयस्तच्शम्याः शमीत्वम्। √'*शम्*'। मै०सं० ४.१.१

५. प्रजापतिरग्निमसृजत सोऽबिभेत्प्र मा धस्यतीति तꣳशम्याशमयत्। तच्छस्मै शमित्वम्। √'*शम्*'। तै०सं० १.१.३.११

६. तान् (पशून्) अयं देवो (रुद्रो)ऽभ्यमन्यत, तꣳशम्याशमयत्, तच्छम्याश्शमीत्वम्। √'*शम्*'। काठ० ३०.१०; कपि०सं० ४६.८

७. तद्यदेतꣳ(अग्निम्) शम्याशमयंस्तस्माच्छमी। √'*शम्*'। शत०ब्रा० ९.२.३.२३

८. शमी (कर्म)। √'शम' उपशमे'। शम्यत्यनयाऽनिष्टानि। शमयत्यनिष्टव्याध्यादीनि। √'*शम्*'+ *इन्*' *अथवा* √'*शमय्*'+ *इन्*'। निघ० २.१.२३

शम्ब

१. शम्ब इति वज्रनाम। शमयतेर्वा। √'*शमय्*'। निरु० ५.२४

२. शातयतेर्वा। √'*शातय्*'। निरु० ५.२४

३. शमेर्बन्। √'*शम्*'+ *बन्*'। उणा० ४.९५

शम्बर

१. शम्बरः (मेघः)। √'शमु' उपरमे'। शमयति नाशयति असुराननिति शम्बो वज्रः। शम्बोऽस्य प्रहर्तृत्वेनास्ति। रो

मत्वर्थीयः। √'शम्'+ बन्= शम्ब, शम्ब+ र' *(मत्वर्थीयः)*। निघ० १.१०.१४

२. यद्वा, शातयतेः। प्रहरति हि वज्रः इन्द्रप्रेरितो मेघात् पर्वतानाञ्च पक्षच्छेदसमये। शम्बोऽस्य प्रहर्त्तृत्वेनास्ति। रो मत्वर्थीयः। √'*शातय्*'+ *बन्= शम्+ ब*, *शम्ब*+ र' *(मत्वर्थीयः)*। निघ० १.१०.१४

३. यद्वा, सम्पूर्वात् वृणोतेः, सम्बरः सन् वर्णव्यत्ययेन शम्बरः। संव्रियते मेघेनाकाशम्, भूमिः पर्वतेन। '*सं*+ √'*वृ*'+ *अप्= संवर= शम्बर*'। निघ० १.१०.१४

४. यद्वा, शम्बरमित्युदकनाम (निघ० १.१२.८८) उदकमस्यास्तीति वा। '*शम्बर= शम्बर*' *(मत्वर्थीयस्य लुक्)*। निघ० १.१०.१४

५. शम्बरम् (उदकम्)। सम्पूर्वाद् वृणोतेः। संव्रियते मेघैः। '*सम्*'+ √'*वृ*'+ *अप्= संवर= शम्बर*'। निघ० १.१२.८८

६. यद्वा, वृणोति हि भूमिं संवरम्। '*सं*+ √'*वृ*'+ *अच्= संवर= शम्बर*'। निघ० १.१२.८८

७. यद्वा, शम्बो वज्रः निरुक्तो मेघनामसु। तद्वानपीन्द्रः शम्बः। √'रा' दाने'। शम्बेनेन्द्रेण दीयते शम्बरः। '*शम्ब*+ √'*रा*'+ *क*'। निघ० १.१२.८८

८. यद्वा, शञ्च तद्वरञ्च शम्बरः। शमनं च रोगाणामुत्कृष्टं सर्वपदार्थेषु। √'*शम्*'+ √'*वृ*'+ *अच्*'= *शंवर= शम्बर*'। निघ० १.१२.८८

९. शम्बरम् (बलम्)। व्याख्यातमुदकनामसु। संव्रियतेऽनेन शत्रुः, संवृणोति वा तत्त्वत आपदम्। '*सम्*'+ √'*वृ*'+ *अप्= संवर= शम्बर*'। निघ० २.९.२८

१०. शमनमुपद्रवाणामुत्कृष्टं च युद्धादौ। √'*शम्*'+ √'*वृ*'। निघ० २.९.२८

११. शम्बेनेन्द्रेणादीयते वा। बलाधिदेवता हीन्द्रः। '*शम्ब*'+ √'*रा*'+ *कृशम्बर*'। निघ० २.९.२८

शम्भु

१. शम्भुः सुखभूः। '*शम्*+ √'*भू*'। निरु० ५.३

शम्यन्ती

१. सिमाः **शम्यन्तु शम्यन्तीः**। √'*शम्*'। यजु० २३.३७

शयन

१. **यातूनां शयने शयानम्**। √'*शी*'। अथर्व० ५.२९.८,९

२. **स्वसुः शयने यच्छयीय**। √'*शी*'। अथर्व० १८.१.१४

शया

१. **शये शयासु** प्रयतो वनानु। √'शी'। ऋ० ३.५५.४

शयुत्रा

१. शयुत्रा, शयने। √'*शी*'। निरु० ३.१५

शर

१. यत्र प्राहरत्तच्छकलोऽशीर्यत स पतित्वा शरोऽभवत्तस्माच्छरो नाम यदशीर्यतैवमु स चतुर्धा वज्रोऽभवत्। '*शकल*+ √'*शॄ*'। शत०ब्रा० १.२.४.१ (तु० ५.२.६.२)

२. अथ (इन्द्रः) यत्र (वज्रं) प्राहरत्तच्कलोऽशीर्यत स पतित्वा शरोऽभवत्तस्माच्छरो नाम यदशीर्यत। '*शकल*+ √'*शॄ*'। शत०ब्रा० १.२.४.१

३. इन्द्रो वै वृत्राय वज्रं प्राहरत् तस्य यत् प्राशीर्यत स शरोऽभवत् तच्छरस्य शरत्वम्। √'*शॄ*'। काठ० २३.४; कपि०सं० ३६.१

४. येऽन्तः शरा अशीर्यन्त ते शरा अभवन् तच्छराणाꣳशरत्वम्। √'*शॄ*'। तै०सं० ६.१.३.५

५. शरः श्रृणातेः। √'*शॄ*'। निरु० ५.४

शरण

१. शरणम् (गृहम्)। श्रृणातेः। श्रृणातिशीतादिक्लेशम्, रक्षितवान् वा क्लेशेभ्यः। √'*शॄ*'+ *युच्*'। निघ० ३.४.१६

२. शरिः प्राप्त्यर्थः— इति माधवः। प्राप्यते हि तत्। √'*शॄ*'+ *युच्*'। निघ० ३.४.१६

शरद्

१. शरद्वै बर्हिरिति हि शरद् बर्हिर्या इमा ओषधयो ग्रीष्महेमन्ताभ्यां नित्यक्ता भवन्ति ता वर्षा वर्द्धन्ते ताः शरदि बर्हिषो रूपं प्रस्तीर्णाः शेरे तस्माच्छरद् बर्हिः। √'*शी*'। शत०ब्रा० १.५.३.१२

२. शरच्छृता अस्यामोषधयो भवन्ति। √'*श्रा*'+ *क्त= श्रृ+ त (अष्टा० ६.१.२७)= श्रृत= शरत्*'। निरु० ४.२५

३. शीर्णा आप इति वा। √'*श्रृ*' *हिंसायाम्*'। निरु० ४.२५

४. श+द+भसोऽदिः। √'*शॄ*'+ *अदि*'। उणा० १.१३०

शरारु

१. शरारुः संशिशरिषुः। √'*शॄ*'। निरु० ६.३१

शरीर

१. अथ यत्सर्वस्मिन्नश्रयन्त तस्मादु शरीरम्। √'*श्रि*'। शत०ब्रा० ६.१.१.४

२. प्राण उदक्रामत् तत्प्राण उत्क्रान्तेऽपद्यत। तदशीर्यताशीरीती३ँ तच्छरीरमभवत्तच्छरीरस्य शरीरत्वम्। √'*शॄ*'। ऐ०आ० २.१.४

३. शरीरं शृणातेः। √'*शॄ*'। निरु० २.१६

४. शम्नातेर्वा। √'*शम्*'। निरु० २.१६

५. शरीरं शरदम्। '*शरद्= शरीर*'। निरु० २.१६

६. कृशॄपॄकटिपटिशौटिभ्य ईरन्। √'*शॄ*+ *ईरन्*'। उणा० ४.३१

शर्करा

१. ताँ (पृथिवीम्) शर्कराभिरदृहत् शं वै नोऽभूदिति तच्छर्कराणाꣳशर्करत्वम्। '*शम्= शर्करा*'। तै०सं० १.१.३.७

२. येऽन्तः शरा अशीर्यन्त ताः शर्करा अभवन्, तच्छर्कराणाꣳशर्करत्वम्। '*शर+* √'*शॄ*'। तै०सं० ५.२.६.२

३. यदशीर्यत ताः शर्करा। √'*शॄ*'। काठ० २०.४; कपि०सं० ३१.६

शर्द्ध

१. शर्द्धः (बलम्)। शर्द्धतिरुत्साहार्थः। शत्रुजयादावनेन उत्साहितत्वात्। √'*शर्द्ध*'+ *असुन्*'। निघ० २.९.७

शर्मन्

१. शर्म शरणम्। √'*शॄ*'। निरु० ९.१९; ३२; १२.४५

२. शर्म (गृहम्)। श्रयतेर्वा। श्रीयतेर्वा। श्रीयते हि तत्। √'*श्रि*'+ *मन्*'। निघ० ३.४.२१

३. यद्वा, शृणातेः। शरेः। शृणाति शीतादिक्लेशम्, रक्षितवान् वा क्लेशेभ्यः। √'*शॄ*'+ *मन्*'। निघ० ३.४.२१

४. शर्म (सुखम्)। व्याख्यातं गृहनामसु। √'*शॄ*'+ *मन्*'। निघ० ३.६.४

शर्या, शर्य्या

१. शर्या अङ्गुलयो भवन्ति भवन्ति सृजन्ति कर्माणि। √'*सृज्*'+ *अच्= सर्जा= सर्या= शर्या*'। निरु० ५.४

२. शर्या इषवः शरमय्यः। '*शर+ यत्= शर्य= शर्या*'। निरु० ५.४

३. शर्याम्, शरमयीमिषुम्। '*शर+ यत्= शर्य= शर्या*'। निरु० ५.४

४. शर्य्याः (अङ्गुलयः)। √'*शॄ*' हिंसायाम्'। शृणाति पापात्। √'*शॄ*'+यत्'। निघ० २.५.५

शर्वरी

१. शर्वरी (रात्रिः)। √'*शॄ*' हिंसायाम्'। शृणाति चेष्टाम्, रात्रौ हि स्वस्वव्यापारेभ्यः उपरमन्ते प्राणिनः। √'*शॄ*'+ *ष्वरच्*'। निघ० १.७.३

२. शीर्य्यन्ते वास्यां प्राणिनो नक्तञ्चरैः। √'*शॄ*'+ *ष्वरच्*'। निघ० १.७.३

३. कॄगॄशॄवॄञ्चितिभ्यः ष्वरच्। √'*शॄ*'+ *ष्वरच्*'। उणा० २.१२३

शल्मलि

१. शन्नमलम्। √'*शद्*'+ *क्त= शन्न, शन्न+ मल= शल्मल= शल्मलि*'। निरु० १२.८

२. सुशरो भवति। '*शर= शल्मलि*'। निरु० १२.८,

३. शरवान् वा। '*शर+ मलि (मत्वर्थीयः)= शल्मलि*'। निरु० १२.८

शव, शवस्

१. ते धृष्णुना **शवसा शूशुवांसः**। √'*शु*' *या* √'*श्वि*'। ऋ० १.१६७.९

२. उत स्वेन **शवसा शूशुवुः**। √'*शु*'। ऋ० ७.७४.६

३. ता सानसी **शवसाना** हि भूतं साकंवृधा **शवसा शूशुवांसा**। √'*शु*'। ऋ० ७.९३.२

४. विकारमस्य (शवतिः) आर्येषु भाष्यन्ते शव इति। √'*शु*' *या* √'*शव्*'। निरु० २.२

५. शवः (उदकम्)। √'टुओश्वि' गतिवृद्ध्योः'। श्वयति गच्छति वर्द्धते वा वर्षाकाले। √'*श्वि*'+ *असुन्*'। निघ० १.१२.४१

६. शवतेर्वा गतिकर्मणः। शवति गच्छति शवः। √'*शव्*'+ *असुन्*'। निघ० १.१२.४१

७. शवः (बलम्)। व्याख्यातमुदकनामसु। √'*शव्*'+ *असुन्*'। निघ० २.९.३

८. श्वेः सम्प्रसारणं च। √'*श्वि*'+ *असुन्*'। उणा० ४.१९४

शवति

१. शवतिर्गतिकर्मा कम्बोजेष्वेव भाष्यते। √'*शव्*'। निरु० २.२

शश

१. एष वै शशो य एषोऽन्तश्चन्द्रमसि। एष हीदं सर्वं शास्ति। √'*शास्*'। जै०ब्रा० १.२८

शशमान

१. शशमानः शंसमानः। √'*शंस्*'। निरु० ६.८

शशयान

१. शशयाना, शिश्याना। √'*शी*'। निरु० ९.६

शश्वत्

१. शश्वत् (बहु)। √'टुओश्वि' गतिवृद्ध्योः'। परिवर्द्धते गम्यते वा। √'*श्वि' (निपातनात्)*। निघ० ३.१.५

शस्त्र

१. तद्यदेनच्छ्यति तस्माच्छस्त्रं नाम। √'*शो*'। शत०ब्रा० ४.३.२.३

२. ताञ्छस्त्रैः प्रशास्ति। तच्छस्त्राणां शस्त्रत्वम्। √'*शास्*'। जै०ब्रा० २.२४

३. अमिचिमिशसिभ्यः क्त्रः। √'*शस्*'+ *क्त्र*'। उणा० ४,१६५,

शाखा

१. शाखा खशयाः। '*ख*+ √'*शी*'= *खशय*= *शाख*= *शाखा*'। निरु० १.४

२. शक्नोतेर्वा। √'*शक्*'। निरु० १.४

३. शाखाः शक्नोतेः। √'*शक्*'। निरु० ६.३२

४. शाखाः (अङ्गुलयः)। √'अशू' व्याप्तौ'। व्याप्तं हि सर्वम्। √'*अश्*'+ *ख*= *श्*+ *अ*+ *ख*= *शाख*= *शाखा*'। निघ० २.५.१९

५. यद्वा, खशब्दाधिकरणे उपपदे शेतेः। अङ्गुल्यो हि हस्ताग्रभागत्वात् स्वे आकाशे शेरते व्यवतिष्ठन्ते आकाशस्यावकाशरूपत्वात् उपपन्नं हि तत्र शयनम्। '*ख*+ √'*शी*'+ *अच्*' (*पृषोदरादित्वात्*)'। निघ० २.५.१९

६. शक्नोतेर्वा। शक्नुवन्ति ता अङ्गुल्यः पुस्तकादिधारयितुं कार्य्याणि कर्तुं वा। √'*शक्*'+ *अच्*'= *शकृशख*= *शाखा*'। निघ० २.५.१९

७. यद्वा, √'शाखृ' व्याप्तौ'। शाखन्ति व्याप्नुवन्ति कर्माणि। √'*शाख*'+ *अच्*'। निघ० २.५.१९

८. यद्वा, √'शीङ्' स्वप्ने'। शेरतेऽवतिष्ठन्ते आसु नखादयः इति शाखाः। √'*शी*'+ *ख*' (*औणादिकः*)। निघ० २.५.१९

शातपन्ता

१. शातपन्ता (सुखम्)। √'शो' तनूकरणे'+पततेः। शातेन दुःखानां तनूकरणेन पत्यते स्तूयते। √'*शो*'+ √'*पत*'+ *तन्*'। निघ० ३.६.३

शान्ति

१. ताभिः **शान्तिभिः सर्व शान्तिभिः शमयामोऽहम्**। √'*शम्*'। अथर्व० १९.९.१४

२. अथ शमयन्त्येवैनमेतया शान्तिर्हि वायुः। √'*शम्*'। तां०ब्रा० ४.६.९

३. शान्तिरापस्तदद्भिः शान्त्या शमयति। √'*शम्*'। शत०ब्रा० १.२.२:११

शाम्मद

१. ते (देवाः)ऽब्रुवञ्छं वै न इमे लोका अमादिषुरिति। तदेव शाम्भवस्य शाम्भवत्वम्। '*शम्*+ √'*मद्*'। जै०ब्रा० ३.१६४

शाशदान

१. शाशदानः शाशाद्यामानाः। √'*शद्*'+ *शानच्*' (*यङ्लुगन्तरूपम्*)। निरु० ६.१६

शिक्यम्

१. ऋतवः शिक्यमृतुर्हि संवत्सरः शक्नोति स्थातुं यच्छक्नोति तस्माच्छिक्यम्। √'*शक्*'। शत०ब्रा० ६.७.१.१८

२. दिशः शिक्यं दिग्भिर्हीमे लोकाः शक्नुवन्ति स्थातुं यच्छक्नुवन्ति तस्माच्छिक्यम्। √'*शक्*'। शत०ब्रा० ६.७.१.१६

३. प्राणाः शिक्यं प्राणैर्ह्यात्मा शक्नोति स्थातुं यच्छक्नोति तस्माच्छिक्यम्। √'*शक्*'। शत०ब्रा० ६.७.१.१६

४. स्रंसेः शिः कुट् किच्च। √'*स्रंस्*'+ *यण्*= *शि*+ *य*= *शि*+ *कुट्*+ *य*= *शिक्य*'। उणा० ५.१६

शिक्षु

१. उत **शिक्ष** स्वपत्यस्य **शिक्षोः**। √'*शिक्ष्*'। ऋ० ३.१९.३

शितामन्

१. योनिः शितामेति शाकपूणिः। विषितो भवति। √'*विष्*'+ *अच्*= *विष, विष + इतच्*') = *विषित* = *शितामन्*'। *अथवा* '*वि*+ √'*सि*' + *क्त* = *विषित* = *शितामन्*'। निरु० ४.३

२. श्यामतो यकृत्त इति तैटीकिः। '*श्याम*= *शिताम*'। निरु० ४.३

३. शितिमांसतो मेदस्त इति गालवः। 'शिति (√'*शो*')+ *मांस*= *शिताम*'। निरु० ४.३

शिति

१. शिति श्यतेः। √'*शो*'। निरु० ४.३

२. क्रमितमिशतिस्तम्भामत इच्च। √'*शत्*'+ *इन्*'। उणा० ४.१२३

शिपिविष्ट

१. यमुपैत्सीत्तमपाराप्सीत्तच्छिपितमिव यज्ञस्य भवति तस्माच्छिपिविष्टायेति। √'*शी*'+ √'*पा*'+ (√'*विश्*')। शत०ब्रा० ११.१.४.४

२. शिपिविष्टो विष्णुरिति विष्णोर्द्वे नामनी भवतः कुत्सितार्थीयं पूर्वं भवतीत्यौपमन्यवः। (*प्रयोगार्थप्रदर्शनम्*) निरु० ५.७

३. शेप इव निर्वेष्टित ....अप्रतिपन्नरश्मि। '*शेप*+ √'*विश्*' *या* √'*विष्*'। निरु० ५.८

४. अपि वा प्रशंसानामैवाभिप्रेतं स्यात्।........शिपिविष्ट प्रतिपन्नरश्मिः। शिपयोऽत्र रश्मय उच्यन्ते। तैराविष्टो भवति। '*शिपि*+ *आ*+ √'*विश्*' *या* √'*विष्*'। निरु० ५.८

शिमी

१. शिमीति कर्मनाम। शमयतेर्वा। √'*शमय्*'। निरु० ५.१२

२. शक्नोतेर्वा। √'*शक्*'। निरु० ५.१२

३. शिमी (कर्म)। शमतेः। शम्यत्यनयाऽनिष्टानि। शमयत्यनिष्टव्याध्यादीनि। √'*शम्*'+ *इन्*= *शमी*= *शिमी*'। निघ० २.१.२४

४. शक्नोतेर्वा। शक्यते अनेनाभिमतं प्राप्तुम्, शक्नोतीष्टं साधयितुं वा, शक्यते, कर्तुमिति वा। √'*शक्*'+ *इन्*= *शकी*= *शमी*'। निघ० २.१.२४

शिम्बाता

१. शिम्बाता (सुखम्)। √'शिञ्' निशाने'+√'अत' सातत्यगमने'। दुःखानि तनूकुर्वत् प्राप्यर्थ्यते। √'*शि*'+ *मुम्*(*आगमः*)+ *ब*+ √'*अत्*'+ *घञ्*'। निघ० ३.६.१

(आ)शिर

१. ताँ **आशिरं** पुरोडाशमिन्द्रेमं सोमं **श्रीणीहि**। (*आ*)+ √'*श्रृ*'। ऋ० ८.२.११

शिरस्

१. ऊर्ध्वं त्वेवोदसर्पत्तच्छिरोऽश्रयत, यच्छिरोऽश्रयत तच्छिरोऽभवत्तच्छिरसः शिरस्त्वम्। √'*श्रि*'। ऐ०आ० २.१.४

२. यच्छ्रियःसमुदौहंस्तस्माच्छिरस्तस्मिन्ने— तस्मिन् प्राणा अश्रयन्त तस्माद्वेवैतच्छिरः। √'*श्रि*'= *श्रिय*= *शिरस्*'। शत०ब्रा० ६.१.१.४

३. शिर आदित्यो भवति। यदनुशेते सर्वाणि भूतानि। मध्ये चैषां तिष्ठति। √'*शी*'। निरु० ४.१३

४. इदमपीतरच्छिर एतस्मादेव समाश्रितान्येतान्येत-दिन्द्रियाणि भवन्ति। √'*श्रि*'। निरु० ४.१३

५. श्रयतेः स्वाङ्गे शिरः किच्च। √'*श्रि*'+ *असुन्*= *शिर्*+ *अस्*= *शिरस्*'। उणा० ४.१९५

शिरिणा

१. शिरिणा (रात्रिः)। शीङः अन्तर्णीतण्यर्थात्। शाययति प्राणिनः शिरिणा। √'*शी*+ *रुट्*(*आगमः*)+ *इनच्*'। निघ० १.७.१७

शिरिम्बिष्ठ

१. शिरिम्बिष्ठो मेघः। शीर्यते बिष्ठे। √'*शृ*'+ *बिष्ठ*'। निरु० ६.३०

२. अपि वा शिरिम्बिष्ठो भारद्वाजः कालकर्णोपेतः। (*अस्पष्टम्*)। निरु० ६.३०

शिल्पु

१. शिल्पु (सुखम्)। शर्म स्थाने केचित् 'शिल्पुः' इति पठन्ति। **√'शिल' गतौ'। गम्यते पुण्यवद्भिः,**

गच्छत्यनेन तृप्तिम्, गच्छति वाऽन्त्यमनित्यत्वात्। √'शल्'+ गुक्= शल्गु= शिल्गु'। निघ० ३.६.४

शिल्प

१. शिल्पम् (कर्म)। √'शील' उपधारणे'। शीलयतीति शीलतीति वा शिल्पम्। शीलयन्ति पुनः पुनरभ्यस्यन्ति तदिति शिल्पम्। √'शील्'+ प'। निघ० २.१.२६

२. यद्वा, √'शिञ्' निशाने'। शिनोति कर्त्तारं तनूकरोति दुष्करत्वेनातिक्लेशकरत्वादिति। √'शि' *(निपातनात्)*। निघ० २.१.२६

३. शिल्पम् (रूपम्)। √'शिश्लृ' विशेषणे'। विशेषयति हि तद्वन्तम्। √'शिश्'+ प' *(निपातनात्)*। निघ० ३.७.१६

४. खष्पशिल्पशष्पवाष्परूपपर्पतल्पाः। √'शील्'+ प' *(निपातनात्)*। उणा० ३.२८

शिव

१. आ शये द्वितीयमा सप्तशिवासु मातृषु। √'शीङ्' स्वप्ने'। ऋ० १.१४१.२

२. शिव शिव इति शमयत्येनैनम् (अग्निम्) एतदहिंःसायै तथो हैष इमांल्लोकाञ्छान्तो न हिनस्ति। √'शम्'। शत०ब्रा० ६.७.३.१५

३. शेव इति सुखनाम। शिष्यतेर्वकारो नामकरणः। ...... शिवमित्याद्यस्य भवति। √'शिष्'= शिव'। निरु० १०.१७

४. शिवम् (सुखम्)। √'शीङ्' स्वप्ने'। √'शी'+ वन्'। निघ० ३.६.१८

शिशय

१. **शिशीहि** मा **शिशयं** त्वा श्रृणोमि। √'शो'। ऋ० १०.४.२.३; अथर्व० २०.८९.३

शिशाना

१. शिशाना, शिश्यमाना। √'शो'। निरु० १०.३०

शिशिर

१. शिशिरं वा अग्नेर्जन्म........सर्वासु दिक्ष्वग्निशिशिरे। √'शॄ'। काठ० ८.१

२. शिशिरं श्रृणातेः। √'शॄ'। निरु० १.१०

३. शम्नातेर्वा। √'शम्'। निरु० १.१०

४. अजिरशिशिरशिथिलस्थिरस्फिरस्थविरखदिराः। √'शश्'+ किरच्' *(निपातनात्)*। उणा० १.५३

शिशीते

१. शिशीते, निश्यति। √'शो'। निरु० ४.१८

शिशीहि

१. शिशीहि, शिशीतिर्दानकर्मा। √'शो' *(धात्वर्थ-प्रदर्शनम्)*। निरु० ५.२३

शिशु

१. शिशुः शंसनीयो भवति। √'शंस्'। निरु० १०.३९

२. शिशीतेर्वा स्याद् दानकर्मणः। चिरलब्धो गर्भो भवति। √'शो'। निरु० १०.३९

शिश्न

१. शिश्नं वै शोचिष्केशःहीदं शिश्निनं भूयिष्ठः शोचयति। √'शुच्'। शत०ब्रा० १.४.३.९

२. शिश्नं श्नथतेः। √'श्नथ्'। निरु० ४.१९

शीभ

१. शीभम् (क्षिप्रम्)। √'शीभ' कत्थने'। शीभ्यतेऽनेन तद्वान्। √'शीभ्'+ घञ्'। निघ० २.१५.९

शीर

१. शीरमनुशायिनमिति वा। √'शी'। निरु० ४.१४

२. वाशिनमिति वा। √'अश्'। निरु० ४.१४

३. स्फायितञ्चिवञ्चिशकि०। √'शी+ रक्'। उणा० २.१३

शु

१. शुः (क्षिप्रम्)। शु आशुगामी (निरु० ६.१)। '*निपातः*'। निघ० २.१५.१५

शुक्

१. शुक् शोचतेः। √'शुच्'। निरु० ६.१

शुक

१. शुकवल्लोकाः। √'शुभ्'+ क' (*निपातनात्*')। उणा० ३.४२

शुक्र

१. **शुक्रः** शुशुक्वाँ उषो न जारः। √'शुच्'। ऋ० १.६९.१

२. अभि गृणीहि राधसोषः **शुक्रेण शोचिषा**। √'शुच्'। ऋ० १.४८.१२

३. अग्ने **शुक्रेण शोचिषा** विश्वाभिर्देवहूतिभिः। √'शुच्'। ऋ० १.१२.१२

४. **शुचिः** स्वर्ण **शुक्रं शुशुचीत** सत्पतिः। √'शुच्'। अथर्व० २०.१७.९

५. शुक्रं शोचतेर्ज्वलतिकर्मणः। √'शुच्'। निरु० ८.११

६. शुक्रम् (उदकम्)। √'शुच' दीप्तौ'। शोचते शुक्रः। √'शुच्'। निघ० १.१२.९५

७. यद्वा, शोचतेर्ज्वलतिकर्मणः। शुचिः, तद्यस्य रो मत्वर्थीयः। दीप्तमित्यर्थः। √'शुच्'= *शुचि, शुचि+ र* =*शुक्र*'। निघ० १.१२.९५

८. ऋजेन्द्राग्रवज्रविप्रकुब्रचुब्रक्षुरखुर०। √'शुच्'+ रन्' (*निपातनात्*)। उणा० २.२९

शुचि

१. **शुचिः** स्वर्ण **शुक्रं शुशुचीत** सत्पतिः। √'शुच्'। अथर्व० २०.१७.९

२. शुचि शोचतेर्ज्वलतिकर्मणः। अयमपीतर शुचिरे-तस्मादेव। √'शुच्'। निरु० ६.१

३. निःषिक्तमस्मात् पापकमिति नैरुक्ताः। '*निर्*+ √'*सिच्*'। निरु० ६.१

शुतुद्री

१. शुतुद्री शुद्राविणी। क्षिप्रद्रावणी। 'शु+ √'द्रु'। निरु० ९.२६

२. आशु तुन्नेव द्रवतीति वा। '*आशु*+ √'*तुद्*'+ √'द्रु'। निरु० ९.२६

शुद्ध

१. दैव्याय कर्मणे **शुन्धध्वं** देवयज्यायै यद्वोऽ**शुद्धाः** पराजघ्नुरिदं वस्तच्छु**न्धामि**। √'शुध्'। यजु० १.१३

शुन

१. शुनो वायुः। शु एत्यन्तरिक्षे। 'शु+ √'*नी*' *या* √'*नु*'=*शुन*'। निरु० ९.४०

२. शुनम् (सुखम्)। √'शुन' गतौ'। √'शुन्'+ क'। निघ० ३.६.११

३. श्वन्नुक्षन्पूषन्प्लीहन्क्लेदन्०। √'*श्वि*'+ *कनिन्*'। उणा० १.१५९

शुनासीर

१. शुनासीरौ, शुनो वायुः, शु एत्यन्तरिक्षे, सीर आदित्यः सरणात्। 'शु+ √'*नी*' *या* '*नु*'=*शुन, शुन*+ *सृ*'। निरु० ९.४०

शुन्ध्यु

१. शुन्ध्युरादित्यो भवति शोधनात्। शकुनिरपि शुन्ध्युरुच्यते शोधनादेव। उदकचरो भवति। आपोऽपि शुन्ध्युव उच्यन्ते शोधनादेव। √'शुन्ध्'। निरु० ४.१६

२. यजिमनिशुन्धिदसिजनिभ्यो युच्। √'शुन्ध्'+ युच्'। उणा० ३.२०

शुभ

१. शुभम् (उदकम्)। √'शुभ' दीप्तौ'। शोभते दीप्यते स्वेन तेजसा देवतात्वात्। √'*शुभ्*'+ *क्विप्*'। निघ० १.१२.४७

शुभ्र

१. शुभ्रं शोभयितारम्। √'*शोभय्*'। निरु० ६.१९

२. शुभ्रे, शोभने। √'*शुभ्*'। निरु० ६.१९

३. शुभ्राः शोभमानाः। √'*शुभ्*'। निरु० ६.१९

४. स्फायितञ्चिवञ्चिशकि०। √'*शी*+ *रक्*'। उणा० २.१३

शुम्भमान

१. शुम्भमानाः, शुशोभिषमाणाः। √'*शुभ्*'(*सन्नन्तरूपम्*)' निरु० ८.१०

शुरुध

१. शुरुध आपो भवन्ति। शुचं संरुधन्ति। √'शुच्'+ 'रुध्'। निरु० ६.१६

शुष्ण

१. इन्द्रो यः **शुष्णमशुषं** न्यावृणङ्। √'शुष्'। ऋ० १.१०१.२

२. शुष्णस्यादित्यस्य शोषयितुः। √'शोषय्'। निरु० ५.१६

३. शुष्णम् (बलम्)। √'शुष' शोषणे'। शुष्मवदर्थः। √'शुष्'। निघ० २.९.१२

४. तृषिशुषिरासिभ्यः कित्। √'शुष्'+ न'। उणा० ३.१२

शुष्म

१. शुष्ममिति बलनाम। शोषयतीति सतः। √'*शोषय्*'। निरु० २.२४,

२. शुष्मम् (बलम्)। √'शुष' शोषणे'। शुष्यत्यनेनारि:। √'शुष्'+मन्'। निघ० २.९.११

३. यद्वा, शुषि प्रीणनार्थ:—इति माधव:। प्रियं हि बलम्। √'शुष्'+मन्'। निघ० २.९.११

४. शुष्ममिति तलनाम। शोषयतीति सत:। (निरु० २.२४) परस्परसांयोगिकमपि बलं विशेषयति उपमेयतीत्यर्थ:—इति स्कन्दस्वामी। √'शुष्'+मन्'। निघ० २.९.११

५. अविसिविशुषिभ्य: कित्। √'शुष्'+मन्'। उणा० १.१४४

शूघनास

१. शूघनास: (क्षिप्रम्)। सु शब्दे उपपदे हन्ते:। शीघ्रमागच्छत्यनेन क्रियाफलम्। 'सु+√'हन्'+युच्'। निघ० २.१५.८

शूर

१. शूर शवतेर्गतिकर्मण:। √'शु' या' √'शव्'। निरु० ४.१३

२. शुसिचिमीनां दीर्घश्च। √'शु'+क्रन्'। उणा० २.२६

शूरसातौ

१. शूरसातौ (सङ्ग्राम:)। √'शु' गतौ'=शूर:, √'षणु' दाने' स्यतेर्वा=साति:। शूराणां साति: वेतनादानं मरणं वा येन। √'शु'+रन्+√'षण्' या √'षो'। निघ० २.१७.३५

शृङ्ग

१. गवामिव **श्रियसे शृङ्ग**मुत्तमम्। √'*श्रि*'। ऋ० ५.५९.३

२. प्र ते **शृणामि शृङ्गे** याभ्यां वितुदायसि। √'*शृ*'। अथर्व० २.३२.६

३. शृङ्गं श्रयतेर्वा। √'*श्रि*'। निरु० २.७

४. शृणातेर्वा। √'*शृ*'। निरु० २.७

५. शम्नातेर्वा। √'*शम्*'। निरु० २.७

६. शरणयोद्गतमिति वा। '*शरण+ उद्गत= शृङ्ग*'। निरु० २.७

७. शिरसो निर्गतमिति वा। '*शिरस्+ निर्गत= शृङ्ग*'। निरु० २.७

८. शृङ्गाणि (ज्वलतो नामधेयानि)। √'शृगि' शब्दे'। अत्र शृङ्गस्थानीयत्वाद् दीप्तय उच्यन्ते। √'*शृग्*'। निघ० १.१७.११

९. यद्वा, √'श्रिञ्' सेवायाम्; √'शृ' हिंसायाम्'। शृतं हि तदाश्रितं मण्डले हिनस्ति तद् ग्रीष्मेण प्राणिन:। √'*श्रि*'+*गन्+ नुडागमश्च*'। निघ० १.१७.११

१०. यद्वा, द्विधातुजं रूपम्। शरणाय हिंसायै गतं मस्तकादेरुद्गतमूर्ध्वगतमित्यर्थ:। अथवा शरणं रक्षणं तदर्थमुद्गतं रक्षति तत्। √'*शृ*'+√'*गम्*'। निघ० १.१७.११

११. यद्वा, शिर उपपदे गमे:। प्राणिनस्तस्य निष्पत्यादिना शिरसो निर्गतमिति वा। शिरशब्दान्निर्गमेश्च शृङ्गम्, शिरस आदित्यान्निर्गतमित्यर्थ:। '*शिरस्+*√'*गम्*'। निघ० १.१७.११

१२. शृणातेर्ह्रस्वश्च। √'*शृ*'+*नुट्(आगम:)+ अच्*'। उणा० १.१२६

श्रृत

१. अथ यदेनं(इन्द्रं देवा:) श्रृतेनैवाश्रयंस्तस्माच्छृतम्। √'*श्रि*'। शत०ब्रा० १.६.४.८

२. तदस्मै (इन्द्राय) श्रृतमकुर्वन्निन्द्रियं वावास्मिन् वीर्यं तदश्रयन् तच्छृतस्य श्रृतत्वम्। √'*श्रि*'। तै०सं० २.५.३.४

शृध्यास

१. य: **शर्धते** नानुददाति **शृध्याम्**। √'*शृध्*'। ऋ० २.१२.१०

शेप

१. शेपो शपते: स्पृशतिकर्मण:। √'*शप्*'। निरु० ३.२१

२. वृङ्शीभ्यां रूपस्वाङ्गयो: पुट् च। √'*शी+ पुट्(आगम:)+ असुन्*'। उणा० ४.२०२

शेव

१. शेव इति सुखनाम। शिष्यतेर्वकारो नामकरण:। √'*शिष्*'। निरु० १०.१७

२. शेवम् (सुखम्)। √'शीङ्' स्वप्ने'। √'*शी*'+*वन्*'। निघ० ३.६.१७

३. शेवमिति सुखनाम (निरु० १०.१७)। इत्यादि भाष्ये—शेषति हिनस्ति क्लेशम्, शेषयति वा स्वाश्रयम्। √'*शिष्*'। निघ० ३.६.१७

४. इण्शीभ्यां वन्। √'*शी*'+*वन्*'। उणा० १.१५२

शेवृध

१. शेवृधम् (सुखम्)। शे शब्दे उपपदे वृधेः। शेवस्य वर्धयितृ शेवृधम्। 'शे+ √'वृध्'+क'। निघ० ३.६.६

शेषस्

१. शेष इति अपत्यनाम। शिष्यते प्रयतः। √'*शिष्*'। निरु० ३.२

२. शेषः (अपत्यम्)। √'शिष' सर्वोपभोगे'। म्रियमाणे पितरि कुलसन्तानार्थं परिशेषयति, परिशिष्यते वा पित्रादिभिः सह न म्रियते स्वयमवतिष्ठते। √'*शिष्*'+*असुन्*'। निघ० २.२.६

३. यद्वा, √'शिष्लृ' विशेषणे'। विशिष्यते पित्राद्यात्मनो ऽतिशयितं करोति हि विद्यादिभिः। √'*शिष्*'+*असुन्*'। निघ० २.२.६

४. यद्वा, √'शिष' हिंसार्थः'। शेषति हिनस्ति मातापितरौ। √'*शिष्*'+*असुन्*'। निघ० २.२.६

शोक

१. शुचे स्वाहा **शोचते** स्वाहा **शोचमानाय** स्वाहा **शोकाय** स्वाहा। √'शुच्'। यजु० ३९.११

शोकी

१. शोकी (रात्रिः)। √'शुच' शोके' ज्वलतिकर्मा वा'। शोचन्त्यस्यां विरहिणः। √'शुच्'+इन्'। निघ० १.७.१९

२. शोकस्तेजोऽस्या अस्तीति वा। '*शोक+ ई(मत्वर्थीयः)*'। निघ० १.७.१९

शोचि

१. **शोचिषा** तान् ब्रह्मद्विषे **शोचय**। √'शुच्'। ऋ० १०.२२.८; अथर्व० २०.३६.८

२. अजस्रेण **शोचिषा शोशुचच्छुचे**। √'शुच्'। ऋ० ६.४८.३

४. अजस्रेण **शोचिषा शोशुचानः**। √'शुच्'। ऋ० ७.५.४

५. त्वमग्ने **शोचिषा शोशुचानः**। 'शुच्'। ऋ० ७.१३.२

६. अग्ने यत्ते **शोचिस्तेन** तं प्रति **शोच**। √'शुच्'। अथर्व० २.१९.४

७. वायो यत्ते **शोचिस्तेन** तं प्रति **शोच**। √'शुच्'। अथर्व० २.२०.४; २१.४; २२.४

८. आपो यद्वः **शोचिस्तेन** तं प्रति **शोचत**। √'शुच्'। अथर्व० २.२३.४

९. शोचिः (ज्वलतो नामधेयम्) शोचतेर्ज्वलतिकर्मणः (निघ० १.१६.५) शोचति शोचिः। √'शुच्'+इन्' (उणा० २.११०)। निघ० १.१७.६

शोचिष्ठ

१. **शोचा शोचिष्ठ** दीदिहि। √'शुच्'। ऋ० ८.६०.६

शौक्त

१. तद्यच् (आङ्गिरसः) छुचमपाघ्नत तच्छौक्तस्य शौक्तत्वम्। '*शुच्= शौक्त*'। जै०ब्रा० ३.५३

२. यदु शक्तिराङ्गरसोऽपश्यत् तस्माच्छौक्तमित्याख्यायते। '*शक्ति= शौक्त*'। जै०ब्रा० ३.५३

श्मशा

१. श्मशा शु अश्नुत इति वा। '*शु*+ √'*अश्*'। निरु० ५.१२

२. श्माश्नुत इति वा। '*श्म*+ √'*अश्*'। निरु० ५.१२

श्मशान

१. अथास्मै श्मशानं कुर्वन्ति गृहान् वा प्रज्ञानं वा यो वै कश्च म्रियते स शवस्तस्माऽएतदन्नं करोति तस्माच्छवान्नꣳशवान्नꣳह वै तच्छ्मशानमित्याचक्षते परोक्षꣳश्मशा उ हैव नाम पितृणामत्तारस्ते हाऽमुष्मिंल्लोकेऽकृतश्मशानस्य साधुकृत्यामुप-दम्भयन्ति तेभ्य एतदन्नं करोति तस्माच्छ्मशानꣳह वै तच्छ्मशानमित्याचक्षते परोऽक्षम्। '*शव+ अन्न= शवान्न = श्मशान*'। शत०ब्रा० १३.८.१.१

२. श्मशानं श्मशयनम्। श्मशरीरम्। '*श्मन्*+ √'*शी*= *श्मशयन*= *श्मशान*'। निरु० ३.५

श्मश्रु

१. श्मश्रु लोम। श्मनि श्रितं भवति। '*श्मन्*'+ √'*श्रि*'। निरु० ३.५

२. श्मनि श्रयतेर्डुन्। √'*श्रि*'+ *डुन्*'। उणा० ५.२८

श्याम

१. श्यामं श्यायतेः। √'*श्यै*'+ *मक्*'। निरु० ४.३

२. इषियुधीन्धिदसिश्याधूसूभ्यो मक्। √'*श्यै*'+ *मक्*'। उणा० १.१४५

श्याव, श्यावी

१. श्यावाः (आदिष्टोपयोजनानि)। √'श्यैङ्' गतौ'। श्यावो धूसरारुणो वर्णः, तद्वन्तोऽपि श्यावाः। √'श्यै'+ व'। निघ० १.१५.८

२. श्यावी (रात्रिः)। √'श्यैङ्' गतौ'। श्यायते गच्छति स्वाश्रयमिति। श्यावो धूसरारुणो वर्णः, तमः सन्ध्यादिबन्धात् श्याववर्णा रात्रिः श्यावी। √'श्यै'+ वन्+ ङीष्'। निघ० १.७.१

श्येन

१. यदाह श्येनोऽसीति सोमं वा एतदाहैष ह वा अग्निर्भूत्वाऽस्मिंल्लोके संश्यायति। तद्यत्संश्यायति तस्माच्छ्येनस्तच्छ्येनस्य श्येनत्वम्। √'श्यैङ्' गतौ'। गो०ब्रा० १.५.१२

२. श्येनः शंसनीयः भवति। √'शंस्'। निरु० ४.२५

३. श्येन आदित्यो भवति श्यायतेर्गतिकर्म्मणः। ....श्येन आत्मा भवति श्यायतेर्ज्ञानकर्म्मणः। √'श्यै' या √'श्या''। निरु० १४.१३

४. श्यास्त्याहृञविभ्य इनच्। √'श्यै+ इनच्'। उणा० २.४७

श्येनास

१. श्येनासः (अश्वाः)। श्येनः शंसनीयं गच्छति (निरु० ४.२४)। जसि 'आज्जसेरसुक्' (अष्टा० ७.१.५०)। √'शंस्'। निघ० १.१४.२०

श्यैत

१. ते (प्रजापतिनाऽभिव्याहृताः पशवः) श्येत्या अभवन्, यच्छेत्या अभवꣳ स्तस्माच्छ्यैतम्। 'शेत्या= श्यैत'। ता०ब्रा० ७.१०.१३

२. श्यैतेन श्येती अकुरुत तच्छ्यैतस्य श्यैतत्वम्। ....श्यैतेन श्येतीकुरुते। 'श्येत= श्यैत'। तै०सं० ५.५.८.१; तै०ब्रा० १.१.८.३

३. स (प्रजापतिः) अब्रवीच्छ्येती वा इमान् पशून् अकृषीति तदेव श्यैतस्य श्यैतत्वम्। 'श्येत= श्यैत'। जै०ब्रा० १.१४८

श्रद्धा

१. श्रुधि श्रुत श्रद्धेयं ते वदामि। 'श्रुत+ √'धा''। अथर्व० ४.३०.४

२. गच्छति यच्छ्रद्दधानास्तच्छ्रद्धाम्। 'श्रत्+ √'धा'। जै०ब्रा० १.४३

३. श्रद्धा श्रद्धानात्। 'श्रत्+ √'धा'। निरु० ९.३०

श्रवस्

१. **शृणुष्व सुश्रवस्तमः**। √'श्रु'। ऋ० १.१३.७

२. श्रव इत्यन्नाम। श्रूयत इति सतः। √'श्रु'। निरु० १०.३

३. श्रवः (अन्नम्)। √'श्रु' श्रवणे'। श्रूयते ह्यन्नं वर्ण्यमानं श्रवो यशः। तद्धर्मात्ताच्छब्द्यं वा। √'श्रु'+ असुन्'। निघ० २.७.४

४. श्रवः (धनम्)। व्याख्यातमन्ननामसु। √'श्रु'+ असुन्'। निघ० २.७.४

श्रविष्ठा

१. यदशृणोत् तच्छ्रविष्ठाः। √'श्रु'। तै०सं० १.५.२.९

श्रायत्

१. श्रायन्तः, समाश्रिताः सूर्यमुपतिष्ठते। √'श्रि'। निरु० ६.८

श्रायन्तीय

१. श्रायन्तीयेन एनदश्रीणंस्तच्छ्रायन्तीयस्य श्रायन्तीयत्वम्। √'श्रीञ्' पाके'। जै०ब्रा० ३.२६३

२. मरुतो यं श्रायन्तीयेनैनदश्रीणंस्तच्छ्रायन्तीयस्य श्रायन्तीयत्वम्। √'श्रीञ्' पाके'। जै०ब्रा० ३.२६३

३. यद् (देवाः सूर्यं सप्तसु छन्दःसु) अश्रयन् तच्छ्रायन्तीयस्य श्रायन्तीयत्वम्। √'श्रि'। तै०सं० १.५.१२.१

४. अश्रयन्वाव श्रायन्तीयेन। √'श्रि'। मै०सं० ४.४.९

५. यच्छ्रायन्तीयं ब्रह्मसाम भवति पुनरेवात्मानꣳसꣳ श्रीणाति। √'श्रीञ्' पाके'। ता०ब्रा० १८.११.१

श्री

१. स दर्शत **श्री**रतिथिर्गृहे गृहे वने वने **शिश्रिये**। √'श्रि'। ऋ० १०.९१.२

२. **श्रीः** श्रयतां मयि स्वाहा। √'श्रि'। यजु० ३९.४

३. अथ यत्प्राणा अश्रयन्त तस्मादु प्राणाः श्रियः। √'श्रि'। शत०ब्रा० ६.१.१.४

४. श्रीः, श्रयणीयः। √'श्रि'। निरु० ८२२

५. क्विब्वचिप्रच्छिश्रिस्रुद्रुप्रुज्वां दीर्घो ऽ संप्रसारणं च। √'श्रि'+ क्विप्'। उणा० २.५८

श्रुत

१. श्रुधि श्रुत्कर्ण वह्निभिर्देवैरग्ने सयावभिः। √'श्रु'। ऋ० १.४४.१३

श्रुति

१. स तु श्रुधि श्रुत्या यो दुवोयुः। √'श्रु'। ऋ० ६.३६.५

श्रुत्कर्ण

१. श्रुधि श्रुत्कर्ण वह्निभिः। √'श्रु'। यजु० ३३.१५; सा०पू० १.५.६

श्रुष्टि

१. श्रुष्टीति क्षिप्रनाम। आशु अष्टीति। '*आशु+ √'अश्' + क्तिच्= श्रु+ अष्टि= श्रुष्टि*'। निरु० ६.१२

श्रुष्टीवरी

१. श्रुष्टीवरीः, सुखवन्तीः। (*मत्वर्थप्रत्ययनिर्वचनमात्रम्*)। निरु० ६.२२

श्रेणि

१. श्रेणिः श्रयतेः। समाश्रिता भवन्ति। √'श्रि'। निरु० ४.१३

२. वहिश्रिश्रुयुद्रुग्लाहात्वरिभ्यो नित्। √'श्रु'+ नि'। उणा० ४.५२

श्रेष्ठ

१. श्रीर्वा इयं तस्माद्योऽस्यै भूयिष्ठं विन्दते स एव श्रेष्ठो भवति। '*श्री+ भूयिष्ठ= श्रेष्ठ*'। शत०ब्रा० ११.१.६.२३ (तु०, ऐ०ब्रा० ८.५)

श्रोणा, श्रोण

१. प्रान्धं श्रोणं श्रवयन्त्सास्युक्थ्यः। √'श्रु'। ऋ० २.१३.१२

२. यदश्रृणोत्। तच्छ्रोणा। √'श्रु'। तै०सं० १.५.२.८,९,

श्रोणि

१. श्रोणतेर्गतिचलाकर्मणः। श्रोणिश्चलतीव गच्छतः। √'श्रोण्'। निरु० ४.३

२. वहिश्रिश्रुयुद्रुग्लाहात्वरिभ्यो नित्। √'श्रु'+ नि'। उणा० ४.५२

श्रोतृ

१. श्रोतु नः श्रोतुरातिः सुश्रोतुः। √'श्रु'। ऋ० १.१२२.६

श्रोत्र

१. श्रोत्रं वै ब्रह्म, श्रोत्रेण हि ब्रह्म शृणोति, श्रोत्रे ब्रह्म प्रतिष्ठितम्। √'श्रु'। ऐ०ब्रा० २,४०

२. श्रोत्रं वै विश्वामित्र ऋषिर्यदनेन सर्वतः शृणोत्यथो यदस्मै सर्वतो मित्रं भवति तस्माच्छ्रोत्रं विश्वामित्र ऋषिः। √'श्रु'। शत०ब्रा० ८.१.२.६

३. श्रोत्रं भूत्वा (प्रजापतिः) सर्वम् अशृणोत्। √'श्रु'। जै०ब्रा० १.३१४

४. श्रोत्रेण भद्रमुत शृण्वन्ति सत्यम्।..........श्रोत्रेण सर्वा दिश आशृणोमि। √'श्रु'। तै०ब्रा० २.५.१.३

५. श्रोत्रं शृण्वत् सर्वे प्राणा अनुशृण्वन्ति। √'श्रु'। कौ०ब्रा० ३.२

६. हुयामाश्रुभसिभ्यस्त्रन्। √'श्रु'+ त्रन्'। उणा० ४.१६९

श्रोमत

१. कं श्रोमतेन न शुश्रुवे जनुषः परि वृत्रहा। √'श्रु'। ऋ० ८.६६.९; अथर्व० २०.९७.३

श्लोक

१. श्लोकः शृणोतेः। √'श्रु'। निरु० ९.९

२. श्लोकः (वाक्)। √'श्रु' श्रवणे'। श्रूयते इति श्लोकः। √'श्रु'+ कन्'। निघ० १.११.१

३. यद्वा, √'श्लोक' सङ्घाते'। श्लोक्यते पद्यते रूपेण संहन्यते कविभिः श्लोकः। √'श्लोक'+ घ'। निघ० १.११.१

श्वघ्निन्

१. श्वघ्नी कितवो भवति। स्वं हन्ति। '*स्व+ √'हन्*'। निरु० ५.१२

श्वन्

१. श्वा शुयायी। '*शु+ √'या*'। निरु० ३.१८

२. शवतेर्वा स्याद्गतिकर्मणः। √'शव्'। निरु० ३.१८

३. श्वसितेर्वा। √'श्वस्'। निरु० ३.१८

४. श्वन्नुक्षन्पूषन्प्लीहन्क्लेदन्०। √'श्वि'+ कनिन्'। उणा० १.१५९

श्वस्

१. श्व उपांशसनीयः कालः। 'उप+ आ+ √'शंस्'। निरु० १.६

श्वात्र

१. श्वात्रमिति क्षिप्रनाम। आशु अतनं भवति। 'आशु+ √'अत्'। निरु० ५.३

२. श्वात्रम् (धनम्)। आशुशब्द उपपदे √'अत' सातत्यगमने'। अतति आशु गच्छति, चञ्चलं हि धनम्। 'आशु+ √'अत्'(पृषोदरादित्वात्)। निघ० २.१०.६

श्वेत्या

१. श्वेत्या श्वेततेः। √'श्वित्'। निरु० २.२०

२. श्वेत्या (उषा)। √'श्विता' वर्णे'। श्वेतते श्वेत्या। √'श्वित्'+ यक्'। निघ० १.८.१२

षड्ढोतृ

१. तस्मै (ब्रह्मणे) षष्ठःहूतः प्रत्यश्रृणोत्। स षड्ढूतोऽभवत् षड्ढूतो ह वै नामैषः। तं वा एतःषड्ढूतं सन्तं षड्ढोतेत्याचक्षते परोक्षेण परोक्षप्रिया इव हि देवाः। 'षष्ठ+ हूत= षड्ढूत= षड्ढोतृ'। तै०सं० २.३.११.२,३

षष्

१. षट् पुनः सहते। √'सह्'। निरु० ४.२७

षोडशिन्

१. अथो षोडशं वा एतत् स्तोत्रं षोडशं शस्त्रं तस्मात् षोडशीत्याख्यायते। 'षोडश= षोडशिन्'। कौ०ब्रा० १७.१

संयत्

१. संयत् (सङ्ग्रामः)। संपूर्वाद् यमेः। संयच्छति हयादीन्। 'सम्+ √'यम्'+ क्विप्'। निघ० २.१७.४५

२. यद्वा, संपूर्वाद् यतेर्वा। संयतन्ते हयादीन्। 'सम्+ √'यत्'+ क्विप्'। निघ० २.१७.४५

संयद्वसु

१. यत् संयद्वसुरित्याह यज्ञ हि संयन्तीतीदं वस्विति। 'सम्+ √'इ'+ वसु'। शत०ब्रा० ८.६.१.१९

संयानी

१. संयानीभिर्वै देवा इमाँल्लोकान्त्समयुस्तत् संयानीना संयानित्वम्। 'सम्'+ √'या' अथवा √'अय्'। तै०सं० ५.३.१०.१

संयुगे

१. संयुगे (सङ्ग्रामः)। सम्पूर्वाद् √'युजिर्' योगे'। सङ्गता रथयुगा यस्मिन्। सम्+ √'युज्'+ घञ् (निपातनात्)'। निघ० २.१७.२९

संवत्

१. संवत् (सङ्ग्रामः) सम्पूर्वाद् वनेः। संवननीयो हि शूरैः सङ्ग्रामः। 'सम्+ √'वन्'+ क्विप्'। निघ० २.१७.४६

संवत्सर

१. आदित्य एव संवच्चन्द्रमाः सरः। तमेष सरति तं पौर्णमास्यामाप्नोति। 'संवत्+ √'सृ'। जै०ब्रा० २.६०

२. आदित्य एव हि संवत्सरः, एतं हि सर्वा श्रीस्सर्वं यशस्सर्वे देवास्समेताः,........तस्य यद्भाति तत्संवद्, यन्मध्ये कृष्णं मण्डलं तत्सर इत्यधिदैवतम्। 'संवत्+ सर'। जै०ब्रा० २.६०

३. तस्य (आदित्यस्य) यद्भाति तत्संवत्, यन्मध्ये कृष्णं मण्डलं तत्सर इत्यधिदैवतम्। अयमेव संवत्सरो योऽयं चक्षुषि पुरुषः। तस्य यच्छुक्लं तत्संवद्, यन्मध्ये कृष्णं तत्सर......। त्रय्येव विद्या संवत्। तां हि सर्वे देवा संवान्ताः। अहोरात्रे एव सरः। ते हीदं सरतः......इत्यधिदेवतम्। अथाध्यात्मम्। अन्नमेव संवत्। तद्धीदं सर्वं संवान्तम्। वागेव सरः। वाचा हि पुरुषः सरति। 'सम्+ √'वम्'= संवत्, √'सृ'=, संवत्+ सर= संवत्सर'। जै०ब्रा० २.२८,२९

४. स ऐक्षत प्रजापतिः। सर्वं वाऽ अत्सारिषं य इमा देवता असृक्षीति स सर्वत्सरो ऽभवत्, सर्वत्सरो ह वै नामैतद्यत् संवत्सर इति। 'सर्व+ त्सर= सर्वत्सर= संवत्सर'। शत०ब्रा० ११.१.६.१२

५. संवत्सर संवत्सन्तेऽस्मिन् भूतानि। 'सम्'+ √वस्'। निरु० ४.२७

६. सम्पूर्वाच्चित्। 'सम्+ √'वस्'+ सरन्'। उणा० ३.७२

संशान

१. अथ यस्मात् सः शानानि नाम। एतैर्वै सामभिर्देवा इन्द्रमिन्द्रियाय वीर्याय समश्यन्। 'सम्+ √'अश्'। शत०ब्रा० १२.८.३.२६ (तु०, गो०ब्रा० २.५.७)

संशित

१. **संशित** चित्संतरां **संशिशाधि**। '*सम्*'+ √'*शो*'। यजु० २७.८

संसर्प

१. यदिमांल्लोकान् (वसिष्ठः) समसर्पत् तत्संसर्पस्य संसर्पत्वम्। '*सम्*+ √'*सृप्*'। जै०ब्रा० २.२८९

संसृप

१. तद्येनमेताभिर्देवताभिरनु समसर्पत्। तस्मात् सꣳसृपो नाम। '*सम्*+ √'*सृप्*'। शत०ब्रा० ५.४.५.३

२. वरुणस्य सुषुवाणस्य दशधेन्द्रियं वीर्य्यं परापतत्। तत् संसृद्भिरनुसमसर्पत् तत् सꣳसृपा सꣳसृपत्वम्। '*सम्*+ √'*सृप्*'। तै०सं० १.८.१.१

३. यदनु समसर्पंस्तत्संसृपां संसृप्त्वम्। '*सम्*+ √'*सृप्*'। जै०ब्रा० २.२०१

संहित, संहिता

१. तद्देवाः संहितेन समदधुर्य्यत् समदधुस्तस्मात् संहितम्। '*सम्*+ √'*धा*'। ता०ब्रा० ८.४.९

२. यत् (देवाः) समदधुस्तद्वेव संहितस्य संहितत्वम्। '*सम्*+ √'*धा*'। जै०ब्रा० १.१५८

३. सं (संवत्सरः) छन्दोभिरात्मानं समदधाद्, यच्छन्दोभिरात्मानं समदधात् तस्मात् संहिता। '*सम्*+ √'*धा*'। ऐ०आ० ३.२.६

संकृति

१. अहर्व्वा एतदव्लीयत तद्देवा देवस्थाने तिष्ठन्तः। संकृतिना समस्कुर्वꣳस्तत् संकृतेः संकृतित्वम्। '*सम्*+ √'*कृ*'। ता०ब्रा० १५.३.२९

२. संकृतिना वै देवाः प्रजाः पशूञ्छ्रियमन्नाद्यं समकुर्वत। तत् संकृतिनस्संकृतित्वम्। '*सम्*+ √'*कृ*'। जै०ब्रा० ३.२५३

३. संकृति भवति सꣳस्कृत्यै। '*संस्कृति*= *संकृति*'। ता०ब्रा० १५.३.२८

४. संकृतिना समकुर्वन्। '*सम्*+ √'*कृ*'। जै०ब्रा० २.२५६

सक्तु

१. सक्तेः सचतेः। दुर्धावो भवति। √'*सच्*'। निरु० ४.१०

२. कसतेर्वा स्याद्विपरीतस्य। विकसितो भवति। √'*कस्*'+ *तु*= *सक्*+ *तु*= *सक्तु*'। निरु० ४.१०

३. सितनिगमिमसिसच्यविधाञ्क्रुशिभ्यस्तुन्। √'*सच्*'+ *तुन्*'। उणा० १.६९

सक्थि

१. सक्थिः सचतेरासक्तोऽस्मिन् कायः। √'*सच्*'। निरु० ९.२०

२. असिसञ्जिभ्यां क्थिन्। √'*सञ्ज्*'+ *क्थिन्*'। उणा० १.१५४

सखि

१. सखायः समानख्यानाः। '*सम्*+ √'*ख्या*'। निरु० ७.३०; १३.१३

२. सखा कस्मात्? सख्यतेः। सह भूतेन्द्रियैः शेरते। √'*सख्*'। निरु० १४.१०

३. समाने ख्यः स चोदात्तः। '*समान*+ √'*ख्या*'+ *इण्*'। उणा० ४.१३८

सगर

१. सगरः (अन्तरिक्षम्)। सहशब्दात् √'*गृ*' निगरणे'। सह गिरन्त्यस्मिन् स्थिता आदित्यरश्मयो भौमरसमिति सगरः। सह उद्गिरन्त्यस्मिन् स्थिता मेघा वर्षोदकमिति वा। यद्वा, गीर्य्यते अभ्यवह्रियते विद्यते इति गरः उदकम्, तेन सह वर्तते इति सगरः। '*सह*+ √'*गृ*'+ *अप्*'। निघ० १.३.१४

२. यद्वा, √'*गृ*' शब्दे'। गीर्य्यते इति गरः शब्दः, गरेण शब्देन सह वर्तते इति सगरः, आकाशो हि स्वगुणेन शब्देन सहैव सर्वदा वर्तते। '*सह*+ √'*गृ*'+ *अप्*'। निघ० १.३.१४.।

सग्धि

१. सग्धिम्, सहजग्धिम्। '*सह*+ *जग्धि*'। निरु० ९.४३

सङ्क

१. सङ्काः सचतेः। √'*सच्*'। निरु० ९.१४

२. सम्पूर्वाद्वा किरतेः। '*सम्*+ √'*कृ*'। निरु० ९.१४

३. सङ्काः (सङ्ग्रामः)। सचतेर्गतिकर्मणः। √'*सच्*'+ *अङ्क*'। निघ० २.१७.१४

४. यद्वा, सम्पूर्वात् किरतेः। '*सम्*+ √'*कृ*'+ *ड*'। निघ० २.१७.१४

५. यद्वा, सम्पूर्वात् कृन्ततेर्वा। सम्यक् कृत्यन्ते छिद्यन्ते आयुधैर्वा। '*सम्+ √'कृन्त्+ ड*'। निघ० २.१७.१४

सङ्खे

१. सङ्खे (सङ्ग्रामः)। सम्पूर्वात् √'चक्षिङ्'। सम्पूर्वश्चक्षिर्वर्जनार्थः। सञ्चक्ष्यते कातरैः। '*सम्+ √'चक्ष्'+ ङ= सम्+ ख्या+ अ= सङ्ख*'। निघ० २.१७.२७

२. यद्वा, सम्पूर्वादश्नोतेः। समश्नुवतेऽन्योन्यं योद्धारः। '*सम्+ √'अश्'+ ख*'। निघ० २.१७.२७

सङ्गथे

१. सङ्गथे (सङ्ग्रामः)। सम्पूर्वाद् 'गूथयूथप्रोथपृष्ठादयः' इति निपात्यते। (*निपातनात्*)। निघ० २.१७.३०

सङ्गमे

१. सङ्गमे, सङ्गमने। '*सम्+ √'गम्*'। निरु० १०.३९

२. सङ्गमे (सङ्ग्रामः)। सम्पूर्वाद्गमेः। '*सम्+ √'गम्'+ अप्*'। निघ० २.१७.३१

सङ्गे

१. सङ्गे (सङ्ग्रामः)। सम्पूर्वाद्गमेः। '*सम्+ √'गम्'+ ड*'। निघ० २.१७.२८

सङ्ग्राम

१. सङ्ग्रामः कस्मात्? संगमनाद्वा। '*सम्+ √'गम्'+ ड*'। निरु० ३.९

२. संगरणाद्वा। '*सम्+ √'गॄ*'। निरु० ३.९

३. संगतौ ग्रामाविति वा। '*सम्+ ग्राम*'। निरु० ३.९

४. ग्रसेरा च। 'सम्+√'ग्रस्'+मन्=सम्+ग्रा+म =सङ्ग्राम'। उणा० १.१४३

सचते

१. सचत इति सेवमानस्य। सचस्व, सेवस्व। √'सच्'। निरु० ३.२१

सचथ्य

१. ते राया ते ह्यापृचे **सचेमहि सचथ्यैः**। √'सच्'। ऋ० ५.५०.२

सचित

१. क्रतुं **सचन्ते सचितः** सचेतसः। √'सच्'। ऋ० १०.६४.७

सजाता

१. प्राणा वै सजाता। प्राणैर्हि सह जायते। '*सह+ √'जन्*'। शत०ब्रा० १.९.१.१५

सजुष्

१. अथवैतद्यजमान एताभिर्देवताभिः (ऋत्वादिभिः) संयुग्भूत्वैताः प्रजाः प्रजनयति तस्मादु सर्वास्वेव सजूः सजूरित्यनुवर्तते। '*संयुक्= सजुष्*' *अथवा* '*सम्+ √'युज्'+ √'जन्'= सजुष्*'। शत०ब्रा० ८.२.२.७

२. सजूः, सहजोषणः। '*सह+ √'जुष्*'। निरु० ९.१३

सजोषस्

१. तं देवासो **जुषेरत** विश्वे अद्य **सजोषसः**। √'जुष्'। ऋ० १.१३६.४

२. सजोषसः, सहजोषणः। '*सह+ √'जुष्*'। निरु० ११.१५

सञ्चय

१. सञ्चय आचितमात्रो महान् भवति। √'*चि*'। निरु० ५.२६

सञ्जय

१. ते देवा असुरान् सञ्जयेन समजयन् यत्समजयꣳस्तस्मात् सञ्जयं पशूनामवरुध्यै सञ्जयं क्रियते। '*सम्+ √'जि*'। ता०ब्रा० १३.६.७

२. यदिमान् लोकान् (देवाः) समजयंस्तत् सञ्जयस्य सञ्जयत्वम्। '*सम्+ √'जि*'। जै०ब्रा० ३.१३२

संज्ञा

१. ता उ एव संज्ञाः मनो वै रेतस्या, प्राणो गायत्री, चक्षुस्त्रिष्टुप्, श्रोत्रं जगती, वागनुष्टुप्..........एता उ ह संज्ञा। सह वैतेन जानीते येन कामयते। '*सम्+ √'ज्ञा*'। जै०ब्रा० १.२६९—२७०

सत्

१. त्वमग्न इन्द्रो वृषभः सतामसि त्वम्। √'*अस्*'। ऋ० २.१.३

२. सतः संसृतं भवति। '*सम्+ √'सृ*'। निरु० ३.२०

३. सत् (उदकम्)। √'अस' भुवि'। सर्वदा विद्यमानं प्रलयेऽपि नाशाभावात्। √'*अस्'+ शतृ*'। निघ० १.१२.७४

सतीन

१. सतीनम् (उदकम्)। स्वृतीकवत्। √'स्वृ' या √'स्वर्' या' √'अर्च्'+ ईकन्'। निघ० १.१२.५९

२. यद्वा, सती शोभना असौ, सामर्थ्यान्माध्यमिका वाक्, सा ईना ईश्वरा अस्य तत् सतीनम्। 'सत्+ ईन'। निघ० १.१२.५९

३. यद्वा, √'षद्लृ' विशरणगत्यवसादनेषु'। गच्छति अवसीदति कुड्यानि अनेनेति वा। √'सद्'+ ईकन्'। निघ० १.१२.५९

सतोबृहती

१. तद्यत् समावदक्षराणि पदानि भवन्ति तत्सतोबृहतीनां सतो बृहतीत्वम्। सर्वतो ह वै बृहद्भवति य एवं वेद। 'सर्वतः+ बृहत्'। जै०ब्रा० ३.२८६

सत्य

१. **असि सत्य** ऋणायावानेद्योऽस्या धियः। √'अस्'। ऋ० १.८७.४

२. वैश्वानर तव **सत्यमस्त्वस्मान्** रायो मघवानः सचन्ताम्। √'अस्'। ऋ० १.९८.३

३. ऋतमर्षन्ति सिन्धवः **सत्यं ततान**। √'तन्'। ऋ० १.१०५.१२

४. एषां मरुतां महिमा **सत्यो अस्ति**। √'अस्'। ऋ० १.१६७.७

५. किं तद्यत् सत्यमिति, यदन्यद्देवेभ्यश्च प्राणेभ्यश्च तत्सदथ यद्देवाश्च प्राणाश्च तत् त्यं, तदेतया वाचाऽभिव्याह्रियते सत्यमित्येतावदिदं सर्वम्। 'सत्+ त्यम्'। शां०आ० ३.६; कौ०उप० १.६

६. तत्सत्यं सदिति प्राणस्तीत्यन्नं यमित्यसावादित्यस्तदेतत् त्रिवृत्। 'सत्+ त्यम्'। ऐ०आ० २.१.५

७. तदनुप्रविश्य (आत्मा) सच्च त्यच्चाभवत्। ....यदिदं किञ्च तत्सत्यमित्याचक्षते। 'सत्+ त्यत्'। तै०आ० ८.६.१; तै०उप० २.६.१

८. तदेतत् त्र्यक्षरꣳसत्यमिति स इत्येकमक्षरं तीत्योकमक्षरयमित्यकमक्षरं प्रथमोत्तमे अक्षरे सत्यं मध्यतोऽनृतम्। 'स+ ति+ यम्= सत्यम्'। शत०ब्रा० १४.८.६.२

९. सत्यं कस्मात्? सत्सु तायते। 'सत्+ √'तन्'। निरु० ३.१३

१०. सत्प्रभवं भवतीति वा। 'सत्= सत्य'। निरु० ३.१३

११. सत्यम् (उदकम्)। सत्सु भवम्। 'सत्+ यत्'। निघ० १.१२.७१

१२. यद्वा, सत्सु साधु। 'सत्+ यत्'।

१३. निघ० १.१२.७१

१४. यद्वा, सतोऽर्हमिति वा। 'सत्+ यत्'। निघ० १.१२.७१

सत्र

१. तद्यत् सद् अत्रायत तत्सत्रस्य सत्रत्वम्। 'सत्+ √'त्रा'। जै०ब्रा० ३.३११.।

२. प्रजापतिर्वावैष सन्तसद्ध वै सत्रेण स्पृणोति प्राणा वै सत् प्राणानेव स्पृणोति। 'सत्+ √'स्पृ'। तै०सं० ७.२.९.३

३. सद्वै सत्रिणस्स्पृण्वन्ति, तत् सत्रस्य सत्रत्वं, प्राणा वै सत्, प्राणानेव तत् स्पृण्वन्ति, सर्वासां वा एते प्रजानां प्राणैरासते ये सत्रमासते। 'सत्+ √'स्पृ'। काठ० ३४.८

४. गुधृवीपचिवचियमिसदिक्षदिभ्यस्त्रः। √'सद्'+ त्र'। उणा० ४.१६८

सत्रासहीय

१. तद्यत् (इन्द्रः) सत्रा सर्वानसुरानसहत तत्सत्रासाहीयस्य सत्रासाहीयत्वम्। 'सत्र+ √'सह्'। जै०ब्रा० १.१८२

२. यद्वा, असुराणामसोढमासीत्तद्देवाः तद्देवाः सत्रासाहीयेनासहन्त सत्रैनानसक्ष्ममहीति तत्सत्रासाहीयस्य सत्रासाहीयत्वम्। 'सत्र+ √'सह्'। ता०ब्रा० १२.९.२१

सदन

१. नि होता होतृषदने विदानस्त्वेषो दीदिवाँ **असदत्** सुदक्षः। √'षद्'। ऋ० २.९.१; यजु० ११.३६

२. **महीमपाराँ सदने ससत्य**। √'षद्'। ऋ० ३.३०.९

३. बृहस्पतिं **सदने सादयध्वम्**। √'षद्'। ऋ० ५.४३.१२

४. हरिर्मित्रस्य **सदनेषु सीदति**। √'षद्'। ऋ० ९.८६.११; सा०उ० १०३२

५. **सीदन्** होतेव **सदने** चमूषु। √'षद्'। ऋ० ९.९२.२

६. त्वा **सदने सादयामि**। √'षद्'। यजु० १३.५३

७. स्योने **सीद सदने सादयामि**। √'षद्'। यजु० १४.२

८. आयोष्ट्वा **सदने सादयामि**। √'षद्'। यजु० १५.६३

९. पितृषदनाः पितृषदने त्वा लोक आ **सादयामि**। √'षद्'। अथर्व० १८.४.६७

१०. सदने सादयामि। √'षद्'। जै०ब्रा० १.७०

१२. सदने सादयामि। √'षद्'। गो०ब्रा० २.१.१

१३. सदनम् (उदकम्)। √'षद्लृ' विशरणगत्यवसादानेषु'। विशीर्य्यते शिलादिषु पातात्, विशीय्यन्तेऽनेन कुड्यादय इति वा, गच्छति वागच्छति निम्नं, गम्यते वा प्राणिभिः अवसादयति पिपासायुक्तं वा। √'सद्'+ *युच्*'। निघ० १.१२.६७

सदस्

१. ध्रुवे **सदसि सीदति**। √'षद्'। ऋ० ९.४०.२; सा०उ० ९२५

२. **सदः सदः सदत** सुप्रणीतयः। √'षद्'। ऋ० १०.१५.११; अथर्व० १८.३.४४

३. इमे मयूखा उप **सेदुरू सदः**। √'षद्'। ऋ० १०.१०३.२

४. **सदसि सादयामीन्द्राग्न्योः**। √'षद्'। यजु० ६.२४

५. **सीदता** बर्हिरुरु वः **सदस्कृतम्**। √'षद्'। अथर्व० २०.१३.२

६. यदस्मिन् विश्वे देवा असीदंस्तस्मात् सदो नाम तऽ उ ऽ एवास्मिन्रेते ब्राह्मणा विश्वगोत्राः सीदन्ति। √'षद्'। शत०ब्रा० ३.५.३.८; ६.१.१

सदसी

१. सदसी (द्यावापृथिव्यौ)। सदेरसुन्। सीदन्त्यनयोर्देवमनुष्यादयः। √'सद्'+ *असुन्*'। निघ० ३.३०.९

सदान्वा

१. सदान्वे, सदा नोनुवे शब्दकारिके। '*सदा*+ √'*नु*'। निरु० ६.३०

सदोविशीय

१. सदोविशीयेन वै देवा विशमसीदन्। √'सद्'+ *विश्*'। जै०ब्रा० २.१०३

सद्म

१. सद्म (उदकम्)। √'षद्लृ' विशरणगत्यवसादनेषु'। विशीर्य्यते शिलादिषु पातात्, विशीर्य्यन्तेऽनेन कुड्यादय इति वा, गच्छति वागच्छति निम्नं, गम्यते वा प्राणिभिः, अवसादयति पिपासायुक्तं वा। √'सद्'+ *मनिन्*'। निघ० १.१२.६६

२. सद्म (सङ्ग्रामः)। सदेः। अवसाद्यन्तेऽत्र प्राणिनः। √'सद्'+ *मनिन्*'। निघ० २.१७.४४

३. सद्म (गृहम्)। सदेर्मनिन्। सीदत्यस्मिन्। √'सद्'+ *मनिन्*'। निघ० ३.४.१५

सद्मनी

१. सद्मनी (द्यावापृथिव्यौ)। सदेरेव मनिन्। √'सद्'+ *मनिन्*'। निघ० ३.३०.१०

सधमाद

१. यमेन ये **सधमादं मदन्ति**। '*सध्*+ √'*मद्*'। ऋ० १०.१४.१०; अथर्व० १८.२.११

२. अप्सरसः **सधमादं मदन्ति**। '*सध्*+ √'*मद्*'। अथर्व० १४.२.३४

३. सधमादम्, सहमदनम्। '*सध्*+ √'*मद्*'। निरु० ७.३०

सनये

१. स नः **सनिता सनये** स नोऽदात्। √'*षणु' दाने*'। ऋ० १.३०.१६

सनाभि

१. सनाभयः (अङ्गुलयः)। √'णह' बन्धने'। नह्यतेऽनया गर्भ इति नाभिः, समाना नाभिरासामिति सनाभयः। समाना हि मातुर्नाभिस्तासां, समा नाभिः मूलमासामिति वा। '*सह*+ √'*नह्*'+ *इञ्*'। निघ० २.५.१५

२. नाभ्या सन्नद्धा गर्भा जायन्ते। इत्याहुः। एतस्मादेव ज्ञातीन् सनाभय इत्याचक्षते। '*सम्*+ √'*नह्*'। निरु० ४.२१

सनित्व

१. अस्ति वाजो विप्रेभिः **सनित्वः**। अस्माभिः सु तं **सुनुहि**। √'षण्'। ऋ० ८.८१.८

सनेमि

१. सनेमि (पुराणम्)। अव्ययम्। '*अव्ययम्*'। निघ० ३.२७.४

संतनि

१. वाग्वा एषा प्रतता यद् द्वादशाहः। तां संतनिनैव संतन्वन्ति। प्राणा ह खलु वै संतनयः। प्राणैर्वाक्

संतता। यद्यत् संतनि भवति प्राणामेव संतत्यै, वाचं प्राणैस्संतनवाम। '*सम्*+ √'*तन्*'। जै०ब्रा० ३.११९

२. सतनिना समतःवन्। '*सम*+ √'*तन्*'। जै०ब्रा० २.२५६; ता०ब्रा० ४.९.२७

संदृक्

१. संदृक्, संदृष्टा भूतानाम्। '*सम्*+ √'*दृश्*'। निरु० १०.२६

२. संदृक्, संदर्शयितेन्द्रियाणाम्। '*सम्*+ √'*दृश्*'। निरु० १०.२६

संधि

१. **संधाता संधिं** मघवा पुरूवसुः। '*सम्*+ √'*धा*'। ऋ० १.२०९

२. सर्वं तत् **संधा समदधान्**मही। '*सम्*+ √'*धा*'। अथर्व० ११.८.१५

३. यत्तच्छरीरमशयत् **संधया संहितं** महत्। '*सम्*+ √'*धा*'। अथर्व० ११.८.१६

४. यामिन्द्रियेण **संधा समदधत्**या। '*सम्*+ √'*धा*'। अथर्व० ११.१०.९

५. **संधाता संधिं** मघवा। '*सम्*+ √'*धा*'। अथर्व० १४.२.४७; सा०पू० ३.२.२

६. ते (देवाः) एतद्रथान्तरं संधिमपश्यन्। तेनाहोरात्रे उपरिष्टात् समदधुः। यत् समदधुस्तत् संधेस्संधित्वम्। *सम्*+ √'*धा*'। जै०ब्रा० १.२०९

सन्धिति

१. यज्ञस्य सन्धितिमनु यजमानः सन्धीयते, यजमानस्य सन्धितिमन्वृत्विजः सन्धीयत, ऋत्विजां सन्धिति-मनुदक्षिणाः सन्धीयन्ते, दक्षिणानां सन्धितिमनु यजमानः पुत्रपशुभिः सन्धीयते, पुत्रपशूनां सन्धितिमनु यजमानः स्वर्गेण लोकेन सन्धीयते, स्वर्गस्य लोकस्य सन्धितिमनु तस्यार्द्धस्य योगक्षेमः सन्धीयते। '*सम्*+ √'*धा*'। गो०ब्रा० १.१.१४

संध्या

१. तस्माद् ब्राह्मणोऽहोरात्रस्य संयोगे संध्यामुपास्ते। ......सा संध्या। तत् संध्यायाः संध्यात्वम्। '*सम्*+ √'*धा*'। षड्०ब्रा० ५.५.४

२. अहोरात्रस्य संयोगे। अहोरात्रयोः संधौ। संध्याम्, संधौ भवा संध्या, ताम् उपास्ते। '*सम्*+ √'*धा*'। सा०भाष्य, षड्०ब्रा० ५.५.४

संनद्ध

१. सं त्वा **नह्यामि** प्रजया धनेन सा **संनद्धा** सनुहि वाजमेमम्। '*सम्*+ √'*नह्*'। अथर्व० १४.२.७०

सप

१. सपः सपतेः स्पृशतिकर्मणः। √'*सप्*'। निरु० ५.१६

सपर्यु

१. तं त्वा गीर्भिर्गिर्वणसं द्रविणस्युं द्रविणोदाः। **सपर्येम सपर्यतः**। √'*सपर्य*'। ऋ० २.६.३

सप्तऋषि

१. सप्तऋषयः (रश्मयः)। सप्त सृप्ता संख्या (निरु० ४.२६) षड्भ्यः सकाशात् सृप्ता संख्या सप्त। √'ऋष' गतौ' अनेकार्थत्वाद् धातूनां दर्शनार्थः। ऋषयो द्रष्टारः। सप्तसंख्याकाश्च ते ऋषयो द्रष्टारश्च त्रैलोक्यस्येति सप्त ऋषयः। √'*सृप्*'+ *कनिन्*+ *तुट्* (*आगमः*)= *सप्त*, √'*ऋष्*'+ *इन्*= *ऋषि*, *सप्त*+ *ऋषि*'। निघ० १.५.१३

२. यद्वा, √'षप' समवाये'। समवेताः सप्त, ऋषिरपि गत्यर्थ एव प्रत्ययः। समवेता गच्छन्ति दिङ्मुखानि सप्तर्षयः। √'*सप्*'+ *कनिन्*+ *तुट्* (*आगमः*)= *सप्त*, √'*ऋष्*'+ *इन्*= *ऋषि*, *सप्त*+ *ऋषि*'। निघ० १.५.१३

सप्तन्

१. सप्त सृप्ता सङ्ख्या। √'*सृप्*'। निरु० ४.२६

२. सप्यशूभ्यां तुट् च। √'*सप्*'+ *तुट्*(*आगमः*)+ *कनिन्*'। उणा० १.१५७

सप्तनामन्

१. सप्तास्मै रश्मयो रसानभिसन्नामयन्ति। '*सप्तन्*+ √'*नामय्*'। निरु० ४.२७

२. सप्तैनमृषयः स्तुवन्तीति वा। (*अर्थप्रदर्शनमात्रम्*)। निरु० ४.२७

सप्तपुत्र

१. सप्तमपुत्रम्। '*सप्तम*+ *पुत्र*'। निरु० ४.२६

२. सर्पणपुत्रमिति वा। '*सर्पण*+ *पुत्र*'। निरु० ४.२६

सप्तहोतृ

१. तस्मै (ब्रह्मणे) सप्तमꣳहूतः प्रत्यशृणोत्। स सप्तहूतोऽभवत्। सप्तहूतो ह वै नामैषः। तं वा एतꣳ सप्तहूतꣳसन्तं सप्तहोतेत्याचक्षते परोक्षेण। परोक्षप्रिया इव हि देवाः। '*सप्तम+ हूत (√'ह्वे')= सप्तहूत= सप्तहोतृ*'। तै०सं० २.३.११.२

सप्ति

१. सप्तेः सरणश्च। √'सृ'। निरु० ९.३

२. सप्तिः (अश्वः)। √'षप' समवाये'। सपति सङ्ग्रामेषु सहसामेवैति। √'*सप्*'+ *तिप्*'। निघ० १.१४.५

३. यद्वा, √'सृप' गतौ'। सर्पति सप्तिः। √'सृप्'। निघ० १.१४.५

सप्रथस्

१. सप्रथाः सर्वतः पृथुः। '*सर्वतः+ पृथु= सप्रथस्*'। निरु० ६.७; ९.३२

सफ

१. सफेन वै देवा इमान् लोकान् समाप्नुवन् यत् समाप्नुꣳस्तत्सफस्य सफत्वम्। '*सम्+ √'आप्*'। ता०ब्रा० ११.५.६; १५.११.५

सबाध

१. सबाधः (ऋत्विजः)। √'बाधृ' विलोडने'। बाधा सह वर्तते। राक्षोघ्नमन्त्रोच्चारणं रक्षोबाधनात्। √'*सह्*'+ '*बाध्+ क्विप्*'। निघ० ३.१८.७

सभ

१. स (प्रजापतिः) अब्रवीत् सभो वै पशुभिरभूवमिति। तद्वेव सभस्य सभत्वम्। '*सह+ √'भू*'। जै०ब्रा० १.१६०

समद्

१. समदः समदो वात्तेः। '*सम्+ √'अद्*'। निरु० .९.१७

२. सम्मदो वा मदतेः। '*सम्+ √'मद्*'। निरु० ९.१७

३. समत्सु (सङ्ग्रामः)। सम्पूर्वादत्तेः। सम्भक्षयन्ति योद्ध+णामायूंषि। '*सम्+ √'अद्*'+ *क्विप्*'। निघ० २.१७.२२

४. यद्वा, सम्+√'मदी' हर्षे'। संहृष्यन्ति तत्र सुभटाः। '*सु+ √'मद्*'+ *क्विप्*'। निघ० २.१७.२२

समन, समना

१. समनस.........समनं समनं समननाद्वा। '*सम्+ √'अन्*'। निरु० ७.१७

२. संमाननाद्वा। '*सम्+ √'मन्*'। निरु० ७.१७

३. समना, समनसौ। '*सह+ मनस्*'। निरु० ९.४०

४. समना, समानया। '*सम्+ √'अन्*'। निरु० १०.५

५. समनम् (सङ्ग्रामः)। √'सम' अवैक्लव्ये'। समन्ति विक्लवा भवन्त्यस्मिन् शूराः। √'*सम्*'। निघ० २.१७.१६

समनीके

१. समनीके (सङ्ग्रामः)। √'अन' प्राणने'। अनित्यनीकम्। सङ्गतान्यनीकानि यस्मिन्। '*सम्+ √'अन्*'+ *ईकन्*'। निघ० २.१७.३७

२. यद्वा, नञ्पूर्वान्नियतेः। न नीयते चाल्यते अनीकम्, सेनाविशेषः। सङ्गतान्यनीकानि यस्मिन्। '*सम्+ 'न*'+ √'*नी*'। निघ० २.१७.३७

समरणे

१. समरणे (सङ्ग्रामः)। सम्पूर्वात् √'ऋ' गतौ'। '*सम्+ √'ऋ*'+ *ल्युट्*'। निघ० २.१७.२४

समर्ये

१. समर्ये (सङ्ग्रामः)। मर्यशब्दो मनुष्यनामसु व्याख्यातः (निघ० २.३.११)। मर्यैः मरणधर्मिभिः सह वर्तते। '*सह+ मर्य*'। निघ० २.१७.२३

समान

१. ता ....समानन्। स वाव समानोऽभवत्। '*सम्+ √'अन्*'। जै०उप० ४.२२.५

२. समानं सम्मानमात्रं भवति। '*सम्+ मान*'। निरु० ४.२५

समिति

१. समितिः (सङ्ग्रामः)। सम्पूर्वादितेः। '*सम्+ √'इ*' + *क्तिन्*'। निघ० २.१७.१५

समिधे

१. समिधे (सङ्ग्रामः)। सम्पूर्वदितेः। '*सम्+ √'इ*'+ *थक्*'। निघ० २.१७.२६

समिध

१. सुम्नायवः सुषमिधा **समीधिरे**। '*सम्+ √'इन्ध्*'। ऋ० ५.८.७

२. अग्ने भव **सुषमिधा समिद्ध**। '*सम्+ √'इन्ध्*'। ऋ० ७.१७.१

३. **समिद्धोऽग्निः समिधा सुसमिद्धो** वरेण्यः। '*सम्+ √'इन्ध्*'। यजु० २१.१२

४. **समिद्धो** अग्ने **समिधा समिध्यस्व**। '*सम्+ √'इन्ध्*'। अथर्व० ११.१.४

५. एषा ते अग्ने समित्। तया समिध्यस्व। '*सम्+ √'इन्ध्*'। तै०आ० ४.१०.३

६. स एताꣳसमिधमपश्यत्। तामधत्त। ततो वा अग्नावाहुतयोऽध्रियन्त। यदेनꣳ समयच्छत् तत्समिधः समित्त्वम्। '*सम्+ √'धा' या √'दा(यच्छ्)*'। तै०ब्रा० २.१३.८

७. समिदसि समेधिषीमहि। '*सम्+ √'एध्*'। मै०सं० १.१०.१३; ४.८.५; काठ० ४.१३

८. पृथिवी समित्, तामग्निः समिन्द्धे। '*सम्+ √'इन्ध्*'। मै०सं० ४.९.२३

९. दिशः समित्, तां प्रजापतिः समिन्द्धे। '*सम्+ √'इन्ध्*'। मै०सं० ४.९.२३

१०. द्यौः समित्, तामादित्यः समिन्द्धे। '*सम्+ √'इन्ध्*'। मै०सं० ४.९.२३

११. प्राणा वै समिधः। प्राणा ह्येतꣳ समिन्धते। '*सम्+ √'इन्ध्*'। शत०ब्रा० ९.२.३.४४

१२. वायुर्वा अग्निः सुषमिद् वायुर्हि स्वयमात्मानं समिन्धे, स्वयमिदं सर्वं यदिदं किञ्च। '*सम्+ √'इन्ध्*'। ऐ०ब्रा० २.३४

१३. अग्नौ समिधमादधाति। *(सम्)+ √'धा'*। गो०ब्रा० १.२.१५

१४. प्राणा वै समिधः प्राणा हीदं सर्वं समिन्धते। '*सम्+ √'इन्ध्*'। ऐ०ब्रा० ६.४

समीके

१. समीके (सङ्ग्रामः)। 'सम्+√'इण्' गतौ'। अभीकवत्। '*सम्+ √'इ'+ ईक्*'। निघ० २.१७.११

समुद्र

१. तद्यत् (आपः) समद्रवन्त तस्मात्समुद्र उच्यते। '*सम्+ √'द्रु*'। गो०ब्रा० १.१.७

२. य एवायं (वायुः) पवत एष एव स समुद्रः। एतं हि संद्रवन्तं सर्वाणि भूतान्यनुसंद्रवन्ति। '*सम्+ √'द्रु*'। जै०उप० १.८.१.४

३. अयं वै समुद्रः योऽयं (वायुः) पवतऽ एतस्माद् वै समुद्रात् सर्वे देवाः सर्वाणि भूतानि समुद्द्रवन्ति। '*सम्+ उत्+ √'द्रु*'। शत०ब्रा० १४.२.२.२

४. समुद्रः कस्मात्? समुद्द्रवन्त्यस्मादापः। '*सम्+ उत्+ √'द्रु*'। निरु० २.१०

५. समभिद्रवन्त्येनमापः। '*सम्+ अभि+ √'द्रु*'। निरु० २.१०

६. संमोदन्तेऽस्मिन् भूतानि। '*सम्+ √'मुद्*'। निरु० २.१०

७. समुदको भवति। '*सम्+ उदक> समुदक= समुद्र*'। निरु० २.१०

८. समुनत्तीति वा। '*सम्+ √'उन्द्*'। निरु० २.१०

९. समुद्रः (अन्तरिक्षम्)। सम्पूर्वात् द्रवतेः। समुद्द्रवन्ति सता ऊर्ध्वं द्रवन्ति गच्छन्त्यस्मादापो रश्मिभिराकृष्यमाणा आदित्यमण्डलम्। '*सम्+ उत्+ √'द्रु'+ ड*'। निघ० १.३.१५

१०. यद्वा, संहता अभिद्रवन्त्येनमापो भौमरसलक्षणा वायुना प्रेर्य्यमाणाः आदित्यमण्डलाद्वा वर्षाकाले रश्मिभिः प्रवर्त्तमानाः। '*सम्+ अभि+ √'द्रु'+ ड*'। निघ० १.३.१५

११. यद्वा, सम्पूर्वात् √'मुद' हर्षे'। सम्मोदन्तेऽस्मिन् भूतानि अन्तरिक्षचारीणीति वा। '*सम्+ √'मुद्'+ रक्*'। निघ० १.३.१५

१२. यद्वा, समित्येकीभावे, उदकात् उच्छब्दः रो मत्वर्थीयः। एकीभूतमुदकस्मिन् विद्यते वर्षास्विति। '*सम्+ उदक+ र (मत्वर्थीयः) = सम्+ उद्+ र= समुद्र*'। निघ० १.३.१५

१३. यद्वा, सम्पूर्वात् √'उन्दी' क्लेदने'। समुनत्ति वर्षेण भुवनं समुद्रः। '*सम्+ √'उन्द्'+ रक्'(उणा० २.१३)*। निघ० १.३.१५

समोहे

१. समोहे (सङ्ग्रामः)। 'सम्+√'उहिर्' अर्दने'। सम्यगुह्यन्ते अर्द्यन्तेऽत्र मिथो योद्धारः। '*सम्+ √'उह'+ घञ्*'। निघ० २.१७.२५

२. यद्वा, वहेरिदं रूपमिति स्कन्दस्वामी। समुह्यन्तेऽत्र रथादिना सुभटाः, सुभटैर्वा कवचानि। '*सम्+ √'वह'+ घञ्' (पृषोदरादित्त्वात्)*'। निघ० २.१७.२५

संपद्

१. यो ह वै संपदं वेद, सं हास्मै कामाः पद्यन्ते। '*सम्*+ √'*पद्*'। शा०आ० ९.२

संपात

१. एतैर्वै संपातेरेत ऋषय इमांल्लोकान्त्समपतंस्तद्यत् समपतस्तस्मात् संपाताः। तत्संपाताना संपातत्वम्। '*सम्*+ √'*पत्*'। गो०ब्रा० २.६.१

२. तान् क्षिप्रं समपतद् यत्क्षिप्रं समपतत् तत्संपातानां संपातत्वम्। '*सम्*+ √'*पत्*'। ऐ०ब्रा० ६.१८

३. वामदेवो वा इमांल्लोकानपश्यत् तान्संपातैः समपतन् यत् संपातैः संपतत्तत् संपातानां संपातत्वम्। '*सम्*+ √'*पत्*'। ऐ०ब्रा० ४.३०

४. संपातैर्वै देवाः स्वर्गं लोकं समपतन्। '*सम्*+ √'*पत्*'। कौ०ब्रा० २.२.१

सम्पृच

१. **सम्पृच** स्थ सं मा भद्रेण **पृङ्क्त** **विपृच** स्थ वि मा पाप्मना **पृङ्क्त**। '*सम्*+ √'*पृच्*'। यजु० १९.१

संभरण

१. संवत्सरो वाव सम्भरणस्त्रयोविꣳशः। तस्य त्रयोदशमासाः सप्तऽर्तवो द्वे अहोरात्रे संवत्सर एव सम्भरणस्त्रयोविꣳशस्तद्यत्तमाह सम्भरण इति संवत्सरो हि सर्वाणि भूतानि सम्भृतः। '*सम्*+ √'*भृ*'। शत०ब्रा० ८.४.१.१७

संभार

१. देवा ये **संभारान्त्समभरन्**। '*सम्*+ √'*भृ*'। अथर्व० ११.८.१३

२. तमेतावच्छः समभरन् यत्संभाराः। '*सम्*+ √'*भृ*'। तै०ब्रा० २.२.२.५,६

३. यत् समभरँस्तत् संभाराणाꣳ संभारत्वम्। '*सम्*+ √'*भृ*'। काठ० ९.१५

४. स यद्वाऽ इतश्चेतश्च संभरीति। तत्संभाराणाꣳसंभारत्वम्। '*सम्*+ √'*भृ*'। शत०ब्रा० २.१.१.१

समञ्चन

१. प्राणो वै समञ्चनप्रसारणं यस्मिन् वाऽ अङ्गे प्राणो भवति तत्सं चाञ्चति प्र च सारयति। '*सम्*+ √'*अञ्च्*'। शत०ब्रा० ८.१.४.१०

समान

१. **समाने** अहन्विमिमानो अर्कम्। √'*माङ्*'। ऋ० १.१८६.४

सम्राज्

१. **सम्राजावस्य** भुवनस्य **राजथः**। √'*राज्*'। ऋ० ५.६३.२

२. तस्य यो रसो व्यक्षरत्तं पाणिभिः संममृजुस्तस्मात् सम्राट्। '*सम्*+ √'*मृज्*'। शत०ब्रा० १४.१.१.११

३. स यदाह सम्राडसीति सोमं वा एतदाहैष ह वै वायुर्भूत्वान्तरिक्षलोके सम्राजति, तद्यत् सम्राजति तस्मात् सम्राट् तत् सम्राजस्य सम्राट्त्वम्। '*सम्*+ √'*राज्*'। गो०ब्रा० १.५.१३

४. यदस्याः (पृथिव्याः) समभरन्। तत्सम्राज्ञः सम्राट्त्वम्। '*सम्*+ √'*भृ*'। तै०आ० ५.१.६

५. सम्राडेको विराजति। √'*राज्*'। तै०ब्रा० १.४.१.९

सर

१. सर इत्युदकनाम, सर्तेः। √'*सृ*'। निरु० ९.२६

२. सरः (वाक्)। √'*सृ*' गतौ'। सरति जानाति सर्वं देवतात्वात्, ज्ञायते वा विद्वद्भिः, सरति गच्छत्येव वाहूता। √'*सृ*'। निघ० १.११.५५

३. सरः (उदकम्)। √'*सृ*' गतौ'। सरति स्रियते वा सरः। √'*सृ*'। निघ० १.११.५५

सरण्यू

१. यज्ञैः **सरण्युभिरपो** अर्णा **सिसर्षि**। √'*सृ*'। ऋ० ३.३२.५

२. **सरत्सरण्युः** कारवे जरण्युः। √'*सृ*'। ऋ० १०.६१.२३

३. सरण्यू सरणात्। √'*सृ*'। निरु० १२.९

सरमा

१. कीदृङिन्द्र **सरमे** का दृशीका यस्येदं दूती**रसरः** पराकात्। √'*सृ*'। ऋ० १०.१०८.३

२. सरमा, सरणात्। √'*सृ*'। निरु० ११.२४

सररूक

१. सररूकं ......सर्तेरभ्यासात्। √'*सृ*'। निरु० ६.३

सरस्वती

१. सरस्वती। सर इत्युदकनाम। सर्तेस्तद्वती। √'*सृ*'= *सरस्*, *सरस्*+ *मतुप्*'। निरु० ९.२६

२. सरस्वत्यः (नद्यः) सर इत्युदकनाम्नि निरुक्तम् (निरु० ९.२६) तद्वत्यः सरस्वत्यः। √'सृ'= सरस्, सरस्+ मतुप्+ ङीष्'। निघ० १.१३.३०

३. सरस्वती (वाक्)। सर्तेः। गद्यपद्यादिरूपेण प्रसारणमस्यास्तीति। √'सृ'+ असुन्= सरस्, सरस्+ मतुप्+ ङीष्'। निघ० १.११.२२

४. यद्वा, सर इत्युदकनाम। सर्तेस्तद्वती वृष्ट्यधिदेवतात्वादुदकवती हि माध्यमिका वाक्। सैव चासीन्नदी सरस्वती। √'सृ'+ असुन्= सरस्, सरस्+ मतुप्+ ङीष्'। निघ० १.११.२२

सरित्

१. सम्यक्स्रवन्ति **सरितो** न धेना। √'स्रु'। ऋ० ४.५८.६

२. सरितः (नद्यः)। √'सृ' गतौ'। एन्य इत्यनेन समानार्थः। √'सृ+ इति'। निघ० १.१३.१३

३. हृसृरुहियुषिभ्यः इति। √'सृ+ इति'। उणा० १.९७

सरिर

१. अयं वै सरिरः योऽयं (वायुः) पवत एतस्माद्वै सरिरात् सर्वे देवाः सर्वाणि भूतानि सहेरते। 'सह+ √'ईर्'। शत०ब्रा० १४.२.२.३

सर्ग

१. **सर्गो** न यो देवयताम**सर्जि**। √'सृज्'। ऋ० १.१०९.२

२. **सर्गो** न **सृष्टो** अर्वतीर्ऋतायन्। √'सृज्'। ऋ० ७.८७.१

३. **सर्गाँ** इव **सृजतं** सुष्टतीरुप। √'सृज्'। ऋ० ८.३५.२०

४. **सर्गा सृष्टा** अहेषत। √'सृज्'। ऋ० ९.२२.१

५. प्र ते **सर्गा असृक्षत**। √'सृज्'। ऋ० ९.६४.७; सा०उ० ९५८

६. वाजिन्त**सर्गा असृक्षत**। √'सृज्'। ऋ० ९.६६.१०; सा०उ० ६५७

७. **सर्गो** न **सृष्टो** अदधावदर्वा। √'सृज्'। ऋ० ९.८७.७

८. दिवो न **सर्गा** **अससृगम्**। √'सृज्'। ऋ० ९.९७.३०

९. सर्गाः (उदकानि)। √'सृज' विसर्गे'। सृज्यते मेघैर्विसृज्यत इति सर्गाः। √'सृज्'+ घञ्'। निघ० १.१२.८७

१०. यद्वा, सर्गो वेगः। अर्शादित्वादच्। वेगवन्ति हि जलानि। √'सृज्'+ अच् (मत्वर्थीयः)'। निघ० १.१२.८७

सर्प

१. इमे वै लोकाः सर्पास्ते हानेन सर्वेण सर्पन्ति यदिदं किञ्च। √'सृप्'। शत०ब्रा० ७.४.१.२५

सर्पनाम

१. ते (देवाः) एतानि सर्पनामान्यपश्यन्। तैरुपतिष्ठन्त तैरस्माऽ इमाँल्लोकानस्थापयंस्तैरनमयन् यदनमयंस्तस्मात् सर्पनामानि। *'सर्प+ नाम'*। शत०ब्रा० ७.४.१.२६

सर्पराजन्

१. इयं (पृथिवी) वै सर्पराज्ञी अस्यामेव तत् प्रतितिष्ठन्ति। इयं वै सर्पतां राज्ञी। न ह वा एनं सरीसृपं हिनस्ति य एवं वेद। √'सृप्'+ राजन्'। जै०ब्रा० ३.३०४

सर्पिस्

१. यत्सृप्तमिति तत्सर्पिषः सर्पिष्ट्वम्। √'सृप्'। काठ० २४.७; कपि०सं० ३७.८

२. यदसर्पत् तत् सर्पिरभवत्। √'सृप्'। तै०सं० २.३.१०.१

३. यदसर्पत् तत् सर्पिः। √'सृप्'। मै०सं० २.३.४ (तु०, काठ० ११.७)

४. सर्पिः (उदकम्)। √'सृप' गतौ'। सर्पति द्रवद्रव्यत्वात्। √'सृप्'+ इसि'। निघ० १.१२.८०

सर्व

१. आपो वै सर्वः (शर्वः) अद्भ्यो हीदं सर्वं जायते। 'शर्व= सर्व'। शत०ब्रा० ६.१.३.११

२. सर्वं संसृतम्। 'सम्+ √सृ'। निरु० २.२४

३. सर्वम् (उदकम्)। √'सृ' गतौ'। सृतमनेन। हिनस्ति पिपासामुष्णं वा। √'सृ' (निपातनात्)'। निघ० १.१२.७६

४. सर्वनिघृष्वरिष्वलष्वशिवपट्वप्रह्वेष्वा अतन्त्रे। √'सृ'+ वन्'। उणा० १.१५३

सर्वजित्

१. यो वै सर्वं जयति विजयते सः। सर्वजित् सर्वमेव जयति। 'सर्व+ √'जि'। जै०ब्रा० १.९५

२. सर्व्वजिता वै देवाः सर्वमजयन् सर्वस्याप्त्यै सर्वस्य जित्यै सर्वमेवैतेनाप्नोति सर्वं जयति। **'सर्व+ √'जि'**। **ता०ब्रा० १६.७.२ (तु०, ता०ब्रा० २.२.८.४)**

३. स ह स सर्वजिदेव स्तोमः। इन्द्रः एव सः। स हीदं सर्वमजयत्। '*सर्व+* √'*जि*'। जै०ब्रा० १.३१२

सर्वज्योतिस्

१. अथैष सर्वज्योतिः सर्वस्याप्तिः सर्वस्य जितिः सर्वमेवैतेनाप्नोति सर्वञ्जयति। '*सर्व+* √'*जि*'। ता०ब्रा० १६.९.१

सर्ववेदसिन्

१. यो वै सर्वं विन्दमानस्सर्वं न ददाति स सर्वरादायी। अथ यत्सर्वं विन्दमानस्सर्वं ददाति स सर्ववेदसी। '*सर्व+* √'*विद्*'। जै०ब्रा० २.१८०

सललूक

१. सललूकं संलुब्धं भवति। पापकमिति नैरुक्ताः। '*सम्+* √'*लुभ्*'। निरु० ६.३

२. सररूकं वा स्यात्। सर्तेरभ्यासात्। √'*स> सररूक> सललूक*'। निरु० ६.३

सलिल

१. सलिलम् (उदकम्)। 'सल' गतौ'। सलति गच्छति निम्नदेशं गम्यते प्राणिभिरिति वा। √'*सल्*'+ इलच्'। निघ० १.१२.७

२. सलिलं सद्भावे लीनम्। सर्वमिदं भावस्योपरि लीनमासीत्। 'सत्+लीन'। दुर्ग, निरुक्तवृत्ति, पृ० ७.३ पृ० ६२१

३. सलिलम् (बहु)। व्याख्यातमुदकनामसु। गम्यते हि जलवत्। √'*सल्*'+ इलच्'। निघ० १.१२.७

सव

१. श्रेष्ठं **सवं सविता साविषत्**। √'*षु' या* √'*षूङ्*'। ऋ० १.१६४.२६; अथर्व० ७.७३.७

२. **सविता त्वा सवानां सुवताम्**। √'*षु*'। यजु० ९.३९

सवन

१. सेमं न स्तोममा गुह्यपेदं **सवनं सुतम्**। √'*षु*'। ऋ० १.१६.५

२. अथा **सुनुध्वं सवनं** मदाय। √'*षु*'। ऋ० ४.३५.४

३. यो वः **सुनोत्य**भिपित्वे अह्नां तीव्रं वाजासः **सवनं** मदाय। √'*षु*'। ऋ० ४.३५.६

४. कण्वानां **सवने सुतम्**। √'*षु*'। ऋ० ८.८.३

५. तदु श्रेष्ठं **सवनं सुनोतन**। √'*षु*'। ऋ० १०.७६.२

६. सवनम् (यज्ञः)। √'*षुञ्*' अभिषवे'। अभिषूयतेऽस्मिन् स्तोमः। √'*षु*'+ *युच्*'। निघ० ३.१७.७

सवाय

१. सवायम्, प्रसवाय। √'*षु*'। निरु० २.१९

सवासः

१. **सवितः सवासो** दिवेदिवे सौभागमासुन्वन्ति। √'*षु*'। ऋ० ४.५५.६

सवितृ

१. तत्सविता वोऽमृतत्वमासुवदगोह्यम्। √'*षूञ्*' *प्रेरणे*'। ऋ० १.११०.३

२. यथा प्रसूता **सवितुः सवाय**। √'*षूङ्*' *प्राणिगर्भ-विमोचने*'। ऋ० १.११३.१

३. देवो नो अत्र **सविता** न्वर्थं **प्रासावीद्**। √'*षू' या* √'*षु*'। ऋ० १.१२४.१

४. **प्रासावीद्देवः सविता साविषत्**। √'*षू' या* √'*षु*'। ऋ० १.१५७.१

५. श्रेष्ठं सवं सविता साविषत्। √'*षूङ्*' *प्राणिगर्भविमोचने*'। ऋ० १.१६४.२६; अथर्व० ९.१०.४

६. उदुष्य देवः **सविता सवाय**। √'*षू' या* √'*षु*'। ऋ० २.३८.१

७. **सवितर्वार्याणि** दिवेदिव **आसुव**। √'*षू*'। ऋ० ३.५६.६; अथर्व० ७.१४.३

८. त्रिरा दिवः **सविता सोषवीति**। √'*षू*'। ऋ० ३.५६.७

९. **सविता सवीमनि** निवेशयन्प्र**सुवन्न**क्तभिर्जगत्। √'*षू*'। ऋ० ४.५३.३

१०. **सवितः** सवासो दिवेदिवे सौभगमासुन्वन्ति। √'*षू*'। ऋ० ४.५५.६

११. चन्द्राणि देवः **सविता सुवाति**। √'*षू*'। ऋ० ५.४२.३

१२. स हि रत्नानि दाशुषे **सुवाति सवितः** भगः। √'*षू*'। ऋ० ५.८२.३

१३. **सविता** प्रजावत्सावीः सौभगम्। √'*षू*'। ऋ० ५.८२.४; सा०पू० २.३.७

१४. विश्वानि देव **सवितर्दुरितानि परासुव**। √'*षू*'। ऋ० ५.८२.५; यजु० ३०.५

१५. प्र च **सुवाति सविता**। √'षू'। ऋ० ५.८३.९

१६. यदद्य देव: **सविता सुवाति**। √'षू'। ऋ० ७.४०.१

१७. **सविता** सहावा **साविषद्** वसुपतिर्वसूनि। √'षू'। ऋ० ७.४५.३

१८. **सुवाति सविता** भग:। √'षू'। ऋ० ७.६६.४; यजु० ३३.२०; सा०उ० १३५१

१९. **सवितर्वरेण्यं** भागमासुव। √'षू'। ऋ० १०.३५.७

२०. **सविता** न: सुवतु सर्वतातिम्। √'षू'। ऋ० १०.३५.१४

२१. आ नो देव: **सविता साविषद्**। √'षू'। ऋ० १०.१००.३

२२. अपामीवां **सविता साविषत्**। √'षू'। ऋ० १०.१००.८

२३. **सविता** देव: **सुवतु** धर्मणा। √'षू'। ऋ० १०.१७५.१

२४. **सविता** नु वो देव: **सुवतु** धर्मणा। √'षू'। ऋ० १०.१७५.४

२५. **सवितर्वाममु** श्वो दिवेदिवे वाममस्मभ्यं **सावी:**। √'षू'। यजु० ८.६

२६. देव **सवित: प्रसुव** यज्ञं **प्रसुव** यज्ञपतिं भगाय। √'षू'। यजु० ९.१; ३०.१

२७. तस्यां नो देव: **सविता** धर्म **साविषत्**। √'षू'। यजु० ९.५; १८.३०

२८. **सविता** त्वा **सवानां सुवताम्**। √'षू'। यजु० ९.३९

२९. **सविता प्रसुवाति** तान्। √'षू'। यजु० ११.३

३०. निरराणिं **सविता साविषत्**। √'षू'। अथर्व० १.१८.१

३१. रायस्पोषं **सविता सुवास्मै**। √'षू'। अथर्व० २.२९.२

३२. स घा नो देव: **सविता साविषद्**। √'षू'। अथर्व० ६.१.३

३३. **सवं सविता साविषत्**। √'षू'। अथर्व० ७.७३.७

३४. अस्मै वो धाता **सविता सुवाति**। √'षू'। अथर्व० १४.१.३३

३५. सर्वैमें रिक्तकुम्भान् परा तान्त्**सविता सुव**। √'षू'। अथर्व० १९.८.४

३६. सविता प्रासुवत् प्रजननाय। √'षू'। मै०सं० १.१०५

३७. सविता वै देवानां प्रसविता। √'षू'। जै०ब्रा० २.३७१; जै०उप० ३.४.४.३; शत०ब्रा० १.१.२.१७

३८. सविता वै प्रसविता। √'षू'। कौ०ब्रा० ६.१४

३९. सविता सर्वस्य प्रसविता। √'षू'। निरु० १०.३१

४०. सविता समुदितारमिति। (*अर्थप्रदर्शनमात्रम्*)। निरु० १०.३१

४१. स यदात्मा कुर्यान्न तन्मन्येताहमिदं करोमीति, सविता मेऽसावीदित्येव तन्मन्येत, यद्धि वै कल्याणं तदस्मै सविता प्रसुवति नास्मै पापं सविता प्रसुवते। √'षू'। काठ०संक० ४८—४९: १२

सवीमन्

१. **सविता सवीमनि** निवेशयन् **प्रसुवन्**नक्तुभिर्जगत्। √'षू'। ऋ० ४.५३.३

२. सवीमनि प्रसवे। √'षू'। निरु० ६.७

सस

१. स्वप्नमेतन्माध्यमिकं ज्योतिरनित्यदर्शनम्। '*स्वपन्=सस*'। निरु० ५.३

२. ससम् (धनम्)। √'सस' स्वप्ने'। स्वपन्त्यनेन भुक्तेन, नहि क्षुधितस्यास्ति निद्रास्ति। √'सस्+घ'। निघ० २.७.२१

ससत:

१. ससत:, स्वपत:। √'*स्वप्*'। निरु० ४.१६

सस्नि

१. सस्निं संस्नातं मेघम्। '*सम्*+√'*स्ना*'। निरु० ५.१

सस्रुत्

१. सस्रुत: (नद्य:)। सम्पूर्वात् √'स्रु' गतौ'। सङ्गता: सस्रुत:। क्षुद्रनद्यो महानद्यश्च परस्परं सङ्गता भवन्ति तत: सस्रुत: इत्युच्यन्ते। '*सम्*+√'*स्रु*'+*क्विप्*'। निघ० १.१३.१९

२. यद्वा, स्रवते:। स्रवणं स्रुतजलप्रवाह: स्रोत इत्यर्थ:, तया सह वर्तन्ते इति सस्रुत:। √'सु'+*क्विप्*'। निघ० १.१३.१९

सस्व

१. सस्व: (निर्णीतान्तर्हितम्) सम्पूर्वात् स्वरतेर्गतिकर्मण:। सम्यगन्तर्गतं विनिर्गतं वा। '*सम्*+√'*स्वृ*'+*विच्*'। निघ० ३.२५.२

सह, सहस्

१. **अषाळ्हं सहस्तन्वि** श्रुतो दधे। √'षह्'। ऋ० १.५५.८

२. ये **सहांसि सहसा सहन्ते**। √'षह्'। ऋ० ६.६६.९

३. एषामपीच्येन **सहसा सहन्ते**। √'षह्'। ऋ० ७.६०.१

४. **साह्याम** दासमार्यं त्वया युजा **सहस्कृतेन सहसा सहस्वता**। √'षह्'। ऋ० १०.८३.१; अथर्व० ४.३२.१

५. उभे **सहस्वती** भूत्वा सपत्नीं मे **सहावहै**। √'षह्'। ऋ० १०.१४५.५

६. सर्वांस्तान्**सहसा सहे**। √'षह्'। अथर्व० ४.३६.३

७. उभौ **सहस्वन्तौ** भूत्वा सपत्नान् **सहिषीमहि**। √'षह्'। अथर्व० १९.३२.५

८. सहः (उदकम्)। सहिरभिभवार्थः। अभिभवते उष्णमग्निं वा। √'*सह्'+ असुन्*'। निघ० १.१२.४०

९. यद्वा, सहो बलं, तदस्यास्तीति। '*सह' (मत्वर्थीयस्य लुक्)*'। निघ० १.१२.४०

१०. सहः (बलम्)। √'षह' मर्षणे'। सहत्यनेन शत्रून्। √'*सह्'+ असुन्*'। निघ० २.९.१७

सहसा

१. प्र वो महे **सहसा सहस्वते**। √'षह्'। ऋ० १.१२७.१०

सहस्र

१. परा दधिक्रा **असरत् सहस्रैः**। √'सृ'। ऋ० ४.३८.९

२. यत् (प्रजापतिः)। सहेत्यब्रवीत् तत्सहस्रस्य सहस्रत्वम्। √'षह्'। जै०ब्रा० २.२५४

३. सहस्रं सहस्वत्। √'षह्'। निरु० ३.१०

४. सहस्रम् (बहु)। सहो बलनामसु। रो मत्वर्थीयः। अल्पापि भाविनीशक्तिरस्मिन्नस्ति। '*सहस्+ र (मत्वर्थीयः)*'। निघ० ३.१.१०

सहस्रसा

१. सहस्रसाः, सहस्रसानिनी। '*सहस्र*+ √'*षण्*'। निरु० १०.२९

सहावान्

१. सहावानम्, सहस्वन्तम्। '*सहस्वान्= सहावान्*'। निरु० १०.२८

सांवर्त

१. यद् उ संवर्त आङ्गिरसोऽपश्यत्। सांवर्तमित्याख्यायते। '*संवर्त= सांवर्त*'। जै०ब्रा० ३.२३३

२. स इन्द्रोऽकामयत सार्धम् एवासुरान् संवृत्य हन्यामिति। स एतत् सामापश्यत्। तेनास्तुत। (इन्द्रोऽसुरान्) सार्धं संवृत्याहन्। तद्वा एव सांवर्तस्य सांवर्तत्वम्। '*सम्*+ √'*वृत्*' *या* '*सम्*+ √'*वृ*'। जै०ब्रा० ३.२३३

सा

१. सहस्रसाः, सहस्रसानिनी। √'षण्'। निरु० १०.२९

साकंजानाम्

१. साकंजानाम्, सहजातानाम्। '*साकृ* √'*जन्*'। निरु० १४.१९

साकमेध

१. तमेवं सर्वं संवत्सरंसंवृज्य देवा असुराणां साकमिन्द्रेणैधन्त स यत् साकमिन्द्रेणैधन्त तस्मात् साकमेधो नाम। '*साकम्*+ √'*एध्*'। का०शत०ब्रा० १.६.४.५

२. ता अस्य प्रजा वृत्रात् पाप्मनो मुमुचानास्सर्वास्साकं समैधयन्त। यत्साकं समैधयन्त तत्साकमेधानां साकमेधत्वम्। '*साकम्*+ √'*एध्*'। जै०ब्रा० २.२३२

साकंप्रस्थाय्य

१. तद्यत् साकं संप्रतिष्ठन्ते साकं संप्रयजन्ते साकं भक्षयन्ते तस्मात् साकं प्रस्थाय्यः। '*साकम्*+ *प्र*+ √'*स्था*'। कौ०ब्रा० ४.९

साक्षते

१. साक्षतिराप्नोतिकर्मा। √'*साक्ष्*'। निरु० ११.२१

सांग्रहणी

१. सांग्रहणी भवति, मनोग्रहणं वै संग्रहणं मन एव सजातानां गृह्णाति। '*सम्*+ √'*ग्रह्*'। तै०सं० २.३.९.२,३

साचीवित्

१. साचीवित् (क्षिप्रम्)। निपातः। (*निपातः*)। निघ० २.१५.२२

साति

१. ऋभुर्भराय सं **शिशातु सातिम्**। √'*शो' तनूकरणे*'। ऋ० १.१११.५

२. सातये, संसननाय। √'षण्'। निरु० १२.४५

सादन

१. आ नः शृण्वन्नूतिभिः **सीद सादनम्**। √'सद्'। ऋ० २.२३.१

साधु

१. अयं वै साधुः योऽयं (वायुः) पवतऽ एष हीमांल्लोकान्त्सिद्धोऽनुपवते। √'*सिध्*'। शत०ब्रा० १४.१.२.२३

२. साधुः साधयिता। √'*साधय्*'। निरु० ६.३३

३. कृवापाजिमिस्वदिसाध्यशूभ्य उण्। √'*साध्*'+ *उण्*'। उणा० १.१

साध्य

१. यो वै देवान् साध्यान् वेद, सिध्यति ह वा अस्मै, यत्र कामयेत, इह मे सिध्येदितीमे वै लोका देवाः साध्याः। √'*सिध्*'। मै०सं० ३.७.१० (तु०, काठ० २४.१०; कपि०सं० ३८.३)

२. प्राणा वै साध्या देवाः। त एतम् (प्रजापतिम्) अग्रऽ एवमसाधयन्। √'*साधय्*'। शत०ब्रा० १०.२.२.३

३. साध्याः देवाः साधनात्। √'*साध्*'। निरु० १२.४०

४. साध्याः, साधनाः। √'*साध्*'। निरु० १२.४१

५. साध्याः (रश्मयः)। 'साध' संसिद्धौ'। रसहरणादिकं स्वव्यापारं साध्नुवन्ति संसिद्धं कुर्वन्ति— इति स्कन्दस्वामी। √'*साध्*'+ *यत्*'। निघ० १.५.१४

६. साध्यन्ते आराध्यन्ते साध्याः— इति क्षीरस्वामी। √'*साध्*'+ *यत्*'। निघ० १.५.१४

साध्र

१. यद् उ सध्रिर्वैरूपोऽपश्यत् तस्मात् साध्रमित्याख्यायते। '*सध्रि= साध्र*'। जै०ब्रा० ३.२७२

२. यद् व एवैषाम् (देवानाम्) एतेन साम्ना कृतं कृतमिमसिध्यत् तस्मात् साध्रमित्याख्यायते। √'*सिध्*'। जै०ब्रा० ३.२७२

सानु

१. सानु समुच्छ्रितं भवति। '*सम्*+ *उद्*+ √'*श्रि*'। निरु० २.२४

२. समुन्नुन्नमिति वा। '*सम्*+ *उद्*+ √'*श्रि*'। निरु० २.२४

३. दृसनिजनिचरिचटिरहिभ्यो ञुण्। √'*सन्*'+ *ञुण्*'। उणा० १.३

सान्तपन

१. स वा एनं (वृत्रं) तदतपन् (मरुतः) तस्मात् सान्तपनाः। '*स*+ √'*तप्*'। मै०सं० १.१०.१४; काठ० ३६.८

२. उरः सांतपनीयोरसा हि समिव तप्यते। '*सम्*+ √'*तप्*'। शत०ब्रा० ११.५.२.४

सांनाय्य

१. तत् (इन्द्रस्येन्द्रियं वीर्यं) पशव ओषधीभ्यो ऽध्यात्मन्त्समनयन्......यत् समनयन्, तत्सांनाय्यस्य सांनाय्यत्वम्। '*सम्*+ √'*नी*'। तै०सं० २.५.३.३

२. तम् (चन्द्रमसम्) ओषधीभ्यश्च वनस्पतिभ्यश्च गोभ्यश्च पशुभ्यश्चादित्याच्च ब्रह्मणश्च ब्राह्मणाः संनयन्ते तत् सांनाय्यस्य सांनाय्यत्वम्। '*सम्*+ √'*नी*'। षड्०ब्रा० ४.६

३. इन्द्रो वै वृत्रमहन्, स विष्वङ् व्यार्छत्, तदिदं सर्वं प्राविशदप ओषधीर्वनस्पतीꣳस्तेन देवा अश्राम्यꣳस्तत् सांनाय्यस्य सांनाय्यत्वम्। √'*श्रम्*'। मै०सं० १.१०५

सामन्

१. (वागिति) एतदेषाꣳ(नाम्नां) सामैतद्धि सर्वैर्नामभिः समम्। '*सम= सामन्*'। शत०ब्रा० १४.४.४.१

२. एष (प्राणः) उऽ एव साम। वाग्वै सामैष सा चामश्चेति तत्साम्नः सामत्वं यद्वेव समः प्लुषिणा समो मशकेन समो नागेन सम एभिस्त्रिभिर्लोकैः समोऽनेन सर्वेण तस्माद्वेव साम। '*सम= सामन्*' *अथवा* '*सा*+ *अम*= *सामन्*'। शत०ब्रा० १४.४.१.२४

३. (तमेतं पुरुषं) सामोत छन्दोगाः (उपासते) एतस्मिन् हीदꣳसर्वं समानम्। '*समान= सामन्*'। शत०ब्रा० १०.५.२.२०

४. तद्यत् समेत्य साम प्राजनयतां तत्साम्नसामत्वम्। '*सम= सामन्*'। जै०उप० १.१६.२.२२

५. तद्यत् सा चाऽमश्च तत् सामाऽभवत् तत्साम्नस्सामत्वम्। '*सा*+ *अम*= *सामन्*'। जै०उप० १.१७.१.५

६. तद्यदेतत् सर्वं वाचमेवाऽभिसमयति तस्माद् वागेव साम। √'*सम्*'। जै०उप० १.१३.१.६

७. ता वा एता देवता अमावस्यां रात्रिं संयन्ति। चन्द्रमा अमावस्यां रात्रिमादित्यं प्रविशत्यादित्योऽग्निम्। तद्यत्संयन्ति तस्मात् साम। '*सम्*+ √'*इ*'। जै०उप० १.११.१.६,७

८. तद्यदेष (आदित्यः) सर्वैर्लोकैस्समस्तस्मादेष (आदित्यः) एव साम। '*सम*= *सामन्*'। जै०उप० १.३.२.५

९. स (प्रजापतिः) हैवं षोडशाधाऽऽत्मानं विकृत्य सार्धं समैत् तद्यत् सार्धं समैत् तत्साम्नस्सामत्वम्। '*सम्*+ √'*इ*'। जै०उप० १.१५.३.७

१०. साम्ना (देवा सोमं) समानयन्। तत्साम्नः सामत्वम्। '*सम्*+ *आ*+ √'*नी*'। तै०सं० २.२.८७

११. वरुणोऽद्भिः साम्ने समनमद्, ऋचे समनमत्। '*सम्*+ √'*नम्*'। तै०सं० ७.५.२३.२

१२. सामर्चा ब्रह्मणे समनमत् क्षत्राय समनमत्। '*सम्*+ √'*नम्*'। तै०सं० ७.५.२३.२

१३. यथा सामर्चा समनमदेवं भद्रास्संनतयस्संनमन्तु। '*सम्*+ √'*नम्*'। काठ० ४५.२०

१४. सा त्वस्योऽहम्, अमोऽहमस्मि सा त्वम्। ता एहि संरभावहै पु से पुत्राय कर्तवे। '*सा*+ *अम*= *सामन्*'। काठ०.,३५.१८

१५. एतं ह तं हीदं सर्वं समेतम्। तस्मादेष एव साम। '*सम्*+ √'*इ*'। जै०ब्रा० ३.३७९

१६. तत् (ब्रह्म) सामेत्युपासीत, सर्वाणि हास्मै भूतानि श्रैष्ठ्याय संनमन्ते। '*सम्*+ √'*नम्*'। शा०आ० ४.६; कौ०उप० २.६

१७. समा उ ह वा अस्मिंश्छन्दांःसि साम्यादिति तत् साम्नः सामत्वम्। '*समा*= *सामन्*'। साम०ब्रा०,१.१.५

१८. साम सम्मितमृचा। '*सम्*+ √'*मा*'। निरु० ७.१२

१९. अस्यतेर्वा। √'*अस्*'। निरु० ७.१२

२०. ऋचां समं मेन इति नैरुक्ताः। '*सम्*+ √'*मन्*'। निरु० ७.१२

२१. स्यतेर्वा। √'*षो*'। दुर्गवृत्ति, निरु० ७.१२

२२. सातिभ्यां मनिमनिणौ। √'*षो*'+ *मनिन्*'। उणा० ४.१५४

सामि

१. सामि स्यतेः। √'*षो*'। निरु० ६.३

सामिधेनी

१. समिन्धे सामिधेनीभिर्होता तस्मात् मामिधेन्यो नाम। '*सम्*+ √'*इन्ध्*'। शत०ब्रा० १.३.५.१

२. एता हि वाऽइदंःसर्वंःसमिन्धत ऽ एताभिरिदंःसर्वं समिद्धं तस्मात् सामिधेन्यो नाम। '*सम्*+ √'*इन्ध्*'। शत०ब्रा० ११.२.७.६

साय

१. सायः (वज्रः)। 'षो'ऽन्तकर्मणि'। शत्रूणामन्तकरः। √'*षो*'+ *ण्वुल्*'। निघ० २.२.१७

२. यद्वा, √'षिञ्' बन्धने'। बध्नाति स्थिरीकरोति तद्वत् ऐश्वर्य्यादि। √'*सि*'+ *ण्वुल्*'। निघ० २.२.१७

सायम्

१. समागादितीः ३ तत् सायमभवत्। '*सम्*+ *आ*+ √'*गम्*' *या* √'*गा*'। ऐ०आ० २.१.५

सावित्र

१. स यदेते देवते अन्तरेण तत्सर्वंः सीव्यति। तस्मात् सावित्रः। √'*षिव्*'। तै०सं० ३.१०.११.७

साविषत्

१. साविषत्, सुनोतु। √'*षु*'। निरु० ११.४३

सासहान

१. यः **सहमानश्चरसि सासहान** इव ऋषभः। √'*षह्*'। अथर्व० ३.६.४

सासहि

१. अहमस्मि **सहमानाय** त्वमसि **सासहिः**। उभे **सहस्वती** भूत्वी सपत्नीं मे **सहावहै**। √'*षह्*'। ऋ० १०.१४५.५

सिंह

१. लोहितादेवास्य सहोऽस्रवत् स सिंहोऽभवदारण्यानी पशूनामीशः। √'*सह्*'। शत०ब्रा० १२.७.१.८

२. सिंह सहनात्। √'*सह्*'। निरु० ३.१८

३. हिंसेर्वा स्याद्विपरीतस्य। √'*हिंस्*'। निरु० ३.१८

४. संपूर्वस्य वा हन्तेः। '*सम्*+ √'*हन्*'। निरु० ३.१८

५. संहाय हन्तीति वा। '*सम्*+ √'*हा*'+ √'*हन्*'। निरु० ३.१८

६. सिंह सहनम्। √'*सह्*'। निरु० ८.१५

७. सिचेः संज्ञायां हनुमौ कश्च। √'*षिच्*'+ *ह* *(अन्त्यादेशः)* + *नुम्*+ *क* = *सिंह*'। उणा० ५.६२

सित

१. सितमिति वर्णनाम। (*अर्थप्रदर्शनमात्रम्*)। निरु० ९.२६

२. अञ्चिघृसिभ्यः क्तः। √'*सि*'+ *क्त*'। उणा० ३.८९

सिध्र

१. सिध्रम्, साधनम्। √'*साध्*'। निरु० ९.३८

सिन

१. सिनमत्रं भवति। सिनाति भूतानि। √'*सि*'। निरु० ५.५

२. सिनम् (अन्नम्)। √'षिञ्' बन्धने'। सिनाति भूतानि इति भाष्यम्। सिनाति बध्नाति क्षुधा विनश्यन्ति भूतानि धारयति—इति स्कन्दस्वामी। सीयतेऽनेनेति वा। अनेन हि भृत्यादयो बध्यन्ते। √'*सि*'+ *नक्*'। निघ० २.७८

३. इण्सिञ्जिदीङुष्यविभ्यो नक्। √'*सि*'+ *नक्*'। उणा० ३.२

सिनीवाली

१. या पूर्वामावास्या सा सिनीवाली। योत्तरा सा कुहूः। इति विज्ञायते। सिनीवाली सिनमत्रं भवति। सिनाति भूतानि। वालं पर्व वृणोतेः। तस्मिन्नन्नवती। √'सि'= सिनी, √'वृ'=वार, वार+इन्=वाली, सिनी+वाली= सिनीवाली'। निरु० ११.३१

२. वालिनी वा। 'सिनी+वालिनी= सिनीवाली'। निरु० ११.३१

३. वालेनेवास्यामणुत्वाच्चन्द्रमाः सेवितव्यो भवतीति वा। √'सेव्'+अनीयर्=सेवनीया=सेवनी=सेनी=सिनी, वाल +इव=वाली, सिनी+वाली=सिनीवाली'। निरु० ११.३१

सिन्धु

१. सं सं स्रवन्तु सिन्धवः। '*सम्*+√'*स्रु*'। अथर्व० १.१३.१

२. तद्यदेतैरिदं सर्वं सितं तस्मात् सिन्धवः। √'*सि*'। जै०उप० १.९.२.९

३. सिन्धुः स्रवणात्। √'*स्रु*'। निरु० ५.२७

४. सिन्धुः स्यन्दनात्। √'*स्यन्द्*'। निरु० ५.२७

५. सिन्धूनाम्, स्यन्दमानानाम्। √'*स्यन्द्*'। निरु० १०.५; १४.३३

६. सिन्धवः (नद्यः)। √'स्यन्दू' प्रस्रवणे'। स्यन्दते इत्यर्थः। √'*स्यन्द्*'+ *उ*= *स्यन्दु* =*सिन्धु*'। निघ० १.१३.२१

७. स्यन्देः सम्प्रसारणं धश्च। √'*स्यन्द्*'+ *उ*'। उणा० १.११

सिमा

१. ताः सीमानमेवोर्ध्वा उदीयासृज्यन्त, तद्वेवासां सिमात्वम्। '*सीमन्*= *सिमा*'। '*सीमन्*= *सिमा*'। जै०ब्रा० ३.१०४

२. तास् सिमानमेवोर्ध्वा उदीर्यासृज्यन्त। तद्व एवासां सिमात्वम्। '*सीमन्*= *सिमा*'। '*सीमन्*= *सिमा*'। जै०ब्रा० ३.१०४

३. यत् सीमानमभिनत् तस्मात् सिमाः, अथो हैनाः सीमत एव ससृजे, सिम इति वै श्रेष्ठमाचक्षते। '*सीमन्*= *सिमा*'। जै०ब्रा० ३.१११

४. ता ऊर्ध्वा सीम्नोऽभ्यसृजत यदूर्ध्वाः सीम्नो सीम्नोऽभ्यसृजत तत् सिमा अभवंस्तत् सिमानां सिमात्वम्। '*सीमन्*= *सिमा*'। ऐ०ब्रा० ५.७

५. (इन्द्रो वृत्रस्य) सीमानमभिनत् तत् सिमाः। '*सीमन्*= *सिमा*'। ता०ब्रा० १३.४.१

६. अविसिविसिशुषिभ्यः कित्। √'*सि*'+ *मन्*'। उणा० १.१४४

सिरा

१. सिरा (उदकम्)। √'सृ' गतौ'। सरणशीलासु— इति माधवभाष्यम्। √'*सृ*'+ *अच्*+ *टाप्*'। निघ० १.१२.२५

२. स्फायितञ्चिवञ्चिशकि०। √'*सि*'+ *रक्*'। उणा० २.३

सिलिकमध्यम

१. सिलिकमध्यमाः संसृतमध्यमाः। 'सम्+√'सृ'+क्त+ मध्यम=संसृतमध्यम= सिलिकमध्यम'। निरु० ४.१३

२. शीर्षमध्यमा वा। '*शीर्षमध्यम*= *सिलिकमध्यम*'। निरु० ४.१३

सिषक्तु

१. सिषक्तु सचत इति सेवमानस्य। √'*सच्*'। निरु० ३.२१

सीतासमर

१. वाग्वै सीतासमरः, प्राणा वै सीतास्तासामयःस्समयः। '*सीता*+ *समय*= *सीतासमर*'। शत०ब्रा० ७.२.३.३

सीदन्तीय

१. एतेन (सीदन्तीयेन) वै प्रजापतिरूर्ध्व इमान् लोकानसीदत्, यदसीदत्तत् सीदन्तीयस्य सीदन्तीयत्वम्। ऊर्ध्व इमान् सीदति सीदन्तेयेन तुष्टवानः। √'सद्'। ता०ब्रा० ११.१०.१२

२. यद् उ देवा एतेन साम्ना स्वर्गे लोकेऽसीदन्, तस्मात् सीदन्तीयमित्याख्यायते। √'सद्'। जै०ब्रा० ३.३०

सीमन्

१. सीमा मर्यादा। विषीव्यति देशाविति। √'*सिव्*'। निरु० १.७

२. नामन्सीमन्व्योमनरोमन्लोमन्पाप्मन्ध्यामन्। √'*सि*'+ *मनिन्*' (*निपातनात्*)। उणा० ४.१५२

सीमिका

१. सीमिका स्यमनात्। √'*स्यम्*'। निरु० ३.२०

सीर

१. अपः **सीराः** न **स्रवन्तीः**। √'*स्रु*'। ऋ० १.१७४.९

२. सेरः हैतद्यत्सीरमिरामेवास्मिन्नेतद् दधाति। '*स*+ *इरा*'। शत०ब्रा० ७.२.२.२

३. सीर आदित्यः सरणात्। √'*सृ*'। निरु० ९.४०

४. सीराः (नद्यः)। √'षिञ्' बन्धने'। सीयन्ते बध्यन्ते आसु सेत्वादितः शिलादिभिरवतारा वा। '*सि*'+ *र*= *सिर* = *सीर*'। निघ० १.१३.४

५. सरणात् सीरः। √'*सृ*'+ *ईकन्*'। निघ० १.१३.४

६. शुसिचिमीनां दीर्घश्च। √'*सि*+ *क्रन्*= *सी*+ *र*= *सीर*'। उणा० २.२६

सीषधाति

१. सीषधाति, प्रसाधयति। √'*साधय्*'। निरु० १२.१८

सीस

१. यत् कुमारो जायमानो वा जातो वा सीसवं करोति तद् एव सीसम् अभवत्। तस्माद् तत् दुर्गन्धितमम्। '*सीसव*= *सीस*'। जै०ब्रा० ३.३३५

२. नाभ्या एवास्य शूषोऽस्रवत्। तत् सीसमभवन्नायो न हिरण्यम्। '*शूष*+ √'*स्रु*'। शत०ब्रा० १२.७.१.७

सुकिंशुक

१. सुकिंशुकं सुकाशनम्। '*सु*+ √'*काश्*'। निरु० १२.८

सुकृत

१. **सुकृता** तच्छमितारः **कृण्वन्तु**। √'*कृ*'। ऋ० १.१६२.१०

२. तद् (ब्रह्म) आत्मानं स्वयमकुरुत। तस्मात्तत् सुकृतमुच्यते। '*सु*+ √'*कृ*'। तै०आ० ८.७.१, तै०उप० २.७.१

सुक्षिति

१. अथोऽग्निर्वै सुक्षितिरग्निर्ह्येवास्मिँल्लोके सर्वाणि भूतानि क्षियति। '*सु*+ √'*क्षि*'। शत०ब्रा० १४.१.२.२४

सुक्षेम

१. सुक्षेम (उदकम्)। √'क्षि' निवासगत्योः'। क्षियन्ति निवसन्त्यनेन प्राणिनः, गच्छत्यनेन पन्थानमिति वा। '*सु*+ √'*क्षि*'+ *मन्*'। निघ० १.१२.२३

२. यद्वा, √'क्षि' क्षये'। उपरिभागेन क्षीयते वा। '*सु*+ √'*क्षि*'+ *मन्*'। निघ० १.१२.२३

३. यद्वा, पूर्वस्माद् धातुद्वयात्। √'*क्षि*' *निवासगत्योः*' + √'*क्षि*' *क्षये*'+ *मनिन्*'। निघ० १.१२.२३

सुख

१. सुखं कस्मात्? सुहितं खेभ्यः। '*सुहित*+ *ख*= *सुख*'। निरु० ३.१३

२. सुखमिति कल्याणनाम। कल्याणं पुण्यं सुहितं भवति। '*सुहित*+ √'*भू*'। निरु० ९.२

३. सुहितं गम्यतीति वा। '*सुहित*+ √'*गम्*'। निरु० ९.२

४. सुखम् (उदकम्)। सुखावहत्वात् सुखम्। (*अर्थप्रदर्शनमात्रम्*)। निघ० १.१२.४४

५. सुहितं कस्मात्? सुहितं खेभ्यः (निरु० ३.१३) इति भाष्ये स्कन्दस्वामी— सुष्ठु हितं खेभ्यः। '*सुहित*+ *ख*= *सुख*'। निघ० १.१२.४४

६. यद्वा, खं पुनः खनतेः (निरु० ३.३१) उत्पूर्वस्य उत्खनति विनाशयति, किम्? परब्रह्मप्राप्तिसुखम्, कथम्? कायसुखप्रवृत्तेरधोगमनात् इति सुखम्। '*उत्*+ √'*खन्*'। निघ० १.१२.४४

सुग

१. सुगान्, सुगमनात्। '*सु*+ √'*गम्*'। निरु० ६.२

२. सुगाः, स्वागमनानि। '*सु*+ *आ*+ √'*गम्*'। निरु० ६.२

सुगन्धि

१. सुगन्धिं सुष्ठुगन्धिम्। (*अर्थप्रदर्शन मात्रम्*)। निरु० १२.४२

सुगम्य

१. सुगम्यम् (सुखम्)। सुपूर्वात् गमेः। '*सु*+√'*गम्*' +*यत्*'। निघ० ३.६.८

सुतक्र

१. दिवोदासाय **सुन्वते सुतक्रे**। √'*षु*'। ऋ० ६.३१.४

सुतुक

१. सुतुकः, सुतुकनः। '*सु*+√'*तुक्*'। निरु० ४.१८

सुदत्र

१. सुदत्रः कल्याणदानः। '*सु*+√'*दा*'। निरु० ६.१४

सुदिन

१. सुदिनम् (सुखम्)। सुपूर्वात् √'दो' अवखण्डने'। सुष्ठु द्यति दुःखम्, खण्ड्यते वा भाग्यविपर्य्ययेण। '*सु*+√'*दो*'+*नक्*'। निघ० ३.६.९

सुदीति

१. **शुचो सुदीतिभिः सु** दीदिहि। '*सु*+√'*दो*'। ऋ० ६.४८.३

सुधा

१. विश्वरूपैः **सुधायां मा धेहि** परमे व्योमन्। '*सु*+√'*धा*'। अथर्व० ११.१.६—१९; २४

सुनीति

१. **सुनीतिभिर्नयसि** त्रायसे जनम्। √'*नी*'। ऋ० २.२३.४

२. यमादित्यासो **नयथा सुनीतिभिः**। √'*नी*'। ऋ० १०.६३.१३

सुनीथ

१. सुनीथः (प्रशस्यम्)। नयतेः। नीथा स्तुतिः। शोभना नीथा यस्य सः। '*सु*+√'*नी*'+*क्थन्*'। निघ० ३.८.७

सुपर्ण

१. सोमं वै राजानं सुपर्ण आजहार, तस्य यत् पर्णमपतत् स एव पर्णोऽभवत्। √'*पत्*= *पर्ण*'। जै०ब्रा० १.३३५

२. सुपर्णा सुपतनाः। '*सु*+√'*पत्*'। निरु० ३.१२; ४.३

३. सुपर्णाः (रश्मयः)। सूपसृष्टात् √'पॄ' पालनपूरणयोः'। पर्णं पततेः। शोभनं पृणन्ति पालयन्ति जगत् शीतादिनिवारणात्। पूरयन्ति वा वृष्ट्या। शोभनं पतनं गमनमेषामिति वा। '*सु*+√'*पॄ*'+*न*'। निघ० १.५.१५

४. प्रीणातेर्वा। सुष्ठु प्रीणन्ति तर्पयन्ति जगत् वर्षप्रदानेनेति वा सुपर्णाः। '*सु*+√'*पॄ*'+*न*'। निघ० १.५.१५

५. यद्वा, सुर्मत्वर्थः। पतनादिमन्तः। सुपर्णाः। '*सु*' (*मत्वर्थीयः*)+√'*पत्*'+*न*'। निघ० १.५.१५

६. सुपर्णाः (अश्वाः)। √'पॄ' पालनपूरणयोः'। सुपाल्यते यवसादिप्रदानेन, पूरयन्ति वा नभः हेषारवादिना सङ्ग्रामसाधनत्वात्। '*सु*+√'*पॄ*'+*न*'। निघ० १.१४.२१

७. पततेर्वा। शोभनगमना इत्यर्थः। '*सु*+√'*पत्*'+*न*'। निघ० १.१४.२१

सुपर्ण्य

१. सुपर्ण्यः सुपतनाः। '*सु*+√'*पत्*'। निरु० ७.३१

सुपुना

१. समिद्धो अग्निः **सुपुना पुनाति**। √'*पूञ्*'। अथर्व० १२.२.११

सुप्वा

१. **पुनाति** वसोः **पवित्रेण** शतधारेण **सुप्वा** कामधुक्षः। '*सु*+√'*पू*'। यजु० १.३

सुमख

१. सुमखस्य सुमहतः। '*सु*+*महत्*= *सुमख*'। निरु० १२.३

सुमत्

१. सुमत्, स्वयम्। '*स्वयम्*= *सुमत्*'। निरु० ६.२२

सुमिती

१. **सुमिती मीयमानो** वर्चो धा यज्ञवाहसे। √'*माङ्*'। ऋ० ३.८.३

सुमेक

१. सुमेकः संवत्सरः स्वेको ह वै नामैतद्यत् सुमेक इति। '*सु*+*एक*'। शत०ब्रा० १.७.२.२६

सुम्न

१. सुम्नम् (सुखम्)। सुपूर्वात् मीयतेः। शोभनेन कर्मणा। मीयते निमीयते, सुष्ठु मीयते, परिछिद्यते भागेनेति वा। '*सु*+√'*मा*'। निघ० ३.६.१६

सुम्नावरी

१. सुम्नावरी (उषा)। सुपूर्वात् √'म्ना' माने'। सुष्ठु आम्नायते इति सुम्नं सुखं, तद्धि सर्वैः सर्वदा ममेदं भूयादित्यभ्यासेन प्रार्थ्यते। '*सु*+ √'*म्ना*'+ *ड*+ *वनिप्*' (अष्टा०वा० ५.२.१२२)। निघ० १.८.९

२. सुखं सुम्नातेः, प्रजा वै पशवः सुम्नम्— इति माधवः। तदस्यास्तीति। '*सु*+ √'*म्ना*''। निघ० १.८.९

सुयुजा

१. **सुयुजा यजेह** देवेभ्यः। √'*यज्*'। यजु० ५.४

सुर

१. सोर्देवानसृजत, तत्सुराणां सुरत्वम्। '*सु* (*सुरिति प्रशस्तनाम। प्रशस्तादात्मनः प्रदेशात् प्रजापतिः सुरानसृजत दुर्ग० निरु० ३.८*)+ *र*(*मत्वर्थीयः*)= *सुर*'। निरु० ३.८

२. सुसूधाञ्गृधिभ्यः क्रन्। '*सु*+ √'*क्रन्*'। उणा० २.५,

सुरा

१. **सुन्वन्नश्विभ्यां सरस्वत्या इन्द्राय सुत्राम्णे सुरा सोमान्।** √'*षु*'। यजु० २१.५९

२. सुरा सुनोतेः। √'*षु*'। निरु० १.११

३. सुरा (उदकम्)। √'*षुञ्*' अभिषवे'। सुनोति क्लेदयति। भूमिमिति वा। √'*षु*'+ *क्रन्*'। निघ० १.१२.२५

४. यद्वा, √'*षुञ्*' प्रसवे'। प्रसौति अनुजानाति सस्याद्युत्पत्तिं स्वसत्तया, सूयते वा परेषां वियोगाय। √'*षु*'+ *क्रन्*'। निघ० १.१२.२५

५. यद्वा, √'सुर' ऐश्वर्य्ये'। सुरति ईश्वरं भवति जगत् कर्तुं समर्थो भवतीत्यर्थः। √'*सुर्*'। निघ० १.१२.२५

सुरुक्मे

१. सुरुक्मे सुरोचने। '*सु*+ √'*रुच्*'। निरु० ८.११

सुरुच्

१. सुरुच आदित्यरश्मयः। सुरोचनात्। '*सु*+ √'*रुच्*'। निरु० १.७

सुवर्ग

१. अथ हैवंविदेव सुवर्गः। स हि सुवर्गच्छति। '*सुवर्*+ √'*गम्*'। जै०ब्रा० १.१८

सुवर्ण

१. तस्मात् सुवर्णꣳ हिरण्यं भार्यम्। सुवर्ण एव भवति। '*सु*+ *वर्ण*'। तै०सं० २.२.४.६

सुवित

१. सुविता सुप्रसूतानि कर्माणि। √'*सू*'। तै०सं० ४.१७; १२.२८

सुविदत्र

१. सुविदत्रं धनं भवति। विन्दतेर्वैकोपसर्गात्। '*सु*+ √'*विद्लृ*' *लाभे*'। निरु० ७.९

२. ददातेर्वा स्याद् द्व्युपसर्गात्। '*सु*+ *वि*+ √'दा'। निरु० ७.९

३. सुविदत्रः कल्याणविद्यः। '*सु*+ √'*विद्*' *ज्ञाने*'। निरु० ६.१४

सुवृक्ति

१. सुवृक्तिभिः सुप्रवृत्ताभिः। '*सु*+ √'*वृत्*'। निरु० २.२४

सुवृत्

१. **सुवृद्रथो वर्त्तते** यन्नाभि क्षाम्। √'*वृ*'। ऋ० १.१८३.२

सुशमि

१. देवेभ्यो हविः **शमीष्व सुशमि शमीष्व**। √'*शम्*'। यजु० १.१५

सुशिप्र

१. सुशिप्रमेतेन (सृप्रशब्देन) व्याख्यातम्। '*सु*+ √'*सृप्*'+ *रक्*= *सुसृप्र*= *सुशिप्र*'। निरु० ६.१७

२. सर्पतेरेवैतदपि। '*सु*+ √'*सृप्*'+ *रक्*= *सुसृप्र* = *सुशिप्र*'। दुर्ग०, निरु० ६.१७

सुषोमा

१. सुषोमा सिन्धुः। यदेनामभिप्रसुवन्ति नद्यः। √'सू'। निरु० ९.२४

सुष्टुति

१. सुष्टुतिम्, समाप्तिं स्तुतेः। (*अर्थप्रदर्शनमात्रम्*)। निरु० ६.१८

सुष्वयन्ती

१. सेष्मीयमाणो इति वा। √'*स्मि*'। निरु० ८.११

२. सुष्वापयन्त्वाविति वा। √'*स्वप्*'। निरु० ८.११

सू

१. यमा चिदत्र **यमसूरसूत**। √'षुञ्'। ऋ० ३.३९.३

२. **सुषूरसूत** माता क्राणा यदानशे भगम्। √'षुञ्'। ऋ० ५.७.८

सूक्त

१. तान् होता सूक्तैः सूते तत्सूक्तानां सूक्तत्वम्। √'सू'। जै०ब्रा० २.२४

२. सूक्तं बतोवोचतेति तत्सूक्तमभवत्। तस्मात्सूक्तं सूक्तमित्याचक्षत एतमेव सन्तम्। √'सु+ 'वच्'। ऐ०ब्रा० २.२.२

सूची

१. सूची सीव्यतेः। √'*सिव्*'। निरु० ११.३१

सूत

१. सवो वै सूतः। √'सू'। शत०ब्रा० ५.३.१.५

सूद

१. सूदः (कूपः)। √'सूद' क्षरणे हिंसायाञ्च'। क्षरत्यस्मात् जलम्, हिंसायां कर्त्तवदर्थः। √'सूद्'। निघ० ३.२३.९

सूनरी

१. सूनरी (उषा)। सु+नर। शोभना नरा अस्यां सन्ति। नराणां प्रसन्नचित्तत्वेन धर्मादिविशिष्टतया तदानीं शोभनत्वम्। 'सु+ नर+ ई (*मत्वर्थीयः*)'। निघ० १.८.२

२. यद्वा, सुपूर्वात् √'नॄ' नये'। सूनरी शोभनं नयति कालम्। 'सु+ √'नॄ'+ इ+ ङीष्'। निघ० १.८.२

३. यद्वा, नृभिर्देवैः समन्विता— इति माधवः। 'सु+ नृ'। निघ० १.८.२

सूनु

१. सूनुः (अपत्यम्)। √'षुञ्' प्राणिप्रसवे'। सूयते मात्रा। √'सु'+ नु'। निघ० २.२.१२

सूनृता

१. सूनृता (उषा)। सुपूर्वात् √'ऊन' परिहाणे'। सुष्ठु ऊन्यते अप्रियैरिति सून्। तमिति सत्यनाम (निरु० ४.१९) सूंश्च तदृतञ्च सूनृतम्। प्रियञ्च सत्यञ्च। 'सु+ √'ऊन्'+ *क्ति*+ *ऋत*= *सूनृता* (*पृषोदरादित्वात्*)'। निघ० १.८.१४

२. यद्वा, प्रियसत्यरूपा वाचः सूनृता उच्यन्ते। सु+ √'ऊन्'+ *क्ति*+ *ऋत*= *सूनृता* (*पृषोदरादित्वात्*)'। निघ० १.८.१४

३. यद्वा, सूनृतेत्यन्ननामसु (निघ० २.७.२४) पाठादन्नम्। सूनृता धननाम माधवपक्षेण अन्नवत्यो धनवत्यो वा सूनृतादयः। 'सु + √'ऊन्' + *क्ति* + *ऋत* = *सूनृता* (*पृषोदरादित्वात्*)'। निघ० १.८.१४

४. सूनृता (अन्नम्)। 'सु+√'नी'। सुष्ठु नयन्ति क्षुत्प्रयुक्तान् अर्थ्यते वा तदर्थिभिः। 'सु+ √'*नी*'। निघ० २.७.२४

५. यद्वा, 'सु+नर+√'तनु' विस्तारे'। शोभना नरः सूनरः। सुनृषु तायते विस्तीर्य्यते पुण्येन। 'सु+ नर+ √'*तन्*'। निघ० २.७.२४

सूभर्व

१. सूभर्वं राजानम्। भर्वतिरत्तिकर्मा। 'सु+ √'*भर्व्*'। निरु० ९.२३

सूयवसाद

१. सूयवसात् सुयवसादिनी। '*सुयवसादिनी* = *सूयवसात्*'। निरु० ११.४४

सूरि

१. सूरि सुमहतो बलस्य ईरयिता। 'सु+ √'ईर्'। निरु० १२.३

२. सूरिः (स्तोतृ)। √'सू' प्रेरणे'। प्रकर्षेण ईरयति स्तोत्रम्। √'सू'+ *क्रि*'। निघ० ३.१६.८

३. सूङः क्रिः। √'सू'+ *क्रि*'। उणा० ४.६५

सूर्त

१. सूर्ते सुसमीरिते। 'सु+ सम्+ √'ईर्'+ *क्त*= *सुसमीरित* = *सूर्त*'। निरु० ६.१५

सूर्य

१. **स्वरन्ति ता उपरताति सूर्यमा निम्रुच उषसस्तक्कवीरिव**। √'स्वृ' *शब्दोपतापयोः*'। ऋ० १.१५१.५

२. तं सर्वाणि भूतानि सोऽर्यस्सोऽर्य इत्यायन्। तत् सोर्यस्य सोर्यत्वम्। सोर्यो ह वै नामैष तं सूर्य इति परोक्षमाचक्षते। '*सोऽर्य*= *सोर्य*= *सूर्य*'। जै०ब्रा० ३.३५७

३. तं (इन्द्रं) देवा अब्रुवन् सुवीर्य्योऽमर्य्या यथा गोपायत इति। तत्सूर्यस्य सूर्यत्वम्। '*सुवीर्य्य*= *सूर्य*'। तै०सं० २.२.१०.४

४. सूर्यः सर्तेर्वा। √'सृ'। निरु० १२.१४

५. सुवतेर्वा। √'सू'। निरु० १२.१४

६. स्वीर्यतेर्वा। 'सु+ 'ईर्'। निरु० १२.१४

७. सूर्यस्य स्वीकरणकर्माणाम्। (*अर्थप्रदर्शनमात्रम्*)। निरु० १४.१२

सूर्या, सूर्य्या

१. सूर्या सूर्यस्य पत्नी। '*सूर्यस्य पत्नी= सूर्या*'। निरु० १२.७

२. सूर्य्या (वाक्)। सर्तेगत्यर्थात्। सरति गच्छति स्तोतॄन् प्रति। √'सृ'+ *क्यप्*'। निघ० १.११.२१

३. सुवतेर्वा प्रेरणार्थात्। कर्णशुष्कलिं वा सुवति प्रेरयति चोदनरूपा पुरुषादीनिदं कुर्विति। √'सू'+ *क्यप्*'। निघ० १.११.२१

४. यद्वा, सुपूर्वादीरतेः। सुष्ठु ईर्य्यते उच्चार्यते इति सूर्य्या। 'सु+ √'ईर्'+ *क्यप्*'। निघ० १.११.२१

५. यद्वा, √'षु' प्रेरणे'। प्रेर्य्यते उच्चारणकाले प्राणेन सूरा, स्वार्थे यत् प्रत्ययः सूर्य्यः। √'सु'+ *क्रन्*= सूर, सूर+ *यत्*= *सूर्या*'। निघ० १.११.२१

६. यद्वा, सूरयो मेधाविनः तानर्हति सूर्य्या। '*सूरि+ यत्*'। निघ० १.११.२१

७. यद्वा, सूरिषु साधुः सूर्य्या। '*सूरि+ यत्*'। निघ० १.११.२१

सृक

१. सृकः (वज्रः)। √'सृ' गतौ'। 'सृ'+ *अक*'। निघ० २.२०.६

२. सृवृभूशुषिमुषिभ्यः कक्। √'सृ'+ *कक्*'। उणा० ३.४१

सृक्काण

१. सृक्काणं सरणम्। √'सृ'। निरु० ११.४२

सृणि

१. सृणिरङ्कुशो भवति सरणात्। √'सृ'। निरु० ५.२८

२. सृवृषिभ्यां कित्। √'सृ'+ *नि*'। उणा० ४.५०

सृणीक

१. सृणीकम् (उदकम्)। 'सृ' गतौ'। धावति सर्णीकम्। √'सृ'+ *नुम्+ ईकन्*'। निघ० १.१२.८७

सृप्र

१. सृप्रः सर्पणात्। इदमपीतरत् सृप्रमेतस्मादेव सर्पिर्वा तैलं वा। √'सृप्'। निरु० ६.१७

२. स्फायितञ्चिवञ्चिशकि०। √'सृप्'+ *रक्*'। उणा० २.१३

सृष्टि

१. तस्माद् देवा अधि **सृष्टीः सृजन्ते**। √'*सृज्*'। अथर्व० १३.१.२५

सेक्ता

१. **सेक्तेव** कोशं **सिसिचे** पिबध्यै। √'*सिच्*'। ऋ० ३.३२.१५; अथर्व० २०.८.३

सेना

१. सेना सेश्वरा। '*स+ इन+ आ*'। निरु० २.११

२. समानगतिर्वा। '*स+* 'इ'+ *आ*'। निरु० २.११

सोतृ

१. वृषा **सोता सुनोतु** ते। √'षु'। ऋ० ८.३३.१२

२. **सोम** उ **षुवाणः सोतृभिः**। √'षु'। ऋ० ९.१०७.८

३. तदु श्रेष्ठं **सवनं सुनोतनात्यो** न हस्तयतो अद्रिः **सोतरि**। √'षु'। ऋ० १०.७६.२

४. **सोतृभिः सोम सूयसे**। √'षु'। सा०उ० १०३३

५. सोतोः प्रसवाय। √'सू'। निरु० १३.४

सोम

१. **सुतसोमा** अहर्विदः। √'षु'। ऋ० १.२.२

२. **सुतसोमा** अभिप्रियः। √'षु'। ऋ० १.४६.८

३. **सुतसोमासः**। √'षु'। ऋ० १.४४.८

४. **असावि सोम** इन्द्र ते शविष्ठ धृष्णवा गहि। √'षु'। ऋ० १.८४.१

५. **सोमं** वृषभाय **सुष्वति**। √'षु'। ऋ० २.१६.५

६. **सुनोतेति सोमम्**। √'षु'। ऋ० २.३०.७

७. अयं वो मित्रावरुणा **सुतः सोम** ऋतावृधा। √'षु'। ऋ० २.४१.४

८. **सोम्यासः** सखायः **सुन्वन्ति सोमम्**। √'षु'। ऋ० ३.३०.१

९. इन्द्राय **सोमं सुषुतं** भरन्तः। √'षु'। ऋ० ३.३६.७

१०. वयं **सुते सोमे** हवामहे। √'षु'। ऋ० ३.४०.१

११. **सुतं सोमं** हर्य पुरुष्टुत। √'षु'। ऋ० ३.४०.२
१२. इन्द्र **सोमाः सुता** इमे। √'षु'। ऋ० ३.४०.४; ४२.५
१३. **सुतं सोम** इन्द्र वरेण्यम्। √'षु'। ऋ० ३.४०.५
१४. **सुतं सोम** दाशुषः स्वे सधस्थे। √'षु'। ऋ० ३.५१.९
१५. यदा कदा च **सुनवाम सोमम्**। √'षु'। ऋ० ३.५३.४
१६. **सुतं सोमम**ा वृषस्त्वा गभस्त्योः। √'षु'। ऋ० ३.६०.५
१७. इन्द्राय **सोमम**ुशते **सुनोति**। √'षु'। ऋ० ४.२४.६
१८. य इन्द्राय **सुनवत्सोमम**द्य। √'षु'। ऋ० ४.२४.७
१९. **सोमं सुषाव सोमम**द्रिभिः। √'षु'। ऋ० ४.२५.५
२०. यत्र **सोमः सूयते** यत्र यज्ञः। √'षु'। ऋ० ४.५८.९; यजु० १७.९७
२१. **सोमं सुनोति** भवति द्युमाँ इह। √'षु'। ऋ० ५.३४.३
२२. **सुतं सोम सोमपते** पिब। √'षु'। ऋ० ५.४०.१
२३. वृषा **सोमो** अयं **सुतः**। √'षु'। ऋ० ५.४०.२
२४. **असावि** ते जुजुषाणाय **सोमः**। √'षु'। ऋ० ५.४३.५
२५. तुभ्यं **सोमेभिः सुन्वत्**। √'षु'। ऋ० ६.२०.१३
२६. **सुतः सोमो असुता**दिन्द्र। √'षु'। ऋ० ६.४१.४
२७. अयं **सोम** इन्द्र तुभ्यं **सुन्वे**। √'षु'। ऋ० ७.२९.१; ९.८८.१; सा०उ० १४७७
२८. इम इन्द्राय **सुन्विरे सोमासः**। √'षु'। ऋ० ७.३२.४
२९. **सुनोता सोमपाव्ने सोमम्**। √'षु'। ऋ० ७.३२.८; सा०उ० ३.६.३; अथर्व० ६.२.३
३०. यत्सोम आ **सुते** नरः। √'षु'। ऋ० ७.९४.१०
३१. **सोता** हि **सोमम**द्रिभिः। √'षु'। ऋ० ८.१.१७
३२. **सोमं सोता** वरेण्यम्। √'षु'। ऋ० ८.१.१९
३३. **सोमम**िन्द्राय **सोतन**। √'षु'। ऋ० ८.४.१३
३४. अयं ते मानुषे जने **सोमः** पुरूषु **सूयते**। √'षु'। ऋ० ८.६४.१०
३५. **सुनोता** मधुमत्तमं **सोमम्**। √'षु'। ऋ० ९.३१.६
३६. ये **सोमासः** परावति ये अर्वावति **सुन्विरे**। √'षु'। ऋ० ९.६५.२२
३७. **असावि सोमो** अरुषो वृषा हरी। √'षु'। ऋ० ९.८२.१; सा०पू० ५.९.९; सा०उ० १३१६
३८. आ **सुवानः सोमः** कलेशेषु सीदति। √'षु'। ऋ० ९.८६.४७
३९. एष **सुवानः** परि **सोमः**। √'षु'। ऋ० ९.८७.७
४०. **सोमो** वावृधे **सुवानः** इन्दुः। √'षु'। ऋ० ९.९७.४०
४१. **सोम** उ **षुवाण सोतृभिः**। √'षु'। ऋ० ९.१०७.८
४२. आ **सोम सुवानो** अद्रिभिः। √'षु'। ऋ० ९.१०७.१०
४३. यमाय **सोमं सुनुत**। √'षु'। ऋ० १०.१४.१३
४४. **सुन्वन्ति सोमान्** पिबसि त्वमेषाम्। √'षु'। ऋ० १०.२८.३
४५. तस्मै **सोमं** मधुमन्तं **सुनोत**। √'षु'। ऋ० १०.३०.३
४६. तीव्रान्त्सोमाँ आ **सुनोति** प्रयस्वान्। √'षु'। ऋ० १०.४२.५; अथर्व० २०.८९.५
४७. **सुन्वन्ति सोमं** रथिरासो अद्रयः। √'षु'। ऋ० १०.७६.७
४८. इन्द्राय **सुनुथ सोमम**द्रयः। √'षु'। ऋ० १०.७६.८
४९. **असावि सोमः** पुरुहूत तुभ्यम्। √'षु'। ऋ० १०.१०४.१
५०. **सोम** इन्द्र ममत्तु यः **सूयते** पार्थिवेषु। √'षु'। ऋ० १०.११६.३
५१. **सोमम**स्मै सर्वहृदा देवकामः **सुनोति**। √'षु'। ऋ० १०.१६०.३; अथर्व० २०.९६.३
५२. अस्मै रेवान्न **सुनोति सोमम्**। √'षु'। ऋ० १०.१६०.४९; अथर्व० २०.९६.४
५३. वाजस्येमं प्रसवः **सुषुवेऽग्रे सोमम्**। √'षु'। यजु० ९.२३
५४. अन्तरा **सुषाव सोमम**द्रिभिः। √'षु'। यजु० १९.२; सा०पू० ५.५.२; सा०उ० १३१३
५५. **सोमम**िन्द्राय **सुषुवुर्म**दम्। √'षु'। यजु० २०.६३
५६. **असावि सोम** इन्द्र ते। √'षु'। सा०पू० ३.१२.६; सा०उ० १०२८
५७. **सोमम**िन्द्र मन्दतु त्वा यं ते **सुषाव** हर्यश्वाद्रिः। √'षु'। सा०पू० ५.४.८
५८. **सोतृभिः सोम सूयसे**। √'षु'। सा०उ० ९२७; १०३३
५९. यदब्रवीत् सो वै म एषेति, तस्मात् सोमो नाम। 'सो+ म'। का०शत०ब्रा० ४.९.४.१८
६०. स्वा वै म ऽ एषेति, तस्मात् सोमो नाम। 'स्वा+ म= सोम'। शत०ब्रा० ३.९.४.२२
६१. स (सोमः) प्रजापता अनाथत, सोऽब्रवीत्— सर्वेष्वेव (नक्षत्रेषु) समावद् वसाथ त्वातो मोक्ष्यामीति तं

वैश्वदेवेन चरुणामावस्यां रात्रिमयाजत् ते नैनं यक्ष्मादमुञ्चत्। '*सम्*+ √'*अव्*'+ √'*मुञ्च्*'। काठ० ११.३

६२. स (सोमः) एतत् (सोम) साम्प्रपश्यत् तेनास्तुत ततो वै स सर्वेषां देवानां राज्यायासूयत। √'सू'। जै०ब्रा० ३.१५

६३. घ्नन्ति वा एतत् सोम यदभिषुण्वन्ति। √'सू'। मै०सं० ४.५.६; ७.२.७ (तु०, तै०सं० ६.६.७.१)

६४. सोमः सूयते। √'सू'। गो०ब्रा० २.३.६

६५. ओषधिः सोमः सुनोतेः। यदेनमभिषुण्वन्ति। √'षु'। निरु० ११.२

६६. सोमानम्, सोमानां सोतारम्। √'षु'। निरु० ६.१०

६७. यद्वा, 'षुञ्' अभिषवे'। सूयते सोमः। √'सु'+ *मन्*'। निघ० ५.५.२

सोमक्रयणी

१. अधिकर्णी सोमक्रयणी भवति........अधिकर्ण्या सोमं क्रीणन्ति। '*सोम*+ √'*क्री*'। जै०ब्रा० १.१९९

सोमन्

१. सोमानम्। √'षु'। निरु० ६.१०

सोमपा

१. आ न इन्द्राबृहस्पती गृहमिन्द्रश्च गच्छतम्। सोमपा सोमपीतये। '*सोम*+ √'*पा*'। ऋ० ४.४९.३

२. उप नः सवना गहि सोमस्य सोमपा पिब। '*सोम*+ √'*पा*'। अथर्व० २०.५७.२; ६८.२

३. **सोमस्य सोमपा पिब**। '*सोम*+ √'*पा*'। सा०उ० १०८८

सोमपाव्नाम्

१. अस्माकं शिप्रिणीनां **सोमपा सोमपाव्नाम्**। '*सोम*+ √'*पा*'। ऋ० १.३०.११

सोम्य

१. इच्छन्ति त्वा **सोम्यासः** सखायः सुन्वन्ति सोमम्। √'षु'। ऋ० ३.३०.१; यजु० ३४.१८

२. **सुषाव सोम्यं** मधु। √'षु'। ऋ० ८.८.३

३. सोम्यं सोममयम्। (*प्रत्ययार्थप्रदर्शनमात्रम्*)। निरु० १०.३७

४. सोम्याः सोमसंपादिनः। (*प्रत्ययार्थप्रदर्शनमात्रम्*)। निरु० ११.१८, १९

सौत्रामणी

१. तावश्विनौ च सरस्वती च इन्द्रियं वीर्यं नमुचेराहृत्य तदस्मिन् पुनरदधुस्तं पाप्मनोऽत्रायन्त सुत्रातं बतैनं पाप्मनोऽत्राहमस्मीति तद्वाव सौत्रामण्यमभवत्, तत् सौत्रामण्यै सौत्रामणीत्वम्। 'सु+ √'*त्रा*'। शत०ब्रा० १२.७.१.१४

२. ते देवा अब्रुवन्। सुत्रातं बतैनमत्रासतामिति तस्मात् सौत्रामणी नाम। 'सु+ √'*त्रा*'। शत०ब्रा० ५.५.४.१२

सौभर

१. ता (प्रजाः) अब्रुवन् सुभृतन्नोऽभार्षीरिति तस्मात् सौभरम्। 'सु+ √'*भृ*'। ता०ब्रा० ८.८.१६

२. स (प्रजापतिः) अब्रवीत् सुभृतं वा इमाः प्रजाः अभार्षम् इति। तदेव सौभरस्य सौभरत्वम्। 'सु+ √'*भृ*'। जै०ब्रा० १.१८७

सौमेध

१. ते (देवाः) अब्रुवन् सुमेध्या वा अभूमेति। तदेव सौमेधस्य सौमेधत्वम्। '*सुमेध*= *सुमेध*'। जै०ब्रा० १.२२७

सौहविष

१. ते (देवाः) अब्रुवन् सुहविषो मा अभूमेति। तदेव सौहविषस्य सौहविषत्वम्। '*सुहविष*= *सौहविष*'। जै०ब्रा० ३.१९६

स्कन्ध

१. स्कन्धो वृक्षस्य समास्कन्नो भवति। अयमपीतरः स्कन्ध एतस्मादेव। आस्कन्नं काये। √'स्कन्द्'। निरु० ६.१७

२. स्कन्देश्च स्वाङ्गे। √'स्कन्द्'+ *असुन्*'। उणा० ४.२०८

स्कभीयान्

१. **चास्कम्भ** चित्स्कम्भनेन **स्कभीयान्**। √'*स्कम्भ्*'। ऋ० १०.१११.५

स्कम्भन

१. विष्कम्भन्तः **स्कम्भनेना** जनित्री। √'*स्कम्भ्*'। ऋ० ३.३१.१२

२. उप द्यां **स्कम्भयुः स्कम्भनेन**। √'*स्कम्भ्*'। ऋ० ६.७२.२

३. **चास्कम्भ** चित्**स्कम्भनेन स्कभीयान्**। √'*स्कम्भ्*'। ऋ० १०.१११.५

स्कम्भास

१. त्रय: **स्कम्भास: स्कभितास** आरभे। √'*स्कम्भ्*'। ऋ० १.३४.२

स्तन

१. यद् (अन्नाद्यम्)। अभ्यस्तनयत् तत् स्तनयो स्तनत्वम्। √'*स्तन्*'। जै०ब्रा० २.२२८

स्तनयित्नु

१. तत स्तनयित्नुरजायत। तस्माद् यदा विद्योततेऽथ स्तनयति। जै०ब्रा० ३.३८०

स्तम्भ

१. तद् यद् एषा देवतोभयान् देवासुरान् अन्तरा स्तब्धा तिष्ठति तस्माद् एतत् स्तम्भः। √'*स्तम्भ्*'। जै०ब्रा० ३.३५९

स्तवाने

१. **स्तवानेभि: स्तवसे** देव। √'स्तु'। ऋ० १.१६९.८

स्तामु

१. स्तामु (स्तोता)। √'ष्टम' अवैक्लव्ये'। √'*स्तम्*' + उण्'। निघ० ३.१६.५

स्तावा (अप्सरस्)

१. दक्षिणा वै स्तावा दक्षिणाभिर्हि यज्ञ स्तूयतेऽथो यो वै कश्च दक्षिणां ददाति स्तूयतऽ एव स:। √'स्तु'। शत०ब्रा० ९.४.१.११

स्तिपा

१. स्तिपा स्तियानाम्। '*स्ति*+ √'*पा*'। निरु० ६.१७

२. उपस्थितान् पालयतीति वा। √'*स्था*'+ √'*पा*' = *स्थिपा*= *स्तिपा*'। निरु० ६.१७

स्तिया

१. स्तिया आपो भवन्ति स्त्यायनात्। √'*स्त्याय्*'। निरु० ६.१७

स्तुक्

१. स्तुक: स्त्यायते: संघात:। √'*स्त्याय्*'। निरु० ११.३२

स्तुप्

१. स्तुप् (स्तोतृ)। स्तोतृभिरर्चतिकर्मा। √'*स्तुभ्*'+ *क्विप्*'। निघ० ३.१६.११

स्तुषेय्य

१. स्तुषेय्यम्, स्तोतव्यम्। '*स्तोतव्य*= *स्तुषेय्य*'। निरु० ११.२१

स्तूप

१. स्तूप: स्त्यायते: संघात:। √'*स्त्याय्*'। निरु० १०.३३

२. स्तुवो दीर्घश्च। √'स्तु'+ *प*= *स्तूप*'। उणा० ३.२५

स्तृ

१. स्तृभि: स्तीर्णानीव ख्यायन्ते। √'स्तृ'। निरु० ३.२०

स्तेन

१. स्तेन: कस्मात्? संस्त्यानमस्मिन् पापकमिति नैरुक्ता:। √'*स्त्या*'। निरु० ३.१९

स्तोतृ

१. स्तोता स्तवनात्। √'*स्त्या*'। निरु० ३.१९

स्तोम

१. तुञ्जे तुञ्जे य उत्तरे **स्तोमा** इन्द्रस्य वज्रिण:। न विन्धे अस्य **सुष्टुतिम्**। √'स्तु'। ऋ० १.७.७

२. स (प्रजापति:) इन्द्रम् अब्रवीत् कथं न्व् अहम् इत: पुनरन्वाभवेयम् इति। किं खलु वै तेऽस्तीत्य् अब्रवीत्, स्तो न्वै म इमौ प्राणापानाव् इति। यत् स्तोम इत्य् अब्रवीत् तत् स्तोमस्य स्तोमत्वम्। स्तुवत एनं स्वा 'अयं न श्रेष्ठ इति' य एवं वेद। √'स्तु'= *स्तो*, *स्तो*+ *म*= *स्तोम*'। जै०ब्रा० २.४०९;(तु०, जै०ब्रा० ३.३३४)

३. स्तोम: स्तवनात्। √'स्तु'। निरु० ७.१२

४. अर्तिस्तुसुहुसृधृक्षिक्षुभायावापदियक्षिनीभ्यो मन्। √'स्तु'+ *मन्*'। उणा० १.१४०

स्तोमभाग

१. स्तोमो वा एतेषां भागस्तत् स्तोमभागानाः स्तोम: स्तोमभागत्वम्। '*स्तोम*+ *भाग*'। काठ० ३७.१७; गो०ब्रा० २.२.१३

स्तोम्य

१. **स्तवाम** सखाय: **स्तोम्यं** नरम्। √'स्तु'। ऋ० ८.२४.१९

स्तोषम्

१. स्तोषम्, स्तौमि। √'स्तु'। निरु० ८.७

स्तोषाम

१. स्तोषाम, स्तुमः। √'स्तु'। निरु० ८.७

स्त्री

१. स्त्रियः स्त्यायतेरपत्रकर्मणः। √'स्त्या'। निरु० ३.२१

२. स्त्यायतेर्ड्रट्। √'स्त्या'+ ड्रट्'। उणा० ४.१६७,

स्थविर

१. **स्थविरस्य** बाहू उप **स्थेयाम** शरणा बृहन्ता। √'स्था'। ऋ० ६.४७.८

स्थाणु

१. स्थाणुस्तिष्ठतेः। √'स्था'। निरु० १.१०८

२. स्थो णुः। √'स्था'+ णु'। उणा० ३.३७

स्थामन्

१. **आस्थाने पर्वता अस्थुः स्थाम्न्यश्वाँ अतिष्ठिपम्।** √'स्था'। अथर्व० ६.७७.१

२. **आस्थाने पर्वता अस्थुः स्थाम्नि** वृक्काविवतिष्ठिपम्। √'स्था'। अथर्व० ७.९६.१

स्नुषा

१. स्नुषा साधु सादिनीति वा। 'सु+ √'सद्'। निरु० १२.९

२. साधु सनिनीति वा। 'सु+ √'षण्'। निरु० १२.९

३. स्वपत्यं तत्सनोतीति वा। 'स्नु+ √'षण्'। निरु० १२.९

४. स्नुव्रश्चिकृत्यृषिभ्यः कित्। √'स्नु'+ स'। उणा० ३.६६

स्पर (अहन्)

१. स्परैर्वै देवा आदित्याय स्वर्गं लोकमस्पृण्वन् यदस्पृण्वँस्तत् स्पराणां स्परत्वम्। √'स्पृ'। काठ० ३६.३ (तु०, तै०सं० १.२.४.३)

स्पार्ह

१. स्पार्हा, स्पृहणीयानि। √'स्पृह्'= स्पृहणीय= स्पार्ह'। निरु० ३.११

स्पृध

१. स्पृधः (सङ्ग्रामः)। √'स्पर्द्ध' संघर्षे'। स्पर्द्धन्तेऽत्र परस्परं योद्धारः। √'स्पर्द्ध+ क्विप्'। निघ० २.१७.१९

स्मयाक

१. तस्य (यज्ञस्य) सिष्मियाणस्य तेजोऽपाक्रात्। तद्देवा ओषधीषु न्यमृजुः। ते श्यामका अभवन्। स्मयाका वै नामैते। तत्स्मयाकानांस्मयाकत्वम्। √'स्मि'= श्यामाक्स्मयाक'। तै०आ० ५.१.३,४

स्य

१. स्यं शूपं स्यतेः। √'सो'। निरु० ६.९

स्यन्द्रास

१. स्यन्द्रासः (बलम्)। √'स्यदि' किञ्चिच्चलने'। स्यन्दतेऽनेन शत्रून्। √'स्यन्द्'+ रन्+ असुक्'। निघ० २.९.२७

स्याल

१. स्याल आसन्नः संयोगेनेति नैदानाः। √'सद्'। निरु० ६.९

२. स्याल्लाजानावपतीति वा। 'स्य(शूर्प)= स्य= स्यात्+ लाज= स्याल्लाज= स्याल्ल= स्याल'। निरु० ६.९

स्यूमक

१. स्यूमकम् (सुखम्)। √'षिवु' तन्तुसन्ताने'। स्यूतं पुण्यवद्भिः। √'सिव्'+ मन्+ क'। निघ० ३.६.५

स्योन

१. स्योनमिति सुखनाम। स्यतेरवस्यन्त्येतत्। √'सो'। निरु० ८.९

२. सेवितव्यं भवतीति वा। √'सेव्'। निरु० ८.९

३. स्योनम् (सुखम्)। √'षिवु' तन्तुसन्ताने'। स्यूमवदर्थः। √'सिव्'+ न'। निघ० ३.६.१५

४. स्योनमिति सुखनाम, स्यतेरवस्यन्त्येतत् (निरु० ८.९) इति भाष्ये स्कन्दस्वामिना स्यतेः सेवतेश्च स्योनं व्याख्यातम्। √'सो' या √'सेव्'। निघ० ३.६.१५

५. सिवेष्टेर्यू च। √'सिव्'+ न= स्यू+ न= स्योन'। उणा० ३.९

स्रवन्ती

१. स्रवन्त्यः (नद्यः)। √'स्रु' गतौ'। सर्वदा गमन-स्वभावः। √'स्रु'+ शतृ+ ङीप्'। निघ० १.१३.२७

स्रुव

१. प्राण एव स्रुवः, सोऽयं प्राणः सर्वाण्यान्यनुसञ्चरति। तस्मादु स्रुवः सर्वा अनु स्रुचः सञ्चरति। 'सम्+ √'चर्'। शत०ब्रा० १.३.२.३

२. स्रुवः कः। √'स्रु'+ क'। उणा० २.६२

स्रोत

१. स्रोतः (उदकम्)। √'स्रु' गतौ'। स्रवति निम्नं देशम्। √'स्रु'+ तुट्+ असुन्'। निघ० १.१२.३३

२. स्रुरीभ्यां तुट् च। √'स्रु'+ तुट्+ असुन्'। उणा० ४.२०३

स्रोत्या

१. स्रोत्या (नद्यः)। स्रोतसि भवाः। स्रोतोऽनुसरणाद्धि नद्यो भवन्ति। 'स्रोतस्+ ड्य'। निघ० १.१३.५

स्व

१. स्वं पुनराश्रितं भवति। 'आ+ √'श्रि'। निरु० ५.२२

स्वगूर्त

१. स्वगूर्ताः, स्वयंगामिन्यः। 'स्वयम्+ √'गम्'। निरु० १०.४७

स्वञ्चस्

१. स्वञ्चाः सु अञ्चनः। 'सु+ √'अञ्च्'। निरु० ५.७

स्वतवस्

१. स स्वततवद्भ्यः स्यात् स्वयःहि ते तं भागमकल्पयन्त, तं वै स्वतवोभ्यः इति कुर्यात्। स्वयःहि ते एतं भागमकुर्वत। 'स्वयम्+ तव'। शत०ब्रा० २.५.१.१४ (तु०, का०शत०ब्रा० १.४.३.१२)

स्वदावन्

१. यं ते **स्वदावन्त्स्वदन्ति** गूर्तयः। √'स्वद्'। ऋ० ८.५०.६

स्वधा

१. **स्वधा** अधयद्याभिरीयते। 'स्व+ √'धेट्' पाने'। ऋ० १.१४४.२

२. **स्वधासीद्यन्मामेकं समधत्ता**हिहत्तये। 'स्व+ √'धा'। ऋ० १.६५.६

३. **स्वधामस्मै** यजमानाय **धेहि**। √'धा'। यजु० २९.२

४. स्वधा (उदकम्)। स्वशब्दे उपपदे √'डुधाञ्' दानधारणयोः'। स्वमात्मानं सर्वान्तर्यामिनं भगवन्तं नारायणं धारयति। आपो नारा इति प्रोक्ता आपो वै नरसूनवः। अयनं तस्य ताः पूर्वं तेन नारायणः स्मृतः। (मनु०, १.१०) 'स्व+ √'धा'+ क'। निघ० १.१२.९७

५. यद्वा, स्वधनं ददातीति वा। 'स्व+ √'दा'+ क'। निघ० १.१२.९७

६. स्वधा (अन्नम्)। स्वशब्द उपपदे दधातेः। स्वेभ्यो दीयते स्वस्मिन् धीयते वा, स्वेन धनेन धीयते वा। 'स्व+ √'धा'+ क'। निघ० २.७.१७

७. स्वधे (द्यावापृथिव्यौ)। व्याख्यातमन्त्रनामसु। स्वेनात्मना भूतग्रामं धारयतः। स्वधनं धीयते अनयोरिति वा। 'स्व+ √'धा'+ क'। निघ० ३.३०.१

स्वधिति

१. स्वधितिः (वज्रः)। स्वशब्दोपपदात् √'धि' धारणे'। स्वं धनं धीयतेऽनेन। 'स्व+ √'धि'+ क्तिन्'। निघ० २.२०.१६

स्वन

१. स्वनः (वाक्)। √'स्वन' शब्दे'। स्वन्यत इति स्वनः। √'स्वन्'+ टाप्'। निघ० १.११.३३

स्वपिवात

१. स्वपिवात, स्वाप्तवचनः। 'सु+ आप्त+ वचन= स्वपिवात'। निरु० १०.७

स्वप्न

१. **स्वप्न स्वप्नाभिकरणेन** सर्वं नि **ष्वापया** जनम्। √'स्वप्'। अथर्व० ४.५.७

२. स्वाः स यदा स्वपित्यथैनमेते प्राणाः स्वा अपियन्ति तस्मात् स्वाप्ययः, स्वाप्ययो ह वै तःस्वप्न इत्याचक्षते परोऽक्षम्। √'स्वप्'= स्वा, स्वा+ अपि+ 'इ'= स्वाप्यय = स्वप्न'। शत०ब्रा० १०.५.२.१४

३. कृवृजृसिदूपन्यनिस्वपिभ्यो नित्। √'स्वप्'+ नि'। उणा० ३.१०

स्वप्नंशन

१. स्वप्ननंशनः स्वप्नान् नाशयति। 'स्वप्न+ √'नाशय्'। निरु० १२.२८

स्वयम्भू

१. स्वयम्भूः (अन्तरिक्षम्)। स्वयं भवति न केनचित् सृज्यते, केषाञ्चिद्वादिनां पक्षे नित्यं ह्याकाशम्। 'स्वयम्+ √'भू'+ कु'। निघ० १.३.११

स्वर्

१. स यदाह स्वरोऽसीति सोमं वा एतदाहैष ह वै सूर्य्यो भूत्वाऽमुष्मिंल्लोके स्वरति तद्यत्स्वरति तस्मात् स्वरस्तत्स्वरस्य स्वरत्वम्। √'स्वर्'। गो०ब्रा० १.५.१४

२. (देवाश्चर्षयश्च) तैर् (स्वरैर्) एनम् (आदित्यम्) अस्पृणवन् यदस्पृण्वंस्तत् स्वराणां स्वरत्वम्। √'स्पृ'= स्पर= स्वर्'। जै०ब्रा० २.३८६

३. स्वः (उदकम्)। सुपूर्वादर्तेरन्तर्भावितण्यर्थात्। अनावृष्ट्यादिजनितं क्लेशं सुष्ठु शोभनं गमयति नाशयति स्वः। 'सु+ √'ऋ'+ णिच्+ विच्'। निघ० १.१२.८६

४. यद्वा, अरणं गमनं दोषरहितत्वेन शोभनं यस्य, सुष्ठु प्राणिभिर्गम्यते इति वा, स्वः। 'सु+ √'ऋ'+ णिच्+ विच्'। निघ० १.१२.८६

५. स्वः (साधारणनामपदम्)। सुपूर्वादर्तेः। शोभनमरणं गमनं सुखाय हिताय वा यस्य, सुष्ठु वा कृतो रश्मिभिः रसानादातुम्, भासं वा ज्योतिषां नक्षत्रादीनां सुष्ठु कृतः प्राप्त इति वा, स्वरादित्यश्च द्यौः। 'सु+ √'ऋ'+ विच्'। निघ० १.४.१

६. यद्वा, सुपूवादीरयतेः। शोभनं वा प्रेरणं तमसां यस्य, सुष्ठु वा पुण्यकृत ईरयति स्वृतो रसैः, स्वृतो भाभिर्ज्योतिषा, स्वयमेव वा दीप्तम्। 'सु+ √'ईर्+ विच्'। निघ० १.४.१

स्वर

१. विश्वैः **स्वरेणाद्रिं स्वर्यो** नवग्वैः। √'स्वृ'। ऋ० १.६२.४

२. तद्यत् स्वरति तस्मात् स्वरस्तत् स्वरस्य स्वरत्वम्। √'स्वृ'। गो०ब्रा० १.५.१४

३. तद् वाव स्वरस्य स्वरत्वं यत् स्वरयन् वैत्। √'स्वर् या √'स्वृ'। जै०ब्रा० ३.३५७

४. स्वर आदित्यो भवति। सु अरणः। 'सु+ √'ऋ'। निरु० २.१४

५. सु ईरणः। 'सु+ √'ईर्'। निरु० २.१४

६. स्वृतो रसान्। स्वृतो भासं ज्योतिषाम्। स्वृतो भासेति वा। 'सु+ √'ऋ'। निरु० २.१४

७. स्वरः (वाक्)। √'स्वृ' शब्दोपतापयोः'। स्वर्य्यते शब्द्यतेऽनेन देवता, उपतप्यते ऽनया मर्मस्पृक् प्रयुक्तयेति वा। √'स्वृ+ 'घ'। निघ० १.११.३१

८. स्वरतिरर्चतिकर्मा वा। स्वर्य्यते स्तूयते देवतात्वात्। √'स्वृ' या √'स्वर्+ 'घ'। निघ० १.११.३१

९. यद्वा, स्वरति देवतानिन्द्रादीन्। √'स्वर्'+ 'अच्'। निघ० १.११.३१

स्वरसामन्

१. इमान् वै लोकान् स्वरसामभिरस्पृण्वंस्तत्स्वरसाम्नां (अहर्विशेषाणां) स्वरसामत्वम्। 'स्वर+ √'स्पृ'। ऐ०ब्रा० ४.११

२. एतर्हि वा अत्र य आदित्यं तमसाऽस्पृण्वत तद्यदस्पृण्वत स्वरसामनः। 'स्वर+ √'स्पृ'। कौ०ब्रा० २४.३

३. स्वभानुर्वा आसुर आदित्यं तमसाऽविध्यत्तं देवाः स्वरैरस्पृण्वन् यत् स्वरसामानो भवन्त्यादित्यस्य स्पृत्यै। 'स्वर+ √'स्पृ'। ता०ब्रा० ४.५.२

स्वरु

१. एतस्माद् (यूपात्) वाऽ एषो (शकलः) ऽपछिद्यते तस्यैतत् स्वमेवारुर्भवति तस्मात् स्वरुर्नाम। 'स्वम्+ अरु= स्वरु'। शत०ब्रा० ३.७.१.२४

२. शृस्वृस्निहित्रप्यसिवसिहनिक्लिदिबन्धिमनिभ्यश्च। √'स्वृ'+ उ'। उणा० १.१०

स्वर्क

१. स्वर्कैः स्वञ्चनैरिति वा। 'सु+ √'अञ्च्'। निरु० ११.१४

२. स्वर्चनैरिति वा। 'सु+ √'अर्च्'। निरु० ११.१४

३. स्वचिर्भिरिति वा। 'सु+ अर्चिस्'। निरु० ११.१४

४. स्वर्काः स्वञ्चना इति वा। 'सु+ √'अञ्च्'। निरु० १२.४४

५. स्वर्चन इति वा। 'सु+ √'अर्च्'। निरु० १२.४४

६. स्वर्चिष इति वा। 'सु+ अर्चिस्'। निरु० १२.४४

सुवर्ग (स्वर्ग)

१. अथ हैवंविदेव सुवर्गः। स हि सुवर्गच्छति। 'सुवस्+ √'गम्'। जै०ब्रा० १.१८

स्वर्विदि

१. स्वर्विदि, सूर्यविदि। 'सूर्यविदि= स्वर्विदि'। निरु० ७.२५

स्वसर

१. स्वसराण्यहानि भवन्ति, स्वयं सारीण्यपि वा। 'स्वयम्+ √'सृ'= स्वयंसर= स्वसर'। निरु० ५.४

२. अपि वा स्वरादित्यो भवति, स एनानि सारयति। 'स्वर+ √'सारय्'= स्वर्+ सार= स्वसार= स्वसर'। निरु० ५.४

३. स्वसराणि (अहानि)। स्वशब्दे उपपदे सर्तेर्गत्यर्थात्। स्वेन आत्मनैव गच्छन्ति। 'स्व+ √'सृ'+ अच्'। निघ० १.९.५

४. अपि वा स्वरादित्यनाम। आदित्येन सार्य्यते। स हि स्वोदयास्तमयाभ्यां तानि गमयति। 'स्वर्+ √'सारय्'+ अच्'। निघ० १.९.५

५. यद्वा, सुपूर्वात् √'असु' क्षेपणे'। सुष्ठु अस्यन्ते क्षिप्यन्ते सूर्य्येण स्वोदयस्तमयाभ्याम्। 'सु+ √'अस्'+ अरच्'। निघ० १.९.५

६. स्वसराणि (गृहाणि)। व्याख्यातमहर्नामसु। स्वेन स्वननेन स्त्रियते प्राप्यते, स्वैर्गृहवतो ज्ञातिभिः श्रियते। 'स्व+ √'सृ+ अच्'। निघ० ३.४.१०

७. सुष्ठु अस्यन्ते वा अस्मिन् पदार्थाः। 'सु+ √'अस्' + अरच्'। निघ० ३.४.१०

स्वसृ

१. **स्वसार** आप अभिगा उतासरन्। √'सृ'। ऋ० ९.८२.३

२. स्वसा सु असा। 'सु+ √'अस्'। निरु० ११.३२

३. स्वेषु सीदतीति वा। 'स्व+ √'सद्'। निरु० ११.३२

४. स्वसारः (अङ्गुलयः)। स्वशब्दे उपपदे √'असु' क्षेपणे'। सुष्ठु क्षिप्यन्ते पदार्थ आभिः, कार्य्येषु क्षेप्तव्या वा। 'स्व+ √'अस्'+ ऋन्= स्वसृ'। निघ० १.९.५

५. यद्वा, स्वशब्दे उपपदे √'षद्लृ' विशरणे'। स्वं स्वं व्यापारं गच्छन्ति प्राप्नुवन्ति, स्वस्मिन् स्वस्मिन् हस्ते सीदन्तीति वा। 'स्व+ √'सद्'+ ऋन्'। निघ० १.९.५

६. यद्वा, परस्परं भगिनीव दृश्यन्ते, एकहस्तप्रभवत्वात्, स्वसार उच्यन्ते। 'स्वसृ (भगिनी) = स्वसृ (अङ्गुलयः)'। निघ० १.९.५

७. सावसेर्ऋन्। 'सु+ √'असु' क्षेपणे'+ ऋन्'। उणा० २.९८

स्वस्ति

१. स्वस्तीत्यविनाशिनाम। अस्तिभिरपूजितः। सु अस्तीति। 'सु+ अस्ति'। निरु० ३.२१

२. सावसेः। 'सु+ √'अस' भुवि'+ ति'। उणा० ४.१८२

स्वात्त

१. देवीः **स्वदन्तु स्वात्तम्**। 'सु+√'अद्' या √'स्वद्'। यजु० ६.१०

स्वादु

१. तयोरन्यं पिप्पलं **स्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्यो** अभि चाकशीति। स्व+ √'अद्'। ऋ० १.१६४.२०

२. अन्नं यो ब्रह्मणां मल्वः **स्वाद्वन्नीति** मन्यते। स्व+ √'अद्'। ऋ० ५.१८.७

३. कृवापाजिमिस्वदिसाध्यशूभ्य उण्। '√स्वद्+ उण्'। उणा० १.१

स्वादो अर्ण

१. स्वादो अर्णः (नद्यः)। √'स्वाद' भक्षणे'। अर्णशब्दोऽकारान्तोऽपि निरुक्त उदकनामसु। स्वादः भक्ष्यमाणः। भक्षणेन चात्र बाधनं लक्ष्यते, तेन कूलं बाधमानोऽर्णो जलं यासामिति स्वादो अर्णः, वेगवज्जलं यासां तास्तथोक्ताः भक्षितकूलोदकाः। √स्वाद्+ असुन् + अर्ण= स्वादो अर्ण'। निघ० १.१३.१०

स्वार

१. घृतश्चुतं **स्वारमस्वार्ष्टाम्**। '√स्वृ'। ऋ० २.११.७

स्वावेशा

१. **स्वावेशा** तन्वा **संविशस्व**। 'स्व+ '√विश्'। यजु० १४.३

स्वाहा

१. तत् स्वाहेत्यजुहोत्......स्वा ह्येनं वागैट्ट। 'स्वा= स्वाहा'। काठ० ६.१; कपि०सं० ३.१२

२. स प्रजापतिर्विदांचकार स्वो वै मा महिमाहेति स स्वाहेत्यवाजुहोत् तस्मादु स्वाहेत्येव हूयते। 'स्व+ आह' या 'स्व+ √'हू'। शत०ब्रा० २.२.४.६

३. स यत्स्वाहास्वाहेत्याह स्वीकुरुत एवैनमेतदात्मन्येवैन-मेतत्कुरुत आत्मनि यज्ञं कृत्वा दीक्षा इति। 'स्व+ √'कृ'+ आह'। का०शत०ब्रा० ४.१.३.१८

४. स्वाहेत्येतत् सु आहेति वा। 'सु+ आह'। निरु० ८.२०

५. स्वा वागाहेति वा। 'स्वा+ आह= स्वाह= स्वाहा'। निरु० ८.२०

६. स्वं प्राहेति वा। 'स्वम्+ आह= स्वमाह= स्वाह = स्वाहा'। निरु० ८.२०

७. स्वाहुतं हविर्जुहोतीति वा। 'सु+ आ+ √'हु'= स्वाहु= स्वाहा'। निरु० ८.२०

८. स्वाहा (वाक्)। अत्र भास्करमिश्रः— 'स्वयं सरस्वती आह ब्रूते'। स्वैव ते वागित्यब्रवीत्— इति ब्राह्मणम्। '*स्व+ आह*'। निघ० १.११.२४

९. अत्र क्षीरस्वामी— सुष्ठु आह्वयति स्वाहा। '*सु+ आ+ √'ह्वे'= स्वाह्वे= स्वाहा*'। निघ० १.११.२४

स्वाहाकार

१. तऽस्वा वागभ्यवदज्जुहुधीतिं, स इत एवोन्मृज्याजुहोत् स्वाहा इति स्वाह्येनः वागभ्यवदत् तत् स्वाहाकारस्य जन्म, तस्मादग्निहोत्रे स्वाहाकारः। '*स्वा+ √'हु'= स्वाहु= स्वाहा, स्वाहा+ कार= स्वाहाकार*'। मै०सं० १.८.१

स्विष्टकृत्

१. ते (देवाः)ऽब्रुवन्त्स्विष्टं वै न इदं भविष्यति यदिमःराधयिष्याम इति तत् स्विष्टकृतः स्विष्टकृत्त्वम्। '*सु+ इष्ट+ √'कृ*'। तै०सं० २.६.८.३

२. तदेभ्यः (देवेभ्योऽग्निः) स्विष्टमकरोत्तस्माद् स्विष्टकृत ऽ इति। '*स्विष्ट+ √'कृ*'। शत०ब्रा० १.७.३.९

स्वृतीक

१. स्वृतीकम् (उदकम्)। √'स्वृ' शब्दोपतापयोः'। स्वरतिर्गत्यर्थः (निघ० २.१४.५४) अर्चतिकर्मा च (निघ० ३.१४.१)। शब्दं करोति, गच्छति, पूज्यतेऽनेन देवताः, पूज्यते वा स्वयं देवतात्वात् इति स्वृतीकम्। √'स्वृ'+ तुक्+ ईकन्'। निघ० १.१२.५८

स्वेद

१. तद्यदब्रवीत् महद्वै यज्ञं सुवेदमविदामह इति तस्मात् सुवेदोऽभवत्तं वा एतं सुवेदं सन्तं स्वेद इत्याचक्षते। '*सु+ √'विद्'= सुवेद = स्वेद*'। गो०ब्रा० १.१.१

हंस

१. हंसा हन्तेर्घ्नन्त्यध्वानम्। √'हन्'। निरु० ४.१३

२. वृतॄवदिवचिवसिहनिकमिकषिभ्यः सः। √'हन्'+ स'। उणा० ३.६२

हंसास

१. हंसासः (अश्वाः)। √'हन्' हिंसागत्योः'। घ्नन्ति गच्छन्त्यध्वानं, गच्छतः पद्भिरध्वानं हिंसन्ति वा (ऐ०ब्रा० ५.१.१)। √'हन्'+ स'। निघ० १.१४.२५

हथ

१. हथात्, हननात्। √'हन्'। निरु० ६.२७

२. हनिकुषिनीरमिकाशिभ्यः क्थन्। √'हन्'+ क्थन्'। उणा० २.२

हन

१. मनो **हनं जहि** जातवेदः। √'हन्'। अथर्व० ५.२९.१०

२. यथैषामिन्द्र वृत्रहन् **हनाम**। √'हन्'। अथर्व० ११.९.२३

हनु

१. हनुर्हन्तेः। √'हन्'। निरु० ६.२७

२. शृस्वृस्निहित्रप्यसिवसिहनिक्लिदिबन्धिमनिभ्यश्च। √'हन्'+ उ'। उणा० १.१०

हन्मना

१. ओजिष्ठेन **हन्मना हन्नभि** द्यून्। √'हन्'। ऋ० १.३३.११

२. तपिष्ठेन **हन्मना हन्तना** तम्। √'हन्'। ऋ० ७.५९.८

३. आभोगं **हन्मना हतमुदधिं हन्मना हतम्**। √'हन्'। ऋ० ७.९४.१२

४. आह्वयमानाँ अव **हन्मनाहनम्**। √'हन्'। ऋ० १०.४८.६

हय

१. हयो भूत्वा देवानवहत्। √'*वह्*' =*हव= हय*'। शत०ब्रा० १०.६.४.१

२. हयः (अश्वः)। √'हय' गतिविक्रान्ते'। हयति गच्छत्यध्वानं विक्रमते। √'हय्'+ अच्'। निघ० १.१४.२

हर

१. अग्ने यत्ते **हरस्तेन** तं प्रति **हर**। √'हृ'। अथर्व० २.१९.२; २०.२, २१.२, २२.२

२. आपो यद्वो **हरस्तेन** तं प्रति **हरत**। √'हृ'। अथर्व० २.२३.२

३. अग्ने यत्ते हरस्तेन तं प्रति हर। √'हृ'। काठ० ६.९

४. हरो हरतेः। ज्योतिर्हर उच्यते। उदकं हर उच्यते। लोका हरांस्युच्यन्ते। असृगहनी हरसी उच्येते। √'हृ'। निरु० ४.१९

५. हरः (ज्वलतो नामधेयम्)। √'हृञ्' हरणे'। हरति तमः। √'हृ'+ असुन्'। निघ० १.१७.९

६. हर: (क्रोध:)। √'हृञ्' हरणे'। हरति कृत्याकृत्यविवेकं, ह्रियते वाऽनेन पुरुष: स्ववशम्, दुर्जयोऽन्तर: शत्रु: क्रोध:। √'हृ+ असुन्'। निघ० २.१३.२

हरयाण

१. हरयाणो हरमाणयान:। √'हृ'+ *शानच्*+ '*या*'+ *ल्युट्*= *हरमाण*'। निरु० ५.१५

हरस्वती

१. हरस्वत्य: (नद्य:)। √'हृञ्' हरणे'। 'उदकं हर उच्यते'—इति निरुक्तम् (४.१९)। तद्धि बहवो हरन्ति, सर्वं ह्रियते वा प्राणिभिरुपभोगाय, तद्वत्य:। √'हृ'+ *असुन्*+ *मतुप्*'। निघ० १.१३.३२

हरि

१. आ शासते प्रति **हर्यन्त्युक्थेमा हरी** वहतस्ता नो अच्छ। √'*हर्य्*'। ऋ० १.१६५.४

२. अयं ते अस्तु **हर्यत:** सोम आ **हरिभि:** सुत:। √'*हर्य्*'। ऋ० ३.४४.१

३. जुषाण इन्द्र **हरिभिर्न** आ गह्या तिष्ठ **हरितं** रथम्। √'हृ'। ऋ० ३.४४.१

४. निवेशनाद्ध**रिव** आ **जभर्थ**। √'हृ'। ऋ० ४.१९.९

५. **हरिं हिनोत** वाजिनम्। √'*हि*'। ऋ० ९.६२.१८

६. **हरिं हिन्वन्त्यद्रिभि:**। √'*हि*'। ऋ० ९.६५.८

७. पवते **हर्यतो हरिर्गृणान:**। √'*हर्य्*'। ऋ० ९.६५.२६

८. सो अग्रे अह्नां **हरिर्हर्यत:**। √'*हर्य्*'। ऋ० ९.८६.४२

९. पवते **हर्यतो हरिर्हर्यत:**। √'*हर्य्*'। ऋ० ९.१०६.१३; सा०पू० ५.१०.११; सा०उ० ७७३

१०. इन्द्र रथे वहतो **हर्यता हरी**। √'*हर्य्*'। ऋ० १०.९६.६; अथर्व० २०.३१.१

११. **हर्यत** इन्द्राय सोमा **हरयो** दधन्विरे। √'*हर्य्*'। ऋ० १०.९६.६; अथर्व० २०.३१.१

१२. आ रोदसी **हर्यमाणो** महित्वा नव्यं नव्यं **हर्यसि** मन्म नु प्रियम्। प्र पस्त्यमसुर **हर्यतं** गोराविष्कृधि **हरये** सूर्याय। √'*हर्य्*'। ऋ० १.९६.११

१३. आशासते प्रति **हर्य्यन्त्युक्थेमा हरीम्**। √'*हर्य्*'। यजु० ३३.७८

१४. परि त्यं **हर्यतं हरिम्**। √'*हर्य्*'। सा०पू० ५.८.८; सा०उ० १६८१

१५. पूर्वपक्षापरपक्षौ वा इन्द्रस्य हरी ताभ्याꣳ हीदꣳसर्वं हरति। √'हृ'। षड्०ब्रा० १.१

१६. युक्ता ह्यस्य (इन्द्रस्य) हरयश्शता दशेति सहस्रं हैत आदित्यस्य रश्मय:। तेऽस्य युक्तास्तैरिदं सर्वं हरति। तद्यदेतैरिदं सर्वं हरति। तस्माद्धरय:। √'हृ'। जै०उप० १.१४.३.५

१७. हरिꣳहरन्तमनुयन्ति देवा:। √'हृ'। तै०आ० ३.१५.१

१८. अहोरात्रौ वा अस्य हरी। तौ हीदं सर्वं हर्त्तारौ हरत:। √'हृ'। जै०ब्रा० १.७९

१९. प्राणापानौ वा अस्य (इन्द्रस्य) हरी। तौ हीदं सर्वं हर्त्तारौ हरत:। √'हृ'। जै०ब्रा० १.७९

२०. हरो हरते:।.........हरि: सोमो हरितवर्ण:। अयमपीतरो हरिरेतस्मादेव। √'हृ'। निरु० ४.१९

२१. हरय:.......हरणा आदित्यरश्मय:। √'हृ'। निरु० ७.२४

२२. हरय: (मनुष्या:)। √'हृञ्' हरणे'। हरन्ति पदार्थान्। √'हृ+ इन्'। निघ० २.३.१०

२३. यद्वा, √'हृ' प्रसह्यकरणे'। प्रसह्यीक्रियन्ते वा मृत्येनेति वा। √'हृ+ इन्'। निघ० २.३.१०

२४. हरी (आदिष्टोपयोजनानि)। √'हृञ्' हरणे'। अत्र ताण्ड्यकम्—पूर्वपक्षापरपक्षौ वा इन्द्रस्य हरी ताभ्यां हीदं सर्वं हरति। √'हृ+ इन्'। निघ० १.१५.१

२५. हृपिषिरुहिवृतिविदिछिदिकीर्त्तिभ्यश्च। √'हृ'+ इन्'। उणा० १.९७

हरित्

१. त्वं सूरो **हरितो** रामयो नॄन् **भरच्चक्रमेतशो** नायमिन्द्र। √'*भृ*'। ऋ० १.१२१.१३

२. **हर्यतो** विव्यचद्वज्रो **हरितो** न रंह्या। √'*हर्य्*'। ऋ० १०.९६.४

३. कृष्णमन्यद्ध**रित: सं भरन्ति**। √'*भृ*'। यजु० ३३.३८

४. हरित:, हरणानादित्यरश्मीन्। √'हृ'। निरु० ४.११

५. हरितोऽश्वानिति वा। √'हृ'। निरु० ४.११

६. हरित: (दिक्)। √'हृञ्' हरणे'। हरन्ति आसु स्थिताश्चौरादयो धनादिकम्। √'हृ+ इतन्'। निघ० १.६.८

७. यद्वा, √'हृ' प्रसह्यकरणे'। जहति वा आसु स्थिताश्चौरादयो धनादिकम्। √'हृ+ इतन्'। निघ० १.६.८

८. हरितः (नद्यः)। √'हृञ्' हरणे'। हरन्ति वृक्षगुल्मादीनि वेगेन। √'हृ+ इतन्'। निघ० १.१३.१२

९. यद्वा, √'हृ' प्रसह्यकरणे'। प्रसह्य हरन्ति वा। √'हृ'+ इतन्'। निघ० १.१३.१२

१०. हरितः (आदिष्टोपयोजनानि)। √'हृञ्' हरणे'। हरन्ति रथं तमो वा स्वभाससा। √'हृ+ इतन्'। निघ० १.१३.१२

११. यद्वा, हरिच्छब्दः पीतवर्णवचनो हरिद्वर्णो वा। (*अर्थप्रदर्शनमात्रम्*)। निघ० १.१३.१२

१२. हरितः (अङ्गुलयः)। √'हृञ्' हरणे'। हरन्त्याभिः पदार्थान्। √'हृ+ इतन्'। निघ० २.५.१२

१३. हसृसृरुहियुषिभ्य इति। √'हृ'+ इति'। उणा० १.९७

हर्म्य

१. हर्म्यम् (गृहम्)। √'हृञ्' हरणे'। हरति अनुह्रियते आह्रीयतेऽत्र धान्यादि। √'हृ'+ मुट्+ क्यन्'। निघ० ३.४.४

२. यद्वा, √'हम्म' गतौ'। √'हम्म्'+ यक्'। निघ० ३.४.४

हर्यति

१. हर्यतिः प्रेप्साकर्मा। विहर्यतीति। √'हर्य्'। निरु० ७.१७

हव

१. श्रुधी हवं त्वां हवन्ते अध्वरे। √'ह्वे'। ऋ० १.१४२.१३

२. तमिद्ध इन्द्रं सुहवं हुवेम। √'ह्वे'। ऋ० ४.१६.४

३. श्रुधी हवमा हुवतो हुवानः। √'ह्वे'। ऋ० ६.२१.१०

४. अश्विना वि प्रा सुहवा हवामहे। √'ह्वे'। ऋ० ७.४४.२

५. इन्द्रावरु

८. वयं पितुर्न णा सुहवा हवामहे। √'ह्वे'। ऋ० ७.८२.४

६. उभा हि वां सुहवा जोहवीमि। √'ह्वे'। ऋ० ७.९३.१

७. वाहिष्ठो वां हवानां स्तोमो दूतो हुवन्नरा। √'ह्वे'। ऋ० ८.२६.१६नाम सुहवं हवामहे। √'ह्वे'। ऋ० १०.३९.१

९. भरेष्विन्द्रं सुहवं हवामहे। √'ह्वे'। ऋ० १०.६३.९

१०. बृहस्पतिं सुहवेह हवामहे। √'ह्वे'। ऋ० १०.१४१.४

११. इन्द्रवायू सुसन्दृशा सुहवेह हवामहे। √'ह्वे'। यजु० ३३.८६

१२. इन्द्रवायू उभाविह सुहवेह हवामहे। √'ह्वे'। अथर्व० ३.२०.६

१३. अस्मिन् यज्ञे सुहवा जोहवीमि। 'ह्वे'। अथर्व० ७.४७.१

१४. राकामहं सुहवा सुष्टुती हुवे। √'ह्वे'। अथर्व० ७.४८.१

१५. ब्रह्मौदने सुहवा जोहवीमि। √'ह्वे'। अथर्व० ११.१.२६

१६. हवेहवे सुहवं शूरमिन्द्रम्। हुवे नु शक्रं पुरुहूतमिन्द्रमिदं हविर्मघवा वेत्विन्द्रः। √'ह्वे'। सा०पू० ३.११.२

१७. हवानाम्, ह्वानानाम्। √'ह्वे'। निरु० ५.१

१८. हवम्, ह्वानम्। √'ह्वे'। निरु० १०.२;

१९. ११.३१,३१

हवन

१. त्वे अग्न आहवनानि भूरीशानास आ जुहुयाम नित्या। √'हु'। ऋ० ७.१.१७

२. हवनश्रुतः, ह्वानश्रुतः। 'ह्वे'। निरु० ६.२७

हवि

१. अग्निमग्निं हवीमभिः सदा हवन्त विश्पतिम्। √'हु'। ऋ० १.१२.२

२. त्वे इद्धूयते हविः। √'हु'। ऋ० १.२६.६; सा०उ० १६१८

३. हव्या जुह्वान आसनि। √'हु'। ऋ० १.७५.१

४. अरिष्टवीरा जुहुवाम ते हविः। √'हु'। ऋ० १.११४.३

५. देवा हविरदन्त्याहुतम्। √'हु'। ऋ० २.१.१३; १४

६. प्र त्वे हवींषि जुह्वरे समिद्धे। √'हु'। ऋ० २.९.३

७. हविः सिनीवाल्यौ जुहोतन। √'हु'। ऋ० २.३२.७

८. हवीमभिर्हवतो यो हविर्भिः। √'हु'। ऋ० २.३३.५

९. त आसानो जुहुते हविष्मान्। √'हु'। ऋ० ६.१०.६

१०. आस्ये जुहुता हविः। √'हु'। ऋ० ७.१५.७

११. अश्याम तदादित्या जुह्वता हविः। √'हु'। ऋ० ८.२७.२२

१२. यमाय जुहुता हविः। √'हु'। ऋ० १०.१४.१३

१३. दोषावस्तोर्हविषा नि ह्वयामहे। √'ह्वे'। ऋ० १०.४०.४

१४. अहाव्यग्ने हविरास्ये। √'हु'। ऋ० १०.९१.१५; यजु० २०.७९

१५. श्रद्धया **हूयते** हविः। √'हु'। ऋ० १०.१५१.१
१६. समानेन वो **हविषा जुहोमि**। √'हु'। ऋ० १०.१९१.३
१७. यज्ञैर्जुहोति **हविषा** यजुषा। √'हु'। अथर्व० ७.७०.१
१८. वैश्वानरे **हविरिदं जुहोमि**। √'हु'। अथर्व० १८.४.३५
१९. आ जुहोता **हविषा** मर्जयध्वम्। √'हु'। सा०पू० १.७.१
२०. हुवे नु शक्रं पुरुहूतमिन्द्रमिदं **हविर्मघवा** वेत्विन्द्रः। √'हु'। सा०पू० ३.११.२
२१. एतद्वै.....हविर्यत्.......अग्नौ हूयते। √'हु'। गो०ब्रा० १.२.२२
२२. हविः (उदकम्)। √'हु' दानादानयोः'। दीयते पिपासितेभ्यः, आदीयते वा जनैरुपभोगाय। अथवा हूयते देवतोद्देशेन, प्रक्षिप्यते वैश्वानरे हविरिदं जुहोमीत्यादिमन्त्रैः। √'हु'+ इसि'। निघ० १.१२.६५
२३. अर्चिशुचिहुसृपिछादिछर्दिभ्य इसिः। √'हु'+ इसि'। उणा० २.११०

हविर्धान

१. अथ यदस्मिन्त्सोमो भवति हविर्वै देवानाः सोमस्तस्माद्धविर्धानं नाम। '*हविस्+ धान*'। शत०ब्रा० ३.५.३.२
२. हविर्धाने, हविषां निधाने। '*हविस्+* √'*धा*'। निरु० ९.३६

हविष्पान्त

१. हविष्पान्तम्, हविर्यत् पानीयम्। '*हविस्+ पानीय*'। निरु० ७.२५

हविष्मत्

१. **हविष्मन्तः** सदमित्त्वा **हवामहे**। √'हु'। ऋ० १.११४.८
२. दस्रा **हवतेऽवस हविष्मान्**। √'ह्वे'। अथर्व० २०.१०१.२; सा०उ० ७९१

हवीमन्

१. **हवीमभिर्हवते** ये **हविर्भिरव** स्तामेभी रुद्रं दिषीय। √'ह्वे'। ऋ० २.३५.५
२. अग्निमग्निं **हवीमभिः** सदा **हवन्त** विश्पतिम्। √'ह्वे'। अथर्व० २०.१०१.२; सा०उ० ७९१

हव्य

१. यः शूरेभिर्हव्यो यश्च भीरुभिर्यो धावद्भिर्हूयते यश्च जिग्यभिः। √'हु'। ऋ० १.१०१.६
२. **हवे** हि वामश्विना रातहव्यः। √'हु'। ऋ० १.११८.११
३. स्वाहाकृतान्या गह्यप **हव्यानि** वीतये। इन्द्रा गहि श्रुधी हवं त्वा **हवन्ते** अध्वरे। √'हु'। ऋ० १.१४३.१३
४. बर्हिस्त्वामिमे **हव्यवाहो हवन्ते**। √'ह्वे'। ऋ० ३.४३.१
५. मित्राय **हव्यं** घृतवज्जुहोत। √'हु'। ऋ० ३.५९.१
६. मित्राय **हविराजुहोत**। √'हु'। ऋ० ३.५९.५
७. विश्पते **हव्यवाट्** तुभ्यं **हूयते**। √'हु'। ऋ० ५.६.५
८. एवेन्द्राग्निभ्यामहावि **हव्यम्**। √'हु'। ऋ० ५.८६.६
९. **हव्यं** वीर **हव्या हवन्ते**। √'ह्वे'। ऋ० ६.२१.१
१०. अमर्त्ये य **आजुहोति हव्यम्**। √'हु'। ऋ० ७.१.२३
११. **हवन्त** उ त्वा **हव्यम्**। √'ह्वे'। ऋ० ७.३०.२
१२. **हव्या जुह्वान** आनुषक्। √'हु'। ऋ० ८.२३.६
१३. ता वामद्य **हवामहे हव्येभिः**। √'ह्वे'। ऋ० ८.२६.३
१४. सुष्टुत्या **हव्यं हुवेम**। √'ह्वे'। ऋ० ८.९६.२०
१५. राज्ञे **हव्यं जुहोतन**। '√हु'। ऋ० १०.१४.१५
१६. आस्मिन् **हव्या जुहोतन**। √'हु'। यजु० १२.३०
१७. घृतेन **जुहोमि हव्यं** तरसे बलाय। √'हु'। अथर्व० ३.१५.३
१८. **हव्यवाहं हवामहे** स नो मुञ्चन्त्वहंसः। √'ह्वे'। अथर्व० ४.२३.४
१९. तेभ्यो **जुहोमि** स जुषस्व **हव्यम्**। √'हु'। अथर्व० ४.३९.१०
२०. **आजुहव्यद्धव्यमानुषक्**। √'हु'। सा०पू० १.९.२
२१. हव्यः, हवनार्हः। √'ह्वे'। निरु० १०.४२

हव्यवाट्

१. द्वे वा अग्नेस्तन्वौ हव्यवाहन्यां देवेभ्यो हव्यं वहति। 'हव्य+ √'वह्'। मै०सं० १.१०.१८
२. हव्यवाहन्या (तन्वा) देवेभ्यो हव्यं वहति। 'हव्य+ √'वह्'। मै०सं० १.१०.१८; काठ० ३६.१३
३. वायुर्वै तूर्णिर्हव्यवाड् वायुर्देवेभ्यो हव्यं वहति। 'हव्य+ √'वह्'। ऐ०ब्रा० २.३४

हस्त

१. हस्तोर्हन्तेराशुर्हनने। √'हन्'। निरु० १.७
२. हसिमृग्रिण्वामिदमिलपूधूर्तिभ्यस्तन्। √'हस्'+ तन्'। उणा० ३.८६

हस्तघ्न

१. हस्तघ्नो हस्ते हन्यते। '*हस्त+* √'*हन्*'। निरु० ९.१४

हस्र

१. हस्रेव, हसनेव। '*हसन+ इक= हसनेक= हस्रेव*'। निरु० ३.५

२. स्फायितञ्चिवञ्चिशकि०। √'*हस्*'+ *रक्*'। उणा० २.१३

हार

१. निहारं च **हरामि** मे निहारं निहराणि ते स्वाहा। √'*हृ*'। यजु० ३.५०

हारायण

१. (देवा असुराणां) यद्धरोऽहरंस्तद्धारायणस्य हारायणत्वम्। √'*हृ*'। जै०ब्रा० ३.२१७

२. यद् उ हारायण आङ्गिरसोऽपश्यत् तस्माद्धारायण-मित्याख्यायते। '*हारायण*'। जै०ब्रा० ३.२१७

हारिवर्ण (सामन्)

१. यदु हरिवर्ण आङ्गिरसोऽपश्यत् तस्माद् हारिवर्ण-मित्याख्यायते। '*हरिवर्ण= हारिवर्ण*'। जै०ब्रा० १.१८६

हासमाने

१. हासामाने हासति स्पर्द्धायाम्। √'*हास्*'। निरु० ९.३९

२. हर्षमाणो वा। √'*हृष्*'। निरु० ९.३९

हिङ्कार

१. सा (गौः) हैनान् (देवान्) उदीक्ष्य हिंचकार, ते देवा विदाञ्चक्रुरेष साम्नो हिङ्कार इत्यप हिङ्कार हिङ्कारः हैव पुराततः साम आस, स एष गवि साम्नो हिङ्कारः। '*हिङ्+* √'*कृ*'। शत०ब्रा० २.२.४.१२

२. प्राणो हि वै हिङ्कारस्तस्मादपिगृह्य नासिके हिङ्कर्तुं न शक्नोति। '*हिङ्+* √'*कृ*'। शत०ब्रा० १.४.१.२

हित

१. विश्पलायै धने **हिते** सर्तवे **प्रत्यधत्तम्**। √'*धा*'। ऋ० १.११६.१५

२. प्राणो वै हितं प्राणो हि सर्वेभ्यो भूतेभ्यो हितः। √'*धा*'। शत०ब्रा० ६.१.२.१४

हिम

१. हिमं पुनर्हन्तेर्वा। √'*हन्*'। निरु० ४.२१

२. हिनोतेर्वा। √'*हि*'। निरु० ४.२१

३. हिमा (रात्रिः)। हन्तेर्हि च। हन्ति पद्मानीति हिमम्। √'*हन्*'+ *मक्= हि+ म= हिम*'। निघ० १.७.२२

४. हन्तेर्हि च। √'*हन्*'+ *मक्= हि+ म = हिम*'। उणा० १.१४७

हिरणमय

१. स (पुरुषः) इरामयो यद्धीरामयस्तस्माद्धिरण्मयः। '*इरामय= हिरण्मय*'। ऐ०आ० २.१३

हिरण्य

१. यो **बिभर्ति** दाक्षायणं **हिरण्यम्**। '*भृ*'। अथर्व० १.३५.२

२. तद्दक्षमाणो **बिभरद्धिरण्यम्**। √'*भृ*'। अथर्व० १.३५.३

३. तद्यदस्य (प्रजापतेः) एतस्याः रम्यायां तन्वां देवा अरमन्त तस्माद्धि रम्यः हि रम्यः ह वै तद्धिरण्यमित्याचक्षते परोऽक्षम्। '*हि+* √'*रम्*'= *हि+ रम्य= हिरण्य*'। शत०ब्रा० ७.४.१.१६

४. तद् (आपः) धिरण्यमाण्ड समैषत् तस्य हरितमधरं कपालमासीद् रजतमुत्तरम्, तच्छतं देवसंवत्सरा-ञ्छयित्वा निर्भिद्यमभवत्। '*हरित+ रजत= हरिर= हिरण्य*'। जै०ब्रा० ३.३६०.६१

५. हिरण्यं कस्मात्? ह्रियत आयम्यमानमिति वा। √'*हृ*'। निरु० २.१०

६. ह्रियते जनाज्जनमिति वा। √'*हृ*'। निरु० २.१०

७. हितरमणं भवतीति वा। '*हित+ रमण= हिरण्य*'। निरु० २.१०

८. हृदयरमणं भवतीति वा। '*हृदय+ रमण= हिरण्य*'। निरु० २.१०

९. हर्यतेर्वा प्रेप्साकर्मणः। √'*हर्य्*'। निरु० २.१०

१०. हिरण्यम् (हिरण्यम्)। √'*हञ्*' हरणे'। ह्रियते जनाज्जनमिति वा संव्यवहारार्थम्, द्रव्यस्वभावत्वात् नैकत्रावस्थायित्वं तस्य। √'*हृ*'+ *कन्यन्*'। निघ० १.२.५

११. अथवा द्विधातुजं रूपम्—हिनोतेः रमतेश्च। हितञ्च तदापदि दुर्भिक्षादौ, रमयति च सर्वदा सर्वमिति। √'*हि+* '*रम्*'+ *कन्यन्= हि+ र+ अन्य= हिरण्य*'। निघ० १.२.५

१२. अथवा हर्यतेः प्रेप्साकर्मणः। सर्वैः हि तत् सर्वथा प्राप्तुमिष्यते। *√'हर्य्'+ कन्यन्= हि+ र+ अन्य= हिरण्य'*। निघ० १.२.५

१३. हर्यति स्वप्रभया दीप्यते— इति सुबोधिनीकारः। *√'हर्य्'+ कन्यन्= हि+ र+ अन्य= हिरण्य'*। निघ० १.२.५

१४. हर्यते कन्यन् हिर च। *√'हर्य्'+ कन्यन् = हिर्+ अन्य= हिरण्य'*। उणा० ५.४४

हिरण्यगर्भ

१. हिरण्यगर्भो हिरण्मयो गर्भः। हिरण्मयो गर्भोऽस्येति वा। *'हिरण्मय+ गर्भ= हिरण्यगर्भ'*। निरु० १०.३३

हिरण्यय

१. यत्पर्वते न समशीत **हर्यत** इन्द्रस्य वज्रः श्नथिता **हिरण्ययः**। *√'हर्य्'*। ऋ० १.५७.२

२. हिरण्ययः, हिरण्मयः। *'हिरण्मय= हिरण्यय'*। निरु० ६.३३

हिरण्यवर्ण

१. हिरण्यवर्णाः (नद्यः)। हर्य्यतेः+*√'वृञ्'* वरणे'। वृणोति व्रियते वाऽसाविति वर्णः श्वेतादिः। हिरण्यः कान्त इष्टो वर्णो यासां ताः। *√'हर्य्'+ कन्यन्= हिर्+ अन्य= हिरण्य, √'वृ'+ रन्= वर्ण'*। निघ० १.१३.१७

२. यद्वा, हिता घर्मादौ रमणीया मनः प्रह्लादजनयित्र्यः, वारिकाश्च तापादेर्भूम्या वा इति। *'हित+ रमणीय= हिरण्य, हिरण्य+ √'वारय्'*। निघ० १.१३.१७

हिरण्यस्तूप

१. हिरण्यस्तूपो हिरण्मयः स्तूपः। हिरण्मयः स्तूपोऽस्येति वा। *'हिरण्मय+ स्तूप= हिरण्यस्तूप'*। निरु० १०.३३

हुरश्चित्

१. हुरश्चित् (स्तेनः)। *√'हूर्च्छा'* कौटिल्ये'+√चिती संज्ञाने'। हुरः कौटिल्यानि चेतयते। *√'हुर्+ क्विप्+ √'चित्'+ क्विप्'*। निघ० ३.२४.१०

२. यद्वा, हरतेः। हुरः अर्थानामाहर्तॄन्, चेतयते चिनोतेर्वा। हुरः हृतानर्थान् सञ्चिनोति। *√'हृ'+ √'चित्'* या *√'चि'*। निघ० ३.२४.१०

हुवाना

१. हुवाना, हूयमाना। *√'ह्वे'*। निरु० १२.३३

हुवे

१. हुवे, ह्वये। *√'ह्वे'*। निरु० ११.३१

हृदय

१. तदेतत् त्र्यक्षरः हृदयमिति हृ इत्येकमक्षरमभिहरन्त्यस्मै स्वाश्चान्ये च य एवं वेद, द इत्येकमक्षरं ददन्त्यस्मै स्वाश्चान्ये च य एवं वेद, यमित्येकमक्षरमेति स्वर्गं लोकं य एवं वेद। *√'हृ'+ √'दा'+ √'इ'*। शत०ब्रा० १४.८.४.१

२. वृहोः षुग्दुकौ च। *√'हृ'+ दुक्+ कयन्'*। उणा० ४.१०१

हृषीवत्

१. अध स्मास्य **हर्षतो हृषीवतो** विश्वे जुषन्त। *√'हृष्'*। ऋ० १.१२७.६

हेति

१. हेतिर्हन्तेः। *√'हन्'*। निरु० ६.३

२. हेतिः (वज्रः)। हन्तेः। हन्यतेऽनेन शत्रवः। गम्यन्तेऽनेन जयः। *√'हन्'+ क्विप्'*। निघ० २.२०.३

३. हिनोतेर्वा। वर्द्धयते वैश्वर्यम्। *√'हि'+ मन्'*। निघ० २.२०.३

हेम

१. हेम (हिरण्यम्)। *√'हि'* गतौ वृद्धौ च'। हिनोति गच्छति अनेन सुखं पुरुषः। गम्यते वा तदर्थिभिः। गच्छति वा स्वयं कटकादिरूपां विकृतिम्। हिनोति वाणिज्यादिना प्रतिदिनं वर्द्धते। ताम्राद्युपरि लेपनाद् वर्द्धते— इति सुबोधिनीकारः। *√'हि'+ मनिन्'*। निघ० १.२.१

२. यद्वा, दधातेः। हितमापदि निहितं वा भूम्यादौ। *√'धा'+ मनिन्= हि+ मन्= हेमन्'*। निघ० १.२.१

३. हेम (उदकम्)। *√'हि'* गतौ वृद्धौ च'। हिनोति गच्छति निम्नप्रदेशम्। गम्यते वा तदर्थिभिः, वर्द्धते वा वर्षासु। *√'हि'+ मनिन्'*। निघ० १.२.१

हेमन्त

१. हेमन्तो हिमवान्। *'हिमवान्= हिमवन्त= हेमन्त'*। निरु० ४.२७

२. हन्तेर्मुट् हि च। √'हन्'+ मुट्+ झच्'। उणा० ३.१२९

हेल

१. हेलः (क्रोधः)। हेलतेः। √'हेल्'+ असुन्'। निघ० २.१३.१

होतृ

१. ता सुजिह्वा उप **ह्वये होतारा** दैव्या कवी। √'ह्वे'। ऋ० १.१३.८

२. **होतारं** सप्त **जुह्वो३** यजिष्ठम्। √'ह्वे'। ऋ० १.५८.७

३. एवा **होत** सत्यतर त्वमद्याग्ने मन्द्रया **जुह्वा** यजस्व। √'हु'। ऋ० १.७६.५

४. **होता हुवानो** अत्र सुभगाय देवान्। √'ह्वे'। ऋ० ७.३०.३

५. आ वो **होता जोहवीति**। √'हु' या √'ह्वे'। ऋ० ७.५६.१८

६. अग्निं वः पूर्व्यं **हुवे होतारं** चर्षणीनाम्। √'ह्वे'। ऋ० ८.२३.७

७. नृचक्षसा **होतारा** दैव्या **हुवे**। √'ह्वे'। ऋ० ९.५.७

८. युवं **होत्रा**मृतुथा **जुह्वते**। √'हु'। ऋ० १०.४०.४

९. **जुह्वद्** ऋषि**र्होता** न्यसीदत् पिता नः। √'हु'। यजु० १७.१७

१०. आ **जुहोता हविषा** मर्जयध्वं नि **होतारं** गृहपतिं दधिध्वम्। √'हु'। सा०पू० १.७.१

११. यद्वा स तत्र यथाभाजन देवता अमुमावहामुमावहे-त्यावाहयति। तदेव होतुर्होतृत्वम्। √'वह्'+ तृच्= हक्+ तृ होतृ'। ऐ०ब्रा० १.२

१२. होतारं ह्वातारम्। √'ह्वे'। निरु० ७.१५

१३. जुहोतेर्होतेत्यौर्णवाभः। √'हु'। निरु० ७.१५

१४. होत्रा (वाक्)। √'हु' दानादानयोः'। हूयतेऽनया मन्त्ररूपया हविः। हूयतेऽस्यां प्राणः, हूयते वा प्राणः। तथा च– वाचि हि प्राणं जुहुमः प्राणे वा वाचम्– इत्युपनिषत्। √'हु'+ त्रन्'। निघ० १.११.३५

१५. यद्वा, होत्रेति यज्ञनाम। हूयतेऽस्मिन् हविरिति यज्ञश्च वागित्युच्यते तत्साध्यत्वात्। √'हु'+ त्रन्'। निघ० १.११.३५

१६. होत्रा (यज्ञः)। व्याख्यातं वाङ्नामसु। दीयतेऽस्मिन् हविः। √'हु'+ त्रन्'। निघ० १.११.३५

ह्यस्

१. ह्यः हीनः कालः। √'हा'। निरु० १.६

ह्रद

१. ह्रदो ह्रादतेः शब्दकर्मणः। √'ह्लाद्'। निरु० १.९

ह्रस्व

१. ह्रस्वो ह्रसतेः। √'ह्रस्'। निरु० ३.१३

२. ह्रस्वः। ह्रसतिः शब्दार्थो पठितः, तथाप्यत्र न्यूनार्थे वर्तते। √'ह्रस्'+ वन्'। निघ० ३.२.२

ह्वर

१. ह्वरः (क्रोधः)। √'ह्वृ' कौटिल्ये अत्तिकर्मा च'। ह्वरति कुटिलो भवत्यनेन अत्ति वा। √'ह्वृ'+ असुन्'। निघ० २.१३.७

ह्वार्य्य

१. ह्वार्य्याणाम् (अश्वाः)। √'ह्वृ' कौटिल्ये'। खलीना-द्याकर्षणे मुखादिष्वङ्गेषु कुटिलीक्रियन्ते ह्यश्वाः। √'ह्वृ'+ ण्यत्'। निघ० १.१४.२४

२. यद्वा, ह्वरतिरत्तिकर्मा (निघ० २.८.१०) ह्वरत्यर्थम् अश्वाः ह्वार्य्याः। √'ह्वृ'+ ण्यत्'। निघ० १.१४.२४



महाभाष्यकार आचार्य पतञ्जलि का कहना है— ''एकः शब्दः सम्यग् ज्ञातः सुप्रयुक्तः स्वर्गे लोके कामधुग्भवति'' अर्थात् सम्यक् ज्ञात और सुप्रयुक्त एक शब्द भी स्वर्गलोक में अभीष्ट कामनाओं की पूर्ति करने वाला होता है। यजुर्वेद का ऋषि कहता है— ''ब्रह्मायं वाचः परमं व्योम'' यह वाक् परम व्योम अर्थात् परम ब्रह्म है। इस महावाक्य को चरितार्थ करने के लिये प्राचीन भारतीय मनीषियों ने सतत शब्द साधना की है और वैदिक भावना को जीवित बनाये रक्खा है।

स्वयं वेद भी शब्दों की निरुक्ति में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान रखते हैं। आगे चलकर ब्राह्मण ग्रन्थों में भी शब्दों के निर्वचन बहुधा देखने को मिलते हैं। प्रस्तुत कोष में वेद, ब्राह्मणग्रन्थ एवं निरुक्त के निर्वचन संकलित किये गये हैं। इसके अतिरिक्त वैदिक निघण्टुकोष के समस्त नामपदों के निर्वचन भी समाहित किये गये हैं, जिससे वेदार्थ के सम्यक् ज्ञान में अपेक्षित सहयोग प्राप्त हो सके। प्रस्तुत कोष में परोक्ष और अतिपरोक्षवृत्तिरूप शब्दों के निर्वचनों के समर्थन में क्वचित् अष्टाध्यायी और उणादिकोष की व्युत्पत्तियों का भी आश्रय लिया गया है।

प्रस्तुत कोष के गठन में संभव है कुछ न्यूनतायें भी होंगी, क्यों कि वैदिक नामपदों को लेकर अभी तक कोई निर्वचन कोष प्रकाश में नहीं आया है, जिसको निदर्शन मानकर या जिसकी अपेक्षा प्रस्तुतकोष को अधिक उपयोगी बनाना संभव हो सके। अतएव इस दिशा में यह प्रथम प्रयास मानकर विद्वद्गण इसका अध्ययन कर मार्गदर्शन करेंगे, ऐसी आशा है। तथा इस कोश के माध्यम से शोधार्थी वैदिक साहित्य को विस्ताररूप से हृदयङ्गम कर सकेंगे, ऐसा विश्वास है।

मूल्य ४०० रुपये

PARIMAL PUBLICATIONS

27/28, SHAKTI NAGAR

DELHI 110007